को पसंद आए। इनमें लोक-रंजन की मात्रा बहुत प्राचुर्य से है और उपदेश भी अच्छे मिलते हैं, किंतु असंभवनीयता के कारण इनका साहित्यिक मूल्य अधिक नहीं है। भाषा इनकी चलती हुई कुछ-कुछ उर्दूपन लिए हुए सुपाठ्य तथा सुबोध है। हमने वीरमणि-नामक एक ही उपन्यास-ग्रंथ लिखा है, जिसमें औपन्यासिक घुमाव का प्राचुर्य न होते हुए उपदेशकपन अधिकता से है। सामाजिक उपन्यास होकर वह ऐतिहासिकपन एवं धर्मोपदेश के पुट लिए हुए है। ब्रजनंदनप्रसाद साधारणतया अच्छे औपन्यासिक हैं। रूपनारायणजी पांडेय के मौलिक उपन्यास बुरे नहीं हैं। फलतः पूर्व नूतन परिपाटी के लेखकों द्वारा इस विभाग की कुछ अच्छी पूर्ति हुई है। आख्यायिका के विषय का आरंभ गिरिजाकुमार घोष (१९६०) ने कर दिया है, किंतु यह विषय प्रौढ़ता पर आगे आनेवाला है।

सत्कवियों में भारतेंदु-काल में प्रतापनारायण मिश्र, ललित, श्रीधर पाठक, बलदेव आदि ऐसे महाशय थे, जो पूर्व नूतन परिपाटी-काल में भी रचना करते रहे। नूतन काल के सुकवियों में निम्न-महाशयों के नाम गिनाए जा सकते हैं—विशाल, द्विजराज, ब्रजराज, अयोध्यासिंह उपाध्याय (१९४७), कन्हैयालाल पोद्दार (१९४७), जगन्नाथदास रत्नाकर (१९४८), शिवबिहारीलाल मिश्र (१९४८), जंगलीलाल (१९४८), सुखराम चौबे (१९४९), सीताराम उपाध्याय (१९४९), रघुनाथप्रसाद शर्मा (१९५०), भागवतप्रसाद (१९५०), दामोदरसहायसिंह (१९५१), जयदेवजी भाट (१९५२), मथुराप्रसाद पांडेय (१९५३), प्रबोधचंद (१९५४), भगवानदीन मिश्र (१९४४), बनवारीलाल (१९५५), राय देवीप्रसाद पूर्ण (१९५५), अक्षयवट मिश्र (१९५६), बक्सराम पांडे (१९५८), उमापति

सुकवि-माधुरी-माला—षष्ठ पुष्प

मिश्रबंधु-विनोद

अथवा

हिंदी-साहित्य का इतिहास तथा कवि-कीर्तन

लेखक

'मिश्रबंधु'

मिश्रबंधु-विनोद

अथवा

हिंदी-साहित्य का इतिहास तथा कवि-कीर्तन

(चतुर्थ भाग)

लेखक

गणेशविहारी मिश्र

रावराजा रा० ब० श्यामविहारी मिश्र एम्० ए०

रा० ब० शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए०

"ते सुकृती रससिद्ध कवि वंदनीय जग माहिं,
जिनके सुजस-सरीर कहँ जरा-मरन-भय नाहिं।"

मिलने का पता—

गंगा-ग्रंथागार

३६, लाटूश रोड

लखनऊ

प्रथमावृत्ति

सजिल्द ४॥)] सं० १९९१ [सादी ४)

प्रकाशक

श्रीदुलारेलाल भार्गव

अध्यक्ष गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

लखनऊ

शाखाएँ और सोल एजेंसियाँ—

गंगा-ग्रंथागार	सिविल लाइंस, अजमेर
गंगा-ग्रंथागार	१६५।१, हरीसन रोड, कलकत्ता
गंगा-ग्रंथागार	सराफ़ा बाज़ार, सागर
गंगा-ग्रंथागार	कोटगेट, बीकानेर
गंगा-ग्रंथागार	नीलकंठ स्ट्रीट, दरियागंज, दिल्ली
गंगा-ग्रंथागार	४२८, लैमिंगटन रोड, बंबई
गंगा-ग्रंथागार	जसवंत-बिल्डिङ्ग्ज़, जोधपुर

तथा प्रचारक—सैकड़ों जगह

मुद्रक

श्रीदुलारेलाल भार्गव

अध्यक्ष गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस

लखनऊ

समर्पण

हिंदी-भाषा एवं कविता के अनन्य प्रेमी और सहायक, काव्य-मर्मज्ञ, सौजन्य-मूर्ति, सरल-स्वभाव, निरहंकार, रसिक-शिरोमणि, हिंदी के सुलेखक, स्वदेश एवं स्वजाति के अद्वितीय भक्त, प्रजापालक, नरपाल-चूड़ामणि हिज़ हाइनेस सवाई महेंद्र महाराजा श्रीवीरसिंहदेव बहादुर ओरछा-नरेश 'सरामद राजा-हाय बुंदेलखंड' के कर-कमलों में यह तुच्छ भेंट (मिश्रबंधु-विनोद, चतुर्थ खंड) उनकी उदार स्वीकृति से, अत्यंत श्रद्धा और प्रेम-पूर्वक, मिश्रबंधुओं द्वारा, सादर समर्पित है।

गोलागंज, लखनऊ
वैशाख शु० ७, संवत् १९९१
२० मई, १९३४ ईस्वी

गणेशविहारी मिश्र
श्यामविहारी मिश्र (रावराजा, रायबहादुर)
शुकदेवविहारी मिश्र (रायबहादुर)

भूमिका

चतुर्थ भाग (मिश्रबंधु-विनोद) में पहले प्रायः २६४ कवि थे, किंतु अब प्रायः १५०० हो गए हैं। इनमें से बहुतेरों ने स्वयं हमारे पास पत्र द्वारा अपना हाल लिख भेजा है, तथा बहुतों के हाल उनके मित्रों आदि के द्वारा ज्ञात हुए हैं। कहीं-कहीं हाल भेजनेवालों के नाम भी लिख दिए गए हैं, किंतु ऐसा बहुत ही कम हो सका है। ऐसा लिखने का विचार जब से उठा, उससे पूर्व सैकड़ों लोगों के हाल लिखे जा चुके थे। अतएव जहाँ कहीं हाल का आधार ग्रंथ में न हो, वहाँ स्वयं कवि के अथवा उसके मित्रों के पत्रों का आधार समझना चाहिए। बहुत-से कवि हमको स्वयं ज्ञात हैं। ऐसे स्थानों पर बहुधा ऐसा लिख भी दिया गया है, किंतु कई कारणों से सब कहीं ऐसा नहीं हो सका है। इस भाग के कथनों के आधार दृढ़ हैं। नंबर इसमें सिलसिलेवार हैं, किंतु कहीं-कहीं 'अ' आदि के भी नंबर आ गए हैं। यह एक प्रकार की भूल समझनी चाहिए, सिद्धांत नहीं। आगे के संस्करणों में यह भी निकल जायगी। समय के देखते हुए चौथा भाग कुछ बड़ा अवश्य है, किंतु विनोद मुख्यतया कवि-कृतियों का कथन है, सो ज्ञात हाल छोड़ देना अनुचित समझा गया। वास्तव में बहुतेरी साधारण ज्ञात घटनाएँ छोड़ भी दी गई हैं, नहीं तो ग्रंथ दूना हो जाता। आशा है, स्थानाभाव के भय से जो हमें ऐसा करना पड़ा है, उसके लिये कविगण क्षमा करेंगे।

लखनऊ
सं० १९९१

विनीत
मिश्रबंधु

विषय-सूची

मिश्रबंधु-विनोद

अड़तीसवाँ अध्याय

आदि से संवत् १९४४ पर्यंत के शेष कविगण

मिश्रबंधु-विनोद के द्वितीय संस्करण के संबंध में केवल थोड़ा-बहुत परिवर्तन ग्रंथ में नहीं हुआ है, वरन् फिर से पूरी जाँच और खोज करने से कवियों तथा ग्रंथों की संख्या पहले से प्रायः ड्योढ़ी हो गई है। दूसरे भाग तक प्रथम संस्करण में १२२१ कवि थे, तथा अब १६४० हो गए हैं। तीसरे भाग में भी ऐसी ही वृद्धि हुई है, और चौथे में संख्या बहुत अधिक बढ़ गई है। दूसरे संस्करण में आदि से संवत् १९४५ पर्यंत कवियों के कथन प्रथम तीन भागों में हैं, तथा इस चौथे भाग में १९४५ से अब तक के रचयिताओं के विवरण हैं। प्रथम तीन खंडों के बहुत-से ऐसे कवि हैं, जो उन भागों के द्वितीय संस्करण के समय हमें मालूम न थे, किंतु अब ज्ञात हो गए हैं। उनका वर्णन यहाँ करके आगे बढ़ना उचित समझ पड़ता है। उपर्युक्त खंडों में पहले का तीसरा संस्करण भी हो गया है, तथा दूसरे और तीसरे के अभी दूसरे ही संस्करण हुए हैं। अब न-जाने कितने दिनों में इनके और संस्करण निकलें। इसलिये जो वृहत् मसाला हम लोगों को ज्ञात हो चुका है, उसको अपने ही पास पड़ा न रखकर हम उसे यहीं प्रकाशित कर देना उचित समझते हैं। इस अध्याय के रचयिता-गण बहुत प्रसिद्ध नहीं हैं, किंतु वर्णन-पूर्णता के लिये उनका लिखा जाना आवश्यक था ही, तथा इनमें से कितनों ही ने कई-कई ग्रंथ

बनाए हैं। इनमें से मदनमोहन, जदुनाथ भाट, कनककुशल, जानकीराम, गंगाधर व्यास, जीवा भक्त तथा बहुत-से अन्य महाशय सुकवि भी हैं। जीवा भक्त ने बहुत खरा ज्ञान कहा है। इस अध्याय में बहुत-से महाराष्ट्र देशवाले हिंदी-कवि भी हैं। कुल मिलाकर यह भाग बुरा नहीं है। इसमें कवियों के नंबर वही दिए गए हैं, जो अपने उचित स्थान पर उन्हें मिलते। २४ नाथ कवियों के विवरण तृपिटकाचार्य राहुल सांकृतायन-नामक लेखक महाशय ने १६८६ की गंगा पत्रिका में निकाला है, जिसके आधार पर उनके कथन यहाँ किए गए हैं। इनमें से बहुतेरे आठवीं, नवीं, दसवीं आदि परम प्राचीन शताब्दियों के हिंदी-कवि कहे गए हैं। उनके ग्रंथ बहुधा तंजौर में कहे जाते हैं। कवियों की प्राचीनता बहुत महत्ता-युक्त है, और दृढ़ आधारों पर अवलंबित जान पड़ती है, किंतु उनके पूरे विवरण सांकृतायन महाशय ने नहीं दिए हैं। जब इस विषय में अधिक ज्ञान होगा, तब फिर कुछ कहा जायगा।

सांकृतायन महाशय की खोजें कितनी महत्ता-पूर्ण हैं, सो प्रकट ही है। आशा है, आप अपने कथनों के पूरे हवाले देकर शीघ्र समाज को बाधित करेंगे। राहुल महाशय को हमने पत्र लिखा था। उसके उत्तर में जो पत्र उन्होंने हमें लिखा है, उसकी नक़ल नीचे दी जाती है, जिससे समय जानने में बहुत सहायता मिलेगी।

कवियों के नंबर डालने में भी एक नवीन प्रश्न उपस्थित है। प्रथम संस्करण में नंबर सीधे-सीधे पड़ते गए, किंतु द्वितीय संस्करण के समय यह सोचा गया कि लोगों ने जो हवाले दिए हैं, वे नवीन नंबर डालने से भ्रमात्मक हो जायँगे। अतएव प्रथम तीन खंडों में नंबर पुराने ही डाले गए, और जिन नंबरों के बीच जाँच से नए कवि मिले, उनके नंबर बटे से कर दिए गए। जैसे नंबर १५६६ तथा

१५६७ के बीच में दो कवि नए मिले हैं, सो उनके नंबर $\frac{१५६६}{१}$ तथा $\frac{१५६६}{२}$ कर दिए गए हैं। अब इन नवीन नंबरों के बीच में भी नए कवि मिलते जाते हैं, सो $\frac{१५६६}{१अ}$-$\frac{१५६६}{१आ}$ आदि के समान नंबर डालने पड़ते हैं। इसमें गुत्थलपन आ जाता है, और समझ पड़ता है कि जितनी सुविधा पुराने नंबरों के हवालों से होगी, उससे अधिक असुविधा इन नए बटेवाले नंबरों के लिखने में हो रही है। चौथे खंड में प्राचीन कवि बहुत थोड़े हैं तथा नवीन अधिक, सो और भी भद्दापन आवेगा। फिर ग्रंथ में पूरे कवि कितने हैं, सो बिना बहुत कुछ जोड़े-जाड़े पता नहीं लगता। एक यह भी बात है कि किसी महाकवि को पूरा नंबर न देकर किसी अन्य कवि के नंबर के बटे में लिखना उसकी अनावश्यक अधीनता-सी समझ पड़ती है, जो अनुचित है। प्रथम खंड में नंबर २७७ हैं, किंतु उसमें कवि ३३६ सन्निविष्ट हैं। इसी प्रकार दूसरे खंड में नंबर २७८ से १३२१ तक हैं, किंतु कवि १३०४ हैं। तृतीय खंड में नंबर १३२२ से २५४६ तक होकर भी रचयिता १५६९ हैं। फल यह है कि प्रथम तीन खंडों में नंबर २५४६ तथा रचयिता ३१०६ हैं। चतुर्थ खंड के ३८वें अध्याय से रचयितागण प्रथम तीन खंडों के ही होने से उनके नंबर भी उचित स्थानानुसार बटों से दे दिए गए हैं, किंतु गड़बड़ मिटाने को नए नंबर भी दर्शा दिए गए हैं। ३९वें अध्याय से केवल नए नंबर दिए गए हैं।

राहुल सांकृत्यायन का पत्र

लूहिपा महाराज धर्मपाल (७६९-८०९) के कायस्थ थे, यह सस्क्य छं बुं की पोथी ज (अर्थात् सप्तम) के पृष्ठ २४३ क में साफ़ लिखा है। वहीं यह भी लिखा है कि शबरपा घूमते हुए वारेंद्र में महाराज धर्मपाल के महल में भिक्षा के लिये गए थे, वहीं मुलाक़ात

हुई। यह सस्क्य कं बुं तिब्बत में सस्क्य मठ के पाँच अधिपतियों (1091-1279 A. D.) की ग्रंथावली है। यही ची मंगोल जातीय चीन-सम्राटों के गुरु हुए। च, छ, ज नंबर की पोथियाँ तीसरे महंत-राज कीर्तिध्वज (जन्म ११७१, मृत्यु १२१६) की कृतियाँ हैं। इन्हीं लोगों ने अधिकांश सिद्धों की वाणियों का अनुवाद करवाया था।

उक्त ग्रंथ और रिन्—पो—छेड़—ग्युङ्स—खुङ्स—लत—वड् गतम् पृष्ठ ६६, तथा चतुराशीतिसिद्धप्रवृत्ति, स्तन्—ग्युर ८६१ (स्नर—यङ् छापे) के पृष्ठ ३६ में भी, दारिकपा और डेंगिपा का (जो पहले ओड़ीसा के राजा और मंत्री थे) लूहिपा का शिष्य होना वर्णित है।

महाराज देवपाल (८०६-४६ ई०) के समय में इन सिद्ध कवियों के होने का उल्लेख है—

विरूप (३)	चतुराशीतिसिद्धप्रवृत्ति—स्तन-गुर-८६।१			P ४०
गोरक्ष (९६)	,,	,,	१० ख	४६
कण्हपा (१७) गुरु जालंधरपा		,,	२० ख	तक
भूसुक (४१)	,,	,,	२५ ख	
घंटापा (५२)	,,	,,	४३ ख	

लूहिपा और शवरपा का समकालीन होना तथा उनका धर्मपाल के समय होना असंदिग्ध है। इसके लिये भोट भाषा के कितने ही ग्रंथों से प्रमाण दिया जा सकता है। पर मैंने सस्क्य क्यं वुंश से प्रमाण उद्धृत किया है, जो बहुत ही प्रामाणिक ग्रंथ-संग्रह है।

यदि उपयोगी समझें, तो वंश-वृक्ष को छाप देंगे, किंतु प्रूफ़ में बहुत ही सावधानी रखनी होगी।

कलकत्ता-विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर दिनेशचंद्र सेन ने 'वंग-साहित्य-परिचय' ग्रंथ लिखा है, जो क़रीब १९१४ ई० को छपा

है। उसमें गोपीचंद भरथरी पर लिखी पुरानी गीतों का संग्रह भी है। प्रोफ़ेसर महाशय ने पृष्ठ २८ पर लिखा है—"लक्ष्मणदास-कृत हिंदी गाने वंगीय राजार गुरु जलंधर योगी, ताहार (राजा की) माता मैनावती, तदीय (राजमाता के) गुरु गोरक्षनाथ प्रभृति वंगीय गीतोल्लिखित चरित्रवर्गेर प्राय समस्तेर उल्लेख आछे।"

गीत में से—पृष्ठ ४१—

"हरि-गुण-गान मयना गाइवार लागिल।
उत्तर दक्षिणे चिता आरोपिल।......
साक्षात् गोरखनाथ आसिया खड़ा रहल।"

पृष्ठ ८९ में—

"सूर-चंद्र बोलि करि वंगदेशे राय।
ताराचंद्र नामे हेला ताहार तनय।
इहार नंदन शुन ब्रह्मा चंद्रराय।
गोपीचंद्र नामे हेलाईहारो कुमारो।
विष्णुचंद्र नामे पुत्र हइला ताहारो।
विष्णुचंद्र नंदन हइला रूपचंद।
ततहु उत्पत्ति होए गोविंद-ए-चंद्र।"

पृष्ठ १०२ में—

"योगसिध्या हाडिपा कालूपा गोर्क्ष मीन,
सत सिद्धा अवतार गुरुवास हीन;
पाटिका नगरे राजा गोविंदचंद्र सूप।
जलंदरी हाडिपा हइल हाडि रूप।"

हाडीपा जलंधरपा ही हैं। कालूपा ४ कण्हपा (१७) हैं।

आपका

सांकृत्य-सगोत्र राहुल

इन नाथ कवियों के समय प्रमाणित होने से हिंदी-साहित्य का आरंभ काल सं० ८०० तक सिद्ध हो जाता है। हाल ही में प्रसिद्ध पुरातत्त्ववेत्ता बाबू काशीप्रसाद जायसवाल ने सं० ६६२ में राजा होनेवाले महाराजा हर्ष के समकालीन बाण कवि के ग्रंथ में प्राकृत के साथ भाषा का भी चलन पाया है। इस भाषा शब्द से हिंदी-भाषा का प्रयोजन निकलता है, सो हिंदी-भाषा की प्राचीनता उस काल तक पहुँचती है। अब कवियों का कथन चलता है।

(३१०७) नाम—($\frac{१}{५}$) सरहपा (सिद्ध नं० ६)।

समय—८०० के लगभग।

ग्रंथ—(१) क-ख दोहा, (२) क-ख दोहा टिप्पण, (३) कायकोष-अमृतवज्रगीति, (४) चित्तकोष-अजवज्रगीति, (५) डाकिनीवज्र-गुह्य गीति, (६) दोहा-कोष-उपदेश-गीति, (७) दोहा-कोष-गीति, (८) दोहा-कोष-गीति, तत्त्वोपदेश-शिखर, (९) दोहा-कोष-गीतिका, भावना-दृष्टि-चर्याफल, (१०) दोहा-कोष, वसंत-तिलक, (११) दोहा-कोष-चर्यागीति, (१२) दोहा-कोष-महामुद्रोपदेश, (१३) द्वादशोपदेश-गाथा, (१४) महामुद्रोपदेश वज्रगुह्य गीति, (१५) वाक्-कोष-रुचिरस्वरवज्र-गीति, (१६) सरह गीतिका।

तंजूर के तंत्रखंड से पता चलता है कि इनके उपर्युक्त काव्य-ग्रंथ मगही से भोटिया में अनुवादित हुए हैं।

विवरण—इनके दूसरे नाम राहुलभद्र और सरोजभद्र भी हैं। राज्ञी नगर के रहनेवाले ब्राह्मण थे। भिक्षु होकर नालंद-विद्यालय में रहने लगे। सबरपाद इनके प्रधान शिष्य थे। कोई तांत्रिक नागार्जुन भी इनके शिष्य थे। बंगाल-नरेश धर्मपाल का समय ८२६ से ८६६ तक था। उनके लेखक लूहिपा शबरपा के शिष्य थे, जिन शबरपा के गुरु हमारे कवि सरहपा थे।

उदाहरण—

जहँ मन, पवन न संचरइ, रवि शशि नाह प्रवेश ;
तहि वट चित्त विस्ताम करु, सरहे कहिअ उवेश।

"पंडिअ सअल सत्थ वृक्खाणइ ;
देहहि बुद्ध वसंत न जाणइ।"
"अमणागमण सतेन विखंडिअ ;
तोवि णिलज्ज भनइ हँउ पंडिअ।"

"जो भवु सो निवा (ण्वा ?) ण खलु, भवु न मएणहु पएण ;"
"एक्कसभावे विरहिअ, निम्मलमइ पड़िवएण।"
"घोरें धारें चंदमणि जिमि उज्जोअ करेइ ;
परममहासुह एखुकणे, दुरिआ अशेष हरेइ।"
"जीवंतह जो नउ जरइ, सो अजरामर होइ ;
गुरु उपएसें विमलमइ, सो पर धएणा कोइ।"

इनके कुछ गीति पद्य—

राग देशाख

"नाद न विंदु न रवि न शशि-मंडल ,
चिअराअ सहावे मूकल। ध्रु०
उजु रे उज्जु छाड़ि मा लेहुरे वंक ,
निअहि वोहिमा जाहुरे लंक। ध्रु०
हाथेरे कान्काण मा लोउ दापण,
अपणे अपा बुझतु निअ-मण। ध्रु०
पार - उआरे सोइ गजिइ,
दुज्जण सांगे अवसरि जाइ। ध्रु०
वाम दाहिण जो खाल विखला,
सरह भणइ बप उजुवाटि भाइला।" ध्रु०

राग भैरवी

काअ णावड़ि खंटिमण केडुआल,
सद्गुरु वअणे धर पतवाल । ध्रु०
चीअ थिर करि धहुरे नाही,
अन उपाए पारण जाई । ध्रु०
नौवाही (नौवाआ) नौका टागुअ गुणे,
मेलि मेल सहजें जाउण आणें । ध्रु०
वाट अभअ खाल्टबि वलआ,
भव-उलोलें षअत्रि बोलिआ। ध्रु०
कुल लइ खरे सांते उजाअ,
सरह भणइ ग (अ) णें पमाएँ । ध्रु०

नाम—(१/२) शबरपा (सिद्ध ५) ।

समय—सं० ८२५ के लगभग ।

ग्रंथ—(१) चित्तगुह्यगंभीरार्थगीति, (२) महामुद्रावज्रगीति, (३) शून्यता दृष्टि, (४) खडंग योग, (५) सहजशंवर-स्वधिष्ठान, (६) सहजोपदेश स्वधिष्ठान ।

विवरण—ये उपर्युक्त सरहपाद के शिष्य तथा गौड़ेश्वर महाराज धर्मपाल के लेखक लूहिपा के गुरु थे । संभव है, उपर्युक्त ग्रंथों में कुछ संस्कृत या पाली के भी हों । महाराज धर्मपाल का समय सं० ८२६ से ८६६ तक है । एक शबरपा ई० दसवीं शताब्दी में भी हुए हैं । वह मैत्रीपा या अवधूतीपा के गुरु थे । उनकी भी पुस्तकें संभव है, शबरपा की पुस्तकों में शामिल हों । ये ग्रंथ तंजूर के तंत्रखंड में हैं ।

उदाहरण—

"ऊँचा-ऊँचा पावत तहिं बसइ सबरीबाली,
मोरंगि पीच्छ परहिण सबरी गिवत गंजरी ।

उमत सबरो पागल शबरो माकर गुली गुहाउ,
तोंहोरि णिअ घरिणी णामे सहज सुंदरी।
णाणा तरुवर मौलिल रे गअणत लागेली डाली,
एकेली सबरी ए वण हिंडइ कर्ण कुंडल वज्रधारी।
तिअ धाउ खाट पडिला सबरो महासुखे सेजि छाइली,
सबरो भुजंग णइरामणि दारी पेह्मराति पाहाइली। ध्रु०
हिअ ताँबोला महासुहे कापूर खाइ,
सून निरामणि कंठेलइआ महासुहे राति पोहाइ। ध्रु०
गुरुवाक् पुंज आ बिंध णिअ मणँ बाणे,
एके शर-संधाने बिंधह-बिंधह परम णिवाणे। ध्रु०
उमत सवरो गरुआ रोषे,
गिरिवर-सिहर संधि पइसंते सबरो लोड़िव कइसे।"

राग रामक्री

"गअणत गअणत तइला बाड़ही हेंचे कुराडी,
कंठे नैरामणि बालि जागंते उपाड़ी। ध्रु०
छाड़ु छाड़ माआ मोहा विष मे दुंदोली,
महासुहे बिलसंति शबरो लइआ सुणमे हेली। ध्रु०
हेरिए मेरि तइला बाडी खसमे समतुला,
षुकड़ए सरे कपास फटिला। ध्रु०
तइला वाड़िर पासेंर जोहणा वाडी ताएला,
फिटेलि अंधारी रे आकाश फुलिआ। ध्रु०
कुंगुरि ना पाकेला रे शबरा शबरि मातेला,
अणुदिण शबरो किंपिन चेवइ महासुहें भेला। ध्रु०
चारिवासे भाइलारें दिआँ चंचाली,
तँहि तोलि शबरो डकएला कांदश सगुण शिआली। ध्रु०

नाम—($\frac{१}{५}$) वीणापा (सिद्ध

समय—८९० के लगभग।

ग्रंथ—वज्रडाकिनी निष्पन्नक्रम।

विवरण—गौड़ देश के क्षत्रिय-वंश में इनका जन्म हुआ था। इनके गुरु का नाम भद्रपा (सिद्ध २४) था। पीछे से आप कण्हपा के शिष्य हुए। कण्हपा के सहारे इनका समय ज्ञात हुआ है।

उदाहरण—

राग पटमंजरी १७

"सुज लाउ ससि लागेलि तांती,
अणहा दांडी वाकि कि अत अवधूती। ध्रु०
वाजइ अलो सहि हरु अवीणा,
सुन तांति धनि विलसइ रुणा। ध्रु०
आलिकालि वेणि सारि सुणेआ,
गअवर समरस सांधि गुणिआ। ध्रु०
जबे करह करहक लेपि चिउ
बतिश तांति धनि स एल विआपिउ। ध्रु०
नाचंति वाजिल गांति देवी,
बुद्ध नाटक विसमा होइ।" ध्रु०

नाम—($\frac{१}{६}$) कुक्कुरिपा (सिद्ध ३४)।

समय—सं० ८६० के लगभग।

ग्रंथ—(१) तत्त्व-सुख-भावनानुसारियोगभावनोपदेश, (२) स्रवपरिच्छेदन।

विवरण—कपिलवस्तु के ब्राह्मण थे। चरपटीपा के शिष्य और मनिपा इनके गुरुभाई थे। इनके उपर्युक्त दो ग्रंथ हिंदी में हैं। वे तंजूर के पुस्तकालय में हैं।

उदाहरण—

राग गवड़ा २

"दुलिदुहि पिटा धरण न जाइ,
रुखेर तेंतलि कुंभीरे खाअ ।
आँगन घरपण सुन भो बिआती,
कानेट चौरि निल अधराती । ध्रु०
सुसुरा निद गेल बहुडी जागअ,
कानेट चोरे निलका गइ मागअ । ध्रु०
दिवसइ बहुड़ी काड़इ डरे भाअ,
राति भइले कामरु जाअ । ध्रु०
अइसन चर्या कुक्कुरी-पाएँ गाइड़,
कोड़ि मझें एकुड़ि अहिं समाइड़ ।" ध्रु०

राग पटमंजरी २०

निम्न-लिखित पद गायकवाड़-ओरियंटल सीरीज़, बड़ौदा, की पुस्तक साधनमाला से लिया गया है ।

"हाँउ निरासी खमण भतारे,
मोहोर विगोआ कहण न जाइ । ध्रु०
फेटलिउ गो माए अंत उड़ि चाहि,
जा एथु बाहाम सो एथु नाहि । ध्रु०
पहिल बिआण मोर वासन पूड़,
नाड़ि विआरंते सेव वापूड़ा । ध्रु०
जाण जौबण मोर भइलेसि पूरा,
मूल नखलि बाप संघारा । ध्रु०
भाणथि कुक्कुरीपाए भव थिरा,
जो एथु बम्फएँ सो एथु वीरा ।" ध्रु०

"हले सहि विग्र सिअ कमल पवीहिउ वज्जें,
अललल हो महासुहेण आरोहिउ नृत्ये।
रवि किरणेण पफुल्लिअ कमलु महासुहेण,
(अल०) आरोहिउ नृत्यें।"

नाम—($\frac{१}{७}$) गुंडरीपाद (सिद्ध ४४)।

समय—८६० के लगभग।

विवरण—यह कर्मकार कुल में पैदा हुए थे। सिद्ध लीलापा (२) के शिष्य थे। इनके शिष्य धर्मपाद थे, जिनके शिष्य हालिपाद (४०) कहे जाते हैं। तंजूर में इनका कोई ग्रंथ नहीं मिला है। चर्यागीति में इनकी निम्न-लिखित गीति मिलती है—

तिअड्डा चापि जोइनि दे अंकवाली,
कमल कुलिश घाँट करहुँ विआली। ध्रु०
जोइनि तँइ बिनु खनहिं न जीवमि,
तो मुह चुंबी कमल-रस पीवमि। ध्रु०
खेंपहु जोइन लेप न जाय,
मणि कुले कहिआ ओड़ि आणे समाअ। ध्रु०
सासु घरें घालि कोंचा ताल,
चाँद-सुज वेणी पखा फाल। ध्रु०
भणइ गुडरी अह्मे कुंदुरे वीरा,
नर अनारी मझे उभिल चीरा। ध्रु०

नाम—($\frac{१}{८}$) विरूपा (सिद्ध ३)।

समय—८६० के लगभग।

ग्रंथ—(१) अमृत-सिद्धि, (२) दोहा-कोष, (३) दोहा-कोष-गीति कर्मचंडालिका, (४) मार्गफलान्वितावबादक, (५) विरूपगीतिका, (६) विरूपवज्रगीतिका, (७) विरूपपद चतुरशीति, (८) सुनिष्प्रपंचतत्त्वोपदेश

विवरण—पूर्व देश में इनका जन्म हुआ था। नालंद बिहार में शिक्षा पाई। सिद्ध नागबोधि के शिष्य थे। इनके ग्रंथ तंजूर में सुरक्षित हैं।

उदाहरण—

राग गवड़ा ३

"एक से शुंडिनि दुइ घरे सांधअ,
चीअण वाकलअ वारुणी बांधअ। ध्रु०
सहजे थिर करी वारुणी सांधे,
जें अजरामर होइ दिट कांधे। ध्रु०
दशमि दुआरत चिह्न देखइआ,
आइल गराहक अपणे वहिआ। ध्रु०
चउशठि घड़िए देट पसारा,
पइठल गराहक नाहिं निसारा। ध्रु०
एक स डुली सरुइ नाल,
भणति विरुआ थिर करि चाल।" ध्रु०

(२११५) नाम—(१/६) दारिकपा (सिद्ध ७७)।

समय—८६५ के लगभग।

ग्रंथ—(१) ओड्डियान-विनिर्गत महागुह्यतत्त्वोपदेश, (२) तथता दृष्टि, (३) सप्तम सिद्धांत।

विवरण—यह उड़ीसा के राजा थे। सिद्ध लूहिपाद के शिष्य हो और राज्य छोड़कर तपस्वी हो गए। इनके शिष्य वज्रघंटापाद या घंटापा (५२) थे।

उदाहरण—

राग वराड़ी ३४

"सुन करुणारि अभिन वारें का अ-वाक्-चित्र,
विलसइ दारिक गअणत पारिमकुलें।।ध्रु०

अलक्ख-लख-चित्ता महासुहे,
विलसइ दारिक० । ध्रु०
किंतो मंते किंतो तंते किंतो रे झाण बखाने,
अपइ ठान महासुह लीणे दुलख परम निवाणे । ध्रु०
दुःखें सुखें एक्कु करिआ भुञ्जइ इंदीजानी,
स्वपरापर न चेवइ दारिक सअलानुत्तर मानी । ध्रु०
राआ राआ राआरे अवर राअ मोहरा बाधा,
लुइ-पाअ-पए दारिक द्वादशभुअणें लधा ।" ध्रु०

नाम—(११/१०) डोंभिपा (सिद्ध ४) ।

समय—८७० के लगभग ।

ग्रंथ—(१) अक्षरद्विकोपदेश, (२) डोंबि-गीतिका, (३) नाडीविंदुद्वारेयोगचर्या ।

विवरण—यह महाशय मगध देश-निवासी क्षत्री थे । इनके गुरु वीणापा और विरूपा दोनो थे । डोंभिपाद के नाम से तंजूर में २१ ग्रंथ मिलते हैं, पर इसी नाम के एक और सिद्ध हो गए हैं, अतः ठीक नहीं कहा जा सकता कि कौन ग्रंथ किसका है ।

उदाहरण—

राग देशाख १०

'नगर बारिहिरें डोंबि तोहोरि कुड़िया,
छइ छोइ याइ सो बाह्य नाड़िआ । ध्रु०
आलो डोंबि तोए सम करिबे म सांग,
निघिण कारह कापालि जोइ लाग । ध्रु०
एक सो पद्मा चौसट्ठी पाखुड़ी,
तहि चड़ि नाचअ डोंबी बापुड़ी । ध्रु०
हालो डोंबी तो पुछमि सद्भावे,
अइससि जासि डोंबि काहरि नावें । ध्रु०

तांति विकणअ डोंबी अवर ना चंगता,
तोहोर अंतरे छाड़िनड एड्टा । ध्रु०
तुलो डोंबी हाउँ कपाली,
तोहोर अंतरे मोए घलिलि होडरि माली । ध्रु०
सरबर भांजीय डोंबी खाअ मोलाण,
मारमि डोंबि लेमि पराण ।" ध्रु०

धनसी राग १४

"गंगा जउना माँझेरे बहइ नाई,
तहिं बुड़िली मातंगि पोइआ लीले पार करेइ । ध्रु०
वाहतु डोंबी वाहलो डोंबी वाटत भइल उछारा,
सद्‌गुरु पाअ-पए जाइब पुणु जिणउरा । ध्रु०
पाँच केडु अल पड़ंते मांगे पिटत काच्छी बांधी,
गअण दुखोलें सिंचहु पाणीन पइसइ सांधि । ध्रु०
चंद सूज्ज दुइ चका सिठी संहार पुलिंदा,
वाम-दहिण दुइ माग न खेइ वाहतु छंदा । ध्रु०
कवडी न लेइ बोडी न लेइ सुच्छडे पार करेइ,
जो रथे चड़िला वाहवाण जाइ कुलें कुल बुड़इ ।" ध्रु०

भिक्षावृत्ति-नामक पुस्तक में, जो तंजूर में है, इनका यह दोहा मिलता है ।

निम्न-लिखित पाठ ल्हासा के मुक्तबिहार की हस्त-लिखित प्रति के अनुसार है—

"भुज्जइ मअण सहाव र कमइ सो सइअल,
मोअ ओ धम करंडिया मारउ काम सहाउ ;
अच्छउ अक्ख ज पुनइ, सो संसार-विमुक्क,
ब्रह्म महेसर णारायणा, सक्ख असुद्ध सहाव ।"

नाम—($\frac{१}{११}$) भूसुक या शांतिदेव (सिद्ध ४१) ।

समय—सं० ८७० के लगभग।

ग्रंथ—सहजगीति।

विवरण—नालंद के पास क्षत्रिय-वंश में पैदा हुए थे, और भिक्षु होकर उसी बिहार में रहने लगे। उस समय गौड़ेश्वर देवपाल वहाँ के राजा थे, जिनका समय सं० ८६६ से ९०६ तक कहा जाता है। उपर्युक्त ग्रंथ मागधी हिंदी में लिखा हुआ भोटिया-भाषा में मिलता है।

उदाहरण—

राग कामोद २७

"अधराति-भर कमल विकसउ,
बतिस जोइणी तसु अंग उह्णसिउ। ध्रु०
चालिउअ षषहर मागे अवधूइ,
रअणहु पहजे कहेइ। ध्रु०
चालिअ षषहर गउ णिवाणें,
कमलिनी कमल बहइ पणालें। ध्रु०
विरमानंद विलक्षण सुध,
जो एथु बूझइ सो एथु बुध। ध्रु०
भूसुक भणइ मइ बूझिअ मेलें,
सहजानंद महासुह लोले।" ध्रु०

राग मल्लारी ४९

"बाज णाव पाड़ी पँडआ खालें वाहिउ,
अदल बंगाले क्लेश लुड़िव। ध्रु०
आजि भूसुक बंगाली भइली,
णिअ घरणी चंडाली लेली। ध्रु०
डहि जो पंचवाट णइ दिवि संज्ञा णठा,
ण जाणमि चिअ मोर कहिं गइ पइठा। ध्रु०

सोण तरुअ मोर किंपि ण थाकिउ,
निअ परिवारे महासुहे थाकिउ। ध्रु०
चउकोड़ि भंडार मोर लइआ सेस,
जीवंते मइलें नाहि विशेष।" ध्रु०

नाम—($\frac{१}{१२}$) कराहपा (सिद्ध १७) या कर्णपा और कृष्णपा भी था।

समय—सं० ८८० के लगभग।

ग्रंथ—कान्हपादगीतिका, महाढुंढनमूल, वसंततिलक, असंबंध-दृष्टि, वज्रगीति और दोहा-कोष मगही भाषा में हैं। इनके अतिरिक्त इनके और भी बहुत-से ग्रंथ संस्कृत या पाली में हैं। ये सब ग्रंथ तंजूर में हैं।

विवरण—इनका जन्म कर्णाटक में हुआ था। जाति के ब्राह्मण थे। महाराज देवपाल के समय में थे। सं० ८९६-९०६ तक जिनके राज्य का समय था। इनके गुरु का नाम सिद्ध जालंधरपाद है। इनको ८४ सिद्धों में बहुत बड़ा पंडित कहते हैं। इनके सात-आठ शिष्य चौरासी सिद्धों में गिने जाते हैं। धर्मपा, कंतलिपा, महीपा, उधलिपा और भदेपा थे, तथा कनखला और मेखला दो योगिनियाँ थीं। जवलिपा इनके प्रशिष्य थे।

उदाहरण—

आगम बेअ पुराणे, पंडित मान वहंति ;
पक्क सिरीफल अलिअ जिम वाहेरित भ्रमयंति।
अहण गमइ उहण जाइ, वेणि-रहिअ तसु निच्चल पाइ।
भणइ कह्ण मन कहवि न फुट्टइ, निच्चल पवन घरिणि घर वत्तइ।
एक्कण किज्जइ मंत्र ण तंत, णिअ घरणि लइ केलि करंत।
णिअ घर घरिणी जावण मज्जइ ताव कि पंच वर्ण विहरिज्जइ।
जिमि लोण विलिज्जई पाणिएहि, तिम घरणी लइ चित्त ;
समरस जइ तक्खणे, जइ पुणु ते सम नित्त।

वज्रगीतिका

कोल्लअ रे ठिअ बोल्ल, मुम्मुणि रे कक्कोल,
घने किपीटह वज्जइ, करुणे किअइ णरोला।
तहि पल खज्जइ गाढ़ें, मअ णा पिज्जइ,
हले कलिंजर पणिअइ, दुंदुर वज्जिअइ।
चउसम कत्थुरि सिल्हा, कप्पुर लाइअइ,
मालइ धाण-सालि अइ, तहिं भलु खाइअइ।
पेंखण खेट करंत, शुद्धाशुद्ध ण मणिअइ,
निरंशु अंग चडावि अइ, तहिं जस राव पणिअइ,
मल अज्ज़े कुंदुरु वापइ, डिंडिम तहिन्न वंजि अइ।

राग पटमंजरी

नाड़ि शक्ति दिट धरि अखदे, अनहा डमरु बाजए वीर नादे।
कांह्न कपाली योगी पइठ अचारे, देह-नअरी विहरए एकारें। ध्रु०
आलि कालि घंटा नेउर चरणे, रवि-शशि-कुंडल किउ आभरणे। ध्रु०
राग-देश-मोह लाइअ छार, परम मोख लवए मुत्तिहार। ध्रु०
मारिअ शासु नणंद घरे शाली, माअ मारिआ कांह्न भइअ कवाली। ध्रु०

राग पटमंजरी ३९

सुण वाह तथता पहारी, मोह भंडार लुइ स अला अहारी। ध्रु०
घुमइ न चेवइ सपरविभागा, सहज निदालु कान्हिला लांगा। ध्रु०
चेअण ण वेअन भर निद गेला, सअल सुफल करि सुहे सुतेला। ध्रु०
स्वपणे मइ देखिल तिभुवण सुण, घोरिअ अवणा गमण विहुल। ध्रु०
शाथि करिब जालंधरि पादे, पाखिण राहअ मोरि पाडिआ चादे। ध्रु०

नाम—($\frac{1}{13}$) तांतिपा (सिद्ध १२)।

समय—सं० ८८० के लगभग।

ग्रंथ—'चतुर्योगभावना' ग्रंथ तंजूर में है।

विवरण—यह महाशय उज्जैन के तंतुवाय (कोरी) थे। जालंधर—

पाद के शिष्य होकर सिद्ध-संप्रदाय में हो गए। कण्हपा भी इनके गुरु थे। उन्हीं से इनके समय का पता लगता है। उपर्युक्त ग्रंथ पुरानी मालवी या मगही में लिखा है। इनका जो उदाहरण नीचे दिया जाता है, वह चर्यागीति का है।

राग पटमंजरी

टालत मोर घर नाहि पड़वेषी, हाड़ी ते भात नाँहि निति आवेशी। ध्रु०
वेंग संसार बड़्हिल जाग्र, दुहिल दुधु कि पेटे षमाय,
बलद बिग्राएल गाविग्रा बाँझे, पिटा दुहिए एतिना साँझे।
जो सो बुधी सो धनि बुधी, जो षो चोर सोइ साधी,
निते-निते षिग्राला षिहेषम जुझग्र, ढेण्णण पाएर गीत बिरले बूझग्र।

यह पद चर्यागीति में ढेंढनपाद के नाम से है, पर इस नाम का कोई सिद्ध नहीं हुआ। इसीलिये कुछ लोग इसे तंतिपाद का मानते हैं।

नाम—(१/१४) मीनपा (सिद्ध ८)।

समय—सं० ८८० के लगभग।

ग्रंथ—'बाह्यांतर बोधिचित्तबंधोपदेश' तंजूर में है।

विवरण—यह महाशय मछुए थे। इनका जन्म आसाम में हुआ था। इनके पुत्र 'मत्स्येंद्रनाथ' थे, जिनके शिष्य प्रसिद्ध महात्मा गोरखनाथ कहे जाते हैं। गोरखनाथजी के समय में मतभेद है। इनका पंथ आज भी भारतवर्ष में प्रस्तुत है, जिसके माननेवाले लाखों मनुष्य हैं। इनकी रचना का उदाहरण चर्यागीति से दिया जाता है।

उदाहरण—

कहंति गुरु परमार्थेर बाट, कर्म कुरंग समाधिक पाट।
कमल विकसिल कहिह ण जमरा, कमल मधु पिविबि धोके न भमरा।

नाम—(२/१) भादेपा (सिद्ध ३२)

समय—सं० ९०० के लगभग।

ग्रंथ—तंजूर में इनका कोई ग्रंथ नहीं मिला।

विवरण—श्रावस्ती के चित्रकार-कुल में उत्पन्न हुए थे। सिद्ध कण्हपा के शिष्य थे। उन्हीं से इनके समय का पता लगता है। चर्या-गीति से इनकी एक गीति लिखी जाती है—

राग मल्लारी ३५

एत काल हाँउ अच्छिलें स्वमोहें, एवें मइ बुझिल सद्गुरु बोहें। ध्रु०
एवें चिअराअ मकु णठा, गण समुदे टलिआ पइठा। ध्रु०
पेखमि दह दिह सर्वइ शून, चिअ विहुने पाप न पुण्ण। ध्रु०
बाजुले दिल मोहकखु भणिआ, मइ अहारिल गअणत पणिआँ। ध्रु०
भादे भणइ अभागे लइआ, चिअराअ मइ अहार कएला। ध्रु०

नाम—(३/२) महीपा (महिल) (सिद्ध ३७)।

समय—सं० ९०० के लगभग।

ग्रंथ—वायुतत्त्व-दोहा-गीतिका।

विवरण—यह महाशय मगध देश के शूद्र थे। इनके गुरु सिद्ध कण्हपा थे। तंजूर में इनका ऊपर लिखा ग्रंथ मिला है, जो पुरानी मगही का है। यह महीपा और महीधरपाद एक ही जान पड़ते हैं। चर्यागीति से, जो भिन्न-भिन्न कवियों की रचनाओं का एक संग्रह है, इनकी गीति लिखी जाती है। इनका समय कण्हपा के आधार पर लिखा गया है।

राग भैरवी

तिनिएँ पाटे लागेलि रे अणह कसण घण गाजइ,
तासुनि मार भयंकर रे सअ मंडल सएल भाजइ।
मातेल चीअ-गअंदा धावइ निरंतरगअणंत तुसें घोलइ। ध्रु०
पाप-पुण्य वेणि तिड़िअ सिकल मोड़िअ खंभाठाण,
गअण टाकलि लागिरे चित्ता पइठ णिवाना। ध्रु०
महारस पाने मातेल रे तिहुअन सएल उएखी,
पंच विषय रे नायक रे विपख को बीन देखी। ध्रु०

खर रवि किरण संतापे रे गअणांगण गइ पइठा,
भणंति सहित्ता महिष्पा मइ एथु बुड़ंते किंपि न दिठा। ध्रु०

नाम—(२/३) कंबलपाद (सिद्ध ३०)।

समय—सं० ६१५ के लगभग।

ग्रंथ—(१) असंबंध-दृष्टि, (२) असंबंध-सर्ग-दृष्टि, (३) कंबलगीतिका।

विवरण—उड़ीसा के राजवंश में इनका जन्म हुआ था। भिक्षु होकर त्रिपिटक के पंडित हुए। इनके गुरु का नाम घंटापाद था। सिद्ध राजा इंद्रभूति इनके शिष्य थे। उपर्युक्त ग्रंथ प्राचीन उड़िया या मगही में लिखे हुए हैं।

उदाहरण—

राग देवकी ८

"सोने भरिती करुणा नावी,
रूपा थोइ महिके ठावी। ध्रु०
वाहतु कामलि गअण उबेसें,
गेली जाम बहु उइ काइसें। ध्रु०
खुंटि उपाड़ी मेलिलि काच्छि,
वाहतु कामलि सद्गुरु पुच्छि। ध्रु०
मांगह चंहिले चउदिस चाहअ,
केडुआल नहि कें कि बाहब के पारअ। ध्रु०
वाम-दाहिण चापा मिलि-मिलि मागा,
वाटत मिलिलि महासुह संगा।" ध्रु०

नाम—(२/४) जालंधरपाद अथवा आदिनाथ (सिद्ध ४६)।

समय—सं० ६२५ के लगभग।

ग्रंथ—(१) विमुक्त-मंजरी गीत, (२) हूंकार-चित्त-बिंदु-भावना-क्रम।

विवरण—नगर भोग देश (?) के ब्राह्मण-वंश में उत्पन्न हुए थे। पीछे घंटापाद के शिष्य होकर भिक्षु हो गए। इनके शिष्य प्रसिद्ध मत्स्येंद्रनाथ, कराहपा और तंतिपा थे। कराहपा महाराज देवपाल (सं० ८६६-९०६) के समय में हुए थे। उन्हीं से इनके समय का पता लगता है।

उदाहरण—

राग निवेद, ताल साठ ७६

"अखय निरंजन अद्धंप अनु
पद्‌म गगन कमरंजे साधना,
शून्यता विरासित रायश्री चिय
देवपान-विंदु समय जो दिता। ध्रु०
नमामि निरालंब निरच्चर
स्वभाव हेतु स्फुरन संश्रापिता,
सरद-चंद्र-समय तेज प्रकासिता
जरज-चंद्र समय व्यापिता। ध्रु०
खडग योगांवर सादिरे चक्रवर्ति
मेरु-मंडल भमलिता
निर्मल हृदयारे चक्रवर्ति ध्याविते
अहितिसिच्चंजत्र मय साधना। ध्रु०
आनंद-परमानंद विरमा
चतुरानंद जे संभवा ;
परमा बिरमा माँझे रे न छादिरे
महासुख सुगत संग्रद प्रापिता। ध्रु०
हे वज्रकार चक्र श्रीचक्रसंवर
अनंत कोटि सिद्ध पारंगता,

श्रीहतवदियाने पूर्ण गिरि,
जालंधरि प्रभु महासुख-जातहुँ।" ध्रु०

नाम—($\frac{२}{५}$) कंकणपाद (सिद्ध ८९)।

समय – सं० ९५० के लगभग।

ग्रंथ—चर्यादोहाकोषगीतिका। ग्रंथ तंजूर में मिला है।

विवरण—विष्णुनगर के राजवंश में उत्पन्न हुए थे, और कंबलपा-वाले परिवार के सिद्ध थे। चर्यागीति से उदाहरण दिया जाता है। कंबलपाद ९१५ के थे। इससे इनका समय ९५० के लगभग समझ पड़ता है।

सुने सुन मिलिआ जबें, सअल धाम उइआ तबें। ध्रु०
आच्छु हुँ चउखण संबोही, माझ निरोह अणु अर बोही। ध्रु०
बिंदु-णाद णहिं ए पइठा, अण चाहंते आण विणठा। ध्रु०
जथा आइलेंसि तथा जान, माएँ थाकी सअल विहाण। ध्रु०
भणई कंकण कल एल सादें, सर्व विच्छुरिल तथता नादें। ध्रु०

नाम—($\frac{२}{६}$) तिलोपा (सिद्ध २२)।

समय—सं० ९५५ के लगभग।

ग्रंथ—अंतरबाह्यविषयनिवृत्ति-भावनाक्रम, करुणाभावनाधिष्ठान, दोहा-कोष और महामुद्रोपदेश।

विवरण—इनका जन्मस्थान भगुनगर (? बिहार) था। यह महाशय गुह्यापा के शिष्य तथा कण्हपा इनके दादा-गुरु थे। विक्रम-शिला के सिद्ध नारोपा इनके पट्ट शिष्य थे। इनके ऊपर लिखे मगही भाषा के ग्रंथ तंजूर में सुरक्षित हैं।

उदाहरण—

स संवेअन तंतफल, तिलोपाए भणंति;
जो मण गोअर गोइया, सो परमथे न होंति।

नाम—($\frac{३}{०अ}$) नाड(नारो)पा (सिद्ध २०)।

समय—सं० १०३० के लगभग।

ग्रंथ—(१) नाडपंडितगीतिका, (२) वज्रगीति।

विवरण—इनके पिता काश्मीर-निवासी ब्राह्मण थे। वह मगध में आए थे, वहीं इनका जन्म हुआ। बहुत बड़े विद्वान् होकर सिद्ध तिलोपा के शिष्य हो गए। नालंद-विद्यालय में शिक्षा पाई थी। विक्रमशिला में पूर्व द्वार के महापंडित हुए। इनका देहावसान सं० १०९६ में होना कहा जाता है। उदाहरण-स्वरूप इनकी कोई रचना नहीं मिलती। चर्यागीति में ताडकपाद के नाम से एक पद मिलता है, पर इस नाम के कोई सिद्ध नहीं हुए। संभवतः यही ताडकपाद नाडकपाद हैं। वह गीति नीचे दी जाती है—

अपणे नाहिं सो काहेरि शंका,
ता महामुदेरी टूटि गेलि कंथा। ध्रु०
अनुभव सहज मा भोलरे जोई,
चोकोट्टि विमुका जइसो तइसो होइ। ध्रु०
जइसने अछिले स तइछन अच्छ,
सहज पिथक जोइ भाँति माहो वास। ध्रु०
बांड कुरु संतारे जाणी,
वाक्पथातीत काँहि बखाणी। ध्रु०
भणइ ताडक एथु नाहि अवकाश,
जो बुझइ ता गलें गलपास। ध्रु०

नाम—(०³आ) जयानंत(जयनंदी)पाद (सिद्ध ५८)।

समय—सं० १०५० के लगभग।

ग्रंथ—तर्कमुद्गरकारिका और मध्यमकावतार टीका तंजूर में है। चर्यागीति से इनकी गीति नीचे लिखी जाती है।

विवरण—यह जाति के ब्राह्मण भागलपुर-नरेश के मंत्री थे। इनके गुरु-शिष्य का पता नहीं लगता; अतः समय का भी ठीक

ज्ञान नहीं हो सका है। भाषा आदि से सं० १०५० के लगभग जान पड़ते हैं।

राग शबरी

पेखु सुअणे अदश जइसा,
अंतराले मोह तइसा। ध्रु०
मोह-विमुक्का जइ माणा,
तवे तूटइ अवणा गमणा। ध्रु०
नौ दाढइ नौ तिमइ न च्छिजइ,
पेख मोअ मोहे बलि-वलि बाझई। ध्रु०
छाअ माआ काअ समाणा,
वेणि पाखें सोइ विणा। ध्रु०
चिअ तथता स्वभावे षोहिअ,
भणइ जअनंदि फुडण अणण होइ। ध्रु०

नाम—(३) शांतिपा (रत्नाकर शांति) (सिद्ध १२)।

समय—सं० १०७० के लगभग।

ग्रंथ—सुख-दुःखद्वयपरित्यागदृष्टि।

विवरण—यह महाशय मगध के ब्राह्मण-कुल में उत्पन्न हुए थे। बहुत बड़े विद्वान् थे। सिद्धनाडपाद का इनका संग रहा। कहा जाता है, सिद्धों में इनके बराबर कोई दूसरा पंडित नहीं था। महाराज महीपाल (१०३१-१०८३) के समय में विक्रम-शिला, बिहार में पूर्व द्वार के पंडित बने। इनकी आयु १०० वर्ष से अधिक की कही जाती है। भोटका मरवालोचवा इन्हीं का शिष्य था, और तिब्बत के सर्वोत्तम कवि और सिद्ध जे-चुन् मि-ला रे-पा (दीक्षा सं० ११२३, मृत्यु ११७९) इनके चेले थे। चर्यागीति से इनकी गीति लिखी जाती है—

राग रामक्री १५

सत्र- संवेत्रण सहत्र विश्रारें, ते अलक्ख लक्खण न जाइ ।
जेजे उजूवाटे गेला अनावाटा भइला सोई । ध्रु०
कुले कुल मा होइ रे मूढ़ा उजूवाटे संसारा,
वालभिण एकुवाकु ण भूलह राजपथ कंटारा । ध्रु०
माश्रा मोहा समुदारे अंत न बुझसि थाहा,
आगे नाव न भेला दीसत्र भांति न पुच्छसि नाहा । ध्रु०
सुनापंतर उह न दिसइ भांति न वाससि जांते,
एपा अट महासिद्धि सिज्झए उजूवाट जा अंते । ध्रु०
बाम-दाहिण दो वाटाच्छाडा शांति बुलथेउ संकेलिउ,
घाटन गुमा खड़तड़ि नो होइ आखि बुजिअ बाट जाइउ । ध्रु०

राग शीवरी २६

तुला धुणि-धुणि आँसुरे आँसु, आँसु धुणि-धुणि णिखर सेसु । ध्रु०
तउषे हेरुत्र ण पाविअइ, सांति भणइ किण सभावि अइ । ध्रु०
तुला धुणि-धुणि सुने अहारिउ, पुन लइआं अपना चटारिउ । ध्रु०
बहल बट दुइ मार न दिशअ, शांति भणइ बालाग न पइसअ । ध्रु०
काज न कारण जएहु जअति, सँएँ सँवेअण बोलथि सांति । ध्रु०

नाम—(१७/१) जज्जल ।

समय—सं० १२५७ ।

विवरण—महाराणा हम्मीरसिंह मेवाड़ के सेनापति थे ।

उदाहरण—

"पत्र भरु दर भरु धरणि तरणि रह धुल्लिअ झंपिअ ;
कमठ पिट्ठ टरपरिअ मेरु मंदर सिर-कंपिअ ।
कोह चलिअ हम्मीर वीर गअ-जूह सँजुत्ते ;
किअउ कट्ठ आकंद मुच्छि म्लेच्छह के पुत्ते ।

पिंधउ दिढ़ सरणाह वाह-उप्पर पक्खर दइ ;
बंधु समदि रण धसउ सामि हम्मीर वअण लइ ।
उड्डुल णह-पह भमउ खग्ग रिउ सीसहि डारउ ;
पक्खर पक्खर ठिल्लि पिल्लि पब्बअ उप्फालउ ।
हम्मीर कज्जु जज्जल भणइ, कोहाणल मुह मह जलउ ;
सुलतान सीस करवाल दइ, तेज्जि कलेवर दिअ चलेउ ।"

यह उदाहरण प्राकृत पैंगल (रॉयल एशियाटिक सोसाइटी) में उद्धृत है ।

नाम—(२३/२) शेख़ सुल्तान, महाराष्ट्र-प्रांत ।

ग्रंथ—स्फुट ।

कविता-काल—सं० १४५० ।

विवरण—यह सेननाई के समकालीन कवि थे । मुसलमान होते हुए भी इन्होंने श्रीकृष्ण-भक्ति पर भाव-पूर्ण रचनाएँ कीं । इनके अतिरिक्त क़ाज़ी मुहम्मद, ज़िंदा फ़क़ीर, सैयदहुसेन, बहादुर बाबा, लतीफ़शाह मुनीर, फ़ाज़िलख़ाँ, शाहबेग, सुल्तानशाहिद, क़ादिर, शेख़ मुहम्मद आदि मुसलमान हिंदी-कवि इस प्रांत में हो गए हैं ।

नाम—(२३/३) फ़रीद, महाराष्ट्र-प्रांत ।

ग्रंथ—स्फुट ।

कविता-काल—सं० १४५० ।

विवरण—यह कवि शेख़ सुल्तान के साथी और सेननाई के समकालीन थे । श्रीकृष्ण-भक्ति पर इन्होंने अधिकांश रचनाएँ कीं ।

नाम—(१३१/२) चंपा दे रानी ।

रचना-काल—सं० १६२७ के लगभग ।

कविता—श्रृंगार-रस के स्फुट छंद ।

विवरण—यह बीकानेर-नरेश राजा पृथ्वीराज की रानी तथा

लाला दे की सपत्नी थीं। इनकी कविता राजस्थानी मिश्रित हिंदी में हुआ करती थी।

नाम—($\frac{१६४}{१}$) मोहनदास।

रचना-काल—सं० १५५० के लगभग।

ग्रंथ—(१) सोरठावली, (२) दोहावली, (३) रागावली, (४) विश्वब्रह्मज्ञान, (५) बारहमासा, (६) कवितावली, (७) सवैयावली।

विवरण—श्रीयुत भालेरावजी का कथन है कि यह कवि ग्वालियर-राज्यांतर्गत तवरधार-प्रांत के निवासी गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी के समकालीन थे। आप मोहन-पंथ-नामक निर्गुणी मत के प्रतिपादक कहे जाते हैं। भालेरावजी महाशय को बहुत-से छंद इन के प्राप्त हुए हैं।

(१८६) नाम—चतुर्भुज कवि, ओरछा।

जन्म-काल—अनुमानतः १६२० वि०।

कविता-काल—　,,　१६४७ वि०।

तत्कालीन महाराजा श्रीवीरसिंहदेव प्रथम के आश्रित।

उदाहरण—

सेत चमर चिलकंत दंत डगमगत डगत डग ;
शीश हलत तन डुलत चित्त चित्त मिलत धरत पग।
द्रग्ग झरत श्रुत अश्रुत वास नासा भ्रम भुल्लिय ;
काल ढिकह ढुक्कियह आन यह औसर चुक्किय।
जंपहि न राम 'चत्रभुज' प्रबल, रहव सकल दिन दुरद वर ;
सुम्झह असुम्झ संझह फजर, है कछु खबर कि बे खबर।

सोरठा

अरे ब्रसिंहा वीर, नेक न चितवत डोकरा ;
पातक नसत शरीर, जब थारा मुख दिक्खियाँ।

आतंक्यो असपत्त उठिव विरसिंघ सिंव विय ;
दुवन देश दलमलन देश दक्खिन दिय कंपिय।
फिर कंपिय गुजरात बहुर उत्तर सु कंप कर ;
काल पींठ दे गयव देख अति ज्वाल विषम झर।
अंगवय देव दानव न कोइ, 'चत्रभुज' जग जहँ जितियव ;
असि टेक अवनि पग टेककर, धरम टेक ठड्डिय भयव।

नाम—(२५६/१) केशव मिश्र।

रचना-काल—सं० १६७५।

ग्रंथ—जहाँगीरजसचंद्रिका।

नाम—(२७२/१) महाराजा विक्रमाजीतसिंह, ओरछा-नरेश, ओरछा।

कविता-काल—सं० १६८० वि०।

उपनाम 'लघु'

ग्रंथ—(१) लघु सतसई, (२) माधव-लीला।

उदाहरण—

तू मोहन उर बस रही, मोहन उर बस कीन ;
सब लीनें तो में रहें, तू उन ही बिच लीन।
है जमुना जम ना जहाँ, जमुना नाम-प्रकास ;
बाहुल शुक्का न्हाइ तहँ, मिटे जमपुरी त्रास।
जाँ जमुना जमु ना जहाँ, ना जम उर तेहि ठाँइ ;
विमल मना हरि रँग सना, हो जु अघन दुखदाइ।

नाम—(२७४/१) शिवलाल मिश्र, ओरछा।

कविता-काल—सं० १६८० वि०, जन्म सं० अनुमानतः १६६०।
महाकवि बलभद्रजी के पौत्र।

विवरण—यह राजपूताने में दादूदयाल के शिष्य रज्जवदास के शिष्य थे।

नाम—(३२६/१) सुंदर।

ग्रंथ—द्वादश-मासा-वर्णन।

विवरण—श्रीयुत भालेरावजी का कथन है कि आप ग्वालियर-निवासी तथा बादशाह शाहजहाँ के समकालीन थे, और उक्त ग्रंथ (२४ छंद) उन्हें प्राप्त हुआ है। काव्य उच्च कोटि का कहा जाता है।

नाम—(३४३/१) अक्खा, ग्राम जेतलपुर (अहमदाबाद) प्रांत गुजरात।

रचना-काल—सं० १७०५।

ग्रंथ—(१) अक्खेगीता, सं० १७०५, (२) पंचीकरण, (३) ब्रह्मलीला, (४) अनुभवबिंदु, (५) चित्त-विचार-संवाद तथा कुछ हिंदी-कविताएँ।

विवरण—आप जाति के सुनार थे। कहा जाता है, इनके कई कुटुंबी जब काल के मुख में पड़ गए, तब इन्होंने वैराग्य धारण करके जयपुर की ओर गुरु-दीक्षा ली। इसके पश्चात् आप काशी को गए, और वहाँ रहकर आपने महात्मा ब्रह्मानंदजी से उपनिषद् और वेद-शास्त्रों का अध्ययन किया। इन्हीं की श्रेणी के एक और कवि प्रीतम नाम के गुजरात में हो गए हैं। महाशय भालेराव-लिखित आपका संक्षिप्त चरित्र अब 'संत-चरित्र-माला' के नाम से, पुस्तक के रूप में, छप चुका है। इनकी कविता 'अक्खानी वाणी'-शीर्षक में साहित्य-वर्धक मंडल से प्रकाशित हो चुकी है। आपकी कविता सात्त्विक हुआ करती थी। यह महात्मा कवि प्रेमानंद के समकालीन थे। कविता छंदोभंग-युक्त साधारण है।

उदाहरण—

जावत है सब लोक यहाँ से, आवत नहिं जन कोउ फिरी ;
राव राना से बड़े भट पंडित, कोऊ न दे पट को पतरी ।
धन, दारा, सुतादिक रहत परे, मानीनता देह-संग बरी ;
इतनी तो अपने नयन ते देखि, और 'अखा' मन ने पकरी ।

नाम—(३४७/१) हरिसिंह महाराजा ।

ग्रंथ—उषा-हरण ।

रचना-काल—सं० १७०९ ।

विवरण—यह महाशय गहलोतवंशीय महाराजा पूरनमल के पुत्र थे ।

नाम—(३५६/१) रूपसिंह (महाराजा) ।

जन्म-काल—सं० १६८९ बबेरा ग्राम में ।

रचना-काल—१७१० ।

विवरण—संवत् १७०१ में महाराजा हरीसिंहजी के भतीजे होने के कारण किशनगढ़-राज्य के अधिकारी हुए । वल्लभाचार्यजी के शिष्य गोपीनाथजी के शिष्य थे । शाहजहाँ के दरबार में आपका बड़ा मान था । दारा के सहायक होने के कारण धौलपुर के युद्ध में वीर-गति को प्राप्त हुए । वीर होने के अतिरिक्त कविता-प्रेमी तथा स्वयं कवि थे ।

उदाहरण—

बन तैं बानक बनि ब्रज आवत ।
बेनु बजाय रिझाय जुवति जन गौरी रागहिं गावत ।
वारिज बदन लाल गिरिधर को निरखि सखी सचुपावत ।
रूप कटाच्छ करत प्यारी पर रूपहि मन अति भावत ।

नाम—(३७६/१) केहरि, महाराष्ट्र-प्रांत ।

ग्रंथ—स्फुट ।

कविता-काल—सं० १७१० ।

विवरण—ये राजा शाहजी के दरबारी कवि थे। उनके गुण-गान में इन्होंने फुटकर छंद लिखे।

नाम—(३७६/२) गयंद कवि और सुधार कवि, महाराष्ट्र-प्रांत।

ग्रंथ—स्फुट।

कविता-काल—१७१०।

विवरण—ये दोनो राजा शाहजी के दरबारी कवि थे। गयंद कवि के नाम का उल्लेख सूदन कवि ने 'सुजान-रासो' में किया है।

नाम—(३७६/३) चतुरद ठाकुर, महाराष्ट्र-प्रांत।

ग्रंथ—स्फुट।

कविता-काल—सं० १७१०।

विवरण—यह राजा शाहजी के दरबारी कवि थे।

नाम—(३८३/१) बलभद्र कवि, महाराष्ट्र देश।

कविता-काल—१७१०।

विवरण—आप राजा शाहजी के यहाँ एक दरबारी कवि थे। आपको राजा शाहजी ने पारितोषिक में एक हाथी दिया था। इस कवि का वर्णन यों पाया जाता है—

एक बड़ो बलभद्र कवि रह्यौ शाह के साथ;
उहु गज नृप के प्रीति को लेन लगायो हाथ।

आपकी समस्या-पूर्ति में कवि जयरामजी ने राजा शाहजी का मीर जुमला से युद्ध होने का इस प्रकार वर्णन दिया है—

बीस सहस असवार वर मिर जुमला के संग;
जंग करत रण रंग मों उन्ह यों पायो भंग।

नाम—(३८४/२) विश्वंभर भट्ट, महाराष्ट्र-प्रांत।

ग्रंथ—स्फुट।

कविता-काल—सं० १७१०।

विवरण—इन्होंने अपने आश्रयदाता राजा शाहजी की तिलंगाना,

कलिंग, कर्नाटक आदि की चढ़ाइयों का 'अमृतध्वनि और 'कलसा' छंदों में वर्णन किया है।

उदाहरण—

अद्भुत नरपति शाह, देखि तुव प्रबल बाहुबल ;
मज्जत जित तित भाजत और समेत शत्रु-दल।

नाम—(३८५/१) रघुनंदन, महाराष्ट्र-प्रांत।

ग्रंथ—स्फुट।

कविता-काल—सं० १७१०।

विवरण—यह राजा शाहजी के दरबारी और व्रजभाषा के कवि थे।

नाम—(३८५/२) रघुनाथ व्यास, महाराष्ट्र-प्रांत।

ग्रंथ—स्फुट।

कविता-काल—सं० १७१०।

विवरण—यह राजा शाहजी के दरबारी कवि थे। जयराम कवि ने इनकी समस्या-पूर्ति इस प्रकार की थी—

वालम की बाट लखैं बार-बार बावरी-सी,
बैरिन की बधू फिरैं बेरन के बन मैं।

नाम—(३८६/१) शिवदास ठाकुर, महाराष्ट्र-प्रांत।

ग्रंथ—स्फुट।

कविता-काल—सं० १७१०।

विवरण—यह राजा शाहजी के दरबारी कवियों में थे।

नाम—(३८६/२) श्याम गुसाईं, महाराष्ट्र-प्रांत।

ग्रंथ—स्फुट।

कविता-काल—सं० १७१०।

विवरण—यह राजा शाहजी के दरबारी कवि थे। इनके इस दोहे को

"श्याम गुसाईं यों कही, अंबा तोहि सहाय ;
अर्थ चित्र कछु कवि कहौ, जापर रीझैं शाह।"

कवि जयराम ने समस्या समझकर इस प्रकार पूरा किया था—

"तै तरवारि गही कर वारिज, चारि दिशा अरि राजजू भागे;
शाहबली तव बाहुन को जसु, राहु शशी बस राहन लागे।"

नाम—(३८८/१) सुखलाल, महाराष्ट्र-प्रांत।

ग्रंथ—स्फुट।

कविता-काल—सं० १७१०।

विवरण—यह राजा शाहजी के दरबारी कवि थे। इन्होंने शाहजी का मीर जुमला के साथ युद्ध और रायलू की चढ़ाई का वर्णन किया है।

उदाहरण—

देखियत नैन सोई बैन बोलियत अहैं,
सुनो लोह मकरंद जंत कलरन की।
बेडर कहावते सो सब ही डरन लागे,
डारत तरंग पौन पात मानो वन की।

नाम—(४०१/१) अज्ञात।

रचना-काल—१७१५।

ग्रंथ—(१) राठौड़वचनिका, (२) राठौड़-कुल-कवित्त।

विवरण—यह डिंगल-भाषा-काव्य है। सं० १७१२ में जालौन के राठौर रतनसिंह का जो युद्ध औरंगज़ेब से हुआ था, उसका वर्णन ग्रंथ में किया गया है। इसमें हिंदी-छंदों के अतिरिक्त कुछ गुजराती पद्य भी हैं। दूसरे ग्रंथ में राठौड़-वंश की उत्पत्ति, उसके गुरु, प्रवर, कुलदेवी इत्यादि का उल्लेख है।

नाम—(४०४/१) बाल कवि।

रचना-काल—सं० १७१५।

ग्रंथ—केशव-बावनी।

विवरण—इन्होंने उक्त ग्रंथ अपने गुरु जैन-जती श्रीकेशवाचार्य बनाया है। ग्रंथ छप्पय छंदों में है।

नाम—(४१०/२) मानसिंह, महाराष्ट्रेश।

समय—सं० १७१७।

ग्रंथ—स्फुट पद।

विवरण—आप श्रीशिवाजी महाराज के समकालीन थे। महाशय भालेरावजी का कथन है कि आपकी बहुत-सी हिंदी-कविता उनके पूना-निवासी मित्र मुजूमदार के संग्रह में है। यह कवि संभवतः नाथ-पंथी थे।

उदाहरण—

बिगरी कौन सुधारै रे, नाथ बिन बिगरी कौन सुधारै रे।
बनी बनी का सब कोइ साथी, बिगरे काम न आवै रे।
भरी सभा मों लज्जा राखी, दीनानाथ गुसाइँ रे।
भली-बुरी यह दोनो बहिनें परंपरा से आइँ रे;
नाथ जालंदर मुद्रावाले 'मानसिंह' जस गाइ रे।

नाम—(४१३/१) जगन्नाथ जोशी, जैसलमेर (मारवाड़)।

रचना-काल—सं० १७१८।

ग्रंथ—कोक-भूषण (कामशास्त्र)।

विवरण—आपने उक्त ग्रंथ जैसलमेर के महाराजा श्रीअमरसिंहजी की आज्ञा से बनाया।

नाम—(४२१/१) बख़्तावरसिंह, सकेसर, (ख़ुरासान-देश के अंतर्गत)।

ग्रंथ—राम-विनोद।

रचना-काल—१७२०।

इस विषय में कवि ने इस प्रकार उल्लेख किया है—

"गगन पाणि फुनि दीप शशि, मरु तिथि मृगसर मास;
शुक्लौ पक्ष त्रयोदशी, बुद्धवार दिनु जास।"

विवरण—ग्रंथ में वैद्यक का कविता-बद्ध वर्णन है।

नाम—(४५५/२) लाला दे, (बीकानेर की रानी) ।

रचना-काल—सं० १७२७ के लगभग ।

कविता—स्फुट छंद ।

विवरण—यह बीकानेर के राजा पृथ्वीराज की रानी थी । इन्होंने अपने पति से ही वीर-रस की कविता करनी सीखी थी । कहा जाता है, एक समय जब चित्तौड़ाधीश राणा प्रताप इनके पति राजा पृथ्वीराज के अनुरोध से बादशाह अकबर के साथ युद्ध करने को उद्यत हुए थे, तब इन्होंने अपने पति के पास निम्न-लिखित दोहा लिख भेजा था—

"पति जिद की पतसाह सूँ, यहै सुनी मैं आज ;
कहँ पातल अकबर कहाँ, करियो बड़ो अकाज ।"

राजा पृथ्वीराज को इनसे उत्कट प्रेम था । और, कहा जाता है, इनकी अकाल मृत्यु हो जाने पर उक्त राजा को अत्यंत दुःख हुआ, और उन्होंने आग पर पकाई रसोई खाना छोड़ दिया ।

नाम—(४५८/१) रामसुतात्मज, महाराष्ट्र ।

काल—सं० १७२६ ।

ग्रंथ—गोपीचंदाख्यान ।

विवरण—आप नाथ-पंथी साधु थे । ग्रंथ अनेक छंदात्मक है । इसमें छ सर्ग हैं, और प्रत्येक छंद में मराठी-हिंदी की युग्म रचनाएँ हैं ।

नाम—(४६१/१) गंगेश, महाराष्ट्र-देश ।

ग्रंथ—स्फुट छंद तथा कविता ।

विवरण—कहा जाता है, आप भूषणजी का महाराजा शिवाजी के दरबार में सम्मानित होना सुनकर उक्त महाराज के दरबार में पहुँचे थे । आपकी बहुत थोड़ी कविता उपलब्ध हुई है ।

उदाहरण—

राज मों राज सिवराज महराज सब
 साज से भूप मैं आज देखे ;
सुरत से सार दीदार भरि जान कै,
 मदन से सर्व सौंदर्य रेखे।
बख्त के तख्त सारूढ़ खुशवख्त
 दिनबख्त के धर्म सत्कर्म साठे ;
धीर गंभीर केयूर मणि मौर के
 हृदय से बंदते सब मराठे।

नाम—(४६३/१) तुलसीदास, महाराष्ट्र-प्रांत।

ग्रंथ—स्फुट।

कविता-काल—सं० १७३०।

विवरण—यह शिवाजी के समकालीन थे। इन्होंने सिंहगढ़-विजय का वर्णन पँवाड़ों में किया है।

नाम—(४७०/१) शिवराम कल्याणकर, महाराष्ट्र-प्रांत।

ग्रंथ—स्फुट।

कविता-काल—सं० १७३०।

विवरण—यह पूर्णानंद के शिष्य और समर्थदासजी के समकालीन थे।

उदाहरण—

हुकुम साहिबा का, हम तो चोपदार बाँका,
ब्रह्मा, विष्णु, महेशा, प्रभु का अवतार खासा ;
दश चारो पर सत्ता, ब्रह्मा सत्यलोक का दाता,
पूर्ण गुरु शिवराम बंदा, बंदगी कर ले ये खादा।

नाम—(४७०/१) जगन्नाथ।

ग्रंथ—नासकेतु-उपाख्यान।

रचना-काल—सं० १७३४।

नाम—(४६०/२) प्रेमानंद, उपनाम प्रेमसखी, गुजरात-प्रांत।

ग्रंथ—स्फुट रचनाएँ।

विवरण—इनकी कविताएँ प्रेम-रस-पूर्ण हुआ करती थीं। आप कवि सामल भट्ट (सं० १६८४-१७४४) के समकालीन तथा सहजानंद स्वामी के शिष्य थे। मुख्यतः इनकी रचनाएँ गुजराती भाषा में होने के कारण उस प्रांत के यह एक महान् कवि कहे जाते हैं। अभिमन्यु-आख्यान-नामक ग्रंथ में इनका एक हिंदी-पद्य पाया जाता है।

नाम—(४६१/१) अज्ञानदास, महाराष्ट्र-प्रांत।

ग्रंथ—मराठी-हिंदी-मिश्रित पँवाड़े।

कविता-काल—सं० १७३५।

विवरण—यह गोंधली जाति के थे। राजपूताने के भाट-चारणों की तरह महाराष्ट्र-प्रांत में इस जाति के लोग वीर तथा शृंगार-रस-पूर्ण पँवाड़े और लावनियाँ गाया करते थे। इन्होंने अफ़ज़लख़ाँ के वध का पँवाड़ा महाराज शिवाजी और उनकी माता को सुनाया था।

उदाहरण—

अफ़ज़ल—"तू तो कुनबी का छोकरा।"

शिवाजी—"तू बी भटारनी का छोरा,
शिवाजी सरजा पर लाया तोरा;

× × ×

अब्दुल जाति का भटारी,
तू तो करता दुकानदारी।"

नाम—(४६१/२) आत्माराम, महाराष्ट्र-प्रांत।

ग्रंथ—स्फुट।

कविता-काल—सं० १७२५ ।

विवरण—यह औरंगज़ेब बादशाह के समकालीन, साधु पुरुष और फ़ारसी के ज्ञाता थे । कहा जाता है, उक्त शाह इनकी भेट से प्रसन्न हुआ था ।

उदाहरण—

> चलो भाई, दत्तनगर कोइ आवेगा, आवेगा, सुख पावेगा ।
> जावेगा, पछतावेगा, जम के हाथ बिकावेगा ।
> सत्यलोक से आगे चलना, बैकुंठ में नाहीं रहना ;
> कैलास को पीछे डालना, गुरु के पीछे-पीछे चलना ।
> निराकार के तख्त सँवारे, दत्त निरंजन राजा ;
> आत्माराम कहे घर अपना, बाजे अनहद बाजा ।

नाम—(४८३/१) नाथस्वामी, महाराष्ट्र-प्रांत ।

ग्रंथ—ख़ुशरंगहज़ारा (हिंदी-ग्रंथ) ।

कविता-काल—सं० १७२५ ।

विवरण—संभवतः यह नाथ-पंथी साधु थे ।

नाम—(४८३/२) बयाबाई. महाराष्ट्र-प्रांत ।

ग्रंथ—स्फुट ।

कविता-काल—सं० १७३५ ।

विवरण—यह समर्थदासजी की शिष्या थीं । इनकी कविताएँ भक्ति-भाव से पूर्ण हैं ।

उदाहरण—

पद

> बाग रँगीला महल बना है ;
> महल बीच झूलना खुला है ।
> इस झुलने पर झूलो भाई ;
> जनम-मरन की भूल न आई ।

दासी क्या कहे गुरु-मय्या ने ;
मुझकूँ झुलाया सोई झुलाने ।

नाम—(४$\frac{६}{२}$३) बस्वलिंग, महाराष्ट्र-देश ।

काल—सं० १७२९ ।

विवरण—आपकी रचना मिश्रित है ।

नाम—(४$\frac{३}{२}$८) मानसिंहजी, (महाराजा) कृष्णगढ़ ।

जन्म—सं० १७१२, भादौं सुदी ६ को माडलगढ़ में ।

रचना-काल—सं० १७३७ ।

विवरण—महाराज रूपसिंहजी के पुत्र तथा कवि थे । आपने शाहज़ादे मुअज़्ज़म के साथ कलकत्ते की यात्रा की । महाकवि वृंद का आप विशेष सम्मान करते थे । तैलंग ब्राह्मण भट्ट विट्ठलनाथजी से आपने 'संप्रदाय-कल्पद्रुम' की रचना कराई ।

नाम—(४$\frac{६}{१}$४) रायमल्ल ।

ग्रंथ—आदिपुराण ।

रचना-काल—सं० १७३७ ।

विवरण—ग्रंथ में जैनतीर्थंकर आदिनाथजी का चरित्र वर्णित है । यह एक विशाल जैन-साहित्य-संग्रह है ।

नाम—(४$\frac{६}{१}$६) केशवस्वामी भागानगरकर, हैदराबाद (निज़ाम) ।

ग्रंथ—एकादशी-चरित्र एवं स्फुट ।

कविता-काल—सं० १७३६ ।

विवरण—यह रामदासजी (शिवाजी के गुरु) के समय के साधु-पंचायतन में से एक थे । इनके पिता आत्माराम पंत, तानाशाह नामक क़ुतुबशाह के कारबारी थे (देखो विनोद द्वि० भाग, पृष्ठ ४२६) ।

उदाहरण—

पद

बच्चा करले विवेक, सबसे सब माँहिं एक ;
अपने कल्प से अपनी माया, प्रपंच मृग-जाल देख ।
बस्ती देह, जीव शील में, नाना देव अनेक ;
निर्गुण मो यह कछु नहिं भावै, केशव कहत अलेख ।

नाम—(५००/१) रूप, मेड़ताग्राम, मारवाड़ ।

रचना-काल—सं० १७२६ ।

ग्रंथ—रस-रूप (नायिका-भेद) ।

विवरण—आप पुस्करणे ब्राह्मण, रामदास के पुत्र थे ।

नाम—(५०५/१) भैरव अवधूत, उपनाम ज्ञानसागर, महाराष्ट्र-प्रांत ।

ग्रंथ—ज्ञानसागर ।

कविता-काल—सं० १७४० ।

मृत्यु-काल—सं० १८०० ।

विवरण—यह नागाजी के समकालीन कवि थे । संन्यास लेने के बाद इन्होंने अपना नाम ज्ञानसागरेंद्र रक्खा । यह वेदांती और ब्रह्मनिष्ठ थे ।

उदाहरण—

मंगल मूरति नाचत आवे, कोटि सूर्य-सम तेज ।
विकसति, ज्योति से ज्योति मिलावे ;
अनहद बाजत सबही बाजे, सोहं तान सुनावे ।
ज्ञान शिव गुरु सागर, अवधूत आतमभाव बतावे ;
मंगल मूरति नाचत आवे ।

नाम—(५११/१) विद्याधर ।

ग्रंथ—विद्याविलास ।

रचना-काल—सं० १७४० के लगभग।

विवरण—ग्रंथ में श्रीकृष्ण के मथुरा-गमन के अनंतर व्रजबालाओं की विरह-व्यथा एवं उद्धव-संदेश का कथन है। भाव, भाषा तथा वर्णन उच्च कोटि के कहे जाते हैं।

नाम—(५१६/१) रंगनाथ स्वामी निगडीकर।

मृत्यु-काल—सं० १७४१।

ग्रंथ—स्फुट कविता।

विवरण—आप श्रीरामदासजी के साधु-पंचायतन में से एक थे। आपको बाल्यावस्था से ही दंड, कुश्ती आदि व्यायाम-संबंधी खेलों का शौक़ था। कहा जाता है, जब १४ वर्ष की आयु हो जाने पर आपके विवाह की तैयारी हुई थी, तब आप बद्रीनाथ को चल दिए। इस यात्रा से लौटने पर टेहरी के राजा ने आपका उपदेश ग्रहण करके आपको घोड़े, हथियार आदि देकर सम्मानित किया। आप ऊँची श्रेणी के पंडित तथा राजयोगी साधु थे। प्रसिद्ध पंडित श्रीधर स्वामी आपके वंशज थे।

उदाहरण—

देखा नाथ गुपाला जग मों देखा नाथ गुपाला।
कलियुग में अवतार लिया है, आप रूप अविनासी;
चारों मुक्ती सेवा करतीं, होकर उसकी दासी।
घट-परघट मों आप रमे हैं, आप गुरू अरु चेला।
जोग जुगत मों खेले नित ही, झूठे घर में झूले;
छह अठरा का ले विचार वर, पंडित होकर डूले।

नाम—(५२८/१) देवदास, दादेगाँव (महाराष्ट्र-प्रांत)।

ग्रंथ—स्फुट।

कविता-काल—१७४२।

विवरण—यह दादेगाँव-मठाधिपति और रामदासजी के प्रमुख शिष्यों में से थे। मुसलमानों पर हिंदू-धर्म का प्रभाव डालकर धार्मिक एकता के सिद्धांतों का प्रचार करना इनके जीवन का मुख्य ध्येय था। कविता द्वारा निज़ाम-राज्य में हिंदी और हिंदू-धर्म का इन्होंने प्रचार भी किया था।

उदाहरण—

कही बात ये ही सही ब्राह्मणों की;
अच्छी भली-सी रहानी इन्हों की।
तुम्हारा हमारा ख़ुदा एक भाई;
कहे देवदासौ नहीं है जुदाई।

नाम—(५२७/१) परिमल।

ग्रंथ—श्रीपाल-चरित्र।

रचना-काल—सं० १७४५।

विवरण—ग्रंथ छंदोबद्ध है। रचयिता जैन जान पड़ते हैं।

नाम—(५२८/१) जसराज।

रचना-काल—सं० १७४८।

ग्रंथ—जसराज-बावनी (सवैया में)।
„ „ (छंदों में)।

विवरण—आप जैन साधु श्रीशांतिहर्ष के शिष्य थे। आप संभवतः गुजरात-देश के निवासी थे।

नाम—(५२९/अ) अज्ञात।

रचना-काल—सं० १७५०।

ग्रंथ—गुजरात की राज-चरितावली।

विवरण—ग्रंथ गुजराती में पद्यात्मक है। बीच-बीच में चारणी-भाषा का भी प्रयोग किया गया है। औरंगज़ेब के राज्य का उल्लेख ग्रंथ में होने से उसके रचना-काल का अनुमान किया गया है।

नाम—(५२६/आ) आनंदतनय, तंजोर।

ग्रंथ—स्फुट।

कविता-काल—सं० १७५०।

मृत्यु-काल—सं० १७८०।

विवरण—कहा जाता है, शिवाजी के पिता को क़ैद करने के उपलक्ष में इनको बीजापुर-राज्य से अरणी-नामक ग्राम जागीर में दिया गया था। मराठी के अच्छे कवि होते हुए भी इन्हें हिंदी-कविता से प्रेम था।

नाम—(५३०/१अ) गिरिधर, महाराष्ट्र-प्रांत।

ग्रंथ—सीता-स्वयंवर एवं स्फुट।

कविता-काल—सं० १७५०।

विवरण—यह रामदासजी की शिष्या वेणूबाई के शिष्य थे। भालेरावजी के कथनानुसार इनके रचे हुए ग्रंथों की संख्या ४० और स्फुट २४,००० छंद हैं।

नाम—(५३०/१आ) गोविंददास, मेरठ।

ग्रंथ—छंद-शास्त्र।

रचना-काल—सं० १७५० के लगभग।

विवरण—इनके ग्रंथ में दंडमेरु, पताका आदि चित्र-काव्य के उदाहरण हैं।

नाम—(४४३/०) बल्लभ (सुकवि), कृष्णगढ़।

कविता-काल—सं० १७५० के लगभग।

ग्रंथ—वल्लभ-मुक्तावली, वल्लभ-विलास।

परिचय—आप वृंदजी के पुत्र तथा नागरीदासजी के शिष्य थे।

उदाहरण—

बन-बन बाघन सौं बाघनी कहत ऐसे,
कोऊ जात छोरो जंतु कंतु दुख पावैगे ;

सुनि हैं जो माननंद महाबली राजसिंह,
ताही छिन तुरत तुरंग चढ़ि धावैंगे ।
नख जे डरारे ताकों पहिरेंगे बारे पंच,
प्रान जे तिहारे यमपुर पहुँचावेंगे ;
उधरै गो चरम कहावेंगे बाघंबर,
ताहि कोई जोगिया दिगंबर बिछावेंगे ।

नाम—(५३०/१६) मदनमोहन ।

ग्रंथ—स्फुट कविता ।

रचना-काल—१८वीं शताब्दी के मध्य-काल के लगभग ।

विवरण—इनकी रचना में अन्योक्तियों की मुख्यता है ।

उदाहरण—

रे तमचुर चितचोर और किन बोलई,
वृंदावन की कुंजनि केलि कलोलई ।
कुंजन-कुंजन फिरत सुशब्द सुनाइयो,
प्रीतम नैननि लागे जंत्र जगाइयो ।
उरन सों उर, भुजन सों भुज संग, सोवति चैन सों,
अधर-अमृत पियत लटके नैन लटके नैन सों ।
अलक अलकनि माँझ उरझी भाल लाल गुलाल सों,
चंद सों ब्रजचंद उरझे अंग-अंग गुपाल सों ।

नाम—(५३०/१३) मध्व मुनीश्वर, महाराष्ट्र-प्रांत ।

ग्रंथ— स्फुट ।

कविता-काल—सं० १७५० ।

मृत्यु-काल—सं० १७९१ ।

विवरण—कहा जाता है, यह शिवाजी के सेनापति कन्होजी

आग्रे के गुरु थे। अमृतराय कवि इनके शिष्य थे। इनका असली नाम महादेव या त्र्यंबक बतलाया जाता है।

उदाहरण—

भज मन शंकर भोलानाथ।
एकहि लोटा-भर जल चाहे, चावल बेल के पात ;
बाएँ गौरि, जटा में गंगा, महिमा बरनि न जात।
धरे बघंबर साईं विशंभर, लिए त्रिशूलहि हाथ ;
अंग विभूति, मसान में खेलत, मध्व मुनीश्वर साथ।

नाम—(५३० / ६ऊ) रामचंद्र।

ग्रंथ—भाव-दीपक।

रचना-काल—सं० १७५०। इस विषय में कवि ने स्वयं लिखा है—

"एक सहस्त्ररु सप्तशत ऊपर और पचास,"

विवरण—ग्रंथ का विषय तत्त्व-ज्ञान है।

नाम—(५६१ / १) दिनकर, महाराष्ट्र-प्रांत।

ग्रंथ—स्वानुभव-दिनकर एवं स्फुट।

कविता-काल—सं० १७५३।

विवरण—इन्होंने अपने पिता नरहरि से शिक्षा पाई थी। कहा जाता है, १२ वर्ष तक तप करने के बाद यह रामदासजी के शिष्य हुए।

उदाहरण—

पद

दूरि करो गुमराई, बाबा ;
टेढ़ी बात से कछु नहिं काम, अच्छी है गरिबाई।
बुरे फेल से कोउ न जीते, जम की बुरी खसलाई।
कह दिनकर यक राम भजन बिन झूठी सब चतुराई।

करस करामति काम कुसंग,
तजि भजि राम अनंत अभंग।
निसि बासर यह बानि बखान,
रामहि राम सुधा-रस पान।

नाम—(५$\frac{६}{२}$१) राजेंद्र मुनि।

रचना-काल—सं० १७५३।

ग्रंथ—(१) राजवल्लभी गीता (छंदोबद्ध, सं० १७५३), (२) श्रीकृष्ण-बाल गीता, (३) बुध-बावनी और (४) ज्ञान-बावनी।

विवरण—श्रीयुत भालेरावजी का कथन है कि इनका 'राजवल्लभी गीता' ग्रंथ अमृतसर के श्रीकृष्ण-मंदिर में प्रस्तुत है, और उस प्रति में रचना-काल सं० १७५३ दिया हुआ है।

उदाहरण—

टीका सुनत सुजान अस चित मन नित दृढ़ लाय ;
आविद्या भ्रम मिटि गयो, पुरुषोत्तम सुख पाय।
राजवल्लभी टीप कहावे, श्रोता-वक्ता बहु सुख पावे ;
भगवद्गीता श्रेष्ठ कहाई, श्रीमन तिरपित अर्जुन ताईं।

नाम—(५$\frac{६}{०}$५) उद्धव चिद्घन, उद्धवार्य, महाराष्ट्र-प्रांत।

ग्रंथ—संत-चरित्र एवं स्फुट।

कविता-काल—सं० १७५५।

विवरण—यह महाराष्ट्र-प्रांत के आद्य संत-चरित्रकार कहे जाते हैं। इन्होंने व्रजभाषा में कतिपय संतों के चरित्र लिखे हैं।

नाम—(६$\frac{०}{२}$०) भगवतीदास, आरा।

ग्रंथ—बृहत् विलास।

रचना-काल—सं० १७५५ । साल के विषय में कवि ने इस प्रकार लिखा है—

"संवत सत्रहसे पंचावन,
ऋतु वसंत बैसाख सुहावन,
शुक्ल पक्ष तृतिया रविवार"

विवरण—आप जैन-धर्म के अनुयायी थे। ग्रंथ में तत्त्व-ज्ञान का स्पष्टीकरण है।

नाम—(६१०/३) (महाराजा) राजसिंहजी, कृष्णगढ़।

जन्म-संवत् १७२१, कार्तिक सुदी १२।

काव्य-काल—१७५६।

ग्रंथ—रुक्मिणी-हरण, जन्मोत्सवलीला, बाहुविलास, राज-प्रकाश, सुख समीप आदि।

परिचय—सुकवि वृंद से आपने कविता करनी सीखी थी। यह काल मुग़लों के पतन का था। दरबार में आपका विशेष मान था। मुअज़्ज़म और आज़म के युद्ध में राजसिंह की वीरता का आपने बखान किया है।

उदाहरण—

चंद उतै इत गोकुलचंदहि प्रगटत होड़ परी;
उतहिं चकोरी इत कौ गोरी तन-मन लखि बिसरी।
उत कौ भोगी इत रिख जोगी महामोद मन मानै;
उत दै अमृत इत पंचामृत लखो प्रगट नहिं छानै।
उत दुजराज इतै ब्रजराजा दोउ सुरराज सुहाई;
पाप कर्म वे धर्म-कर्म ये निगम पुरानन गाई।
गोपी ग्वाल तहाँ सब बालक दूध-दही बिस्तारे;
राजसिंह प्रभु ब्रज के जीवन भक्ति जगत निस्तारे।

नाम—(६१५/०) दरिया साहब, जैतरान ग्राम (मारवाड़)।

जन्म-काल—सं० १७३३ ।

मृत्यु-काल—सं० १८१९ ।

विवरण—आप मुसलमान-कुलोत्पन्न थे। आपकी कविता एवं जीवन-चरित्र बेलवेडियर-प्रेस, इलाहाबाद से मुद्रित हो चुका है। इसी नाम के एक और कवि नं०६४८ पर आ चुके हैं, किंतु वह इनसे भिन्न हैं।

नाम—(६१६/२) केशवराय मिश्र।

ग्रंथ—छंदमाल।

उदाहरण—

संवत सत्रह सै बरस उनसठ जहाँ प्रकास ;
माघ श्वेत चौदस निसा, मंगल कीसु सुभास।

नाम—(६२१/१) रसाल।

रचना-काल—सं० १७६० ।

ग्रंथ—(१) राम-चरित्र (ऐतिहासिक काव्य), (२) पांडव-यशेंदुचंद्रिका।

विवरण—महाशय भालेरावजी का कथन है कि उक्त ग्रंथ रतलाम के नरेश महाराजा रतनसिंह के पुत्र कमधुज रामसिंह के यशोगान पर है। कहा जाता है, बादशाह औरंगज़ेब की आज्ञा से रामसिंह दौलताबाद के युद्ध में सम्मिलित हुए थे, और उसी युद्ध की घटनाओं का वर्णन इस ग्रंथ में दिया हुआ है।

नाम—(६२२/१) गोपालसिंह।

ग्रंथ—क्रियाकोष।

रचना-काल—सं० १७६१ ।

विवरण—ग्रंथ में दैनिक दिनचर्या, व्रतादि का वर्णन है।

नाम—(६२२/२) बुधसिंह महाराजा (बुधराव), बूँदी।

रचनाकाल—सं० १७६१ से सं० १८०० तक।

ग्रंथ—नेह-तरंग (नायिका-भेद)।

विवरण—बादशाह बहादुरशाह के साथ आपकी मित्रता थी। दिल्ली के शाही दरबार से आपको 'रावराजा' की पदवी प्राप्त हुई थी।

नाम—(६३०/२) तिलोकराम, ग्राम मेडला (मारवाड़)।

रचना-काल—सं० १७६७।

ग्रंथ—रस-प्रकाश-भावदीपक।

उदाहरण—(ग्रंथ के अंतिम दोहे)

औरौ ग्रंथनि में कर्यौ, सुमति दृष्टि अवलोक ;
चहे रीति रस रीति की बानीदासतिलोक।
सतरह से अरु सतसठैं, शुकल भाद्रपद मास ;
तिथि द्वितिया मंगल भए, भयो रहस्य विलास।

नाम—(६३५/१) हेमराज।

ग्रंथ—प्रवचन-सार-सिद्धांत।

रचना-काल—सं० १७६६।

विवरण—ग्रंथ में तत्त्व-ज्ञान-विषयक विचारों का वर्णन है।

नाम—(६६३/२अ) गोवर्द्धन।

ग्रंथ—(१) मधुमालती, (२) मैनासत, (३) कोयल सुवा को प्रसंग।

रचना-काल—सं० १७७२।

विवरण—ग्रंथ की भाषा मालवीय है।

नाम—(६६३/२अ) पूरण।

ग्रंथ—ढोला मारू की कथा।

रचना-काल—सं० १७७२।

नाम—(६६३/१आ) उमापतिजी (कवीश्वर)।

रचना—सं० १७७२ ।

परिचय—महाराजा राजसिंह के समकालीन थे । राजा ने सुजावल-पुर आपको दान किया । दान-पत्र से पता चलता है कि आप काशीराम शर्मा के पुत्र, पुरा के रहनेवाले थे ।

कविता का नमूना प्राप्त नहीं है ।

नाम—(६६५/१) निरंजन माधव, महाराष्ट्र-प्रांत ।

ग्रंथ—स्फुट ।

कविता-काल—सं० १७७४ ।

विवरण—यह बाजीराव पेशवा (प्रथम) और बालाजी बाजीराव के आश्रित तथा कई भाषाओं के ज्ञाता थे ।

नाम—(६६८/१) इंद्रजीत महाराज कुमार ।

ग्रंथ—कोकशास्त्र ।

रचना-काल—१८वीं शताब्दी के लगभग ।

नाम—(६७१/१) नैनसुख, करौली ।

ग्रंथ—माणिकपाल बाराखड़ी ।

रचना-काल—१८वीं शताब्दी ।

विवरण—यह महाशय करौली-नरेश महाराजा माणिकपाल के आश्रित थे ।

ग्रंथ—खंड-काव्य और छंदोभंग-पूर्ण साधारण है ।

नाम—(६७४/१) ज्ञानचंद्र ।

ग्रंथ—उपदेश-सिद्धांत-रत्नमाला ।

रचना-काल—१८वीं शताब्दी ।

विवरण—ग्रंथ गद्य-पद्य मिश्रित है ।

नाम—(६७६/२) केशवानंद-रामचंद्र ।

ग्रंथ—पुण्याश्रव ।

रचना-काल—सं० १७७७ ।

विवरण—जान पड़ता है, आप केशव के शिष्य थे। ग्रंथ का विषय जैन-तत्त्व-ज्ञान है।

नाम—(६ ७/० ६) माधवदास।

रचना-काल—सं० १७७८।

ग्रंथ—कर्म-लीला (दोहा-चौपाइयों में)।

नाम—(६ ८/१ ०) दत्तन उर्फ़ अहमदुल्लाह, बहरियाबाद।

काल—सं० १७७९।

ग्रंथ—नवरसमय नायिका-भेद।

विवरण—आप बादशाह मुहम्मदशाह के समकालीन थे। इन्होंने फ़ारसी, अरबी और हिंदी तीनो भाषाओं में कविता की है। फ़ारसी-कविता में यह अपना नाम वासिद तथा व्रजभाषा के छंदों में दत्तन रखते थे। ये बातें इनकी रचना से ज्ञात हुई हैं।

नाम—(६ ४/२ ६) बिड़दसिंह (महाराजा), कृष्णगढ़।

रचना-काल—सं० १७८० के लगभग।

परिचय—महाराज बहादुरसिंहजी के पुत्र थे। महाराज सरदारसिंहजी की मृत्यु के उपरांत शासक हुए। हिंदी-भाषा के सुकवि तो थे ही, संस्कृत, अरबी, फ़ारसी के भी पंडित थे। आपके कुछ श्लोक मिलते हैं।

नाम—(६ ५/१ ०) राय कवि, कृष्णगढ़।

कविता-काल—सं० १७८० के लगभग।

परिचय—आप नरवरगढ़ के निवासी नागरीदास के साथ कविता करते थे।

नाम—(६ ५/२ ०) हीरालाल सनाढ्य, कृष्णगढ़।

कविता-काल—सं० १७८० के लगभग।

रचना—सरदार-सुयश।

परिचय—नागरीदासजी के समकालीन कवि थे। सावंतसिंहजी के साथ आगरा से किशनगढ़ गए। वर्तमान कल्याण कवि आपके वंशज हैं।

उदाहरण—

जैसे वायु घननि पै, दावा द्रुम बननि पै,
त्यों ही दैत्यगननि पै चक्र असि-धार है;
गरुड़ फनिंदन पै, सिंह गज-वृंदन पै,
त्यों कुरु-नरिंदन पै भीम गदाधार है।
शंभु रति-भावन पै, भान तम छावन पै,
राम जिमि रावन पै जुद्ध जैतवार है;
बाज जिमि पच्छिन पै, काँपि सूर इच्छिन पै,
ऐसे दल दच्छिन पै साँवतकुमार है।

नाम—(६६६/१) विष्णु।

ग्रंथ—मकरध्वज-कथा।

कविता-काल—सं० १७८३।

नाम—(७०७/१) नैनसुख।

ग्रंथ—(१) राव नवलसिंह की बाराखड़ी, (२) व्रज-विलास की बाराखड़ी, (३) उत्तम पुरुष-बाराखड़ी, (४) हीन पुरुष-बाराखड़ी, (५) सुभाषित।

रचना-काल—सं० १७८८।

विवरण—कवि का पहला ग्रंथ नरवर-नरेश महाराजा रामसिंह के सेनापति नवलसिंह के यशोगान पर है। कविता साधारण श्रेणी की है।

नाम—(७०६/०) माधव।

ग्रंथ—पार्श्वनाथपुराण। जैन ग्रंथ है।

रचना-काल—सं० १७८९।

नाम—(७१२/१अ) कर्णदान, गुजरात-प्रांत।

रचना-काल—सं० १७९१।

ग्रंथ—अभयसिंग नो गडवृंद संगार।

विवरण—ग्रंथ में महाराज अभयसिंह का यश तथा गुजरात पर की मरहठों की चढ़ाइयाँ वर्णित हैं।

नाम—(७१२/३) लच्छीराम।

ग्रंथ—करुणा नाटक।

रचना-काल—सं० १७९१।

विवरण—ग्रंथ श्रीकृष्ण-भक्ति पर है।

नाम—(७१/४) सरूपानंद।

ग्रंथ—सरूपानंद।

रचना-काल—सं० १७९१।

विवरण—ग्रंथ-विषय वेदांत पर है। भाषा गंभीर है।

नाम—(७१२/५) मयाराम।

काल—सं० १७९३।

ग्रंथ—कविता में दशमस्कंध भागवत की सूची है।

विवरण—यह ग्वालियर-निवासी थे। इनके काल तथा स्थान के विषय में परिचय नीचे उदाहरण के रूप में दिए हुए छंद से मिलता है।

उदाहरण—

सत्रह सै नब्बे और तीनि राजा विक्रम के,
सावन को मास तिथि आमा सोमवार है;

गोपाचल थान ताको कहे सब ग्वालियर,
ग्वाली सिंध राजै गढ़ सोभा को विहार है।
पूरन पुरान तहाँ कविता बनाय कीन्हो,
दासातन भाव और नाहिन विचार है;
राखे मन आश वास वृंदावन भावै जाहि,
गावे 'मयाराम' कृष्ण-लीला निज सार है।

नाम—(७$\frac{४}{०}$७) वसुदेवानंद।

ग्रंथ—सत्संग-भूषण।

रचना-काल—सं० १७६२ लगभग।

विवरण—आपके विषय में कवि दलपतराम ने यों कहा है—

वासुदेव वरुनीस कूँ, पुनि मैं करूँ प्रणाम;
काव्य-कला-वेदार्थ-विद, छमा-दया के धाम।
सो नैष्ठिक वृत वंद, मूर्ति मानु वैराग्य की;
धर्म-तनुज, धीमंत, जासु उतारी आरती।

नाम—(७$\frac{५}{१अ}$६) मेरुविजय।

ग्रंथ—बारहमासी (खंड काव्य)।

रचना-काल—१८वीं शताब्दी का अंत।

विवरण—आप जैन-संप्रदाय के थे। ग्रंथ में शृंगार-रस वर्णित है।

नाम—(७$\frac{५}{१आ}$६) विट्ठल।

ग्रंथ—सिंहासन-बत्तीसी।

रचना-काल—१८वीं शताब्दी का अंत।

नाम—(७$\frac{७}{१}$०) वीरेश्वर।

ग्रंथ—बारहमासा।

रचना-काल—सं० १७६६।

विवरण—भाषा प्रौढ़ है।

नाम—(७७३/१अ) गिरिधर।

ग्रंथ—पंचभेद पूजा (जैन-धर्म)।

रचना-काल—सं० १८००।

नाम—(७७३/२अ) गोकुलचंद्र।

ग्रंथ—हरिवंश भाषा।

रचना-काल—सं० १८००।

विवरण—भाषा साधारण है। आप जैन-धर्म के अनुयायी थे।

नाम—(७७३/३अ) जदुनाथ भाट, राज्य करौली।

रचना-काल—सं० १८०० के लगभग।

ग्रंथ—वृत्त-विलास।

विवरण—यह कवि महाशय चंदबरदाई के वंशज थे, ऐसा कहा जाता है। आपके पूर्वज मयाराम, दामोदर, नंदराम, थानसिंह तथा धरणीधर थे। धरणीधर राजा गोपालसिंह, (करौली-नरेश) के आश्रित कवि थे। उक्त ग्रंथ इन्होंने करौली-नरेश राजा गोपालसिंह (सं० १७८१-१८१४) की प्रशंसा में बनाया। यह एक पिंगल-ग्रंथ है। यह कवि हमें नागरी-प्रचारिणी पत्रिका (भाग ५, अंक २, सं० १९८१) से प्राप्त हुए हैं।

उदाहरण—

मही मघवान महिपालु श्रीकुँवरपालु,
　　जाको जसु पूरन प्रसिद्ध देस-देस भौ;
छीरधि समान हिमवान सानुमान,
　　सीतभान कै प्रमान दीप दीपनि में बेस भौ।
भूधर धरन जदुवंस आभरन कलि,
　　करन ज्यौं दीन दुख हरन हमेस भौ;

संपति धनेसु, महिमा करि महेसु अरु,
बुद्धि को गनेस भौ, प्रताप को दिनेस भौ।
बाढ़यौ जाको चंदु परताप नव खंडनि मैं,
जगमग्यौ जाहिर जहान जस जालु है;
दुनी पर दीननि के दारिद बिदारिबै को—
देव-तरु-सम देख्यो कर को हवालु है।
पथ्थ सों समथ्थ श्रीकुँवरपालजू को लाल,
जासों जुरि जंग को गहत करवालु है।
श्रीजदु नृपाल-कुल औतरयौ गुपाल-सम,
बखत बिलास श्रीगुपालु महिपालु है।

नाम—(७६७) सोहिरोबानाथ, महाराष्ट्र-प्रांत।
ग्रंथ—स्फुट।
जन्म-काल—सं० १७७९।
कविता-काल—१८००।
विवरण—यह सावंत बाडी राज्य के निवासी थे। वैराग्य ग्रहण कर इन्होंने उत्तरीय भारत का भ्रमण किया। महादाजी सेंधिया से मथुरा में भेंट होने पर इन्होंने उनको अपनी रचनाएँ भी सुनाई थीं, किंतु वह विशेष तुष्ट नहीं हुए, तब कबि ने यह छंद कहा।

उदाहरण—

अवधूत नहीं गरज तेरी, हम बेपरवाह फ़क़ीरी।
तू है राजा हम हैं योगी, पृथक पंथ है न्यारा;
छत्रपती सब सरिख तिहारे, पाँवन परत हमारा।
फ़ौजबंद तुम, झोलीबंद हम, चार खूँट जागीरी।
तीन काल मैं आया फिरता, घर-घर अलख पुकारी।
सोना-चाँदी हम ना चाहैं, अलख भुवन के बासी;
महल-मुलुक सब रोम-बराबर, हम गुरुनाम-उपासी।

तैं बी डूबा, हमैं डुबाया, तेरा हम क्या लीया।
मोहरा कटै मनो मेंहदाजी, जोग प्रकाश गँवाया।

नाम—($\frac{८०५}{अ}$) चाँदण शासन, गुजरात-प्रांत।

रचना-काल—सं० १८०२।

ग्रंथ—(१) चारणी पिंगल, (२) केसर रास।

विवरण—आप पाटणी के राणा चंद्रसेन के आश्रित थे। चारणी-भाषा के आप अच्छे ज्ञाता थे। ग्रंथ में पाटणी के राणा हरपाल मकवाणा के बड़वान राज्य-स्थापन करनेवाली शाखा के अजमाल तथा चंद्रसेन राजा का उल्लेख है। आपका दूसरा ग्रंथ ऐतिहासिक काव्य है। इसमें वीरम गाँव के निकटस्थ पाटणी-राज्य के साला-वंशीय राजाओं के युद्धों तथा उस राज्य के स्थापन के वर्णन हैं। कहा जाता है, स्वयं कवि ने अपने आश्रयदाता चंद्रसेन के साथ युद्ध में भाग लिया था। इस ग्रंथ में वीर-रस की मुख्यता है।

उदाहरण—

दुदाला श्रीदंतमाला, उरे अरणे दे अणि;
वुहुमतांबि सुडालास प्रविक्रम, आननहा सत्ति नमो ईश।
सजे दल दखणी सकेजे नजदीणा निशाण;
बड़ भादस बड़ भान थी, खड़े आप रिसाण।
दामूजी सरदार दले, पुलरू मुंहि चाले;
सुवादार भाखै सौनजे, उभु भखराले।

नाम—($\frac{८०६}{१}$) सुखसाखर।

ग्रंथ—सम्मेलाचल-माहात्म्य।

रचना-काल—सं० १८०३।

विवरण—ग्रंथ जैन-पुराणों के आधार पर लिखा हुआ है।

नाम—(८$\frac{२}{१}$३) भगवान, सूरत शहर।

ग्रंथ—श्रृंगार-सिंधु।

जन्म-काल—सं० १७७०।

कविता-काल—१८०७।

विवरण—यह कृष्णदास के वंशज, जाति के पाटीदार थे।

उदाहरण—

चलि गयो चंद औ तरैयाँ रहीं भोर की-सी,
        ससि को सरूप गयो छाले रहे आन जू;
मुक्ताहल गयो पार सीप को समूह फैल्यो,
        माखन गयो है रह्यो भक्तन में पान जू।
भरमि सुकवि सत्य सरदारु बानि कहे,
        कृष्णदास जू के कुल अथै गयो भान जू;
दान को कलस फूटो कवि को तिलक छूटो,
        गुन को जहाज लूटो गयो 'भगवान' जू।

नाम—(८$\frac{२}{०}$४) मधुकर (माधवसिंह, महाराजा जयपुर)।

राज्य-काल—सं० १८०७ से १८२४ तक।

ग्रंथ—स्फुट कविता-संग्रह।

विवरण—आपका प्रख्यात नाम माधवसिंह था, किंतु कविता में आप अपना नाम 'मधुकर' अथवा 'मधुकरराज' रखते थे।

नाम—(८$\frac{३}{२}$४) लखपतिजी, महाराव कच्छ (गुजरात-प्रांत)।

राज्य-काल—सं० १८०८-१८१७।

ग्रंथ—लखपति-श्रृंगार।

विवरण—आप कच्छ के महाराज थे। आप बड़े गुण-ग्राहक, विद्यानुरागी पुरुष थे। आप कई भाट तथा चारण कवियों के आश्रय-दाता थे। आपका ग्रंथ श्रृंगार-रस की एक अपूर्व रचना है। व्रज

तथा गुजराती भाषाओं में भी आपने स्फुट छंद बनाए हैं। आपका उक्त ग्रंथ ग्वालियर-निवासी महाकवि सुंदरजी के सुंदर-शृंगार ग्रंथ के ढंग पर है।

उदाहरण—

कीनो लखपति कच्छपति, भले सुनो कवि-भूप,
सुंदर-कृत अनुरूप यह रस-तरंग रस-रूप।
महाराउ लखपति कियो शुभ लखपति शृंगार,
रच्यो देखि रस-मंजरी सकल रसन को सार।

जहाँ-तहाँ मिटि गयो अंगराग बिदा भयो,
वदन बिदारि दियो वेदी को बनाउ है;
टूटि गए हार, बार छूटि कै विथुरि गए,
जहाँ-तहाँ गिरे तहाँ त्यों हीं हाथ-पाउ है।
बुलाई न बोले दृग मूँदे उर प्रीतम के,
तैरे आप जानि परै यामें प्रान पाउ है;
दूरी तें तो प्यारी ऐसी लागी है उजारी मोंको,
शेष के बिछौना माँझि सोने को निषाउ है।

नाम—(८८६) आशाधर।
ग्रंथ—सहस्रनाम।
रचना-काल—सं० १८११।
विवरण—ग्रंथ में विविध प्रकार के छंद हैं।
नाम—(८८६) रूपदास, घसोई (मालवा)।
ग्रंथ—(१) गोपाल-चरित्र, (२) रसोई-लीला।
रचना-काल— ८११।
विवरण—भाषा शुद्ध मालवी है।
नाम—(६९) शुभचंद्र।
ग्रंथ—श्रेणिक-चरित्र।

रचना-काल—सं० १८१२।

विवरण—आप जैन-संप्रदाय के थे।

नाम—(८६६/१) दुर्गेश्वर, खंभायतपुर (गुजरात)।

रचना-काल—सं० १८१४।

ग्रंथ—साहित्य-सिंधु।

विवरण—उक्त ग्रंथ की रचना प्रथम गुजरात-प्रांतांतर्गत पट्टीदार ग्राम के निवासी बेनीदास कवि ने प्रारंभ की थी, किंतु खंभात के नवाब के साथ युद्ध छिड़ जाने और इस युद्ध में इनका शरीर-पात हो जाने से ग्रंथ अपूर्ण रह गया। कहा जाता है, कवि बेनीदास की स्त्री ने अपने पति की पवित्र स्मृति के उपलक्ष में उक्त ग्रंथ को आपके द्वारा पूर्ण कराया। आप जाति के ब्राह्मण थे। ग्रंथ बहुत बड़ा है, और संस्कृत-ग्रंथों के आधार पर बनाया गया है। ग्रंथ में प्रायः एक हज़ार श्लोकों का समावेश किया गया है।

निम्न-लिखित छंद से ग्रंथ तथा उसके रचयिता का परिचय मिलता है—

खंभायतपुर-वासी दुज दुरगेसर को
मान दे बुलाइ ग्रंथ बनवायो नयो है;
उनै ग्रंथ रच्यौ मौत भयो बेनीदास जू को,
मुकति को देन तहाँ ग्रंथ चित लयो है।
पीछे गंगाजल-सी पवित्र ताकी बनिता ने
पिय सुख देनहित ग्रंथ यह दयो है;
संवत अठारह चतुरदस चैत मास,
नौमी रविवार ग्रंथ संपूरन भयो है।

नाम—(८६६/८) दयाबाई।

ग्रंथ—(१) दयाबोध, (२) विनयमालिका।

रचना-काल—सं० १८१९ के लगभग।

विवरण—यह दूसर-जाति की स्त्री थीं। इनका जन्म मेवाड़ में हुआ था, किंतु यह सदा अपने गुरु चरणदासजी के साथ दिल्ली में रहा करती थीं। अपनी गुरु-बहन सहजोबाई के सदृश यह उत्कट गुरु-भक्तिन थीं। सहजोबाई का समय लगभग १८१९ है।

उदाहरण—

बौरी ह्वै चितवत फिरूँ, हरि आवैं केहि ओर ;
छिन उठूँ, छिन गिरि परूँ, राम दुखी मन मोर।
प्रेम-पुंज प्रगटे जहाँ, तहाँ प्रगट हरि होय ;
दया बारि करि देत हैं श्रीहरि दर्शन सोय।
दया कुँवरि या जगत में नहीं रह्यौ थिर कोय ;
जैसो बास सराँय को, तैसो यह जग होय।

महाशय गदाधरप्रसाद अंबष्ठ द्वारा हमको यह स्त्री-कवि ज्ञात हुई हैं।

नाम—(९०४/१अ) कनककुशल भट्टार्क, गुजरात-प्रांत।

रचना-काल—सं० १८१७।

ग्रंथ—लखपति-यश-सिंधु (राजा लखपतिजी का यशोगान)।

उदाहरण—

अचल विंध्य के अनुज किधौं ऐरावत उद्धत ;
बिकट वीर वैताल कनक संघट जब क्रुद्धत।
अरि-दल गंजन अतुल सदल शृंखल बल तोरत ;
झरर गल्ल मद भरत सजल सुंडनि झकझोरत।
ऐसे प्रचंड सिंधुर असल, महाराज जिय मान अति ;
पठए दिलीस लखपत्ति, को कहे जगत—'धनि कच्छपति'।

नाम—(८६६/१) दौलतराय, कृष्णगढ़।

कविता-काल—सं० १८२० के आस-पास।

रचना—रस-मंजरी और रस-तरंगिणी के आधार पर रस-प्रबोध-नामक ग्रंथ रचा।

परिचय—वृंदजी के वंशज थे, और किशनगढ़ की कई लड़ाइयों में मौजूद थे।

नाम—(६ ३/२ ८) रविषेणाचार्य।

ग्रंथ—पद्मपुराण।

रचना-काल—सं० १८२३।

विवरण—ग्रंथ का विषय जैन-पुराण है। संभवतः यह ग्रंथ प्रकाशित हो चुका है।

नाम—(६ ४/२ ०) हरिपुष्प।

काल—सं० १८२४।

ग्रंथ—भाषा-श्रुति-बोध।

विवरण—श्रीयुत भालेरावजी का कथन है कि उक्त ग्रंथ पिंगल-विषय पर है, और वह शाहाबाद के राजा मेघ के अनुरोध से कवि द्वारा रचा गया था।

नाम—(६ ४/० १) नवलशाह।

ग्रंथ—वर्धमान पुराण।

रचना-काल—सं० १८२५।

विवरण—आप जैन-मतावलंबी थे। ग्रंथ में जैन-दर्शनों का विवेचन यत्र-तत्र है।

नाम—(६ ५/२ २) जिनसेन।

ग्रंथ—हरिवंश।

रचना-काल—सं० १८२६।

विवरण—शालिवाहन-विरचित मूल-ग्रंथ का आपने अनुवाद किया है।

नाम—(६ ५/१ ५) उदयभान कायस्थ।

ग्रंथ—श्रीगणेश-जन्म।

रचना-काल—सं० १८३०।

नाम—(६५५/२) ऋषिकेश, गोकुलपुर मुहल्ला, आगरा।

रचना-काल—सं० १८३०।

ग्रंथ—स्वरोदय-प्रकाश।

नाम—(६६०/२) विश्वनाथ।

रचना-काल—सं० १८३१।

ग्रंथ—गोपीचंद-आख्यान (छंदोबद्ध)।

विवरण—श्रीयुत भालेरावजी द्वारा यह कवि ज्ञात हुए हैं।

नाम—(६६२/२) जनप्रवीण, जौरा, मुरेना (ग्वालियर-स्टेट)।

रचना-काल—सं० १८३२। समय ग्रंथ से प्राप्त।

ग्रंथ—रुक्मिणी-स्वयंवर पर काव्य।

विवरण—श्रीयुत भालेरावजी का कथन है कि कवि ने स्वयं अपना परिचय यों दिया है—

विदित आगरे नगर को सूबा जानहु सार;
चकला गोपाचल कहत गढ़ तरवर सरकार।
तहाँ जखोरा परगनो बसत थान जारौन;
कछुक दिवस निवसै तहाँ सदा सुमंगल भौन।
अति विचित्र ता नगर में आरंभ्यो यह ग्रंथ;

× × ×

गोपाचल ते बाइस आसा, डंडोदिया भूमि सुरवासा;
नगर मुरेना जौरा जो है, जन्मभूमि मम कुल की सो है।

ग्रंथ-रचना के समय कवि का निवास-स्थान एक डंडोतिया-जाति के ताल्लुक़ेदार के अधीन था। यह जाति अपने को द्रोणाचार्य की संतान बतलाती है। ये लोग अब अपने को क्षत्रिय कहते हैं।

इसी कुल में उत्पन्न कोई दुलीचंद क्षत्रिय के यह कवि आश्रित थे। महाशय भालेरावजी कहते हैं कि इन कवि का वंश अद्यावधि वर्तमान है।

नाम—(१०१७/१) शाहमुनि (मुसलमान), शाहगढ़, निजाम-स्टेट।

काल—सं० १८३९ के लगभग। (भालेरावजी से प्राप्त)

ग्रंथ—(१) सिद्धांत-बोध (प्रकाशित), (२) स्फुट कविताएँ।

नाम—(१०३२/१) जीवनविजय, राजकोट (काठियावाड़)।

काल—सं० १८३८।

ग्रंथ—(१) जीवनी बावनी, (२) महिरामनजी का कसुंवा।

विवरण—आप श्वेतांवरी जैन साधु धनविजय के शिष्य तथा राजकोट के ठाकुर श्रीमहिरामनजी के आश्रित कवि थे। आपने उक्त ठाकुर साहब को 'प्रवीन-सागर'-नामक ग्रंथ बनाने में सहायता दी थी। आपका पहला ग्रंथ सवैयों में है, तथा दूसरा गद्य-पद्य में रचा हुआ है।

उदाहरण—

बावन ही मात्रन के सवही सवैया कीने,
नई-नई उक्ति चतुर मन-भावनी;
जेहि कवि पढ़े ताकी बुद्धि को प्रकास होत,
राजनीति बात जो है सबकुं सुहावनी।
अन्योक्ति केते हैं दृष्टांत हू के केते लसैं,
श्लेषरु प्रस्ताव यह वाल समुझावनी;
श्वेतांवर जैन धनविजय विराजमान,
ताको सिष्य 'जीवन' ने कीनी यह बावनी।

जनपद सोरठ देश में, राजकोट पुर रूप ;
कीनी तहँ 'जीवन' सुकवि यह बावनी अनूप।

नाम—(१०४१/१) (बारहठ) गंगादीन (जी), कृष्णगढ़।

परिचय—जाति के चारण, महाराजा रघुनाथसिंहजी के कृपा-पात्रों में, तथा उच्च कोटि के दरबारी कवि थे।

रचना-काल—१८४० के लगभग।

उदाहरण—

शार्दूलसिंहजी की प्रशंसा में कवि ने कहा है—

साल दैनहारी है सदैव सूम शत्रुन कौ,
कुटिल कपूतन को काल दैनहारी है ;
माल दैनहारी है मही के सब मंगन को,
पूरण प्रजा को प्रतिपाल दैनहारी है।
बांछित विशाल दैनहारी कवि गंग हू को,
दीनन दयाल दुख टालदैनहारी है ;
हरण हिमाल को दुसाल दैनहारी यह,
शारदूल ग्रंथी को निहाल दैनहारी है।

नाम—(९७३/१) जयदयाल (जी) (कवीश्वर), कृष्णगढ़।

कविता-काल—सं० १८४० के आस-पास।

ग्रंथ—छप्पनभोग-चंद्रिका, प्रतिष्ठा-प्रकाश, रघुनाथरूपक, जलवए-इश्क़ का टीका तथा किशनगढ़ का इतिहास।

परिचय—वृंदजी के वंशज तथा महाराजा शार्दूलसिंहजी के दरबारी कवि थे।

उदाहरण—

चरन-कंज असरन-सरन, हरन असित अपराध ;
बंदौं श्रीगुरुदेव के, देवहु बुद्धि अगाध।

वाही के निमित तन वाही के निमित मन,
वाही के निमित जन रीति नितप्रति की ;
वेद-विधि धारन कौ ब्रज के बिहारिन कौ,
धर्म अनुसारिन कौ संपति सुमति की।
सब धन-धाम काम कामना समरपत,
हरि ही के नाम थिति छिति-छिति पति की ;
बलि जैसे नाथ जू के रूप बलिहार रूप,
सरवस आतम निवेदन भगति की।

नाम—(६७३/२) दामोदर (जी), कृष्णगढ़।

रचना-काल—सं० १८४० के लगभग।

परिचय—कवि बृंद के वंशजों में तथा रघुनाथसिंहजी के कृपा-पात्र थे। गंगावाक्यविनोद में विशेषकर आपका ही हाथ था। उसके मंगलाचरण का एक छंद इस प्रकार है—

श्रीकलियान कृपा के निधान विशुद्ध विज्ञान बढ़ावन हारे ;
भक्त सहाय करैं प्रभु धाय यहै श्रुत गाय पुराण अठारे।
आनँददायक लाभ बढ़ायक दुःख दरिद्र नशायक सारे ;
दाम के स्वामि सु श्रीघनश्याम करौ सिधि काम सुवेग हमारे।

नाम—(१०६२/०अ) मुनिराज।

ग्रंथ—(१) पासा केवली, (२) चालीसी, (३) पंचशब्दी, (४) पंछी-परीछा, (५) स्वप्नाध्याय, (६) चौवीस एकादशियों का माहात्म्य।

रचना-काल—१९वीं शताब्दी का मध्य काल।

विवरण—कवि ज्योतिष-शास्त्रज्ञ था।

नाम—(१०६२/०आ) वसंतराज।

ग्रंथ—शकुनावली।

रचना-काल—१९वीं शताब्दी का मध्य।

विवरण—ग्रंथ में बहुतेरे पक्षियों के बोलचाल तथा ज्योतिष-विषयों के वर्णन हैं।

नाम—(१०९२/०६) हरोशिष्य।

ग्रंथ—राजनीति।

रचना-काल—१९वीं शताब्दी का मध्य काल।

विवरण—चाणक्य-कृत राजनीति का छंदोबद्ध अनुवाद है।

नाम—(१०९७/०) केशवप्रवरा संगमकर।

ग्रंथ—स्फुट।

कविता-काल—सं० १८४७।

विवरण—यह महादाजी सेंधिया के सेनापति और दिल्ली के क़िलेदार शमशेरबहादुर खंडेराव हरी के आश्रित थे।

नाम—(१०९७/२) पंगु कवि।

रचना-काल—सं० १८४७।

ग्रंथ—घूस-बत्तीसी।

विवरण—यह जाति के चारण मेहमदपुर-ग्राम के निवासी थे। एक पैर से लँगड़े होने के कारण आपका नाम पंगु पड़ गया। आप पश्चात् करौली में जाकर बस गए, और महाराज करौली के आश्रय में रहकर आपने उक्त ग्रंथ उनके विनोदार्थ बनाया, ऐसा कहा जाता है। निम्न-लिखित छंद से, जो उदाहरण के रूप में दिया गया है, उक्त ग्रंथ के रचना-काल का पता लगता है—

संवत अठारे सो पै बीते वर्ष सैंतालीस,
भादौं बदी पाँचै तिथि अनुपम आई है;
पूरन कवित्त भए कृष्ण की कृपा सों सब,
संकर सहाय बुद्धि शारदा बताई है।

कुँवर अमोलिक है शहर करौलि माँझ,
राज महाराजा जू श्रीमानक के जाई है ;
काज परिहास के उपाव कीनौ मन माँझ,
घूस की वतीसी कवि 'पंगु' ने वनाई है।

नाम—(१०७० / ३) अज्ञात।

रचना-काल—सं० १८४८ के लगभग।

ग्रंथ—दिल्ली राज नुं विगत वारी।

विवरण—यह एक ऐतिहासिक ग्रंथ है। सं० १८४८ में महादजी सिंधियावाले दिल्ली पर आधिपत्य के उपलक्ष में "पूना ताले दक्खिनिए राज्य लीधूं" यह वाक्य इस ग्रंथ में है। मुख्यतः गुजराती भाषा में यह ग्रंथ है। कुछ हिंदी-कवित्त भी हैं।

उदाहरण—

अनँगपाल गढ़ रच्यौ नाम थिर थप्यौ दिल्ली ;
अरे तुँवर मतिहीण, करी खीली क्यों ढीली।
भणि जंगम जग जोति, अगम आगम हूँ जाणूँ ;
तूँवर थी चहुआन, पिछै फिररै तुरकाणूँ।
तुरका कँधार चीतौड़पति वडौ राण वदसी वरै ;
नवसत्ता अंत मेवाड़पति, दिल्ली छत्र समंधरै।

नाम—(१०७० / ४) गंगाराम।

ग्रंथ—भागवत दशमस्कंध।

रचना-काल—सं० १८४८।

विवरण—भाषा हिंदी-गुजराती मिश्रित है। लेखक महाशय संभवतः जैन-संप्रदाय के थे।

नाम—(६८१ / १) (महाराजा) कल्याणसिंह (जी), कृष्णगढ़।

रचना-काल—सं० १८९० के लगभग।

परिचय—प्रतापसिंहजी की मृत्यु के बाद गद्दी पर बैठे। अँगरेज़ों की छेड़छाड़ के कारण पेंशन लेकर दिल्ली चले गए, और सम्राट् के कृपा-पात्र बने। आप कवि और पंडित थे।

उदाहरण—

आनँदबधाई माई, नंदजू के द्वारे।
ब्रह्मा विष्णु रुद्र धुन कीन्ही तिन लीन्हो अवतार।
जन्मत ही घर-घर प्रति लक्ष्मी बाँधत बंदनवार,
भूप कल्याण कृष्ण-जन्महि पै तन-मन कीन्हो वार।

नाम—($\frac{१०७६}{१अ}$) जमाल।

ग्रंथ—मृग-कपोत-आख्यान (छंदोबद्ध गल्प)।

विवरण—महाशय भालेरावजी की धारणा है कि आप नादिर कवि (सं० १८९०) के समकालीन थे। ० १३२ पर आए हुए कवि से आप भिन्न हैं।

नाम—($\frac{१०७८}{१}$) नादिर।

रचना-काल—सं० १८९०।

ग्रंथ—सुदामा-चरित्र।

विवरण—आप मुसलमान कवि थे। इन्होंने भक्ति-मार्ग पर रेखता-छंदों में उक्त ग्रंथ रचा। (श्रीयुत भालेरावजी द्वारा ज्ञात)

नाम—($\frac{१०८१}{१}$) बुधराव माधरीग्राम, इडरतावा, गुजरात।

ग्रंथ—(१) यशवंत-चंद्रिका, (२) काव्य-दिवाकर, (३) अनेकार्थ-कोष।

समय—१९वीं शताब्दी।

विवरण—आप चारण थे। कहा जाता है, जब अहमदनगर के कुमार श्रीतख़्तसिंहजी जोधपुर की गद्दी पर आरूढ़ हुए, तब यह भी उनके साथ जोधपुर गए थे। 'यशवंत-चंद्रिका'-ग्रंथ आपने तख़्तसिंहजी के पुत्र जसवंतसिंहजी के नाम से रचा।

नाम—(१०८४/१) लक्ष्मीधरजी श्रोत्रिय वैद्य ग्राम करहल, ज़िला मैनपुरी।

समय—१८९० के लगभग।

ग्रंथ—(१) आरोग्यता-पद्धति प्रथम भाग, (२) पद्मावत (एक खंड) की भाषा-टीका।

विवरण—आप चतुर्वेदी ब्राह्मण करहल के प्रसिद्ध वैद्य थे। आपने वैद्यक पर बहुत-सी पुस्तकें लिखीं, किंतु वे अप्रकाशित हैं। इस समय इनके पुत्र पं० जयकृष्ण श्रोत्रिय इसी स्थान पर वैद्यक कर रहे हैं।

नाम—(१०९१/२) विश्वंभरदास।

ग्रंथ—(१) भागवत के स्कंध १०-११-१२, (२) भागवत-माहात्म्य।

रचना-काल—सं० १८९१।

नाम—(१०९१/३) हरीशंकर।

ग्रंथ—गणेश-माहात्म्य।

रचना-काल—सं० १८९१।

नाम—(१०९४/०अ) चेतराम, कोटरा (बेतवा-नदी के तीर पर)।

ग्रंथ—प्रह्लाद-चरित्र। फुटकर छंद।

रचना-काल—सं० १८९२।

नाम—($\frac{१०६४}{०आ}$) मथुराप्रसाद ।

ग्रंथ—रविवार-व्रत-कथा ।

रचना-काल—सं० १८९२ ।

विवरण—आप संभवतः जैनधर्मानुयायी थे ।

नाम—($\frac{१०६४}{०इ}$) सामलदास ।

रचना-काल—सं० १८९२ ।

ग्रंथ—पंच-दंड-वार्ता (सिंहासनबत्तीसी का अनुवाद) ।

विवरण—(श्रीयुत भालेरावजी द्वारा ज्ञात) ।

नाम—($\frac{१०६४}{०ई}$) महासिंह, गुजरात-प्रांत ।

रचना-काल—सं० १८९३ ।

ग्रंथ—छंद-शृंगार-पिंगल ।

उदाहरण—

छंद बोध यातैं लहैं रसिकन को रस-सार ;
नाम धरयो या ग्रंथ को तातै छंद-शृँगार ।
भारद्वाज गोत्र पाषकरण, सेवक ज्ञाति कहावै ;
'महासिंह' कवि नगर मेरते वसै परम सुख पावै ।
समवत लोक, पांडव, नग, चंद, नग,
मास पौल पंचमी सुकुज वार ठानियो ;
छंद को शृँगार नाम ग्रंथ समापत भयो ,
नौ नगर सहर सुमन महँ मानियो ।

नाम—($\frac{११३८}{०}$) रतनेश, शिवपुरी (रियासत ग्वालियर) ।

ग्रंथ—कांताभूषण ।

रचना-काल—सं० १८९६ ।

विवरण—महाशय भालेरावजी का कथन है कि उक्त ग्रंथ में

१२७ दोहे हैं, जिनमें नायिकाभेद के लक्षण तथा उदाहरण दिए हुए हैं।

नाम—(११३८/२) दुल्लभ आमोद ग्राम, गुजरात।

रचना-काल—सं० १८४७।

ग्रंथ—बुद्धि-प्रकाश।

बार भौम पख अष्टमी उज्ज्वल भादौं मास ;
अट्ठारह सत्तावने, कीनो बुद्धि प्रकास।

विवरण—आप जाति के चारण थे, और उक्त ग्रंथ आपने गोंडल के यदुवंशी जाड़ेजा ठाकुर श्रीदेवाजी के लिये बनाया। ग्रंथ में आठ अध्याय हैं।

नाम—(११५२/१) हरिकृष्ण।

ग्रंथ—(१) रामचंद्रजी का शिख-नख, (२) स्फुट।

रचना-काल—सं० १८४८।

विवरण—वर्णन-शैली अच्छी है।

नाम—(११५२/२) नेमा मालिन गाँव, मालवा।

रचना-काल—सं० १८४६।

ग्रंथ—ऊषा-हरण।

विवरण—आप मनोहरदास के पुत्र तथा भागवतसार-ग्रंथ के कर्ता दासजी के शिष्य थे। (श्रीयुत भालेरावजी द्वारा ज्ञात)

नाम—(११५२/३) भूपतिराम।

ग्रंथ—(१) अष्टावक्र का छंदोबद्ध अनुवाद, (२) गणेशजी की कथा।

रचना-काल—सं० १८४६।

नाम—(१०५३/१) अखेराज।

ग्रंथ—कल्याण-मंदिर-स्तवन।

रचना-काल—सं० १८६०।

विवरण—ग्रंथ में जैन-तीर्थंकरों का वर्णन है।

नाम—(११५३/२) अमरदास।

ग्रंथ—भगतीपद।

रचना-काल—सं० १८९०।

विवरण—ग्रंथ में देवीजी की स्तुति नराच-छंदों में है।

नाम—(११५३/३) कृपाराम खिड़िया चारण सोकर, रियासत जयपुर।

समय—सं० १८६०।

विवरण—यह महाशय जाति के चारण सीकर के राव देवीसिंहजी तथा उनके पुत्र राव राजा लक्ष्मणसिंहजी के समय (१८६०) में वर्तमान थे। कहा जाता है, इन्होंने ३६० सोरठे बनाए, किंतु अब तक १५४ उपलब्ध हुए हैं। आपके ये सोरठे ठाकुर चतुरसिंह, बीकानेर ने अपने 'अर्वाचीन प्राचीन सोरठा-संग्रह'-नामक ग्रंथ में प्रकाशित किए हैं। यह कवि नं० ६६७ पर आए हुए कृपाराम, जयपुरवालों से भिन्न प्रतीत होते हैं। इन्हें लछमनपुरा ग्राम, जो आगे 'कृपाराम की ठानी' नाम से प्रख्यात हुआ, दान में मिला था। यह कवि ठाकुर चतुरसिंह राष्ट्रवर, बीकानेर द्वारा हमें ज्ञात हुए हैं।

उदाहरण—

सुचि अट्ठारासै के आगर पुनि अट्ठावन;
बद असाढ़ तिथि बीज प्रगट दिनकर दिन पावन।
सहगयंद सिर पाव कड़ा भूषण मोताहल;
साँसत लछमन पुरो जमीने पालू साजल।
पोकर सुथान मिलिया नृपति अति उदार आपरसु अच्छ;
कवि राम रीझ सेखा तिलक लहर एक दीधी सुलच्छ।

नाम—(१५३/४) जानकीराम त्रिपाठी कुदौली, नरवल, कानपुर।

जन्म-काल—सं० १८३४ के लगभग।

रचना-काल—अनुमानतः सं० १८६०।

ग्रंथ—(१) बारहमासा-वर्णन, (२) स्फुट छंद।

विवरण—आप पं० लालमणिजी त्रिपाठी के पुत्र थे। आप पाँच भाई थे। इन कवि महाशयों का विस्तृत वर्णन पं० लक्ष्मीकांत त्रिपाठीजी एम्० ए० क्राइस्ट चर्च कॉलेज, कानपुर ने 'श्रीशारदा'-पत्रिका की दो संख्याओं (फ़रवरी तथा मार्च सन् १९२३) में लिखा। इसी लेख के आधार पर हमने उक्त कवि का जन्म-काल तथा परिचय दिया है। हिम्मतबहादुर नरेंद्रगिरि महाराज की प्रशंसा में भी इनके छंद हैं। पं० लक्ष्मीकांतजी त्रिपाठी का कथन है कि यह महाशय उनके पूर्वजों में से थे, और उनके पास इनका उपर्युक्त ग्रंथ खंडित रूप में है।

उदाहरण—

जोर झकोर सों वायु बहे लगे लोग निवास बनावन छावन;
कोकिल के कुल चातक चोप कै मोर हु सोर लगे सरसावन।
प्यौ परदेस सँदेस बिना भए गाढ़ असाढ़ के द्यौस भयावन;
धूँधरे धूँधरे धूमरे धीर धुकारत ये धुरवा लगे धावन।
श्याम घटा घनघोर उमंडित मंडित ह्वै नभ-मंडल छायो;
धार अखंडित कै बरसै तरपैं थरपैं तम तोम सुहायो।
झिल्लिन, मोरन, दादुर थोर न ठौरन-ठौरन सोर मचायो;
'जानकीराम' बिदेश ठट्ट भट्ट भादवँ में नहिं भावतो आयो।

नाम—(११५८/५) रघुनाथ।

काल—सं० १८६०।

ग्रंथ—रस-मंजरी (नायिका-भेद)।

विवरण—महाशय भालेरावजी का कथन है कि उक्त ग्रंथ में १२१ दोहे, १२६ सवैए और एक कवित्त हैं।

नाम—(११५८/२) चावड़ीजी (रानी) ।

समय—सं० १८६० ।

ग्रंथ—स्फुट छंद ।

विवरण—यह जोधपुर के महाराज मानसिंह की दूसरी रानी तथा गुजरातवाले माणसा के ठाकुर साहब की कन्या थीं ।

नाम—(११५८/३) राड़धड़ीजी (रानी) ।

काल—सं० १८६० ।

ग्रंथ—स्फुट कविताएँ ।

विवरण—यह मारवाड़ के अंतर्गत राड़धड़ा के राना की पुत्री थीं । इनका विवाह सिरोही के राव से हुआ था ।

उदाहरण—

> टूके - टूके केतकी, झिरने झिरने जाय ;
> अर्बुद की छवि देखता, और न सालै दाय ।

नाम—(११६६/०) वत्सराज गिरि, काशी ।

ग्रंथ—गीता की गद्यात्मक टीका ।

रचना-काल—सं० १८६१ ।

नाम—(११७०/२) मुक्तानंद (स्वामी), ग्राम अमरेली, काठियावाड़ ।

रचना-काल—सं० १८६२ ।

मृत्यु-काल—सं० १८८२ ।

ग्रंथ—(१) मुकुंदबावनी, (२) विवेक - चिंतामणि, (३) पंचरत्न, (४) शिक्षा-पत्री, (५) श्रीकृष्ण-महिमाष्टक, (६) रुक्मिणी-विवाह, (७) दशमस्कंध, (८) विदुरनीति ।

विवरण—आप जाति के सरवरिया ब्राह्मण थे । इनकी माता राधाबाई तथा नाना भक्त कवि मूलदास भी हिंदी-काव्यानुरागी थे ।

आपके पूर्वाश्रम का नाम मुकुंददास था, और आपने श्रीरामानंद स्वामी से दीक्षा ली थी। शांत-रस के आप प्रसिद्ध कवि कहे जाते हैं।

उदाहरण—

मन-मतंग वश-करन, हरन मद-मोह उजागर;
शरणागत सुख-खान, विरद सद्गुण के सागर।
दुरग नाम पत्तन विशे, उनमत गंगा-तीर;
रचि विवेक-चिंतामणिहु, मुक्ति हरण-भव-पीर।
संवत आठर ब्यासिए, कृष्ण पक्ष गुरुवार;
अगहन वदि एकादशी, ग्रंथ सँपूरन सार।

नाम—(११७०/३) लालमणि दीवान।

ग्रंथ—रस-प्रकाश।

रचना-काल—सं० १८६२।

विवरण—ग्रंथ में नवरसों का वर्णन है।

नाम—(११७१/१) जयअनंत सूरि।

ग्रंथ—स्वामिकार्त्तिकेय-अनुप्रेक्षा।

रचना-काल—सं० १८६३।

विवरण—ग्रंथ में उत्प्रेक्षा आदि विषयों का अच्छा वर्णन दिया है।

नाम—(११७२/अ१) मानसिंह, गुजरात-प्रांत।

जन्म-काल—सं० १८३७।

रचना-काल—१८६३।

ग्रंथ—(१) रस-कविता-संग्रह, (२) ज्ञान-सागर।

विवरण—आप हिंदी के अतिरिक्त संस्कृत, उर्दू, फ़ारसी तथा गुजराती-भाषाओं के भी अच्छे ज्ञाता थे। कहा जाता है, इन्होंने उर्दू में भी एक काव्य-ग्रंथ बनाया था।

नाम—($\frac{११७०}{आ}$) संपतराव वैद्य।

रचना-काल—सं० १८६२।

ग्रंथ—नारायण-कवच (काव्य-ग्रंथ)।

विवरण—आप मालवांतर्गत पीपलरावाँ ग्राम के निवासी थे। श्रीयुत भालेरावजी द्वारा आप हमें ज्ञात हुए हैं।

नाम—($\frac{११७४}{१}$) रामदयाल तेवारी, ग्राम मौंड़, ज़िला दरभंगा।

ग्रंथ—स्फुट कविता।

विवरण—इनका देहांत हुए १०० वर्ष के लगभग हुए हैं।

उदाहरण—

भजु राम नाम राम नाम रामा।
राम-नाम वेद-मूल, इनके नहिं और तूल, भजत
नसत त्रिविध सूल, छूटत भव आमा ॥ १ ॥
राम-नाम विमल नीर, संगम सत्संग तीर,
मज्जत निर्मल शरीर, पावन निज धामा ॥ २ ॥
राम-नाम कमल-फूल, संतन-मन भ्रमर भूल,
पीवत रस झूमि-झूमि अमृत अनुपामा ॥ ३ ॥
राम-नाम निराकार, रामद्याल नमस्कार,
दीजै हरि-भक्ति-सार, पय पल भर रामा ॥ ४ ॥

नाम—($\frac{११७४}{२}$) साहबराम महंत, पचाढ़ी स्थान, ज़िला दरभंगा।

ग्रंथ—भजनावली।

विवरण—आप वैष्णव-संप्रदाय के संत थे। इनकी मृत्यु हुए सौ वर्ष से अधिक हुए हैं।

नाम—($\frac{११७५}{अ}$) खरगसेन।

ग्रंथ—उषा-हरण।

रचना-काल—सं० १८६९।

विवरण—भाषा अच्छी है।

नाम—($\frac{११६२}{०अ}$) केशवराय कायस्थ, बुंदेलखंड।

ग्रंथ—श्रीगणेश-कथा।

रचना-काल—सं० १८६८।

विवरण—भाषा साधारण है।

नाम—($\frac{११६३}{०अ॰}$) गब्बू कवि, गुजरात-प्रांत।

काल—सं० १८६८।

विवरण—आपने बड़ौदा-नरेश महाराजा फ़तेहसिंह गायकवाड़ की प्रशंसा में लावनी रची।

नाम—($\frac{११६२}{२}$) कालूराम।

ग्रंथ—ज्ञानार्णव।

रचना-काल—सं० १८६९।

विवरण—ग्रंथ में तत्त्व-ज्ञान विषय है। भाषा साधारण है।

नाम—($\frac{११६५}{०अ}$) धर्मचंद।

ग्रंथ—जैन-सूत्र।

रचना-काल—सं० १८६९।

विवरण—जैन-दर्शन के सूत्रों पर टीका है।

नाम—($\frac{११६५}{०अ॰}$) नयनानंद।

ग्रंथ—शालभद्र राजा की कथा।

रचना-काल—सं० १८६९।

विवरण—ग्रंथ जैन-साहित्यांतर्गत है।

नाम—($\frac{११६७}{५}$) मनोहरदास सोनी, साँगानेर।

ग्रंथ—धर्म-परीक्षा।

रचना-काल—सं० १८६६।

विवरण—ग्रंथ का विषय धार्मिक है।

नाम—(११६६/१) ऐनानंद कवि, ग्वालियर।

ग्रंथ—कुंडलियात्मक गीता।

रचना-काल—सं० १८७०।

विवरण—आप मुसलमान फ़क़ीर थे। महाराजा दौलतराव सिंधिया के समय में आपका होना पाया जाता है। अभी तक आपकी समाधि ग्वालियर-क़िले पर विद्यमान है। भाषा पर आपका अच्छा अधिकार था।

उदाहरण—

ऐनानंद फकीर हैं, परमहंस निर्वान;
डाढ़ी-मूँछ मुँड़ावतें, भसम करें असनान।
भसम करें असनान, रखें पीतांवर सारा;
जानहिं एकहि ब्रह्म, तुरक हिंदू नहि न्यारा।
भिक्षुक दोऊ दीन के, ऐन एक ही जान;
ऐनानंद फकीर हैं, परमहंस निर्वान।

नाम—(१२०३/१) नेमिदत्त, ग्वालियर।

ग्रंथ—नेमिपुराण। जैन रचना है।

रचना-काल—सं० १८७०।

नाम—(१२०३/२) प्रभाकर, महाराष्ट्र-प्रांत।

ग्रंथ—स्फुट।

कविता-काल—सं० १८७०।

विवरण—यह अंतिम पेशवा बाजीराव के समकालीन थे। इन्होंने शृंगार-रस-पूर्ण लावनियाँ और वीर-रस-पूर्ण पवाँड़े लिखे हैं।

नाम—(१२०४/५) लालजीत।

ग्रंथ—अकीर्ति-जिन-मंदिर-पूजा।

रचना-काल— सं० १८७०।

नाम—(१२०४/६) सरूपचंद।

ग्रंथ—अकीर्ति-जिन-मंदिर-पूजा।

रचना-काल—सं० १८७०। जैन कवि।

नाम—(१२०५/०) भूपतिराम।

ग्रंथ—त्रिलोकसार।

रचना-काल—सं० १८७१।

विवरण—ग्रंथ में जैन-दर्शनानुसार तीन लोकों का छंदोबद्ध वर्णन दिया हुआ है।

नाम—(१२०७/३) रामचंद्र।

ग्रंथ—भाव-संग्रह।

रचना-काल—सं० १८७१।

विवरण—ग्रंथ में जैन-पूजा का वर्णन है।

नाम—(१२०६/०) फ़ाज़िलख़ाँ, गुजरात-प्रांत।

रचना-काल—सं० १८७२।

ग्रंथ—चुग़लख़ोर की लीला।

विवरण—पेशवाओं का राज्य जब गुजरात में था, उसी समय में आपका होना पाया जाता है।

नाम—(१२१०/०) रसिकराय।

ग्रंथ—द्वारकाधीश चौरासी।

रचना-काल—१८७२। कवि इस विषय में लिखता है—

"संवत अठारह बहत्तर
कृष्णाष्टमी शुभ साजि;

शुक्रबार आषाढ़ सुदि,
बहु दुंदुभी वर गाजि।"

विवरण—संभवतः यह महाशय महाराजा दौलतराव सिंधिया के दीवान 'पारखजी' थे। इनका मथुराजी में द्वारकानाथ का मंदिर बनवाना पाया जाता है। इनके कई पदों के अंत में 'पारख' का उल्लेख पाया जाता है।

नाम—(१२१२/३) माणिकचंद।

ग्रंथ—परमागमसार।

रचना-काल—सं० १८७१।

विवरण—ग्रंथ का विषय जैन-तत्त्वज्ञान है।

नाम—(१२१४/१) सरूपसिंह।

ग्रंथ—उत्तरपुराण।

रचना-काल—सं० १८७२।

विवरण—जैन-साहित्य में यह एक प्रसिद्ध ग्रंथ है। भाषा उत्कृष्ट है।

नाम—(१२१५/१) अचलसिंह।

ग्रंथ—समरसार

रचना-काल—सं० १८७४।

विवरण—ग्रंथ ज्योतिष के विषय पर है।

नाम—(१२२०/१) चंद्रभान।

ग्रंथ—कार्त्तिक-माहात्म्य।

रचना-काल—सं० १८७५।

विवरण—ग्रंथ में मालवीपन की झलक है।

नाम—(१२२५/१) प्रवीन।

काल—१९वीं शताब्दी का उत्तरार्ध।

ग्रंथ—स्वप्नाध्याय (छंदोबद्ध)।

विवरण—श्रीयुत भालेरावजी के कथनानुसार आपका समय लिखा गया है।

नाम—(१२६१/१) दीनदयाल, ढुंडार (जयपुर-राज्य)।

ग्रंथ—बुधजन-सतसैया।

रचना-काल—१८७९। कवि ने इस विषय में स्वयं लिखा है—

"संवत् अठारह सै असी, एक वरस तै घाट;
जेठ कृष्ण रवि अष्टमी, हुयो सतसई पाठ।"

विवरण—ग्रंथ में व्यावहारिक बातों का वर्णन है।

नाम—(१०६७/१) जीवनदास, बहादुरगढ़।

ग्रंथ—पंचकल्याण।

रचना-काल—सं० १८८०।

विवरण—आप जैन-धर्मानुयायी थे।

नाम—(१०७५/१) वली हाजी, ग्राम कोलारस (नरवर)।

ग्रंथ—हाजीवलीनामा।

रचना-काल—सं० १८८०।

विवरण—आप मुसलमान थे। सूफ़ी होने के कारण आपने हिंदू-तत्त्वज्ञान का अच्छा अध्ययन किया था। आपने ग्रंथ में तत्त्वज्ञान पर अच्छे भाव कहे हैं।

नाम—(१२८०/१) गणधर सूरि।

ग्रंथ—आत्मानुशासन।

रचना-काल—सं० १८८१।

विवरण—ग्रंथ जैन-तत्त्वज्ञान पर है।

नाम—(१०८१/५म) पन्नालाल।

ग्रंथ—पाहुड़-ग्रंथ।

रचना-काल—सं० १८८१।

विवरण—कुंद कुंदाचार्य-कृत मूल-ग्रंथ का यह अनुवाद है। ग्रंथ का विषय जैन-दर्शन-शास्त्र है।

नाम—(१२८५/१) लुक़मान हकीम।

ग्रंथ—(१) नसीहतनामा (अनुवादित), (२) मुग़ल-पुराण, (३) सुखदेव-लीला, (४) वैद्यक।

रचना-काल—सं० १८८२।

नाम—(१२८६/१) गुणभद्र सूरि।

ग्रंथ—आत्मानुशासन।

रचना-काल—सं० १८८३।

विवरण—मूल-ग्रंथ का गद्य में अनुवाद है। ग्रंथ में जैन-दर्शन के अनुसार तत्त्वज्ञान का वर्णन है।

नाम—(१२८७/१) हरि, शाहाबाद (कोटा-राज्य)।

ग्रंथ—रसमंजरी।

कविता-काल—सं० १८८३।

ग्रंथ-लेखन-काल के उपलक्ष में कवि ने निम्न-लिखित छंद दिया है—

त्रिविवसु रूप सुसंवत नभ सित पांचे पुष्यादित्य ;
तादिन किए आरंभ श्रुतिति बोध सुभग रसमंजरी।

विवरण—कवि ने अपने आश्रयदाता की गुणग्राहकता का अच्छा वर्णन किया है। संभवतः यह कोटा-राज्य के आश्रित थे। इसी नाम के दूसरे कवि विनोद के द्वितीय भाग में हैं (देखो नं० ८५२)।

नाम—(१२९१/१) निश्चलदास, बूँदी।

ग्रंथ—(१) विचार-सागर, (२) वृत्तप्रभाकर।

विवरण—जाति के आप चारण थे, किंतु साधु हो गए, ऐसा कहा जाता है। उक्त दोनो ग्रंथ इन्होंने बूँदी-नरेश महाराजा रामसिंहजी के आश्रय में रहकर बनाए।

नाम—($१४\frac{०}{६}८$) परमसुख सिंघई।

ग्रंथ—नसीहतनामा।

रचना-काल—सं० १८८७।

विवरण—ग्रंथ में व्यावहारिक बातों का वर्णन है।

नाम—($१३\frac{०}{२}९$) माणिकदास।

ग्रंथ—राम-रसायन।

रचना-काल—सं० १८८७।

विवरण—ग्रंथ में राम-नाम-स्मरण का महत्त्व वर्णित है।

नाम—($१३\frac{१}{०}७$) दीनदर्वेश, काठियावाड़।

कविता-काल—सं० १८८८।

ग्रंथ—स्फुट कविताएँ।

विवरण—आप जाति के लुहार तथा बाल साधु के शिष्य थे। विनोद में नं० १२२९ पर इसी नाम के एक मुसलमान बुंदेलखंडी कवि और आ चुके हैं, किंतु वह इन महाशय से पृथक् हैं। यह हिंदू और मुसलमान में भेद नहीं मानते थे। इनकी भाषा गुजराती-मिश्रित हुआ करती थी, और रचनाओं में आध्यात्मिक भाव की झलक रहती थी।

नाम—($१८\frac{२}{१}५$) दुलीचंद।

ग्रंथ—मोक्ष-मार्ग-प्रकाश।

रचना-काल—सं० १८९०।

विवरण—ग्रंथ वैराग्य और नीति पर है।

उदाहरण—

मिलि-मिलि झुंडनि निकुंजन पधारा करैं,
नंदन सुधारा करैं चंदन दलान की;
बर अरबिंदन की माला गुहि डारा करैं
तुलसी गुलाब मध्य कुंचित कलान की।

वल्लरी दरीचिन में लरैं लटकारा करैं,
गुंफित लतान-मध्य ग्रंथित फलान की ;
राधा महारानी महाराज कृष्णचंद्रजू की,
आरती उतारा करैं दारा देवतान की।

नाम—(१८२६/० अ) भगतीराम उपनाम खुशराम, कृष्णगढ़।

कविता-काल—१८६० के आस-पास।

परिचय—आप भी वृंदजी के वंशधरों में थे।

उदाहरण—रानी जतनकुँवरि के सती होने का वर्णन।

कृष्णगढ़ चढ़ती रती सो भई रानावत,
सती सत्य सुकृत को कर्म करिबो करी ;
कहैं 'खुशराम' आग अंक धरि धीरज सों,
वर बखतेशजू को ध्यान धरिबो करी।
राम रट झट पट झपट - झपटकर,
लाय की लपट सौं लपट लरिबौ करी।
प्रेम-अनुराग भरी गौरी ज्यों सुहाग भरी,
भाग-भरी भूरि आग भर जरिबौ करी।

नाम—(१८२६/० अ।) मनोहरदास स्वामी, गुजरात-प्रांत।

काल—१९वीं शताब्दी का अंतिम समय।

ग्रंथ—स्फुट कविताएँ।

विवरण—आप रामानंदी संप्रदाय के साधु थे।

नाम—(१८२०/१) शिवराखन वाजपेयी (शिवराज), असनी।

कविता-काल—प्रायः १९वीं शताब्दी का अंत।

ग्रंथ—कविप्रिया की टीका।

विवरण—आप धनी के वाजपेयी, असनी के रहनेवाले थे। आपका महाराज बौंड़ी से प्रगाढ़ प्रेम था, और कहा जाता है कि वहीं

के आप राजकवि थे। इनके वंशधर मँझौली राज्याश्रय में अभी मौजूद हैं। इनकी कविताएँ प्रसाद-गुणालंकृत हुआ करती थीं। आपकी रचनाओं का समावेश ग्रंथ के आकार में अभी तक नहीं हुआ है। सुना जाता है, आपके पौत्र पं० उमेशचंद्र वाजपेयीजी शीघ्र ही इस प्रशंसनीय कवि की कृतियों को इकट्ठा कर एक पुस्तकाकार संस्करण में निकालनेवाले हैं। यह कवि महाशय तथा ऊपर दिए हुए इनके ग्रंथ का नाम हमको पं० बालमुकुंद पांडेय, गोरखपुर द्वारा ज्ञात हुए हैं।

उदाहरण—

एक तो असील होय, दूजै नैन सील होय,
तीजे बने डील होय, चौथे चोप ठानेगो;
पाँचवे प्रवीन होय, छठवें छली न होय,
सातवें शरम, आठें ओज उर आनेगो।
कहै 'शिवराज' नेति नवमें निगाह राखें,
दसवें दिमाग, गुन ग्यारें पहिचानेगो;
बारहें बिमल बुद्धि, तेरहें तरद्दार,
चौदहें चतुर ताहि गुनी जन मानेगो।

नाम—($\frac{१८३०}{५}$) ब्रजेंद्र, भरतपुर।

ग्रंथ—रसानंद (ब्रजेंद्रप्रकाश)।

रचना-काल—सं० १८६१।

विवरण—संभवतः यह कवि भरतपुर के राज्य-शासकों में से थे। ग्रंथ नायिका-भेद पर है।

नाम—($\frac{१८३१}{१ अ}$) गंगाधर प्रधान।

ग्रंथ—आदिपुराण।

रचना-काल—सं० १८६२।

विवरण— ग्रंथ का विषय जैन-पुराण है।

नाम—(१८$\frac{३}{३}$१) फ़तेसिंह कायस्थ, शिवपुरी, रियासत ग्वालियर।

ग्रंथ—दफ़्तरनामा, अर्थात् हिंदी में हिसाब-किताब के विषय का छंदोबद्ध वर्णन।

रचना-काल—सं० १८९२।

नाम—(१८$\frac{३}{१}$७) रणधीरसिंह।

ग्रंथ—(१) काव्य-रत्नाकर, (२) भूषण-कौमुदी, (३) पिंगल वा नामार्णव, (४) रस-रत्नाकर।

जन्म-काल—सं० १८७७।

विवरण—ज़िमींदार सिंहरामऊ, जौनपुर। खोज प्र० त्रै० रि० से सं० १८९४ निकलता है।

नाम—(१८$\frac{५}{०}$३) मोहनदत्त।

रचना-काल—अनुमानतः १९वीं शताब्दि का अंतिम काल।

ग्रंथ—आत्म-बोध।

विवरण—श्रीयुत भाळेरावजी का कथन है कि उक्त ग्रंथ प्राप्त हुआ है, और उसमें विविध छंदों में वेदांत वर्णित है।

नाम—(१९$\frac{०}{१}$८) बख़तावरसिंह (कविराव)।

जन्म-काल—सं० १८७३ (सं० १९५२ में शरीरांत हुआ)।

रचना-काल—सं० १८९८।

ग्रंथ—(१) सरूप-यश-प्रकाश, (२) शंभु-यश-प्रकाश, (३) सज्जन-यश-प्रकाश, (४) फतह-यश-प्रकाश, (५) सामंत-यश-प्रकाश, (६) रसोत्पत्ति, (७) अन्योक्ति यश-प्रकाश, (८) संचार्णव, (९) रागिनियों की पुस्तकें, (१०) केहरि-प्रकाश, (११) सचित्र रसिकप्रिया तथा सज्जन-चित्त-चंद्रिका।

विवरण—दसोंदी रायों के वंशज। इनके पूर्वज जयपुर राजकवि

थे। मेवाड़ में कई गाँव पाए थे। आप भी उदयपुर आदि कई राज्यों के कवि थे।

उदाहरण—

लच्छ गुनो नील ते करोर गुनो कज्जल ते,
अरब खरब गुनो करदम कारा ते;
'बखत' भनत लग्यो आनि अवनीपन के,
विदा सो कलंक बड़ अकबर वारा ते।
मेदपाट मंडल महीप निज पानिपसों
धरिकै विबुध हरि-हर के सहारा ते;
धोय जो न लेतो 'श्रीप्रताप' वीरवर तो तो
धोतो न कलंक वो हजार गंग-धारा ते।

नाम—(२०२४/२) बैजनाथ भंडिले (ब्राह्मण जुझौतिया), दतिया।

जन्म-संवत्—अनुमानतः १८७० वि०।

कविता-काल—अनुमानतः सं० १९०४।

उदाहरण—

जरब जरी पै नग जटित जवाहर के,
पदर किनारा गज-मुक्ता मन गौद जात;
साज तन भूषण अभूत कंदरप अर्प,
झरफ दवानल की उपमान रौंध जात।
कहै 'बैजनाथ' आफताब को दबावै आब,
ताब महताब की न चंचलान कौंध जात;
तेरे मुख-चंद्र को प्रकाश छिति माँहि देख,
चकित भयौ सौ चित चंद्र चकचौंध जात।
हय हाथी हथयार रस और रतन की खान;
'बैजनाथ' करबो कठिन मानस की पहिचान।

नाम—(२०११/२) गणपतराव, महाराष्ट्र-प्रांत ।

ग्रंथ—स्फुट ।

कविता-काल—सं० १९०६ ।

विवरण—यह नासिक के निवासी थे । कीर्तन किया करते थे ।

नाम—(२०११/२अ) दत्तनाथ, महाराष्ट्र-प्रांत ।

ग्रंथ—स्फुट ।

कविता-काल—सं० १८९० ।

मृत्यु-काल—१९०६ ।

विवरण—यह महीपतिनाथ कवि के समकालीन थे (देखो नं० ८७०/२)। इनकी मृत्यु १२६ वर्ष के उपरांत हुई । भालेजीराव का कथन है कि इनका मठ अब तक उज्जैन में बना हुआ है, जहाँ से महादाजी शिंदे-कृत 'कवितासार-संग्रह', 'माधव-विलास'-नामक ग्रंथ उन्हें पहले-पहल प्राप्त हुआ था ।

नाम—(२०११/२आ) नागजी औदीच्य गाधड़, गुजरात-प्रांत ।

काल—सं० १९०६ ('सौराष्ट्र-इतिहास' से) ।

ग्रंथ—कुंडलिया-ग्रंथ ।

नाम—(२०११/४) प्रागनि कवि ।

रचना-काल—सं० १९०६ ।

ग्रंथ—भ्रमर-गीत ।

विवरण—उक्त रचना व्रजभाषा में है । महात्मा सूरदास ने सबसे प्रथम भ्रमर-गीत रचा था, और उनके पश्चात् नंददास, वृंदावनदास, रसिकराय आदि कवियों ने भी इसी विषय पर रचनाएँ की हैं । नंददास-कृत भ्रमर-गीत बहुत प्रसिद्ध रचना समझी जाती है । तुलनात्मक दृष्टि से आपका भी भ्रमर-गीत हिंदी-साहित्य

में विशेष स्थान रखता है। नंद-यशोदा और गोपियों को समझाने तथा उन्हें उचित मार्ग पर लाने के हेतु ऊधो का श्रीकृष्ण द्वारा व्रज में भिजवाया जाना ग्रंथ में वर्णित है। वर्णन उत्कृष्ट तथा सरस है। इन कवि महाशय का परिचय माधुरी पत्रिका (वर्ष ४, खंड १, संख्या १) में दिए हुए पं० भगीरथप्रसाद दीक्षित के लेख के आधार पर दिया गया है। दीक्षितजी का कथन है कि उक्त कवि-कृत भ्रमर-गीत का उल्लेख खोज की रिपोर्ट में है, और इस ग्रंथ की संवत् १६०५ की लिखी हुई प्रति भी प्राप्त हुई है।

उदाहरण—

आयसु दीन्हों सखा सुजानहिं।
स्यंदन चढ़ौ, सिधारौ व्रज कौं सिद्धि रावरे आनहिं।
कैसी हैं जसुदा जननी जिनि पालि कियो परवीन;
मोहिं अछत अब होति होहिगी पर-सूतन्ह आधीन।
गहियो पायँ नंद बाबा के कहियो यहै सँदेसौ;
जो तुम कियो महाकृत हमसों गुनि न सकत गुन सेसौ।
समाधान कीजेहु गोपिन कौं, दीजेहु निर्मल ज्ञान;
कहियो जोग-जुगति सो 'प्रागनि' त्रिपुटी संयम ध्यान।

नाम—(२०४०) रसिकलाल उपनाम रामदास माथुर, तहसील रामगढ़, राज्य अलवर।

जन्म-काल—सं० १८७६।

रचना-काल—सं० १६१०।

मृत्यु-काल—सं० १६५७।

ग्रंथ—गीतामृत-धारा।

विवरण—आप रूड़मलजी के पुत्र थे। वेदांतसार-नामक आपका एक दूसरा ग्रंथ अमुद्रित रूप में आपके वंशज लाला भैरोंलाल तथा गोपालसहाय माथुर, अलवर के पास मौजूद है, ऐसा कहा जाता है।

नाम—(२०४०/३) रामाजी दादा शिंदे।

ग्रंथ—(१) कमलावती की कहानी, (२) वंशावली इतिहास।

रचना-काल—सं० १९१० ।

विवरण—आप महाराजा सेंधिया के वंशधर थे। ग्रंथ की भाषा उर्दू-मिश्रित है।

नाम—(२०५५/१) किशोरसिंह कांधल, ग्राम पीथरासर, रियासत बीकानेर।

जन्म-काल—सं० १८८९ के लगभग।

मृत्यु-काल—सं० १९७८ ।

ग्रंथ—स्फुट कविताएँ ।

विवरण—आप रियासत बीकानेर के एक सम्मानित सरदार थे। कुछ काल तक उक्त रियासत में इंस्पेक्टर-पुलिस तथा वकील, आबू के नाते काम कर चुकने पर यह महाशय वहाँ के हाईकोर्ट-जज हो गए। यह कवि ठाकुर चतुरसिंह, राष्ट्रवर (बीकानेर) द्वारा हमें ज्ञात हुए हैं।

नाम—(२०६१/१) लक्ष्मीनाथ गोसाइँ, मिथिला।

रचना-काल—सं० १९१४ के लगभग।

ग्रंथ—भजनावली।

विवरण—आप मैथिल ब्राह्मण थे। काशी के विख्यात पंडित राजाराम शास्त्री आपके शिष्य थे। आपका देहांत हुए लगभग पचास वर्ष व्यतीत हुए हैं।

नाम—(२०७३/१) मीरादास, मालवा।

ग्रंथ—नरसी मेहता का मामेरा।

रचना-काल—सं० १९१५ ।

नाम—(२०६८/३अ) गंगाधर व्यास, राज्य छतरपूर।

जन्म-काल—सं० १८९९ ।

रचना-काल—सं० १९१६ ।

मृत्यु-काल—सं० १९७२ ।

ग्रंथ—(१) नीति-मंजरी, (२) गो-माहात्म्य, (३) भर्तृहरि-चरित्र, (४) श्रीविश्वनाथ-पताका, (५) कलियुग-पचीसी, (६) सुदामा-चरित्र, (७) सत्योपाख्यान (छंदोबद्ध भाषानुवाद) और स्फुट कविताएँ ।

विवरण—आप सनाढ्य ब्राह्मण थे । आपके पिता का नाम पं० रामलाल व्यास तथा पितामह का पं० लहोरेलालजी व्यास था । इनके पूर्वजों का आदिम निवास-स्थान व्रजमंडल था, किंतु कालांतर में वह महोबा ज़िला हमीरपूर में आकर बस गए थे । तदनंतर छतरपूर-राज्य में आए । पांडित्य तथा कुलीनता की दृष्टि से व्यासजी का घराना प्रतिष्ठित है । आप जन्मतः एक आशुकवि थे, और बुंदेलखंडी भाषा पर आपका अच्छा अधिकार था । आपकी बनाई हुई बहुत-सी काव्य-पंक्तियाँ सर्व-साधारण में, लोकोक्ति की भाँति, प्रचलित हैं । बीसवीं शताब्दी के बुंदेलखंडी कवियों में व्यासजी का आसन श्रेष्ठ है । यह महाशय छतरपुराधीश श्रीमान् महाराजा विश्वनाथसिंहजू देव के आश्रित कवि थे । हर्ष का विषय है, इनकी कविता तथा ग्रंथों का संग्रह पं० रामनारायण शर्मा के संपादकत्व में गंगाधर-ग्रंथावली के नाम से श्रीसनाढ्य-ग्रंथमाला, कालपी से शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाला है ।

उदाहरण—

मत्त मतंगन की गति सों गजगामिनि नाम मिल्यो सुखदानी ;
त्यों 'द्विज गंग' तजै नहिं ताहि, मराल हँसी मरिहैं मन मानी ।
यों लचिहै कच-भारन लंक, न मानत संक निसंक दिवानी ;
मंद चलै किन चंद्रमुखी, पग लाखन की अँखियाँ उरझानी ।

नाम—(२१००/१) सुखानंद स्वामी।

ग्रंथ—(१) मनमोहिनी-विनोद, (२) धर्म-संजीवनी, (३) विवेकसार, (४) विविध धर्म-निर्णय, (५) स्वर्णकार ब्राह्मण, (६) कान्यकुब्ज-वंशावली, (७) आत्म-तीर्थावलोकन, (८) राष्ट्रीय आल्हा तर्पण, (९) ब्रह्मनिर्णय, (१०) प्रश्नोत्तरी, (११) सुखानंद-गीता, (१२) निर्णय-नियम, (१३) अजब रामायण, (१४) मूल-निर्णय, (१५) सनाढ्य-वंशावली, (१६) सुखानंद-प्रकाश, (१७) स्वराज्य-विनोद, (१८) कर्म-उपासना, (१९) ज्ञान-पद्धति, (२०) राजधर्म, (२१) ज्ञान-तर्पण, (२२) ईश्वरावतार, (२३) वेदोक्त गायन, (२४) ब्राह्मण।

जन्म-काल—सं० १८९१।

रचना-काल—सं० १९१६।

नाम—(२१०३/१) इंशाअल्लाखाँ।

रचना-काल—सं० १९१७ के लगभग।

काल—कवि लल्लूजीलाल के समकालीन थे।

विवरण—आपने हिंदी की खड़ी बोली में 'रानी केतकी की कथा' रची। इसमें अनुप्रास-युक्त उर्दू-मिश्रित गद्य-काव्य है, इसे चाहे हिंदी कहें, चाहे उर्दू।

नाम—(२११५/१) देवीप्रसाद थापक (सनाढ्य ब्राह्मण), कालपी।

जन्म-काल—सं० १८९० वि०।

कविता-काल—सं० १९२०।

सं० १९२० से १९३५ तक प्रधानाध्यापक, कालपी-मिडिल-स्कूल। १९४५ वि० में डिपुटी-इंस्पेक्टर ऑफ़ स्कूल्स।

ग्रंथ—(१) ध्यान-माला, (२) मन-विनोद, (३) दुर्गाष्टक।

उदाहरण—

प्रचंड चंड मुंड खंड रुंड मुंड के धरा,
हुँकार घोर शोर तें डरे मरे निशाचरा ;
अनंत वीर धीर्य कीर्ति लोक कोक को धरौ,
दुरंत द्वंद खंडिए विलंब अंब क्यों करौ।
अपार दुःख दाह-दाह शुद्ध बुद्धि कीजिए,
सदैव सुख देय-देय शत्रु-शीश मीजिए ;
अधीन मातु जान हीन दीन की व्यथा हरौ,
दुरंत द्वंद खंडिए विलंब अंब क्यों करौ।

नाम—(२११७/३अ) (राजा) पृथ्वीसिंह (जी), कृष्णगढ़।

परिचय—इनका पहला नाम स्योपानसिंह था। मोहकमसिंहजी के मरने पर यह उनके उत्तराधिकारी हुए, तथा पृथ्वीसिंह नाम पड़ा। यह वैष्णव तथा व्यवहार-कुशल राजा थे। कभी-कभी कविता भी करते थे।

रचना-काल—सं० १९२० के लगभग।

नाम—(२१२८/५) हंसराज (जी), कृष्णगढ़।

परिचय—वृंदजी के वंशज तथा किशनगढ़ के दरबारी कवि थे।

रचना-काल—सं० १९२० के लगभग।

उदाहरण—

नूर बढ़ आनन पै आज चढ़्यो सूरन को,
परम प्रजानि को उछंगल हू मिटि गौ ;
काँपे उर चोरन के धाड़वी धधक रहे,
नीति धन प्रीति सों अनीति-बीज हटि गौ।
पाटके विराजत श्रीपृथ्वीसिंह भूपति के,
तपन प्रताप लोक तामस उछटि गौ ;

धाक परे देशन औ' हाक परे शत्रुन पै,
धौकल धरा को सब एकै साथ मिटि गौ।

नाम—($\frac{२१३५}{१}$) ज्ञानअली।

समय—सं० १६२२।

ग्रंथ—सियवरकेलिपदावली। (पं० त्रै० रि०)

नाम—($\frac{२१४२}{१}$) (महाराजकुमार) नर्मदेश्वरप्रसाद-सिंहजी।

आपका जन्म सं० १८६६ में, जगदीशपुर शाहाबाद में, हुआ था। आपके पिता का नाम तुलसीप्रसादसिंह था। आप फ़ारसी-संस्कृतादि भाषाओं के विद्वान् तथा हिंदी-भाषा के कवि थे। आपके पूर्वज उज्जैन से आकर यहाँ बसे थे। ये लोग प्रमार-क्षत्रिय-वंश के थे, परंतु उज्जैन से आए हुए होने के कारण इनके वंशधर उज्जैन नाम से विख्यात हुए। ग़दर के बाद आपने जगदीशपुर का रहना छोड़कर वहाँ से दक्षिण तीन मील दूर दिलीपपुर-नामक ग्राम में अपना निवास-स्थान बनवाया। आप प्रायः डुमराँव जाया करते थे। यहाँ से सं० १६६२ में आपको पक्षाघात रोग हो गया, और इसके बाद इस रोग के कारण आप साहित्य-सेवा से वंचित रहे।

आपने 'शिवाशिव-शतक', 'शृंगार-दर्पण', 'पंच-रत्न' और 'धर्म-प्रदर्शिनी'-नामक चार ग्रंथों की रचना की। 'शिवाशिव-शतक' सं० १६३२ की माघ-शुक्ला पंचमी को बना। यह भारत-जीवन-प्रेस में छपा है। इसमें नामानुसार १०० कवित्त-सवैयों में शिव की स्तुति है। शृंगार-दर्पण नख-शिख का ग्रंथ है। इसकी रचना शिवाशिव-शतक के एक वर्ष उपरांत हुई, और यह ग्रंथ सेंट्रल-प्रेस, दीनापुर में प्रकाशित हुआ। पंचरत्न अभी तक अप्रकाशित है। यह सं० १६४२ के पूर्व का होगा। इसका होना इनके वंशधर दुर्गाप्रसादसिंहजी द्वारा विदित हुआ है। जीवनी भी इन्हीं के द्वारा प्राप्त हुई है। इसमें



अधिकांश छंद, कवित्त, सवैया आदि हैं। कहीं-कहीं दोहे-सोरठे भी मिलते हैं। 'धर्म-प्रदर्शिनी' सं० १९६३ में समाप्त हुआ। यह श्रीवेंकटेश्वर-प्रेस में मुद्रित हुआ है। धर्म-प्रदर्शिनी धर्म-विषयक गद्य-पद्यात्मक ग्रंथ है।

उदाहरण—

फटि जाते सेस के सहस्त्र फन भारन तें,
दिग्गज दतारन के दुःख को छुड़ावतो;
पुहुमि सहसि डगडग डगमग होति,
हद तजि जलधि को जल बढ़ि आवतो।
रहि जातो वेद-पथ सुपथ करे को कहाँ,
देवन की सेवन में कौन मन लावतो;
'ईस्वरीप्रसाद' जो न अधम-उधारन को
बानो गहि कालिका को नाम जग छावतो।

नाम—($\frac{२१४३}{९अ}$) शिवदयाल पांडे (भेप) कश्मीरी मोहल्ला, लखनऊ।

जन्म-संवत्—लगभग १९००।

रचना-काल—सं० १९२४।

ग्रंथ—दशम स्कंध भागवत के भाग का छंदोबद्ध अनुवाद।

विवरण—आप हमारे पूज्य पिताजी तथा लेखराज कवि के मित्रों में थे। बड़े ज़िंदादिल व्यक्ति थे। एक बार बर्तन गिरों करके हम लोगों का सविधि आतिथ्य किया, और यह बात हमें पीछे से विदित हुई।

उदाहरण—

चित की हम ऊधो जो बातैं करैं अवकास अकासन पाइहैं जू;
इन तुंग के तुंग तरंगन के उमड़े जल कैसे समाइहैं जू।

ढुरिहै दृग कोर जो भेख कहूँ सिगरा ब्रज फेरि बहाइहै जू ;
सिगरी यह रावरी ज्ञान-कथा कहि कौन को को समुझाइहै जू ।

नाम—(२१४७/३) गिरिधर ।

कविता-काल—सं० १९२५ के लगभग ।

ग्रंथ—(१) प्रताप-यशेंद्र-चंद्रिका, (२) शिवसागर, (३) गोपाल-सागर, (४) मणिरत्न-माला (संस्कृत-ग्रंथ का हिंदी में छंदोबद्ध भाषांतर) ।

विवरण—आप गुजरात के अंतर्गत बीजापूर ग्राम के निवासी थे । आप कवि ज्येष्ठालाल के सहाध्यायी तथा सहकवि थे । दोनो में ज्येष्ठालालजी कविता करने में विशेष प्रख्यात हुए । उपर्युक्त ग्रंथ दोनो कवियों की मिलकर बनाई हुई रचनाएँ हैं । आप दोनो महाशयों का गुजरात के रजवाड़ों में अच्छा सम्मान था ।

नाम—(२१६०/२) राजेंद्रसिंह व्यवहार ।

ग्रंथ—(१) तुलसी का भक्ति-मार्ग, (२) तुलसी काव्य-कलाधर, (३) तुलसीदास और कालिदास, (४) वशीकरण, (५) ग्राम-सुधार, (६) आदर्श ग्राम, (७) पुनर्विवाह, (८) सत्य-विजय, (९) गीता की गाथा, (१०) शांति-निकेतन अथवा शिव-भारती का संग्राम-स्थल, (११) ईसा का उपदेश, (१२) महा-कवि कालिदास ।

जन्म-काल—सं० १९०० ।

विवरण—आप जबलपुर के प्रसिद्ध रईस व्यवहार रघुवीरसिंह के पुत्र हैं ।

नाम—(२२१६/१) रघुनाथप्रसाद उपाध्याय, जौनपुर ।

ग्रंथ—निर्णय-मंजरी ।

जन्म-काल—सं० १९०१ ।

विवरण—साधारण श्रेणी ।

नाम—($२२\frac{१}{५}८$) कालिकाप्रसाद, डिहमौरा, ज़िला सारन।
ग्रंथ—सियास्वयंवर। द्वि० त्रै० रि०।
कविता-काल—सं० १६५२ के पूर्व।

नाम—($२२\frac{७}{१}६$) रामदयाल पांडेय 'रामानंद', शहर इटावा।
जन्म-काल—सं० १८६८।
कविता-काल—सं० १६२७।
मृत्यु-काल—सं० १६६६-७०।
ग्रंथ—(१) क़वायद की किताब (छंदोबद्ध), (२) भगवद्गीता (छंदोबद्ध), (३) रामचरित-मानस (छंदोबद्ध अनुवाद), (४) स्फुट रचनाएँ।
विवरण—आप ग्वालियर की फ़ौज में सूबेदारी के पद पर थे। (लाला रघुनंदनसिंह, इटावा द्वारा ज्ञात)।
उदाहरण—

हस्वाक्षरी छंद

ब्रज पर चढ़-चढ़ सघन गगन घन,
उमड़-उमड़ गरजत बरसत जल।
चलत पवन अति प्रबल प्रलय-सम,
डरत नरत मन तरुवर भल-भल।
चम-चम चमक-चमक चम चमकत,
थर-थर कँपत धरणि तरुवर हल।
तब (?) महँ नख पर परवत धरकर,
हरत सकल अघ दरदन चल-चल।

नाम—($२२\frac{३}{५}८$) दलथंभनसिंह (द्विजदास), हथिया, सीतापुर।
जन्म-काल—सं० १६०३।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२२३५) अड़कूलाल वैद्य (ब्राह्मण सनाढ्य), ललितपुर (झाँसी)।

जन्म-काल—सं० १९०८।

कविता-काल—सं० १९३०।

विवरण—दीवान विजयबहादुरसिंह ननौरा के सं० १९६१ वि० से १९८२ वि० तक मुख़्तार रहे। अब अवकाश ग्रहण कर ललितपुर में रहते हैं।

ग्रंथ—पारजात-रामायण।

उदाहरण—

तोटक

निगमागम शारद शेष सदा ;
सिर अंतर भाप स्वयंभु मुदा।
गजराज उबारनहार प्रभो ;
दुर ग्राह विदारन राम नमो।
स्वर भी स्वर भू स्वर पाल हरी ;
जन जान सुदामह त्रान करी।
भृगुराम अनंत अनंत गती ;
जय दीनदयाल अपार मती।
मख रूप निरूप अनूप तनं ;
अति अद्भुत कांति सुश्याम घनं।
कह राममुकुंद गुबिंद प्रणं ;
इम बंदि सुरेश गए भवनं।

नाम—(२०६४) बनवारीलाल मिश्र, लालूचक, भागलपूर।

जन्म-काल—सं० १९०२।

रचना-काल—अनुमानतः सं० १९३०।

मृत्यु-काल—सं० १९७२ ।

ग्रंथ—(१) ज्ञान-विनोद (ज्ञान-वाटिका), (२) नाटक, प्रहसन आदि ।

विवरण—आप कान्यकुब्ज ब्राह्मण कन्नौज के मिश्र थे । कहा जाता है, आप असाधारण साहसी पुरुष थे । आपने १८ वर्ष की अवस्था में लाठी से एक शेर मारा था । आप खड़ी बोली में भी कविता करते थे, किंतु कविता के योग्य आप ब्रजभाषा को ही मानते थे । पं० शिवरत्न मिश्रजी, भागलपुर का कथन है कि इन कवि महाशय ने अपनी सारी कविता टिकारी-ग्रामवासी भगलू तिवारी के नाम पर की है, और आपने इसी कविता-संग्रह का नाम 'भगलू-कृत ज्ञान-विनोद' रक्खा है । उक्त ग्रंथ हमें मिश्रजी से प्राप्त हुआ है, और उसकी भूमिका में यह लिखा हुआ है—

"एक विप्र भगलू तिवारी, टिकारी-ग्राम के जो थोड़ी कविता जानते थे, हमारे संगी हुए । वो वही कवित्व बनाने की श्रद्धा हमारे चित्त में उत्पन्न किए...। उन्हीं के नाम से काव्य रची गई...।"

उदाहरण—

काया बीच में जाकर बैठा देखत सकल तमासा है;
देखो वह है अजब खिलाड़ी समझै में नहिं आता है।
पंच बयारि लगे मन डोले तिहूँ लोक भरमाता है;
जहँ-जहँ मनुआ खेल करत है, तहँ-तहँ खेल खिलाता है।
चित माया दोउ नाच नचावत कुल परिवार बनाता है;
ग्रसे रहत चहुँ ओर से मन को ता बिच आप न आता है।
है वह सदा सबन तें न्यारा छाया कर दरसाता है;
मन स्थिर करके देखहु 'भगलू' आपै आप लखाता है।

नाम—(२२७४) मोहनलाल चतुर्वेदी, मैनपुरी ।

जन्म-काल—सं० १९०८ ।

कविता-काल—सं० १६३० के लगभग।

मृत्यु-काल सं० १६६४।

ग्रंथ—मनुस्मृति का हिंदी-पद्यानुवाद।

विवरण—यह माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मण पंडित यमुनादासजी के पुत्र थे। आपका ग्रंथ अभी तक अप्रकाशित है। पंडित उमरावसिंह-पांडेय, मंत्री चतुर्वेदी-पुस्तकालय, मैनपुरी का कथन है कि इनके वंशज श्रीयुत लक्ष्मीनिधिजी द्वारा उनको यह ग्रंथ देखने को मिला है।

नाम—(२२$\frac{७}{१}$८) रामप्रतापसिंहजी, मैनपुरी-नरेश।

जन्म-काल—सं० १६०६।

कविता-काल—सं० १६३०।

मृत्यु-काल—सं० १६६२।

ग्रंथ—राग-लय-दर्पण।

विवरण—आप वर्तमान मैनपुरी-नरेश के पिता थे। यह बड़े गुणग्राही तथा हिंदी-प्रेमी थे। प्रसिद्ध गायनाचार्य मुन्नालालजी और पंडित काशीनाथजी आपके दरबारियों में से थे। ग्रंथ में भिन्न-भिन्न राग-रागिनियाँ संगृहीत हैं।

नाम—(२२$\frac{६}{२}$९) माधवसिंह (कविराव), कृष्णगढ़।

जन्म-काल—स० १६०६।

रचना-काल—सं० १६३१।

ग्रंथ—लक्ष्मणप्रकाश तथा स्फुट छंद।

विवरण—कविराव बख़तावरसिंह के पुत्र तथा उन्हीं के शिष्य थे। इनका राजदरबारों में मान था।

उदाहरण—

आनन मयंकवारी गुन हरि अंकवारी,
भौहैं धनु बंकवारी, सौतैं उर-शालिका,

आनँद करनवारी, चित को हरनवारी,
शोभा को करनवारी, धारी मनि-मालिका।
'माधव' बखानै, वर अमृत बयनवारी,
नीरज नयनवारी गज-मद-चालिका;
भृकुटी विशालवारी, प्रीति-प्रन पालवारी,
आनी है गुपाललाल ऐसी व्रजबालिका।

नाम—(२२$\frac{६}{१}$८) रामरूपदास, ग्राम चनौथ (मगध देश)।

मृत्यु-काल—सं० १९३१।

ग्रंथ—गोपाल-सागर (भजनावली)।

विवरण—आप राधावल्लभीय वैष्णव-संप्रदाय के थे। इनका देहांत ८२ वर्ष की अवस्था में हुआ।

नाम—(२२$\frac{६}{१}$९) मन्नू कवि ब्रह्मभट्ट, झाँसी।

अनुमानतः जन्म-काल—सं० १९१०।

कविता-काल—सं० १९३०।

ग्रंथ—आप कई ग्रंथ के रचयिता कहे जाते हैं। किंतु वे अब तक अप्राप्त ही हैं।

उदाहरण—

एक पाइ अरध त्रिपाद की विभूति सर्व,
श्रीसुख सहस्र पाद, अंभ्रज अरत जात;
श्रीपति स्वयंभू शंभू अंबु तप तेज सबै,
'मन्नू कवि' नजर निछावरैं करत जात।
यत्र-यत्र धरत पदारविंद रामचंद्र,
तत्र-तत्र भूरि भूमि भाव सों भरत जात;
देवी-देव-वृंदन के, इंद्रन उपेंद्रन के,
मुकुट महेंद्रन के पाँवरे परत जात।

नाम—(२३००/२) रघुनाथदास पांडेय, इटावा ।

जन्म-काल—सं० १९०७ ।

मृत्यु-काल—सं० १९८० ।

विवरण—भार्याहित (Advice to Young Woman-नाम्नी अँगरेज़ी-पुस्तक का अनुवाद)

विवरण—यह इटावे के सुप्रसिद्ध पंडित जगन्नाथदासजी के सुपुत्र थे । आप संस्कृत, हिंदी तथा अँगरेज़ी के अच्छे विद्वान् थे । कोटा-राज्य की दीवानी के पद पर इन्होंने लगभग २७ वर्ष तक बड़ी योग्यता-पूर्वक कार्य किया, और गवर्नमेंट ने इन्हें रायबहादुर, दीवान-बहादुर, सी० एस्० आई० आदि उपाधियाँ प्रदान कर सम्मानित किया । इस समय आपके पुत्र पंडित विश्वंभरनाथ एम्० ए० आपके दीवानी के पद को सुशोभित कर रहे हैं ।

नाम—(२३०५/१) रामअधीन सोनार, टिकैतगंज, लखनऊ ।

जन्म-काल—सं० १९०७ ।

कविता-काल—सं० १९३२ ।

मृत्यु-काल—सं० १९७० ।

विवरण—राजा लाल माधवसिंह अमेठीवाले के यहाँ इनका मान था । प्राचीन प्रथा की रचना की है, जो साधारण श्रेणी की है ।

ग्रंथ—राधाकृष्ण-नख-शिख, अलंकार-चंद्रिका ।

नाम—(२३११/१) शिवप्रसाद शर्मा द्विवेदी, सरयूपारीण ब्राह्मण, शाहगढ़, रियासत बिजावर ।

ग्रंथ—धर्म-सोपान, स्फुट कविता व लेख ।

जन्म-काल—सं० १९०८ ।

नाम—(२३३६/२) वेणीराम (द्विज बेनी) ।

जन्म-काल—सं० १८९५ ।

रचना-काल—सं० १९२५ (निधन-काल सं० १९७१) ।

ग्रंथ—समस्या-पूर्तियों के बहुसंख्यक छंद।

विवरण—लखनऊ-निवासी कान्यकुब्ज ब्राह्मण, वाजिदअली शाह के पुश्तैनी कवि थे। सं० १६१४ के ग़दर में इनके ६ भाई मारे गए। पश्चात् यह देशाटन करते-करते काशी आ, श्रीजयशंकरप्रसाद के बाबा के मुनीम हो, वहीं स्थायी हो गए। फ़ारसी के भी ज्ञाता थे। काशी-कवि-मंडल की बहुसंख्यक समस्या-पूर्तियाँ किया करते थे। हिंदी-शब्द-सागर के संपादन-विभाग में कुछ दिन तक रहे। इनके शिष्य पं० छन्नूलाल पाठक को कुछ इनके छंद मिले थे, वे ही रह गए हैं। आप तोपनिधि के शिष्य एवं उन्हीं की कोटि के सुकवि थे।

उदाहरण—

सीताराम लखन बिलोकि ग्राम-नारी-नर
मोहित ह्वै ठाढ़े सबै एकटक लाय कै,
तिन मैं सयानी नारी अरज गुजारी आनि
जनक-दुलारी आगे सीसन नवाय कै;
काकी हौ पियारी दोऊ राजहंस बंसन मैं
'बेनी द्विज' दीजिए दया सों समुझाय कै,
लाजन लजाय अकुलाय तबै सैनन सों
दीन्हों है लखाय राम मुरि मुसुकाय कै।

लोल-लोल कलित कपोलन पै वारौं चंद्र
मोतिन की माला वारौं दंत झलकन पै,
'बेनी द्विज' खंजन चकोर वारौं नैनन पै
नेजन की नोकैं वारि डारौं पलकन पै;
अधर-ललाई पै ललाई वारौं मानिक की
वारौं मन धन हूँ बुलाक हलकन पै;
गोलन के गोल वारि डारौं नाग छौनन के
बाँकुरे बिहारी की अमोल अलकन पै।

चंपक बरन मन हरन मुनीसन के
जुरी आनि आनन पै दुति है दिगंत की,
'बेनी द्विज' कुसुम कली-सी खिली राजै वर
अंग अरुनाई छाई हिय हुलसंत की;
श्रीफल अनार-से अमोल कुच सोहैं गोल
नैनन लही है कंज छवि बिलसंत की,
चाहिए बिहारी लीजै नैनन निहारी
वृषभान की दुलारी फुलवारी है बसंत की।

मान भरे सुंदर सुजान आन सान भरे
सोभा के निधान खान सुघर अनाली के,
तेज-भरे तरुन तरंगी अंगी दासन के
दुष्टन सँघारिबे को मानिंद दुनाली के;
रोब भरे राजत महान ओज मौज भरे
'बेनी द्विज' कमल कुलीन कंज डाली के,
अमित खुशाली भरे आली ज्योति जाली भरे
लाली भरे ललित ललाम नैन काली के।

जैसी प्रीति स्वाती सों पपीहा के ठनी है जीव,
वैसी ही हमारी प्रीति पीउ सों ठनी रहै।
जैसी चाह चंद की चकोर के चुभी है चित्त,
ताहू सों दुचंद मेरी आरजू घनी रहै।
बार-बार गौरी सों बिनै कै यह माँगति हौं,
'बेनी द्विज' दीठि में धरोई मों धनी रहै,
चाहै जौन बाल के परै वो प्रेम-जाल तऊ,
लाल उर लागिबे की लालसा बनी रहै।

नाम—(२३६३/१) बहादुरसिंह, बीदासर, रियासत बीकानेर।
जन्म-काल—सं० १९११।

ग्रंथ—क्षत्रिय-जाति की सूची।

मृत्यु-काल—सं० १६७२।

विवरण—आप ठाकुर शिवनाथसिंहजी, जागीरदार बीदासर एवं प्रथम श्रेणी के ताज़ीमी सरदार के पुत्र थे। इन्होंने रियासती कौंसिल के मेंबर रहकर अच्छे-अच्छे संस्थानिक काम किए थे। हिंदी-भाषा के यह महाशय अच्छे विद्वान् थे। अपने ग्रंथ में आपने राजपूताने के ३६ वंशों का विस्तार-पूर्वक वर्णन दिया है। यह ग्रंथ आपके पौत्र ठाकुर हीरासिंहजी ने छपवाया है, और अब उसके तीन संस्करण निकल चुके हैं। (ठाकुर चतुरसिंह, राष्ट्रवर, बीकानेर, द्वारा ज्ञात)।

नाम—(२३६४) हरिहरप्रसादसिंह, (महाराजकुमार) दलीपपुर, (शाहाबाद)।

जन्म-काल—सं० १६११।

रचना-काल—सं० १६३६ के लगभग।

मृत्यु-काल—सं० १६४६।

ग्रंथ—(१) हरिहर-शतक, (२) अस्फुटावली, (३) षट्-पदावली, (४) अस्मरनी, (५) सिख-नख-वर्णन (अप्राप्य)।

विवरण—आप श्रीमहाराजकुमार बाबू भुवनेश्वरप्रसादसिंहजी के पुत्र तथा श्रीमहाराजकुमार बाबू नर्मदेश्वरप्रसादसिंहजी के भतीजे थे। आपने संस्कृत, फ़ारसी तथा हिंदी में ज्ञान प्राप्त किया था। काव्यालंकार आदि विषयों के भी आप ज्ञाता थे। इनका 'सिख-नख-वर्णन'-नामक ग्रंथ प्रायः अप्राप्य है। कतिपय छंद इस ग्रंथ के मिले हैं, ऐसा कहा जाता है।

उदाहरण—

अरुनारे कंज पै सुमन करिहारी तापै
इंदीवर कंजन पै राजत भ्रमरगन;

नील-मनि-खंभ तापै केहरि की कटि
तापै जमुना तरंग और रुचि अति मोहै मन।
मरकत पत्र पै बसीकरन मंत्र तापै
संप से निकारि कै विराजै नाग पंचफन;
तापै अंब-बिंब तापै शुक जुग खंज तापै
धनु ऐस सर तापै अर्ध ससि तापै घन।

नाम—(२४०४/४) लक्ष्मीलाल मिश्र बी० ए०, वकील, मैनपुरी।

जन्म-काल—सं० १९१२।

मृत्यु-काल—सं० १९७०।

ग्रंथ—स्फुट कविता।

विवरण—आप मैनपुरी-निवासी माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मण थे। आप अपने ज़िले के प्रसिद्ध वकील थे। वकालत करने के पहले कुछ काल पर्यंत यह सेंट जॉन्स-कॉलेज, आगरा में गणित के प्रोफ़ेसर (अध्यापक) थे। पं० उमरावसिंहजी पांडेय मंत्री चतुर्वेद-पुस्तकालय, मैनपुरी का कथन है कि उन्हें इनके कविता करने के विषय में इनके पुत्र पं० ब्रजनाथजी बी० ए० द्वारा मालूम हुआ है, और नीचे दिए हुए दोहे भी पं० ब्रजनाथजी से ही उन्हें प्राप्त हुए हैं।

उदाहरण—

छबी कृष्ण दर्पण निरखि राधा भई अधीर;
कठिन मान अरु मोह की गही मूँदि दृग पीर।
मोह गयो मिलनो गयो, यों कहि चले मुरारि;
राधे हिए उराहनो लग्यो चबुक अनुहारि।
सहमी-सी सो रहि गई, बँधी प्रेम-रस डोरि;
कहुँ ठनगन कहुँ रूसिबो, कहुँ मूलता मरोरि।

नाम—($\frac{२४११}{अ}$) जीवारामजी चौबे।

ग्रंथ—सभा-विलास (नवलकिशोर-प्रेस, लखनऊ से मुद्रित)।

नाम—(   ) जीवराम अजरामर गौर, भुजनगर (कच्छ देश)।

जन्म-काल—सं० १६१३।

मृत्यु-काल—सं० १६७३।

विवरण—आप कच्छ-महाराजा के पुरोहित होने से 'गौर' कहलाते थे। आप हिंदी तथा गुजराती दोनो भाषाओं में कविता किया करते थे। 'सरस्वती-शृंगार'-नामक मासिक पत्रिका भी आपने निकाली थी।

नाम—($\frac{२४११}{आ}$) तिलकसिंह ठाकुर, गांगपुर, ज़िला सीतापुर।

ग्रंथ—(१) वेश्यासागर, (२) कृष्णखंड।

जन्म-काल—सं० १६१३।

नाम—($\frac{२४१६}{२}$) हाजीअलीख़ाँ, 'अलि', ज़िला दमोह।

जन्म-काल—सं० १६१३।

कविता-काल—सं० १६३८ के लगभग।

मृत्यु-काल—सं० १६७८।

ग्रंथ—(१) वेदपरोपकारक, (२) खलदलगंजन, (३) हाजी-दृष्टांत-माला (२०० मत्तगयंद व सवैए), (४) अंजाम-बदी (नाटक), (५) मोरध्वज-चरित्र, (६) इंद्र-सभा का ख़्याल, (७) गौ-अष्टक, (८) शराब की ऐसी-तैसी।

विवरण—आप हैदरख़ाँ जौहरी के पुत्र थे, और आपका जन्म तहसील हटा में हुआ था। व्यापार के हेतु आप ज़िला दमोह में

रहने लगे थे। यह उर्दू, हिंदी तथा संस्कृत के अच्छे विद्वान् थे। ऊपर दिए हुए आठ प्रकाशित ग्रंथों के अतिरिक्त इन्होंने लावनी, ख़्याल इत्यादि हज़ारों की संख्या में बना डाले हैं। इनकी रचनाओं के मुख्य विषय देशोपकार, समाज-सुधार आदि रहा करते थे। नीति तथा शिक्षाप्रद बातों का ही आपके काव्य में विशेषतया उल्लेख है। ब्रजभाषा से आपको विशेष प्रेम था, और इसी भाषा में आपकी रचनाएँ हैं। यह महाशय एक अच्छे कवि होने के अतिरिक्त प्रसिद्ध वैद्य भी थे। इस समय आपके पुत्र करीमख़ाँजी ज़िला दमोह में रहते हैं। [महाशय लक्ष्मीप्रसादजी मिस्त्री, हटा (दमोह) से ज्ञात]।

उदाहरण—

दाता नहिं रंक होत दान के दिए तें कबौं,
कूकर ना वृष होत गंग के नहाए तैं;
अस्त्र के गहे तें कूर शूर नहिं होय जात,
बगुला ना हंस होत मोती के चुगाए तैं।
पोथी पाय मूर्ख जन पंडित ह्वै जात नहीं,
तपी नहीं होत भस्म अंग के रमाए तैं;
खून पिएँ स्यार नहिं सिंह होत हाजीअली,
तीतुर के जाए बाज होत न सिखाए तैं।

नाम—(२४३६/१) कालिकाप्रसाद चौबे, कटनी।

जन्म-काल—सं० १९१२।

कविता-काल—सं० १९४०।

मृत्यु-काल—सं० १९६२।

ग्रंथ—(१) राम-चरित, (२) पुलिस-ऐक्ट, (३) स्फुट रचनाएँ।

विवरण—आपका जन्म उन्नाव-ज़िले के बीघापुर-ग्राम में हुआ था। आपके पिता पं० चैनसुखरामजी चौबे ब्रिटिश-सेना में सूबेदार

के पद पर थे. और सन् १८५७वाले विद्रोह के समय अच्छा काम करने के उपलक्ष में ब्रिटिश सरकार ने इन्हें पदक आदि प्रदान करके सम्मानित किया था। आप तीन भाई थे। आपके ज्येष्ठ भ्राता राय-बहादुर पं० बालाप्रसादजी चौबे डिप्टी-सुपरिंटेंडेंट पुलिस के पद पर थे, तथा मँझले भाई पं० मानिकप्रसादजी चौबे इंदौर में प्रधान जेलर थे। चौबेजी स्वयं पुलिस-इंस्पेक्टर तथा ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट थे। [पं० मातादीन शुक्ल, अध्यापक म्युनिसिपल हाईस्कूल, कटनी के द्वारा ज्ञात]।

नाम—(२४३९) काशीनाथजी मिश्र, मैनपुरी।

ग्रंथ—(१) स्फुट कविता, (२) लघु पाराशरी की छंदोबद्ध भाषा-टीका।

रचना-काल—सं० १९४० के लगभग।

विवरण—आप माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मण थे। यह स्वर्गीय मैनपुरी-नरेश श्रीरामप्रतापसिंहजी के दरबारियों में से थे। महाराजा भरतपुर तथा कांकरोली भी आपके आश्रयदाता थे। भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्रजी से इनकी घनिष्ठ मित्रता थी। यह ज्योतिष, वैद्यक तथा संगीत के अच्छे पंडित थे। भारतेंदुजी ने जो राग-रागिनियाँ रचीं, उनके स्वर-कार आप ही थे। [पं० उमरावसिंहजी पांडेय, मंत्री चतुर्वेद-पुस्तकालय, मैनपुरी के द्वारा ज्ञात]।

नाम—(२४४०/१) गरीबदास गोस्वामी (सनाढ्य ब्राह्मण), दतिया।

जन्म-काल—सं० १९१०।

कविता-काल—सं० १९४०।

विवरण—स्व० महाराज भवानीसिंह दतिया-नरेश के मंत्री (दीवान) थे।

उदाहरण—

क्यौं जो आराम पै लियो न राम-राम नाम,
होय बस बाम के निकाम कामताई है;
जो पै ग्राम धाम में बिताए बहु याम घन-
श्याम देख धाम भवतापन नशाई है।
प्रेम खाम थाम मन होय विश्राम धाम,
रसिक अकाम होत संत मनभाई है;
कामना मनाई तो पै काम ना मनाई जो पै,
कामना मनाई तो पै काम ना मनाई है।

नाम—(२४४६/१) जयगोविंद, ग्राम बहोरा, ज़िला पूर्निया (बिहार-प्रांत)।

जन्म-काल—सं० १६१० के लगभग ।

रचना-काल—सं० १६४० ।

मृत्यु-काल—सं० १६७० ।

ग्रंथ—(१) अलंकार-आकार, (२) कविता-कौमुदी (अमुद्रित)।

विवरण—आप श्रीरामप्रसादजी के पुत्र थे । जाति के ब्रह्म-भट्ट थे। कविता प्रायः बचपन ही से किया करते थे। यह महाशय पूर्निया-ज़िलांतर्गत श्रीनगर-राज्य के अधिकारी श्रीकुँवर कालिकानंदसिंहजी के आश्रित कवि थे। [श्रीरामगोविंदसिंह वर्मा, मदारीचक (बिहार) के द्वारा ज्ञात]।

उदाहरण—

चलनो सुपथ परमारथ में रत मन,
पान गंगा-तोय अरु तिनमें नहावनो;
रूप-राशि राधा-कृष्णपद में अचल भक्ति,
चंदन सुगंध शुचि अंग में लगावनो।

भोजन सुअन्न, घृत, गोरस के अंग माहिं,
कविता के आनँद में समय बितावनो ;
रहनो निरोग जैगोविंद सतसंगति में,
एते देहिं बात पुनि और नाहिं चावनो।

नाम—(२४५७/२) नौरंगीलाल चौधरी 'नंददास', कहलगाँव, ज़िला भागलपुर (बिहार)।

जन्म-काल—सं० १९२०।

रचना-काल—सं० १९४० के लगभग।

मृत्यु-काल—सं० १९७९।

ग्रंथ—(१) जगन्नेत्र, (२) नंद-सागर, (३) श्रीहरिनामाष्टकम्।

विवरण—आप कान्यकुब्ज ब्राह्मण पं० गदाधरनाथ चौधरी के पुत्र थे। [श्रीयुत श्रीनाथ चौधरी, सगरामपुर (भागलपुर) द्वारा ज्ञात]।

नाम—(२४६०/१) रामनाथ रत्नुचारण, नेतवाचारण राज्य जयपुर।

ग्रंथ—राजस्थान का इतिहास।

मृत्यु-काल—सं० १९६५ के लगभग।

विवरण—यह सीकर-निवासी तेजमलजी रत्नुचारण के पुत्र थे। इन्होंने जयपुर, जोधपुर तथा किशुनगढ़-राज्यों में ऊँचे-ऊँचे पदों पर रहकर संस्थानिक काम किए हैं। यह महाशय अँगरेज़ी तथा हिंदी के अच्छे ज्ञाता थे। आपका 'राजस्थान का इतिहास' एक महत्त्व-पूर्ण ग्रंथ है। [ठाकुर चतुरसिंह राष्ट्रवर, बीकानेर द्वारा ज्ञात]।

नाम—(२४७९/१) लाख कवि, दतिया।

जन्म-काल—अनुमानतः सं० १९१०।

कविता-काल—सं० १९४०।

विवरण—जाति के धीवर थे।

उदाहरण—

तेरे ही वियोग श्यामताई मन छाय रही,
भयो है मलीन कहूँ नेक हू सुगोरो ना ;
कीनी आप प्रीत अबै सोई तो दिखात पीत,
फूली फुलवारी पै सनेह कहूँ जोरो ना।
'लाख कवि' सुजन सपूतन की रीत एही,
करके सनेह सील फेर कहूँ तोरो ना ;
पावत पराग गुन गावत तुम्हारो देख,
आवत मलिंद अरविंद मुख मोरो ना।

नाम—(२४८८/२) वचऊ चौबे (रसीले), काशी।

ग्रंथ—ऊधो-उपदेश।

कविता-काल—सं० १९४१ के पूर्व।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२५८८/३) कालीप्रसाद भट्ट, उरई।

ग्रंथ—रसिक-विनोद, द्वि० त्रै० रि०।

विवरण—सं० १९६६ में मृत्यु हुई। पिता का नाम छविनाथ भट्ट था।

नाम—(२५६२/१) जीवाभक्त, भावनगर, काठियावाड़।

जन्म-काल—सं० १९१९।

ग्रंथ—स्फुट कविताएँ।

विवरण—आप गोहिल राजपूत काका भाई के पुत्र थे। भावनगर के महाराज श्रीजसवंतसिंहजी की रानी श्रीअमजीवा साहबा के आश्रय में कुछ काल पर्यंत यह महाशय थे। उक्त रानी साहबा के स्वर्गवासी होने पर यह परमहंस बनकर नर्मदा-तट के प्रदेश में रहने लगे, और इसी स्थिति में कविता करने लगे। कविता में प्रथम यह अपना नाम 'जीवा' रखते थे, और पश्चात् 'जीवनराम' रखने लगे।

उदाहरण—

जंगल में जाए कहा, पानफल खाए कहा,
बार को बढ़ाए कहा, अंग रहे नंगा है;
भोग को बराए कहा, जोग को जगाए कहा,
तन को तपाए कहा, वस्त्र गेरू रंगा है।
द्वारका को धाए कहा, छाप को लगाए कहा,
मुंड मुँडवाए कहा, छार लाए अंगा है;
'जीवा' जग माँहिं ऐसे, भेष धरे होत कहा,
होत मन शुद्ध, तब गेह माँहिं गंगा है।

नाम—($\frac{२४६३}{अ}$) मालिकराम त्रिवेदी, शवरीनारायण-क्षेत्र, बिलासपुर।

ग्रंथ—(१) प्रबोध-चंद्रोदय-नाटक का हिंदी-अनुवाद, (२) शवरीनारायण-माहात्म्य, (३) रामराज्य-वियोग-नाटक।

विवरण—खड़ी बोली की कविता।

मृत्यु-काल—सं० १६६६।

नाम—($\frac{२४६३}{आ}$) राममनोहर मिश्र, ग्राम मौज़ा बराहीमपुर, ज़िला रायबरेली।

जन्म-काल—सं० १६२६।

रचना-काल—सं० १६४१ के लगभग।

ग्रंथ—(१) स्फुट कविताएँ, (२) बाणभट्ट-कृत संस्कृत कादंबरी का पद्यानुवाद (अपूर्ण)।

विवरण—आपके पूर्वज अवध-प्रांतांतर्गत नारायणदास खेरा, ज़िला रायबरेली के रहनेवाले थे। कहा जाता है, इनके पितामह बंगाल में रोज़गार करते थे, और पश्चात् संयुक्त-प्रांत में आकर बस गए। आप पं० रामाधारजी मिश्र के एकलौते पुत्र थे। इन्होंने कलकत्ते

में, पं० अंबिकादत्तजी व्यास की अभिभावकता में रहकर, संस्कृत-साहित्य का अध्ययन करके वहीं से काव्यतीर्थ की उपाधि प्राप्त की। आपका संबंध कलकत्ते के प्रसिद्ध 'जीवानंद-विद्यासागर'-प्रेस से, संस्कृत-ग्रंथों के संशोधक के नाते, बहुत काल-पर्यंत रहा। यह संस्कृत के विद्वान् होने के अतिरिक्त हिंदी के भी कवि थे। यदा-कदा आपकी रचनाएँ 'मनोहर' अथवा 'मिश्र' उपनाम से अंकित रहा करती थीं। कहा जाता है, 'पथिक-दूत'-नामक संस्कृत-काव्य-ग्रंथ इन्होंने रचा, किंतु इनकी यह कृति अब उपलब्ध नहीं है। हमें यह कवि महाशय पं० शिवशंकर वाजपेयी, रायपुर के द्वारा प्राप्त हुए हैं। और, उन्हीं के पास इनकी स्फुट कविता का जो संग्रह है, उसी से नीचे दिया हुआ उदाहरण लिया गया है।

उदाहरण—

युगल किशोर नैन-कोर की मरोरन में
सान प्रान वारा करैं रूप अभिमान की ;
दंपति इशारा बड़े प्रेम से निहारा करैं,
कुंज भूमि झारा करैं उभय मिलान की।
मृगमद, केसर, कपूर, केवड़े को नीर,
वीथिन दवारा करैं रौसे मल्लिकान की।

नाम—(२४६४/अ) कामताप्रसाद कायस्थ, बुंदेलखंडो, चिरगाँव, झाँसी।

ग्रंथ—(१) रामाष्टक, (२) संक्षिप्त रामाश्वमेध आदि कुछ पुस्तकें।

जन्म-काल—सं० १९१७।

विवरण—आप अपनी धुन के इतने पक्के हैं कि देवता-संबंधी जो पुस्तकें आपने पहले बनाई थीं, उनको अपनी स्त्री-पुत्रादि की मृत्यु पर उन्हीं देवतों की दया का अभाव मानकर फूँक दिया।

नाम—($\frac{२४६४}{आ}$) गोपालजी, सोढारम, पोरबंदर।

जन्म-काल—सं० १९१७।

मृत्यु-काल—सं० १९७२।

ग्रंथ—(१) काव्य-प्रभाकर (रुक्मिणी-विवाह), (२) मलिंद-शतक, (३) रसाल-मंजरी, (४) तत्त्वात्मबोध, (५) हम्मीर सर बावनी, (६) मणि-लक्ष्मण-बत्तीसी (बड़ौदा), (७) नारायण-सरोवर-माहात्म्य, (८) द्वादशज्योतिर्लिंग-स्तोत्र, (९) वराहशिकाराष्टक, (१०) शिवाष्टक, (११) भुवनेश्वरीदेवी-स्तुति, (१२) विंध्यवासिनीदेवी-स्तुति, (१३) खेगार उदवाहानंद-पीयूष (भुज के राव खेगार के विचार का वर्णन)।

विवरण—इन्होंने कच्छभुज नगर में कविताभ्यास किया था। डूँगरपुर में आपका शरीरांत हुआ।

नाम—($\frac{२४६४}{इ}$) ग्रीव्ज (रेवरेंड एडविन)।

रचना-काल—संवत् १९४२ के लगभग।

विवरण—आपका जन्म संवत् १९१७ में, लंदन-नगर में, हुआ। आप पादरियों के काम पर संवत् १९३८ में पहलेपहल भारत में आकर मिर्ज़ापूर में दस-ग्यारह वर्ष रहे। वहाँ आपने हिंदी सीखी। पीछे से आप बहुत काल तक काशी में रहे। आपने ईसाई-मत की पाँच पुस्तकें हिंदी में लिखीं, और तुलसीदास के जीवन-चरित्र पर एक निबंध भी रचा। आप नागरी-प्रचारिणी सभा के एक प्राचीन सहायक और बड़े ही उदारचेता सज्जन हैं। अब आप विलायत चले गए हैं। आपने हिंदी-साहित्य का संक्षिप्त इतिहास अँगरेज़ी में लिखा है।

नाम—($\frac{२४६४}{ई}$) मीठालालजी व्यास ब्यावर, राजपूताना।

ग्रंथ—(१) सर्वतोभद्र चक्र, (२) भारत का वायुशास्त्र, (३) टाड साहब की भूल।

जन्म-काल—सं० १९१७ ।

नाम—(२५०६/५) सीतारामजी मिश्र, मैनपुरी ।

जन्म-काल—सं० १९१८ ।

मृत्यु-काल—सं० १९८१ ।

ग्रंथ—(१) दंगल मैनपुरी, (२) गो-पुकार-चालीसी ।

विवरण—आप माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मण थे, और श्यामसुंदर-हाई-स्कूल, चँदौसी में अंतिम समय तक हिंदी-अध्यापक रहे ।

उंतालीसवाँ अध्याय

दूसरा अज्ञातकालीन प्रकरण

अज्ञात कालवाले कवियों के कथन इकतीसवें अध्याय में हो चुके हैं। विनोद के तीन खंड छप जाने के पीछे बहुत-से अज्ञात कालवाले जो कवि प्राप्त हुए हैं, उनका वर्णन, इस अध्याय में अकारादि-क्रम से, किया जाता है ।

नाम—(३३९१) अंबादत्त, उपनाम सुजान कवि ।

ग्रंथ—सुजान-सरोज ।

विवरण—आप हल्दी-निवासी ब्राह्मण थे । उक्त ग्रंथ नवल-किशोर-प्रेस, लखनऊ में छप चुका है ।

नाम—(३३९२) अमृतानंद स्वामी ।

ग्रंथ—कृष्णामृत (च० त्रै० रि०) ।

नाम—(३३९३) अज्ञात ।

ग्रंथ—सोलंकी-वंशावली ।

विवरण—काव्य अपूर्ण है। इसमें सूर्य-वंशीय अंबरीष राजा के वंशज घट टोडरमलवंशीय सोलंकियों का वर्णन दिया हुआ है ।

उदाहरण—

सरमायो आयो सरण, तब पायो आनंद ;
समझायो नृप चक्र को, प्रबल छुड़ायो फंद ।
दुर्वासा-से प्रबल को दंड आप प्रभु दीन ;
भक्तराज अँबरीष-से को महराज प्रबीन ।

नाम—(२२६४) इंद्रदेवनारायण शर्मा ।

नाम—(२२६५) ईश्वरीप्रतापनारायण राय ।

ग्रंथ—हास्य-श्रृंगार ।

विवरण—आप पड़रौना-ग्राम के निवासी थे । आपका वर्णन "कवि व चित्रकार' में दिया हुआ है ।

नाम—(२२६६) ऊधव ।

ग्रंथ—(१) श्रृंगार-सुधाकर, (२) नख-शिख-हजारा, (३) रत्नमालिका (हस्त-लिखित) ।

उदाहरण—

मोहन से विपरीत रती करि कामिनी काम-कला सुख पाए ;
अंगन मज्जन बुंद विराजत केस सु आइके आनन छाए ।
फेरिके हाथ सों जूरो बनावत 'ऊधव' योंहि लसे मन भाए ;
मानहु राहु ग्रस्यो सब मंडल ह्वै अरविंदन आनि छुड़ाए ।

नाम—(२२६७) खूबकृष्ण ।

ग्रंथ—स्वरूपमाला ।

विवरण—यह करौली गाँव के चौधरी थे ।

नाम—(२२६८) गणपति ।

काल—अज्ञात ।

ग्रंथ—छंदात्मक रामायण ।

विवरण—उक्त ग्रंथ का केवल लंकाकांड महाशय भालेरावजी को उपलब्ध हुआ है ।

नाम—(२३९९) गोप भाट, गुजरात-प्रांत।

ग्रंथ—छाड़ राजा तथा वीण राजा के पुत्रों का वर्णन।

नाम—(२४००) गोपालनाथ, महाराष्ट्र-देश।

ग्रंथ—स्फुट कविता।

विवरण—आप नाथपंथी साधु तथा आत्माराम के शिष्य थे।

उदाहरण—

कर विचार मन रे! तू क्या करे गुमान;
दो दिन का मिजवान, आखर जायगा नादान।

नाम—(२४०१) चतुर।

ग्रंथ—काव्य-कुतूहल।

विवरण—यह तैलंगी गोकुलस्थ भट्ट ब्राह्मण थे।

नाम—(२४०२) चतुरदान, बांजलवास, जोधपुर राज्य।

ग्रंथ—चतुर-रसाल (नवरसमय नायक-नायिका-भेद पर ग्रंथ)।

नाम—(२४०३) चतुरदास महंत, रतलाम।

ग्रंथ—(१) महिमापचीसी, (२) ज्ञानपचीसी, (३) गोविंदनामपचीसी, (४) प्रश्नोत्तरपचीसी, (५) आनंदपचीसी, (६) गुंजमालिका, (७) गर्भलीला, (८) धर्मोपदेश, (९) अमरकोप।

विवरण—आप रामानंदी संप्रदाय के बाबा थे।

नाम—(२४०४) छत्रशाहदेव, महाराजा सिंहरौली।

ग्रंथ—पदरत्नावली (राग-रागिनियों का ग्रंथ)।

विवरण—यह सिंहरौली के प्राचीन राजाओं में से थे।

नाम—(२४०५) छेदीदास बाबा।

ग्रंथ—(१) संत-महिमा, (२) स्नेह-सागर।

नाम—(२४०६) जनपंडित, महाराष्ट्र-देश।

ग्रंथ—स्फुट कविता।

विवरण—आपके बहुत-से हिंदी-पद महाराष्ट्र-देश में कीर्तन करनेवाले प्रायः गाया करते हैं।

नाम—(२४०७) जिनदास।

ग्रंथ—नाममाला।

विवरण—श्रीनंददासजी का बनाया हुआ इसी नाम का ग्रंथ प्रसिद्ध है। आप जैन-धर्मानुयायी समझ पड़ते हैं, क्योंकि आपने ग्रंथ में बीच-बीच में तीर्थंकरों के नामों का उल्लेख किया है।

नाम—(२४०८) डाल।

ग्रंथ—काव्य-संग्रह (वेंकटेश्वर-प्रेस, बंबई से मुद्रित)।

नाम—(२४०९) तुलसी।

ग्रंथ—(१) नयनाभक्ति, (२) अष्टांग-योग, (३) वेदांत-ग्रंथ, (४) चौत्तरी ग्रंथ, (५) करनीसारजोग ग्रंथ, (६) साधु-लक्षण, (७) तत्त्व-गुन-भेद।

विवरण—यह राजपूताने में एक साधु हो गए हैं।

नाम—(२४१०) दाताप्रसाद कायस्थ, मिर्ज़ापुर।

नाम—(२४११) दुर्गादत्त, वृंदावन।

ग्रंथ—आप हिंदी एवं संस्कृत के भारी विद्वान् तथा कवि थे। आप एक घड़ी में १०० श्लोक रचते थे। आपकी 'घटिकाशत' उपाधि थी।

नाम—(२४१२) दूधाहाड़ानो बे आखंडी, गुजरात-प्रांत।

ग्रंथ—दूधाहाड़ानी बेयाखरी।

रचना-काल—लगभग १७१७।

विवरण—आप बादशाह अकबर के समकालीन थे। ग्रंथ चारणी-भाषा में, जो डिंगल-भाषा कही जा सकती है, लिखा गया है। ग्रंथ में राजा हाड़ा दूदल का अकबर के साथ जो युद्ध हुआ था, उसका वर्णन है।

उदाहरण—

चासंद्र माल चहुआण ;
एकाग्र में वरतावण आण ।
पुरण नक्षत्र तेजस प्रमाण ;
कुँवर जनमे मुहित फैलाण ।

नाम—(३४१३) नवाब अनवरख़ाँ ।

ग्रंथ—अनवर-चंद्रिका (बिहारी-सतसई की टीका) ।

विवरण—आप सैयद मुस्तफ़ाख़ाँ के पुत्र थे ।

नाम—(३४१४) नारायण स्वामी, सरकारी बड़ा मंदिर, रियासत कपूरथला ।

ग्रंथ—(१) रघुनाथ-नाटक, (२) श्रीकृष्ण-जन्म-नाटक, (३) अनुराग-रस, (४) व्रज-विहार ।

नाम—(३४१५) निष्कुलानंद स्वामी, गुजरात-प्रांत ।

ग्रंथ—स्फुट कविताएँ ।

विवरण—आप स्वामी सहजानंदजी के शिष्य थे । इनके विषय में कवि दलपतराम ने यों कहा है—

"मानहु है वैराग्य कि सुरती ;
रखत सदा प्रभु-पद में सुरती ।"

नाम—(३४१६) नोहर(नवहरि)सिंह (अनुरूप), वृंदावन ।

ग्रंथ—(१) हनुमानुत्पत्ति, (२) नोहर-विनोद, (३) नोहर-विलास, (४) सतिबानी, (५) अनुभव-ज्ञान ।

नाम—(३४१७) परमेश ।

ग्रंथ—भक्ति-सत्ता ।

विवरण—आप डुमराव-निवासी वैश्य थे ।

उदाहरण—

कहाँ जाउँ कासों निज दीनता कहूँ मैं श्याम,
मूँदि लेत नैन कोऊ नेक न निहारो है;
पातक अपार पेखि नरकहु मूँदे नाक,
मूँदे जम कान हौं मारो नहिं चारो है।
गिनती करी तू 'परमेश' विनती है यहै,
दीन नाथ, दीन-बंधु बिरद तिहारो है;
सब है विपच्छ कोऊ पच्छ न हमारो गहै,
मोर-पच्छवारो, तुही मोर पच्छवारो है।

नाम—(३४१८) पीतांबर पंडित।

ग्रंथ—(१) विचार-चंद्रोदय, (२) बाल-बोध, (३) पंचदशी की टीका, (४) अष्ट उपनिषत् की टीका।

विवरण—आप कच्छ-मांडवी-निवासी सारस्वत ब्राह्मण थे। संस्कृत के अच्छे विद्वान् थे, और वेदांत-विषय पर भाषा में अच्छे-अच्छे ग्रंथ बनाए हैं।

नाम—(३४१९) बगीराम, ग्राम जासोर, मारवाड़।

ग्रंथ—(१) जस-भूषण, (२) जस-रूपक।

नाम—(३४२०) बहिरम।

ग्रंथ—सुदामा-चरित्र।

नाम—(३४२१) भवानीदास रामसनेही साधु, जोधपुर।

ग्रंथ—(१) भवानीनामव्याला, (२) भर्तृहरिशतक (तीन भाषाओं में), (३) भक्तमाल।

नाम—(३४२२) भवानीप्रसाद, उपनाम भगवंत।

ग्रंथ—प्रेमावलि (प्र० त्रै० रि०)

विवरण—ओरछा-निवासी।

नाम—(३४२३) भारतचंद्र राय।

विवरण—श्रीयुत गोविंदरामचंद्र चांदेजी का कथन है कि स्वर्गीय श्रीजगन्मोहन वर्माजी ने अपने 'शब्द-शास्त्र'-नामक लेख में इन्हें एक वंगदेशीय हिंदी-कवि वतलाया है। वर्माजी का यह लेख हमारे देखने में नहीं आया है, किंतु वह 'माधुरी' पत्रिका की किसी संख्या में निकल चुका है, ऐसा कहा जाता है।

नाम—(२४२४) भौन।

ग्रंथ—शक्ति-चिंतामणि (पृष्ठ २४)।

नाम—(२४२५) मधुसूदन वल्लभ।

ग्रंथ—(१) सेवा-प्रणालिका-ग्रहण-निर्णय, (२) स्फुट पद।

विवरण—राधावल्लभीय संप्रदाय।

नाम—(२४२६) मनराखनलाल वाजपेयी 'राखन', ग्राम पाली, जिला हरदोई।

कविता-काल—अज्ञात।

ग्रंथ—(१) सुदामा-चरित्र, (२) वामन-चरित्र, (३) विद्या-विलास, (४) पक्षी-विलास।

विवरण—संभवतः यह महाशय कवि हरिनाथजी के समकालीन थे। [पं० रामाज्ञा द्विवेदी के द्वारा ज्ञात]।

उदाहरण—

देत किलकाहैं देह दिग्गजन दाहैं सीता,
सोक की दवा हैं करैं छाहैं भक्ति अंग की;
सारदा सराहैं सिखै बल की न थाहैं देव,
द्रुम की लता हैं सुषमा-सी साधु संग की।
'राखन' सुकवि कहै हिये सों निवारो वेगि,
मेरे मन आहैं चोप चाहैं रन रंग की;

गिरिन को ढाहैं, सातौ सिंधु अवगाहैं, तोरैं
अरिन की आहैं बज्र बाहैं बजरंग की।

नाम—(३४२७) मनिराम।

ग्रंथ—(१) गोप-पचीसी, (२) रस-रहस्य की टीका, (३) बलभद्र-कृत 'नख-शिख' की टीका।

नाम—(३४२८) महावीरदास।

ग्रंथ—छंद-रामायण।

नाम—(३४२९) महासिंधु।

ग्रंथ—छंद-शृंगार (पिंगल-ग्रंथ)।

विवरण—आप मारवाड़ के निवासी थे।

नाम—(३४३०) महिरामनजी उर्फ़ सागर, राजकोट, काठियावाड़।

ग्रंथ—प्रवीण-सागर।

विवरण—आपके उक्त बृहत् ग्रंथ में ८४ अध्याय हैं। आपका शरीर-पात हो जाने पर इस ग्रंथ का कुछ अंश श्रीगोविंद गिल्लाभाई ने बनाकर पूर्ण किया।

उदाहरण—

कटि फेट छोरन में भृकुटी मरोरन में,
शीश पेंच तोरन में अति उरझाय के;
मंद-मंद हासन में, वारुनी विलासन में,
आनन उजासन में चकचौंध चाय के।
मोती-मनि मालन में सोसनी दुसालन में,
चिकुरी के तालन में चेटक लगाय के;
प्रेम बान दे गयो न जानिए किते गयो,
सुपंथी मन लै गयो झरोखे दग लाय के।

पानि के जंतु कहाँ पहिचानत ग्रीषम के तप की गरदी की ;
केसरि की करिहै कहँ किम्मत है न परीख जहाँ छरदो की।
कायर को न कछू परिहै कल सूरन को सुधि है मरदी की ;
बेदरदी न प्रवीन चहे कछु जानहिगो दरदी दरदी की।

नाम—(३४३१) मंच्छु (मंच्छराम), जोधपुर।
ग्रंथ—रघुनाथ-रूपक पिंगल (मारवाड़ी भाषा में)।

नाम—(३४३२) माधवसिंह राजा आगता।
ग्रंथ—रस-विलास।

नाम—(३४३३) मानिकदास।
ग्रंथ—(१) संतोष-सुरतरु, (२) सत्संग-प्रभाव, (३) राम-रसायन, (४) कवित्त-प्रबंध, (५) आत्म-विचार।
विवरण—आप अहमदाबाद के पाटीदार थे। आप एक अच्छे विद्वान् थे। कहा जाता है, कारण-वशात् आपने वैराग्य धारण कर लिया था, और साधु होकर उज्जैन में जा बसे।

नाम—(३४३४) मीरा सैयद ताहर।
ग्रंथ—गुन-सार।

नाम—(३४३५) मूदजी।
ग्रंथ—कविप्रिया की टीका।
विवरण—राजापूताने के चारण।

नाम—(३४३६) मूलचंद ज्ञानी।
ग्रंथ—(१) पदार्थ-मंजूषा, (२) तत्त्वानुसंधान।
विवरण—आप वैश्य थे।

नाम—(३४३७) मोहनदास महंत, गोरखपुर।
ग्रंथ—बृहत् सनातन-धर्म-सार (पृष्ठ ३९८ गद्य द्वि० त्रै० रि०)।

नाम—(२४३८) मौड़जी, मलिया गाँव के ठाकुर साहब।

ग्रंथ—पोस्त-पचीसी।

विवरण—आप यदुवंशी थे। उक्त ग्रंथ अफ़ीमचियों के लिये रचा गया है।

उदाहरण—

जे ही दुखकारी याकु मानते हो सारी तुम,
दिल में विचारि देखो कैसी यह सारी है;
नाक मुख वारी जारी रेत ना उघारी आँख,
सुस्त मल भारी उठे हिम्मत बिसारी है।
रंजन जो नारी लागे थोड़े दिन प्यारी वह,
पाछे देत गारी अंत विप-सम खारी है;
कहत पुकारी सुनु अरज हमारी साँझ,
अफ़िम की यारी सारे भौन की खुवारी है।

नाम—(२४३९) मंगलदास महंत, सिहोर-राज्य भावनगर, (काठियावाड़)।

ग्रंथ—शिव-विलास।

नाम—(२४४०) रघुनाथ, जूनागढ़।

ग्रंथ—(१) बेट-बावनी, (२) बाल-लीला।

विवरण—आप बड़नगरा नागर ब्राह्मण थे।

नाम—(२४४१) रसरंगमणि।

ग्रंथ—श्रीसरयूरसरंगलहरी।

नाम—(२४४२) रसराशि उपनाम रामनारायण, जयपुर।

ग्रंथ—(१) कवित्त-रत्नमाला, (२) रसिक-पचीसी।

विवरण—आप जयपुराधीश महाराजा प्रतापसिंहजी के सम-कालीन थे।

उदाहरण—

श्रीमन्नारायनजू के चरन को सेवक श्री,
रामानुज संप्रदाय शिष्यपद पायो हों;
रसिक-सभा में बैठि बोलिबे को चाव मेरे,
वोऊ मोह चाहे इहि लाभ लोभ छायो हों।
विप्रवर वंश 'रामनारायण' नाम नीको,
कविता में छाप 'रस राशि' हेरि ल्यायो हों;
सबको सुहायो ससी सास गुन गायो भयो,
मेरो मन भायो सब ही को मन भायो हों।

नाम—(२४४३) रंगनाथ।

ग्रंथ—(१) सरजूलहरी, (२) भक्ति-मंजरी।

नाम—(२४४४) रंगीदास।

ग्रंथ—समय-प्रबंध।

विवरण—राधावल्लभी।

नाम—(२४४५) रंगोलदास, जूनागढ़, काठियावाड़।

ग्रंथ—(१) द्रौपदी-पट-निधान, (२) नाममाला।

विवरण—आप बड़नगरा नागर ब्राह्मण थे।

नाम—(२४४६) राजकुमार श्रीशिवेंद्र साही।

ग्रंथ—स्फुट पद्य-रचनाएँ।

विवरण—आपका उपनाम लालसाहब था। यह जाति के भूमिहार ब्राह्मण और महाराज बेतिया के जामातृ थे। आप राजधानी माँझा, ज़िला छपरा के निवासी तथा पंडित जगन्नाथ दीक्षित के वंशज थे।

नाम—(२४४७) राधावल्लभ।

ग्रंथ—(१) भीष्मपर्व, (२) गीता-भाषा, (३) शालिहोत्र, (४) राग-रत्नाकर।

विवरण—आप किशनगढ़वासी चारण थे।

नाम—(३४४८) राधिकादास, शेरखी ग्राम, गुजरात।

ग्रंथ—भारत-चरित्र-ग्रंथ।

नाम—(३४४९) रामऋषि (रामरतनदास). पटावत, भिंडरी ग्राम, उदयपुर।

ग्रंथ—राम-सहस्रनाम।

नाम—(३४५०) रामकिशोर, लखनऊ।

ग्रंथ—जल-झूलन।

नाम—(३४५१) रामदीन, उपनाम सुंदर।

ग्रंथ—विजय पलेरा समर, [प्र० त्रै० रि०]।

विवरण—बसेला, ज़िला हमीरपुर-निवासी।

नाम—(३४५२) रायसिंह।

ग्रंथ—शिवरंजन।

विवरण—आप मछिआव गाँव के जलकांडा बघेला क्षत्रिय थे।

नाम—(३४५३) लछिमन कवि, अवध-प्रांत।

उदाहरण—

लछिमन्न कहैं देखा बिचारि कुछ भावत ना बिन अन्नै है ;

इत्यादि।

नाम—(३४५४) लालबहादुर, अनेई ग्राम, काशी।

ग्रंथ—हल्दीघाट का युद्ध।

नाम—(३४५५) वृंदावन वैश्य, काशीपुर तराई।

ग्रंथ—भारतीय शिष्टाचार।

नाम—(२४५६) विहारीलाल लाला।

ग्रंथ—कायस्थ-कुल-चंद्रिका, [प्र० त्रै० रि०]।

विवरण—लौंडी राज्य छतरपुरवासी।

नाम—(२४५७) शिवदिनकेशरी, पैठन, महाराष्ट्र-देश।

ग्रंथ—स्फुट कविता।

विवरण—आप नाथ-पंथ के परंपरा अनुयायी तथा सं० १२८६ वाले महात्मा ज्ञानेश्वर की शिष्य परंपरा में से थे। 'नाथ-पंथ का बाना यारों सब दुनिया से न्यारा है' यह प्रसिद्ध पद आप ही का बनाया हुआ है। आपकी कविता मधुर प्रभावोत्पादक तथा उपदेशात्मक हुआ करती थी। केसरीनाथ आपके गुरु थे।

उदाहरण—

(१)

किन बैरिन ने बैर कियो री;
साजन कूँ बैराग दियो री।
पेहरी मुद्रा भस्म चढ़ायो; कान मों कुंडल अलख जगायो।
खाँदे जो पावरी हाथ मों झोली; गले बिच निर्गुन माला सैली।
शिवदिन मनोहर केसरि प्यारा; अलख-अलख सब जोति उजारा।

(२)

हम फकीर जन्म के उदासी अहैं निरंजन बासी।
सत्त कि भिच्छा दे मेरी माई मन आटा भरपूर;
बार-बार हम नहिं आने के हरदम हार खुसी।
सोना-रूपा धेला-पैसा ओ कुछ हम ना चाहें;
प्रेम कि भिच्छा ला मेरी माई हम पंछी परदेसी।

सिर फोड़ जलाली करते मगन हार वो न्यारे ;
शिवदिन के प्रभु केसरि साहेब चरनों के रहिवासी ।

हजरत अल्ला सब दुनिया पालनवाला ।
जिसका आसमान है तंबू । धरती जाजम पवना खंबू ।
ऊपर गाड़ा है गा गंबू । हरदम अल्ला-अल्ला ॥ १ ॥
चंद्र-सूरज दोनो हैं चिरागी । नव दरवाजे दसवीं खिरकी ।
ऊपर रक्खी है एक फिरकी । सब घट अल्ला-अल्ला ॥ २ ॥
सात समुंदर खंदक खोली । मोहबत का दरवाजा मोली ।
अबोल बोलत मीठी बोली । सब रस अल्ला-अल्ला ॥ ३ ॥
साईं केसरि गुरु पिरसारा । शिवदिन नाम मुरीद हिलारा ।
झगमग जागत ज्योत हिजारा । लाल हि लाला अल्ला-अल्ला ॥ ४ ॥

नाम—(३४५८) श्यामकरण ।

ग्रंथ—(१) अभयोदय भाषा, (२) अजितोदय भाषा ।

नाम—(३४५९) श्रीमंजु केशानंद, स्वामी गुजरात-प्रांत ।

ग्रंथ—स्फुट रचनाएँ ।

विवरण—यह काशी-निवासी सहजानंदजी के शिष्य थे ।

नाम—(३४६०) सत्यराम ।

विवरण—श्रीयुत गोविंद रामचंद्र चांदे इन्हें बंगदेशीय हिंदी-कवि बतलाते हैं ।

नाम—(३४६१) स्वामी नित्यानंद ।

ग्रंथ—श्रीहरि-दिग्विजय ।

विवरण—आप उत्तर-भारत के निवासी तथा सहजानंदजी के शिष्य थे । ग्रंथ में विशिष्टाद्वैत-संप्रदाय तथा भक्ति-मत का प्रतिपादन किया गया है ।

नाम—(२४६२) हज़ारीलाल कायस्थ, गोंडा।

ग्रंथ—साखी भाषा नानक साहब (पृष्ठ २३४), द्वि० त्रै० रि०।

नाम—(२४६३) हरिनाथजी, ग्राम पाली, ज़िला हरदोई।

विवरण—आप कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। [पं० रामाशा द्विवेदीजी द्वारा ज्ञात]।

उदाहरण—

पल पुरवाई दिए अंजन घटान छाई,
चोपि चितताई चपलाई मन भाई है;
बगुला सिताई, असिताई केकी कोकिलाई,
मंजु अरुनाई इंद्रधनु छति छाई है।
प्रेम बरसाई 'हरिनाथ' नेम झरि लाई,
गर्जनि सवाई त्यों कटाच्छ दरसाई है;
एरी भट्ट पाई कहाँ ऐसी चतुराई तेरे—
नैननि निकाई ऋतु पावस सुहाई है।

नाम—(२४६४) हरिवंशनारायण।

ग्रंथ—सुदामा-चरित्र, [च० त्रै० रि०]।

नाम—(२४६५) त्रिकमदास।

ग्रंथ—(१) रुक्मिणी-विवाह, (२) अकोर-लीला, (३) पर्वत-पचीसी, (४) वैष्णव-संप्रदाय के स्फुट पद।

विवरण—यह काठियावाड़ देशांतर्गत जूनागढ़ में बस गए थे। आप नागर गृहस्थ मजुमदार थे। आपके सात पुत्रों में से रंजीतदास तथा देवशंकर अच्छे कवि हो गए हैं। आदि में आप वल्लभ-वंशोत्पन्न गोकुल-निवासी तैलंग ब्राह्मण थे।

चालीसवाँ अध्याय

पूर्व नूतन परिपाटी

संवत् १६४५ से १६६० तक

यों तो हिंदी प्रौढ़ माध्यमिक समय में ही परिपक्क हो चुकी थी, और जिस महत्ता का साहित्य गोस्वामी तुलसीदास तथा सूरदास ने उस काल बनाया, वैसा हम लोगों के सामने अब तक नहीं आया है, तो भी हमारी साहित्य-प्रणाली तथा साहित्य-सेवियों की संख्या इन दोनो में समय के साथ अच्छी वृद्धि हुई है। पूर्वालंकृत काल में जिस महत्ता के बहुतेरे साहित्य-सेवी उपस्थित हुए, उतने उनसे पहले कभी न हुए थे। उत्तरालंकृत काल तक अच्छे-अच्छे कविगण स्थायी साहित्य-विरचन में प्रचुरता से समर्थ रहे, किंतु परिवर्तन-काल में यद्यपि विषयों की अच्छी वृद्धि हुई और गद्योन्नति के साथ उपयोगी रचनाओं का आशा-जनक आरंभ हुआ, तथापि स्वामी दयानंद सरस्वती को छोड़कर कोई भी कवि या लेखक स्थायी साहित्य न उपस्थित कर सका। फिर भी यह अवश्य मानना पड़ेगा कि केवल स्वामीजी का अस्तित्व एक ऐसा अमूल्य पदार्थ था, जो परिवर्तन-काल को भी बहुत उत्कृष्ट बनाता है। आपके ग्रंथ-रत्न प्रलय-पर्यंत समाज को प्रभावित करने में सक्षम रहेंगे। यद्यपि हम लोग आर्यसमाजी नहीं हैं और स्वामीजी के बहुतेरे विचारों से हमारा मतभेद है, तथापि केवल साहित्य-समालोचक के नाते हम उनके ग्रंथों पर उपर्युक्त मत प्रकट करते हैं। यह स्वामीजी के ही उपदेशों का फल था कि हमारे देश से दुर्गा, काली आदि की वाम-मत-पूर्ण उपासना निर्बल हुई, गाजी मियाँ, पीर आदि के मान का बल घटा, तथा ब्राह्म, ईसाई, मुस्लिम, सिक्ख आदि धर्मों की वृद्धि, जो हिंदुओं के उन मतों में जाने से

हो रही थी, वह स्थगित हुई। हिंदू-समाज में नूतन परिमार्जित विचार फैलने लगे, और सामाजिक कुरीतियों आदि के हटाने को गल्प, उपन्यास आदि बनाने की ओर हमारे लेखकों की रुचि बढ़ी। वास्तव में स्वामीजी हिंदू-समाज एवं साहित्य के लिये कल्पतरु हुए हैं, और उनका इन दोनो पर भारी ऋण है। भारतेंदु-काल को स्वामीजी तथा अँगरेज़ी राज्य के प्रभावों से अच्छा लाभ हुआ, और हमारे साहित्य की प्रगति उपयोगी मार्गों की ओर शीघ्रता से बढ़ने लगी। भारतेंदु ने अनेकानेक विषयों पर परिश्रम किया, किंतु उन सबमें देश-भक्ति तथा नाटक-वृद्धि की प्रधानता रही।

हमारा नियम रहा आया है कि प्रत्येक कवि का पूरा विवरण उसके काव्यारंभ-काल में ही हम दे देते हैं। इस प्रथा से यह भी समझ पड़ सकता है कि मानो उसकी सारी कृतियाँ आरंभ-काल में ही हमारे साहित्य-क्षेत्र में आ गईं, यद्यपि बात यह है कि पूरे समय के वर्णन में उसकी रचनाओं का प्रभाव समाज पर उन ग्रंथों के रचना-काल से ही वास्तव में पड़ता है। अतएव भारतेंदु के समय-वाले अनेकानेक सरस्वती के लाल ऐसे थे, जिनके वर्णन तो उसी समय हो गए हैं, किंतु जिनके प्रभाव नूतन परिपाटी के समयों में भी पड़ते रहे। भारतेंदु के समयवाले प्रधान साहित्य-सेवियों में जगमोहनसिंह, श्रीनिवासदास, मुंशी देवीप्रसाद, महारानी वृषभानु कुँवरि, ललित, सहजराम, बालकृष्ण भट्ट, महात्मा श्रद्धानंद (मुंशीराम), शिवसिंह सेंगर, भीमसेन शर्मा, बदरीनारायण चौधरी, नाथूरामशंकर, द्विजराज, प्रतापनारायण मिश्र, जगन्नाथप्रसाद भानु, लाला सीताराम, शिवनंदनसहाय, दीनदयालु शर्मा, महावीरप्रसाद द्विवेदी, गोपालराम गहमर, श्रीधर पाठक, गौरीशंकर-हीराचंद ओझा (म० म०), और हीरालाल-ऐसे सुलेखक हुए, जिनके प्रभाव अब तक चले आते हैं। इनमें से कुछ महाशय अब भी प्रस्तुत हैं तथा

साहित्य-सेवा भी कर रहे हैं। हर्ष का विषय है कि द्विवेदीजी की ७०वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष-स्वरूप काशी में सभा द्वारा उन्हें एक सम्मान-ग्रंथ भेंट किया गया, तथा प्रयाग में एक उत्कृष्ट द्विवेदी-मेला हुआ, जिसमें हिंदी-सेवियों का अच्छा समारोह था। यह घटना उपर्युक्त कथन की साक्षी-स्वरूपा है। बहुतों के थोड़े-बहुत कथन यथा-स्थान आगे भी होंगे, यद्यपि भारतेंदु-काल में इन सबके सूक्ष्म विवरण आ चुके हैं।

सिपाही-विद्रोह के पीछे संवत् १९१९ से दृढ़ता-पूर्वक अँगरेज़ी राज्य स्थापित हो चुका था, किंतु भारतेंदु के पूर्व किसी प्रसिद्ध हिंदी-कवि ने देश-भक्ति-पूर्ण विषयों को नहीं उठाया था। देश में भी कोई राजनीतिक आंदोलन नहीं चल रहा था। समाज बहुत करके सुषुप्तावस्था में था। यद्यपि हमारे साहित्य-सेवी महाशय प्राचीन समादृत संकुचित काव्य-रीति को छोड़कर परिवर्तन उपस्थित कर चुके थे, तथापि उसके फल पूर्णता के साथ उत्पन्न नहीं हो पाए थे। स्वामी दयानंद सरस्वती के ग्रंथों में राजनीति-संबंधी सामाजिक आंदोलन खुला-खुला तो नहीं है, किंतु धार्मिक मार्ग ही पर चलते हुए उन्होंने सनातन वैदिक मत को जागृति देते हुए ऐसी ही सामाजिक संस्थाओं को हटाना चाहा, जिनसे देशोन्नति में बाधा पड़ती थी। इन कारणों से हिंदी में राजनीतिक आंदोलन के प्राचीन-तम मूलाधार स्वामीजी ही माने जा सकते हैं। फिर भी उस काल ऐसे आंदोलन को बल प्राप्त न हुआ। भारतेंदु के अस्त हो जाने पर सं० १९४२ में भारतीय जातीय कांग्रेस की पहली बैठक हुई, पर सं० १९६० तक उसकी कोई महत्ता न हुई, और कांग्रेस विशेषतः सरकार से केवल प्रार्थनाएँ करती रही। राजनीतिक आंदोलन ने प्रथमतः आर० सी० दत्त महाशय के मालगुज़ारी-संबंधी व्याख्यान से बल पकड़ा, विशेषतया बंग-विच्छेद से। पहले तो सरकार

कांग्रेस के मंतव्यों पर प्रकट में कुछ ध्यान ही नहीं देती थी। इस नियम को पहलेपहल भंग करके लार्ड कर्ज़न ने दत्त महाशय के विचारों का उत्तर दिया। भारतीयों तथा भारतीय शास्त्रों को झूठा बतलाकर भी उन्होंने देश में भारी असंतोष उत्पन्न किया, तथा बंग-भंग से उसका बहुत परिवर्द्धन हुआ। इस प्रकार लार्ड कर्ज़न के समय से जनता में राजनीतिक आंदोलन ने भारी बल पकड़ा। इस समय का वर्णन आगेवाले अध्याय में आवेगा। हमारे इस पूर्व नूतन परिपाटीवाले समय में राजनीतिक आंदोलन की महत्ता न तो देश में थी, न हमारे साहित्य में ही देख पड़ती है। संवत् १९५६ में सरस्वती पत्रिका का निकलना हिंदी के लिये उस समय एक गौरव की बात थी, क्योंकि ऐसी सज-धज की कोई पत्रिका तब तक हिंदी में न थी। इसके संपादक बा० श्यामसुन्दरदासजी के पश्चात् पं० महावीर-प्रसाद द्विवेदी हुए। इनके संपादकत्व में सरस्वती ने हिंदी-लेखकों पर व्याकरण-संबंधी प्रभाव डाला, जिसका कथन आगे के अध्याय में आवेगा। इस काल अयोध्यासिंह उपाध्याय, जगन्नाथदास रत्नाकर, अजमेरीजी, गयाप्रसाद (सनेही), राय देवीप्रसाद (पूर्ण), देवकीनदन खत्री, ठाकुर गदाधरसिंह (सचेंडीवाले), श्यामसुंदरदास, व्रजनंदनसहाय, कन्नोमल, रूपनारायण पांडेय तथा बालमुकुंद गुप्त हमारे मुख्य साहित्य-सेवी हुए। हम लोगों (मिश्रबंधुओं) ने भी सं० १९५५ से काव्य-क्षेत्र में पैर रक्खा। इस काल सबसे बड़ी बात यह हुई कि प्राचीन प्रथावाली शृंगार-कविता का बल बहुत क्षीण पड़ गया और विविध विषयों के वर्णन अधिकता से होने लगे। प्राचीन समय के भी कवियों में कितनों ही ने अनेकानेक ऐसे ग्रंथ बनाए, किंतु समय ने उत्कृष्ट रचनाओं को छोड़ शेष को अपनी उदर-दरी में रख लिया है, तथा बहुतेरी प्रकृष्ट रचनाएँ भी काल-

कवलित हो गई हैं। अवश्य ही कभी-कभी उनमें से कुछ ग्रंथ किसी प्रकार विकराल काल के उदर से बल-पूर्वक निकाल से लिए जाते हैं, शेष सदा के लिये जाते रहे। पर वर्तमान समय के साहित्य-सेवियों की रचनाओं के विषय में काल की यह गति अभी पूर्ण वेग से कैसे चल पाती, जिससे इस कालवाले भले-बुरे सभी प्रकार के सैकड़ों-हज़ारों ग्रंथ हमारे सामने प्रस्तुत हैं। अपने जीवन-काल में तो साधारण रचयितागण भी किसी-न-किसी प्रकार स्वरचित ग्रंथों को जीवित रखते हैं, किंतु उनके शरीरांत के साथ ही उनके प्रायः सब ग्रंथ मृत हो जाते हैं। ऐसा होना अनिवार्य ही समझना चाहिए, वरन् एक प्रकार से वह लाभकारी भी है, क्योंकि अत्यंत साधारण तथा अनुपकारी ग्रंथों की भरमार से साहित्य का लाभ क्या हो सकता है? अतएव रचयिताओं को उचित है कि बहुत-से ग्रंथ बनाने की चेष्टा छोड़कर विशेष परिश्रम द्वारा थोड़े ही से ऐसे विषयों पर अच्छी पुस्तकें बनावें, जिनमें उन्हें उपयुक्त पात्रता हो। काल बड़ा बली है, और उससे बचाकर अपने ग्रंथों को जीवित रखना बड़ा कठिन है। बिना पूर्ण चमत्कार लाए कोई ग्रंथ कभी जीवित न रहेगा, ऐसा सभी को समझे रहना चाहिए।

जितने परिश्रम से दस ग्रंथ बनाए जाते हैं, उतने से यदि एक बने, तो शायद अपने चमत्कार के कारण काल की करालता का वह चिरकाल तक सामना कर सके। साधारण कवियों की बात जाने दीजिए, स्वयं बिहारी ने अपने हज़ारों दोहे फाड़-फाड़कर फेंक दिए होंगे और केवल ७१९ बचा रक्खे, जिनकी बदौलत उनकी गणना हिंदी-नवरत्नों में है। यदि वह दस-बारह हज़ार दोहे लिखते अथवा शेष रखते; और उनमें केवल ७००-८०० वास्तव में अच्छे होते, तो उनका तादृश महत्त्व कदापि न हो सकता। लेखकों को यह भी उचित है कि नवीन ग्रंथ बनाने के स्थान पर अपनी प्राचीन रचनाओं पर

ही विशेष श्रम करके आगे के संस्करणों में उन्हें अधिक चमत्कार प्रदान करें। संसार बड़ा सौंदर्योपासक है। विना गुण के यह किसी का माल नहीं खरीदता। मित्रों की झूठी प्रशंसा तथा शत्रुओं की ईर्ष्या-पूर्ण निंदा का प्रभाव कुछ ही काल रह सकता है, किंतु अंत में भवभूति की 'कालो ह्ययन्निरवधिर्विपुला च पृथ्वी'-वाली कहावत चरितार्थ हो ही जाती है। आजकल दो-चार स्थानों पर प्रशंसा और निंदा के बैने-से बटते हैं। आप मुझे पुरस्कार दिला दीजिए और मैं आपको दिला दूँ। "मन तुरा क़ाज़ी बु गोयम तो मरा हाजी बुगो।" ऐसी कार्यवाहियों से जो ख्याति मिलेगी, वह बहुत ही क्षणिक होगी। समय पर गुण ही काम आवेंगे। ऐसी बातें साहित्य-सेवा न होकर घृणित व्यापार-मात्र हैं। प्रयोजन केवल इतना है कि शुद्ध साहित्य-सेवा और चमत्कृत ग्रंथों का अस्तित्व ही समय पर लेखकों तथा हिंदी-साहित्य की गरिमा का कारण होगा, इतर कोई युक्ति काम न आवेगी।

हमारे हिंदी-साहित्य को महाराजों, स्त्रियों, भक्तों आदि से सदैव सहायता मिलती रही है। अब सौभाग्य-वश समय की प्रगति कुछ ऐसी हो चली है कि बहुतेरे लेखकगण भी स्वतंत्रता-पूर्वक समाज के ही सहारे निर्वाह कर लेते हैं, और उन्हें महाराजों आदि का मुँह ताकना नहीं पड़ता। यही कारण है कि अब साहित्य को अपना सारा समय देनेवाले सज्जनों की संख्या में संतोष-जनक वृद्धि हो रही है। इस विषय में प्रेस की सहायता तथा पत्रों की महिमा से बड़ा लाभ हुआ है। इनके द्वारा उत्कृष्ट पत्रकारों, व्याख्याताओं आदि का समाज पर भारी प्रभाव पड़ता है। फिर भी हमारे राजे-महाराजे अब भी उदारता-पूर्वक अपने प्राचीन उदार भावों से काम लेकर कवियों का मान तथा काव्य-रचना इन दोनों बातों में पूर्ववत् संलग्न हैं। (एच्-एच्) महाराजा रामसिंहजी

(सीतामऊ-नरेश) इस काल के सुकवि हैं। इनके अतिरिक्त कई तालुक़दारों आदि का भी वर्णन ग्रंथ में काव्य-रचना के संबंध में मिलेगा। भाई परमानंद आजकल के गद्य-लेखक और महापुरुष हैं, जो हिंदी पर भी कृपा करते हैं। मुसलमानों में इस काल अजमेरीजी एक परमोत्कृष्ट आशुकवि हैं। और भी कई मुसलमान लेखकों के नाम ग्रंथ में मिलेंगे। इन लोगों की हिंदी रचना प्रायः वैसे ही भावों से युक्त है, जैसी कि हिंदू-कवियों की। काव्य पढ़ने में यह पता नहीं लगता कि हम किसी विधर्मी की रचना देख रहे हैं। मुसलमानों ने यहाँ तक विचार लिखे हैं कि 'गुन को न पूछै कोई औगुन की बात पूछै कहा भयो दई कलिजुग यों खरानो है, पोथी औ पुरान ज्ञान ठट्टन में डारि देत चुगल-चबाइन को मान ठहरानो है।' यहाँ क़ुरान-पुरान दोनो का समान मान है। स्त्री-कवियों में इस काल बाघेली विष्णुप्रसाद कुँवरिजी (१९४६), भोगवतीदेवी (१९४८), कनकलता (१९५०), चंद्रकलाबाई (१९५०), हेमंतकुमारी चौधरी (१९५०), बुंदेलाबाला (१९५२), गोप्यदेवी (१९५४), भाग्यवतीदेवी (१९५६), ज्वालादेवी (१९६०), इंदुबाला (१९६०), गोपालदेवी (१९६०) आदि के नाम आते हैं। इस नूतन परिपाटी-काल के पहले और पीछे भी कई स्त्री-कवि हुई हैं। उपर्युक्त स्त्री-कवियों में कई उत्कृष्ट रचना भी करती थीं। इस काल विहारी-वंशी अमरकृष्ण चौबे (१९५९) भी कवियों में मिलते हैं तथा दतिया में पद्माकर-वंशी गौरीशंकर गुरु (१९५०) कवि महाशय हैं।

भक्तों में इस काल अयोध्यानाथ सरयूपारीण (सं० १९४६), हित प्रीतमदास (१९४६), जानकीशरण (१९५७) तथा सरयूप्रसाद जैसवाल (१९५०) के नाम आते हैं। इनकी

रचनाओं में कोई भारी मुख्यता नहीं है। समाज-सुधार पर बहुतों ने कथन किए हैं, किंतु इस काल किसी ऐसे लेखक का नाम नहीं आता, जो मुख्यतया समाज-सुधारक कहा जावे। इन दिनों के देश-प्रेमियों में सबसे पहले स्वामी दयानंद सरस्वती तथा भारतेंदुजी के नाम आते हैं। स्वामीजी का आर्यसमाज-धर्म ही देश-प्रेम का भारी समर्थक है। उनके उपदेशों का ध्येय मुख्यतया समाज-संशोधन द्वारा देश-प्रेम-वर्द्धन था। भारतेंदुजी पद्य-रचयिताओं में सबसे प्रथम देश-भक्त थे। इनके नाटक—प्रेमयोगिनी, चंद्रावली, नीलदेवी, भारत-दुर्दशा और सत्यहरिश्चंद्र उत्कृष्ट हैं। इनमें सत्यहरिश्चंद्र में पूर्ण मौलिकता नहीं है, तथा चंद्रावली उच्च साहित्यिक छटा रखते हुए भी रंग-मंच के अयोग्य है। फिर भी साहित्य की दृष्टि से यह स्तुत्य है। शेष तीनो नाटक बढ़िया हैं ही। इन पाँचो ग्रंथों की गणना स्थायी साहित्य में हो सकती है। इनमें से किसी-किसी में जातीयता और अन्यों में प्रेम की पुट बहुत ही श्लाघ्य है। अभी तक सिवा जयशंकरप्रसादजी के और कोई हिंदी-नाटककार भारतेंदु के बराबर नहीं हो पाया है। देश-भक्ति में नूतन परिपाटी-काल में माधवराव सप्रे (१९४५), रामदास गौड़ (१९४८), अर्जुनलाल सेठी (१९५०), सचेंडी-वाले ठाकुर गदाधरसिंह (१९५१), रामनाथ ज्योतिषी (१९५१), नंदकुमार शर्मा (१९५८) तथा देवीप्रसाद शुक्ल (१९५९) के नाम गिनाए जा सकते हैं। इनमें से कई महाशय राजनीतिक कार्य-कर्ता भी हैं और उत्कृष्ट गद्य-लेखक तो सब हैं। साहित्यिक दृष्टि से हम ठाकुर गदाधरसिंहजी के गद्य को बहुत ही ऊँची श्रेणी का मानते हैं। इनके गद्य में देश-प्रेम की मात्रा लबालब झलक रही है, और आरोचन सभी स्थानों पर प्रस्तुत है। आपका प्रथम ग्रंथ 'चीन में तेरह मास' बहुत ही स्तुत्य है। इसके पढ़ने में कभी जी नहीं

ऊबता। आर्यसमाजियों ने व्याख्यान की प्रणाली पर ज़ोर दिया, जिससे सनातनधर्मियों ने भी इसे उठाया। इनमें दीनदयालु शर्मा तथा ज्वालाप्रसाद मिश्र पहले आ चुके हैं, तथा भाई परमानंद (समाजी) और गणेशदत्त शास्त्री (१९५७) इस काल के हैं। यों तो बहुतेरे महाशय धारा-प्रवाह से व्याख्यान देते हैं, किंतु यहाँ उन्हीं के नाम दिए गए हैं, जो या तो धार्मिक उपदेशक हैं या राजनीतिक वक्ता। महामना मालवीयजी हमारे सबसे पुराने तथा प्रभावशाली व्याख्याता हैं। दीनदयालु शर्मा की जिह्वा में भी भारी बल है। और भी बहुत-से महाशय हैं, जिनके नाम तक गिनाना एक भारी कार्य होगा।

पत्रकारों में इस काल देवदत्त शर्मा (सं० १९४९), महता लज्जाराम (१९४९), बालमुकुंद गुप्त (१९४७), गोपालदास (१९४८), पन्नालाल (१९४८), गंगाप्रसाद गुप्त (१९५७), नंदकुमारदेव शर्मा (१९५८) आदि के नाम आते हैं। इन महाशयों के पत्रों में से बहुतों के पत्र १९६० के पीछे निकले, किंतु इन पत्रकारों के नाम लेखनारंभ-काल के अनुसार उपर्युक्त समयों पर आते हैं। पत्र-कला ने हमारे हिंदी-गद्य-लेखकों को कालक्षेप का मार्ग, स्वतंत्र जीवन तथा देश पर भारी प्रभावोत्पादन के बल दिए। उपर्युक्त महाशयों में से महता लज्जाराम, बालमुकुंद गुप्त तथा गंगाप्रसाद गुप्त की प्रधानता समझ पड़ती है। बालमुकुंदजी गुप्त इस नामावली में बहुत निकलते हुए पत्रकार हैं। सामाजिक और धार्मिक विषयों पर विचार तो आपके प्राचीन थे, जिससे हम लोगों का इनसे कई बार वाद-विवाद भी हुआ, किंतु आपकी ज़िंदादिली लेखों तथा भारतमित्र पत्र को बहुत सुपाठ्य बनाती थी। आप कहते थे कि मिश्रबंधु हमसे लड़ तो लेते हैं, किंतु रुष्ट कभी नहीं होते। बात यह थी कि मतभेदवाले लेखों का खंडन

करते हुए भी इनके व्यक्तित्व के कारण हमें भारतमित्र में भी समय-समय पर अपने लेख निकालना अच्छा लगता था। इनके लेखों में सजीवता तथा चरित्र में सौहार्द्र था। शिव शंभु का चिट्ठा मज़ाक़ और नुकीली बातों से लबालब भरा था। समाचारों की वृद्धि तथा सामाजिक विचारों के सम्यक् विस्तार से विविध विषयों पर ग्रंथ-रचना की प्रणाली इसी काल से ज़ोर पकड़ने लगी है। बाबू राधाकृष्णदास (१९४७) ने अनेकानेक विषयों पर स्तुत्य ग्रंथ-रचना की, तथा कार्य-क्षेत्र में भी ऐसा ही औदार्य दिखलाया। बदरीदत्त शर्मा (१९४९) तथा अमीरअली (१९५०) ने नीति का कथन किया। सुंदरलाल (१९५९) ने बालोपयोगी पुस्तकों की रचना की। गंगाशंकरजी पंचौली (१९५१), जगन्मोहन वर्मा (१९५२) और महेंदुलाल गर्ग (१९५३) ने उपयोगी विषयों पर अच्छे ग्रंथ रचे।

इन विषयों पर कथन यहाँ सूक्ष्मता-पूर्वक किए जा रहे हैं, क्योंकि ग्रंथ में प्रत्येक रचयिता का वर्णन दिया ही गया है, जहाँ वह देखा जा सकता है। ठाकुरप्रसाद खत्री (१९४७) ने व्यापारी और कार-बारी-नामक पत्र निकाला तथा ऐसे ही विषयों पर ग्रंथ-रचना भी की। रामनारायण मिश्र (१९४९) तथा साधुशरणप्रसाद (१९५०) ने इस काल यात्रा पर ग्रंथ लिखे। साधुशरणजी का भारत-भ्रमण कई भागों में एक बड़ा ही उपयोगी ग्रंथ है। रामनारायण मिश्र ने दो अन्य महाशयों के साथ योरप-यात्रा लिखी है। हम (शुकदेवविहारी मिश्र) ने भी प्रायः सवा सौ पृष्ठों की योरप-नीरोग-यात्रा प्रकाशित की है। वाचस्पति तेवारी (१९४६) ने ज्योतिष पर कई ग्रंथ बनाए हैं। हरिनाथ (१९५२) और जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी (१९५७) ने हास्य-रस का मज़ा दिखलाया है। रंगनारायणपाल (१९४६) तथा जवानसिंहजी

(१६५०) ने प्रेमात्मक विषयों पर कविता रची। पहले ने प्रेम की व्याख्या की है और दूसरे ने नख-शिख लिखा। श्यामसुंदर (१६५२) और रामसिंहजी (१६५६) ने नायिका-भेद पर ग्रंथ रचे तथा अलंकारों पर भैरवदान (१६४६), जगन्नाथ चौबे (१६५०), और मुरारिदानजी (१६५०) ने इस काल परिश्रम किया। इनमें मुरारिदान का ग्रंथ बहुत प्रशंसनीय है। शास्त्रीय विषयों पर (एच्-एच्) महाराजा विश्वनाथसिंह, रघुनंदन भट्टाचार्य, उदयचंद्र ओसवाल, बनादास, शिवजीलाल, गुमानसिंह, तुलसीराम शर्मा, लेखराम, कृपाराम शर्मा और स्वयं स्वामी दयानंद सरस्वती परिश्रम कर चुके थे। इनमें से बहुतों ने उपनिषदों आदि पर टीका-टिप्पणी करके आध्यात्मिक ज्ञान के तत्त्वों का निरूपण किया था। नूतन परिपाटी-काल में ऐसे विषयों पर बिहारीलाल जैन (१६४६), बाबू भगवानदास (१६५०), सुदर्शनाचार्य (१६५०), राजाराम शास्त्री (१६५२), दर्शन दुबे (१६५२), महामहोपाध्याय डॉक्टर गंगानाथ झा (१६५६), लाला कन्नोमल (१६५७), रामावतार पांडेय (१६५६) तथा लाला रामजी शास्त्री (१६६०) ने विशेष श्रम किया। इन सबों के ग्रंथ महत्ता-युक्त हैं। हम (श्यामबिहारी मिश्र तथा शुकदेव-बिहारी मिश्र) ने भी भारतवर्ष के इतिहास तथा सुमनों-जलि में प्रायः ४०० पृष्ठों में हिंदू-धर्म-निरूपण पर अपने विचार लिखे हैं। बाबू भगवानदास ने अँगरेज़ी भाषा में इस विषय पर कई उत्कृष्ट ग्रंथ रचे, जिनमें प्राचीन दार्शनिक प्रश्नों पर नवीन विचार अच्छे हैं, विशेषतया Sceince of peace and sceince of enotions में। झा महाशय ने प्राचीन दार्शनिक शास्त्र का अच्छा मनन करके उन पर उपयोगी ग्रंथ लिखे हैं। लाला कन्नोमल ने हिंदी में दार्शनिक विषयों पर श्रम करके अनेक सुपाठ्य ग्रंथ

बनाए। इस विशाल विषय की नूतन परिपाटी-काल के लेखकों द्वारा अच्छी अंग-पुष्टि हुई है।

पुराणों के धर्म पर बहुतों ने नहीं लिखा है। वास्तव में बौद्ध विचारों के आक्रमणों द्वारा वैदिक धर्म का अंत हो गया और हिंदू-समाज ने एक दूसरा ही धर्म चलाया, जिसे पौराणिक कहते हैं। इस नवोदित धर्म में कुछ सिद्धांत वैदिक मत के थे, कुछ बौद्ध एवं जैन के और कुछ नवीन आगंतुकों के प्रभाव से सामाजिक विचारों के परिवर्तन द्वारा सिद्ध किए हुए नव धार्मिक एवं सामाजिक आचारों और विचारों के। इसने वैदिक धर्म में माने हुए कई विचारों को विना निंद्य ठहराए ही चुपके-से छोड़ दिया, तथा प्राचीन एवं नवीन सिद्धांतों को लेकर नए धर्म के अंग-प्रत्यंग बड़े चातुर्य से सुगठित करके उसे एक सुचारु-रूप दिया। इस नव धर्म-विकसन में मुख्य श्रेय उन दशाओं का था, जिनमें हमारे समाज ने अपने को पाया।

महात्मा गौतमबुद्ध का प्रादुर्भाव संवत् पूर्व छठवीं शताब्दी में हुआ तथा सम्राट् अशोक का संवत् पूर्व तीसरी शताब्दी में। महात्मा बुद्धदेव द्वारा चलाया हुआ हीनयानीय बौद्ध-धर्म अशोक के पहले बहुत करके गृह-त्यागियों का संप्रदाय-मात्र रहा, न कि गृहस्थों का धर्म। साधारण समाज पर तब तक उसका प्रभाव बहुत नहीं था। अशोक ने बौद्ध तथा कई जैन-सिद्धांतों में से गृहस्थों द्वारा पालित होने योग्य विचार चुनकर काम-काजू धर्म उपस्थित किया, जो उनके प्रभाव तथा अपनी धार्मिक एवं उपदेशकों की उच्चता के कारण समाज के एक बड़े अंश में स्थापित हुआ। उनके बौद्ध होने के कारण वह माना बौद्ध धर्म ही गया। अपने ऊँचे-से-ऊँचे फैलाव-काल में भी बौद्ध-धर्म के अनुयायी संख्या में हिंदुओं से कम थे, ऐसा अनुमान प्राचीन ग्रंथों के देखने से होता है। गृहस्थों में आने से प्राचीन हिंदू-विचारों का प्रभाव बौद्ध-

धर्म पर पड़ने लगा। दशा यह थी कि यदि एक भाई हिंदू था, तो दूसरा बौद्ध। बौद्धों और हिंदुओं में खाने-पीने, संबंध-विवाहादि में कोई भेद न था, जैसी दशा आजकल भी चीन, जापान, लंका आदि के बौद्धों और ईसाइयों में पाई जाती है। बौद्ध तथा हिंदू एक दूसरे के सिद्धांतों से प्रभावित होने लगे और दोनो के सिद्धांत मिलने लगे। तीसरी शताब्दी संवत् तक भारत में शक, प्रमर, गुर्जर, तुर्क यूएची, सीदियन आदि कई जातियाँ बाहर से आकर समाज में मिल गईं। पाँचवीं शताब्दी में इसी प्रकार हूण आकर मिल गए। कनिष्क अशोक के समान भारी सम्राट् थे। उनके समय पहली शताब्दी तक हिंदू और बौद्ध इतने मिल चुके थे कि महात्मा बुद्ध में मानुषिक भावों का शिथिलीकरण होकर पूरा देव-भाव जुड़ चुका था; भेद केवल इतना था कि हिंदू लोग देव-समाज में बुद्ध का स्थान नीचा मानते थे, और बौद्ध लोग उसे बहुत ऊँचा कहते थे। दोनो के देवताओं को मानते दोनो थे, भेद केवल उनकी आनुषंगिक महत्ता का था। इसी बौद्ध-मत को महायान कहते हैं।

बौद्धों तथा उपर्युक्त अन्य जातियों के विचारों द्वारा प्रभावित होकर हमारा धर्म प्राचीन वैदिक मत से बहुत दूर हट गया, यद्यपि इसने वेदों का मौखिक मान कभी नहीं छोड़ा। इसी नव-विकसित मत को पौराणिक कहते हैं। चला तो यह समाज की दशाओं द्वारा विकसित धार्मिक भावों से, किंतु अंत में स्वामी शंकराचार्य तथा रामानुजाचार्य ने इसके अंग-प्रत्यंगों का सामंजस्य मिलाकर इसे दार्शनिक एवं शुद्ध शास्त्रीय रूप दिया। कहने को तो ये लोग बौद्ध-काल के पहलेवाले प्राचीन वेदों तथा शास्त्रों को ही मानते रहे, किंतु इन्होंने अपने धार्मिक विचारों का ऐसा सुंदर तार्किक सामंजस्य निकाला कि नवोदित, तथा नव विचारों द्वारा गृहीत प्राचीन भाव, एक ही दिखने लगे। इस पौराणिक धर्म को प्राचीन

प्रथानुयायी पंडित लोग अब भी वैदिक धर्म से अभिन्न मानते हैं, तथापि सगुणोपासना, अवतारों का मान, यज्ञों का साधारणतया अभाव, प्रतिमाओं की विशेषता, गंगा-यमुना आदि पर महती श्रद्धा, मूर्तियों तथा नदियों पर आश्रित तीर्थ-स्थानों आदि के मान, त्रिमूर्ति की दृढ़ स्थापना एवं इंद्रादि के शिथिल प्रभाव में यह पौराणिक मत प्राचीन वैदिक मत से भिन्न है। इस विषय पर हमारे नूतन परिपाटी-कालवाले तथा इनके पहलेवाले लेखकों ने बहुत कुछ नहीं कहा। स्वामी दयानंद सरस्वती ने इन बातों को वेद-समर्थित न कहकर त्याज्य बतलाया, किंतु विशुद्धानंद सरस्वती आदि काशी के तथा अन्य भारतीय प्राचीन प्रथानुयायी विद्वान् इस मत से विरोध ही करते रहे, और उपर्युक्त बातों को वेदानुकूल बतलाते रहे। डॉक्टर सर रामकृष्ण भांडारकर ने पहलेपहल हिंदू-धर्म के सिद्धांतों का ऐतिहासिक वर्णन करके पृथक्-पृथक् विचारों के उदय का काल निर्णीत किया। यह निर्णय प्राचीन हिंदू-ग्रंथों के आधार पर ही किया गया। हमने भी इस विषय पर पहले से विचार करके हिंदू-धर्म के विकास पर सुमनोंजलि तथा भारतीय इतिहास में निबंध लिखे थे। पीछे से भांडारकर महाशय के ग्रंथ तथा अन्य पुस्तकें पढ़ने का जब अवसर मिला, तब अपने प्राचीन विचारों में जो नए भाव जुड़े, उनका भी पृथक् कथन हमने सुमनोंजलि के ही एक निबंध में कर दिया है। इस प्रकार यह पौराणिक मत के उदय का इतिहास बड़ा ही शिक्षा-प्रद एवं रोचक है। पौराणिक मत की क्रमोन्नति का वर्णन हिंदी में हमने अब तक किसी अन्य ग्रंथ में नहीं देखा है। डॉक्टर झा महाशय तथा बाबू भगवानदास के लेख हिंदी में बहुत थोड़े हैं और अँगरेज़ी में अधिक, किंतु ये महाशय हमारे ही हैं, सो इनके अँगरेज़ी ग्रंथों से भी हमें हिंदी की अंग-पुष्टि समझ पड़ती है।

ईश्वरीप्रसाद तेवारी (सं० १९४८) ने पौराणिक ग्रंथों का अनु-

वाद करके उन पर अपने भी कुछ विचार प्रकट किए हैं। अन्यान्य लेखकों ने पौराणिक कथाओं के भाग लेकर ग्रंथ लिखे हैं, विशेषतया रामायण, कृष्णायन, द्रौपदी-चीर-हरण, अभिमन्यु-वध, नल-दमयंती, जयद्रथ-वध, प्रह्लाद-मोचन, सुदामा-चरित्र, कंस-वध, कार्ष्ण लीलाओं आदि पर। ये विषय हज़ार बार पुनरावृत्तियों द्वारा ऐसे साधारण क्या फीके हो गए हैं कि इन्हीं पर नए ग्रंथों के पढ़ने को जी नहीं चाहता। फिर भी हमारे कविजन इनका वर्णन करते हुए कोई नवीन विचार तक नहीं लाते और संभव तथा असंभव-जैसे कुछ कथन प्राचीन व्यास लोग कर गए हैं, उन्हीं को आँख बंद करके मान लेना बुद्धिमानी की सीमा समझते हैं। एक समय था, जब इन प्राचीन विषयों पर संभवनीयता के आधार पर कुछ कहने-वाला धर्म-विरोधी समझा जाता था। अब ऐसी संकीर्णता बहुत कुछ दूर हो चुकी है, किंतु फिर भी हमारे नब्बे प्रतिशत कविगण इन विषयों पर कथन करते समय प्राचीन व्यासों के दासत्व से आगे एक पैग देने तक की हिम्मत नहीं करते। ऐसे दास-मानस-युक्त लेखकों को इन प्राचीन विषयों पर लिखना ही न चाहिए और ऐसे नवीन विचारों तथा घटनाओं का सहारा ढूँढना चाहिए, जिनमें वे अपने मन को दास-कल्प के बाहर पावें। फिर नूतन परिपाटीवाले समय की कौन कहे, हम आज तक भी अपने अधिकतर कवियों को ऐसे ही दास-मानस के अनुयायी तथा समाज को मिथ्या-विश्वासों की ओर घसीटनेवाले पाते हैं। साहित्यकार के जहाँ अधिकार बहुत हैं, वहीं उसके भार भी अपार हैं। जो मनुष्य अपने को दास-कल्प के बाहर न पावे, उसे उचित है कि कम-से-कम समाज को मिथ्या उपदेश तो न देवे।

एक नाटककार महाशय लिखते हैं कि सुदामा ने जो गुराइन के दिए हुए चने स्वयं सब-के-सब खा लिए; और भगवान्

कृष्ण का भाग उन्हें न दिया, इसी पर भगवान् ने मानसिक शाप दिया कि जितने चने उन्होंने बेजा चावे, उनमें से एक-एक चने के लिये उन्हें जब एक-एक दिन का उपवास हो चुकेगा, तभी उनके इस बाल्य काल के पाप का प्रायश्चित्त होगा; नहीं तो सुदामाजी को बुढ़ापे तक भारी कष्ट क्यों सहना पड़ता, क्योंकि पहले भी तो भगवान् उन्हें सुखी कर सकते थे। उन्होंने भगवान् श्रीकृष्ण का प्रभाव तो अक्षुण्ण दिखला दिया, किंतु इतना न सोचा कि एक-एक चने के लिये अपने मित्र तथा ब्राह्मण को एक-एक उपवास का दंड देना कितना क्रूर कर्म है? कवियों को भावों के सब पक्षों पर विचार कर लेना चाहिए, यह नहीं कि मूर्ख-मोहिनी शक्ति के सहारे मुर्ग़ की एक ही टाँग कह देनी।

कहने का प्रयोजन यह है कि पौराणिक साहित्य तथा धर्म को हमारे लेखकों द्वारा उचित मान नहीं मिला है। पहले तो कतिपय प्राचीन व्यासों ने ही उसमें मूर्ख-मोहिनी कला का उचित से बहुत अधिक सहारा लेकर असंभव कथनों की खानि बना डाला, और पीछे से हमारे हिंदी-लेखकों ने उन असंभव कथनों की खानि को शिथिल करने के स्थान पर और भी दृढ़ किया, जिसका फल यह हुआ कि हमारी अपढ़ जनता असत्य उपदेश पाकर केवल करामात-प्रदर्शन को धार्मिक महत्ता का मूल-मंत्र मान बैठी है। जो लेखक कुंभकर्ण की मूछ को चार योजन से एक तिल कम बतलावे, वह ईसाई है। यदि राम-राज्य का समय ग्यारह हज़ार वर्षों से एक दिन कम कह दिया जावे, तो वक्ता सनातनधर्मी नहीं हो सकता। वेद पुराणों से बहुत प्राचीन हैं। जब वे ही 'जीवेम शरदः शतम्' का कथन करते हैं, और अथर्ववेद तथा परम प्राचीन उपनिषत् ११६ वर्ष की आयु को बहुत भारी मानते हैं, तब पुराणों के ऐसे असमान्य भाषणों पर ज़ोर देना बुद्धिमानी नहीं है। फिर भी अब तक आर्यसमाजी लेखकों के अतिरिक्त

शेष कवियों में से नव्वे प्रतिशत ने ऐसे विषयों पर सामाजिक ज्ञान-वर्द्धन का अपना पवित्र कर्तव्य पालित नहीं रक्खा। पुराणों के ऐसे कथन धार्मिक प्रश्न न होकर ऐतिहासिक-मात्र हैं। प्रश्न यही है कि इतिहास-सिद्ध क्या बात है कि राम-राज्य ग्यारह सहस्र वर्ष रहा या तीस-चालीस वर्ष-मात्र? राम को अवतारी पुरुष मानते हुए भी कोई मनुष्य इस ऐतिहासिक प्रश्न पर स्वच्छंदता-पूर्वक विचार कर सकता है, किंतु हमारी जनता के अंध-विश्वास अशुद्ध उपदेशों के कारण इतने दृढ़ हो गए हैं कि वह इन सरल प्रश्नों पर सरल विचार करने को तैयार नहीं है। हमारे अधिकांश कविगण भी ऐसे विषयों में जनता के उपदेशक न होकर उपदेश देते हुए भी वास्तव में उसी के अनुयायी और दास हैं। ऐतिहासिक कवियों का कर्तव्य है कि संभवनीयता को हाथ से कभी न जाने देवें, किंतु होता ऐसा नहीं है। यों तो साहित्यिक वर्णनों से संभवनीयता प्रायः असंबद्ध है, किंतु जब कवि इतिहास कहने बैठे या किसी प्राचीन या नवीन घटना का ऐतिहासिक रूप में कथन करता हुआ भी असंभव कथनों का सहारा लेवे, तो उसकी रचना शतमुख से तिरस्करणीय होगी।

नूतन परिपाटी-काल की यह मुख्यता है कि उच्च शिक्षा-प्राप्त लोग लेखकों के रूप में हिंदी में आने लगे, जिससे हमारे यहाँ नव विचारोत्पादन बल-पूर्वक चलने लगा। कुछ दिनों तक संस्कृत, बँगला, गुजराती, अँगरेज़ी आदि के अनुवाद बहुतायत से बने, जिससे न केवल भाव-परिवर्द्धन हुआ, वरन् भाषा में भी नवीनता एवं सांस्कृत शब्दों की वृद्धि हुई। इस विषय पर कुछ अधिक प्रकाश उत्तर नूतन परिपाटी के कथन में डाला जायगा। यहाँ केवल इतना कह देना अलम् है कि नव-विचारागमन के साथ भाषा का भी रूप बदलने लगा, और उस पर शुद्ध हिंदी-शब्दों की अपेक्षा अन्य भाषाओं के शब्द-समूह का साम्राज्य फैलने लगा। सबसे

अधिक संस्कृतपन की वृद्धि हुई। यह उन्नति है या अवनति, सो अभी हम नहीं कहते, किंतु बात ऐसी अवश्य हुई।

पौराणिक मत का आर्यसमाज घोर विरोध करता है। समाज में भी बहुतेरे उच्च कोटि के लेखक तथा व्याख्यता हैं। भारतेंदु-काल में महात्मा श्रद्धानंद तथा लाला लाजपतिराय भारी समाजी लेखक एवं व्याख्याता हुए। पूर्व नूतन परिपाटी-काल में समाजी लेखकों में निम्न-सज्जनों के नाम आते हैं—गोपालदास देवगण शर्मा (१९४६), देवीदयालु (१९४९), विष्णुलाल शर्मा (१९४९), बदरीदत्त शर्मा (१९४९), नरदेव शास्त्री (१९४९) और ठाकुर गदाधरसिंह (१९५१)। इनमें से कई महाशय उत्कृष्ट लेखक तथा व्याख्याता थे। विशेष विवरण आगे मिलेगा। प्राचीन अँगरेज़ लेखकों में डॉक्टर रुडाल्फ़ हार्न ली, फ्रेडरिक पिन्काट, डॉक्टर सर जार्ज ग्रियर्सन, जान क्रिश्चन आदि ऐसे महाशय थे, जिन्होंने लिखा तो अँगरेज़ी में, किंतु हिंदी पर प्रचुर परिश्रम किया। जान महाशय हिंदी में लेख तथा कविता भी रचते थे।

पैंतीसवें अध्याय (मिश्रबंधु-विनोद, तृतीय भाग) में हमने कई विषयों का कथन करते हुए नाटकों का भी वर्णन (पृष्ठ ११७४-७६) किया है। उस स्थान पर वर्तमान नाटककारों के कथन कर दिए गए हैं। वह वर्णन पूरे वर्तमान प्रकरण से संबद्ध था, सो उसमें १९२६ से अब तक का सूक्ष्म कथन किया गया है। अब उसी विषय पर पूर्व नूतन परिपाटी-कालवाले नाटककारों का पृथक् वर्णन किया जाता है। भारतेंदु के पूर्व पूर्ण नाटक उनके पिता गिरिधरदासजी ने रचा, जिसे नहुष-नाटक कहते हैं। उसका भी गद्य खड़ी बोली में न होकर व्रजभाषा में है। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने सर्वांग-सुंदर खेलने योग्य उत्कृष्ट नाटक रचे। अँगरेज़ी, बँगला आदि के प्रभाव से भारतेंदु के पीछे चंपू, भाण, प्रहसनादि कुछ

अधिकता से लिखे जाने लगे। भारतेंदु ने भी कुछ ऐसे नाटक लिखे थे। फिर भी इनमें वह चमत्कार न आया, जिसे उच्च कोटि का कहते हैं। बँगाल में बँगला-नाटकों की जैसी मनमोहिनी उन्नति हुई है, वैसी अपने यहाँ अभी तक नहीं हो सकी है। कारण यह है कि युक्त-प्रांत में नाटकीय कंपनियों का कार-बार बहुत करके नगरों के सहारे चलता है, जहाँ हिंदी-उर्दू का बेढब प्रश्न लगा हुआ है। मुसलमान लोग तो हिंदी की ओर प्रायः नहीं के बराबर ध्यान देते हैं, और हिंदुओं में से बहुत अधिक जिस सुगमता से उर्दू समझ सकते हैं, उतना हिंदी को नहीं। हम लोगों के विद्यार्थी-जीवन तक पूरे विद्यार्थियों में से हिंदी पढ़नेवाले बहुत ही स्वल्प भाग में होते थे। आजकल उनमें से प्रायः ६० प्रतिशत हिंदी पढ़ते हैं। फिर भी नागर-भाषा में उर्दू के शब्द इतने अधिक मिले रहते हैं कि युक्त-प्रांतीय हिंदी पढ़नेवाले विद्यार्थी भी सुगमता-पूर्वक उर्दू समझ सकते हैं। समाज में इस काल फ़ारसी-शब्द-मिश्रित खड़ी बोली के समझनेवाले संस्कृत-शब्द-मिश्रित भाषा के समझनेवालों की संख्या से अधिक हैं। उर्दू में फ़ारसी-शब्दों का एवं हिंदी में संस्कृत-शब्दों का जितना अधिक मिश्रण होता जाता है, उतना ही वह साधारण जनता की भाषा से दूर हटती तथा जन-समुदाय के लिये दुर्ज्ञेय होती जाती है। फल यह है कि जनता अभी तक हमारे उच्च कोटि के नाटकों की भाषा नहीं समझ पाती एवं उर्दू-वाले नाटकों को प्रायः समझ लेती है, जिससे कंपनियाँ हिंदी-नाटकें न खेलकर उर्दू की खेलती हैं। यह हिंदी-नाटक-विभाग की उन्नति के प्रतिकूल बड़ा भारी कारण है। बँगला-नाटकें रंग-मंच पर झट से खेली जाने लगती हैं, जिससे कवियों को अपनी रचनाओं के गुण-दोष सुगमता-पूर्वक अति शीघ्र ज्ञात हो जाते हैं, और उनकी आगेवाली रचनाएँ दिनोंदिन अधिकाधिक उन्नति करती हैं, क्योंकि

समाज पर कैसे ग्रंथों का कैसा प्रभाव पड़ता है, इस काम-काजू जंते से वे खींची हुई होती हैं। कंपनियों द्वारा नाटकें खेली जाने से उनके रचयिताओं की कीर्ति भी बहुत जल्द फैलती है, जिससे उनका अधिकाधिक प्रोत्साहन एवं लाभ भी होता है। इन कारणों से बंगाल का नाटक-विभाग अच्छी उन्नति कर चुका है, किंतु हमारा अनुभव की जाँच से पृथक् रहकर ख़याली संसार का ही निवासी है।

फिर यहाँ की जनता उपर्युक्त अनुचित उपदेशों के कारण केवल मूर्ख-मोहिनी विद्या को पसंद कर पाती है, जिससे वेताब आदि हमारे नाटक-रचयिता उसी प्रकार के ग्रंथ बनाते हैं। उन बेचारों का इसमें कम दोष है और समाज का अधिक। फिर भी मूर्ख-मोहिनी विद्या के प्रवर्द्धक होने के कारण वे लोग कुछ समालोचकों के कोप-भाजन बने हुए हैं। ज्यों-ज्यों जनता की रुचि ऊँची होती जायगी, और हमारे उपदेशक तथा लेखकगण अपने भार का अनुभव करेंगे, त्यों-त्यों हमारा नाटकीय विभाग भी उच्चता ग्रहण करेगा। भाषाओं की यह दशा है कि बंगाल में सांस्कृत शब्द का बाहुल्य है तथा पंजाब में फ़ारसी-शब्दों का। बंगाल से पंजाब तक ज्यों-ज्यों पच्छिम जाते जाइए, त्यों-त्यों सांस्कृत शब्दों की कमी तथा फ़ारसी का आधिक्य होता जाता है। जैसे शब्द लखनऊ के समीप साधारणतया बोले तथा समझे जाते हैं, वैसों का निराकरण हम लोग संस्कृत पर प्रेम रखने के कारण से ही करते हैं, और कभी-कभी साधारण फ़ारसी-शब्द लिख भी जाते हैं, किंतु पटने के निकट वह शब्द निराकरण कृत्रिम न होकर एक परम साधारण बोल-चाल का फल है। वहाँ फ़ारसी-गर्भित शब्द लोग समझ ही नहीं पाते। इसी प्रकार इधर तथा और पच्छिम की ओर लोग साधारण समझे जानेवाले संस्कृत-गर्भित शब्द नहीं समझ पाते। अतएव भाषा में संस्कृत अथवा फ़ारसी, दोनो के गूढ़ शब्द न आने चाहिए, जिसमें

कि वह मातृभाषा के निकट रहे और अधिक-से-अधिक देश में समझी जा सके।

हमारे यहाँ नाटक-विभाग बहुत करके भारतेंदु के समय से चला। हमारे प्राचीन नाटककारों में केवल भारतेंदु और श्रीनिवासदास सुकवि थे। शेष के नाटक ऊँची कक्षा तक न पहुँच सके। यहाँ पर केवल मौलिक ग्रंथों पर कथन किया जाता है। अनुवादकों में लाला सीताराम, सत्यनारायण (आरा-निवासी), ज्वालाप्रसाद मिश्र, गोपालराम (गहमर-निवासी), रूपनारायण पांडेय आदि ने अच्छे अनुवाद किए, किंतु इनकी रचना में भाषा ज्ञान के अतिरिक्त कोई विशेष महत्ता नहीं है। रत्नचंद (न्याय-सभा, हिंदी-उर्दू), रामकृष्ण वर्मा, किशोरीलाल गोस्वामी आदि ने भी नाटक रचे, किंतु उस उच्चता के नहीं, जो समाज में उन्हें वाहवाही का भाजन बनावें। नूतन परिपाटीवाले नाटककारों में राधाकृष्णदास (१९४७), हरीरामजी त्रिवेदी (१९५०), अक्षयवरप्रसाद साही (१९५०), बलदेवप्रसाद मिश्र (१९५१), कृष्णबलदेव वर्मा (१९५२), हरिपालसिंह (१९५४), ब्रजनंदनसहाय (१९५६), रूपनारायण पांडेय (१९६०) तथा रामनारायण (१९६०) के नाम आते हैं। हम (श्यामविहारी मिश्र तथा शुकदेवविहारी मिश्र) ने भी चार नाटक बनाए हैं, अर्थात् नेत्रोन्मीलन, पूर्व भारत, उत्तर भारत और शिवाजी। ये सब खेलने के योग्य हैं। अंतिम नाटक अभी अमुद्रित है। पूर्व भारत तीन जगह खेला जा चुका है। राधाकृष्णदास का महाराणाप्रताप अच्छा नाटक होकर भी उच्च कोटि का नहीं है। कृष्णबलदेव वर्मा का भर्तृहरि अच्छे भाव दिखलाता हुआ भी बहुत उत्कृष्ट नहीं है। इतरों के नाटक बहुत नामी नहीं हैं, न समालोचना द्वारा उनके गुण-दोषों पर अभी तक सम्यक् प्रकाश पड़ा है। फलतः अभी तक नूतन परिपाटी-कालवाले कवियों

द्वारा नाटकीय विभाग की अधिक उन्नति नहीं कही जा सकती।

उपन्यास-विभाग चलता तो पहले से था और प्रौढ़ माध्यमिक तथा अलंकृत कालवाले कुछ ग्रंथ इसी विभाग में आ सकते हैं, तथा इंशाअल्ला आदि के भी ग्रंथ ऐसे ही हैं, तथापि इसका प्रचार भारतेंदु के समय से ही माना जा सकता है। उस काल के औपन्यासिक अनुवादकारों में बाबू गदाधरसिंह, रामकृष्ण वर्मा, कार्त्तिकप्रसाद, गोपालराम गहमर-निवासी तथा रामचंद्र वर्मा के नाम आते हैं। गोपालराम ने बहुतेरे मौलिक उपन्यास भी भारतेंदु-काल के पीछे लिखे। अनुवादकों के विषय में भाषा के अतिरिक्त कुछ अधिक विवरण अनावश्यक है। नूतन परिपाटीवाले लेखकों में महता लज्जाराम (१९४५), अयोध्यासिंह उपाध्याय (१९४७), किशोरीलाल गोस्वामी (१९४९), देवकीनंदन खत्री (१९४८), गोपाललाल खत्री (१९४९), उदितनारायणलाल (१९५०), सकलनारायण पांडेय (१९५३), श्यामविहारी मिश्र तथा शुकदेवविहारी मिश्र (१९५५), व्रजनंदनसहाय (१९५६), चतुर्भुजसहाय (१९५९), रूपनारायण पांडेय (१९६०) आदि औपन्यासिक माने जा सकते हैं। महता लज्जाराम ने लिखे तो दो-तीन अच्छे उपन्यास हैं, किंतु इनके उपदेश, जनता के विगड़े हुए पुराने विचारों की दृढ़ता के पक्ष में होने से, हानिकारी हैं। उपाध्यायजी के दो-एक ग्रंथ उपन्यास कहे जा सकते हैं और अच्छे भी हैं, तथापि वास्तव में उनमें भाषा के तो परमोत्कृष्ट उदाहरण हैं, किंतु औपन्यासिकपन की बहुत कमी है। गोस्वामीजी के कुछ उपन्यास अच्छे भी हैं, किंतु बहुतों में रसियापन तथा जनता को पसंद साधारण भावों द्वारा धनोपार्जन के प्रयत्न अधिकता से आकर उनकी साहित्यिक उच्चता के बाधक हो गए हैं। देवकीनंदनजी के चंद्रकांता तथा चंद्रकांता-संतति कुछ दिन बहुत ही अधिकता से जन-समुदाय

(१६५८), रघुनाथसिंह (१६५६), अजमेरीजी (१६६०), गयाप्रसादजी सनेही (१६६०), देवनारायण (१६६०) आदि। हम (श्यामविहारी मिश्र तथा शुकदेवविहारी मिश्र) ने भी मिलकर प्रायः ४०० पृष्ठों का पद्य-काव्य नाटकों से इतर वनाया है, जिसमें से प्रायः १६० पृष्ठों की खड़ी बोली में कविता है और शेष अवधी तथा व्रजभाषा की। परिवर्तन काल में कविता गिरी दशा में रही और हरिश्चंद्र-काल में कुछ उन्नति करके उसने पूर्व नूतन परिपाटी-काल में बल धारण किया। लाला भगवानदीन आदि कई कवियों ने वीर काव्य पर भी ध्यान दिया है। हमने भी लवकुश-चरित्र और बूँदीवारीश में वीर काव्य करने का प्रयत्न किया है। पहले ग्रंथ में पौराणिक रीति पर वीर काव्य है और दूसरे में आधुनिक रीति का युद्ध कथित है। उपर्युक्त कवियों में से कई व्रजभाषा में रचना करते हैं और कई खड़ी बोली में।

उत्कृष्टता इन दोनो भाषाओं में अच्छी आ सकती है, किंतु खड़ी बोली की रचना नवीनता के कारण साधारण होने पर भी कुछ-कुछ कमनीयता-मंडित देख पड़ती है। साहित्य-गौरव के लिये नवीनता एक प्रकार से आवश्यक गुण है। व्रजभाषा में प्रायः पाँच सौ वर्षों से नायिका-भेद का कथन होता चला आया है, सो सब-के-सब भाव जूठे-से हो गए हैं। अब उसी प्राचीन विषय पर घेपते चले जाने से भावों में नवीनता तथा वर्णन में चमत्कार लाना कठिन है। इसलिये जिन महाशयों को व्रजभाषा पर ममता हो, उन्हें प्राचीन प्रथानुरूप नायिका-भेद, नख-शिख, अलंकार, षट्ऋतु आदि के वर्णन छोड़कर प्रणाली बदलनी होगी, नहीं तो गोस्वामीजी की कहावत उनकी रचना पर चरितार्थ हो जायगी कि "जो प्रबंध बुध नहिं आदरहीं, सो श्रम बादि बाल कवि करहीं।" अब भी व्रजभाषा में उत्कृष्ट वर्णन हो सकते हैं, किंतु विषय-परिवर्तन

की अत्यधिक आवश्यकता है। कुछ महाशयों का विचार है कि यह व्रजभाषा का युग नहीं है। हम इस मत के विरोधी हैं। हाँ, बिना योग्यता के रचना स्तुत्य कभी न बनेगी। खड़ी बोली दिनोंदिन उन्नति करती जाती है, और भावों, प्रणालियों एवं भाषा, तीनो में नवीनता से मंडित होने से रुचिकर होती है। उपर्युक्त कवियों के पृथक्-पृथक् कथन यहाँ नहीं किए जाते हैं, क्योंकि आगे चलकर ऐसा किया ही जायगा, और इनमें से बहुतों की कृतियों के उदाहरण दे दिए गए हैं, जिससे पाठकगण स्वयं समझ सकते हैं कि उन लोगों में कैसा कवित्व-चमत्कार है। आजकल की कविता में देश-प्रेम अधिकता से देख पड़ता है, जो योग्य भी है। प्राचीन विषय धीरे-धीरे छूटते जा रहे हैं। कोरे मनोरंजक विषय कम होकर समाज का ध्यान उपयोगी विषयों पर जा रहा है। संवत् १९६० तक की कविता में खड़ी बोली के सामने व्रजभाषा का पद्य में बहुत अधिक प्रयोग है।

प्राचीन टीकाकारों में सूरति मिश्र, कृष्ण कवि, सरदार, गुलाब चारण, सीतारामशरण, ज्वालाप्रसाद मिश्र, विनायकराव, रामेश्वर भट्ट आदि के नाम प्रसिद्ध हैं। पूर्व नूतन काल में जगन्नाथदास रत्नाकर (१९४८), व्रजरत्न भट्टाचार्य (१९५७), लाला भगवानदीन (१९५७), श्यामसुंदरदास खत्री (१९५७) आदि के नाम आते हैं। रत्नाकरजी ने बिहारी-रत्नाकर में बिहारी-सतसई की सर्वमान्य अथच पांडित्य-पूर्ण टीका की, तथा पाठ-शोधन में भी श्लाघ्य श्रम किया। लाला भगवानदीन ने भी बिहारी और केशवदास पर श्रम किया। भट्टाचार्य ने अनेक टीका-ग्रंथ रचे। श्यामसुंदरदास ने चंद-कृत रासो की पाद-टिप्पणी आदि पंड्याजी के साथ लिखीं। हम (श्यामबिहारी मिश्र तथा शुकदेवबिहारी मिश्र) ने भूषण-ग्रंथावली की ऐतिहासिक एवं साहित्यिक टीका प्रचुर परिश्रम से लिखी, तथा पाठ-शोधन में भी श्रम किया, और गणेशबिहारी मिश्र ने देव-ग्रंथावली

पाद-टिप्पण के साथ प्रकाशित कराई। नूतन काल में टीका का काम अच्छा हुआ।

अनुवादकारों में इस काल शरच्चंद सोम (१६४७) तथा मथुराप्रसाद मिश्र के नाम आते हैं। सोम ने बारह सज्जनों द्वारा महाभारत का गद्यानुवाद कराया, तथा मिश्रजी ने कई संस्कृत और बँगला के ग्रंथों का अनुवाद किया। कई इतर अनुवादकर्ता भी हैं, जिनके नाम अन्य संबंधों में कहे गए हैं। निबंधों में, भारतेंदु-काल में, बालकृष्ण भट्ट तथा प्रतापनारायण मिश्र के परिश्रम सामने आते हैं, किंतु इनमें विशेष उत्कर्ष नहीं है। पीछे गहमर-निवासी गोपालरामजी ने निबंध रचे, और भीमसेन शर्मा भी अच्छे निबंधकार हैं। इनकी रचनाएँ पांडित्य पूर्ण हैं। बालमुकुंदगुप्त-कृत शिवशंभु का चिट्ठा मनोरंजक निबंध है। महावीरप्रसाद द्विवेदी तथा गंगाप्रसाद अग्निहोत्री द्वारा अनुवादित बेकन-विचार-रत्नावली तथा निबंध-मालादर्श उपयोगी ग्रंथ हैं, किंतु अनुवाद-मात्र होने से इनकी हिंदी में महत्ता नहीं है। सरदार पूर्णसिंह ने कुछ भावात्मक निबंध हिंदी में लिखे, जो श्रेष्ठ थे। इनके निबंध पत्रिकाओं में लेख-मात्र थे, किंतु थे उत्कृष्ट। बाबू श्यामसुंदरदास ने कई अच्छे निबंध रचे। लाला कन्नोमल के दार्शनिक निबंध उच्च कक्षा के हैं, किंतु उनमें कुछ-कुछ मौलिकता की कमी समझी जाती है। हम (श्याम-विहारी मिश्र तथा शुकदेवविहारी मिश्र) ने आत्म-शिक्षण-नामक दो-ढाई सै पृष्ठों का निबंध लिखा, जो द्वितीयावृत्ति तक पहुँच चुका है। हिंदू-धर्म पर हमारे निबंध सुमनोंजलि तथा भारतवर्ष के इतिहास के प्रायः चार सै पृष्ठों पर विस्तृत हैं। हम (शुकदेव-विहारी मिश्र) ने हिंदी-साहित्य का भारतीय इतिहास पर प्रभाव-नामक एक और निबंध पटना-विश्वविद्यालय के लिये लिखकर वहीं व्याख्यानों के रूप में पढ़ा। यह २२४ पृष्ठों का ग्रंथ है।

हमारे यहाँ निबंध-ग्रंथ हैं तो अच्छे, किंतु उस उच्च श्रेणी के नहीं हैं, जैसे अँगरेज़ी आदि में पाए जाते हैं। राजनीतिक विषयों की ओर उचित कारणों से भारत का ध्यान बहुत अधिकता से लगा हुआ है, किंतु इस बात से अन्य उपकारी विषयों की उन्नति कुछ-कुछ रुकी हुई अवश्य है। यही दशा निबंध की है। भारतीय हिंदी-लेखक संख्या में हैं तो बहुत अधिक, किंतु उनमें से बहुतेरों में स्वावलंबन एवं विस्तृत ज्ञान की मात्रा घटी हुई है। ऐसे लोगों की दशा बहुत करके कूप-मंडूकवत् है, जो अपने परम संकीर्ण संसार से आगे बढ़कर मानो कुछ जानते ही नहीं। हमारे यहाँ बीसवीं शताब्दी में भी ऐसे विषयों पर वाद-विवाद हुआ करते हैं, जो उन्नत देशों में १८वीं, १६वीं शताब्दी में ही निर्णीत हो गए थे। ऐसी दशा में उच्च कोटि के निबंध आवें कहाँ से? अभी ज्ञान ही विस्तृत नहीं है। आशा है, ऐसा समय भी शीघ्र ही आवेगा, जब हम लोग अपनी भाषा में सभी प्रकार के ग्रंथ देखेंगे। समालोचना आदि भी निबंध में ही आती हैं, किंतु हमने इनके कथन अलग किए हैं। गवेषणा शब्द से पुरातत्त्व-संबंधी प्रयत्न भी संबंध रखता है, किंतु हम यहाँ केवल साहित्यिक गवेषणा का कथन करते हैं। इस संबंध में भारतेंदु-काल में ठाकुर शिवसिंह सेंगर तथा डॉक्टर सर जॉर्ज ग्रियर्सन ने अच्छा श्रम किया। इधर पूर्व नूतन परिपाटी-काल में कुछ काम हम (मिश्रबंधु) ने हिंदी-ग्रंथों की खोज, मिश्रबंधु-विनोद तथा हिंदी-नवरत्न द्वारा किया, तथा बाबू हीरालाल एवं बाबू श्यामसुंदरदास खत्री ने भी श्लाघ्य परिश्रम किया है।

समालोचना का कुछ-कुछ काम प्राचीन आचार्य लोग गुण-दोष-कथन के अध्यायों में करते आए थे, किंतु उसे विशिष्ट गुण-दोष-कथन से बढ़कर समालोचना कहना शोभा नहीं देता। दासजी ने

इस निरीक्षिका-शक्ति को कुछ बढ़ाया। इधर आकर भारतेंदु-काल में बदरीनारायण चौधरी ने इसका कुछ काम उठाया, किंतु वह गौरव न पा सका। महावीरप्रसाद द्विवेदी ने लाला सीताराम की एक पुस्तिका की कहने को तो समालोचना लिखी, किंतु वास्तव में वह समालोचना न होकर व्याकरण-संबंधी दोष-प्रदर्शन-मात्र था, सो भी अशिष्ट भाषा में। द्विवेदीजी-कृत कालिदास की निरंकुशता बहुत करके व्याकरण-संबंधी और कहीं-कहीं शाब्दिक प्रयोगों पर विचार का निबंध-मात्र है। उनकी नैषध-चरित-चर्चा में समालोचना का कुछ रूप आया है, किंतु वह भी सर्वांग-पूर्ण नहीं है, क्योंकि वह भाषादि बाहरी बातों पर बहुत करके सीमित है, और भाव तक नहीं पहुँचता। हम लोगों ने हिंदी-नवरत्न तथा मिश्रबंधु-विनोद में बहुत-से कवियों की पृथक्-पृथक् समालोचनाएँ कुछ विस्तृत रूप में लिखीं, तथा केवल सम्मति न देकर, कवियों की रचनाओं से उदाहरण सामने रखकर अपने कथनों को पुष्ट करने का प्रयत्न किया। अनंतर श्यामसुंदरदास ने भी हिंदी-भाषा और साहित्य-नामक ग्रंथ में साहित्य-मर्मज्ञों की रचनाओं पर आलोचनाएँ लिखीं, जिनमें कहीं-कहीं मतभेद संभव है, किंतु अधिकतर स्थानों पर निष्पक्ष भाव से तथा शुद्ध समालोचना की गई है। इनमें विचारों के आधार-स्वरूप प्रमाण नहीं दिए गए हैं, जिससे सर्वमान्य कथन तो ठीक बैठते हैं, किंतु नवीन विचार निराधार-से हो जाते हैं। पंडित पद्मसिंह शर्मा ने बिहारी की भली-बुरी कैसी भी प्रशंसा करने का बीड़ा ही उठाया था। कोई भी प्रमाण कैसा भी शिथिल हो, किंतु शर्माजी के लिये देव कवि को निंद्य तथा बिहारी को स्तुत्य ठहराने को वह अलम् होता था। बिहारी पर जो आपने बड़ा ग्रंथ प्रचुर परिश्रम से बनाया, वह श्लाघ्य होने पर भी अनुचित विचारों के भारी समारोह से बहुत कुछ दूषित है। शर्माजी प्रबल लेखक तथा श्रमकर्ता आलोचक थे,

किंतु हम उन्हें समालोचक नहीं कह सकते, क्योंकि हठवाद उनके विचारों में कुछ अधिकता से है। हिंदी में उर्दू-कवियों का कुछ ज्ञान शर्माजी लाए थे। लाला भगवानदीन की समालोचना भी कुछ-कुछ हठवाद लिए हुए थी, किंतु शर्माजी के समान नहीं। लालाजी समालोचक न होकर वास्तव में टीकाकार थे।

कई महाशय अनेक साहित्यकारों तथा साहित्य पर समालोचना लिखते हुए कुछ विषयों पर पचास-पचास, साठ-साठ पृष्ठों के निबंध-से लिख जाते हैं, और अंत में उदाहरण की भाँति आलोच्य कवियों अथवा साहित्यिक समयों के रचयिताओं से दो-चार मोटी-मोटी बातें कहकर समझ लेते हैं कि उन्होंने विशिष्ट कवियों अथवा समयों के साहित्य की समालोचना कर डाली। वास्तव में यह समालोचना न होकर उन विषयों पर निबंध-मात्र होता है, जिनके कथन उन्होंने किए हैं। समालोचना में मुख्य वर्णन कवि का चाहिए, और उसी की रचना के साथ जहाँ कहीं अच्छे सिद्धांत निकलें, उनका सूक्ष्मता-पूर्वक विवरण लिख देना उचित है। जहाँ कविता का वर्णन मुख्य तथा सिद्धांतों का गौण होगा, वहाँ साहित्य-समालोचना समझी जायगी, किंतु जहाँ सिद्धांतों का प्रचुर कथन होकर कविता का सूक्ष्म वर्णन उदाहरण की भाँति दे दिया जायगा, वहाँ साहित्यिक समालोचना के स्थान पर रचना-कथित सिद्धांतों पर निबंध-मात्र मानी जायगी। बहुत-से समालोचक आजकल कवियों पर गोल-गोल शब्दों में सम्मति देते चले जाते हैं, किंतु उनका किसी कारण माला द्वारा समर्थन करते ही नहीं। कारण-शून्य सम्मति कथन को ही वे समालोचना कहकर सकारण कथन को समझाना-मात्र कहते हैं। ऐसे विचार प्रत्यक्ष ही थोथे हैं, क्योंकि कारण-शून्य कथनों का मानना-न मानना पाठक की विज्ञता पर अवलंबित है, न कि समालोचक के भाव-प्रकटीकरण पर।

इतिहास के विषय पर हमारे प्राचीन कवियों ने परिश्रम नहीं किया। पुराण, भारत आदि परम प्राचीन ग्रंथ इतिहास ही हैं, किंतु हिंदी में न होने से हमसे असंबद्ध हैं। हमारे प्राचीन हिंदी-कवियों ने खंड काव्य, रासो आदि रचे, जो ऐतिहासिक साहित्य होने पर भी विशुद्ध इतिहास नहीं हैं। इतिहास के लिये न केवल सत्य घटनाओं का कथन आवश्यक है, वरन् समय का शुद्ध एवं सालवार निरूपण उसका प्राण ही है। हिंदी में इतिहास-कथन भारतेंदु-काल से प्रारंभ हुआ। उन्होंने स्वयं कई ऐसे छोटे ग्रंथ तथा जीवन-चरित्र रचे। फिर भी साधारण कथनों के अतिरिक्त वे गवेषणात्मक न थे। हमारे सबसे प्राचीन इतिहास-लेखक महा-महोपाध्याय रायबहादुर पंडित गौरीशंकर-हीराचंद ओझा (१९२०) हैं, जो अजमेरवाले अजायबघर के क्यूरेटर हैं। इतिहास आपका न केवल शौक़, वरन् जीविका का भी साधन है। आपने कई अच्छे इतिहास-ग्रंथ रचे हैं, जैसा कि आपके विस्तृत विवरण में लिखा गया है। इतना फिर भी समझ पड़ता है कि अँगरेज़ों की भाँति भारतीय गण्य-मान्य महाशयों अथवा ग्रंथों को कल्पित प्रमाणित करने में आपको कुछ आनंद-सा आता है। लाला सीताराम ने अयोध्या का एक गवेषणा-पूर्ण उत्कृष्ट इतिहास हाल ही में लिखा है। जोधपुरवाले मुंशी देवीप्रसाद भी हमारे अच्छे गवेषणा-पूर्ण इतिहास-कार थे। लाला लाजपतराय ने कुछ दिन हुए, प्राचीन भारत का एक भारी इतिहास रचा। पंडित हरिमंगल मिश्र भी इतिहास-लेखक थे, जिनका रचनारंभ-काल पूर्व नूतन परिपाटी में आता है। इस समय के अन्य लेखकों में निम्न-लिखित सज्जनों के नाम गिनाए जा सकते हैं—हरिचरणसिंह (१९४७), हनुमंतसिंह (१९४७), रामचंद्र दुबे (१९५५), गंगाप्रसाद गुप्त (१९५७), कमलाप्रसाद (१९५६), बदरीप्रसाद त्रिपाठी (१९५६), सुंदरलाल

(१६५६) तथा श्रीरामनेत (१६६०)। इन सब महाशयों ने इतिहास-विभाग पर श्लाघ्य परिश्रम किया है। इनके विवरण आगे कुछ विस्तार से मिलेंगे। हम (श्यामविहारी मिश्र तथा शुकदेवविहारी मिश्र) ने दो भागों में प्राचीन भारत का इतिहास रचा। पहले खंड में प्रायः ५०० पृष्ठों में ६००० सं० पूर्व से ६०० सं० पूर्व तक का विवरण है, तथा दूसरे में ६०० संवत् पूर्व से मुसलमान-विजय तक का। आकार में दोनो भाग प्रायः बराबर हैं। इनके अतिरिक्त दो और छोटे-छोटे इतिहास-ग्रंथ हमने लिखे, तथा कई का संपादन किया।

जीवन-चरित्र-रचयिताओं में सबसे पहले बड़े आदर के साथ महात्मा श्रद्धानंद का नाम आता है। आप भारतेंदु-काल में थे। आपने कई परमोत्कृष्ट जीवन-चरित्र रचे। व्याख्याता भी आप बड़े ही उत्कृष्ट थे। शिवनंदनसहाय ने गोस्वामी तुलसीदास तथा भारतेंदु के बहुत ही श्रेष्ठ जीवन-चरित्र लिखे।

पूर्व नूतन परिपाटी-काल में अंबिकाप्रसाद त्रिपाठी (१६४६), गोपालवल्लभ (१६५२), श्यामसुंदरदास (१६५७) तथा सूर्यकुमार वर्मा (१६६०) के नाम आते हैं। उपर्युक्त प्रथम दो लेखक साधारण हैं, तथा सूर्यकुमार वर्मा ने इनसे बढ़कर जीवन-चरित्र बनाए हैं। श्यामसुंदरदास ने हिंदी-कोविद-रत्नमाला में ८० लेखकों के जीवन-चरित्र लिखे, किंतु वे छोटे-छोटे लेख हैं। बाबू व्रजनंदनसहाय (१६५६) ने चार बढ़िया जीवन-चरित्र रचे हैं। इस काल में इतिहास की अंग-पुष्टि तो अच्छी हुई, किंतु जीवन-चरित्रों में तादृश उन्नति न हो सकी। पुरातत्त्व-विभाग में भारतेंदु-कालवाले ओझाजी तो प्रस्तुत हैं, किंतु कोई नवीन भारी लेखक न हुआ।

अब भाषा-संबंधी उन्नति का कुछ कथन किया जाता है। हमारे

यहाँ पद्य-रचना तो प्राचीन काल से होती आई थी, किंतु गद्य का साहित्य में पहलेपहल प्रयोग ज्योतिरीश्वर ठाकुर ने किया। गद्योन्नति का कुछ कथन हमने प्रथम भाग के संक्षिप्त इतिहास प्रकरण में किया है। उन बातों को यहाँ दोहराना अनावश्यक है। उत्तरालंकृत काल में नज़ीर अकबराबादी, सदासुखलाल, इंशाअल्ला, लल्लूजी लाल और सदल मिश्र के समय से गद्य में खड़ी बोली का प्रचार बढ़ा। नज़ीर मुसलमान होकर भी कृष्ण-भक्त थे। सदासुखलाल ने बहुत करके भाव-व्यंजना में कुछ गंभीरता-युक्त परिष्कृत रूप में शुद्ध खड़ी बोली लिखी, किंतु उसमें पंडिताऊपन का कुछ पुट था। इंशाअल्ला ने प्रायः उसी समय उर्दू के समान विशुद्ध हिंदी लिखी, जिसमें भाषा-संबंधी अलंकारों का भी समावेश था। इनमें शब्दों के अतिरिक्त उर्दू-वाक्य-योजना भी थी। इनकी भावभंगी एवं शैली चमत्कृत अथच नवीनता मंडित थी, किंतु इनके लेखों में भारतीयता कम थी। इनकी चटक-मटक तथा हँसी-पूर्ण प्रणाली गंभीर विषयों के अयोग्य थी। लल्लूजी लाल व्रजभाषा-मिश्रित खड़ी बोली लिखते थे, और सदल मिश्र पूर्वी पुट लिए हुए शुद्धतर खड़ी बोली। लल्लूजी लाल ने अपनी मधुर, किंतु कुछ शिथिल भाषा से उर्दूपन बचाया। सदल मिश्र-वाली भाव-प्रकाशन की पद्धति स्तुत्य थी, किंतु फिर भी इस काल की भाषा अव्यवस्थित, अनियंत्रित, प्रांतिकता-युक्त अथच भाव-प्रकाशन में निर्बल थी। उसमें अनेकरूपता पाई जाती है। इनके पीछे ईसाई लेखकों ने विशुद्ध खड़ी बोली का प्रयोग किया। इनके शब्दों तथा ढंगों में उर्दू का बहिष्कार तथा हिंदीपन का आदर था। इन लोगों ने ग्रामीण शब्द तक लिखकर उर्दूपन बचाया। अनंतर राजा शिवप्रसाद, राजा लक्ष्मणसिंह, स्वामी दयानंद और भारतेंदु के समय आते हैं। इनमें से शिवप्रसाद ने खिचड़ी (उर्दू-मिश्रित) हिंदी चलानी चाही, किंतु शेष लेखकों के उद्योग से शुद्ध हिंदी ही

लोक-व्यवहृत हुई। भारतेंदु साधारण संस्कृत-मिश्रित शुद्ध खड़ी बोली लिखते थे, जिसमें संस्कृतपन या उर्दूपन की भरमार नहीं होती थी। भारतेंदु-काल में भाषा को शक्ति और दीप्ति प्राप्त हुई, तथा गद्य ने उत्कृष्ट रूप धारण किया। उनके पीछे प्रतापनारायण मिश्र की भाषा चुटकुलेबाज़ी लिए हुए ख़ूब उछलती-कूदती चलती थी, जिसमें आरोचन की मात्रा अच्छी थी। भारतेंदु-काल के उपर्युक्त कवियों और लेखकों ने प्रायः उन्हीं की-सी हिंदी का व्यवहार किया, जिसमें समय के साथ कुछ संस्कृतपन बढ़ता गया। महावीरप्रसाद द्विवेदी सबल लेखक हैं। श्रीधर पाठक बहुत करके पद्य-लेखक थे। पुरोहित गोपीनाथ भी उच्च भाषा का व्यवहार करते थे। पूर्व नूतन काल में अयोध्यासिंह उपाध्याय उत्कृष्ट गद्य-लेखक हैं। अन्य अनेकानेक श्रेष्ठ गद्य-लेखकों के नाम अन्य संबंधों में ऊपर आ चुके हैं, जिनमें भुवनेश्वर मिश्र (१६४६), रामनारायण मिश्र (१६४६), जैनेंद्र किशोर (१६५०), गदाधरसिंह (१६५१), गंगाप्रसाद अग्निहोत्री (१६५२) और नरदेव शास्त्री (१६६०) के भी नाम विशेषतया गिनाए जा सकते हैं। ग्रग-साहित्य के विषय में अंबिकादत्त व्यास तथा श्यामसुंदरदास ने गद्य-काव्य-मीमांसा अथच साहित्यालोचन में अच्छे प्रकार से प्रकाश डाला है। कामताप्रसाद गुरु (१६५०) ने व्याकरण पर अच्छा परिश्रम किया। आपने अँगरेज़ी के ढचर पर हिंदी-व्याकरण को चलाया है, जिसमें कई स्थानों पर संस्कृत के उन नियमों का भी वर्णन कर दिया है, जो हिंदी से संबद्ध हो गए हैं। इनके व्याकरण में भाषा के गूढ़ीकरण की ओर हठ नहीं है, किंतु संस्कृतपन की ओर रुझान है, तथा अनावश्यक विस्तार भी उसमें पाया जाता है। आपने भाषा-भास्कर से बहुत कुछ लाभ उठाया है, तो भी आपका श्रम श्लाघ्य है। छायावादी कविता का डोर अभी तक नहीं उठा है। वचनेश मिश्र

तथा रामनाथ ज्योतिषी (१९५१) ने नवीन विषयों पर कुछ रचना की। यही दशा उमरावसिंह कारुणिक (१९४६) की है। महावीर-प्रसाद (१९५०) ने वैद्यक के विषय पर ग्रंथ-रचना की, तथा गंगाप्रसाद एम्० ए० (१९५९) ने हिंदी तथा अँगरेज़ी में धार्मिक और ज्योतिषीय विषयों पर पांडित्य-पूर्ण ग्रंथ लिखे।

आगे से हमारे प्रसिद्ध तथा अप्रसिद्ध कवियों एवं लेखकों के पृथक् वर्णन चलते हैं। जिन सज्जनों के कथन मुख्य भाग में आए हैं, वे विशेषतया महत्ता-युक्त हैं। जिनके वर्णन चक्र में हैं, उनमें से भी बहुतेरे अथवा कुछ ऐसे ही होंगे, किंतु उन सबके ग्रंथों का पठन हम कहीं-कहीं भली भाँति नहीं कर सके हैं। यदि ऐसा होता, तो सभवतः चक्र के भी कुछ लेखक मुख्य भाग में आ जाते। समय लिखने में प्रत्येक कवि के रचनारंभ का ही काल लिखने का प्रयत्न किया गया है। प्रायः संवत् एक ही दिया गया है, जिससे आरंभ-काल का ही प्रयोजन लेना चाहिए।

सं० १९४५-६० के मुख्य रचयिताओं के विवरण

समय—संवत् १९४५

नाम—(२४६९) ईश्वरी (ईसरी) बगौरा (छतरपुर)।

जन्म सं० अनुमानतः १९२०।

कविता-काल—१९४५।

विवरण—चतुरभुज नंबरदार के कारिंदा थे, जैसा कि एक स्थल पर आपने कहा भी है—

"लंबरदार चतुरभुजजू के हम कारंदा आएँ।"

आपकी रचना छतरपुर में बहुत प्रसिद्ध है, और लोग इसे ग्रामों में बहुत गाते हैं। भाषा ठेठ बुंदेलखंडी है।

उदाहरण—

बखरी१ रइयत२ हैं भारे की,
दई पिया प्यारे की।
कच्ची भींत उठी माँटी की,
छई फूस चारे की। बखरी०
बेबंदेज३ बड़ी बेवाड़ा,
जेइ में दस द्वारे की। बखरी०
नहीं किवार किवरिया एकौ,
बिना कुची - तारे की४। बखरी०
'ईसुर'चाए निकारें जिदिनाँ,
हमें कौन उबारे५ की। बखरी०

जब से भई प्रीत की पीरा;
खुशी नहीं जो६ जीरा७।
कूरा माटी भओ फिरत है, इते उते मन हीरा;
कमती आ गइ रकत मास की, बहो द्रगन ते नीरा।
फूँकत जात बिरह की आगी, सूकत जात शरीरा;
ओई नीम में मानत ईसुर, ओई नीम की कीरा।

× × ×

हम पै बैरिन बरसा आई,
हमें बचा लेव माई।
चढ़ के अटा घटा ना देखें,
पटा देव अगनाई।

---

१. बखरी = घर। २. रइयत = रहियत, रहते हैं। ३. बेबंदेज = बिना रोक की। ४. कुची-तारे की = कुंजी-ताले की। ५. उबारे की = सुभीते की। ६. जो = यह। ७. जीरा = जियरा, जी।

बारादरी दौरियन१ में हो,
पवन न जावे पाई ।
जे द्रुम कटा छटा फुलवगियाँ,
हटा देव हरयाई ।
पिय जस गाय सुनाव न 'ईसुर'
जो जिय चावर२ भलाई ।

नाम—($\frac{२४६५}{अ}$) देवदत्त शर्मा (महिदेव), फ़रुख़ाबाद ।

जन्म-काल—सं० १९२४ ।

रचना-काल—सं० १९४५ के लगभग ।

ग्रंथ—(१) अंजासवादी, (२) सच्चा मित्र, (३) आर्यमन-रंजन (भजन-संग्रह), (४) शिक्षा-संबंधी पुस्तकें ।

विवरण—आपका जन्म पं० घासीराम त्रिपाठीजी के यहाँ फ़रुख़ाबाद ज़िले में हुआ । 'भारत-हितैषी' पत्र के आप जन्मदाता हैं । इसके अतिरिक्त 'दीनबंधु' तथा 'कुर्मी-समाचार' पत्रों के प्रकाशक एवं संपादक भी रहे हैं । कुछ काल 'कालाकाँकर' से 'हिंदी हिंदोस्तान'-नामक पत्र भी निकाला । कुल मिलाकर लगभग ४० ग्रंथ रचे हैं, ऐसा आपका कथन है ।

नाम—(२४६६) माधवराव सप्रे (पंडित) बी० ए० ।

यह रायपुर छत्तीसगढ़-निवासी हिंदी के बड़े उत्साही सुलेखक थे । आपका जन्म सं० १९२० में हुआ था । छत्तीसगढ़-मित्र-नामक एक समालोचना-पत्र पं० रामराव चिंचोलकर के साथ इनके संपादकत्व में निकला, जिसमें इन्होंने एक बार हमारे ग्रंथ लव-कुश-चरित्र की तीव्र आलोचना की । आपने 'हिंदी-केसरी'-नामक एक साप्ताहिक पत्र निकाला, और गद्य की कुछ पुस्तकें भी रचीं । आप बड़े सज्जन पुरुष

१. दौरियन = खिड़कियों में हो । २. चाव = चाहो ।

और हिंदी के उपकारी थे। आप महाराष्ट्र ब्राह्मण थे, और महाराष्ट्र-विद्या के रत्न हिंदी में लाने का प्रयत्न करते थे। कुछ दिन आपने हिंदी-ग्रंथमाला का भी प्रकाशन किया। हिंदी-दास-बोध और रामदास स्वामी की जीवनी, आत्म-विद्या, एकनाथ-चरित्र, भारतीय युद्ध तथा श्रीमान् तिलकजी के भारी ग्रंथ मराठी कर्मयोग (गीता-रहस्य) के अनुवाद आपने बड़े विशद किए। आप बड़े ही सौम्य-प्रकृति के साधु पुरुष थे। देश-भक्ति में कुछ उद्धत विचार रखने से कई बार आपको कष्ट उठाने पड़े थे। आप एक बार सम्मेलन के सभापति हुए। आपका देहांत १९८८ में हो गया।

नाम—(२४६७) लज्जाराम मेहता।

जन्म-काल—सं० १९२०।

कविता-काल—सं० १९४५ के लगभग।

विवरण—आपका जन्म बूँदी-राज्य में हुआ। आपने श्रीवेंकटेश्वर-पत्र का संपादन ७ वर्ष तक किया, और बूँदी में कई साल आप उच्च पदाधिकारी रहे। आपने अनेकानेक ग्रंथ रचे। धूर्त-रसिकलाल, हिंदू-गृहस्थ, आदर्श दंपति, बिगड़े का सुधार, अमीर अब्दुल रहमान, विक्टोरिया-चरित्र, राज-शिक्षा, बालोपदेश, विपत्ति की कसौटी, नवीन भारत आदि आपके ग्रंथों में प्रधान हैं। आप पत्रकार और उपन्यास-लेखक थे, तथा अच्छे गद्य-लेखक माने जाते हैं। विचार पुराने थे।

समय—संवत् १९४६

नाम—(२४६८) अयोध्यानाथ सरयूपारीण।

ग्रंथ—(१) राम-विनयमाला, (२) जानकी-विनयमाला, (३) भरत-विनयमाला, (४) लक्ष्मण-विनयमाला, (५) शत्रुघ्न-विनयमाला, (६) हनुमान-विनयमाला, (७) पितृविनय-

माला, (८) विनयावली, (९) राजयोगभास्कर, (१०) भास्कर-मोक्ष-प्रकाश।

जन्म-काल—१९२१।

विवरण—ग्रंथों के विषय नवीनता से दूर हैं। भक्ति-प्रधान रचना है।

नाम—(३४६९) उमरावसिंह कारुणिक, मेरठ।

ग्रंथ—(१) अनारकली, (२) कारनेगी और उसके विचार, (३) आत्म-कहानी, (४) मुग़लों के अंतिम दिन, (५) महाकवि अकबर, (६) उपयोगितावाद, (७) आधुनिक सप्ताश्चर्य।

विवरण—गद्य हिंदी-लेखक। 'ललिता' नाम्नी उच्च कोटि की मासिक पत्रिका का संपादन किया। नवीन प्रणाली के सुलेखक हैं।

नाम—(३४७०) बाघेली विष्णुप्रसाद कुँवरिजी।

यह महाशया रीवाँ-नरेश महाराजा रघुराजसिंहजी की पुत्री थीं। इनका विवाह जोधपुर के महाराज श्रीयशवंतसिंहजी के छोटे भाई महाराज श्रीकिशोरसिंहजी के साथ, सं० १९२१ में, हुआ। इनकी भगवद्भक्ति सराहनीय है। इन्होंने एक अच्छा मंदिर बनवाकर उसकी प्रतिष्ठा सं० १९४७ में की। महाराज किशोरसिंहजी का देहांत सं० १९५५ में हो गया। कुँवरिजी ने अवधविलास और कृष्णविलास-नामक दो ग्रंथ बनाए। कानपुर-रसिक-समाज की समस्याओं पर इनकी कविता प्रायः छपा करती थी, जो स्तुत्य एवं भक्ति-पूर्ण है। इनका शरीर-पात १९६५ के लगभग हुआ। इनकी गणना वर्तमान-काल के सुकवियों में है। विषयों की प्राचीनता-मात्र कुछ खटकती है।

उदाहरण—

छोड़ि कुल-कानि और आनि गुरु लोगन की
जीवन सु एक निज जाहि हित मानी है;

दरस-उपासी प्रेम-रस की पियासी जाके
पद की सुदासी कहा दीठि की बिकानी है।
श्रीमुख-मयंक की चकोरी ये सुखोरी बीच
ब्रज की फिरत है ह्वै भोरी दुख सानी है;
जिन्हे अति मानी चख पूतरी-सी जानी
हमसों ते रारि ठानी अब कूवरी सिठानी है॥ १ ॥
सुंदर सुरंग अंग-अंग पै अनंग वारौं,
जाके पद-पंकज पै पंकज दुखारो है;
पीत पट वारो मुख मुरली सँवारो प्यारो
कुंडल झलक सिर मोर-पंख धारो है।
कोटिन सुधाकर की सुखमा सुहात जाके,
मुख माँ लुभाती रमा रंभा-सी हजारो है;
नंद को दुलारो श्रीजसोदा को पियारो
जौन भक्त सुख सारो सो हमारो रखवारो है॥ २ ॥

समय—संवत् १९४७

नाम—(२४७१) अयोध्यासिंह उपाध्याय (हरिऔध)।

जन्म सं०—१९२२ (निज़ामाबाद, ज़िला आज़मगढ़)।

रचनारंभ—१९४७।

ग्रंथ—वेनिस का बाँका, रिपवान वंकल, नीति-बंधन, विनोद-वाटिका, नीति-उपदेश-कुसुम (आदि अनुवाद ग्रंथ, उपन्यास), ठेठ हिंदी का ठाट, अधखिला फूल, रुक्मिणी-परिणय नाटक, प्रिय-प्रवास (१७ अध्यायों में तुकांत-हीन खड़ी बोली काव्य), चोखे चौपदे, चुभते चौपदे, हिंदी-साहित्य का इतिहास, रस-कलश आदि प्रायः २९ रचनाएँ।

विवरण—आप वर्तमान काल के बड़े ही प्रतिभाशाली गद्य-लेखक तथा कवि हैं। आपको लोग कवि-सम्राट् कहा करते हैं। हमारे मित्र भी हैं। आपने कुछ अँगरेज़ी पढ़कर राज-सेवा भी की, और सदर क़ानूनगो के पद से पेंशन लेकर हिंदू-विश्वविद्यालय में अवैतनिक हिंदी-प्रोफ़ेसर के पद को सुशोभित किया है। संस्कृत-मिश्रित, साधारण, कठिन आदि कई प्रकार का गद्य सुगमता से लिखते हैं। भाषा के आप वास्तव में सिद्ध-हस्त लेखक हैं। बँगला तथा अँगरेज़ी से कई ग्रंथों का अनुवाद कर चुके हैं, जो उच्च कोटि के हैं। ठेठ हिंदी का ठाट भारतीय सिविल सर्विस में पाठ्य ग्रंथ रहा है। साहित्य-सम्मेलन के सभापति तथा पटना-विश्वविद्यालय में रामदीन-रीडरः भी रह चुके हैं। अंतिम पद पर आपने प्रायः १००० पृष्ठों का हिंदी-साहित्य का इतिहास रचा, जो उक्त विश्व-विद्यालय छपा रहा है। प्रिय-प्रवास महत्ता-पूर्ण ग्रंथ है, जो खड़ी बोली में महाकाव्य के ढंग पर बना है। दोनो चौपदे ग्रंथों में साहित्यिक रोचकता की कुछ कमी पड़ जाती है। आपके उप-न्यासों में भाषा का चमत्कार तो बहुत श्रेष्ठ है, किंतु कथानक का घुमाव वैसा बढ़िया नहीं आया है, जैसा इस महत्ता के लेखक से आशा की जा सकती थी। हिंदी को आपसे बड़ा लाभ पहुँचा है। ठेठ हिंदी के ठाट में भावुकता अच्छी है। प्रिय-प्रवास में भगवान् तथा राधिकाजी, दोनो लोकोपकारी व्यक्तियों के रूप में सामने आते हैं। शृंगारिकता हटी हुई है, तथा भगवान् के चरित्रों के वर्णन से प्राचीन साहित्यिक अत्युक्ति निकाली जाकर उनका आडंबर-शून्य असंभवनीयता से रहित रूप सामने आता है। संस्कृत के घुमावदार छंद लच्छेदार संस्कृत-मिश्रित वाक्यांशों से पूर्ण, खड़ी बोली में सफलता-पूर्वक व्यक्त किए गए हैं। प्राकृतिक वर्णनों का भी प्रयत्न किया गया है, किंतु कई स्थानों पर सूची-सी

गिनाई जाने लगी है। साहित्यिक स्वाद प्राचीन संस्कृत-महाकाव्यों के ढंग पर प्रदान किया गया है, किंतु भाषा तथा भाव कुछ ऐसे हैं कि कहीं-कहीं आरोचन की मात्रा यथावत् नहीं आती। गोकुलनाथ गोपीनाथ तथा मणिदेव के महाभारत में वर्णन इतना ऊँचा नहीं है, जितना कि प्रियप्रवास में, किंतु कथन-प्रणाली कुछ ऐसी है कि दस बार पढ़कर भी ग्रंथ की पुनरावृत्ति की ओर चित्त जाता है। यह बात प्रियप्रवास में क्या, वर्तमान काल के बहुतेरे उच्च ग्रंथों तक में नहीं मिलती। वर्णन-प्रणालियाँ हमारे यहाँ कई हैं। पहले हम वाल्मीकि, व्यास आदि की प्रथा देखते हैं, जो सीधा-सादा सांगोपांग कथन करती चली जाती है और तो भी पूरा आरोचन देती है। कालिदास की प्रणाली कुछ इस वर्णन-पूर्णता को लिए हुए है और कोरे साहित्य की ओर भी झुकती है। फिर भी उसमें आरोचन की मात्रा प्राचुर्य से है। श्रीहर्ष की प्रणाली में काव्यत्व कुछ बढ़ा हुआ तथा आरोचन घटा हुआ है। हमारे यहाँ गो० तुलसीदास भी वर्णन-पूर्णता पर विशेष ध्यान दिए हुए हैं; किंतु कोरे काव्यत्व को भी नहीं छोड़ते। केशवदास में कथा की कमी और पांडित्य की वृद्धि है, किंतु रामचंद्रिका के प्रथमार्द्ध में आरोचन बहुत खासा है। कैसा भी वर्णन हो, आरोचन काव्य का प्राण है। यद्यपि प्रिय-प्रवास ऊँची श्रेणी का ग्रंथ है, तथापि आरोचन ठेठ हिंदी के ठाठ में अधिक है। कुल मिलाकर हम उपाध्यायजी को सत्कवि मानते हैं।

नाम—(२४७२) कन्हैयालाल पोद्दार सेठ।

आपका जन्म जयपुर-राज्यांतर्गत रामगढ़ (सीकर) में सं० १९२८ में हुआ। यह मारवाड़ी-समाज के सुप्रसिद्ध सेठ गुरुसहायमलजी के पौत्र और मथुरा के प्रख्यात सेठ जयनारायणजी के पुत्र हैं। उक्त समाज में व्यापारी दृष्टि से सेठ ताराचंद-घनश्याम का कारो-

वार तथा घराना प्रतिष्ठा-पूर्ण है, और सेठ कन्हैयालालजी के जन्म से यह घराना विशेष कीर्ति-संपन्न हुआ है।

सेठजी अच्छे विद्वान् हैं। आपकी साहित्यिक सेवा हिंदी-संसार में महत्त्व-पूर्ण है। सं० १९४७ में 'भर्तृहरि-शतक' का सेठजी-कृत हिंदी-पद्यानुवाद प्रकाशित हुआ। इसके अतिरिक्त आपने 'गंगालहरी', 'हिंदी-मेघदूत-विमर्श', 'पंचगीत' आदि अनुवादित ग्रंथ बनाए। 'पंचगीत' से अभिप्राय श्रीमद्भागवत के कई अध्यायों के समश्लोकी अनुवाद का है। आपकी विशेष महत्त्व-पूर्ण रचनाएँ 'अलंकार-प्रकाश' और 'काव्य-कल्पद्रुम' हैं। इनसे आपकी साहित्यिक आचार्यता का परिचय मिलता है। सरस्वती मासिक पत्रिका में इनकी 'प्रेम-सरोवर', 'कोकिल', 'बंबई का समुद्र-तट' आदि स्फुट कविताएँ निकल चुकी हैं। 'महाकवि भारवि'-शीर्षक आपका लेख विद्वत्ता-पूर्ण समझा जाता है। यह बड़े गौरव की बात है कि अपने व्यापारी कार्यों में व्यस्त रहते हुए भी सेठजी ने हिंदी-साहित्य की महत्त्व-पूर्ण सेवा की है और कर रहे हैं।

उदाहरण—

अलि-पुंजन की मद गुंजन सों बन कुंजन मंजु बनाय रह्यौ ;
लगि अंग अनंग तरंगन सों रति रंग उमंग बढ़ाय रह्यौ।
बिकसे सर कंजन कंपित कै रज रंजन लै छिरकाय रह्यौ ;
चलि मंद सु-मंद प्रभंजन ये मकरंद दशो दिशि छाय रह्यौ।
नँदनंदन के स्मित आनन पास लगी रहै कान सदा भर जी ;
अधरामृत को रस पान करे ब्रजगोपिन सों न रहै बरजी।
कर जोरि कै तोहि प्रणाम करौं मुरली ! सुनु एक यही अरजी ;
मुरलीधर सों मम दीन दशा कहियो फिरि है उनकी मरजी।
उन्नत पीत उरोज लसैं, युग दीरघ चंचल दीठि विलोकित ;
गेह की देहरी पै स्थित ह्वै, पिय आगम के उतसाह प्रलोभित।

कंचन कुंभ कुसुंभ सजे पट कंचन बंधनवार सुशोभित ;
मंगल में उपचार किए बिन ही श्रम कंजमुखी समयोचित।

नाम—(२४७३) किशोरीलाल गोस्वामी।

वृंदावन-वासी इन गोस्वामीजी का जन्म सं० १९२२ में हुआ। आप संस्कृत तथा हिंदी के बहुत अच्छे पंडित थे। आपने कई ग्रंथ संस्कृत में, प्रायः १०० हिंदी-ग्रंथ स्फुट विषयों पर, ६५ हिंदी-उपन्यास लिखे, और उपन्यास मासिक पुस्तक बहुत दिन तक निकाली। लेखों में आपकी हिंदी में संस्कृत के शब्दों का बाहुल्य रहता है, तथा उपन्यासों में साधारण भाषा का। आपने प्रेमरत्न-माला-नाम्नी एक पद्य-रचना भी की है। इक्कीसवें हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के आप सभापति थे। १९८९ में आपका शरीरांत हो गया। आपके उपन्यास योरपीय आदि ग्रंथों पर भी अवलंबित हैं तथा कहीं-कहीं उनमें रसियापन की मात्रा कुछ बढ़ गई है। आपने उपदेशों पर अधिक ध्यान न देकर ऐसे उपन्यास लिखे हैं, जो संसार में प्रचलित खूब हों। कुछ दिन आपको उनसे चार-पाँच सहस्र की वार्षिक आय रही थी। गोस्वामीजी हमारे परमोत्कृष्ट गद्य-लेखकों में से थे।

नाम—(२४७४) गणेशविहारी मिश्र।

जन्म-काल सं० १९२२।

कविता-काल सं० १९४७।

विवरण—इनका जन्म संवत् १९२२ में इटौंजा में हुआ था। इनके पिता पंडित बालदत्त मिश्र प्रसिद्ध महाजन, ज़मींदार और कवि थे। इन्होंने बाल्यावस्था में हिंदी, संस्कृत और फ़ारसी पढ़ी, और संवत् १९३६ में इटौंजा में एक कपड़े की दूकान खोली, जो दस वर्ष तक चलती रही। सं० १९४६ में पिताजी ने अस्वस्थ होने के कारण घर का काम करना छोड़ दिया। उसी समय से दूकान उठाकर

यह घर का काम-काज सँभालने लगे। इनके बड़े पुत्र राजकिशोर अमेरिका से इंजीनियरी की शिक्षा प्राप्त कर कपड़े की मिलों में उच्च पद पर हैं। इनके दो विवाह आगे-पीछे हुए, पर दोनो स्त्रियाँ पंचत्व को प्राप्त हो गईं। इन्होंने मित्रों के आग्रह पर भी तीसरा विवाह नहीं किया। आपने देवकवि-कृत प्रेम-चंद्रिका, राग-रत्नाकर और सुजान-विनोद को टिप्पणी-समेत संपादित करके नागरी-प्रचारिणी सभा-ग्रंथमाला में प्रकाशित कराया। कुछ छंद भी इन्होंने बनाए हैं, पर इस ओर विशेष रुचि नहीं है। गद्य-रचना आप बहुत करते आए हैं। हिंदी-नवरत्न और मिश्रबंधु-विनोद अपने दो भाइयों के साथ आपने बनाए।

उदाहरण—

मथन लगे जब सिंधु देवदानव मिलि सारे,
कढ़े त्रयोदश रत्न सबै परभा अति धारे।
लियो सबन तिन बाँटि कढ़्यो तब विपम हलाहल,
लगे जरन सब लोक दूरि भाग्यो धीरज बल।
तब पान कियो जेहि विपम विष तीनि लोक तारन तरन,
सोइ आसुतोप संकट सकल हरहु संभु असरन सरन। १।
मन भावन छैल छबीलो लखौ इत राधिका प्रेम प्रभा सों सनी;
उत कान्ह बजावत बाँसुरिया दुहुँ ओरन सों सुपमा है घनी।
इत राधिका झूलत झूला भले, चमकैं जुत भूपण जासैं कनी;
जड़ी हीरन सों गहने पहने छबि देखिए जोरी अनूप बनी।

नाम—(२४७९) ठाकुरप्रसाद खत्री, काशी।

इनका जन्म सं० १९२२ में हुआ। आपने काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा में बहुत दिन काम किया, तथा बैपारी और कारबारी-नामक पत्र भी निकाला, जो बड़ा उपयोगी था। व्यापार आदि उपयोगी विषयों पर कई पुस्तकें लिखीं, और इसी प्रकार के बढ़िया लेख लिखने

पर सभा से पदक आदि भी पाए। आपके निम्न-लिखित ग्रंथ हमने देखे हैं—लखनऊ की नवाबी, हमारा प्राचीन ज्योतिष, करछा, सुघड़ दरजिन, मिस्ट्रीज़ कोर्ट ऑफ़् लंदन के कुछ अंश का अनुवाद और व्यापारिक कोश। आप एक सज्जन पुरुष तथा मित्र-वत्सल थे। चित्त की सफ़ाई आपमें आधिक्य से थी। आपकी रचनाओं में साहित्यिक गौरव पर ध्यान न होकर उपयोगिता पर था।

नाम—(२४७६) बालमुकुंद गुप्त।

जन्म-काल—सं० १९२२।

रचना-काल—१९४९।

विवरण—इनका जन्म सं० १९२२ में रोहतक-ज़िले में हुआ। इनको हिंदी-लेखन से सदैव बड़ी रुचि थी, और इन्होंने पत्रों के संपादन से ही अपनी जीविका भी चलाई। आपने सात वर्ष बंगवासी का संपादन किया, और फिर भारतमित्र के आप जीवन-पर्यंत संपादक रहे। रत्नावली नाटिका, हरिदास, शिवशंभु का चिट्ठा, स्फुट कविता, खेलौना आदि पुस्तकें भी रचीं। इनकी गद्य और पद्य-रचनाओं में सजीवता तथा मज़ाक़ की मात्रा ख़ूब थी, और वे बड़ी मनोरंजक होती थीं। होली के संबंध में ये टेसू आदि ख़ूब मार्के के बनाते थे। इनका शिवशंभु का चिट्ठा एक बड़ा ही लोक-प्रिय ग्रंथ है। गुप्तजी एक बड़े ही ज़िंदादिल लेखक थे तथा समालोचना भी अच्छी करते थे। इनका शरीरपात सं० १९६४ में हुआ।

उदाहरण—

हुए मारली पद पर पक्के, बराडरिक के लग गए धक्के।
बंगाली समझे पौ छक्के, होली है भइ होली है।
बंग-भंग की बात चलाई, काटन ने तकरीर सुनाई।
तब मुरली ने तान लगाई, होली है भइ होली है।
होना था सो हो गया भैया, अब न मचाओ तोबा दैया।

घर को जाओ लेउँ बलैया, होली है भइ होली है।
जैसे लिबरल तैसे टोरी, जो परनाला सोई मोरी।
दोनो का है पंथ अघोरी, होली है भइ होली है।

नाम—(२४७७) राधाकृष्णदास।

यह महाशय काशी के रहनेवाले वैश्य तथा भारतेंदु हरिश्चंद्र के फुफेरे भाई थे। इनकी मृत्यु २ एप्रिल सं० १९६४ में, केवल ४२ वर्ष की अवस्था में, हो गई। स्वयं भारतेंदु ने इन्हें, हिंदी लिखने को प्रोत्साहित्त किया था और धीरे-धीरे यह विशद हिंदी लिखने भी लगे थे। यह महाशय बड़े ही सज्जन पुरुष और हमारे मित्र थे। इनसे मिलकर चित्त प्रसन्न हो जाता था। इन्होंने नागरी-प्रचारिणी सभा की सदैव सहायता की। यह उसके कुछ समय तक मंत्री और ग्रंथमाला के संपादक रहे। हमारे बाबू साहब काव्य पर भी विशेष ध्यान रखते थे। बहुत-से प्राचीन कवियों का थोड़ा-बहुत हाल भी इन्होंने लिखा है। आपने भारतेंदुजी के कालचक्र, प्रशस्ति-संग्रह, सती-प्रताप, राजसिंह आदि अधूरे ग्रंथों को पूर्ण किया। इनके रचित ग्रंथों के नाम नीचे लिखे जाते हैं—

आर्य-चरितामृत, धर्मालाप, मरता क्या न करता, स्वर्णलता, बापा रावल, दुःखिनी बाला, निःसहाय हिंदू, सामयिक पत्रों का इतिहास, बाबू हरिश्चंद्र, सूरदास, नागरीदास और बिहारीलाल के संक्षिप्त जीवन-चरित, महारानी पद्मावती, राजस्थान केसरी नाटक, दुर्गेश-नंदिनी, महाराणा प्रताप आदि। इन्होंने नहुष-नाटक, सूरसागर और भक्त-नामावली का संपादन भी अच्छे प्रकार किया। इनका गद्य अच्छा होता था और पद्य भी यह साधारणतया अच्छा लिखते थे। इनके नाटक रुचिर हैं, पर उनमें कहीं-कहीं भारतेंदु के नाटकों की छाया आ गई है। बाबू साहब एक उत्कृष्ट लेखक और श्रमशील साहित्यिक पुरुष थे।

उदाहरण—

हे-हे वीर-सिरोमनि सब सरदार हमारे,
हे विपत्ति-सहचर प्रताप के प्रान-पियारे ;
तव भुज-बल सों मैं भयो रक्षा करन समर्थ,
मातृ-भूमि स्वाधीनता प्रबल शत्रु करि व्यर्थ।
अनेकन कष्ट सहि।

या प्रताप ने उचित कह्यो कै अनुचित भाखो,
पर स्वतंत्रता-हेत जगत-सुख तृन सम नाखो ;
ढाय महल खँडहल किए सुख सामान विहाय,
छानि बनन की धूरि को गिरि-गिरि में टकराय।
जनम-दुख झेलि कै।

नाम—(३४७८) शरच्चंद्र सोम।

इन्होंने बारह पंडितों द्वारा समस्त १८ पर्व महाभारत को, प्रति श्लोक अनुवाद कराके सं० १९४७ में प्रकाशित किया। यह ग्रंथ बड़े ही महत्त्व का है। इसकी भाषा भी सरल और सुहावनी है। काशी-नरेश का महाभारत छंदोबद्ध है, और कुछ संक्षेप से लिखा गया है, परंतु इसमें महाभारत के संपूर्ण श्लोकों का अनुवाद साधु भाषा में किया गया है। यदि इसमें अनुवादकर्ता पंडितों के नाम भी दे दिए जाते, तो कोई हर्ज न होता। इस तरह जान नहीं पड़ता कि कौन किसकी रचना है ? सोम महाशय ने यह काम बड़ा ही उत्तम किया कि भिन्न भाषा-भाषी होकर भी उन्होंने महाभारत-सरीखे भारी तथा लाभकारी ग्रंथ को हिंदी में लिखवाकर प्रकाशित किया। इसके लिये वह समस्त हिंदी जाननेवालों के धन्यवाद के पात्र हैं। उदाहरणार्थ हम थोड़ा-सा अनुवाद यहाँ पर देते हैं—

श्रीवैशंपायन मुनि बोले, हे राजा जनमेजय ! इस प्रकार कुरु-कुल-श्रेष्ठ पांडवों ने अपने संगियों के सहित प्रसन्न होकर अभिमन्यु का

विवाह किया, फिर रात्रि-भर सुख से अपने घर में रहे और प्रातःकाल होते ही राजा विराट की सभा में आए। वह राजा विराट की सभा मणियों से खिची हुई, फूल की मालाओं से सुशोभित और सुगंधित जल से छिड़की थी। उसी में सब राजाओं में श्रेष्ठ पांडव लोग आकर बैठे। उनके बैठते ही सब राजाओं से पूजित बूढ़े महाराज विराट और द्रुपद आसनों पर बैठे। उनके पश्चात् श्रीकृष्ण बैठे। द्रुपद के पास कृतवर्मा और बलदेव बैठे। राजा विराट के पास महाराज युधिष्ठिर बैठे। राजा द्रुपद के सब पुत्र, भीमसेन, अर्जुन, नकुल, सहदेव, प्रद्युम्न, सांब, अभिमन्यु और राजा विराट के महावीर पुत्र, ये सब एक स्थान पर बैठे। पांडवों के तुल्य रूपवान् और पराक्रमी द्रौपदी के पाँचों महावीर पुत्र मणिजटित सोने के सिंहासनों पर बैठे। जब उत्तम वस्त्र और आभूषणधारी राजा लोग अपने-अपने योग्य आसनों पर बैठ चुके, तब वह राजाओं से भरी सभा ऐसे शोभित हुई, जैसे निर्मल तारों से भरा आकाश सोहता है।

समय—संवत् १९४८

नाम—(२४७९) जगन्नाथदास रत्नाकर बी० ए० (वैश्य), काशी।

जन्म-काल—सं० १९२३।

कविता-काल—सं० १९४८।

विवरण—बहुत काल आप अयोध्या-नरेश के यहाँ निजी अमात्य (प्राइवेट सेक्रेटरी) रहे। आपने हिंडोला, समालोचनादर्श, साहित्य-रत्नाकर, घनाक्षरी-नियम-रत्नाकर और हरिश्चंद्र तथा उद्धव-शतक-नामक ग्रंथ रचे। कई वर्ष तक आपने 'साहित्य-सुधानिधि' नाम्नी मासिक पत्रिका का संपादन किया। आप व्रजभाषा के एक उत्कृष्ट कवि थे। बिहारी-रत्नाकर आपका अच्छा टीका ग्रंथ है।

गंगावतरण, काव्य पर आपको हिंदी ऐकेडेमी से ५०० रु० पुरस्कार में मिले। आप सूर-सागर को शुद्धता-पूर्वक संपादित करने में व्यस्त थे कि १६८६ में आपका शरीरांत हो गया। आपकी रचना पद्माकरी ढंग की समझी जाती है। उसमें पुराने प्रकार के साहित्यिक भाव प्राचुर्य से हैं। आपके छंद तथा भाव प्राचीन कवियों की शैली लिए हुए होते थे, किंतु ऐसे कथन और विचार प्राचीन काल से कई बार कहे जाने के कारण अब कुछ आरोचन-शून्य और फीके लगने लगे हैं। आपमें प्राचीन प्रथा का साहित्य-गौरव ख़ासा था, किंतु नवीनता की कमी से कुछ फीकापन झलक जाता था। हमारे प्राचीन मित्र थे और जब लखनऊ आते थे, तब हमसे प्रायः मिल लेते थे तथा देर तक बातें करते थे। आपके छंदों में उमंग की मात्रा पदमैत्री-युक्त अच्छी थी। गंगावतरण, हरिश्चंद्र आदि रचनाएँ सभ्य-समाज में आदर की दृष्टि से देखी जाती हैं। सूर और विहारी पर रत्नाकर-जी ने अच्छा परिश्रम किया था।

नाम—(३४८०) जंगलीलाल भट्ट (जंगली), पैंतेपुर, ज़िला सीतापुर।

रचना—स्फुट काव्य।

जन्म-काल—सं० १६२३।

समय—१६४८।

विवरण—यह सीतापुर में शिक्षक हैं। कविता सरस तथा उत्कृष्ट करते हैं। कोई ग्रंथ नहीं बनाया है, परंतु स्फुट छंद बहुत-से रचे हैं।

उदाहरण—

विलुलित अलकैं ललित भाल बाल मुख
बनक बिसाल महताबी दरसति है;
लोभी लंक लचनि नचनि चितवनि चख
चंचल तुरंग-सी सितावी दरसति है।

सौरभित फूल-सी अतूल सुख-मूल दुति
जंगली दुकूल मैं न दाबी दरसति है;
फाबी सित कंचुकी मैं उरज सहाबी आब
ऊपर अपूरब गुलाबी दरसति है।

नाम—(२४८१) देवकीनंदन खत्री, काशी-निवासी।

जन्म-काल—सं० १९१८ (मुज़फ़्फ़रपूर में)

कविता-काल—सं० १९४८ के लगभग।

विवरण—२४ वर्ष की अवस्था तक यह मुज़फ़्फ़रपुर एवं गया-ज़िले में रहे और इसके पीछे काशी में रहने लगे। इन्होंने जंगलों की अच्छी सैर की थी। अपने देखे हुए स्थानों एवं जंगलों का वर्णन इन्होंने अपने उपन्यासों में ख़ूब किया। इनके बनाए हुए चंद्रकांता, चंद्रकांता-संतति, नरेंद्रमोहिनी, कुसुम-कुमारी, वीरेंद्रवीर, काजर की कोठरी, भूतनाथ आदि उपन्यास परम लोकप्रिय एवं मनोहर हैं। इनके उपन्यास ऐसे रोचक हैं कि बहुत-से लोगों ने उन्हें पढ़ने ही को हिंदी सीखी। इन्होंने पंडित माधवप्रसाद के संपादकत्व में सुदर्शन-नामक एक मासिक पत्र भी निकाला था, पर वह बंद हो गया। इनकी देखा-देखी हिंदी में बहुत-से उपन्यास-लेखक हो गए हैं, और इस विभाग की अच्छी पूर्ति हुई है। इनके उपन्यासों में असंभव बातें बहुत रहती हैं, जो अनुचित हैं। इनकी भाषा बहुत सरल होती है और वह मनोहर भी है। इनके उपन्यासों में लोक-हित-साधन का बहुत विचार नहीं रहता। इनका शरीरपात हो चुका है। इनके पहले तिलिस्म, रूप बदलने से व्यक्तित्व का दिखलौवा बदलाव आदि का पूर्वरूप रेनाल्ड्स की पीतलवाली मूर्ति-नामक उपन्यास में है। ऐसे ही विचार कुछ अन्य योरपीय उपन्यासों में हैं। फ़िसाना-आज़ाद में ऐयारी का पूर्वरूप है। सं० १९५२वाले एक वैष्णवता-विवर्द्धक हिंदी के उपन्यास में ऐयारी बढ़ी हुई है। यह बहुत बड़ा ग्रंथ है।

फिर भी बाबू साहब ने चंद्रकांता तथा चंद्रकांता-संतति में तिलिस्म और ऐयारी को बहुत रोचक रूप से ऐसा बढ़ाया है, जैसा इनके पूर्ववर्ती लेखकों ने न कर पाया था। इस प्रकार के और भी बहुतेरे ग्रंथ इतरों ने बनाए, पर उन बूँदों भेंट न कर सके। भूतनाथ में तिलिस्म और घटनाओं के रहस्य इतने बढ़ गए हैं कि कोई घटना दृढ़ होती ही नहीं। भूतनाथ अधिकाधिक घटना-गोपन से बिल्कुल बिगड़ गया है। बाबू साहब ने इसका आदिम भाग ही लिखा भी था और पीछे का बिगड़ा हुआ भाग इतरों का है। चंद्रकांता-संतति इनकी सर्वोत्कृष्ट रचना है।

नाम—(३४८२) भोगवतीदेवी।

ग्रंथ—संतमत-प्रकाशिका।

मृत्यु-काल—सं० १९७२।

विवरण—यह मुंगेर-ज़िलांतर्गत गोगरी के बाबू संतरामजी की स्त्री थीं। इस समय इनके इकलौते पुत्र बाबू जयदेवरामजी बनेली-राज्य में एक उच्च कर्मचारी हैं। इनकी कविता भक्ति-रस की है।

उदाहरण—

विनय सुनहु मेरी मातु भवानी।
मैं अति दीन मलीन हीन मति, द्रवहु दुखित मोहिं जानी।
कृपा करहु भव पार उतारहु, देहु चरण गुण-खानी।
मुक्ति पदारथ तव चरणन में, पावहिं सुर, मुनि ज्ञानी।
पद-पंकज-रज देहु कृपा करि, निज किंकरि मोहि जानी।
शुंभ-निशुंभ को नाश कियो तुम देवन त्रास मिटानी।
हरहु सोच मोहिं पार लगावहु, दया करहु रुद्रानी।

नाम—(३४८३) रामदास गौड़ एम्० ए०, बनारस।

जन्म-काल—सं० १९३८।

रचना-काल—सं० १९४८।

ग्रंथ—(१) संक्षिप्त रामायण (अप्रकाशित), (२) स्वप्नादर्श, (३) राष्ट्रीय शिक्षावली (सात पुस्तकें), (४) हिंदी के ज्ञात ग्रंथों की सूची (अँगरेज़ी में), (५) भारी भ्रम (The Great Illusion का अनुवाद), (६) विज्ञान की हिंदी-उर्दू-रीडरें ।

विवरण—आप जाति के कायस्थ मुंशी ललिताप्रसादजी के पुत्र हैं । आपने शिक्षा-सेंट्रल हिंदू-कॉलेज, बनारस तथा म्योर सेंट्रल कॉलेज, इलाहाबाद में प्राप्त की । इन्होंने दस वर्ष की अवस्था ही में संक्षिप्त रामायण-नामक एक काव्य ग्रंथ, जो कि ऊपर दिया हुआ है, रचा । यह हिंदी-गद्य तथा पद्य दोनो के लेखक हैं । दर्शन, इतिहास, विज्ञान, साहित्य आदि विषयों में इन्होंने असाधारण ज्ञान प्राप्त किया है । आप एक कट्टर देश-भक्त तथा स्वतंत्रता-प्रेमी हैं । कायस्थ-पाठशाला, इलाहाबाद के रसायन-विभाग के प्रोफ़ेसर आप कई वर्षों तक रहे । हिंदू-विश्वविद्यालय, बनारस से इनका संबंध प्राच्य विभाग में रसायन के प्रोफ़ेसर के नाते बहुत समय तक रहा । आपकी रचना देश-भक्ति लिए हुए सुपाठ्य तथा सुंदर होती है । (श्रीयुत रघुवरदयालजी मिश्र द्वारा ज्ञात) ।

उदाहरण—

वंदे भारतवर्षमुदारम् ।

पावन आर्य भूमि मनभावन सरसावन सुख-सारम् ।
हिमगिरि सेत मुकुट सम भ्राजत, सुर प्रसून बरसावत ,
सरन दीप जिमि कमल चरन पर सागर पाद्य दिवावत ।
धमनी सिरा मनहुँ घन सरिता वहत अमिय की धारा ,
तैंतिस कोटि बसत सुर बन तरु रोमावली अपारा ।
गो, गज, बाजि, रतन, अंबर, धन, अन्न अमल जल पूरे ,
सुखद सघन वन, नगर मनोहर हरित सस्यमय रूरे ।
निज व्यवसाय-निरत सुचरित जन कलह कलुष तें न्यारे ,

सत्य सिपाह स्नेह की बेड़ी नहिं व्यभिचार निहारे।
देस-देस के प्रानी जीवत तेरी ही भुज छाया,
भए कनौड़े राखि सकत नहिं तव सहाय बिन काया।
देशकाल अरु पात्र चीन्ह के दान मुक्त कर दीजे,
लुटे न कोप, जुटे संपति, निज धर्म रहे सोइ कीजे।
नीच लुटेरे जो कहुँ ताकै तेरी दिसि तिरछौंहैं,
तैंतिस कोटि उठै निसंक भुज, तनैं वंक ह्वै भौंहैं।
आए धन के लोभ पाप तें बिनसे शत्रु घनेरे,
जनपद तेरोइ तुही प्रजापति, छत्र सीस इक तेरे।

नाम—(२४८४) शिवबिहारीलाल मिश्र।

जन्म-काल—सं० १९१७।

कविता-काल—१९४८ के लगभग।

विवरण—आपका जन्म संवत् १९१७ में इटौंजा-ग्राम में हुआ था। आपके पिता पंडित बालदत्त मिश्र बड़े प्रसिद्ध महाजन, ज़मींदार और कवि थे। आपने बाल्यावस्था में इटौंजा और फिर महोना में उर्दू की शिक्षा पाई और अंत में लखनऊ में रहकर अँगरेज़ी पढ़ी। एंट्रेंस पास करके नौ मास तक आपने एफ़्० ए० में शिक्षा पाई, पर इस समय आप कुछ ऊँचा सुनने लगे, सो क्लास में अध्यापकों का पढ़ाना भली भाँति न सुन पाते थे। इस कारण पढ़ने से आपका चित्त ऊब गया और आपने सरकारी नौकरी कर ली। थोड़े दिनों में वकालत पास करके संवत् १९४५ से आप लखनऊ में वकालत करने लगे। अपने इस काम से पैत्रिक संपत्ति बढ़ाने में आपने बड़ी सहायता दी और महाजनी के व्यापार को ज़मींदारी में बदल दिया। सं० १९५० में आप हैज़ा-रोग से बहुत पीड़ित हुए और आपके जीवन की कम आशा रही, पर ईश्वर ने अच्छा कर दिया। संवत् १९५४ में आपको कुछ मास खाँसी और ज्वर का

रोग।रहा, और एक बार छ मास समुद्र-तट पर वाल्टेर में रहना पड़ा, जिससे उस रोग से भी मुक्ति हो गई, परंतु श्वास की शिकायत कुछ चली ही जाती थी। आपका शरीरपात १६७४ में हो गया।

कविता की ओर पहले आपका ध्यान न था, पर पीछे से यह रुचि भी आपको हुई, और संवत् १६४८ के लगभग से आप रचना करने लगे।

उदाहरण—

झूमत हैं मद सों भरिकै मृग से पुनि चौंकि चहूँ दिसि जो हैं,
खंजन से उड़ि जात सबै थल मीन सपच्छ मनौ जुग सो हैं;
नूतन कंज समान विकास धरे चख ये सबको मन मो हैं,
पै उलटो गुन धारि सदा बनि बान समान हनै मन को हैं। १।

मीन मृग खंजन तुरंग सों चपलताई,
कंज दल ही सों लै सरूप मुद पायो है।
बेधकपनो है जौन अति अनियारो ताहि;
बानन सों लैके क्रूरताई उपजायो है।
स्यामता हलाहल सों मद सों ललाई पुनि,
चारु मतवारोपन लैकें छबि छायो है।
अमिय सों लैके सेतताई जग मोहन को;
बिधना जुगल इन नैनन बनायो है। २।

आपके एक पुत्र और दो कन्याएँ हैं। पुत्र लक्ष्मीशंकर मिश्र विलायत में पढ़कर अब लखनऊ में बैरिस्टरी करते हैं।

नाम—(२४८९) बदरीदत्त शर्मा, काशीपुर, नैनीताल।

जन्म-काल—सं० १६२४।

समय—सं० १६४६।

ग्रंथ—(१) दशोपनिषत् (अनुवाद), (२) विवेकानंद के व्याख्यान (भाषा), (३) अहल्या-संताप, (४) संस्कृत-प्रबोध,

(५) कर्म-योग, (६) मनुष्य का धर्म, (७) चरित्र-शिक्षा, (८) विचार-कुसुमांजलि, (९) विधवोद्वाह-मीमांसा, (१०) प्रबंधार्कोदय ।

विवरण—आपने कानपुर आर्य-समाचार का संपादन किया। कानपुर में आप अध्यापक और सबल लेखक थे। समाजी लेखकों में आप बहुन्मुखी दृष्टिवाले शास्त्रज्ञ हैं। इनके द्वारा हिंदी में प्राचीन शास्त्रों की ज्ञान-वृद्धि हुई है। आपका श्रम श्लाघ्य है।

नाम—(३४८९) बिहारीलाल जैन (बुलंदशहरी), बाराबंकी।

जन्म-काल—सं० १९२४।

रचना-काल—सं० १९४९।

ग्रंथ—(१) बृहत् जैन शब्दार्णव (जैन साइक्लो पीडिया, सं० १९५६)।

(२) अग्रवाल-इतिहास (सं० १९७८)।

(३) बृहत् विश्वचरितार्णव (अकारादि क्रम से कई भागों में तैयार हो रहा है)।

(४) श्रीजंबुकुमार-नाटक।

अपूर्ण {
(५) बृहत् हिंदी-शब्दार्णव।
(६) हिंदी-व्याकरण के पारिभाषिक शब्द।
(७) प्रकीर्णक कविता-संग्रह।
(८) लघु स्थानांगार्णव।
(९) विज्ञानार्कोदय-नाटक।
(१०) विश्वावलोकन।
}

(११) आश्चर्यजनक स्मरण-शक्ति।

(१२) अनमोल बूटी (निज-रचित उर्दू-पुस्तक का हिंदी-अनुवाद, १९७०)।

(१३) जैन-धर्म के विषय में अजैन विद्वानों की सम्मतियाँ, दो भाग।

(१४) हनुमान-चरित्र नावेल भूमिका (हिंदी-अनुवाद)।

(१५) चतुर्विंशति जिन पंच कल्याणक पाठक (एक प्राचीन सुप्रसिद्ध जैन कवि की कृति का संपादन)।

(१६) अनमोल विधि, नं० १-२।

(१७) उपयोगी नियम।

(१८) २४ जैन तीर्थंकरों के पंच कल्याणकों की शुद्ध तिथियों का तिथि-क्रम से नक्षत्रों-सहित शुद्ध तिथि-कोष्ठ।

विवरण—आप सूर्य-वंशोद्भव मीतल गोत्रीय अग्रवाल जैन श्रीयुत लाला देवीदासजी के सुपुत्र हैं। आपकी जन्मभूमि बुलंद शहर है। आप एंट्रेंस तथा सी० टी० परिक्षाएँ पास कर चुकने पर आज प्रायः गत ३० वर्ष से अध्यापक के नाते गवर्नमेंट-सर्विस कर रहे हैं। इस समय आप गवर्नमेंट-हाईस्कूल, बाराबंकी में असिस्टेंट मास्टर हैं। यह महाशय बड़े साहित्यानुरागी तथा जैन-समाज के एक सुप्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित विद्वान् हैं। आप हिंदी, उर्दू, फ़ारसी, अँगरेज़ी आदि भाषाओं का अच्छा परिज्ञान रखते हैं। ऊपर दिए हुए ग्रंथों के अतिरिक्त योगसार, प्रश्नोत्तरी स्वामी शंकराचार्य, भोजप्रबंध-नाटक, नीति-दर्पण, भर्तृहरि-नीतिशतक आदि संस्कृत-ग्रंथों का उर्दू में आपने अनुवाद किया है।

उदाहरण—

(प्रकीर्ण कविता-संग्रह से)

सम दिवस की संपदा अवगुण लावे सात,
काम, क्रोध, मद, लोभ, छल तथा वैर अरु बात।
पर यदि पर-उपकार में धन खर्चे मन खोल,
सस गुणन-कर मुक्त जो, सो नर रत्न अमोल।

क्षमा दया औदार्य अरु मार्दव मन संतोष,
आर्यव शांती-सहित जो बी० एल्० वह निर्दोष।
अशुभ कर्म अँधियार में साथ देइ कुइ नाँहि,
बी० एल्० छाया मनुज को तजे अँधेरे माँहि।
बहु सुनबो कम बोलबो, यह है परम विवेक,
बी० एल्० यों विधि ना रचे, कान दोय जिभ एक।
कड़े वचन तिहुँ काल में सज्जन बोलत नाँहि,
बी० एल्० यों विधि ना रचे हाड़ न जिह्वा माँहि।

नाम—(३४८७) भुवनेश्वर मिश्र।

यह दरभंगा-निवासी हिंदी-गद्य के एक प्रतिष्ठित लेखक थे। आपका जन्म सं० १९२४ में हुआ। आपने अनेकानेक उत्कृष्ट लेख कई पत्रों में छपवाए और कवि-परिचय, कवि-सोपान, परलोक, घराऊ घटना, बलवंत-भूमिहार आदि कई ग्रंथ रचे, जिनमें घराऊ घटना हमारे देखने में आया है। यह स्वभावोक्ति एवं हास्यरस-पूर्ण ग्रंथ है। मिश्रजी की लेखन-शैली बड़ी विलक्षण एवं चमत्कारिक है। यह महाशय दरभंगा में वकालत करते थे। आप चंपारन-चंद्रिका तथा हिंदी बंगवासी के संपादक भी रह चुके हैं।

नाम—(३४८८) रामनारायण मिश्र, काशी।

ग्रंथ—जापान-दर्पण।

जन्म-काल—सं० १९२४।

विवरण—आप हिंदी के सुलेखक हैं। आपने बहुत दिन तक शिक्षा-विभाग में डिप्टी-इंस्पेक्टरी के पद पर नौकरी की। इस समय आप हिंदू-यूनिवर्सिटी के स्कूल में हेडमास्टर हैं। आप हिंदी का बहुत काम कर रहे हैं। आपने और भी हिंदी की कुछ पुस्तकें लिखी हैं। हाल ही में अपने 'योरप-प्रवास' पर एक अच्छी-सी पुस्तक दो अन्य महाशयों के साथ लिखी है।

नाम—(२४८६) रामेश्वरबख़्शसिंह ठाकुर।

यह बड़े ज़मींदार परसेंहडी सीतापुर के थे। आपका जन्म सं० १६२४ में परसेंहडी में ठाकुर बेनीसिंह के यहाँ हुआ। आपके पिता अच्छे शिव-भक्त और हिंदी-साहित्य के ज्ञाता थे। हमारे ठाकुर साहब ने हिंदी के अतिरिक्त संस्कृत और उर्दू भी पढ़ी। आपने हिंदी-काव्य के तीन ग्रंथ रचे, अर्थात् साहित्य-श्रीनिधि, सोरठा-शतक और स्फुट काव्य। हिंदी में आपका उपनाम श्रीनिधि था। आपने उर्दू-ग़ज़लें और हिंदी में बहुत-सी गाने की चीज़ें भी रचीं। गान-विद्या में आपको अच्छा बोध था। आप बड़े उदार और सज्जन पुरुष थे। आपके छंद अनुप्रास-पूर्ण और उत्कृष्ट हैं। थोड़े दिन हुए आपका शरीर-पात हो गया।

उदाहरण—

श्रीनिधिजू मानुख महीपन की कहै कौन,
जहाँ देवराज के-से चँवर ढरयो करैं,
ब्रह्मा विष्णु रुद्र-से परे हैं चरणांबुज मैं,
ऋषि-मुनि जाको ध्यान उर मैं धरयो करैं।
ऐसी आदि शक्ति मातु सोहति सिंहासन पै,
जाके रूप आगे रमा रति हू डरयो करैं;
द्यौस निसि भानु सित भानु जाकी फेरी करैं,
चेरी सम ऋद्धि-सिद्धि टहल करयो करैं। १।

राजती पताकी बेस अजब कताकी प्रभा,
हेरि हरिता की हरी हरित लता की है;
पन्नग सुता की और नर बनिता की कहा,
अन्य समता की है न काहू देवता की है।
जगतपिता की बाम अंगिनी सुनैमिष में,
श्रीनिधि को दाइनी प्रकास कविता की है;

सुभ सुचि ताकी दीह दुति सविता की नहीं;
ऐसी छवि ताकी जैसी मातु ललिता की है। २।

अँगराय प्रभा भरी ओछे उरोज महारस के नद बोरै लगी;
सखियान सों सैनन बैनन मैं कछु चातुरी कै चित चोरै लगी।
नृप श्रीनिधि भावती भाग भरी लवु लाजन सों दृग जोरै लगी;
मृदु मंद हँसी सों नसीली चितै दिन द्वै तै पियूष निचोरै लगी। ३।

धन संपति कुल काय श्रीनिधि लहि नहिं गरब गहु;
बढ़ि कै ज्यों घटि जाय समौ परे ससि बढ़ि घटै। ४।

श्रीनिधि यों छवि देहिं अँखियाँ अलकन के तरे;
खंजरीट गहि लेहिं मदन वधिक जनु जाल लै। ५।

यों कानन के तीर नैन कोर कज्जल-कलित;
कढ़ी कलंक लकीर श्रीनिधि मानहुँ चंद बिच। ६।

कैधौं बेलि सुंदर सिंगार सुधा सींची
कैधौं खींची विधि रेख जोबनागम सदन तैं;
कैधौं धरी नीलम छरी उरज नाभि मध्य
उपटी किधौं या बेनी पीठि की हदन तैं।
श्रीनिधिजू पाँति कै पिपीलिका बनायो
कैधौं मंत्र शिव मदन चलायो है कदन तैं;
युगुल उरोज बीच राजी रोमराजी
किधौं कढ़त सु पन्नगी पिनाकी के सदन तैं। ७।

नाम—(२४६०) सीताराम उपाध्याय, पिलकिछा, जौनपुर।

जन्म-काल—सं० १९२४।

ग्रंथ—चैतन्य-चंद्रोदय, (२) बामा-मनरंजन, (३) नाम-प्रताप, (४) शृंगारांकुर, (५) काव्य-कलापिनी, (६) मंडली-मंडन, (७) रंभा-शुक-संवाद, (८) चैतन्य-चंद्रिका, (९) पूर्ति-प्रमोद ७ भाग, (१०) पूर्ति-प्रभाकर।

उदाहरण—

यौवन रूप अनूपम पायकै क्यों चलती हो इती इतरानी;
नाहक याहि गँवाइए ना फिरि ऐसो समै मिलिहै न सयानी।
प्रेम-पयोधि में पानि पखारि ले ज्यों बहती दरयाव के पानी;
हौस पुराइ ल्यौ जा जिय की हँसि-बोलि-बुलाइ मनोहर बानी।

जा दिन तें तेरी तरुनाई यह आई बीर कहर मचाई हाय सहर सहर है;
गैल-गैल देखिबे को छैल ललचाए रहैं घूमत दिवाने बने ठहर-ठहर है।
भूले ना हिये में यह नजर नुकीली पड़ी घड़ी छिन पल दिन पहर-पहर है;
गोलन कपोलन पै अधर अमोलन पै गजब गुराई रही लहर-लहर है।

नाम—(२४९१) सुखराम चौबे (कवि गुणाकरजी), ग्राम रहली, ज़िला सागर, (मध्य-प्रांत)।

जन्म-काल—सं० १९२४।

कविता-काल—सं० १९४९ के लगभग।

ग्रंथ—(१) वर्ण-प्रबोध, (२) गीत-प्रबोध, (३) लिपि-प्रबोध, (४) महिला-गान-माला (तीन भाग), (५) व्यायाम-पुस्तक, (६) हिंदी-प्रवेशिका (दो भाग), (७) कान्यकुब्ज-दर्पण, (८) 'स', 'म' का झगड़ा, (९) पानी-पंचक, (१०) तुलसी-महिमा (अमुद्रित), (११) तुलसी-कृत रामायण (समालोचनात्मक ग्रंथ, अमुद्रित)।

विवरण—आप कान्यकुब्ज ब्राह्मण पं० गणेशप्रसादजी चौबे के पुत्र हैं। आप सुकवि ही नहीं, वरन् सुयोग्य वक्ता तथा लेखक भी हैं। आपकी रचनाएँ विशेषतया 'बाल-साहित्य, वीर-साहित्य, हास्य-रस, नीति, प्रीति आदि विषयों से संबंध रखती हैं। प्रायः 'गुणाकर' उपनाम से कविता की है। आपके काव्य-गुरु एवं विद्या-गुरु सागर-निवासी पं० जगन्नाथप्रसादजी थे। इस समय यह महाशय पेंशन प्राप्त

कर जीवन व्यतीत कर रहे हैं। [पं० रामनाथ शुक्ल, मॉरिस-कॉलेज, नागपूर द्वारा ज्ञात]।

उदाहरण—

हमारी उनमें भक्ति महान।
सहज प्रसन्न वदन है जिनका, तन है तेज निधान,
पुष्ट बलिष्ठ, साहसी हैं जो कर्म-वीर व्रतवान।
सरल, उदार, सदय, संतोषी, क्षमाशील, सज्ञान,
कहे हुए को पलट न जाने, जौं लौं तन में प्रान।
मिलें सबों से उर से उर ला, तजें घृणित अभिमान,
भाषा, भूमि, भूप, भगवत के, सच्चे भक्त जहान।
रहे लक्ष पर-हित पै जिनका जिन्हें स्वहित इच्छा न,
कहे 'गुणाकर' जिन्हें हृदय से दें सज्जन सम्मान।

नाम—(३४९२) हनुमंतसिंह रघुवंशी क्षत्रिय।

जन्म-काल—सं० १९२४।

आप राजपूत ऐंग्लो-ओरियंटल-प्रेस के अध्यक्ष और हिंदी के एक सुयोग्य एवं प्रसिद्ध लेखक हैं। आपके पिताजी ठाकुर गिरिवरसिंह भी हिंदी के अच्छे कवि तथा वक्ता थे। इनके चचेरे भाई ठाकुर उदयवीरसिंहजी अलीगढ़ के प्रसिद्ध वैरिस्टर हैं। आपका जन्म-स्थान चांदोख, ज़िला बुलंदशहर है। कुछ काल तक यह भिनगा-नरेश श्रीराजा उदयप्रतापसिंहजी के यहाँ एक अच्छे पद पर थे। आपके बनाए प्रायः २२ ग्रंथों में मेवाड़ का इतिहास, क्षत्रिय-कुल-तिमिर-प्रभाकर, महाभारत-सार तथा वीर बालक मुख्य हैं। महाराष्ट्र-केसरी शिवाजी, चरित्र-चंद्रिका, गृहिणी-कर्तव्य-दीपिका, अभिमन्यु आदि का आपने संपादन भी किया है। आपके विषय स्तुत्य हैं तथा लेखन शैली श्लाघ्य है।

समय—संवत् १६५०

नाम—(२४६३) अर्जुनलाल सेठी।

ग्रंथ—महेंद्रकुमार-नाटक।

आप जयपुरवासी खंडेलवाल जैन हिंदी के परम प्रेमी हैं। जैन-समाज में हिंदी की प्रतिष्ठा के लिये आपने बहुत कुछ उद्योग किया है। आजकल राजनीति में विशेष भाग लेते हैं, जिससे आपको कई बार कष्ट भी उठाने पड़े हैं। आप एक प्रसिद्ध देश-प्रेमी हैं।

नाम—(२४६४) ऋषिदेव ओझा।

जन्म-काल—सं० १६२५।

रचना-काल—सं० १६५०।

ग्रंथ—(१) सीता-स्वयंवर, (२) इश्क़-ख़ंजर, (३) रामचरित्र, (४) योगानंद-तरंगिणी, (५) ज्ञान-प्रभाकर, (६) मेघनाद-वध-नाटक, (७) घायल माता-नाटक

विवरण—आप हुसेपुर ज़िला सारन-निवासी कान्यकुब्ज ब्राह्मण पं० कृष्णदेव ओझा के पुत्र हैं।

नाम—(२४६५) कनकलता, दतिया।

जन्म-काल—सं० १६२५।

ग्रंथ—(१) हित-चरित्र-तीर्थ-यात्रा, (२) वन-यात्रा, (३) व्रजभूषणघन-चालीसी, (४) रसिक-विनोद, (५) पद।

विवरण—राधावल्लभी। दतिया-नरेश महाराजा भवानीसिंहजी की खवासिन थीं।

नाम—(२४६६) कामताप्रसाद गुरु, सागर।

जन्म-काल—सं० १६३२।

ग्रंथ—भाषा-वाक्य-पृथक्करण, हिंदी-व्याकरण।

विवरण—आजकल जबलपुर में निवास करते हैं। अच्छे व्याकरण-कार हैं।

उदाहरण—

उदय अस्त में एकसा है जिसका व्यवहार ;
यही मित्र सूरज-मुखी कर सकता है प्यार।
ज्ञान, द्रव्य, यश, स्वार्थ की है जिसमें भरमार ;
बसे हुए उस हृदय में कहाँ बसेगा प्यार।

नाम—(२४९७) गौरीशंकर गुरु (कवींद्र), दतिया।

जन्म-काल—सं० १९२० (पद्माकर-वंशी)।

रचना-काल—सं० १९५० के लगभग।

ग्रंथ—(१) प्रताप-पच्चीसी, (२) कीर्ति-पचासा, (३) कवित्त-रामायण, (४) विश्व-विलास (नाटक)।

विवरण—आप अत्रिगोत्रीय द्राविड़ ब्राह्मण कविवर पद्माकरात्मज पं० मिहीलालजी के पौत्र हैं। आपके पिता पं० लक्ष्मीधर (श्रीधर) जी भी एक असाधारण कवि हो गए हैं। अपने पिताजी की भाँति आप भी दतिया के राजकवि के पद को सुशोभितकर रहे हैं। इनके पूर्वजों का, विशेषतया पिताजी का काव्य-शक्ति के नाते बुंदेलखंड की प्रायः समस्त रियासतों में विशेष सम्मान रहा। वर्तमान दतिया-नरेश श्रीलोकेंद्रबहादुर गोविंदसिंहजू देव ने इनके 'विश्व-विलास'-नामक नाटक पर प्रसन्न होकर इन्हें कवींद्र की उपाधि एवं राज्य-सम्मान प्रदान किया है। राज्य-कार्यों में भी आपका मान है। कवि होने के अतिरिक्त आप धर्मोपदेशक भी हैं, और इसी कारण आपके नाम के साथ 'गुरु'-शब्द संलग्न हो गया है। वास्तव में आपकी कविता-शक्ति आपके कुल की संपत्ति है। कहा जाता है कि कवींद्रजी के निजू पुस्तकालय में पद्माकरजी आदि पूर्व कवियों के कई उत्तमोत्तम अप्रकाशित ग्रंथ संगृहीत हैं। ऊपर दिए हुए आपके ग्रंथों में से आख़िरी दो ग्रंथ अभी अप्रकाशित रूप में हैं। आपकी साहित्य-रचना पद्माकरी शैली पर श्लाघ्य है।

उदाहरण—

(विश्व-विलास)

कलित कलिंदी कूल कुंजन कंदबन की,
अंबन की लतिका लुनाई छाह बट की ;
दारुन तपन ताप ग्रीषम की भीषम में,
बैठे तहाँ आनँद अनूप छवि नट की।
राधे मुख-इंदु पै विलोकि स्वेद बिंदु प्यारो,
करत समीर धीर लैकै पीत पट की।
काहू दल बीज कढ़े तरुन मरीचि तहाँ,
लटक छबीलो छाँह छावत मुकुट की।

नाम—(३४९८) चंद्रकला बाई, बूँदी।

समय—सं० १९५०

ग्रंथ—(१) करुणाशतक, (२) रामचरित्र, (३) पदवी-प्रकाश, (४) महोत्सव-प्रकाश, (५) पत्रों की प्राचुर्य से समस्या-पूर्ति।

विवरण— यह कविराज गुलाबसिंहजी की दासी-पुत्री कविता अच्छी करती हैं।

उदाहरण—

सागर धरम को उजागर प्रवीन महा,
परम उदार मन जन सुख टारनो ;
गुन रिझवार कवि कोविंद निहालकर,
बैरी मद गार उपकार उर धारनो।
चंद्रकला कहै रनधीर पर पीरटार,
जस बिसतार कर जग सुख सारनो ;
मारवाड़-नाथ सरदारसिंह सील-सिंधु,
आनँद को कंद दीन दारिद बिदारनो।

नाम—(३४९९) जगन्नाथ चौबे (माथुर), बूँदी।

जन्म-काल—सं० १९२८।

कविता-काल—सं० १९५०।

ग्रंथ—(१) अलंकार-माला, (२) रामायण-सार, (३) माथुर-कुल-कल्पद्रुम, (४) शिक्षा-दर्पण, (५) यमुना-पचीसी।

विवरण—यह सुकवि बूँदी-दरबार के आश्रित कवि ज्ञारसीराम के पुत्र हैं।

उदाहरण—

भूमि करयो अंबर दिगंबर तिलक भाल,
विप्र उपवीत करयो यज्ञ के हवन मैं;
माथुर कहत सुरनाथ सुरभोग करयो,
वाहन बनायो बिधि आपने गवन मैं।
विस्व को सिंगार भयो सुखमा अपार धरि,
दौस निसि बाढ़े तऊ छबि की छवनि मैं;
बूँदीनाथ प्रबल प्रतापी रघुवीरसिंह,
तेरो जस आवत न चौदहौ भुवन मैं। १।

नाम—(३५००) जैनेंद्रकिशोर।

ग्रंथ—(१) कमलिनी, (२) खगोल-विज्ञान, (३) मनोरमा, (४) सोमा सती, परख आदि।

विवरण—आप गद्य के सुलेखक, आरा के प्रसिद्ध ज़मींदार अग्र-वाल जैन हैं। कई छोटी-बड़ी कथाएँ भी लिख चुके हैं। नामी उपन्यास-लेखक हैं। परख पर आपको हिंदुस्तानी एकेडेमी से पुरस्कार मिला है।

नाम—(३५०१) भगवानदास बाबू (वैश्य)।

जन्मकाल—१९२५।

विवरण—आप काशी-निवासी प्रसिद्ध विद्या-प्रेमी एक परम प्रसिद्ध

पुरुष हैं। आप प्रथम तीन वर्ष तक तहसीलदार तथा चार वर्ष तक डिप्टी-कलेक्टर रहे। फिर आपने १९७४ में इस्तीफ़ा देकर सेंट्रल हिंदू-कॉलेज का स्थापन तथा संवत् १९८० तक उसी का संवर्धन किया। आप उसी कॉलेज में सनातन-धर्म पर व्याख्यान भी दिया करते थे। तत्पश्चात् काशी-विश्वविद्यालय सोसायटी के उपमंत्री एवं विश्वविद्यालय के कोर्ट, कौंसिल, सेनेट तथा सिंडीकेट के सदस्य रहे। संवत् १९७८ में आप हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के सभा-पति थे। आपने धार्मिक तथा आध्यात्मिक विषयों पर अँगरेज़ी एवं हिंदी में कई पुस्तकें लिखीं। सामाजिक सुधार के भी आप पक्षपाती हैं। हिंदू-धर्म पर आपके ग्रंथ बहुत विद्वत्ता-पूर्ण हैं। आप भारी विद्वान्, रईस और धार्मिक पंडित हैं।

नाम—(३५०२) भवानीप्रसाद पुरोहित।

जन्म-काल—१९२५।

विवरण—शिक्षा-विभाग-संबंधी बहुत-सी पाठशालोपयोगी पुस्तकें आपने लिखी हैं। आप दुबे कान्यकुब्ज ब्राह्मण पं० बिहारीलाल के प्रपौत्र तथा पं० बालमुकुंद के पुत्र हैं। शिक्षा-विभाग मध्यप्रांत में आपने स्वयं तथा आपके पिता-पितामह ने भी नौकरी की।

नाम—(३५०३) भागवतप्रसाद (भानु), हरदी गाँव, रीवाँ-राज्य।

जन्म-काल—सं० १९२४।

कविता-काल—सं० १९५० के लगभग।

ग्रंथ—नगर-दर्शन (नाटक)।

विवरण—आप हिंदी तथा उर्दू के अतिरिक्त अरबी और फ़ारसी के भी ज्ञाता थे। कहा जाता है कि क़ानून में भी इन्होंने अच्छा ज्ञान प्राप्त किया था। यह महाशय हमें श्रीयुत भानुसिंह बघेल, रीवाँ द्वारा ज्ञात हुए हैं। कविता आपकी अच्छी है।

उदाहरण—

है नभ में क्या घटा की छटा छुए भानु नए उनए घन श्यामा ;
नीचे निहारिए हार पहार में है बरसा के बहार की सामा ।
वाहवा कैसा समै है सुहावना शाम को सावन को अभिरामा ;
देखिए ना यह सामा के खेत हैं देत हैं कैसे कबूतर कामा ।

नाम—(२५०४) महावीरप्रसाद मालवीय, गोपीपुर, ज़िला मिर्ज़ापुर ।

जन्म-काल—सं० १६२५ ।

ग्रंथ—(१) अभिनव विश्रामसागर, (२) रामरसोदधि, (३) रसराजमहोदधि वैद्यक, (४) बाल-तंत्र वैद्यक, (५) होली-बहार, (६) बरसा-बहार, (७) मानस-प्रबोध, (८) वीर निबंद्ध वैद्यक, (९) वैद्य-दिवाकर ।

विवरण—आप कुछ दिन प्रियंवदा मासिक पत्रिका के संपादक भी रहे । वैद्यक पर आपके ग्रंथ अच्छे हैं । आप पं० वैद्यनाथ मिश्र के पुत्र थे । मगध की शिक्षा-प्रणाली के अनुसार बारह वर्ष की अवस्था तक अमरकोश, सिद्धांतकौमुदी, रघुवंशादि काव्य आपको घर पर ही पढ़ाए गए । आगे आप संस्कृत-काव्य के अच्छे मर्मज्ञ तथा कवि हुए । हिंदी-भाषा से आपको प्रेम था ही, संस्कृत-साहित्य में भी आपने विशेषतया पांडित्य प्राप्त किया था । कहा जाता है कि एक घंटे में यह महाशय ५० श्लोकों की रचना अच्छी तरह कर लेते थे ।

आप काव्य-रचना के अतिरिक्त चित्र-कला तथा संगीत में भी निपुण थे । गया-प्रांत के पीढ़ाचक्र ग्रामवाले बाबू देवनसिंह के यह आश्रित थे, और उन्हीं की दी हुई ज़मींदारी का उपभोग इनके वंशज आज तक करते हैं ।

उदाहरण—

खैंचि कै चीर शरीर उघारत जो घर तें हम कुंजन आवा ;
और मैं का ले कहौं झक भारी के तोरि कै फूलन हार गिरावा।
रीति कुरीति सबै उनकी 'रघुनाथ' न चीन्हत नारि परावा ;
री सखि ए कोउ सज्जन का, अरि ना सखि, ना सखि कुंज की हावा।

× × ×

नाम—(२५०५) मुरारिदानजी कविराजा।

यह महाशय जोधपुर-नरेश के आश्रय में रहते और उनके राज्य के एक ऊँचे कर्मचारी थे। इन्होंने जसवंत-जसोभूषण-नामक अलंकार का एक बढ़िया तथा भारी ग्रंथ ८५१ पृष्ठों का सं० १९५० के लगभग बनाया। यह ग्रंथ सं० १९५४ में प्रकाशित हुआ। यह महाशय संस्कृत के अच्छे पंडित थे, और अलंकारों के शुद्ध लक्षण निरूपण करने में इन्होंने अच्छा श्रम किया। इन्होंने अलंकारों के नामों ही से उनके लक्षण निकाले और गद्य की भी अच्छी रचना की। इनका स्वर्गवास प्रायः सं० १९६६ के निकट हुआ।

उदाहरण—

कैसी अली की भली यह बानि है देखिए पीतम ध्यान लगाय कै ;
छाक गुलाब म.धू सों मुरारि सु बेलि नबेलिन में बिरमाय कै।
खेलत केतकी जाय जुहीन में केलत मालती-वृंद अघाय कै ;
आज जो जोवत खोवत दौस पै सोवत है नलिनी सँग आय कै। १।

नाम—(२५०६) रघुनाथप्रसाद शर्मा (करतार कवि), कचूरा, ज़िला सीतापुर।

जन्म-स्थान—कुँदेरा (ज़िला सीतापुर)।

ग्रंथ—स्फुट छंद।

विवरण—आप काव्य-कला-कुशल पं० वैद्यनाथ के प्रपौत्र तथा पं० प्रयागदत्त (परवन) शुक्ल के पुत्र हैं। आपने एक हज़ार से

अधिक छंद रचे हैं, किंतु वे अभी अप्रकाशित रूप में हैं। आप एक सत्कवि हैं।

उदाहरण—

कलित कलेवर कलभ कमनीय मुख,
सोहत सिंदूर भरो ललित लिलार है।
लसत मलिंद लट पटित सरोजन को ;
लोनो लोल लंबित अनूठो उर-हार है।
ध्यावत हीं तोहिं सिद्धिसदन शिवा के सुत,
संपति समेत सुख लहत अपार है।
बुद्धि के प्रकासन को विघन विनासन को;
रघुनाथ-दासन को दूजो कौन द्वार है।
द्रुपद-सुता लखि दीन हरि अद्भुत बसन अमित्त ;
चीर-हरन को कीन्ह जनु पूरण प्रायश्चित्त।
कौन कहत है कान्ह को कारो श्याम शरीर ;
वह ऐसी पै है कहाँ प्यारी प्रभा गँभीर।
कनक कुंज में कूजि अब कुटिल करीली पाँति ;
किमि काटत लै है भला सेइ सखी दिन राति।
पंथ पथिक पावन पवन पाचक पावत पाथ ;
जासु कृपा से तासु पै बलिहारी रघुनाथ।

× × ×

नाम—(२५०७) राजधरलाल खरे कायस्थ, तालबेहट (झाँसी)।

कविता-काल—सं० १६५०।

जन्म-काल—सं० १६२३।

ग्रंथ—(१) दानलीला, (२) सुधाराज-सरोवर, (३) राज-सतसई, (४) नारी-प्रशंसा, (५) विनय-चालीसी, (६) हनूमान-

बत्तीसी, (७) राज-रहस्य और श्रीमद्भगवद्गीता का अनुवाद।

उदाहरण—

द्रुपद पुत्र तव शिष्य सुधीरा ;
बुद्धिमान रण - कुशल गँभीरा।
पांडु नृपति चतुरंगिनी व्यूह चक्र सज तात ;
कीन्ह उपस्थित रण बिषे युद्ध हेतु अकुलात।
नाथ भीम अर्जुन सम भारी ;
शूरवीर अगणित धनु - धारी।
महारथी युयुधान गँभीरा ;
नृपति विराटऽरु द्रुपद सुवीरा।
धृष्टकेतु जेहि विक्रम भारी ;
चेकितान यश अमित पसारी।

नाम—(२५०७ अ) सरयूप्रसाद जायसवाल।

आपके पिता श्रीज्वल्लुरामजी अपनी जन्मभूमि, ज़िला सुल्तानपुर-अंतर्गत बरुआरीपुर गाँव से आकर मुरार छावनी (रियासत ग्वालियर) में पहले बस गए थे, किंतु ग़दर के अवसर पर यह स्थान छोड़कर इन्होंने कनाधर-ग्राम, रियासत ग्वालियर को अपना निवास-स्थान बनाया। इसी ग्राम में जायसवालजी का जन्म सं० १६२५ में हुआ। आपने वैराग्य, ईश्वर-संबंधी उलाहना, समय की चंचलता, संसार के भोग-विलास की क्षण-भंगुरता आदि विषयों का भी अच्छा वर्णन किया। कहा जाता है कि 'आनंद-सरोज'-नामक आपकी एक हस्त-लिखित पुस्तक उपलब्ध हुई है। यह उर्दू में विशेष रूप से काव्य-रचना किया करते थे, और हिंदी-कविता की अपेक्षा इनकी उर्दू ही की कविता अधिक मात्रा में मिलती है। आपकी मृत्यु ५० वर्ष की अवस्था में सं० १६७५ में हुई।

उदाहरण—

अंगभभूत गले मृगछाल सो संकर के शशि मस्तक सोहै;
शीश से गंग बहाय महेश सो मज्जन सौं अघ को त्रिय खोहै।
लोक सुगंध उड़े जिहि मात की देह सुधारि सों कष्ट को खोहै;
सो प्रथमै निकसी हरि के पद सों जिहि दर्शन से मन मोहै।

नाम—(३५०८) साधुशरणप्रसाद, जि० बलिया।

जन्म-काल—सं० १६०८।

समय—सं० १६५०।

ग्रंथ—भारत-भ्रमण, पाँच भाग, धर्मशास्त्र-संग्रह।

विवरण—इन्होंने भारत-भ्रमण-नामक ग्रंथ बड़ा ही प्रशंसनीय बड़े श्रम से बनाया। यह ग्रंथ परिभ्रमण करनेवालों को उपयोगी और सर्वसाधारण को दर्शनीय है। इसमें हरएक स्थान का प्रशंसनीय और यथोचित वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त और भी कई ग्रंथ आपने बनाए। सं० १६६६ में आपका स्वर्गवास हो गया।

नाम—(३५०६) सुदर्शनाचार्य, काशी।

जन्म-काल—सं० १६२५।

ग्रंथ—(१) भगवद्गीता सतसई, (२) आलवार-चरितामृत, (३) स्त्री-चर्या, (४) नीति-रत्नमाला, (५) विशिष्टाद्वैत अधिकरणमाला, (६) अद्वैतचंद्रिका, (७) संस्कृत-भाषा, (८) श्रीरंगदर्शक शतक, (६) भगवद्गीता-भाषा-भाष्य, (१०) शास्त्र-दीपिका-प्रकाश, (११) अनर्घ नलचरित्र-नाटक।

नाम—(३५१०) हरीरामजी त्रिवेदी 'स्नेह', हटा, दमोह।

जन्म-काल—सं० १६३०।

कविता-काल—सं० १६५०।

ग्रंथ—(१) केकई-नाटक, (२) हरदौल-नाटक, (३) स्फुट लावनियाँ।

विवरण—आप पं० फदालीराम शास्त्री के पुत्र हैं। हिंदी के अतिरिक्त संस्कृत के भी ज्ञाता हैं। व्रजभाषा में कविता करते हैं। आजकल श्रीकृष्ण-लीला पर 'प्रिय-प्रवास'-नामक ग्रंथ व्रज-भाषा में लिख रहे हैं। [श्रीयुत नन्हूलालजी, अध्यापक, हटा (दमोह) द्वारा ज्ञात]

नाम—(२५११) हेमंतकुमारी चौधरी।

आपका जन्म सं० १६२५ में लाहौर में हुआ और १६४२ में विवाह के पश्चात् ये शिलांग चली गईं। आप कई स्थानों में रहीं और सदैव परोपकारी कार्य करती रहीं। आपने आदर्श माता, माता और कन्या, नारी-पुष्पावली और हिंदी बंगला प्रथम शिक्षा-नामक पुस्तकें रचीं। आप हिंदी में वक्तृता भी देती हैं। आपकी लेखन-प्रथा उच्च है।

समय—संवत् १९५१

नाम—(२५१२) गदाधरसिंह ठाकुर सचेंडीवाले।

जन्म-काल—सं० १६२६ (काशी में)।

आपका निवास-स्थान सचेंडी, ज़िला कानपुर है। आप १८ वर्ष सरकारी पलटन में नौकर रहकर डाक-विभाग में १५०) मासिक वेतन पर पोस्ट-मास्टर हुए। सेना-विभाग में बर्मा एवं चीन के युद्धों में आप लड़े, तथा शाहंशाह एडवर्ड के तिलकोत्सव में निमंत्रित होकर विलायत गए। इन्होंने छोटे ग्रंथों के अतिरिक्त चीन में तेरह मास, हमारी एडवर्ड-तिलक-यात्रा तथा रूस-जापान-युद्ध-नामक तीन परमोत्तम भारी पुस्तकें भी लिखीं। इनके ग्रंथों में भारतोत्थान पर हर जगह बड़ा ज़ोर दिया गया है। देश-हित इस महापुरुष की नस-नस में भरा था और रचनाओं से वह भली भाँति प्रदर्शित होता है। इनके ग्रंथों में ज़िंदा-दिली की मात्रा ख़ूब है और उनसे बहुत अच्छे उपदेश मिलते हैं। यह महाशय अपने मरण

के प्रायः १६ वर्ष पूर्व से हमारे मित्र रहे और इनका व्यवहार सदैव एक-सा रहा। आर्य-समाज के यह एक बड़े पक्के सभासद् थे, और उसकी प्रार्थनाओं तथा कार्यवाहियों में बड़ी रुचि रखते थे। आर्य-सामाजिक पत्रों में भी इन्होंने बहुतायत से लेख लिखे। इनके ग्रंथ परम सजीव एवं उच्चाशय-पूर्ण हैं। आपका शरीर-पात सं० १९७५ के निकट हुआ। गत महायुद्ध में जाकर आप रोग-ग्रस्त हो गए, जिससे कुछ दिनों में आपका स्वर्गवास हो गया।

नाम—(२५१२) गंगाशंकरजी पंचौली, बूँदी।

जन्म-काल—सं० १९१४।

रचना-काल—सं० १९५१-७५।

ग्रंथ—निम्न विषयों पर लेख-मालाएँ हैं—

(१) कृषि-विद्या	(१) खेत-भूमि की परीक्षा, औज़ार, बीज आदि। (२) खाद, (३) पशु-परीक्षा, (४) दूध व उसका उपयोग, (५) ईख और खाँड़, (६) संकरीकरण अर्थात् पैवंद, क़लम चढ़ाना आदि। (७) केला, (८) नींबू-नारंगी, (९) तरु-जीवन, (१०) कपास, (११) आलू, (१२) मूँगफली की खेती तथा उसके बीज का उपयोग।
(२) ज्योतिष	(१) नक्षत्र, (२) करण-लाघव, (३) ग्रहण-प्रकाश, (४) दृक् संस्करण।
(३) विज्ञान तथा हुनर	(१) स्वर्णकारी, (२) काग़ज़-काम, रद्दी का उपयोग आदि, (३) कृत्रिम काष्ठ, (४) रसायन-शास्त्र।

(४) विविध — (१) नागरोत्पत्ति, (२) भूगोल भरतपुर, (३) सनातनधर्म रत्नमयी, (४) रस-रत्नाकर, (५) निज उपाय, (६) संक्रांति-निर्णय, (७) सायन, निरयन गणना पर विचार, (८) पुरानी घटनाओं के समय को निकालने में ज्योतिप क्या सहायता देता है, (९) पटेल-बिल, (१०) हिंदू-धर्म का प्रस्तार, (११) प्राकृतिक भूगोल, (१२) उपवन-विनोद, (१३) नुसखा-संग्रह, (१४) वर्षा के आरख व शकुन, (१५) स्मृति-सार-संग्रह।

विवरण—आप नागर ब्राह्मण-कुलोत्पन्न हैं। आपकी जाति का आदिम निवास-स्थान काठियावाड़-प्रदेशांतर्गत पुराण प्रसिद्ध चमत्कारपुर व आनंदपुर (सांप्रत बड़नगर) रहा है। आपके पूर्वज भी इसी स्थान के निवासी थे। कालांतर से पंचौलीजो के पूर्वज अपना आदिम निवास-स्थान छोड़कर अलीगढ़ में आकर बस गए, और वहीं आपका जन्म हुआ। आपने उच्च शिक्षा और विविध विषयों का ज्ञान प्राप्त किया। आपकी लेख-मालाएँ इस बात का भली भाँति परिचय देती हैं। इस समय आप भरतपुर-राज्य से पेंशन पा रहे हैं, और बूँदी-राज्य में न्याय-विभाग के मेंबर हैं। आपके ग्रंथ उपयोगी विषयों पर हैं। ऐसे ही उपकारी तथा लोकोपयोगी लेखकों द्वारा हिंदी का मस्तक ऊँचा हो सकता है।

× × ×

नाम—(३५१४) दामोदरसहायसिंह।

जन्म-काल—१६३२।

रचना-काल—सं० १६५१।

ग्रंथ—(१) उद्यम-विचार, (२) काल-पचासा, (३) हमारी शिक्षा-प्रणाली, (४) श्रीहरिगीतिका, (५) नृपसूर्यास्त, (६)

भ्रातृभाव-संगीत, (७) संकीर्तन-संगीत, (८) कविता-कुसुम, (९) चातक-चालीसी।

विवरण—आप मुंशी शिवशंकरसहाय के पुत्र हैं। आपने हिंदी-मंदिर-नामक एक पुस्तकालय छपरे में सं० १९७९ में खोला, जिसके आप संयुक्त मंत्री हैं। यह महाशय सुकवि हैं।

उदाहरण—

प्रेम-धन ! प्यारी सभी को है घटा, पर सभी का प्रेम तुझसे है घटा ;
है सहज सुस्नेह तेरा इष्ट में, जान की बाजी लगाकर मैं डटा।
निसि बासर नाहक चाहक ह्वै फिरे बागन फूल की चायन में ;
अरे बावरे एतो मजा ह्याँ कहाँ जितो कूट भरो ह्याँ सुभायन में।
कुछ हू सुनि ले तू दमोदर की रस सेस रह्यो न रसायन में ;
मन भृंग फिरे मँडरात कहाँ बस रे बस गौरि के पायन में।

नाम—(२९१९) बलदेवप्रसाद मिश्र।

यह महाशय मुरादाबाद शहर के रहनेवाले पंडित ज्वालाप्रसाद मिश्र के छोटे भाई थे। इनकी अकाल मृत्यु केवल ३६ वर्ष की अवस्था में, सं० १९६२ में, ७ अगस्त को हो गई। यह महाशय हिंदी और संस्कृत के अच्छे लेखक थे, और तंत्रप्रभाकर-नामक पत्र भी इन्होंने कुछ दिन निकाला। मिश्रजी ने बहुत-से ग्रंथ स्वतंत्र और कुछ अनुवाद करके रचे तथा कतिपय नाटक-ग्रंथ भी बनाए, जिनमें नंद-विदा-नाटक हमारे पास है। यह महाशय कविता भी प्रशस्त करते थे। इनके ग्रंथों में पानीपत, देवी-उपन्यास, कुंदनंदिनी, दंड-संग्रह, राजस्थान, नैपाल का इतिहास, ताँतिया भील, पृथ्वीराज चौहान, अध्यात्मरामायण भाषा, प्रफुल्ल और कल्किपुराण भाषा प्रधान हैं। हमारे मिश्रजी ही वर्तमान समय के लेखकों में पहलेपहल ऐसे थे, जिनका निर्वाह केवल अपनी पुस्तकों की बिक्री से होता था। यह इनके लिये बड़े गौरव की बात थी। इनके लेख बड़े गंभीर एवं

भाषा ललित होती थी, पर इनके छंद वैसे अपूर्व न थे। इन्होंने महावीर-चरित्र और उत्तर-रामचरित्र-नामक भवभूति के नाटक-ग्रंथों के उल्था भी बनाए, जो अप्रकाशित अवस्था में महाराज छतरपुर के पुस्तकालय में हैं। इनकी अकाल मृत्यु से हिंदी की भारी क्षति हुई। यदि आप दीर्घजीवी होते, तो इनके परमोत्कृष्ट तथा गंभीर गद्य-लेखक होने की आशा थी।

उदाहरण—

लखो यह मुंज बान नग नीको।
जनस्थान पश्चिम की भूमी चित्र बनो सुख जीको।
दानवगण अरु ऋषि मतंग को थान यही सुगती को।
श्रमणा धरम-चारिणी शबरी लखौ प्रेम यह तीको।

ये दोनो नाटक प्रायः डेढ़-डेढ़ सौ पृष्ठों के हैं।

नाम—(२५१६) मथुराप्रसादजी मिश्र।

आपका जन्म-स्थान ज़िला सुलतानपुर अमेठी-राज्य के अंतर्गत पश्चिम गाँव है। यह संस्कृत के अच्छे विद्वान् थे और भाषा का काव्य मनोहर करते थे। बँगला का भी अभ्यास आपने किया था। इन्होंने बाबू कालीप्रसन्नसिंह सब-जज लखनऊ की आज्ञानुसार और उन्हीं की सहायता से कृत्तिवास-कृत बँगला-रामायण के लंकाकांड का छंदोबद्ध अनुवाद करके सं० १९५१ में प्रकाशित किया। उसके पीछे उत्तरकांड का भी अनुवाद आरंभ किया गया, परंतु वह प्रकाशित नहीं हो पाया, और बीच ही में पंडितजी एवं सब-जज साहब का स्वर्गवास हो गया। यह लंकाकांड संपूर्ण तुलसीदास की रामायण से आकार में कुछ कम न होगा। इसमें रायल अठपेजी के ५१० पृष्ठों में कथा, १० पृष्ठों में भूमिका, ५ में विषय-सूची तथा ७८ पृष्ठों में टिप्पणी आदि हैं। कुल ६०३ पृष्ठों में यह कांड समाप्त हुआ। इसमें कथा बहुत विस्तार से लिखी

गई है। भाषा इसकी संस्कृत, ब्रज-भाषा तथा बैसवाड़ी मिश्रित है। हम मथुराप्रसादजी को मधुसूदनदासजी की श्रेणी में रखते हैं।

उदाहरण—

रवि किरण तनु ते प्रकट शशधर ज्योति ज्योतिष्मान ;
श्रम-विंदु झलकत चंद्रमुख अरविंद-विंदु समान।
रवि उदय ते लगि अस्त युद्ध प्रवृत्त नहिं अवसान ;
कर मध्य भीषण धनुष बरखहिं प्रखर अगणित बान।
तूणीर ते शर लेत क्षण यकमात्र बाण लखाय ;
दरसात रिपु-दल पर परत शत सहस ते अधिकाय। १।
संग्राम जासु यम आदि गए पराई,
कोदंड हाथ लखि कंपत देवराई।
जेते सुरासुर सुवीर त्रिलोक माहीं ;
जाके कराल शर ते थिर कोउ नाहीं।
आदेश कारि शशि सूर समीर जाके ;
त्रैलोक्य हर्षित महा विनिपात ताके।
सानंद देव-मुनि वृंद ऋचा सुनावैं ;
गंधर्व दुंदुभि वजाय सुगीत गावैं।

नाम—(३५१७) रामनाथ ज्योतिषी वृंदावन शुक्ल के पुत्र।

जन्म-स्थान—भैरमपुर, रायबरेली।

जन्म-काल—सं० १९३१।

रचना-काल—सं० १९५१।

ग्रंथ—(१) सी० आर० दास की महायात्रा, (२) वीर नारी, (३) विधवा-बत्तीसा, (४) रामचंद्रीय महाकाव्य (मुद्रित), (५) महाभारत महाकाव्य, (६) लाहौर की कांग्रेस, (७) मोतीलाल-जीवन-चरित्र, (८) यतींद्र-नवरत्न, (९) जोतिषी-सतसई, (१०) कृष्णदत्त-काव्य, (११) अयोध्या-शाकद्वीपीराज-

वंश (गद्य), (१२) गांधी और गोलमेज, (१३) गांधी शत-नाम-स्तोत्र (संस्कृत), (१४) शिवकुमार-जीवन-चरित्र, (१५) सामयिक साहित्य-सरोवर, (१६) जगदेव-सुयश-कदंब, (१७) रामचंद्रोदय, (१८) शांति कुटीर जन्म ।

विवरण—भैरवपुर, ज़िला रायबरेली में कई राजदर्बारों में सम्मान-सहित रहे । वैष्णव-सम्मेलन पत्र के संपादक रहे हैं । कट्टर सनातनी होने पर भी समाज-सुधारक । विधवा-विवाह, अछूतोद्धार आदि के समर्थक । गांधी-भक्त तथा विविध विषयों-सहित राष्ट्रीय कवि । आजकल अयोध्या में राजकवि और पुस्तकालयाध्यक्ष हैं । रत्नाकरजी-कृत विहारी रत्नाकर के लिये कई मास जयपुर में रहकर आप बड़ी सामग्री लाए थे, जिसका उल्लेख उक्त ग्रंथ की भूमिका में वर्तमान है । २५६ पृष्ठों का श्रीराम-चंद्रोदय काव्य-ग्रंथ छप चुका है, जो हमारे पास है । इसकी कविता ओज-पूर्ण तथा श्लाघ्य है । आपने कुछ-कुछ केशवदास की प्रणाली ग्रहण की है । ज्योतिषीजी सज्जन पुरुष और उत्कृष्ट कवि हैं ।

उदाहरण—

रायबरेली प्रांत राज रहवाँ गुण-मंडित ;
भए भूप रघुबीरबक्स कलकीर्ति अखंडित ।
रघुनंदन का शास्त्रि रहे परधानाध्यापक ;
तिनकी कृपा-कटाक्ष 'जोतिसी' भे बहुव्यापक ।
विज्ञान, व्याकरण, न्याय नय,
ज्योतिष - काव्य - कलाप पढ़ि ;
पुन चंदापुर नृप सँग रहे,
द्वादशाब्द मुद मान मढ़ि ।
पित्त नाश करि देत, बात को त्रास दिखावत ;
कफ जोतिसी बिदारि, मारि, त्रय-ताप भगावत ।

अपर रोग हरि हहरि चिहरि हरि लोग पठावत ;
सकल पाप संताप आप शिर भार उठावत ।
असनान-पान मज्जन असन,
दरस-परस सुख भूरि है ;
शुभ कातिक 'तुलसी आमलक',
जीवन जीवन-मूरि है ।

न्याय और नीति के अवक्र-चक्र स्यंदन की,
जोतिसी प्रकाश-पुंज प्रौढ़ पर पाँखैं हौ ;
धारमिक नैतिक समाज-वर वृच्छन की,
फूल फलवारी भारी स्वच्छ सुचि साखैं हौ ।
देश वर-वीरन की रन की विशाल भाल,
पति औ सुसंपति के राखिबे की लाखैं हौ ;
बूड़ो बह्यो जाय हाय दौरि द्रुत देखौ आय,
एहो रामश्याम तुम्हीं भारत की आँखैं हौ ।

गुरू औ पुजारी पंडे पंडित भिखारी भद्र,
रागी औ विरागी दागी काम करै चोरी के ;
नौकरी मैं घूस हूस राजा प्रजा चूस भए,
धनिक पढ़ावैं ब्याज अंग जिमि होरी के ।
'जोतिसी' दुकान के मुनाफा को न परिमान,
धरम विधान दान मान झकझोरी के ;
गारत न होय कैसे आरत स्वरूप यहि,
भारत मैं सारे रोजगार मुफ़्तखोरी के ।

बेचन को कंत कतवारिन को पूरो तंत,
घर को महंत करै वैभव की बरखा ;
गूढ़ो गेह रक्षक विदेशी वक्षभक्षक ह्वै ;
वोहै जोति 'जोतिसी' स्वतंत्रता के करखा ।

एकता के सूत मैं अकूत देश बाँधै वीर,
देशी माल देश ही में राखै होहि हरखा;
चक्ररूप धारै, राजा रंक की सँवारै देह,
चरखा बनाय डारै दारिद को चरखा।
परसुराम अरु राम कृष्ण के रहे विरोधी,
ईशो, बुद्ध, प्रताप, शिवादिक के पथ रोधी;
तिमि गांधी के परे देखि जहँ तहँ रिपुरूरे,
वंचक देश सुधार-धार के बंधन पूरे।
जाग्रत प्रभात में निरखि निज;
छिन्न भिन्न माया महल।
शुचि सृष्टि सुधारक के सदा;
रहते द्रोही दैत्य - दल।

समय—संवत् १९५२

नाम—(३५१८) कृष्णबलदेव खत्री, कालपी।

जन्म-काल—सं० १९२७ के लगभग।

समय—१९५२।

ग्रंथ—भर्तृहरि-नाटक, फ़ाहियान भाषा, ह्यूएन्त्सांग भाषा, विद्या-विनोद पत्र का कुछ साल तक संपादन।

विवरण—यह महाशय हिंदी के बड़े रसिक और गद्य के सुलेखक थे। प्राचीन विषयों की खोज में भी इन्होंने समय लगाया। इनका भर्तृहरि-नाटक पढ़ने से रुलाई आ जाती है। विद्या-विनोद पत्र भी इन्होंने कुछ साल निकाला। आपका स्वर्गवास सं० १९८८ में हुआ। मरने के पूर्व इनको इस बात का कुछ भान हो गया था, जिससे यह हम तीनो लोगों तथा अन्य मित्रों से यही कहकर मिल गए कि शायद अब मिलना न हो।

नाम—(३५१९) गंगाप्रसाद अग्निहोत्री (पंडित)।

यह हमारे प्राचीन मित्र थे। आप हिंदी के एक परम प्रसिद्ध गद्य-लेखक और कई स्वतंत्र गद्य एवं अनुवाद-ग्रंथों के रचयिता थे। आप मध्य प्रदेश की छुईखदान-रियासत में ऊँचे कर्मचारी थे। आपने मराठी के चिपलूणकर-नामक प्रसिद्ध लेखक के संस्कृत कवि-पंच एवं निबंधमालादर्श का भाषा-अनुवाद किया तथा रस-वाटिका-नामक रस-संबंधी एक अच्छा रीति-ग्रंथ लिखा। भवभूति के आधार पर इन्होंने मालती-माधव-नामक एक ग्रंथ उपन्यास के ढंग पर बनाया। नर्मदा पर आपने एक कविता-ग्रंथ भी रचा। आप भाषा के बड़े ऊँचे लेखकों में गिने जाते हैं। आपके ग्रंथों में निबंधमाला, प्रणयी माधव, राष्ट्र-भाषा, संस्कृत-कवि-पंच, मेघदूत, डॉक्टर जानसन की जीवनी और नर्मदा-विहार मुख्य हैं। कुछ काल आप कोरिया-रियासत के दीवान थे। गो-वंशोन्नति के आप बड़े ही प्रेमी रहे और इस विषय पर बहुत-सी गद्य तथा पद्य-कविता आपने की। आपका स्वर्गवास सं० १९८८ में हुआ। आपके ग्रंथ गंभीरता-पूर्ण तथा रोचकता से अलंकृत हैं।

नाम—(३९२०) जगन्मोहन वर्मा।

इनका जन्म सं० १९२७ में बस्ती-ज़िले के देवीपार-नामक ग्राम में हुआ। आप ठाकुर ब्रजराजसिंह के पुत्र थे। आपने १६ वर्ष की अवस्था में उर्दू तथा फ़ारसी की शिक्षा घर पर ही समाप्त की। इसके पीछे आप अँगरेज़ी-हिंदी तथा संस्कृत का अध्ययन करने लगे। सं० १९६६ में आप हिंदी-शब्द-सागर के संपादन-कार्य में सम्मिलित हुए, तथा सं० १९७४ तक यह कोष-संपादन-कार्य करते रहे। आपने अनेकानेक लेख पत्र-पत्रिकाओं में लिखे। इनका स्वर्ग-वास हुए कई वर्ष हो गए हैं। आपके जंगबहादुर, बुद्धदेव, श्येन-श्रांग, लोक-वृत्ति, सुंगयुन-नामक ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं तथा ह्यूएन्त्सांग विवेकानंद का ज्ञान-योग, राजयोग, भक्ति-योग, काव्य-

कलानिधि, पित्रावली, शब्द-शास्त्र और पुरुषार्थ-नामक ग्रंथ अभी अप्रकाशित हैं। आपकी हिंदी-सेवा उपयोगी विषयों पर होने से बहुत महत्ता-युक्त है। भाषा तथा भाव भी उच्च कोटि के हैं। इनकी रचनाएँ स्वदेशानुराग-युक्त होने से और भी जगमगा उठी हैं।

नाम—(२५२१) दर्शनदुबे, ग्राम बंदनवार, परगना संताल, (बिहार-प्रांत)।

जन्म-काल—सं० १९३२।

कविता-काल—सं० १९५२।

मृत्यु-काल—सं० १९६६।

ग्रंथ—(१) दर्शन-विनोद (सं० १९५२), (२) मेघनाद-वध-नाटक (सं० १९५३), (३) जै मा दुर्गा, (४) श्रीमच्छंकराचार्य-विरचित मणिरत्नमाला का हिंदी-गद्य-पद्यानुवाद (सं० १९५३), (५) प्रबोध-चंद्रिका (सं० १९५३), (६) प्रेम-प्रवाह, (७) शैवानंद, (८) युगलविहार, (९) संगीतसार, (१०) उपासना-विषय पर व्याख्यान (सं० १९५६), (११) दुर्गा आगमनी-स्तोत्र, (१२) निज भाषा की कविता, (१३) हरेर्नामेव केवलम् (हिंदी-अनुवाद), (१४) पावस-पचासा, (१५) शृंगार-तिलक, (१६) ऋतुमाला, (१७) शृंगार-संहार (संस्कृत-काव्य-ग्रंथ), (१८) चैतीसंग्रह।

विवरण—आप भारद्वाज गोत्रीय पं० श्रवण दुबे के पुत्र थे। हिंदी तथा संस्कृत के अतिरिक्त आपने अँगरेज़ी की भी शिक्षा पाई थी। कविता करने की प्रवृत्ति आप में पहले ही से थी। इनका तथा इनके पूर्वजों का जीविका-साधन कृषि-कर्म था। ऊपर दिए हुए अठारह ग्रंथों के अतिरिक्त इन्होंने 'समस्या-पूर्ति-प्रकाश' तथा 'द्रौपदी-चीर-हरण'-नामक दो ग्रंथ और बनाए, किंतु वे अब उपलब्ध नहीं हैं। शृंगार-तिलक, ऋतुमाला तथा शृंगार-संहार इनकी रचनाओं के

सर्वोत्तम नमूने हैं, ऐसा कहा जाता है। आपकी सब रचनाएँ अभी तक अमुद्रित रूप में पड़ी हुई हैं। [पं० बालाप्रसाद दुबे, शिक्षक, गोडा-इंग्लिश-स्कूल, (संताल परगना) द्वारा ज्ञात] आप धार्मिक तथा दार्शनिक विषयों पर बहुत श्रम कर चुके हैं तथा सुकवि भी हैं।

उदाहरण—

कैधों कल कंज मकरंद कुच पान हेतु,
चपकि मलिंद रस मत्त बैठो फरकी।
कैधों कुसुमायुध के कंचन शिलीमुख पै
लसत कुधातु मुख सोहै हिमकरकी।
उपमा बिलोकि कुच कमल सरीखे कहैं,
हिम को सँयोग पाय जैहे किधौं सरकी।
'दरसन' याही डर अंचल दुरात कुच;
कलश ढकी है मनो देव पंचशरकी।

× × ×

नाम—(२५२२) बुंदेला बाला।

यह विदुषी कवियित्री लाला भगवानदीन (संपादक, लक्ष्मी पत्रिका) की धर्मपत्नी थीं। शोक है कि इनका आषाढ़, संवत् १९६७ में वैकुंठवास हो गया। इनकी रचित कविता का संग्रह करके चतुर्भुजसहाय वर्मा, छतरपुरवासी ने बालाविचार नाम से प्रकाशित किया। इसमें १२ विषयों पर कविता है, अर्थात् माता-महिमा, पुत्री के प्रति माता का उपदेश, गृहिणी-सुख, संसार-सार, अबला-उपालंभ, चाहिए ऐसे बालक, पुत्र, भारत का नक़्शा, सावधान, बाल-दिनचर्या, राधिका-कृत कृष्ण-चितवन और कृपा-कौमुदी। ये सब ग्रंथ ४० पृष्ठों में समाप्त हुए हैं। इसके प्रथम लाला भगवानदीनजी-रचित विरह-विलाप-नामक काव्य छपा है। बालाजी का काव्य बहुत ही देश-प्रेम-युक्त, सरस, मनोहर तथा उपदेश-पूर्ण है। इसी भाँति के विषयों पर कविता

रचना आजकल प्रत्येक शिक्षित का काम है। बालाविचार बहुत प्रशंसनीय ग्रंथ है। उदाहरणार्थ हम भारत के नक़्शे से कुछ कविता यहाँ देते हैं। नक़्शे का वर्णन माता अपने पुत्र से कह रही है।

माता—

हे प्यारे कदापि तू इसको तुच्छ श्याम रेखा मत मान ;
यह है शैल हिमाचल इसको भारत-भूमि-पिता पहचान।
नेह-सहित ज्यों पितु-पुत्री का सादर पालन करता है ;
यह हिमगिरि त्यों ही भारत-हित पितृभाव हिय धरता है।
गंगा-यमुना युगुल रूप से प्रेम-धार का देकर दान ;
भारत-भूमि-रूप दुहिता का नेह-सहित करता सनमान।

पुत्र—

यह जो वाम ओर नक़्शे के रेखामय अतिशय अभिराम ;
शोभामय सुंदर प्रदेश है मुझे बता दे उसका नाम।

माता—

बेटा यह पंजाब-देश है पुण्य भूमि सुख-शांति निवास ;
सर्व-प्रथम इस थल पर आकर किया आर्यों ने निजवास।
कहीं गान-ध्वनि कहीं वेद-ध्वनि कहीं महामंत्रों का नाद ;
यज्ञ-धूम से रहा सुवासित यह पंजाब सहित अहलाद।
इसी देश में बस के 'पोरस' ने रक्खा है भारत-मान ;
जब सम्राट सिकंदर आकर किया चाहता था अपमान।
इससे नीचे देख पुत्र यह देश दृष्टि जो आता है ;
सकल बालुकामय प्रदेश यह राजस्थान कहाता है।
इसके प्रति गिरिवर पर बेटा अरु प्रत्येक नदी के तीर ;
देश-मान हित करते आए आत्मविसर्जन क्षत्रिय वीर।
कोई ऐसा स्थान नहीं है जहाँ अमर चिह्नों के रूप ;
वीर कहानी रजपूतों की लिखी न होवे अमर अनूप।

छत्री-कुल अवतंस वीरवर है 'प्रताप'जी का यह देश ;
रानी पद्मावती सती ने यहीं किया है नाम विशेष।
क्षत्रीवंश-जात को चहिए करना इसको नित्य प्रणाम ;
इससे क्षत्रीवर्ग क जग में सदा रहेगा रोशन नाम।

नाम—(२५२३) राजाराम शास्त्री।

इनका जन्म सं० १६२७ में हुआ। आप दयानंद-कॉलेज, लाहौर में अध्यापक रहे। वाल्मीकीय रामायण, वेदांतदर्शन, योगदर्शन, मनुष्य-समाज, शंकराचार्य (जीवन-चरित्र), बृहदारण्यकोपनिषत्, दशोपनिपत्-भाष्य-नामक ग्रंथ आपने बनाए। आप भाषा के मर्मज्ञ और उपर्युक्त ग्रंथों के अतिरिक्त भी अन्य कई पुस्तकों के रचयिता थे। आप बड़े ही परोपकारी और धर्मनिष्ठ सज्जन कहे जाते हैं। आपका साहित्यिक श्रम बहुत उपयोगी तथा श्लाघ्य है।

नाम—(२५२४) श्यामसुंदर (श्याम)।

यह असनी, ज़िला फ़तेहपुर-निवासी पंडित मन्नालाल मिश्र के पुत्र और कवि सेवक के शिष्य थे। इन्होंने सं० १६५२ में ठाकुर महेश्वर-बख़्शसिंह तअल्लुक़दार रामपुर, मथुरा ज़िला सीतापुर के आज्ञानुसार महेश्वर-सुधाकर-नामक ग्रंथ बनाया। इसमें नायिका-भेद का वर्णन है, और अंत में समस्या-पूर्ति के छंद हैं। इस ग्रंथ की भाषा व्रज-भाषा है। कवि ने प्रायः सब उदाहरणों का तिलक भी कर दिया है। यह महाशय साधारण श्रेणी में गिने जाते हैं। उदाहरणार्थ इनका एक छंद लिखा जाता है—

शोभित मोरपखा श्रुति कुंडल माल बिसाल हिए बिलसी है ;
स्याम-सरोज बिनिंदक नैन सुआनन की समता न ससी है।
बैन सुधा मुसकानि अमी सम देखु अरी उर आनि गसी है ;
मूरति माधुरी मोहन की सुनतै सजनी मन माँहि बसी है। १।

समय—संवत् १९५२

नाम—(३५२५) जयदेवजी भाट, अलवर।

जन्म-काल—सं० १९२८।

रचना-काल—सं० १९५२।

रचना—स्फुट काव्य।

विवरण—आप राव राजा अलवर के आश्रित थे। आपकी कविता बड़ी ही सरस होती है।

उदाहरण—

फैली सुगंध भरी लतिका सोई गोरखधंध प्रबंध बनायो;
त्यों जयदेव विभूति की भाँति बड़े अनुराग पराग लगायो।
नीरज नील निचोल अमोल पिकी धुनि बोल अतोल सुनायो;
प्रान की भीख वियोगिन पै रितुराज फकीर ह्वै माँगन आयो। १।
सोरन को करिकै चहुँ ओरन मोद भरे वन मोर नचैंगे;
बारिद बीजु छटा जुत देखि वियोगिन के तन ताप तचैंगे।
त्यों जयदेव उमंगन सों नर-नारि अपार विहार रचैंगे;
पावस की ऋतु मैं सजनी बिन पीतम के किमि प्रान बचैंगे। २।

नाम—(३५२६) मथुराप्रसाद पांडेय, मथुरा।

मृत्यु-काल—सं० १९७८।

ग्रंथ—स्फुट कविताएँ।

विवरण—आप एक अच्छे आशुकवि थे। आपकी कुछ आशु रचनाओं के उदाहरण नीचे दिए गए हैं। वे प्रायः 'विचित्र' उपनाम से अंकित रहा करती थीं। कहा जाता है कि इन्होंने कई ग्रंथ लिखे हैं, किंतु वे अभी अमुद्रित हैं। यह महाशय भगवान् श्रीकृष्ण एवं मथुरापुरी के अनन्य भक्त थे, और इसी पुरी में तीर्थ संन्यास ग्रहण करके निवास करते थे। [पं० जगदीशपति त्रिपाठी, काशी द्वारा ज्ञात]

उदाहरण—

विलोकत जाकी नई सुषमा सुखमानि समाने रहैं रतिमार;
सजे तन सोनजुरी अनसी के प्रसूनन हूँ से महा सुकुमार।
जुरी बिजुरी वो घटा घन की-सी 'विचित्र' छटा सरसै बे सुमार;
सो भानुकुमारी के तीर लसैं वृषभानुकुमारी वो नंदकुमार। १।
मयूरपखा उनके सिर पै इनके गुही वेनी कि मंजु मरोर;
कसी उनके कटि काछनी पीत, चुभी उनके चुनि चूनरी छोर।
'विचित्र' सी वे इनपै, उनपै यै, करैं रस बात में घात करोर;
गड़ी उनकी अँखियाँ इनपै, उनकी इनपै बिगड़ी बरजोर। २।

नाम—(२५२७) महेंदुलाल गर्ग (पंडित)।

आपका जन्म सं० १९२८ में हुआ। आप सेना-विभाग में डॉक्टर थे, सो स्थान-स्थान पर खूब घूमे। आपने काश्मीर और चीन भी देखे। गर्ग-विनोद, अनंतज्वाला, पृथ्वी-परिक्रमा, पति-पत्नी-संवाद, तरुणों की दिनचर्या, जापान-दर्पण, चीन-दर्पण, जापानीय स्त्री-शिक्षा, प्लेग-चिकित्सा, ध्रुव-देश, सुख-मार्ग, परिचर्या-प्रणाली आदि अनेक उपयोगी ग्रंथ आपने लिखे। इनके अतिरिक्त डाक्टरी विषय के भी आपके कुछ अन्य ग्रंथ हैं। अनंतज्वाला ग्रंथ हमारा देखा हुआ है। आपके ग्रंथ उपयोगी और शिक्षाप्रद हैं। आप बड़े उत्साही अपने धुन के पक्के सज्जन थे।

नाम—(२५२८) सकलनारायण पांडेय।

आपका जन्म सं० १९२८ में हुआ। आप बड़े ही उत्साही पुरुष और उन्नति-संबंधी नवीन सामाजिक विचारों के पक्षपाती रहे। मुख्यशः आप ही के परिश्रम से आरा-नागरी-प्रचारिणी सभा स्थापित हुई। आपने अनेक ग्रंथ रचे, जिनमें से हिंदी-सिद्धांत-प्रकाश, सृष्टितत्त्व, प्रेमतत्त्व, आरापुरातत्त्व, वीरबाला-निबंध-माला, व्याकरणतत्त्व आदि प्रधान हैं। राजरानी और अपराजिता आपके

उपन्यास हैं। आप बड़े ही मिलनसार और उदार प्रकृतिवाले पुरुष थे। आपने जैनेंद्रकिशोर की एक अच्छी जीवनी भी लिखी। अपराजिता उपन्यास में चरित्र-चित्रण उच्च कोटि का है। पांडेयजी हमारे उत्कृष्ट गद्य-लेखकों में से हैं।

नाम—(३५२९) हरिनाथ (आलू पंडित)।

जन्म-काल—सं० १९२२।

रचना-काल—सं० १९५२।

ग्रंथ—(१) आलू-पुराण, (२) हलचल हल्ला, (३) हलचल कजरी, (४) हलचल पुराण।

विवरण—बाबतपुर सराय तकी में जन्म हुआ। आजकल काशी में चिरकाल से रहते हैं। हास्य-रस के उद्भट कवि एवं लेखक हैं। आलू पंडित के नाम से प्रसिद्ध हैं। समाज तथा देश-सुधारक हैं।

उदाहरण—

आलू पंडित की आई खोदाई ;
हर से खोदै कुदारिन खोदै हुनर नइ सिखलाई।
गुरू वही जो चेला सिखावै करै कमाई तो खाई ;
आलूजी के ब्याह भए जब दूनी दुलहिन पाई।
है दुलहिन दूनी औ मोटी नाम है बैंगन बाई ;
नारद नित चाहत पंडित सँग जो भागत हरखाई।

समय—संवत् १९५४

नाम—(३५३०) गोप्यअलादेवी 'ज्ञान-कला', अपहर ग्राम, छपरा ज़िला।

जन्म-काल—सं० १९३५।

कविता-काल—सं० १९५४।

मृत्यु-काल—सं० १९७७।

ग्रंथ—(१) सियवर-सप्तक, (२) हनुमानाष्टक, (३) राम-नाम-माहात्म्य-चालीसा, (४) विनय-पचासा, (५) झूला-बहार, (६) श्रीहनुमान-यशावली, (७) श्रीसीताराम-होली-बहार, (८) आनंद-निधि-दोहावली (अप्रकाशित), (९) जयकार-शतक, (१०) युगल-केलि-गीतावली, (११) श्रीसीताराम-नख-शिख, (१२) शिवाष्टक।

विवरण—आप कायस्थ-कुलोत्पन्ना बाबू युगलकिशोरलालजी की पुत्री थीं। आपका जन्म गया-ज़िलांतर्गत बिरनामा-नामक ग्राम में तथा विवाह अपहर ग्राम के निवासी बाबू कृष्णदत्तदेवजी के साथ हुआ। आप महात्मा श्रीतुलसीदासजी की शिष्य-परंपरा-वाले महात्मा श्रीजानकीशरणजी की शिष्या थीं, और इन्हीं के पास आपने रामायण का अध्ययन किया तथा कविता करनी सीखी। आपको संगीत से भी अनुराग था। इनके अप्रकाशित ग्रंथों की प्रतिलिपि प्रतियाँ उक्त महात्मा श्रीजानकीशरणजी के यहाँ मौजूद हैं। आप एक अच्छी स्त्री-कवि थीं। [श्रीरामचरणजी, किशोरी-भवन, मुज़फ़्फ़रपुर, विहार द्वारा ज्ञात]।

उदाहरण—

कैधों शोभा सर बिच विकस्यो सरोज, कैधों
सोरह कलान-युत अद्भुत सुचंद है।
कैधों विधि निज निपुनाई तै मुकुर रच्यो,
देखि ताहि लियो करि मदन पसंद है।
कैधों अवधेश फरजंद मन मोहिबे को,
सुंदर अनूप पंचबान केरे फंद है।
'गोपअली' कैधों अदसुत आब भरो,
मिथिलेश-नंदिनी को मुख आनँद को कंद है।

नाम—(२१२१) प्रबोधचंद्र, कतरीसराय (गया)।

जन्म-काल—सं० १९२९ ।

उदाहरण—

निवेदन

यौवन-ग्रीष्म-प्रचंड-ताप में झुलस रहा है मेरा मन ;
तीव्र-लालसा-लू की लपटें बढ़ती जाती हैं छन-छन ।
अंतस्थल को जला रहा है धधक-धधककर प्रेम-अनल ;
फूट-फूटकर विलप रही है परदे में वासना विकल ।
मेरी हृदय-वेदना हर जा दरस दिखाकर ऐ स्वामी ;
पा विश्राम सुखद छाया में होऊँ तेरा अनुगामी ।

नाम—(२५३२) भगवानदीन मिश्र (दीन) ।

जन्म-काल—सं० १९११ (अनुमान से । हमारे मिलनेवाले थे ।)

विवरण—यह ख़ैराबाद, सीतापुर-निवासी एक प्रशंसनीय कवि थे । आपने विविध छंदों में एक रामायण तथा बहुतेरे स्फुट छंद कहे । होली-विषयक बहुत-से कबीरवत् विषयों के भी आपने घनाक्षरी आदि छंद रचे । साहित्य-विषय के आनंद में प्रायः आप निमग्न हो जाते थे । अनुचित अभिमान के यह ऐसे विरोधी थे कि उसको कदापि सहन नहीं कर सकते थे । दीन कवि दरिद्रता की दशा में भी उदारता का सुख अनुभव करते और यथासाध्य श्रीमान् मनुष्यों की भाँति व्यय करने से मुख नहीं मोड़ते थे ।

इनके विषय में इनके मित्र ने क्या ही ठीक-ठीक कहा था कि—

भनत विशाल जग-शोधक भँड़ौवा रचि,
मानिन को मान झरसावत फिरत हैं ।
चारु कविताई के अनंद को सरूप निज
मीतन को दीन दरसावत फिरत हैं ।

आपकी ब्रजभाषा-रचना उच्च कोटि की है । इनके छंद हमने बहुत सुने हैं, किंतु इस समय कोई उदाहरण हमारे पास नहीं है ।

नाम—(२५३२) श्यामविहारी मिश्र (रायबहादुर तथा राव राजा)।

इनका जन्म सं० १९३० में इटौंजा, ज़िला लखनऊ में हुआ। इनके पिता पं० बालदत्त मिश्र एक सुकवि थे। बाल्यावस्था में उर्दू पढ़ इन्होंने लखनऊ आकर सं० १९४२ में अँगरेज़ी का पढ़ना आरंभ किया। सं० १९५२ में बी० ए० पास करके इन्होंने दूसरे साल एम्० ए० पास कर लिया, और सं० १९५४ से ये डेपुटी-कलेक्टर नियत हो गए। सं० १९६२ में इन्होंने अपनी नौकरी पुलीस में बदलवा-कर डेपुटी सुपरिंटेंडेंट का पद पाया, और सं० ६७ में महाराज छतरपुर ने इन्हें अपनी रियासत के दीवान होने के निमित्त बुलाया। तब यह पुलीस छोड़कर फिर डेपुटी कलेक्टरी पर चले गए। अनंतर आप रजिस्ट्रार कोआपरेटिव-क्रेडिट-सोसायटीज़ तथा कौंसिल ऑफ़् स्टेट के मेंबर हुए। डेढ़ साल पक्की डेपुटी-कमिश्नरी पर रहे। इन्होंने पद्य-रचना १५ या १६ वर्ष की अवस्था से आरंभ कर दी थी, और सं० १९५५ में अपने कनिष्ठ भ्राता शुकदेवविहारी मिश्र के साथ लव-कुश-चरित्र-नामक पद्य-ग्रंथ अलीगढ़ में रचा। इसी समय से प्रायः सब छंद और गद्य-लेख साझे ही में बनते रहे। सं० १९५६ में सरस्वती पत्रिका निकली। तभी से गद्य-लेख भी लिखने लगे। पहला गद्य-लेख हम्मीरहठ की समालोचना-विषयक था, जो सरस्वती के प्रथम भाग में छपा। पीछे से स्फुट लेखों के अतिरिक्त, विक्टोरिया अष्टादशी, व्यय, हिंदी-अपील, रूस का इतिहास, भारत का इतिहास (दो भाग) जापान का इतिहास, नेत्रोन्मीलन नाटक, भारत-विनय, सुमनोंजलि, हिंदी-नवरत्न, मदन-दहन, रघुसंभव, हा काशीप्रकाश, बूँदी-बारीश, वीर-मणि, आत्म-शिक्षण, पद्य-पुष्पांजलि, पूर्व भारत नाटक, उत्तर-भारत नाटक, शिवाजी-नाटक आदि ग्रंथ समय-समय पर इन्होंने अपने कनिष्ठ भ्राता के साथ बनाए। इनमें से व्यय, रूस का इतिहास,

जापान का इतिहास और हिंदी-नवरत्न गद्य में हैं। हा काशीप्रकाश और भारत-विनय खड़ी बोली के पद्य में और नाटक छोड़ शेष ब्रज-भाषा-पद्य में हैं। भूषण-ग्रंथावली-नामक ग्रंथ में भूषण की कविता पर टिप्पणी एवं समालोचना है। हिंदी-नवरत्न तथा यह ग्रंथ मिश्र-बंधु-विनोद पं० गणेशविहारी तथा पं० शुकदेवविहारी के साथ बनाए गए। सं० १९८९ में आप हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति नियुत हुए। इन तीनो भाइयों के विचार नूतन हैं। काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा के द्वारा यू० पी० सरकार की सहा-यता से हिंदी-लिखित ग्रंथों की खोज का काम प्रायः ४० वर्षों से हो रहा है। उसकी बहुतेरी वार्षिक तथा त्रैवार्षिक रिपोर्टें निकला करती हैं, जिन्हें सरकार अपने व्यय से छापती है। इस कार्य के निरीक्षण का काम श्यामविहारीजी ने ९ या १० वर्ष किया, तथा शुकदेवविहारीजी ने साल-डेढ़ साल। ज्येष्ठ भ्राता के इस काम की दो त्रैवार्षिक रिपोर्टें प्रायः पाँच-पाँच सौ पृष्ठों की हिंदी तथा अँगरेज़ी में निकलीं थीं, जो इन दोनो भाइयों ने लिखी थीं और जिन्हें सरकार ने छपाया। इस लंबे खोज के काम से मिश्रबंधु-विनोद को बहुत कुछ सहायता पहुँची है। विनोद में खोज के अतिरिक्त और भी बहुत-सा मसाला है। हम लोगों के मिश्रबंधु-विनोद तथा हिंदी-नवरत्न कई उत्तर-भारतीय विश्वविद्यालयों में पाठ्य-ग्रंथ कई सालों से चले आते हैं। ये दोनो प्रधानतया खोज और समालोचना के ग्रंथ हैं। भारत के इतिहासवाले प्रथम खंड में प्रायः ६००० संवत् पूर्व से ६०० संवत् पूर्व तक का इतिहास है। दूसरे खंड में बौद्धकाल से प्रारंभ हो-कर मुसलमानों के आने तक का वर्णन है। इन दोनो भागों में ढूँढ़-खोज का बहुत काम है। आत्मशिक्षण एक उपदेश-प्रद निबंध है, जिसमें चरित-संशोधन की शिक्षा दी गई है। भारत-विनय खड़ी बोली में १४७ पृष्ठों का देश-भक्ति-पूर्ण काव्य-ग्रंथ है। हम लोगों

के चारो नाटक-ग्रंथ स्टेज़ पर खेलने योग्य हैं। शिवाजी अभी प्रकाशित नहीं हुआ है, किंतु जल्द छपेगा। पूर्व भारत काशी छतरपूर और वृंदावन में खेला जा चुका है, तथा पंजाब में पाठ्य-पुस्तक है। इसके चार संस्करण निकल चुके हैं। इसका बँगला में अनुवाद भी हुआ है। वीरमणि उपन्यास-ग्रंथ है, जिसमें अलाउद्दीन के समय मेवाड़-युद्ध का भी वर्णन आया है। बूँदी-वारीश व्रजभाषा का काव्य-ग्रंथ है। सुमनोंजलि तथा भारत के इतिहास में हिंदू-धर्म पर भी भारी विवेचन है। मदन-दहन और रघुसंभव में कालिदास के साढ़े तीन अध्यायों का स्वच्छंद अनुवाद है। पद्य-पुष्पांजलि में २४० पृष्ठों में हमारे चुने हुए पद्य-साहित्य का सन्निवेश है। शिवाजी स्वदेशानुराग-युक्त नाटक है, और उत्तरभारत वैसा ही है, जैसा कि पूर्व भारत। नेत्रोन्मीलन में कचहरियों पर प्रकाश पड़ा है। रूस और जापान के इतिहास छोटे रूप में उन देशों का पूरा वर्णन करते हैं।

उदाहरण —

समरथ सुतन पै राखत पिता है प्रेम,
मातु पै कुपूतन बिसेख अपनावती ;
देखि प्रौढ़ सुत को सुजस मन-मोद भरै,
कादर को तबहू छिनौ न बिसरावती।
मातु भारती को हौं तौ कादर कपूत मति,
याते अंब चरन सरन तकि धावती ;
अरविंद नंद सों न सकति अमंद पाई,
मातु नखचंद की छटा ही चित भावती।

× × ×

समय—संवत् १९५५

नाम—(२५२४) नारायण स्वामी, माड़वारी गली, लखनऊ

जन्म-काल—सं० १९३० के लगभग।

रचना-काल—१९५५।

ग्रंथ—(१) स्वामी रामतीर्थ के व्याख्यानों के हिंदी-अनुवाद, (२) भगवद्गीता की व्याख्या (दो भागों में)।

विवरण—आप स्वामी रामतीर्थ के शिष्य तथा उनके आश्रम के अधिष्ठाता हैं। अँगरेज़ी जानते हैं, संस्कृत के अच्छे पंडित तथा हिंदी के उत्कृष्ट व्याख्याता हैं। आप बड़े परोपकारी, संयुक्त प्रांतीय धर्म-रक्षिणी सभा के सभापति तथा उत्साही कार्यकर्ता एवं सज्जन हैं। कई मंदिरों का उद्धार एवं सुप्रबंध किया है। हम लोगों पर भी कृपा करते हैं। शास्त्रज्ञ भी हैं।

नाम—(३५३५) बनवारीलाल चतुर्वेदी, हरदोई।

जन्म-काल—सं० १९३०।

मृत्यु-काल—सं० १९७५।

ग्रंथ—तिमिर-प्रदीप।

विवरण—आप माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मण पं० हुक्मचंदजी मिश्रके पुत्र तथा हरदोई-ज़िले के सदर ख़ज़ांची थे। आप सुकवि समझ पड़ते हैं।

उदाहरण—

तिमिर प्रदीपक ग्रंथ मिल्यो सुंदर सुकाव्य जुत ;
ज्योतिष दीप अपार तासु भाषा आशय जुत।
फलित गणित अरु प्रश्न तंत्र शुभ लग्न तंत्रिका ;
जय रु अजय के प्रश्न योगिनी मंत्र जंत्रिका।
लघु जातक जातक सबै सब चुनि चुनि आशय सुहित ;
यह रचौ छंद रचना सुलभ सो सौंपत हौं आपु हित।

नाम—(३५३६) रामचंद्र दुबे।

जन्म-काल—१९३०।

ग्रंथ—(१) डूँगरपुर-राज्य का इतिहास, (२) बाँसवाड़े का इतिहास, (३) होरेशस या कुमारी, (४) निर्धन राम, (५) खेतड़ी-राज्य का इतिहास।

विवरण—डूँगरपुर-निवासी पं० भव्बालाल के पुत्र।

नाम—(३५३७) राय देवीप्रसाद (पूर्ण)।

जन्म-काल—सं० १९२५।

कविता-काल—सं० १९५५।

मृत्यु-काल—सं० १९७२।

विवरण—यह कायस्थ महाशय कानपुर में वकालत करते थे, जो अच्छी चलती थी। राय साहब कविता के बड़े प्रेमी और गाने-बजाने में भी निपुण थे। इनके रचित तथा अनुवादित मृत्युंजय, धाराधरधावन, चंद्रकलाभानुकुमार नाटक और बहुत-से स्फुट छंद हैं। यह रसिक-समाज के उपसभापति थे, और रस-वाटिका में इनकी बहुत-सी समस्या-पूर्ति की रचना प्रकाशित हुई थी। सरस्वती में भी इनकी कविता प्रायः छपा करती थी। इनका काव्य बहुत सरस होता था। गद्य के भी यह अच्छे लेखक थे। इनका धाराधरधावन, (मेघदूत भाषा) एक सुंदर ग्रंथ है, जिसमें कालिदास के पूर्ण भाव लाने में यह समर्थ हुए हैं, और उस पर भी इसमें शिथिलता नहीं आने पाई, जो प्रायः अनुवादों में आ जाती है। यह खड़ी बोली का काव्य भी करते थे, जो प्रशंसनीय है। इनका नाटक खेलने के अयोग्य, किंतु काव्योत्कर्ष-पूर्ण होने से अच्छा कहा जा सकता है। वास्तव में नाटक न होकर वह नाटक के रूप में एक उत्कृष्ट काव्य-ग्रंथ है। इनकी भाषा प्रायः व्रजभाषा होती थी, जो सानुप्रास और हृदय-ग्राहिणी है। इनकी कविताओं का संग्रह 'पूर्ण-संग्रह' नाम से छप चुका है। इनकी गणना तोष कवि की श्रेणी में की जाती है। आप हमारे मित्र थे। इनमें कवित्व-शक्ति उच्च कोटि की थी।

उदाहरण—

कंचन के भूखन सँवारे पुखराज वारे,
धारी जरतारी पीत सारी सुखकारी है;
सूनी दुपहर में निदाघ की बिहारी पास,
पूरन सिधारी वृषभानु की कुमारी है।
ब्रजचंद्र ध्यान मैं मगन रसखान प्यारी,
ताती पौन लेखत बसंत की वयारी है;
आतप अखंड चंडकर की प्रचंड सोऊ,
मानत सुचंद की अमंद उजियारी है। १।
कुंजन के सघन तमालन के पुंजन में,
करत प्रवेश न दिनेश उजियारो है;
प्यारी सुकुमारी श्याम सारी सजे ठाढ़ी तहाँ,
नीलमणि-मालन को जाल छबि वारो है।
छिटके बदन चंद कुंतल अमंद श्याम,
स्यामा रंग पागी मान रंभा को विदारो है;
पूरन सुअंगन पै सौरभ प्रसंग पाय,
झूमै स्याम भौंरन को झुंड मतवारो है। २।

नाम—(२५३८) शुकदेवविहारी मिश्र, रायबहादुर।

इनका जन्म सं० १९३५ में इटौंजा में हुआ। इनके पिता पं० बालदत्त मिश्र एक प्रसिद्ध ज़मींदार और कवि थे। इन्होंने बाल्यावस्था में उर्दू पढ़कर सं० १९४६ में लखनऊ जाकर अँगरेज़ी पढ़ना आरंभ किया। सं० १९५७ में इन्होंने बी० ए० होकर सं० १९५८ में हाईकोर्ट वकालत की परीक्षा पास की। कुछ साल वकालत करके सं० १९६९ में इन्होंने मुंसफ़ी कर ली। इसके बाद सब-जज तथा रियासत छतरपूर में दीवान हुए। सं० १९८८ में स्नायु-रोग से पीड़ित होकर दवा करने को आप योरप गए, जहाँ छ महीने रहकर

आपने दवा की, तथा इटली, आस्ट्रिया, जर्मनी, हालैंड, इँगलैंड, फ्रांस और स्विटज़रलैंड देखे। अनंतर नीरोग होकर भी आपने उसी संवत् में नौकरी से पेंशन ले ली। सं० १९८४ में इन्होंने रायबहादुर की उपाधि पाई। इन्होंने पद्य-रचना १५ वर्ष की अवस्था से आरंभ की थी, परंतु प्रथम ग्रंथ लवकुश-चरित्र सं० १९५५ में अपने ज्येष्ठ भ्राता श्यामविहारी मिश्र के साथ अलीगढ़ में बनाया। सरस्वती पत्रिका के निकलने के साथ इन्होंने गद्य लिखना आरंभ किया। ग्रंथों के विषय में जो कुछ श्यामविहारी मिश्र के वर्णन में लिखा है, वही इनके विषय में भी समझना चाहिए, क्योंकि इन दोनो की प्रायः सब हिंदी-रचनाएँ साझे ही में बनी हैं।

संवत् १९८९ में आप पटना-विश्वविद्यालय में अवैतनिक रामदीन रीडर एक साल के लिये नियुक्त हुए। आपने नियमानुसार आठ व्याख्यान दिए। विषय था भारत के इतिहास पर हिंदी-साहित्य का प्रभाव। इस पर २३४ पृष्ठों का एक ग्रंथ बन गया, जो छप चुका है।

उदाहरण—

बालमीकि व्यास कालिदास भवभूति आदि,
लाड़िले सुतन को न तेरे बिसरायों मैं;
पंगु सम तऊ गिरि लंघन को धाय मातु,
तो सुत बनन हेतु लालसा बढ़ायों मैं।
आतन के धवल सुजस मैं कपूत बनि,
केवल कराल कालिमा को चपकायों मैं;
राखु मातु सारदा दया की दीठि फेरु तऊ,
साहस कै अब तौ सरन तकि आयों मैं।

× × ×

पिंगल सों छाँटि सब सुंदर सरस छंद,
करुना कै देवि यहि रचना मैं धारा करु;

रंकता बिदारि त्यों प्रगाढ़ अधिकार दैके,
सबद-समूह मम सम्मुख पसारा करु।
परम बिसाल ध्वनि व्यंग्यन को आल करि,
दोषन के जालन दया सों वेगि जारा करु;
भूषननि भावनि रसनि परिपूरित कै,
बाल-कविता को मातु सारद सहारा करु।

नाम—(२५३६) सूर्यकुमार वर्मा, कठवारा, लखनऊ। हाल में ग्वालियर-निवासी।

जन्म-काल—लगभग सं० १६३०।

रचना-काल—सं० १६५५।

ग्रंथ—पुरातत्त्व एवं इतिहास पर कई ग्रंथ लिखे हैं।

विवरण—काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा के उत्साही सदस्य हैं। पहले काश्मीर में काम करते थे। अब ग्वालियर-रियासत के उच्च कर्मचारी हैं।

समय—संवत् १६५६

नाम—(२५४०) अक्षयवट मिश्र (उपनाम विप्रचंद्र)।

इनका जन्म जेष्ठ शुद्ध १२, सं० १६३१ को डुमराँव में हुआ। इनके पिता राजेश्वरी राधाप्रसादसिंह महाराज डुमराँव के सभासद् थे। यह शाकद्वीपी ब्राह्मण थे। इन्होंने संस्कृत-भाषा अच्छी पढ़ी है। चार वर्ष मालवा में इन्होंने जैन-ग्रंथों का मागधी से संस्कृत में अनुवाद किया, और तीन वर्ष कलकत्ता एवं मेरठ-कॉलेज में संस्कृत का अध्यापन किया, तथा कुछ काल डुमराँव-नरेश के बालक को पढ़ाया। एक वर्ष इन्होंने अवधकेसरी मासिक पत्र का संपादन किया। आपने संस्कृत के कुछ ग्रंथ बनाए, और आनंद-कुसुमोद्यान एवं सदाबहार-नामक दो हिंदी-पद्य-ग्रंथ भी रचे। पहले में मनहरनों में शृंगार-काव्य और द्वितीय में गाने की चीज़ें हैं।

इनके अतिरिक्त मिश्रजी ने गंगालहरी, गंगाष्टक, महिम्न, शिवतांडव और भामिनीविलास का पद्य में तथा मार्कंडेय पुराण, देवी चौधरानी और दशकुमार-चरित्र का गद्य में अनुवाद भी किया। आपने अयोध्या-नरेश, महाराणा प्रतापसिंह, पंडित राधावल्लभ जोशी, अजान कवि, बच्चू मलिक, बालराम स्वामी, उमापतिदत्त शर्मा, कवि गोविंद गिल्ला भाई और दुर्गादत्त परमहंस के जीवन-चरित्र लिखे। फुटकर लेख भी आपके बहुत हैं। उदाहरण में स्थानाभाव से केवल दो छंद यहाँ लिखे जाते हैं। आप उच्च श्रेणी के गद्य-लेखक और सुकवि हैं।

बार-बार चमकै चहूँघा चंचला री देखु,
विप्रचंद्र वारिद हू वारि बरसावै है;
पौन पुरवाई बहै पपिहा पुकारै पीय,
मोरदल कूकि-कूकि मदन जगावै है।
ऐसे समै नाहीं निबहैगो तेरो एरी वीर,
नाहक अकेली बैठि वेदन बढ़ावै है;
मानि ले हमारी बात वेगि चलु मेरे साथ,
जोरि कर आजु तोहि कान्हर बुलावै है।

कबै सु गंग तीर की निकुंज में निवास कै,
महेश को प्रणाम कै बिसारि नीच आस कै;
कलत्र-पुत्र देह-गेह-नेह छोड़ि हूँ सबै,
उचारि शंभु शुद्ध मंत्र होयँगे सुखी कबै।

नाम—(३५४१) गंगानाथ झा डाक्टर, महामहोपाध्याय, एल्-एल्० डी० डी०, लिट्०।

जन्म-काल—सं० १९२५ के लगभग।

यह संस्कृत के महान् पंडित हैं। आप इलाहाबाद-विश्वविद्यालय के नौ वर्ष वायस-चैंसलर रहे। आपने संस्कृत के अनेक ग्रंथ रचे

तथा कुछ भाषा के भी गद्य-ग्रंथ गंभीर विषयों पर बनाए; और हाल ही में न्याय-दर्शन तथा वैशेषिक दर्शन-नामक ग्रंथ लिखे हैं। इलाहाबाद-विश्वविद्यालय में डॉक्टर बेनीप्रसाद वैश्य, डॉक्टर रामप्रसाद त्रिपाठी, धीरेंद्र वर्मा आदि भी हिंदी के सुलेखक हैं।

नाम—(२५४२) रामसिंहजी के० सी० आई० ई०, राज्य सीतामऊ।

राठौर-कुल-भूषण सीतामऊ-नरेश श्रीराजा सर रामप्रतापसिंहजी का जन्म पौष बदी ५, गुरुवार सं० १९३६ को धार राज्यांतर्गत काछी-बड़ौदा-नामक ग्राम में हुआ। श्रीमान् ने १२ वर्ष की अवस्था से इंदौर, डेली-कॉलेज में शिक्षा पाई। वहाँ का शिक्षण आपने सं० १९५५ में संपूर्ण किया, और तत्पश्चात् माल-संबंधी काम आपने भरतपुर में सीखा। वहाँ के तत्कालीन हाकिम बंदोबस्त सरमाइकेल ओडायर ने आपके काम के विषय में बहुत प्रशंसा की। भारत-सरकार ने निकटसंबंधी जानकर श्रीमान् शार्दूलसिंहजी के वैकुंठवास होने पर, आपको सीतामऊ-राज्य का अधिकारी माना, और आपका राज्यारोहण सं० १९५६ में बड़े समारोह से हुआ। राजशासन-कला की दृष्टि से इनका जीवन प्रशंसनीय है ही, किंतु हिंदी-साहित्यिक सेवा की दृष्टि से भी इनका चरित्र मौलिक तथा अभिनंदनीय है। आप कवि हैं तथा विद्या-व्यसन आपका मुख्य व्यवसाय है। ब्रज-भाषा तथा संस्कृत दोनो में आप कविता करते हैं। इनकी हिंदी-कविता विशेषतया दो प्रकार के छंदों में विभक्त है—कवित्त और सवैया। इनकी प्रथम कृति 'राम-विलास'-नामक काव्यात्मक ग्रंथ है, और वह सं० १९६३ में प्रकाशित हो चुका है। यह ग्रंथ भक्ति-पूर्ण है। 'राम-विलास' के पश्चात् यथावकाश आपने 'मोहन-विनोद'-नामक दूसरा ग्रंथ रचा। यह नायिका-भेद पर है, और

आपकी शृंगारिक कविता की मौलिकता इससे प्रकट होती है। ग्रंथ अभी अप्रकाशित रूप में है।

आपको काव्यानुराग के अतिरिक्त विज्ञान से भी रुचि है। आपका 'वायु विज्ञान'-नामक तीसरा ग्रंथ भी बहुधा सं० १९६२ ही में प्रकाशित हुआ।

उदाहरण—

(राम-विलास से)

त्रय बांधव संग जितैं तितहीं,
शिशु रूपहि धारि फिरयौ करिए।
रजधानि सबै नर - नारिन के,
नित लोचन लाभ सरयौ करिए।
चित-चोरत तोतरि बातन तें,
पितु - मातु प्रमोद भरयौ करिए।
रघुनाथ सदा यह साज सजें,
मम नेत्र पवित्र करयौ करिए।

(मोहन-विनोद से)

मीन कंज खंजन के भए मद भंग सबै,
'मोहन' निहारे नेक नैनन लुनाई को;
पूरन सरद चंद छीन छवि होत बेगि,
पेखि जाके आनन की सोभा सुघराई को।
चाप चारु बिंबाफल देखि के लजात हिय,
भौंह की बँकाई अरु अधर ललाई को;
रसिक सुजान कान्ह रीझैं क्यों न ऐसी लखि,
राधा गुन-खान की स्वरूप अधिकाई को।

नाम—(३५४३) व्रजनंदनसहाय।

आपका जन्म सं० १९३१ में हुआ। आप ज़िला आरा में

अख़्तियारपूर के कायस्थ क़ानूनगो वंशी बाबू शिवनंदनसहाय के पुत्र हैं। अँगरेज़ी बी० ए० पास करके आप आरा में वकालत करते हैं। आरा-नागरी-प्रचारिणी सभा के मंत्री तथा नागरी हितैषिणी पत्रिका के आप संपादक रहे हैं। भाषा गद्य और पद्य के अच्छे लेखक हैं। कविता प्रशंसनीय होती है। निम्न-लिखित २० ग्रंथ हिंदी में आपके रचित तथा अनुवादित हैं। इनके अतिरिक्त समाचार-पत्रों में आपके लेख तथा कविताएँ प्रायः छपती रहती हैं। इनके ग्रंथों के नाम—

पद्य—(१) हनुमानलहरी, (२) श्रीव्रजविनोद, (३) सत्य-भामा-मंगल, (४) एक निर्जन द्वीपवासी का विलाप।

नाटक—(१) सत्यम् प्रतिमा त्रोटक, (२) उद्धव-नाटक, (३) बूढ़ा वर (गद्य-पद्य-मिश्रित प्रहसन)।

अनुवाद—(१) चंद्रशेखर उपन्यास, (२) कमलाकांत का इज़हार प्रहसन।

(१) अर्थशास्त्र।

समालोचना—चंद्रशेखर उपन्यास की समालोचना।

उपन्यास—(१) राजेंद्र मालती, (२) अद्भुत प्रायश्चित्त, (३) सौंदर्योपासक, (४) आदर्श मित्र।

जीवन-चरित्र—(१) पं० बलदेवप्रसाद की जीवनी, (२) राय-बहादुर बंकिमचंद्र की जीवनी, (३) विद्यापति ठाकुर की जीवनी, (४) बाबू राधाकृष्णदास की जीवनी।

संपादित—मैथिल कोकिल।

आपने भाषा में कई आवश्यकीय विषयों पर रचना की है। आपका कविता-काल सं० १९५६ समझना चाहिए।

× × ×

समय—संवत् १९५७

नाम—(२९४४) लाला कन्नोमल एम्० ए०, साहित्यालंकार।

आपका जन्म आगरे के एक सुसम्मानित वैश्य-घराने में सं० १९३२ में हुआ। आप जाति के गर्ग गोत्रीय अग्रवाल वैश्य थे। एम्० ए० के अतिरिक्त इन्होंने क़ानूनी शिक्षा भी प्राप्त की।

सं० १९५४ के लगभग कॉलेज छोड़ने पर इन्होंने रियासतों में नौकरी स्वीकार कर ली। यह राज्य जोधपुर में ७ वर्ष तक उच्च पद पर रहे, और तब से मृत्यु-पर्यंत यह रियासत धौलपुर में रहे। इस राज्य में आप बहुत काल-पर्यंत शिक्षा-विभाग के उच्च कर्मचारी रहे, और इस लेख के लिखे जाने पर इसी वर्ष कार्त्तिक सं० १९९० में आपका स्वर्गवास हो गया। फिर ज्युडीशल सेक्रेटरी के पद पर सुशोभित हुए। आप दार्शनिक तथा धार्मिक विषयों में बड़ी योग्यता रखते थे, और आपके महत्त्व-पूर्ण ग्रंथ मुख्यतः इन्हीं विषयों पर हैं। आपने आज तक २५ के ऊपर हिंदी-ग्रंथ लिखे। इनके अतिरिक्त लगभग २० ग्रंथ अँगरेज़ी-भाषा में हैं। आपके हिंदी-ग्रंथ ये हैं—(१) गीता-दर्शन (द्वितीय संस्करण), (२) साहित्य-संगीत-निरूपण, (३) हर्बर्ट स्पेंसर की अज्ञेय मीमांसा, (४) हर्बर्ट स्पेंसर की ज्ञेय मीमांसा, (५) भारतवर्ष के धुरंधर कवि, (६) सामाजिक सुधार, (७) अँगरेज़ी-राज्य के सुख, (८) जैन-तत्त्व-मीमांसा, (९) हिंदी-प्रचार के उपयोगी साधन, (१०) प्रश्नोत्तरमाला, (११) कबीर-सुभाषित-रत्नमाला, (१२) सप्त भंगीनय, (१३) हिंदू-सभ्यता की प्रारंभिक शिक्षा, (१४) हिंदी-व्याकरण-बोध, (१५) हिंदी-व्याकरण-सार, (१६) हिंदू-जाति में स्त्रियों का गौरव, (१७) एक्सचेंज, (१८) योग-दर्पण, (१९) वैशेषिक-दर्पण, (२०) न्याय-दर्पण, (२१) सनातनधर्म, (२२) भारतवर्ष का संदेश, (२३) बार्हस्पत्य अर्थशास्त्र, (२४) महिला-सुधार, (२५) विविध विषय-लेखमाला।

ऊपर दिए हुए ग्रंथों के अतिरिक्त समय-समय पर अनेकानेक

विषयों पर आपके कई सार-गर्भित लेख निकल चुके हैं। आपका शरीर-पात १९९० में हुआ।

नाम—(२९४५) गणेशदत्त शास्त्री वाजपेयी, कन्नौज।

जन्म-काल—लगभग १९३५।

आप भारत-धर्म-महामंडल के सबल उपदेशक थे। आपने धर्म एवं दर्शन-शास्त्र-विषयक कुछ ग्रंथ भी लिखे। आपके विचार प्राचीन प्रथा के हैं।

नाम—(२९४६) गंगाप्रसाद गुप्त, काशी।

यह अग्रवाल वैश्य हैं। इनका जन्म-काल सं० १९४२ है। आपने सं० १९५७ से हिंदी-लेखन का कार्य आरंभ किया, और अब तक आप ५६ ग्रंथ रच चुके हैं, जिनमें उपन्यासों का प्राधान्य है। आपके ग्रंथों में मुख्य ये हैं—राजस्थान का इतिहास (पूर्वार्द्ध), बर्नियर की भारत-यात्रा, पन्ना-राज्य का इतिहास, लंका-भ्रमण, तिब्बत-वृत्तांत, कालिदास का जीवन-चरित्र, रामाभिषेक, दुःख और सुख, पूना में हलचल और हिंदी का भूत, वर्तमान और भविष्य। आपने समय-समय पर भारत-जीवन, हिंदीकेसरी, श्रीवेंकटेश्वर-समाचार और मारवाड़ी का संपादन किया, तथा हिंदी-साहित्य-नामक मासिक पत्र निकाला है। गत दस-ग्यारह वर्षों से यह काशी से हिंदी-केसरी-नामक साप्ताहिक पत्र निकाल रहे हैं। आपके बहुतेरे ग्रंथ उपयोगी विषयों पर हैं। आप हमारे एक श्रमशील लेखक हैं।

नाम—(२९४७) जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी, मलयपुर, मुंगेर।

जन्म-काल—सं० १९३२।

ग्रंथ—(१) वसंतमालती, (२) संसार-चक्र, (३) तूफ़ान, (४) विचित्र विचरण, (५) भारत की वर्तमान दशा, (६) स्वदेशी आंदोलन, (७) गद्यमाला, (८) मधुर मिलन आदि अनेक ग्रंथ लिखे हैं।

विवरण—विशेषतया उपन्यास-लेखक। आप बड़े ही मज़ाक़-पसंद सज्जन हैं। हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति हो चुके हैं। विचार आपके पुराने ढंग के हैं।

नाम—(२५४८) जानकीशरण 'स्नेहलता' ग्राम सौर दरियापुर, गया।

जन्म-काल—सं० १९३२।

कविता-काल—सं० १९५७ के लगभग।

ग्रंथ—(१) विरहानल, (२) श्रीहरि-कीर्तनपदावली, (३) गवाष्टक, (४) श्रीहंसकला-सप्तक, (५) नवीन भक्त-माल (१००० छप्पय अप्रकाशित), (६) मानस-उत्तर पद्या-वली (३०० दोहे, अप्रकाशित), (७) स्फुट रचनाएँ।

विवरण—आप कायस्थ-कुलोत्पन्न बाबू श्यामदासजी के पुत्र हैं। आपके पिताजी एक भक्त पुरुष थे, और इन्हीं से आपने साहित्य का ज्ञान तथा रामायण का परंपरागत अर्थ प्राप्त किया है। यह महात्मा श्रीतुलसीदासजी के शिष्य-परंपरा में से हैं। निम्न-लिखित छंदों से इस बात का परिचय मिलता है।

विप्र किशोरीदत्त को ग्रंथकार हो दीन,
अलपदत्त पठि ताहि सों चित्रकूट महँ लीन।
रामप्रतापहिं सो दई लहि तातें शिवलाल,
दत्त फनीशहि जान निज सो दीन्यो सुखमाल।

(मानस मयंककार शिवलाल पाठक)

शेषदत्त सन तासु सुत लहि जानकीप्रसाद,
तिन प्रति श्याम सुदासजी पढ़े सहित अहलाद।
जिन सुत मानस अर्थ युत भावादिक शुभ रीति,
पढ़े पढ़ाए करि कृपा 'स्नेहलता' हि सप्रीति।

(जानकीशरण 'स्नेहलता')

आपने बाबू इंद्रदेव-नारायण-कृत रामायण की टीका का भी संशोधन किया, किंतु यह ग्रंथ अभी अप्रकाशित है। [श्रीयुत रामचरणजी, किशोरी-भवन, मुज़फ़्फ़रपुर, बिहार द्वारा ज्ञात]।

उदाहरण—

राम-राम जपु जीह सदा सानुराग रे,
कलि न बिराग योग जाग तप त्याग रे। १।
राम-राम सुमिरन सब बिधि हीं को राज रे,
नाम को बिसारिबो निषेध शिरताज रे। २।
राम - नाम काम तरु देत फल चारि रे,
कहत पुरान बेद पंडित पुरारि रे। ३।
राम - नाम महामणि, फणि जग - जाल रे,
मणि विना फणि जिए व्याकुल बेहाल रे। ४।
राम - नाम प्रेम परमारथ का साथ रे,
राम - नाम तुलसी को जीवन अधार रे। ५।

× × ×

नाम—(३५४९) व्रजरत्न भट्टाचार्य, मुरादाबाद।

जन्म-काल—सं० १९३२।

ग्रंथ—आपके प्रायः १०० अनुवाद एवं टीका-ग्रंथ हैं।

विवरण—आप बड़े परोपकारी एवं उदार महाशय हैं। रीवाँ से निकलनेवाले 'शुभचिंतक'-नामक पत्र के संपादक रहे।

नाम—(३५५०) भगवानदास।

ग्रंथ—राजा भवानीसिंह प्रकाश [प्र० त्रै० रि०]।

विवरण—दतिया-नरेश की प्रशंसा में बनाया गया।

नाम—(३५५१)—भगवानदीन (दीन) लाला।

आपका जन्म सं० १९३२ में ज़िला फ़तेहपुर के मौज़ा बरवट में हुआ। आप कायस्थ श्रीवास्तव थे। आपने पहले फ़ारसी-भाषा

पढ़ी, तदनंतर उर्दू, हिंदी और अँगरेज़ी एफ़्० ए० तक पास की, और संस्कृत तथा बँगला में भी अभ्यास किया। आपने कायस्थ-पाठशाला इलाहाबाद, गवर्नमेंट स्कूल इलाहाबाद, छतरपुर स्कूल और हिंदू-कॉलेजिएट स्कूल में शिक्षक का काम किया। नागरी-प्रचारिणी सभा के कोष-विभाग में भी इन्होंने कुछ दिन काम किया। गया में लक्ष्मी पत्रिका के संपादक रहे। आप भाषा गद्य तथा पद्य के लेखक और कवि थे। हिंदी के बड़े प्रेमी तथा हित-चिंतक थे। हमारे केवल एक कार्ड भेजने पर आपने स्वरचित ५ पुस्तकें भेजीं, और आपके पास जो हिंदी-साहित्य-इतिहास-विषयक बहुत-सा मसाला जमा था, उसके देने का वचन दिया, तथा और कई उचित परामर्श भी दिए। हम आपके हिंदी-प्रेम तथा उत्साह की मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हैं। आपकी रचित, अनुवादित तथा संपादित पुस्तकें ये हैं—

(१) भक्ति-भवानी (पद्य), आदर्श हिंदू-रमणी (गद्य), (३) धर्म और विज्ञान (अनुवाद), (४) वीर बालक (पद्य), (५) वीर क्षत्रानी, (६) रामचरणांकमाला, (७) वीर प्रताप काव्य, (८) हिम्मतबहादुर-विरदावली (संपादित), (६) राजविलास (संपादित)। (१०) ठाकुर कवि की जीवनी, (११) आनंद-घन, हंसराज, पोहकर और अक्षर अनन्य की जीवनी, (१२) तुलसी-सतसई का पद्य-बद्ध अनुवाद, (१३) भाल रामायण। 'रूस जापान पर क्यों विजयी हुआ'-नामक ग्रंथ पर आपको १००) पुरस्कार मिला। आपने रामचंद्रिका और बिहारी-सतसई का संपादन किया, तथा टीका भी रची, और भी कई टीकाएँ तथा ग्रंथ आपने बनाए। आप हिंदू-युनिवर्सिटी में हिंदी के प्रोफ़ेसर रहे। आपने हिंदी-ग्रंथ-प्रकाशन तथा टीकाएँ रचने में बहुत काम किया। थोड़े दिन हुए आपका स्वर्गवास हो गया। आपकी कविता के उदाहरण में 'वीर प्रताप से' कुछ अंश यहाँ उद्धृत

किया जाता है। अक़बरी फौज़ की आमद सुनकर राणा प्रतापसिंह अपने शूर-वीरों से कहते हैं—

सब वीरों से ललकार के यक बात सुनाई ;
यह आख़िरी बिनती मेरी सुन लो मेरे भाई।
पैदा हुआ संसार में यक रोज़ मरैगा ;
मरना तो मुक़द्दम है न टारे से टरैगा।
फिर इससे भला मौक़ा कहो कौन पड़ैगा ;
रजपूती की क्या गोट का पौ रोज़ अड़ैगा।
पाँसे करो तलवार तबर तीर की यारो ;
रन खेल मरद का है नरद शत्रु की मारो।
पुरषों के बड़े बोल की इज़्ज़त को बचाना ;
माता व बहन बेटी का सत-धर्म रखाना।
निज धर्म व सुर-धामों का सम्मान बढ़ाना ;
तीरथ व महाधामों का सत्कार कराना।
इन कामों में गर जान का डर हो तो न डरिए ;
क्षत्री का परम धर्म है यह ध्यान में धरिए।
दिल में जो हो यकलिंगजी भगवान् का आदर ;
बापा के व सांगा के हों उपकार सरों पर।
बहनों कि व कन्याओं की इज़्ज़त की हो कुछ दर ;
यश लेने का कुछ ध्यान हो निंदा का हो कुछ डर।
श्रीराम की औलाद की इज़्ज़त प नज़र हो ;
तो भाइयों यह वक़्त है बस बाँधो कमर को।

काव्योत्कर्ष की परख पर हमारा इनका मतभेद था। आप बिहारी और केशवदास को देव कवि से श्रेष्ठतर समझते थे।

नाम—(२६६२) श्यामसुंदरदास खत्री (रायबहादुर)।

इनका जन्म आषाढ़ सं० १६२२ में, बनारस में, लाला देवीदास

खत्री के घर हुआ। इनके पूर्व-पुरुष लाहौर-वासी थे, किंतु वे बनारस में रहने लगे। आपने सं० १९५४ में बी० ए०-परीक्षा पास की, और सं० १९५६ से दस वर्ष तक हिंदू-कॉलेज में अध्यापक का काम किया। काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा स्थापित करने में आपने विशेष श्रम किया, और बारह वर्ष से अधिक आप उसके मंत्री रहे। सभा को वर्तमान उन्नत दशा में पहुँचाने में सबसे बड़ा श्रेय आप ही का है। आप ४ वर्ष तक हिंदी-लिखित ग्रंथों के खोज-वाला काम भी करते रहे। खोज की रिपोर्टों से आपकी विद्वत्ता प्रकट होती है। सरस्वती पत्रिका के आप दो वर्ष स्वतंत्र संपादक रहे, और पृथ्वीराज-रासो के संपादन में दो अन्य महाशयों के साथ इनके द्वारा अच्छा श्रम हुआ। 'हिंदी-कोविद-रत्नमाला'-नामक ग्रंथ में आपने ८० लेखकों की जीवनियाँ दी हैं। आपने कई साल परिश्रम करके कई अन्य महाशयों के साथ 'हिंदी-शब्द-सागर'-नामक भारी कोष बनाया। इनके अतिरिक्त कई छोटे-बड़े ग्रंथ आपने बनाए और संपादित किए। आप गद्य-लेखक अच्छे हैं और आपके अन्वेषण महत्त्व-पूर्ण होते हैं। हिंदी के लिये जितना श्रम आपने किया है, उतना बहुतों ने नहीं किया होगा। आपका जीवन हिंदी के लिये बड़ा ही उपकारी है। कई विद्वानों की सहायता से आपने ८ वर्ष के प्रचुर परिश्रम से 'हिंदी-वैज्ञानिक कोष'-नामक एक और भी उपयोगी ग्रंथ तैयार किया। आपमें एक विशेष गुण यह भी है कि आप दूसरों को प्रोत्साहन देकर हिंदी की सेवा में तत्पर करते रहते हैं। बहुत-सी पुस्तकें आपने संपादित की हैं। 'साहित्यालोचन' तथा 'हिंदी-भाषा और साहित्य'-नामक आपके ग्रंथ प्रसिद्ध हैं। गवेषणा और संपादन आपके मुख्य विषय हैं।

समय—संवत् १९५८

नाम—(२९९२) गोकुलप्रसाद, कटनी-मुड़वारा।

जन्म-काल—सं० १९३३।

मृत्यु-काल—सं० १९८३।

रचना-काल—सं० १९५८।

ग्रंथ—(१) रायपुर-रश्मि, (२) दुर्ग-दर्पण, (३) सिवनी सरोजिनी।

विवरण—आप रायबहादुर हीरालालजी (भूतपूर्व डिप्टी-कमिश्नर, मध्य-प्रदेश) के भ्राता थे। आपने बी० ए० तक शिक्षा पाई, और मध्य-प्रदेश में क्रमशः ऊँचे-ऊँचे पद प्राप्त किए। अंत में आप ११००) रु० माहवारी वेतन पर असिस्टेंट कमिश्नर, इनकमटैक्स हो गए। इनको हिंदी-साहित्य से बड़ा प्रेम था, और सरकारी काम में व्यस्त रहते हुए भी इन्होंने ग्रंथ-लेखन बड़ी सफलता-पूर्वक किया। ऊपर लिखे हुए आपके ग्रंथों पर सामयिक मासिक पत्रिकाओं में प्रशंसा-पूर्ण समालोचनाएँ निकल चुकी हैं।

नाम—(२५५४) नंदकुमारदेव शर्मा।

जन्म-काल—सं० १९३९।

रचना-काल—सं० १९५८।

ग्रंथ—(१) युवक-शिक्षा, (२) बालवीर-चरितावली, (३) इटली की स्वाधीनता, (४) सिक्खों का उत्थान और पतन, (५) पंजाब-केसरी महाराजा रणजीतसिंह, (६) पंजाब-हरण, (७) वीर केसरी शिवाजी, (८) लोकमान्य तिलक, (९) पत्र-संपादन-कला, (१०) महाराणा प्रतापसिंह, (११) लाजपति-महिमा, (१२) महात्मा गोखले, और (१३) स्वामी विवेकानंद।

विवरण—आपकी जन्म-भूमि मथुरा है। कार्य्य-वश कलकत्ता में निवास करते हैं। आप ज्ञानसागर, शर्मन-समाचार, स्वदेश-बंधु, आर्यमित्र आदि कई पत्रों के संपादक रह चुके हैं तथा उत्कृष्ट गद्य-लेखक हैं। आपके ग्रंथों के विषय बहुत उपादेय और श्लाघ्य हैं। ऐसे ही ग्रंथों की आज आवश्यकता है।

नाम—(२५५५) परमानंद भाई।

जन्म-काल—सं० १९३३।

ग्रंथ—(१) गीतामृत, (२) मेवा-संदेश, (३) वीर बैरागी, (४) आप बीती, (५) योरप का इतिहास, (६) भारतवर्ष का इतिहास, (७) हिंदू-जीवन का रहस्य। 'आकाशवाणी' साप्ताहिक पत्रिका के संपादक रहे।

विवरण—करियाला, ज़िला झेलम-निवासी भाई ताराचंद के पुत्र हैं। आप देश-हित-संबंधी कामों में सदैव लगे रहते हैं। आप आर्य्य-समाज के नेता हैं, और शुद्धि तथा संगठन का काम बड़ी मुस्तैदी से कर रहे हैं। हिंदू-सभा के आप स्तंभ-रूप हैं। देश में आपका बड़ा नाम है। आपके ग्रंथ बहुत उपादेय तथा सुपाठ्य और शिक्षाप्रद हैं।

नाम—(२५५६) भवानीदास कायस्थ खरे 'सुशील कवि' तालबेहट (झाँसी)।

कविता-काल—सं० १९५८।

ग्रंथ—(१) सत्यनारायण व्रत-कथा का अनुवाद, (२) श्रीमद्भागवत पुराण (पृष्ठ-संख्या प्रायः २०००, अप्रकाशित)।

उदाहरण—

प्रथम जन्म जिन दान न दीन्हा;
ह्वै कंगाल जन्म तिन्ह लीन्हा।
पेट भरन चिंता निशि वारा;
पावत जीव कष्ट संसारा।

× × ×

दारा सुवन आपने जानहिं;
निज समर्थ तिन हित धन आनहिं।

× × ×

नारि विवश निशि बासर रहई ;
माता-पितहि बचन कटु कहई ।

नाम—(३५५६ अ) छमापति चंदिकाप्रसादसिंह 'प्रवीण', काशीपुर, ज़िला उन्नाव ।

जन्म-काल—सं० १९३८ ।

रचना-काल—सं० १९५८ (अनुमानतः) ।

मृत्यु-काल—सं० १९७८ ।

ग्रंथ—(१) काव्य-कांता (रीति-ग्रंथ, १५०० छंद), (२) रस-भास्कर, (३) अलंकार-चंद्रोदय, (४) सीता-स्वयंवर-सरोज (नाटक), (५) विनोद - कौमुदी, (६) गीतामृत - शतक, (७) रामचंद्राभ्युदय, (८) यशवंत-पीयूष, (९) वियोग-वल्ली, (१०) शृंगार-सरोज ।

विवरण—आप वैश्य क्षत्रिय श्रीयुत बच्चूसिंह के पुत्र थे। [श्रीकुँवर बाबूसिंह क्षत्रिय, पिपरसंड (ज़िला लखनऊ) के द्वारा ज्ञात] । उन्हीं के पास इन कवि के कतिपय ग्रंथ हैं । ऊपर दिए हुए ग्रंथ अभी अप्रकाशित रूप में हैं । आप एक सुकवि हैं ।

उदाहरण—

सहत न कोऊ तेरे बल की प्रबल आँच,
मेरे जान साँचहू पिए है रन हाला तैं ।
'चंद्रिकाप्रवीण' सर चंद्र की चपेट चोट;
खंडित कपाल करै कंदुक उछाला तैं ।
बाहैं अभिमन्यु की सराहै गुरु द्रोण अस,
दोनो दल बीच एक बीर है निराला तैं ।
कटि, कर, तुंडन, वितुंडन की झुंडन को ;
दीनी है चमुंडन को मुंडन की माला तैं ।

समय—सं० १६५६

नाम—(२५५७) अमरकृष्ण चौबे (अमर)।

जन्म-काल—अनुमान से सं० १६३६।

यह प्रसिद्ध महाकवि बिहारीलालजी के वंश में हैं। इनका संबंध बिहारी से इस तरह है। छंद इन्हीं के हैं।

प्रथम बिहारीदास प्रकट जिन सप्तसती कृत,
बिसद ज्ञान के धाम कहूँ लवलेश न दुरमत;
तिनके गोकुलदास तनय तिहि खेमकरन गनि,
दयाराम सुत तासु बहुरि तिनके मानिक भनि;
पुनि भे गनेस तिनके तनय बालकृष्ण तिनके भएउ,
गुन निपुन चतुरता सहन सो कविता तिय नायक कहेउ।१।
तिनके भो अति मंदमति कविजन किंकर जानि,
विद्या बिमल विवेक बिनु अमरकृष्ण पहिचानि।२।

यह बूँदी-दरबार के राजकवि हैं। कविता इनकी सरस होती है।

उदाहरण—

आरति हरन निगमागम बखानै तोहि,
भारी निज बिरद प्रभाव क्यों पसारै ना;
अमर भनत गुनहीन जन दीन जानि,
मीन ज्यों बिहीन बारि खीनता बिसारै ना।
अतुल उदार त्रिपुरारि प्रान प्यारे जग,
जलधि अथाह पेखि चित्त धीर धारै ना;
कारन सकल कलि बारन पै सिंह रूप,
तारन कहाय नाम काहे पार पारै ना।

नाम—(२५५८) कमलाप्रसाद वर्मा, पटना।

जन्म-काल—सं० १६२६।

रचना-काल—सं० १६५६ के लगभग।

ग्रंथ—(१) कुल-कलंकिनी, (२) भयानक भूल, (३) पर-लोक की बातें, (४) आध्यात्मिक रहस्यों में सामाजिक जीवन, (५) विवेकानंद की जीवनी, (६) रोम का इतिहास, (७) राजनीतिक विकास, (८) पाटलिपुत्र का ऐतिहासिक महत्त्व, (९) अनोखा रंडीबाज़ (पद्य), (१०) अभिमन्यु का आत्मदान (खंड काव्य) आदि ग्रंथ तथा लेख।

विवरण—आप श्रीवास्तव कायस्थ (दूसरे) श्रीयुत महावीर-प्रसादजी के पुत्र हैं। आपकी माताजी सुशिक्षिता थीं। इसी से बाल्यावस्था से ही आपको हिंदी-साहित्य से अनुराग हो गया। यह पहले हाज़ीपुर में रहते थे, और पश्चात् पटने में निवास करने लगे। आपने हिंदी के अतिरिक्त संस्कृत तथा अँगरेज़ी में भी ज्ञान प्राप्त किया है। विहार-प्रांत में हिंदी-साहित्य का प्रचार करने का श्रेय आपको बहुत कुछ है। कुछ काल तक यह 'विहार-बंधु'-नामक साप्ताहिक पत्र के संपादक थे। कहा जाता है कि मुक्तावली काव्य-ग्रंथ के कर्ता विद्यारत्न पं० विजयानंद को यह अपना गुरु मानते थे।

उदाहरण—

(निर्बल-सेवा से)

गंगा की धारा बैठ घाट पर निरखो,
जो गई, सदा के लिये न आई फिर वो।
विश्राम-हीन वह कल-कल करती धारा,
दौड़ी है जाती तनिक न चलता चारा।
पीछे देती थपकियाँ करोड़ों आती,
हैं लगातार बस यही समा दिखलाती।
जीवन की धारा उसी तरह हे भाई,
भूमंडल में अज्ञात स्रोत से आई।
टकराकर बुद-बुद बने—जीव भी बनते,

कुछ समय फुदकते ऐंठ अकड़कर चलते।
पर फिर तुरंत ही टूट किधर हैं जाते,
नहिं तनिक किसी को पता कभी बतलाते।
कैसा कहकहा दिवार यार है जीवन,
होते ही जिसके पार, न आता कुछ वन।
नहिं आदि-अंत का पता संत घबराते,
ज्ञानी - विज्ञानी खोज - खोज मर जाते।

नाम—(२५५९) गंगाप्रसाद एम्० ए० डेपुटी-कलेक्टर, गोरखपुर में थे। अब सरकारी नौकरी छोड़कर टेहरी-राज्य में जुडीशल मेंबर हैं।

जन्म-काल—१९३४।

ग्रंथ—(१) ज्योतिष-चंद्रिका, (२) सूर्य - ससारववर्णन। अँगरेज़ी में आपने ईसाई और मुस्लिम-धर्मों पर हिंदू-मत का ऋण एक बड़े ग्रंथ में दिखलाया है।

विवरण—आपके ग्रंथ विद्वत्ता-पूर्ण हैं।

नाम—(२५६०) देवीप्रसाद शुक्ल बी० ए०।

यह कानपुर, मोहल्ला कुरसवाँ के निवासी एक सज्जन, उत्साही पुरुष और हमारे परम मित्र हैं। आप गद्य हिंदी अच्छी लिखते हैं। एक साल सरस्वती पत्रिका का आपने बड़ी योग्यता से संपादन किया, और कान्यकुब्ज-सभा एवं पत्र में भी बड़ा काम किया। आपका जन्म सं० १९३४ में हुआ। आप कानपुर के कॉलेज में अध्यापक थे, तथा इलाहाबाद-विश्वविद्यालय में आजकल यही काम करते हैं। देश-हित के कार्यों में आप सदैव तत्पर रहते हैं। इस समय आप प्रयाग-हिंदू-बोर्डिंगहौस के वार्डन भी हैं। आप बड़े ही सज्जन पुरुष हैं।

नाम—(२५६१) बदरीप्रसाद त्रिपाठी, नवीनगर, जिला सीतापुर

जन्म—संवत् १९३४ वि० ।

यह महाशय कान्यकुब्ज ब्राह्मण शिवराजपुर के तिवारी हैं । आप रियासत नवीनगर कटेसर से पेंशन पाते हैं । समय-समय पर आपने बहुत-सी प्रासंगिक कविताएँ कीं । इसके अतिरिक्त आपने दो स्वतंत्र ग्रंथ भी लिखे—अर्थात् (१) बदरी-संहिता और (२) आत्मरामायण । इनका काव्य ऐतिहासिक होने के कारण रोला छंद प्रधान है, जिसका उदाहरण निम्न-लिखित है । आपके पुत्र अनूपजी भी सत्कवि हैं ।

बदरी-संहिता

जरी ना वा घरी जा छन लिख्यो पत्र दिवान ;
जैचंद कनउजराय जाच्यो गोर देश कुशान ।
हेतु फूकन गेह पृथ्वीराज वश संयोग ;
बरी संयोगिन स्वयं भय प्राप्त मन संभोग ।
पाय ऐसी आणि जागी जोगिनी परचंड ;
लाँघि खैबर चली भारतखंड जारन चंड ।

नाम—(३५६२) रघुनाथसिंह बी० ए० ठाकुर ।

यह बारावंकी में वकालत करते थे । आपका जन्म सं० १९३४ में शाहपुर में हुआ । आपके पिता ठाकुर पिरथासिंह एक प्रतिष्ठित ज़मींदार थे । आपने गद्य और पद्य दोनो में रचना करने का अभ्यास बालकपन से ही रक्खा । स्फुट छंदों के अतिरिक्त आपने लखनऊ-वर्णन छंदों में लिखा था, जो सरस्वती पत्रिका में निकला । आपकी कविता मनोहर होती थी । आपका शरीरांत सं० १९८९ में हुआ ।

उदाहरण—

फ़ैशन नूतन और पुरानो इन सबमें लखि लीजै ;
चौक जाय शाही को अनुभव पूरन मन सों कीजै ।
ठक्स नवाबी लंबे पट्टे चूड़ीदार दुटंगा ;

कान फुरेहरी हाथ रुमलिया जूता रंग बिरंगा।
बने लिफाफा ऊपर चितवैं फूँकहु सों उड़ि जावैं;
घर में बेगम नंगी बैठी आप नवाब कहावैं।
ऊँचे महल गली सकरी अति कोठे नरक कि दूती;
सबक पढ़ाय छीनि धन सरबस पीछे मारैं जूती।
इत सित चलदल असित श्वान सह भैरवनाथ विराजैं;
तेजपुंज अभिराम श्याम तन कोटि काम छबि लाजैं।
प्रति रविवार देव-दरसन लगि होति इहाँ बड़ि भीरा;
गुरु रवि द्यौस भीर-भारन चपि धरति धरनि नहिं धीरा।

नाम—(२५६३) रामावतार पांडेय एम्० ए० (साहित्याचार्य) पटना।

जन्म-काल—सं० १९३४।

ग्रंथ—(१) योरपीय दर्शन, (२) हिंदी-व्याकरणसार आदि अनेक ग्रंथ रचे हैं।

विवरण—आप धुरंधर पंडित एवं सरल और निष्कपट पुरुष थे। पटना-युनिवर्सिटी में कार्यकर्ता तथा साहित्य-सम्मेलन के सभापति थे। आपका शरीरांत लगभग १९८७ में हुआ। गद्य के सुलेखक थे।

नाम—(३५६४) सुंदरलालजी कटरा, प्रयाग।

जन्म-काल—सं० १९३४।

ग्रंथ—(१) बालोपदेश, (२) बाल-पंचतंत्र, (३) बालगीतावलि, (४) बालस्मृतिमाला, (५) बाल-भोज-प्रबंध, (६) बाल-रघुवंश, (७) योगवाशिष्ठसार, (८) रामाश्वमेध, (९) भारत में अँगरेज़ी-राज्य (यह ग्रंथ ज़ब्त हो गया है)।

विवरण—प्राचीन निवास-स्थान धनमऊ, ज़िला मैनपुरी। आप देश-भक्त तथा राष्ट्रीय कार्यकर्ता एवं सुलेखक हैं। कई बार देश-प्रेम के

कारण जेल जा चुके हैं। व्याख्यान भी आप प्रवाह धारा से देते हैं। आपके ग्रंथ देश-भक्ति-पूर्ण तथा चरित्र-शोधक हैं।

समय—संवत् १९६०

नाम—(३२६५) अजमेरीजी।

जन्म-काल—१९३५ के लगभग।

रचना-काल—१९६०।

रचना—ओड़छा-राजवंश, बुंदेलखंड-वर्णन, समुद्र-वर्णन आदि अनेक छोटे-बड़े ग्रंथ हैं।

विवरण—यह महाशय चिरगाँव, ज़िला झाँसी-निवासी मुसलमान हैं। इनके पूर्व-पुरुष भाट थे और यह वैष्णव हैं। देखकर कोई इन्हें अहिंदू नहीं कह सकता। आशुकवि तथा सभा-चतुर हैं। औरों की बोली, बाजों आदि की ध्वनियाँ सुगमता-पूर्वक मुख से उतार सकते हैं। वर्तमान ओड़छा-नरेश ने ५०) मासिक नियत कर दिए हैं, और इन्हें वहाँ साल में दो ही बार जाना पड़ता है। आपका साहित्य देश-भक्ति-पूर्ण, रोचक, सरस, नव विचार-युक्त, गंभीर तथा उत्कृष्ट है। वर्तमान कवियों में आपका पद उच्च है।

उदाहरण—

ओ अपार जल-राशि सर्वदा उथल-पुथल क्यों होती है ?
ओ उन्मादिनि, क्या क्षण-भर भी कभी नहीं तू सोती है ?
देवि दूर से दीख रहा है हिल्लोलित हृदय स्पंदन;
साथ-साथ ही सुन पड़ता है कोमल कंठ करुण क्रंदन।
आतीं और लौट जाती हैं भग्न भावनाएँ तेरी;
जाती हैं, गिरती हैं, फिर भी करतीं हैं फिर-फिर फेरी।
क्षण-भर भी न छिपा रहता है उद्वेलित उर का उच्छ्वास;
अश्रु धार प्रतिपल पड़ती है पैरों पर पैरों के पास।

नाम—(२५६६) इंदुबालादेवी, बी० ए० ।

कविता—स्फुट छंद ।

उदाहरण—

तुझे बुलाऊँ धरूँ सामने तेरे मैं क्या अपनी भेट ;
तुझे रिझाऊँ कैसे प्रभुवर ! यह चिंता करती आखेट ।
मेरी छिन्न-भिन्न वीणा में नहीं प्रभो ! मीठी झंकार ;
मुरली में मृदु तान नहीं है, है केवल भीषण हुंकार ।
शब्द-शब्द में भरा हुआ है मेरा रोदन और विलाप ;
हो करुणेश ! इसे सुन करके नहीं पसीजोगे क्या आप ?

नाम—(२५६७) कन्हैयालाल माथुर ।

जन्म-काल—सं० १९३८ ।

कविता-काल—सं० १९६० ।

यह कायस्थ महाशय माथुर स्टेशन 'वसवा', रियासत जयपुर (राजपूताना) के रहनेवाले हैं । (इलाक़े राज जयपुर में हमारा गाँव है वसवा—नहीं आबोहवा में जिसका सानी शह्र या क़स्बा) व्रजभाषा तथा उर्दू में कविता किया करते हैं । इनके पिता किशोरीलालजी तथा पितामह गूजरमलजी कविता के रसिक थे । इनकी भी बचपन से कविता की ओर रुचि रही । आप सैकड़ों ग्रंथ प्राचीन कवियों के हस्त-लिखित व मुद्रित देखकर संग्रह करते रहते हैं । इनके मकान 'वसवा' के पुस्तकालय में ५-६ हज़ार के लगभग पुस्तकें हैं । इनके रचे हुए हिंदी में 'माथुर-प्रेम-पताका' तथा उर्दू में नावेल 'तरंग नौजवानी' हैं । आप श्रीविष्णु स्वामी संप्रदाय के शिष्य हैं । कुछ दिनों रियासत जयपुर की पुलिस में थानेदार रहे हैं ।

उदाहरण—

आपस में न करो चुग़ली, न करो अपने मुख आप बड़ाई ;
नाहिं हँसो अँगहीनन को, न लखो पर-नारिन सुंदरताई ।

भीर समै नहिं हारिए हिम्मत, नाहिं बनो जग के दुखदाई ;
'माथुर' हैं सुख के सब यार, भजो वृषभान-कुमारि-कन्हाई ।

नाम—(२५६८) गयाप्रसादजी (सनेही) कानपुर-निवासी ।

जन्म-काल—सं० १९३५ के लगभग ।

रचना-काल—सं० १९६० ।

रचना—स्फुट छंद ।

विवरण—आप कानपुर-साहित्य-समाज में गुरुवत् माने जाते हैं । छंद भी अच्छे बनाते हैं । सुकवि के संपादक हैं । आपके पढ़ने का ढंग अच्छा है । कवि-सम्मेलनों में प्रायः सभापति होते हैं । आपकी रचना उच्च श्रेणी की है। त्रिशूल के नाम से उद्दंड राजनीतिक साहित्य भी रचा है ।

नाम—(२५६९) गोपालदेवी ।

ग्रंथ—उपसंपादिका गृहलक्ष्मी । इनके पति भी लेखक हैं । गोपालदेवी ने स्त्रियों के पढ़ने योग्य कई ग्रंथ लिखे हैं ।

नाम—(२५७०) देवकीनंदन मिश्र (सनाढ्य) ग्राम फुटेरा (झाँसी) ।

जन्म-काल—सं० १९२२ ।

कविता-काल—सं० १९६० ।

विवरण—कवींद्र केशवदासजी के वंशज ।

ग्रंथ—(१) रामाष्टक, (२) कालिकाष्टक, (३) स्फुट छंद-संग्रह ।

एकन कों बल तात सुमात के,
एकन भ्रात सुसाह दिसान के ;
कोउ सुरूप गुमान भरे,
कोउ भूप बड़े बल जंग-जहान के ।

कोउ प्रवीन मृदंग सुबीनन,
कोउ महा निज गान सुतान के ;
'देवकिनंदन' हैं शरणागत,
श्रीरघुनंद की आन के बान के।

नाम—(३९७० अ) देवनारायण क्षत्रिय सटवा, जौनपुर, हाल राज्य कालाकाँकर ज़िला प्रतापगढ़ (लला)।

ग्रंथ—(१) रामेश-मनोरंजनी, (२) वियोग-वारिधि, (३) बंधुविछोह, (४) पावन-पंचाष्टक, (५) वंशार्णव, (६) अखंड इतिहास, (७) प्रेम-पदावली, (८) शृंगार-आरसी।

जन्म-काल—सं० १९३४।

रचना-काल—सं० १९६०।

विवरण—पद्य और गद्य में उत्कृष्ट काव्य किया है।

गंग-तरंग उठैं कच-बीच में, अंग उमा अरधंग बसी है ;
नंग है अंग अनंग है संग भुवंगम भूषण भाल ससी है।
प्यारे लला पग सेवत ही तव सेवक की विपदा बिनसी है ;
संकर आय सहाय करौ अब मेरी हँसी नहिं तेरी हँसी है।

बरजो रहत नहिं गरजो करत नित,
हरजो हमारो होत सुनि केरि छम-छम ;
जुगनू चमाकैं चहु चातकी अलापैं अलि,
धुरवा धरा पै धरो दरदरी दम-दम।
घहरि - घहरि आवैं ठहरि - ठहरि जायँ,
पहरि - पहरि उठैं गगन में घम - घम ;
बिज्जुगन बिरही बिचारी उर चीरन को
तीरन को लीन्यो मनो प्यारे लला चम-चम।

नाम—(३९७१) नरदेव शास्त्री, गुरुकुल-महाविद्यालय, ज्वालापुर।

जन्म-स्थान—निज़ामराज्यांतर्गत कर्नाटक प्रदेश ।

ग्रंथ—(१) आर्य-समाज का इतिहास भाग १, (२) आर्य-समाज का इतिहास भाग २, (३) आर्य-समाज का इतिहास भाग ३ (अप्रकाशित), (४) गीताविमर्श, (५) कारावास की कहानी, (६) ऋग्वेदालोचन ।

विवरण—आप ऋग्वेदी देशस्थ महाराष्ट्र ब्राह्मण हैं । आपकी प्रारंभिक शिक्षा पूने के नूतन मराठी विद्यालय (न्यू पूना-कॉलेज) में हुई । इसके पश्चात् आपकी उच्च शिक्षा पंजाब में हुई, और वहाँ से आप सं० १९५५ में एन्ट्रेंस तथा सं० १९६० में शास्त्री परीक्षाओं में उत्तीर्ण हुए । कलकत्ता से इन्होंने सं० १९६२ में वेदतीर्थ की उपाधि प्राप्त की । कुछ काल तक गुरुकुल कांगड़ी तथा गुरुकुल वृंदावन में यह महाशय आचार्य रह चुके हैं । 'भारतोदय' तथा 'शंकर' साप्ताहिक पत्रों के संपादन का भी इन्होंने काम किया है । आजकल आप राजनीतिक तथा शिक्षा-संबंधी काम कर रहे हैं । आपके समाजी ग्रंथ विद्वत्ता-पूर्ण एवं सुपाठ्य हैं ।

नाम—(३५७२) बाबूराव विष्णु पराड़कर ।

जन्म-काल—सं० १९३८ के लगभग ।

रचना-काल—सं० १९६० ।

विवरण—आप काशी से निकलनेवाले दैनिक 'आज' के संपादक और यशस्वी लेखक हैं । दैनिक 'भारतमित्र' के संपादक भी रह चुके हैं । आपके सभापतित्व में सर्व-प्रथम संपादक-सम्मेलन हुआ ।

नाम—(३५७३) याज्ञिकत्रय, शाहपुरा, अलीगढ़ ।

रचना-काल—सं० १९६० ।

रचना—स्फुट लेख प्रचुरता से ।

विवरण—मयाशंकर याज्ञिक चचा हैं, तथा जीवनशंकर और

भवानीशंकर भतीजे हैं। इन महाशयों के लेख बहुधा खोज, इतिहास, पुरातत्त्व आदि पर होते हैं। जीवनशंकरजी स्वार्थ-पत्र के संपादक भी थे। आप महाशयों ने कई कवियों के विषय में विनोद-संबंधी कार्य में हमारी सहायता की, जैसा कि स्थान-स्थान पर लिखा हुआ है। आपके लेखों में खोज, विद्वत्ता और श्रमशीलता के उदाहरण मिलते हैं।

नाम—(३५७४) रामनारायण मिश्र सांख्यरत्न तथा काव्य-तीर्थ, आरा, हाल छपरा।

जन्म-काल—सं० १९४३।

कविता-काल—सं० १९६०।

ग्रंथ—(१) जनक-बाग-दर्शन नाटक, (२) कंस-वध-नाटक, (३) विरुदावली, (४) भक्ति-सुधा, (५) स्फुट काव्य गद्य तथा पद्य।

विवरण—संस्कृत के बहुत अच्छे विद्वान् हैं। सरकार से काव्य-तीर्थ तथा कलकत्ता-युनिवर्सिटी से सांख्यरत्न की उपाधि मिली। भाषा गद्य तथा पद्य के आप अच्छे लेखक हैं। दो नाटक भी आपने बनाए हैं।

नाम—(३५७५) रूपनारायण पांडेय, लखनऊ।

जन्म-काल—सं० १९४१।

रचना-काल—सं० १९६०।

ग्रंथ—(१) शिवशतक, (२) श्रीकृष्णमहिम्न, (३) गीत-गोविंद की टीका, (४) रमा उपन्यास, (५) पतित-पति उपन्यास, (६) गुप्तरहस्य उपन्यास, (७) हरीसिंह नलवह, (८) आँख की किरकिरी उपन्यास, (९) फूलों का गुच्छा, (१०) चौबे का चिट्ठा, (११) नीति-रत्न-माला, (१२) कृष्ण-

लीला नाटक, (१३) तारा उपन्यास, (१४) कृत्तिवासीय रामायण बालकांड, (१५) रसिकरंजन पद, (१६) आचार प्रबंध, (१७) प्रसन्न राघव नाटक, (१८) शुकोक्तिसुधासागर, (१९) रंभा-शुक-संवाद, (२०) बाल कालिदास, (२१) चंद्रप्रभ-चरित, (२२) आशा कानन, (२३) पत्र-पुष्प आदि ।

विवरण—भारत धर्म महामंडल में निगमागम-चंद्रिका का कुछ दिन तथा माधुरी और सुधा का कई साल संपादन किया है। आपने बहुत-से बँगला-नाटक और उपन्यासों के अनुवाद किए हैं, तथा कुछ मौलिक ग्रंथ भी लिखे हैं। आप अच्छे गद्य-लेखक तथा सुकवि हैं। यदि जीविका साधनार्थ आपको अनुवादों पर ही बहुत अधिक ध्यान न देना पड़ता, अथच मौलिक ग्रंथों की ओर आप झुकते, तो संभवतः परमोच्च श्रेणी के कवि होते।

उदाहरण—

बुद्धि-विवेक की जोति बुझी, ममता-मद-मोह-घटा घनी घेरी ;
है न सहारो, अनेकन हैं ठग, पाप के पन्नग की रहै फेरी।
त्यों अभिमान को कूप इतै, उतै कामना-रूप सिलान की ढेरी ;
तू चलु मूढ़ सँभारि अरे मन, राह न जानी है, रैनि अँधेरी।

नाम—(२५७५ अ) लक्ष्मणाचार्य महंत वाणीभूषण। नरसिंह देवला, ज़िला अमझेरा।

जन्म-संवत् १९३४।

रचना-काल संवत् १९६०।

ग्रंथ—(१) अद्भुत रामायण, (२) शिक्षा-शतक।

विवरण—आप रियासत ग्वालियर में श्रीलक्ष्मीकांत नरसिंह देवला के महंत हैं। ग्वालियर की मजलिस आम के मेंबर हैं। आप एक सुकवि हैं।

उदाहरण—

विराजे वे निकुंज में श्याम।
चहुँदिशि ललित लताएँ लहरत कदँब छाँह अभिराम।
मधुर-मधुर कालिंदी कलरव ढिग स्रवनन सुख दैन ;
केकी कूक लगाय थिरकिहैं चले बलैया लैन।
कटि पट पीत किए हैं धारन अरु पटुका थहरात ;
बनमाला चरनन लौं हलरत जन-मन-मधुप सुहात।
अलकावली कपोलन छिटकी जनु कोमल शिशु व्याल ;
शोभित मुकुट शीश पै जगमग कलगी भुकी विशाल।
मकराकृति कुंडल श्रवनन महँ भाल तिलक की रेख ;
आभा पसरि रही है चहुँदिशि लजत भानु छवि देख।

संवत् १६४५ से ६० तक के शेष कविगण

समय—संवत् १६४५

नाम—(२५७६) गिरिधारी सांतनपुरा अवधवासी।

ग्रंथ—श्रीकृष्ण-चरित्र। [तृ० त्रै० रि०]

समय—सं० १६४५।

नाम—(२५७७) गुरुदयाल त्रिपाठी वकील, रायबरेली।

जन्म-काल—सं० १६२५ के लगभग।

रचना-काल—सं० १६४५।

विवरण—आप कई वर्ष तक 'कान्यकुब्ज हितकारी' के संपादक रहे और, इस समय रायबरेली में वकालत करते हैं। कान्यकुब्ज पत्रों में प्रायः लेख लिखा करते थे। हमारे मित्र और परम सज्जन पुरुष हैं।

नाम—(२५७८) गंगाबख़्श ठाकुर ताल्लुक़दार, रामकोट, सीतापुर।

जन्म-काल—सं० १६२०।

ग्रंथ—श्रीकृष्ण-चंद्रिका।

विवरण—साधारण श्रेणी। १९५५ में स्वर्गवासी हो गए।

नाम—(२५७९) दामोदरसहायसिंह, 'कवि-किंकर', सीतलपुर (सारन)।

जन्म-काल— सं० १९११।

रचना-काल—सं० १९४५ के लगभग।

ग्रंथ—(१) सुधा-सरोवर, (२) रसाल, (३) संधि-संदेश, (४) हिंदी-गीता, (५) मातृ-भाव, (६) शिक्षा-निबंधावली आदि।

नाम—(२५८०) दाशरथीदास उपनाम दिव्य।

ग्रंथ— रामलीलासहायक। [पं० त्रै० रि०]

नाम—(२५८१) परसदास बैरागी, ग्राम चंगोई, रियासत बीकानेर।

जन्म-काल—सं० १९२० के लगभग।

ग्रंथ—स्फुट कविताएँ।

विवरण—आप अभी वर्तमान हैं। इन्होंने बीकानेर-राज्यांतर्गत आपूवाला ग्राम-निवासी ठाकुर चतुरसिंह. राष्ट्रवर को संबोधित करके २४ छंद 'चतुर-चौबीसी' नाम से बनाए। उक्त ठाकुर साहब के द्वारा हमें यह कवि ज्ञात हुए हैं।

उदाहरण—

तन को देत न त्रास बचन अमृत-सम बोलै ;
मन में भाव मलीन कबहु नहिं राखै बोलै।
चलै निगम की चाल, छिद्र-छल सारे डाढ़ै ;
लालच ममता कूटि-कूटि घर बाहिर काढ़ै।
सब कूड़ कपट त्यागन करै, रात-दिवस ईश्वर रटै ;
कबि परसदास उन पुरुष को दरस किए पातक कटै।

नाम—(२५८२) भीमसेन ब्राह्मण, गुरुकुल कांगड़ी।

ग्रंथ—योगशास्त्र भाषा।

नाम—(३९८३) मधुरअली (मंजुअली), ग्राम पुरैना, रीवाँ-राज्य।

काल—बीसवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध।

ग्रंथ—(१) युगल-विनोद-पदावली (२०८ पृष्ठों का कविता-संग्रह), (२) युगल-विनोद, (३) युगल-हिंडोल-लीला।

विवरण—आपका जन्म बैस-क्षत्रिय-कुल में हुआ था, और आप माध्व संप्रदाय के साधु हो गए। रीवाँ-नरेश महाराज रघुराजसिंहजी के आप कृपा-पात्र थे। नृत्य तथा गायन-कला में प्रवीण थे। कहा जाता है, नृत्य करते समय प्रायः पद बनाते जाते और गाते जाते थे। इनकी कविता विशेषतया बघेलखंडी हिंदी में हुआ करती थी, जो सखी उपासना के भावों से भरी रहती थी। प्राचीन प्रथा के साधारण कवि थे। [श्रीयुत भानुसिंह बघेल, रीवाँ द्वारा ज्ञात]

उदाहरण—

समर सुबेल तें लगाय लेत लंका-भर,
दोनो दल दीरख देखात बड़े चाय सों;
हँकरि-हँकारि लेत पकरि पछारि देत,
ऐसे भट भारी हैं भिरत बेग बाय सों।
रावण को बेटा निज कुल को दुल्हेटा बेस,
'मंजुअली' जीतन को कीन्हें यज्ञ जाय सों;
लखन लला के हाँके हाय हल कंप माच्यो,
बांच्यो नहिं इंद्रजीत एक हू उपाय सों।

नाम—(३९८४) रघुनाथदास।

ग्रंथ—(१) विप्र सुदामा की गुड़िया, (२) द्रौपदीजू की गुड़िया, (३) स्वामीजू की गुड़िया, (४) हनुमानजी की गुड़िया,

(५) मीरा बाई का चरित्र, (६) मोरध्वज की कथा, (७) रघु-नाथविलास [प्र० त्रै० रि०], (८) हरिनाम-सुमिरनी।

नाम—(३५८५) रसदेव।

ग्रंथ—बृहत्प्रतापमोदतरंगिणी, (२) बृहत्पदविनोद। [पं० त्रै० रि०]

नाम—(३५८६) राखन।

ग्रंथ—सुदामा-चरित्र। [तृ० त्रै० रि०]

विवरण—पाली, ज़िला हरदोई-निवासी थे। किसी शिवग़ुलाम मिश्र के अनुरोध से यह ग्रंथ बना।

नाम—(३५८७) राधाचंद्र चौबे।

ग्रंथ—टीका अनंगरंग। [च० त्रै० रि०]

नाम—(३५८८) रामबख़्श पुरोहित, ग्राम कुलचासर, रियासत बीकानेर।

जन्म-काल—सं० १९२० के लगभग।

ग्रंथ—गंगयशेंदु-चंद्रिका (सं० १९७७)।

विवरण—आप पं० टीकूराम के पुत्र हैं। उक्त ग्रंथ महाराजा गंगासिंह, बीकानेर-नरेश के यशोगान में रचा गया है। (ठाकुर चतुरसिंह राष्ट्रवर, बीकानेर द्वारा हमें ज्ञात)

नाम—(३५८९) रामभरोसे पाँड़े।

ग्रंथ—पद्य व्याकरण-सार। [द्वि० त्रै० रि०]

नाम—(३५९०) रामलाल शर्मा (साधु)।

ग्रंथ—रामचंद्र-ज्ञानविज्ञान-प्रदीपिका। [द्वि० त्रै० रि०]

नाम—(३५९१) लक्ष्मीकांत।

ग्रंथ—गृहवास्तुप्रदीप। [पं० त्रै० रि०]

नाम—(३५९२) लालजी कायस्थ काकोरी, लखनऊ।

ग्रंथ—लक्ष्मीनारायण कवि का जीवन-चरित्र। [द्वि० त्रै० रि०]

नाम—(२५६३) विश्वेश्वरदयाल चतुर्वेदी, मैनपुरी।
जन्म-काल—सं० १६२० के लगभग।
ग्रंथ—महिम्नस्तोत्र का पद्यानुवाद।
विवरण—यह मैनपुरी के प्रसिद्ध 'पच्छैया' खानदान के हैं।
नाम—(२५६४) वेंकटेश स्वामी।
ग्रंथ—आत्मप्रबोध। [प्र० त्रै० रि०]
नाम—(२५६५) शारदाप्रसाद कायस्थ, मैहर।
ग्रंथ—(१) श्रीरत्नमयी, (२) मुक्ति-मोदक, (३) शारदाष्टक, (४) रसेंद्र-विनोद, (५) शारदा-विनय, (६) उर्दू-रामायण, (७) उर्दू-भागवत।
जन्म-काल—सं० १६३०।
विवरण—फ़ारसी तथा संस्कृत के अच्छे ज्ञाता।
नाम—(२५६६) शिवनरेशसिंह ताल्लुक़दार, जगतापुर, ज़िला बहराइच।
ग्रंथ—शृंगार-शिरोमणि। [पृष्ठ २६, द्वि० त्रै० रि०]
नाम—(२५६७) शीलमणि राजकुमार।
ग्रंथ—इश्क़लतिका [च० त्रै० रि०]। अष्टजाम [पं० त्रै० रि०]
नाम—(२५६८) शंभूनाथ मभारी।
ग्रंथ—प्रेममालिका। [द्वि० त्रै० रि०]
विवरण—सरयूप्रसाद के साथ बनाया।
नाम—(२५६६) श्रीगोविंद साहिब।
ग्रंथ—सत्यसार। [पं० त्रै० रि०]
नाम—(२६००) सुधामुखी।
ग्रंथ—हरिजन-जसावली। [पं० त्रै० रि०]
नाम—(२६०१) सुवंस।
ग्रंथ—ढेकी [खोज० सं० १६०२]

नाम—(३६०२) सूर्यनारायण।
ग्रंथ—राजतरंगिणी। [पं० त्रै० रि०]
नाम—(३६०३) संत हजूरी।
ग्रंथ—अवधूत योगसार। [च० त्रै० रि०]
नाम—(३६०४) हीरा सखी।
जन्म-काल—सं० १९२० के लगभग।
ग्रंथ—अनुभव रस।
विवरण—राधावल्लभी।

समय—संवत् १९४६

नाम—(३६०५) अंबिकाप्रसाद त्रिपाठी, फुंदौली नरवल, कानपुर।
जन्म-काल—सं० १९१४।
रचना-काल—सं० १९४६।
मृत्यु-काल—सं० १९७४।
ग्रंथ—(१) प्रबंध-मंजरी, (२) स्वामी भास्करानंदजी का जीवन-चरित्र, (३) मूल-निवासी, ठाकुर प्रयागसिंह का जीवन-चरित्र, (४) आत्म-चरित्र।
विवरण—संयुक्त प्रांत में कुछ समय तक आप सब-डेपुटी इंस्पेक्टर-स्कूल्स थे। [पं० लक्ष्मीकांत त्रिपाठी, क्राइस्ट चर्च कॉलेज, कानपुर द्वारा ज्ञात]
नाम—(३६०६) कन्हैयालाल ब्राह्मण, ग्राम कुर्का, ज़िला गया।
ग्रंथ—(१) पिंगलसार, (२) समस्यापूर्ति, (३) सरल-शुभकरी, (४) विद्या-शक्ति, (५) गया-पद्धति।
जन्म-काल—सं० १९२१।
नाम—(३६०७) गुरुदीन भाट ईसानगर, खीरी।

ग्रंथ—(१) मुनेश्वरबख़्श-भूषण, (२) रणजीत-विनोद, (३) पिंगल।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(३६०८) गोकुलनाथ औदीच्य ब्राह्मण, बनारस।

ग्रंथ—पुष्पवती।

विवरण—गद्य-लेखक।

नाम—(३६०९) गोपालदास देवगण शर्मा, लाहौर।

ग्रंथ—दयानंद-जीवन-चरित्र, संगीतसार। [प्र० त्रै० रि०]

नाम—(३६१०) जानकीदास।

ग्रंथ—अखंडबोध।

कविता-काल—सं० १९५१ के पूर्व।

नाम—(३६११) बलदेवदास कायस्थ खटवारा, ज़िला बाँदा।

ग्रंथ—(१) जानकी-विजय, (२) रामायण विष्णुपदी।

नाम—(३६१२) रंगनारायणपाल ठाकुर, हरिपुर, बस्ती।

ग्रंथ—(१) प्रेम-लतिका, (२) रसिकानंद।

जन्म-काल—सं० १९२१।

विवरण—तोष श्रेणी।

नाम—(३६१३) रामलाल ब्राह्मण ग्राम जीगाँ ज़िला राय-बरेली।

ग्रंथ—४ ग्रंथ भाषा में।

जन्म-काल—सं० १९२१।

नाम—(३६१४) लक्ष्मणसिंह तिवारी, भलसंड।

जन्म-काल—सं० १९२१।

नाम—(३६१५) वाचस्पति तिवारी (चेत) गोनी, ज़िला हरदोई।

ग्रंथ—(१) पंचांगदीपिका व नष्टजन्मदीपिका, (२) मानस-

प्रश्न-दीपिका, (३) कर्मसिद्धांतदीपिका, (४) आश्चर्यदीपिका, (५) गंजीफ़ायकत्तीसी, (६) जादू बंगाल, (७) फ़ारसी-शब्द-संज्ञा, (८) यामिनी योगमालिका, (९) समस्या-प्रकाश, (१०) सत्यनारायण-कथा।

जन्म-काल—सं० १९२१।

नाम—(३६१६) हरिदास, बिजावर।

ग्रंथ—कृष्ण-चरित बरसाइत को। [प्र० त्रै० रि०]

रचना-काल—सं० १९५१ के पूर्व।

नाम—(३६१७) हितप्रीतमदास।

जन्म-काल—सं० १९२५।

रचना-काल—१९४६ के लगभग।

ग्रंथ—(१) हितचंद्र-प्रकाश, (२) वृंदारण्य-विहार, (३) स्फुट पद।

विवरण—राधावल्लभीय संप्रदाय के अनन्य वैष्णव थे।

समय—संवत् १९४७

नाम—(३६१८) कैलाशनाथ वाजपेयी कानपुर।

ग्रंथ—(१) आर्यगीतावली, (२) दयानंद-जीवनी, (३) पौराणिक भ्रांतिहरण, (४) कृष्ण-लीला।

समय—सं० १९४७।

नाम—(३६१९) गोपालदास वल्लभशरण, बिजावर।

ग्रंथ—संगीतसागर।

नाम—(३६२०) गोवर्धनलाल प्रेम कवि।

ग्रंथ—(१) प्रेम-प्रकाश, (२) हितपथदर्शन, (३) प्रेम जगदीश।

विवरण—पहले वृंदावन में रहते थे, फिर मिर्ज़ापूर में रहे।

नाम—(३६२१) गौरीशंकर उपनाम सुधाकर भट्ट।

ग्रंथ—(१) नीति भाषा (१९५२), (२) विश्व-विलास नाटक।

विवरण—दतिया-वासी पद्माकर-वंशज हैं।

नाम—(३६२२) जगदेवलाल।

जन्म-काल—सं० १९१७ के लगभग।

रचना-काल—सं० १९४७।

ग्रंथ—(१) शिवाष्टक, (२) हनुमानाष्टक, (३) रामाष्टक, (४) फाग-राग।

विवरण—शरीरांत हो गया है। संगीत तथा कला-प्रेमी, भगवद्भक्त सज्जन सदाचारी थे। बाँसडीह बलिया के श्रीवास्तव कायस्थ थे। चारो धामों की यात्रा कर आए थे।

नाम—(३६२३) जयपाल महाराज।

ग्रंथ—रसिक-प्रमोद।

जन्म-काल—सं० १९२२।

विवरण—शूजा ज़िला मुंगेर-वासी।

नाम—(३६२४) (महाराज) जवानसिंह (जी)

ग्रंथ—(१) रस-तरंग, (२) नख-सिख, (३) स्फुट कविता।

रचना-काल—सं० १९५० के लगभग।

परिचय—महाराज पृथ्वीसिंहजी के पुत्र तथा वर्तमान महाराजा के पिता थे। यह परम वैष्णव श्रीकृष्ण के उपासक थे।

उदाहरण—

घन सो नोपत घुरत हैं बिज्जुलता-सी बाल;
इंद्र-धनुप पट लसत मनु बूढ़नि बेंदी भाल।

नाम—(३६२५) दामोदर उपनाम उरदाम चौबे।

ग्रंथ—उरदाम-प्रकाश। [च० त्रै० रि०]

रचना-काल—सं० १९४७ के पूर्व।

नाम—(३६२६) देवीदत्त ब्राह्मण जैधी, पो० विहार।

जन्म-काल—सं० १९२२ ।

नाम—(३६२७) पीतांबर भट्ट ओरछा के राजकवि ।

ग्रंथ—प्रताप-प्रभाकर । [प्र० त्रै० रि०]

विवरण—पद्माकर-वंशज । अब प्रायः ७० साल के हैं ।

नाम—(३६२८) भगवंत चरखारी-वासी ।

ग्रंथ—हनुमत-पचासा ।

रचना-काल—सं० १९५२ के पूर्व ।

नाम—(३६२९) भैरववल्लभ ब्राह्मण ।

ग्रंथ—पाप-विमोचन (शिवस्तुति) । [द्वि० त्रै० रि०]

नाम—(३६३०) महीपतिसिंह ठाकुर ।

ग्रंथ—बालविनोद ।

जन्म-काल—सं० १९२२ । मृत ।

नाम—(३६३१) मुंशीलाल ।

ग्रंथ—(१) दरिद्रता से श्रेय, (२) कहानियों की पुस्तक, (३) शील और भावना, (४) शीलसूत्र, (५) छात्रों को उपदेश, (६) क्षत्र-चूड़ामणि-काव्य का हिंदी-अनुवाद ।

विवरण—अग्रवाल जैन लाहौर-कॉलेज में संस्कृत के अध्यापक थे । आपने अब पेंशन ले ली है ।

नाम—(३६३२) यज्ञेश्वर, रामचंद्रपुर ।

ग्रंथ—(१) यज्ञेश्वर-विहार, (२) गणेशमनोरंजनी ।

जन्म-काल—सं० १९२२ ।

नाम—(३६३३) लक्ष्मणाचार्य गोस्वामी वाणीभूषण, मथुरा ।

ग्रंथ—(१) मृतक श्राद्ध-विषयक प्रश्नोत्तर, (२) मुहूर्त-प्रकाश, (३) भीषण भविष्य, (४) वेद-निर्णय, (५) श्राद्ध-

सिद्धि, (६) शिक्षातत्त्व, (७) भारत-सेवा (काव्य), (८) कृषक प्रबोध-शतक ।

जन्म-काल—सं० १९३२ ।

नाम—(२६३४) लक्ष्मीनारायण ।

ग्रंथ—(१) विद्यार्थी बाल-लीला, (२) गोरख-शतक ।

रचना-काल—सं० १९५२ के पूर्व ।

नाम—(२६३५) लालमणि वैद्य रैंटगंज, फ़र्रुख़ाबाद ।

ग्रंथ—प्रमोद-प्रकाश ।

जन्म-काल—सं० १९२२ ।

नाम—(२६३६) शीतलप्रसादसिंह गहरवार इमामगंज, गया ।

ग्रंथ—श्रीसीतारामचरितायन ।

जन्म-काल—सं० १९२२ ।

विवरण—आप सुयोग्य कवि और सज्जन पुरुष हैं ।

नाम—(२६३७) हरिचरणसिंह, अजमेर ।

ग्रंथ—(१) वीर नारायण, (२) बूँदी-राज-चरितावली, (३) पृथ्वीराज-महोबा-संग्राम, (४) अनगपाल-पृथ्वीराज-समय ।

जन्म-काल—सं० १९३२ ।

समय—संवत् १९४८

नाम—(२६३८) अजबदास ।

ग्रंथ—अजबदास के झूलना । [तृ० त्रै० रि०]

रचना-काल—१९४८ (१९५३ की लिखित प्रति मिली)

नाम—(२६३९) अंगदप्रसाद ।

जन्म-काल—सं० १९२२ ।

रचना-काल—सं० १९४८ के लगभग ।

नाम—(३६४०) ईश्वरदत्त, (स्वर्गीय)।

रचना—मानस-दीपिका।

नाम—(३६४१) ईश्वरीप्रसाद तिवारी।

ग्रंथ—(१) भाषा भगवद्गीता, (२) भाषा भागवत।

जन्म-काल—सं० १९२३।

उदाहरण—

तू बैठो ही रामायण नित गावै।
सोतो राम रूप अति सुंदर छिन-छिन मन में ध्यावै।
बालकांड प्रभु-चरण-कमल शुचि जग नंदन सुख छावै;
निर्गुण सगुण सरूप भाव कहि कथा प्रसंग लगावै।
बाल केलि पद ऊर्ध्व भाव लखि घुटना भृगुपति लावै;
ब्याह उछाह अनेक भाँति जहँ उर बिक्रम प्रकटावै।
अति सुंदर कटि देश अयोध्या जहँ सत धर्म दिखावै;
प्रभुता बीर बंधु की करनी सिय पतिब्रत सरसावै।

नाम—(३६४२) कुंदनलाल, फ़तेहगढ़।

जन्म-काल—सं० १९१५।

मृत्यु-काल—सं० १९५१।

विवरण—आपने सं० १९४८ में 'कवि व चित्रकार'-नामक मासिकपत्र फ़तेहगढ़ से निकाला था, किंतु पीछे आपके अस्वास्थ्य के कारण वह बंद हो गया। आप हिंदी के प्रेमी तथा उन्नायक थे। कवि व चित्रकार में समस्याएँ भी रहती थीं, जिनकी पूर्ति में आप कवियों का यथायोग्य सम्मान भी करते थे।

नाम—(३६४३) गोपालदास, आगरा।

जन्म-काल—सं० १९२३।

विवरण—भूतपूर्व संपादक जैनमित्र।

नाम—(३६४४) छोटेलाल कायस्थ, देउरी, ज़िला सागर।
जन्म-काल—सं० १९२३।

नाम—(३६४५) पन्नालाल ब्राह्मण, सुजानगढ़, बीकानेर।
जन्म-काल—सं० १९२३।
ग्रंथ—४० पुस्तकें।
विवरण—भूतपूर्व संपादक जैन-हितैषी।

नाम—(३६४६) पहलवानसिंह, मकरंदनगर, फ़रुख़ाबाद।
जन्म-काल—सं० १९२३।
ग्रंथ—(१) नलोपाख्यान, (२) संक्षिप्त क्षत्रिय-व्यवस्था, (३) राठौर-वंशावली।

नाम—(३६४७) शैलजी ब्राह्मण (शैल), बैरिहा-राज्य, रीवाँ।
जन्म-काल—सं० १९२३।

नाम—(३६४८) सूरतसिंह सुधी कवि।
जन्म-काल—सं० १९३०।
रचना-काल—सं० १९४८।
ग्रंथ—(१) सूरति-विनोद, (२) रसवृष्टि।
विवरण—आपके पिता का नाम रामदीनसिंह था।
उदाहरण—

रति सों रसीली गुन आगरी मनोज भरी,
बैठि कुरसी पै प्रानप्यारी केलि घर में।
सुंदर सँवारि केस देखति मुखारबिंद,
सूरति भनत सुभ्र आरसी लै कर में।
तामें ओप आनन की माँगहू समेत इमि,
सोहै तौन उपमा कहत जौन उर में।
सीस पै त्रिबेनी लै कलंक धोइबे के काज,
मानो धरयो मुदित मयंक मानसर में।

समय—संवत् १९४९

नाम—(२६४९) अनिरुद्धदास।

समय—सं० १९४९।

ग्रंथ—पद्म-पचीसी।

नाम—(२६५०) आत्माराम, बड़ौदा।

जन्म-काल—सं० १९२४।

ग्रंथ—वैदिक विवाहादर्श।

विवरण—आप बड़ौदा-राज्य में शिक्षा के डाइरेक्टर हैं।

नाम—(२६५१) कान्हलाल (कान्ह) गया-क्षेत्र, नवागढ़ी।

जन्म-काल—सं० १९२४।

ग्रंथ—(१) संगीत-मकरंद, (२) सावन मयूर, (३) सुधा-तरंगिणी, (४) आनंदलहरी, (५) जगन्नाथ-माहात्म्य, (६) नख-शिख [खोज १९०३], (७) आनंदसार-रामायण, (८) काम-विनोद, (९) वैद्यनाथ-माहात्म्य, (१०) हास्य-पंच-रत्न, (११) सुहृद्-शिक्षक, (१२) विश्वमोहिनी-संग्रह।

नाम—(२६५२) गजराजसिंह क्षत्रिय, कैमहरा, ज़िला सीतापुर।

जन्म-काल—सं० १९२४।

ग्रंथ—(१) अजिरविहार, (२) घनश्याम घुनघुनिया, (३) समस्या-प्रकाश, (४) गर्भ गीता, (५) छायापुरुष।

विवरण—हिंदी के सिवा आप फ़ारसी में भी कविता करते हैं। कविता अच्छी होती है।

नाम—(२६५३) गोपाललाल खत्री, लखनऊ।

समय—सं० १९४९।

जन्म-काल—सं० १९२५ के लगभग।

रचना—बहुत-से लेख।

विवरण—आपने कई साल तक नागरी-प्रचारक पत्र को घाटा सहकर भी चलाया, यद्यपि आपकी आर्थिक दशा वैसी अच्छी नहीं थी। आप हिंदी के अच्छे लेखक हैं, और आपने कई उपन्यास आदि लिखे हैं।

नाम—(२६५४) गौरीशंकर, ग्राम गोमता, राज्य गोंडल (काठियावाड़-प्रांत)।

जन्म-काल—सं० १६२४।

ग्रंथ—(१) औदार्य बावनी, (२) सुर-सुधाकर, (३) गायन-तरंग, (४) भाजीराज-जीवन।

विवरण—आपने ग्रंथ नं० १ तथा २ गोंडल दरबार तथा वीर-पुर-दरबार के अनुरोध से रचे हैं। आप अभी विद्यमान हैं।

नाम—(२६५५) देवदत्त वाजपेयी (पुरंदर)।

जन्म-काल—सं० १६१८।

विवरण—आपने व्रजभाषा में बहुत-सी स्फुट रचना की है। इनका शरीरांत प्रायः सं० १६८६ में हुआ।

नाम—(२६५६) देवीदयालु, जालंधर।

जन्म-काल—सं० १६२४।

ग्रंथ—जीवन-यात्रा।

विवरण—आप आर्यसमाज के उपदेशक हैं।

नाम—(२६५७) दौलतरामजी रिटायर्ड, सब डिप्टी-इंस्पेक्टर।

नाम—(२६५८) पुत्तूलाल (श्याम) हलवाई, साँड़ी, जिला हरदोई।

जन्म-काल—सं० १६२४।

ग्रंथ—(१) उरग-विषमर्दन, (२) श्याम कवि-पदावली, (३) श्याम-शतक, (४) श्याम कवि-छंद।

नाम—(२६५९) बलभद्रसिंह बहैड़ा, पोस्ट खैरीघाट, ज़िला बहराइच।

जन्म-काल—सं० १९२४।

ग्रंथ—(१) शंभुशतक, (२) रामभियापचीसी, (३) देशदीपिका, (४) जातियुवती, (५) प्राणपियारी, (६) महारानी-अष्टक, (७) पद्य-पैमायश, (८) संवाद गुरुनानक, (९) नवनाथ, (१०) चौरासी सिद्ध।

नाम—(२६६०) बोधईराम ब्राह्मण, सरोंई, ज़िला मिर्ज़ापूर।

जन्म-काल—सं० १९२४।

ग्रंथ—प्रताप-विनोद।

नाम—(२६६१) भैरवदान, बीकानेर।

कविता-काल—सं० १९४९।

ग्रंथ—'अलंकार-कलानिधि'।

विवरण—इन्होंने कच्छ-दरबार के ठाकुर वैरीसालजी के अनुरोध से उक्त ग्रंथ रचा।

नाम—(२६६२) विश्वनाथ शर्मा, मथुरा।

जन्म-काल—सं० १९२४।

ग्रंथ—(१) स्थावरजीव-मीमांसा, (२) वर्ण-व्यवस्था, (३) पुराण-तत्त्व।

नाम—(२६६३) विष्णुलाल शर्मा एम्० ए० बरेली, सब-जज अलीगढ़।

जन्म-काल—सं० १९२४।

ग्रंथ—आर्य-समाज-परिचय।

नाम—(२६६४) शिवदुलारे पांडेय, मस्तूरी।

जन्म-काल—सं० १९२४।

ग्रंथ—हनुमान-तमाचा।

नाम—(३६६५) शिवप्रसाद, जौनपुर।

जन्म-काल—सं० १९२४।

समय—संवत् १९५०

नाम—(३६६६) अनंतराम पांडेय, रायगढ़।

जन्म-काल—सं० १९२८।

मृत्यु-काल—सं० १९६४।

ग्रंथ—(१) ईशोपनिषत् भाष्य, (२) रायगढ़ का भूगोल, (३) कपटी मुनि-नाटक।

नाम—(३६६७) अमीरअली सैयद (मीर) देवरीकलाँ, सागर।

ग्रंथ—(१) नीति-दर्पण की भाषा-टीका, (२) बूढ़े का ब्याह, (३) बच्चे का ब्याह, (४) सदाचारी बालक आदि कई ग्रंथ।

विवरण—कविता अच्छी करते हैं। समस्या-पूर्ति के इनके बहुतेरे छंद देखने में आए हैं। आप सुकवि हैं।

नाम—(३६६८) अमृतलाल माथुर, नं० ४ चीनी पट्टी, कलकत्ता।

ग्रंथ—(१) राम-रसामृत (अमृत-सतसई), (२) कीर्ति-राघव।

विवरण—आपके पिता ने भी राम-सुधारस-नाटक एक ग्रंथ बनाया है, ऐसा इनका कथन है, किंतु आपने उनके नाम का उल्लेख नहीं किया है। अतएव हमने इस बात को इसी स्थान पर लिख देना उचित समझा है।

नाम—(३६६९) अक्षयवरप्रसाद साही क्षत्रिय, ग्राम महुअवा, ज़िला गोरखपुर। [द्वि० त्रै० रि०]।

ग्रंथ—(१) पुरश्री नाटक (गद्य पृष्ठ १३४), (२) विहुला (पृष्ठ १७४)।

विवरण—वेनिस के व्यापारी के आधार पर प्रथम ग्रंथ है।

नाम—(२६७०) उदयलाल कासलीवाल।

आपने कई जैन-ग्रंथों का हिंदी में अनुवाद किया है। खंडेलवाल जैन। सत्यवादी के भूतपूर्व संपादक।

नाम—(२६७१) उदितनारायणलाल कायस्थ, ग़ाज़ीपुर।

ग्रंथ—बँगला के कई उपन्यासों का भाषानुवाद किया है।

विवरण—यह ग़ाज़ीपुर के प्रसिद्ध पुरुष थे।

नाम—(२६७२) केदारनाथ चतुर्वेदी उपदेशक, ग्वालियर।

जन्म-काल—सं१९२५।

ग्रंथ—(१) कन्या-बोधिनी (गद्य-पद्य), (२) स्त्री-रत्नमाला (गद्य)।

नाम—(२६७३) गोपालदास बरैया।

ग्रंथ—(१) सुशीला, (२) जैनसिद्धांत-दर्पण, (३) जैन-सिद्धांत-प्रवेशिका।

विवरण—आगरा-निवासी। दिगंबर-संप्रदाय के धुरंधर विद्वान्।

नाम—(२६७४) चंद्रावतीदेवी, बनकटा, आज़मगढ़।

नाम—(२६७५) जीतसिंह बुंदेलखंडी।

रचना-काल—सं० १९५०।

ग्रंथ—विनयरसामृत।

नाम—(२६७६) जुगुलानंद ब्राह्मण, गोंडा।

ग्रंथ—स्वभाव-सुधासिंधु, (पृष्ठ ४८), [द्वि० त्रै० रि०]।

नाम—(२६७७) दिग्विजयसिंह राजा।

ग्रंथ—छंद दस्तख़त, [पं० त्रै० रि०]।

नाम—(२६७८) द्वारिकाप्रसाद कायस्थ, खटवारा, ज़िला बाँदा।

जन्म-काल—सं० १९२४।

रचना-काल—सं० १९५०।

ग्रंथ—(१) स्वर-संबोधिनी, (२) रेखता-रामायण।

विवरण—रियासत मैहर में इंस्पेक्टर थे।

नाम—(३६७९) पजनसिंह कायस्थ, बुंदेलखंड।

रचना-काल—सं० १९५०।

ग्रंथ—पजन प्रश्न ज्योतिष [प्र० त्रै० रि०]।

नाम—(३६८०) रघुनाथप्रसाद कायस्थ, ऐंचवारा, ज़िला बाँदा।

जन्म-काल—सं० १९२५।

कविता-काल—सं० १९५०।

ग्रंथ—(१) रामभक्त-भूषण, (२) रसिक-विलास।

नाम—(३६८१) रघुनाथ शाकद्वीपी, ग्राम राघवपुर, ज़िला पटना।

जन्म-काल—सं० १९२५।

मृत्यु-काल—सं० १९६२।

ग्रंथ—(१) सुभाषित भूषणम् काव्यम्। (सूक्ति-विलास २०० श्लोक); (२) उद्धव-चंपू (काव्य), (३) आर्याचारादर्श (३५० श्लोकों का चित्रबंध-युक्त काव्य), (४) रसमंजूषा (हिंदी-कविता, सं० १९५७, विहार-बंधु-प्रेस पटना से मुद्रित।

नाम—(३६८२) रणमल।

जन्म-काल—सं० १९२५।

ग्रंथ—प्रवीनसागर।

विवरण—आप राजकोट के निवासी चारण थे। उक्त ग्रंथ राजकोट के राजा महिरावनजी ने बनाया था, किंतु वह अपूर्ण रह गया। कहा जाता है कि आपने ही इस ग्रंथ को पूर्ण किया है।

नाम—(३६८३) राधामोहनजी रावत (चिंतामणि), मैनपुरी।

मृत्यु-काल—सं० १९७९ के लगभग।

ग्रंथ—(१) श्रीकृष्ण-विनोद, (२) रस-लहरी (दो भाग)।

विवरण—आप माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मण मैनपुरी-निवासी थे। प्रथम यह स्थानीय गवर्नमेंट स्कूल में अध्यापक रहे, तत्पश्चात् वहीं के अध्यक्ष (सुपरिंटेंडेंट) हो गए। कुछ काल-पर्यंत यह वर्तमान मैनपुरी-नरेश के शिक्षक थे। आपके ग्रंथ स्टीम-प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित हो चुके हैं।

उदाहरण—

कहा कहौं छबि आज जुगल की।
सिंहासन पर केशव राजत शोभा छवि सद मदन हरन की।
कोउ कर जोरि सामुहें ठाढ़ी भूमि रही कोउ चमर ढुरन की।
'चिंतामणि' भरि प्रेम पुलक तन देखि रहे वह कांति बदन की।

नाम—(३६८४) रामदासराय, मुज़फ़्फ़रपुर।

जन्म-काल—सं० १९२६ (अनुमानतः)।

रचना-काल—सं० १९५० के लगभग।

ग्रंथ—(१) पंच-पात्र, (२) दूत-वाक्य, (३) हिंदी-व्याकरण आदि।

विवरण—आप भूमिहार ब्राह्मण हैं। इस समय आप मुज़फ़्फ़रपुर-कॉलेज में संस्कृत तथा हिंदी के प्रोफ़ेसर हैं।

नाम—(३६८५) रामेश्वरप्रसाद पांडेय, भरतपुर, रीवाँ-राज्य।

जन्म-काल—सं० १९२०।

कविता-काल—सं० १९५० के लगभग।

ग्रंथ—स्फुट कविताएँ।

विवरण—आप रीवाँ-राज्य में संस्कृत-अध्यापक हैं। हिंदी तथा संस्कृत, दोनो में आप कविता करते हैं। आपकी रचनाएँ 'रमेश' अथवा 'अध्यापक' उपनामों से यदा-कदा अंकित रहती हैं। [श्रीयुत भानुसिंह वाघेल द्वारा ज्ञात]।

उदाहरण—

आयो है असाढ़ गाढ़ पीतम वियोगिन को,
छायो नभ मेघ शोर चातक सुनायो है;
नायो है नवीन वार वारिद त्यों वार वार,
सरस सुगंध महि मंडल पै छायो है।
छायो है सुवास त्यों वग़ूटी छटा क्षोणी मध्य,
मोर-गण शोर करि आनँद मचायो है;
चायो है न नेक चित्त चंचला चहूँधे देखि,
दरद दवायो मोहिं पीतम न आयो है।

नाम—(३६८६) लालजी वंदीजन, असनी, फ़तेहपुर।

विवरण—साधारण श्रेणी। यह महाशय वैरीसाल के वंशधर हैं। आप महाराजा रीवाँ के यहाँ नौकर हैं।

नाम—(३६८७) शत्रुजीतसिंह (दीवान)।

ग्रंथ—(१) प्रमर-वंश-रत्नाकर, (२) चंद्रप्रभ ऋतु।

विवरण—छत्रपुर-नरेश महाराजा विश्वनाथसिंहजूदेव के पितृव्य।

नाम—(३६८८) शीतलप्रसाद ब्रह्मचारी।

ग्रंथ—(१) गृहस्थ-धर्म, (२) छतढाला की टीका, (३) नियमसार की टीका, (४) अनुभवानंद।

विवरण—आप लखनऊ-निवासी अग्रवाल जैन थे। समाज की सेवा निःस्वार्थ भाव से करने के वास्ते आप प्रायः १९५९ में गृहत्यागी भी हो गए।

समय—संवत् १९५१

नाम—(३६८९) गणपति मिश्र, नोखा, आरा।

ग्रंथ—मुक्ति-मार्ग-प्रकाश, (२) सुतानंद-प्रकाश, (३) ऋतु-वर्णन, (४) सिद्धेश्वरी-स्तोत्र-अभिषेक।

जन्म-काल—सं० १९२६।

विवरण—वैदिक उपदेशक।

नाम—(३६९०) गौरीशंकर भट्ट, कानपुर।

ग्रंथ—आपने १० छोटे-छोटे ग्रंथ लिखे, जिसमें अलंकृत अक्षर लिखने के भी ग्रंथ हैं।

जन्म-काल—सं० १९२६।

विवरण—भूतपूर्व संपादक भट्ट भास्कर।

नाम—(३६९१) छंगालाल मिश्र, मैनपुरी।

जन्म-काल—सं० १९२६ के लगभग।

ग्रंथ—(१) मैनपुरी-राज्य का इतिहास (छंदोबद्ध अनुवाद), (२) ऊजड़ ग्राम Goldsmith's Deserted Village। (३) गंगा-लहरी, (४) अभिमन्यु-वध, (५) सकाले की वर्जिनिया।

विवरण—आप पं० भगवानदासजी के पुत्र चतुर्वेदी ब्राह्मण हैं। आगरा-कॉलेज में उच्च शिक्षा पाई। कुछ समय तक मैनपुरी-नरेश के निजू अमात्य तथा राजपुत्र के शिक्षक थे। आपका निम्न-लिखित छंद गंगा-लहरी के एक श्लोक का अनुवाद है।

इकबार कढ़ी जटा जूटन सों नियरे शिव-शीश बिहार ठयो;
यह पेखि अलिंगन प्रेम विषैं गिरिजा-चित क्रोध अपार भयो।
चख लाल भए, कहि जात नहीं, बहु डाह जो सौति समाइ गयो;
भवतें जननी विजयी लहरैं जिनको शिव शीश उठाइ गयो।

नाम—(३६९२) जागेश्वरप्रसाद कायस्थ, मैहर, मदनपुर।

ग्रंथ—शब्द-बोध-पिंगल ।

जन्म-काल—सं० १९२६ ।

नाम—(   ) द्विजगंग (गंगाधर) अवस्थी ।

यह दासापुर, ज़िला सीतापुर-निवासी थे । आपका कविता-काल सं० १९५१ से था । आपका हाल बलदेव (नं० २०८८) कवि के वर्णन में है । वहीं इनका नंबर भी पड़ गया है ।

नाम—(३६६३) प्रद्युम्नसिंह (रईस) ।

जन्म-काल—सं० १९२४ ।

रचना-काल—सं० १९५१ ।

ग्रंथ—(१) नागवंश, (२) दर्शन (प्रकाशित है) ।

विवरण—खैरागढ़-राज्य मध्यप्रदेश के वंश में हैं । विविध मतों के ज्ञाता तथा सनातनधर्मी एवं गद्य-लेखक हैं ।

नाम—(३६६४) बालमुकुंद पांडे, बलुआ, सारन ।

जन्म-काल—सं० १९२६ ।

ग्रंथ—(१) गंगोत्तरी-नाटक, स्फुट लेख सामयिक पत्रों में ।

विवरण—आपके पूर्वज जगतपुर में रहते थे । यह कलेक्टर-कोर्ट गोरखपुर में चीफ़ रीडर हैं ।

नाम—(३६६५) बाबासाहब मज़ुमदार ।

ग्रंथ—(१) अमृत-संजीवन-वैद्यक, (२) ज्वर-चिकित्सा-प्रकरण, (३) स्त्री-रोग-चिकित्सा, (४) उपदंशारि [द्वि० त्रै० रि०] ।

नाम—(३६६६) विश्वंभरदत्त ब्राह्मण, नागपुर, पोस्ट टिकैतनगर ।

जन्म-काल—सं० १९२६ ।

ग्रंथ—(१) वृत्रासुर-कथा श्रीभागवत से ।

नाम—(३६६७) सीताराम मिश्र ।

कविता-काल—सं० १९५१ ।

ग्रंथ—चित्त-विलास।

विवरण—[श्रीयुत महेशप्रसादजी मिश्र, कुंजबिहारीलाल का मंदिर नं० ८९, घासी कटरा, गोरखपुर से ज्ञात] मिश्रजी का कथन है कि इन कवि की जीवनी 'कवींद्र'-नामक मासिक पत्र में प्रकाशित हो चुकी है।

समय—संवत् १९५२

नाम—(२६९८) ओरीलाल शर्मा।

ग्रंथ—रसलताजिक। [द्वि० त्रै० रि०]।

नाम—(२६९९) कालीशंकर व्यास, काशी।

जन्म-काल—सं० १९२७।

मृत्यु-काल—सं० १९६२।

नाम—(२७००) कृष्णलाल वर्मा।

ग्रंथ—(१) चंपा, (२) राजपथ का पथिक, (३) दलजीतसिंह।

नाम—(२७०१) जगन्नाथ द्विज।

ग्रंथ—चौताल रसिक मनभावन। [पं० त्रै० रि०]।

नाम—(२७०२) जगन्नाथप्रसाद।

ग्रंथ—फाग-शिरोमणि [पं० त्रै० रि०]।

नाम—(२७०३) जगन्नाथ शुक्ल, पुच्छरत, अमृतसर।

ग्रंथ—(१) स्त्री-शिक्षा-मणि, (२) व्याख्यान-विधि।

विवरण—आप एक प्रसिद्ध लेखक तथा व्याख्याता थे।

नाम—(२७०४) जयदेव उपाध्याय, ज़िला बलिया।

समय—सं०—१९५२।

नाम—(२७०५) जयमंगलसिंह, दुर्जनपुर।

जन्म-काल—सं० १९२७।

नाम—(२७०६) दामोदर (दंपति)।

जन्म-काल—सं० १९२७ ।

ग्रंथ—स्फुट कविता ।

नाम—(२७०७) देवीप्रसाद (प्रीतम) कायस्थ, बिजावर ।

जन्म-काल—सं० १९२७ ।

ग्रंथ—(१) श्रीकृष्ण-जन्मोत्सव, (२) गो-गुहार, (३) बिहारी-सतसई का उर्दू पद्यमय अनुवाद, (४) बुंदेलखंड का अलबम ।

नाम—(२७०८) पन्नालाल ब्रह्मभट्ट ।

जन्म-काल—सं० १९२७ ।

ग्रंथ—(१) अमृत-अलंकार, (२) गोविंद-गीत (नीति) सुधा ।

विवरण— गूढ़ार्थ नाना विषय-संग्रह ।

नाम—(२७०९) प्रभाकर भट्ट, दतियावासी ।

कविता-काल—सं० १९५२ ।

ग्रंथ—(१) प्रताप-कीर्ति-चंद्रोदय, (२) षट्ऋतु-वर्णन, (३) हमीरकुल-कल्पवृक्ष, (४) अलंकार, (५) भर्तृहरि-नीति-शतक, (६) यज्ञोपवीत-सरोज ।

नाम—(२७१०) बालगोविंद, अनवरगंज, कानपुर ।

जन्म-काल—१९२७ ।

ग्रंथ—(१) मनोभव तथा स्फुट छंद । (२) बजरंग-पचीसी (च० त्रै० रि०) ।

नाम—(२७११) मुसद्दीराम शर्मा गौड़, ज़िला मेरठ ।

जन्म-काल—सं० १९२७ ।

ग्रंथ—(१) सुभाषितरत्न, (२) सुखाप्तिप्राप्ति, (३) सत्यार्थ-प्रकाश (संस्कृत) ।

नाम—(२७१२) मेदनीप्रसाद पांडे, मालगुज़ार परसापाली, रायगढ़, छत्तीसगढ़ ।

जन्म-काल—सं० १९२७ ।

ग्रंथ—(१) पद्म-मंजूषा, (२) विष्णु-षट्पदी, (३) शृंगार-सुधा-संग्रह, (४) गणेशोत्सव-दर्पण, (५) सत्संग-विलास-संग्रह ।

विवरण—आपकी रचना व्रजभाषा में है। आपने छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध कवियों का वर्णन एक कवित्त में किया है।

उदाहरण—

सुकवि गोपाल मिश्र द्विज प्रहलाद कवि,
बाबू रेवाराम रत्नपुर के न यामे भ्रम;
हो गए अनेक ये छत्तीसगढ़ माँह कवि,
और हैं अनेक बुद्धि-विद्या माहिं नाहिं कम।
सुकवि अनंतराम मालिक औ सुंदरजू,
लोचनप्रसाद कवि मनि सम अनुपम;
मेदिनीप्रसाद तैसे भानु कवि भानु सम,
है न अति-उक्ति कवि मीर है मयंक सम।

नाम—(२७१३) शिवदास पांडेय, सरतूरी।

जन्म-काल—सं० १९२७ ।

समय—संवत् १९५३

नाम—(२७१४) कन्हैयालाल ।

रचना-काल—सं० १९५३ ।

ग्रंथ—अजनानंदसुंदरी ।

विवरण—भरतपुर-वासी श्रीमाल जैन ।

नाम—(२७१५) कमलावती ।

ग्रंथ—भगिनी-संदेश आदि स्फुट कविता ।

विवरण—आप श्यामाचरणजी की धर्मपत्नी हैं।

नाम—(२७१६) कृष्ण ब्रह्मभट्ट, असनी ।

विवरण—महाराज डुमरावँ के यहाँ राजकवि हैं।

नाम—(२७१७) गणेशप्रसाद (गणाधिप) बिसवाँ, सीतापूर।

जन्म-काल—सं० १९२८ ।

ग्रंथ—गणाधिप-सर्वस्व ।

नाम—(३७१८) गोपालदीन शुक्ल (शुक्ल), बिसवाँ, सीतपुर।

जन्म-काल—सं० १९२८ ।

नाम—(३७१९) गोपालवल्लभ ।

ग्रंथ—हिताचार्य महाप्रभु का जीवन-चरित्र ।

विवरण—राधावल्लभीय संप्रदाय में हैं ।

नाम—(३७२०) जगन्नाथप्रसाद कायस्थ, बनारस ।

नाम—(३७२१) जौहरीलाल शर्मा ।

ग्रंथ—(१) व्याकरण-विटप, (२) जौजालंकार रामनाटक (च० त्रै० रि०) ।

नाम—(३७२२) पतितदास स्वामी ।

ग्रंथ—(१) गुप्तगीता, (२) भजनावली । (पं० त्रै० रि०) ।

नाम—(३७२३) मुहम्मद अब्दुलसत्तार (प्यारे) ।

जन्म-काल—सं० १९२८ ।

नाम—(३७२४) रामदासराय पुस्तकालयाध्यक्ष, मुज़फ़्फ़र-पुर, बिहार ।

जन्म-काल—सं० १९२८ ।

रचना-काल—सं० १९५३ ।

ग्रंथ—(१) शिक्षा-लता, (२) भारत-दशा-दर्पण, (३) लिंग-भ्रम-संशोधन, (४) हिंदी-करीमा ।

समय—संवत् १९५४

नाम—(३७२५) इंद्रजीत कायस्थ, तिलहर, शाहजहाँपूर ।

जन्म-काल—सं० १९२९ ।

रचना-काल—सं० १९५४ ।

ग्रंथ—नारी-धर्म-विचार (चार भाग), राग खिमटा ।

नाम (३७२६) खुलासीराम (द्विज हेम), जबलपूर छावनी ।

जन्म-काल—सं० १९२९ ।

नाम—(३७२७) छुट्टनलाल शर्मा, परीक्षितगढ़, मेरठ ।

जन्म-काल—सं० १९२९ ।

ग्रंथ—भागवत-परीक्षा ।

नाम—(३७२८) तुलसीसाहब ।

रचना-काल—सं० १९५४ ।

ग्रंथ—घटरामायण (तृ० त्रै० रि०) ।

विवरण—हाथरस-निवासी थे । ग्रंथ में योग-मार्ग का वर्णन है ।

नाम—(३७२९) निरंजनानंद स्वामी ।

रचना-काल—सं० १९५४ ।

ग्रंथ—निरंजन-लहरी च० त्रै० रिपोर्ट ।

नाम—(३७३०) बरजोरसिंह परिहार, ग्राम बिहार, ज़िला फ़र्रुख़ाबाद ।

जन्म-काल—सं० १९२९ ।

ग्रंथ—नीति-शतक ।

नाम—(३७३१) बलदेवप्रसाद, खडेली, ज़िला हरदोई ।

जन्म-काल—सं० १९२९ ।

ग्रंथ—(१) अंकगणितायमा, (२) सुख की खानि, (३) जीवनोद्धार, (४) रुद्री, (५) संतोष-शतक ।

नाम—(३७३२) बाबूलाल ब्राह्मण, अलवर ।

जन्म-काल—सं० १९२९ ।

नाम—(३७३३) बालमुकुंद शर्मा, मुरादाबाद ।

जन्म-काल—सं० १९२९ ।

ग्रंथ—(१) सुधर्म-मंजरी (सनातन धर्म-व्याख्या), (२) मुक्तावलि-रामायण (दोहा-चौपाई), (३) आल्हखंड-रामायण (रामचरित्र), (४) आल्हखंड-महाभारत (कौरव-पांडव-लीला) आदि ।

नाम—(३७२४) रामाधीन शर्मा, लखनऊ।

जन्म-काल—सं० १९२९।

ग्रंथ—पांचाल-ब्राह्मणोत्पत्ति-मार्तंड।

नाम—(३७२५) शारदाप्रसाद (रसेंद्र), मु० मैहर।

जन्म-काल—सं० १९२९।

ग्रंथ—रत्नत्रयी आदि।

नाम—(३७२६) शिवनारायण झा, मैनपुरी।

जन्म-काल—सं० १९२९।

ग्रंथ—विश्वकर्म-वंश-निर्णय।

नाम—(३७२७) संपत्ति, मुज़फ़्फ़रपुर।

जन्म-काल—सं० १९२९।

ग्रंथ—(१) नीति-भूषण, (२) मंत्रविषोद्धार-चंद्रिका।

नाम—(३७२८) सीताराम (निकुंज), पन्ना।

जन्म-काल—सं० १९२९। (प्र० त्रै० रि०)

ग्रंथ—(१) रस-मार्तंड, (२) रसकलानिधि आदि कई ग्रंथ रचे।

नाम—(३७२९) हरिपालसिंह क्षत्रिय, सोहिला मऊ, डाकख़ाना संडीला, ज़िला हरदोई।

जन्म-काल—सं० १९२६।

कविता-काल—सं० १९५४।

ग्रंथ—(१) दुर्गा-विजय, (२) प्रेम-गीतावली, (३) अन्न-पचीसी, (४) प्रेम-पचीसी, (५) उषा-अनिरुद्ध-नाटक, (६) वसंत-विनोद, (७) पावस-प्रमोद, (८) सिंहासन-बत्तीसी पद्य, (९) प्रेम-पारिजात, (१०) हरिपाल-विनोद, (११) ऋतु-रसांकुर, (१२) राग-रंग, (१३) राग-रत्नावली, (१४) वियोग-वज्राघात, (१५) चंद्रहास-नाटक, (१६) इंदुमती उपन्यास।

विवरण—आप उत्साही और अच्छे लेखक थे।

नाम—(३७४०) त्रिलोचन झा।

जन्म-काल—सं० १६३५।

रचना-काल—सं० १६५४।

ग्रंथ—(१) गणपतिशतक, (२) श्रीमंगलशतक, (३) आत्म-विनोद, (४) जनेश्वर-विलाप, (५) शोकोच्छ्वास, (६) श्रीकला-नंद-विनोद, (७) मिथिला की वर्तमान अवस्था और आवश्यक सुधार, (८) सम्मेलन-संवाद, (९) जीवन-चरित्र-विषय, (१०) शकुंतलोपाख्यान।

विवरण—आप बेतिया, ज़िला चंपारन-निवासी कुमार झा के पुत्र हैं।

उदाहरण—

लोचन सुंदर रूप बसी मन पीतम माँहि लगावति है;
पूजत लेइ सरोज-कली अरु तुंग उरोज चढ़ावति है।
धो यह स्वेद चले तन ते अथवा करि नेह नहावति है;
यों विपरीत रमें ललना की मनोज को मंत्र जगावति है।

समय—संवत् १६५५

नाम—(३७४१) अनिरुद्धसिंह।

कविता-काल—सं० १६५५।

यह जैपालपुर, ज़िला सीतापुर-निवासी पँवार ठाकुर थे। आपकी अकाल-मृत्यु प्रायः २७ वर्ष की अवस्था में हो गई। आप हमारे मित्र थे, और कविता अच्छी करते थे। समस्या-पूर्ति के छंद काव्य सुधाधर पत्र में भेजा करते थे। आप साधारणतया एक बड़े ज़मींदार थे।

नाम—(३७४२) अमीर राय (मोर), सागर, मध्यप्रदेश।

जन्म-काल—सं० १६३०।

ग्रंथ—कुछ ग्रंथ रचे।

नाम—(२७४३) ऋषिलाल, मु० गौरा, बादशाहपुर।

जन्म-काल—सं० १९३०।

ग्रंथ—(१) पावस-प्रेमलता, (२) वैद्य-वल्लभ, (३) नाना छंदोर्णव आदि।

नाम—(२७४४)—कुंजदासी।

जन्म-काल—सं० १९३०।

ग्रंथ—स्फुट पद।

विवरण—राधावल्लभी।

नाम—(२७४५) खड्गजीत मिश्र रायबहादुर, एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, मैनपुरी।

जन्म-काल—सं० १९३१।

कविता-काल—सं० १९५५।

ग्रंथ—स्फुट कविता।

विवरण—आप माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मण पं० नारायणदासजी के सुपुत्र हैं। आपने प्रांतीय कौंसिल के उपाध्यक्ष, असिस्टेंट कलेक्टर, ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट, ज़िला-बोर्ड के सभापति आदि के पदों को योग्यता-पूर्वक सुशोभित किया है। आपके लेख प्रायः 'सरस्वती' तथा 'चतुर्वेदी' पत्रिकाओं में निकला करते हैं।

नाम—(२७४६) गजाधरप्रसाद शुक्ल (द्विज शुक्ल), पाता बोम्फ, सीतापुर।

ग्रंथ—रघुवंश-भाषा।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(२७४७) गोपालप्रसाद शर्मा रैसलपुर होशंगाबाद।

जन्म-काल—सं० १९३०।

ग्रंथ—(१) हित - चरित्र - भ्रमोच्छेदन, (२) बालपंचरत्न, (३) रमणीपंचरत्न, (४) गीता की भक्तिमोभिनी टीका।

विवरण—राधावल्लभीय किशोरीलाल गोस्वामी के शिष्य।

नाम—(२७४८) छक्कनलाल (चौबेलाल) तथा मक्खनलाल, मैनपुरी।

मृत्यु-काल—सं० १९७०-८० के बीच में।

विवरण—आप लोग माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मण सहोदर भाई थे। दोनो भाइयों में छक्कनलालजी की कविता ओजमयी होती थी, और इन्होंने अलीपुर-षड्यंत्र के विषय पर कतिपय कवित्त लिखे थे। माखनलालजी की कविता उपलब्ध नहीं है। पं० उमरावसिंह पांडेय, मंत्री चतुर्वेदी-पुस्तकालय, मैनपुरी का कथन है कि इन दोनो भाइयों में से पहले मृत्यु छक्कनलालजी की हुई, और इनके पुत्र इस समय आगरे में, अपने ननिहाल में, रहते हैं।

उदाहरण—

चौबे लाल जाने पै न माने मन मूरख हू,
लखत न देखी प्रीति रीति इक ओरी है;
बजत न तारी एक हाथ सों अनारी कहैं,
कीन्ही जिन प्रीति ऐसी संका हू सहोरी है।
प्रीति के प्रभाव ऐसी अंग भृंग शूल सहैं,
जरत पतंग दीप-ज्योति बरजोरी है;
उड़ि कै अकाश अंत मांहि यों निराश होति,
पावत न चंद्र फेरि आवति चकोरी है।

नाम—(२७४९) जगन्नाथशरण, छपरा। गद्य-लेखक।

ग्रंथ—(१) नीलमणि, (२) आनंदसुंदरी।

नाम—(२७५०) तिलकसिंह ठाकुर पूरनपुर, जिला कानपूर।

जन्म-काल—सं० १९३०।

ग्रंथ—(१) स्फुट काव्य, (२) बारहमासी योगसागर।

नाम—(३७५१) देवीसहाय कायस्थ।

कविता-काल—सं० १९६० के पूर्व।

ग्रंथ—भजन। (द्वि० त्रै० रि०)

नाम—(३७५२) बद्रीप्रसादजी वैश्य।

यह लखनऊ में ओवरसियर थे। आपकी मौत सं० १९६५ में, प्रायः ३९ वर्ष की अवस्था में, हुई। आप हिंदी के बड़े उत्साही उन्नायक थे। लखनऊ में एक देवनागरी-सभा आपने स्थापित की थी, जिसमें प्रायः ३० सभ्य थे। वह सभा आपके साथ ही टूट गई। आप गद्य के एक लेखक भी थे। आप हमारे मित्रों में थे।

नाम—(३७५३) व्रजनाथ शास्त्री, पटना।

जन्म-काल—सं० १९३०।

ग्रंथ—अनुरागशतक।

विवरण—राधावल्लभी।

नाम—(३७५४) ब्रह्मदत्त चौबे।

जन्म-काल—१९३०।

ग्रंथ—हितोपदेश।

विवरण—आप छत्रहार, ज़िला भागलपुर-निवासी सरयूपारीण ब्राह्मण थे। महाराज खड्गपुर के यहाँ आप राजकवि थे।

नाम—(३७५५) माधवप्रसाद कान्हर कायस्थ, अजयगढ़।

जन्म-काल—सं० १९३०।

ग्रंथ—(१) माधव-गणित, (२) अलंकार-सागर, (३) माधव-भूषण। (प्र० त्रै० रि०)

नाम—(३७५६) मुनुआँ ब्राह्मण (शुक्ल), ग्राम अलीनगर कलाँ, ज़िला बहराइच।

ग्रंथ—(१) रामअर्ज-विलास (पृ० ११४), (२) परमहंस-पच्चीसी (पृ० २२—१९५९), (३) रघुराजविलास (पृ० ३२),

(४) जीवन-चरित्र परमहंसजी को (पृ० २२) (द्वि० त्रै० रि०)।

नाम—(३७५७) मैथिल परमहंस।

ग्रंथ—१७ ग्रंथ बनाए।

नाम—(३७५८) यज्ञराजदास भाट, श्रीनगर।

जन्म-काल—सं० १९३०।

ग्रंथ—(१) जगदेव-पसाली, (२) कोशकली, (३) रामायण-माला, (४) सूरसागर-तरंग, (५) भट्टोपाख्यान, (६) वैद्यनाथ-माहात्म्य।

नाम—(३७५९) रघुपतिसहाय कायस्थ, गौसपुर, ज़िला गाज़ीपुर।

जन्म-काल—सं० १९३०।

ग्रंथ—तुलसीदास का जीवन-चरित्र।

नाम—(३७६०) रामचंद्र-आनंदराव देशपाँड़े, अध्यापक नार्मल स्कूल, नागपुर।

जन्म-काल—सं० १९३०।

ग्रंथ—(१) शिक्षा-विधि, (२) महाजनी हिसाब।

नाम—(३७६१) रामचंद्र (चंद) ब्राह्मण जैन, मथुरा।

जन्म-काल—सं० १९३०।

ग्रंथ—(१) आनंदोद्यान, (२) आनंद-कल्पद्रुम, (३) चंद्र-सरोवर आदि १२ ग्रंथ रचे।

नाम—(३७६२) रामदीनजी (पराशर)।

जन्म-काल—१९३०।

रचना-काल—सं० १९५५।

ग्रंथ—(१) जगत-ज्योति-नाटक, (२) किशनगढ़ का भूगोल, (३) शांति-शतक का पद्यमय अनुवाद इत्यादि पुस्तकें लिखीं, अथवा अनुवादित की हैं।

विवरण—किशनगढ़-राज्य में शिक्षा-विभाग के कर्मचारी हैं। वास्तव में इटावा के अंतर्गत जसवंतनगर के निवासी हैं। राजपूताने के कई स्कूलों में अध्यापक रहे हैं। कविता से विशेष प्रेम है।

उदाहरण—

ऊँचे को नवाइ देत, गिरे को उठाइ देत,
अचल चलाय चल विचल कराते हैं;
कायर कपूत डरपोक रण आगे करि,
मरे गीदड़ों को हम सिंह सों लड़ाते हैं।
तीर तरवारि बनदूक़ जो न होवे काज,
उसे एक व्यंग्य की जबान से कराते हैं;
शासक नवाब राजा खातिर हमारी रक्खैं,
रवि-शशि जावैं नहीं कवि-जन जाते हैं।

नाम—(२७६३) रामलाल द्विवेदी, वृंदावन।
जन्म-काल—सं० १९३०।
ग्रंथ—अयोनि-मैथुन-प्रायश्चित्त-व्यवस्था।
विवरण—आप नं० २६६९ के लघु भ्राता हैं।

नाम—(२७६४) रामलोचन पांडेय पैकवलि, बलिया।
जन्म-काल—सं० १९३०।
ग्रंथ—(१) कर्म-दिवाकर, (२) सच्चा सुधार।

नाम—(२७६५) रोसनसिंह, बंगरा, ज़िला जालौन।
जन्म-काल—सं० १९३०।
ग्रंथ—वेदसार।

नाम—(२७६६) लक्ष्मण भगत पंजाबी।
जन्म-काल—सं० १९३०।
ग्रंथ—स्फुट पद।
विवरण—राधावल्लभी।

नाम—(३७६७) वृंदावनराम (व्रजेश) ब्राह्मण, एड़ा, राज्य रीवाँ।

जन्म-काल—सं० १९३० ।

ग्रंथ—(१) हनूमानशतक, (२) हनूमानपंचक, (३) दानलीला ।

नाम—(३७६८) श्यामसेवक मिश्र सनाढ्य, मऊगंज, रीवाँ।

जन्म-काल—सं० १९३० के लगभग ।

काव्य-समय—सं० १९५५ ।

ग्रंथ—प्रायः तीस पुस्तकें बनाई हैं ।

विवरण—यह महाशय महाराज रीवाँ के यहाँ नौकर हैं। आप संस्कृत, फ़ारसी, बँगला और हिंदी के अच्छे विद्वान् हैं। यह कविवर केशवदासजी के वंशज हैं ।

नाम—(३७६९) हमीरदान चारण, ग्राम रीणी, रियासत बीकानेर ।

जन्म-काल—सं० १९३० के लगभग ।

ग्रंथ—स्फुट कविता ।

विवरण—आप अभी क़स्बा रीणी में अध्यापक हैं । [ठाकुर चतुरसिंह, राष्ट्रवर, बीकानेर द्वारा ज्ञात]

नाम—(३७७०) हरिमंगल मिश्र ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९३० ।

रचना-काल—सं० १९५५ ।

विवरण—भारतवर्ष के इतिहास पर आपका एक अच्छा ग्रंथ है।

नाम—(३७७१) हरिशंकर ब्राह्मण, हरदा ।

जन्म-काल—सं० १९३० ।

विवरण—आपको सेठ की पदवी भी प्राप्त है ।

नाम—(३७७२) हितप्रसाद उपनाम गंगादास ।

जन्म-काल—सं० १९३० ।

ग्रंथ—(१) स्फुट छंद, (२) हितपंचक । (तृ० त्रै० रि०)

विवरण—राधावल्लभी अनन्यवीर सेवक ।

समय—संवत् १९५६

नाम—(३७७३) अनिरुद्ध चौबे 'शेखर' कवि ।

जन्म-काल—सं० १९३६ ।

रचना-काल—सं० १९५६ ।

मृत्यु-काल—सं० १९६८ ।

ग्रंथ—(१) शिवरात्रि-माहात्म्य, (२) चंपकवरणी, (३) हनुमान-चालीसा ।

विवरण—आप रायगढ़ छत्तीसगढ़-निवासी हैं ।

नाम—(३७७४) गणेशप्रसाद मिश्र (धनेस), खांगी, ज़िला खीरी ।

जन्म-काल—सं० १९३१ ।

नाम—(३७७५) गदाधरसिंह ठाकुर, बगौछा, ज़िला हरदोई ।

जन्म-काल—सं० १९३१ ।

नाम—(३७७६) गिरिधरप्रसाद (प्रेम), बिदोखर, तहसील हमीरपुर ।

जन्म-काल—सं० १९३१ ।

ग्रंथ—(१) अंजनीलालसुधा, (२) श्यामलीला-शतक, (३) प्रेम-पाती ।

नाम—(३७७७) गेंदालाल मिश्र, मैनपुरी ।

जन्म-काल—सं० १९३१ ।

ग्रंथ—स्फुट कविता ।

विवरण—आप पं० तुलसीरामजी के पुत्र हैं। कलकत्ते में अध्यापन-कार्य करते थे।

उदाहरण—

पटके तरु-मूलन सों सिगरे फल फूले सभी बन के गटके ;
छटके भटके भट नेकहु बीर लँगूल घुमाइ सभी झटके।
खटके हिय में बजरंग बली रण छाड़ि भजे वर को सटके ;
लखि मूरति उग्र भयंकर-सी भटके घर प्राणन ही अटके।

नाम—(३७७८) बुधन चौहान, हल्दी।

जन्म-काल—सं० १९२१।

नाम—(३७७९) भगवानदीन द्विवेदी (आतम), गोड़वा, ज़िला हरदोई।

जन्म-काल—सं० १९२१।

ग्रंथ—(१) तमाखू-माहात्म्य, (२) शिव-विनय-पचीसी, (३) कलियुगी संन्यास-नाटक, (४) हत्याहरण-माहात्म्य, (५) बारहमासा, (६) अनूठी भगतिन (उपन्यास), (७) सदुपदेश-दोहावली, (८) प्राणप्यारी, (९) रसिकराज-पंचाशिका।

नाम—(३७८०) भागवती देवी ठकुराइन, गहलौ, कानपूर।

जन्म-काल—सं० १९२१।

विवरण—भूतपूर्व संपादिका 'वनिता-हितैषी'।

नाम—(३७८१) भगीरथ दीक्षित (कवींद्र), ऊगू, ज़िला उन्नाव।

जन्म-काल—सं० १९२१।

ग्रंथ—(१) गोकर्ण-माहात्म्य, (२) भाँग-अफ़ीम-विवाद, (३) अयाचक की याचना, (४) अनिरुद्ध-विजय, (५) रूस-जापान-युद्ध (पद्य)।

नाम—(३७८२) मनोहरप्रसाद मिश्र।

ग्रंथ—विश्व-बोध।

विवरण—आप पं० रामकृपा मिश्र के पुत्र हैं। छत्तीसगढ़ मासिक पत्र भी आपने निकाला था।

नाम—(३७८३) महेशप्रसाद ब्राह्मण, शंकरगंज, रीवाँ।

जन्म-काल—सं० १९३१।

नाम—(३७८४) राधामोहनजी मिश्र, मैनपुरी।

मृत्यु-काल—सं० १९८१।

ग्रंथ—(१) पुरुषसूक्त की ऋचाओं का अनुवाद, (२) विदुर-नीति का पद्यानुवाद।

उदाहरण—

सहस सीस पग आँखि हुइ पूरि रहा जग जोइ;
भीतर-बाहर विश्व के पुरुष कहावै सोइ।
व्यापक है ब्रह्मांड में और देह में जोइ;
अंतरयामी सकल को पुरुष कहावै सोइ।

नाम—(३७८५) रामनाथ शुक्ल, भैरवपूर, डा० खजुरी, ज़िला रायबरेली।

जन्म-काल—सं० १९३१।

ग्रंथ—(१) शांति-सरोरुह, (२) ऋतु-रत्नाकर।

नाम—(३७८६) लालमणि, बाँदा।

जन्म-काल—सं० १९३१।

नाम—(३७८७) शीतलाबख़्शसिंह सेंगर ठाकुर, काँथा, ज़िला उन्नाव।

जन्म-काल—सं० १९३१।

नाम—(३७८८) श्यामजी शर्मा (पांडेय), भदावरि, आरा।

जन्म-काल—सं० १९३१।

ग्रंथ—(१) वृंद-विलास, (२) भाग्यशालिनी, (३) श्याम-विनोद, (४) खड़ी बोली पद्यादर्श, (५) प्रेमसोहिनी, (६) प्रिया-वल्लभ, (७) श्यामहर्षवर्धन, (८) सत्वामृतकाव्य, (९) बाल-विधवा, (१०) गोहारि, (११) स्वाधीन विचार, (१२) विधवा-विवाह, (१३) पंडित-मानी-मति-चपेटिका।

विवरण—गद्य और व्रजभाषा एवं खड़ी बोली पद्य के लेखक।

नाम—(३७८९) हरिगोविंद।

जन्म-काल—सं० १९२१।

समय—सं० १९५७।

नाम—(३७९०) चक्रपाणि त्रिपाठी, सुहागपुर, होशंगाबाद।

ग्रंथ—राम-यश-कल्पद्रुम।

समय—संवत् १९५७

नाम—(३७९१) जगन्नाथसिंह चौहान, भोगियापूर, ज़िला हरदोई।

जन्म-काल—सं० १९३२।

नाम—(३७९२) परमेश्वरदयालु (रसिक), तमोली, डुमराँव।

जन्म-काल—सं० १९३२।

ग्रंथ—(१) भक्ति-लता, (२) गाने की चीज़ें।

नाम—(३७९३) बचनेश मिश्र।

जन्म-काल—सं० १९३४। (देखने से ऐसा समझ पड़ता है।)

विवरण—यह रियासत कालाकाँकर में नौकर हैं। आप गद्य और पद्य के अच्छे लेखक तथा बड़े उत्साही पुरुष हैं।

नाम—(३७९४) महात्माराम।

ग्रंथ—गीता सटीक (च० त्रै० रि०)।

नाम—(३७९५) माधौ तिवारी, जौनपुर।

ग्रंथ—अध्यात्म-रामायण-सार-संग्रह। (द्वि० त्रै० रि०)

नाम—(३७९६) मितानसिंह, बरखेरवा।

जन्म-काल—सं० १९३२।

ग्रंथ—स्फुट छंद।

नाम—(३७९७) मुकुटलाल उपनाम 'रंग कवि।

ग्रंथ—दुर्गा भाषा।

नाम—(३७९८) मूलाराम।

ग्रंथ—विज्ञान-निरूपिणी। (पं० त्रै० रि०)

नाम—(३७९९) यज्ञराज, नोनरा ग्राम, जिला सुल्ताँपुर।

जन्म-काल—सं० १९२२।

ग्रंथ—(१) जगदंब-यशावली (लगभग २०० छंद), (२) रामायणमाला (लगभग १५० छंद), (३) वैद्यनाथ-विनोद (लगभग १५० छंद), (४) अमरकोश का उल्था, (५) स्फुट कविताएँ।

विवरण—आप भंवर कवि के पुत्र हैं। यह महाशय साहित्य-प्रेमी महाराज कमलानंदसिंहजी बनेली, श्रीनगर के आश्रय में रह चुके हैं। [ज़िला सारन (छपरा)-निवासी महाशय कपिलदेवनारायणसिंहजी द्वारा ज्ञात।]

उदाहरण—

जहाँ देवासुर-युद्ध शत वर्ष भो सक्रुद्धभए,
दानव प्रबल फिरैं देवता परान;
जहाँ देखि दीन दास अंब कीन्ही अट्टहास,
बढ़ि लागी है अकास भए खुसी देवतान।
जहाँ दीन्हे काहू वस्त्र काहू भूषण प्रशस्त,
काहू दीन्हे अस्त्र-शस्त्र यज्ञराज वे प्रमान;

तहाँ करै को बखान प्रलै भान की समान,
जहाँ चंडी भौंह तान झूमि झारी किरवान।
(जगदंब-यशावली से)

कोटिन रती को रूप वारति तिनूका तोरि,
कोरि पूनो सरद सुधाधर गनै नहीं;
बिकस्यो बिभाति कोरि अरब अनंत कंज,
सौरभित सोऊ नेक आवत मनै नहीं।
रमा उमा सारदापि सुंदरी समेटि सब,
यज्ञराज ताहू पर उपमा भनै नहीं;
कोमल बधू को मुख हेरि-हेरि कौसला सों-
हौसला के मारे कछू बोलत बनै नहीं।
(रामायण-माला से)

नाम—(२८००) युगल माधुरी।

ग्रंथ—मानसमार्तंडमाला। (द्वि० त्रै० रि०)

नाम—(२८०१) रामगुलाम राम जायसवाल, जमोर, गया।

जन्म-काल—सं० १६३२।

ग्रंथ—(१) रामगुलाम-शब्द-कोश, (२) शकुनावली-रामायण, (३) नाम-रामायण, (४) पैसा-प्रताप-पचासा।

नाम—(२८०२) रामनारायण (प्रेमेश्वर) भाट, बछरावाँ, ज़िला रायबरेली।

जन्म-काल—सं० १६३२।

ग्रंथ—प्रेमेश्वर-विरद-दर्पण।

नाम—(२८०३) रामलगनलाल (छेम) कायस्थ, मदरा, ज़िला ग़ाज़ीपुर।

जन्म-काल—सं० १६३२।

ग्रंथ—(१) विनय-पचीसी, (२) शंकर-पचीसी। (द्वि० त्रै० रि०)

नाम—(२८०४) लज्जाशंकर झा बी० ए०, जबलपुर।

जन्म-काल—सं० १९३२ के लगभग।

ग्रंथ—(१) साहित्य-सरोज, (२) शालोपयोगी पाठ्य-पुस्तकें।

विवरण—आप गुजराती ब्राह्मण हैं। मध्य-प्रादेशिक शिक्षा-विभाग के एक प्रसिद्ध पुरुष हैं। स्थानीय ट्रेनिंग-कॉलेज के आप कुछ काल तक प्रिंसिपल रह चुके हैं, और इस समय वहीं मॉडल हाईस्कूल के हेडमास्टर हैं।

नाम—(२८०५) श्रीलालजी टेटू, आगरा।

ग्रंथ—(१) संस्कृत-प्रवेशिनी, (२) जिनदत्त-चरित्र, (३) सुभाषितरत्न संदोह टीका, (४) पार्श्वनाथ-चरित्र, (५) गोंमट-सार।

विवरण—पद्मावती पुरवाल के संपादक।

नाम—(२८०६) शंकरप्रसाद, माधवगढ़, राज्य रीवाँ।

जन्म-काल—सं० १९३२।

नाम—(२८०७) हरनंदनलाल शुक्ल 'हरिनंद', भगवंतपुर, ज़िला कानपुर।

जन्म-काल—सं० १९३२।

कविता-काल—सं० १९५७।

ग्रंथ—स्फुट कविताएँ (अप्रकाशित)।

समय—संवत् १९५८

नाम—(२८०८) किशनलाल बी० ए० ओसवाल, दरबार जोधपुर।

जन्म-काल—सं० १९३३।

ग्रंथ—मारवाड़-मरोड़ (साहित्य)।

नाम—(२८०९) केशवप्रसाद ब्राह्मण, सिसेंडी, लखनऊ।

जन्म-काल—सं० १९३३।

नाम—(३८१०) कृष्णकुमारलाल।

जन्म-काल—सं० १९२८।

रचना-काल—सं० १९५८।

ग्रंथ—कई लिखे, पर छप न सके।

विवरण—बाँसडीह, बलिया-निवासी सज्जन सदाचारी पुरुष तथा हिंदी, फ़ारसी के विद्वान् एवं पुराने लेखक। 'भारत-मित्र', 'बिहार-बंधु' आदि प्राचीन पत्रों में लिखते थे। अब भी कभी-कभी कुछ लिख देते हैं।

नाम—(३८११) चुन्नीलाल मिश्र, मैनपुरी।

जन्म-काल—सं० १९४६।

कविता-काल—सं० १९५८।

ग्रंथ—स्फुट कविता।

विवरण—आप माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मण पं० पुरुषोत्तमलालजी मिश्र के पुत्र हैं। आपकी कविता प्रायः 'चतुर्वेदी' पत्रिका में प्रकाशित हुआ करती है।

उदाहरण—

गिरि कानन कामद रूप धरयौ सरिता सर सोहत उज्जल ही;
उमगे फल-फूल उछाहन सों झुकि झूमि रहे थिति मंजुल ही।
अलि पुंजन गुंजन गूँजि रहीं कल कोकिल कीर कुलाहल ही;
सविता-कल-मंडन हेरन को मुरझानी लता फिरि ते उलही।

नाम—(३८१२) गोकुलानंदप्रसाद कायस्थ, मानपुरा, मुज़फ़्फ़रपुर।

जन्म-काल—सं० १९३३।

ग्रंथ—(१) कमला-सरस्वती, (२) पवित्र जीवन, (३) मोती, (४) गार्हस्थ्य जीवन, (५) भक्ति-भेंट, (६) सिंहावलोकन।

विवरण—संपादक आत्म-विद्या।

नाम—(३८१३) गोरेलाल (मंजु सुशील) कायस्थ, देउरी, सागर।

ग्रंथ—स्फुट समस्या-पूर्ति।

जन्म-काल—सं० १९३८।

मृत्यु-काल—सं० १९६२।

विवरण—कुछ दिन लक्ष्मी पत्रिका, गया के संपादक रहे।

नाम—(३८१४) ज्वालाप्रतापसिंह (लाल), पन्नाकोटा, राज्य सिगरौली।

जन्म-काल—सं० १९३३।

ग्रंथ—(१) पावस-प्रेम-तरंग, (२) वसंत-विनोद, (३) प्रेम-बिंदु, (४) बैरन वसंत।

नाम—(३८१५) देवीसहाय ब्राह्मण, (मृत)।

ग्रंथ—गद्य-लेखक।

नाम—(३८१६) धनीराम शुक्ल, सुकलन पुरवा, ज़िला लखनऊ।

जन्म-काल—सं० १९३३।

ग्रंथ—स्फुट कविता तथा समस्या-पूर्ति।

नाम—(३८१७) धर्मराज मिश्र, शिवपुर, दियर, ज़िला बलिया।

ग्रंथ—रसिक-मोहन।

नाम—(३८१८) नारायणलाल (रसलीन), गोस्वामी बारी, राज्य रीवाँ।

जन्म-काल—सं० १९३३।

ग्रंथ—श्रीकृष्णाष्टक।

नाम—(३८१९) बक्सराम पांडेय (हल्दी-निवासी) 'सुजान कवि'।

पं० बक्सरामजी पांडेय की कविता ललित है। आपने ७ ग्रंथ रचे। (१) सं० १९५८ में बना हुआ तन्मयादर्श पृष्ठ ३० का ग्रंथ पद्यमय श्रृंगार-रस से परिपूर्ण है। (२) श्रीकृष्णचंद्राभरण-अलंकार ग्रंथ पृष्ठ १४० का भी पद्यमय है। यह ग्रंथ भी सं० १९५८ का रचा हुआ है। (३) कमलानंदविनोद पृष्ठ १५४ का है। यह पद्यमय ग्रंथ भी सं० १९५८ का रचा हुआ है। (४) राधाकृष्ण-विजय १९६० के संवत् में बना हुआ २४६ पृष्ठों का ग्रंथ है। इनके अतिरिक्त (५) रुक्मिणी-उद्वाह पृष्ठ ५४, (६) सदुपदेश-मालिका पृष्ठ २० और (७) श्रीरासेश्वर-भूषण पृष्ठ १०६ (अलंकार-ग्रंथ) भी आपने रचे। ये तीनो ग्रंथ सं० १९६० में ही बने। कृष्णचंद्र-चंद्रिका सं० १९५० में रची गई (द्वि० त्रै० रि०)। आपने समस्या-पूर्ति में बहुतेरे छंद बनाए। आप एक सुकवि थे। समस्या-पूर्ति के बहुतेरे छंद देखने में आए हैं।

नाम—(३८२०) बनवारीलाल वैश्य, जबलपूर।

ग्रंथ—(१) बारहमासा, (२) बनवारी-कला।

जन्म-काल—सं० १९३३।

नाम—(३८२१) मंगलीलाल कायस्थ, पैंतेपुर, बाराबंकी।

ग्रंथ—(१) मंगलकोष, (२) विजय-चंद्रिका, (३) कृष्णप्रिया।

नाम—(३८२२) रणजीतमल्ल (श्याम), मझौली।

जन्म-काल—सं० १९३३।

विवरण—महाराज मझौली उदयनारायणसिंह के भाई थे।

नाम—(३८२३) राजधरलाल (राज), नृसिंहपुर।

जन्म-काल—सं० १९३३।

ग्रंथ—(१) विनयपचीसी, (२) हनुमान-पैंतीसा, (३) भगवद्गीता का अनुवाद भाषा ।

नाम—(३८२४) रामशरण गुप्त 'शरण' बी० ए०, जोधपुर (मारवाड़) ।

कविता-काल—सं० १९५८ ।

ग्रंथ—(१) पतिव्रतादर्श (दमयंती), (२) शरणेश-विनय, (३) शरणेश-देशोद्धार, (४) शरण-प्रेमोद्धार, (५) शरण-कौतूहल (अनुवाद), (६) मातृ-वंदना (अनुवाद), (७) शरणोक्तिमाला, (८) शरण-विचारमाला (गद्यमाला), (९) शरण-गल्पमाला, (१०) शरणोल्लेख, (११) मित्र-मंडली (उपन्यास), (१२) वैदिक धर्म, (१३) संस्कृतानुवाद (पाठशालोपयोगी पुस्तक) ।

विवरण—आप श्रीयुत बाबू ललिताप्रसादजी के पुत्र तथा लाला विहारीलालजी के पौत्र हैं। हिंदी-साहित्य में आपको अपनी बाल्यावस्था से ही रुचि थी।

ऊपर दिए हुए शरणोल्लेख-नामक ग्रंथ में अपने आत्मजीवन-चरित्र पर लिख रहे हैं। वास्तव में आपका मुख्य निवास-स्थान बामोली, ज़िला अलीगढ़ है, किंतु इस समय आप जोधपुर में हेडमास्टरी के पद पर होने से वहीं रहते हैं।

समय—संवत् १९५९

नाम—(३८२५) केदारनाथ, बस्तर-स्टेट ।

जन्म-काल—सं० १९३४ ।

रचना-काल—सं० १९५९ ।

ग्रंथ—(१) विपिन-विज्ञान, (२) बस्तर-भूषण, (३) वसंत-विनोद, (४) मैथिलवंश-वार्ता, (५) श्रीसत्यनारायण ।

नाम—(३८२६) गोविंददास (दास), खंगार, छतरपूर ।

जन्म-काल—सं० १९३४। (मृत)

ग्रंथ—(१) बाग़ की सैर, (२) पेट-चपेट, (३) स्वदेश-सेवा, (४) काव्य और लोक-शिक्षा, (५) प्रेम, (६) बुंदेलखंड-रत्नमाला, (७) सभा-माहात्म्य, (८) खंगार-जाति का इतिहास।

नाम—(२८२७) चतुर्भुजसहाय कायस्थ, छतरपुर।

जन्म-काल—सं० १९३४।

ग्रंथ—(१) लंबे घूँघटवाली (पृ० १२२), (२) बाबू ताराचंद (पृ० १७६) (१९६३) उपन्यास गद्य, (३) बीबी हमीदा (पृ० १८२) (१९६४) उपन्यास गद्य, (४) मंत्री हरिश्चंद्र (पृ० ६०) (१९६५) (द्वि० त्रै० रि०), (५) मधु मालती।

विवरण—आपको हिंदी बालकपन से ही अच्छी लगती थी। अब भी उसी की सेवा में आपका बहुत समय व्यतीत होता है।

नाम—(२८२८) द्वारिकाप्रसाद ब्राह्मण, बाँदा।

जन्म-काल—सं० १९३४।

ग्रंथ—श्रीकृष्णचंद्रिका।

नाम—(२८२९) ब्रह्मानंद संन्यासी (मृत)।

जन्म-काल—सं० १९३४।

ग्रंथ—सुशीलादेवी (उपन्यास)।

नाम—(२८३०) महावीरप्रसाद कायस्थ, रुद्रपुर।

ग्रंथ—ईश्वर-भक्ति, स्त्री-जीवन-सुधार।

नाम—(२८३१) राजेंद्रप्रतापनारायणसिंह, हल्दी।

जन्म-काल—सं० १९३४।

ग्रंथ—पावस-प्रलाप।

नाम—(२८३२) रामगोपाल मिश्र।

जन्म-काल—सं० १९३९।

रचना-काल—सं० १९५९।

ग्रंथ—(१) पतिव्रतोपाख्यान, (२) ईश्वर-प्रार्थना, (३) त्रिकाल-संध्या, (४) प्रेम-तरु, (५) अग्निहोत्र-विधि।

विवरण—पिपरिया चाँदोरी, ज़िला भंडारा-निवासी।

उदाहरण—

सतसंग में जा संतगण से पूछ लो तुम कौन हो ;
जा तत्त्ववेत्ता योगियों से पूछ लो तुम कौन हो।
गुरुदेव के उपदेश द्वारा जान लो तुम कौन हो ;
विज्ञान से कर तत्त्व साधन मान लो तुम कौन हो।

नाम—(३८३३) रामदयाल कायस्थ, वेलखेड़ा, जबलपुर।

जन्म-काल—सं० १९३४।

ग्रंथ—(१) तिथिरामायण, (२) कृष्ण-चरित्र, (३) मुहर्रम-विचार, (४) भागवत-माहात्म्य, (५) हित की बातें, (६) चित्रकेतु-कथा, (७) ज्ञानोपदेश-बारहमासी, (८) दीन-विनयपचासा, (९) ज्ञान-प्रश्नोत्तरी, (१०) संग्रह-शतक।

नाम—(३८३४) सीताराम ब्राह्मण, निज़ामाबाद, ज़िला आज़मगढ़।

जन्म-काल—सं० १९३४।

ग्रंथ—स्फुट कविता।

नाम—(३८३५) सुंदरलाल (श्याम), बाँदा।

जन्म-काल—सं० १९३४।

नाम—(३८३६) हनुमानप्रसाद त्रिपाठी, शिउली, कानपुर।

जन्म-काल—सं० १९३४।

ग्रंथ—(१) वेदशास्त्र-तालिका, (२) दश धर्म-लक्षण-व्याख्या, (३) दृष्टांत-सागर, (४) पापप्रध्वंसिनी, (५) हनुमानचालीसा, (६) मद्य-दोष-दर्पण, (७) छुआछूत।

नाम—(३८३७) हरिवंशदीन।

ग्रंथ—प्रपन्नावलंब, वृत्तप्रदीपिका, श्यामसंगीत (च० त्रै० रि०)।

नाम—(३८३८) हरीराम चौधरी जाट, हिसार।

जन्म-काल—सं० १९३४।

ग्रंथ—(१) कृषि-विद्या, (२) कृषि-कोप।

विवरण—आप इंस्पेक्टर ज़िराअत, प्रतापगढ़ हैं।

समय—संवत् १९६०

नाम—(३८३९) अनन्य प्रधान।

ग्रंथ—ज्ञानपचासा।

विवरण—आप बुंदेलखंड के क्षत्रिय थे।

नाम—(३८४०) उदयनारायणसिंह ज़मींदार, बिद्दूपुर, मुज़फ़्फ़रपुर।

ग्रंथ—(१) सर्वदर्शन-संग्रह, (२) सिद्धांत-शिरोमणि, (३) आर्यभट्टीय, सूर्य-सिद्धांत।

नाम—(३८४१) ऊधोदास बागड़ी, बीकानेर।

विवरण—आप माहेश्वरी वैश्य गल्प-लेखक हैं। आपने 'कानन-कुसुमांजलि'-नामक एक पुस्तक अपने कतिपय मित्रों के साथ मिलकर लिखी है, जो प्रकाशित हो चुकी है।

नाम—(३८४२) किशोरसिंह।

ग्रंथ—(१) राम-प्रभावली, (२) रामलीला-प्रकाशिका।

नाम—(३८४३) कैलाश रानी बाटल।

ग्रंथ—जीवन-चरित्र पं० मदनमोहन मालवीय।

नाम—(३८४४) कुंजविहारीशरण तिवारी 'कुंज', पाठकपुर, ज़िला उन्नाव।

जन्म-काल—सं० १९३६।

रचना-काल—अनुमानतः सं १९६०।

ग्रंथ—(१) शृंगार-शिरोमणि, (२) स्फुट छंद।

नाम—(३८४५) गिरिजाकुमार घोष।

ग्रंथ—उत्तरराम-चरित्र (अनुवाद) तथा और भी ग्रंथ। इनके कई लेख पार्वती-नंदन के नाम से भी निकले हैं।

नाम—(३८४६) गिरिधारीलाल, झालरापाटन।

नाम—(३८४७) गोकुलचंद्र मिश्र 'प्रेम', मैनपुरी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९३५।

ग्रंथ—वर्तमान योरप-संग्राम (पद्य-ग्रंथ)।

विवरण—यह प्रसिद्ध पंडित काशीनाथजी के पुत्र माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मण हैं। आपका उक्त ग्रंथ 'जीवनी-प्रेस, कलकत्ता से प्रकाशित हो चुका है।

उदाहरण—

ठौर-ठौर गुंजत मलिंद मतवारे फिरैं,
 और तौर अंबन पै बौर सरसायो री;
कोइल कुहूकैं चहुँ ओरन सों प्रेम भरी,
 पपिहा पुकार, शोर मोरन मचायो री।
फूलि रहे फूल कुंज-कुंजन अनेक भाँति,
 सोई संग सैन लै सिपाहिन की धायो री;
विश्व के विजय हेतु काम-रूप धारि मानौ,
 बीर वर विपिन वसंत बनि आयो री।

नाम—(३८४८) गोकुलप्रसाद बाबू।

ग्रंथ—दुर्ग-दर्पण।

विवरण—हिंदी-भाषा के परम भक्त तथा रायबहादुर हीरालालजी के बंधु हैं।

नाम—(३८४९) चतुर्भुजदास स्वामी, बीकानेर।

जन्म-काल—लगभग सं० १९३८।

ग्रंथ—भवानी-मंगल।

विवरण—आप नागौर (बीकानेर) के महंत हैं।

नाम—(३८५०) चाँदसिंह विशारद, बीकानेर।

विवरण—आप हिंदी-गद्य तथा पद्य दोनो लिखा करते हैं।

नाम—(३८५१) चिरंजीलाल शर्मा, अलीगढ़।

विवरण—हिंदी के आशुकवि और गद्य-लेखक हैं।

नाम—(३८५२) चंपाराम मिश्र, रायबहादुर, बी० ए०, मैनपुरी।

जन्म-काल—सं० १९३५।

कविता-काल—सं० १९६०।

ग्रंथ—(१) लीलावती की भाषा टीका, (२) तुलसीदास-कृत कवित्त-रामायण पर टिप्पणियाँ, (३) रघुनाथ-शिकार (प्राचीन ग्रंथ) का संपादन।

विवरण—आप पं० खड्गजीतजी मिश्र के छोटे भाई हैं। यह डिपुटी-डाइरेक्टर ऑफ़् इंडस्ट्रीज़ रह चुके हैं। ठाकुर कवि-कृत बिहारी-सतसई की टीका का आपने संपादन किया है। इस काल आपछतरपूर-रियासत के दीवान हैं।

नाम—(३८५३) छबीलेलाल गोस्वामी।

जन्म-काल—सं० १९४३।

गद्य-लेखक (गल्प), पंच-पुष्प, पंच-पराग, पंच-कलिका, पंच-पल्लव, पंच-मंजरिका एवं जावित्री प्रकाशित हो चुकी हैं (पृष्ठ-संख्या कुल मिलाकर प्रायः ३००)।

विवरण—आप पं० किशोरीलालजी गोस्वामी के पुत्र हैं। देश-प्रेम के कारण आप कुछ काल जेल भी भुगत चुके हैं। आप मथुरा के मासिक पत्र 'मोहन' तथा अंबाले के 'ब्राह्मण' के संपादक रह चुके हैं। इन्होंने वृंदावन-म्युनिसिपैलिटी में हिंदी का प्रचार किया।

नाम—(३८५४) छबीले गोस्वामी, फ़तेहपूर।

नाम—(३८५५) जगपालसिंहजी ठाकुर, बीकानेर।

ग्रंथ—महाराज पृथ्वीराज-चरित्र-बेलि (काव्य ग्रंथ) की टीका।

विवरण—आप बीकानेर के राजपूत रईस हैं। आपका उक्त ग्रंथ अभी अप्रकाशित है।

नाम—(३८५६) जनार्दन झा 'जनसीदन', बाजीतपुर, मुज़फ़्फ़रपुर।

जन्म-काल—लगभग सं० १९२६।

रचना-काल—लगभग सं० १९६०।

ग्रंथ—(१) चरित्र-गठन, (२) पुरुष-परीक्षा आदि।

विवरण—आपने कुछ काल तक 'सरस्वती' के संपादकीय विभाग में काम किया है। प्रायः ६०-६५ ग्रंथों का आपने अनुवाद किया है।

नाम—(३८५७) जुगलकिशोर जैन।

ग्रंथ—(१) आर्य-मत-लीला, (२) पूजाधिकार-मीमांसा, (३) विवाह का उद्देश्य।

विवरण—देवबंद, ज़िला सहारनपूरवासी अग्रवाल जैन। जैन-धर्म एवं साहित्य के आप प्रसिद्ध समालोचक हैं।

नाम—(३८५८) ज्योतिःस्वरूप शर्मा, गंभीरपुरा, अलीगढ़।

ग्रंथ—(१) कृषि-चंद्रिका, (२) सदाचार, (३) धर्म-रक्षा आदि प्रायः ४० ग्रंथ लिखे हैं।

नाम—(३८५९) ज्वालादत्त शर्मा, मुरादाबाद।

ग्रंथ—प्रायश्चित्तादर्श।

नाम—(३८६०) ज्वालादेवी।

ग्रंथ—स्त्री-शिक्षा-संबंधी कई ग्रंथ।

विवरण—आप डॉक्टर रामचंद्र की धर्मपत्नी हैं।

नाम—(३८६१) देवीप्रसाद उपाध्याय।

ग्रंथ—सुंदर सरोजिनी उपन्यास।

विवरण—आप राज्य रामनगर, चंपारन के दीवान हैं।

नाम—(३८६२) पन्नालाल बाकलीवाल।

ग्रंथ—(१) ज्ञानार्णव, (२) स्वामीकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा।

विवरण—आप सुजानगढ़ बीकानेर-निवासी खंडेलवाल जैन हैं, तथा खंडेलवाल जैन-हितैषी के संपादक हैं।

नाम—(३८६३) प्रभू दान चारण, मारवाड़।

विवरण—आश्रयदाता महाराजा जसवंतसिंह।

नाम—(३८६४) प्रयागनारायण मिश्र, लखनऊ।

ग्रंथ—(१) वंशीशतक, (२) मनोरमा, (३) राघव-गीत, (४) ऋतुकाव्य।

नाम—(३८६५) प्रियाअली टोडी।

जन्म-काल—सं० १९३५।

ग्रंथ—हितजू के विनय के पद।

विवरण—राधावल्लभी।

नाम—(३८६६) बतोले उपाध्याय।

रचना-काल—सं० १९६५ के पूर्व।

ग्रंथ—दीक्षा-प्रबंध।

विवरण—समथरवासी।

नाम—(३८६७) बैजनाथसिंह 'इंदु', काशीपुर, ज़िला उन्नाव।

जन्म-काल—सं० १९३५।

रचना-काल—अनुमानतः सं० १९६०।

ग्रंथ—स्फुट रचनाएँ।

विवरण—आप कवि क्षमापति-चंद्रिकाप्रसादसिंहजी (नं०

२९७६) के छोटे भाई तथा श्रीयुत बच्चूसिंहजी के पुत्र हैं। [कुं० बाबूसिंह क्षत्रिय, पिपरसंड (ज़िला लखनऊ) द्वारा ज्ञात]

नाम—(२८६८) मनोहरप्रसाद 'चेत', पाठकपुर, ज़िला उन्नाव।

जन्म-काल—लगभग सं० १९३१।

रचना-काल—लगभग सं० १९६०।

विवरण—आपने दो ग्रंथ बनाए हैं, ऐसा श्रीबाबूसिंह क्षत्रिय, पिपरसंड (लखनऊ) का कथन है।

नाम—(२८६९) माधवदास स्वामी, नागौर।

ग्रंथ—(१) राम-कीर्ति-सागर (महाकाव्य), (२) भगवद्-गीता का पद्यात्मक भाषांतर।

विवरण—आप पं० लक्ष्मण शास्त्री, बीकानेर के भाई हैं, ऐसा कहा जाता है। यह महाशय संस्कृत तथा हिंदी के अच्छे ज्ञाता हैं।

नाम—(२८७०) राधेश्याम मंत्री एडवर्ड हिंदी-पुस्तकालय, हाथरस।

जन्म-काल—सं० १९३५।

ग्रंथ—स्फुट छंद एवं लेख।

नाम—(२८७१) रामनारायण पांडेय कान्यकुब्ज, पैंतेपूर, ज़िला सीतापूर।

जन्म-काल—सं० १९३९।

रचना-काल—सं० १९६०।

ग्रंथ—(१) जैमिनिपुराण (आल्हा), (२) जन रघुनाथ-जीवन-चरितामृत, (३) रमारामा-शतक।

विवरण—अच्छी कविता की है। काव्य के बड़े उत्साही हैं।

हमने परलोकवासी मंगलदासजी के नाम कार्ड भेजा था, परंतु आपने उसका उत्तर और १४ कवियों का जीवन - चरित्र तथा उदाहरण तुरंत हमारे पास भेजे।

उदाहरण—

आछे राम काछे कटि काछनी पितंबर की,
पाछे कछु दच्छिन सों लच्छन लसे रहैं;
सोहै उर बनमाल मोतिन की माल पुनि,
भाल पै तिलक श्रुति कुंडल रसे रहैं।
सुखमा मुकुट सीस सरसै कलित कंठ,
कंठ हू ललित कल कौतुक कसे रहैं;
धारे धनु-बान अरि-मान के मथन-वारे,
जानकी-समेत मेरे मानस बसे रहैं।

नाम—(३८७२) रामलालजी मनिहार, बलिया।

जन्म-काल—सं० १९३५।

ग्रंथ—शंभु-पचीसी।

नाम—(३८७३) रामलाल शर्मा, मैनपुरी।

ग्रंथ—स्फुट कविता।

विवरण—आप स्थानीय स्कूल के प्रधानाध्यापक थे, और पश्चात् वर्तमान मैनपुरी-नरेश के यहाँ रहे।

नाम—(३८७४) लक्ष्मीनारायण, दतिया।

जन्म-काल—सं० १९३५।

ग्रंथ— हितजी का प्रागट्य स्फुट छंद।

विवरण—राधावल्लभी।

नाम—(३८७५) लालारामजी शास्त्री।

ग्रंथ—(१) आदि-पुराण, (२) उत्तर पुराण, (३) धर्म-प्रश्नोत्तर, (४) श्रावकाचार, (५) तत्त्वानुशासन, (६) चरित्र-सार,

(७) शांतिनाथपुराण, (८) श्रुतावतार कथा, (९) इष्टोपदेश, (१०) षोड़श संस्कार-विधि।

विवरण—आप 'जैन-गज़ट' के सहायक संपादक हैं।

नाम—(३८७६) श्रीपालचंद्र यति।

रचना-काल—सं० १९६५ के पूर्व।

ग्रंथ—जैन-संप्रदाय-शिक्षा।

विवरण—बीकानेर-निवासी।

नाम—(३८७७) श्रीराम नेत (रायसाहब)।

ग्रंथ—(१) साँची-शिला-लेख व ताम्रपत्र, (२) राज्य ओरछा, (३) बुंदेल-वंश-वर्णन, (४) बुंदेला राज्य की समालोचना, (५) इतिहास-ओरछा, (६) प्राचीन भारत।

विवरण—आप रियासत बिजावर के दीवान तथा हमारे मित्र थे।

नाम—(३८७८) संतदास।

जन्म-काल—सं० १९३५।

ग्रंथ—(१) बृहदष्टयाम, (२) सेवाशतक, (३) मानसी भावना, (४) राधा-सुधा-निधि की टीका।

विवरण—राधावल्लभी प्रसिद्ध महात्मा।

नाम—(३८७९) सूर्यकुमार वर्मा, भदौरिया।

जन्म-काल—सं० १९३५।

ग्रंथ—(१) अशोक का जीवन-चरित्र, (२) बाल भारत, (३) गारफ़ील्ड, (४) धर्मपद, (५) मित्र-लाभ।

विवरण—ग्वालियर में राजकर्मचारी हैं।

नाम—(३८८०) हरिहरप्रसाद परिव्राजकाचार्य।

ग्रंथ—(१) तुलसीतत्त्वभास्कर, (२) तिलकतत्त्व।

नाम—(३८८१) हरीराम उस्ताद, मैनपुरी।

मृत्यु-काल—लगभग सं० १९७९।

ग्रंथ—स्फुट ख़्याल।

विवरण—आपके रचे हुए ख़्याल प्रायः गवैए गाया करते हैं।

उदाहरण—

माया-मोह कि महिमा में मस्ती चढ़ती मस्तानों को;
मिलती है अलबत्त सज़ा फिर ऐसे बेईमानों को।
छंहो शास्त्र का करै सुताला बाँचें बेद-पुरानों को;
लंबी धोती पहिन-पहिन जाते गंगा-अस्नानों को।
भगवत में नहिं भक्ति-भावना, पूजें भूत-मसानों को;
निज नारिन का जतन करावें घर बुलवा के स्यानों को।
पेट के कारन ढोंग बनावे फिरते दो-दो दानों को;
मिलती है अलबत्त सज़ा फिर ऐसे बेईमानों को।

इकतालीसवाँ अध्याय

उत्तर नूतन परिपाटी

संवत् १९६१ से १९७५ तक

उत्तर नूतन परिपाटी के समय में राजनीतिक आंदोलन का देश में बल बढ़ा। वंग-भंग से बंगालियों को बड़ा क्षोभ हुआ, और भारतीय शेष प्रांतों ने भी उनका साथ दिया। १९६२ में मुसलमानों का एक डेपुटेशन बड़े लाट साहब लॉर्ड मिंटो की सेवा में उपस्थित हुआ, और वहाँ से हिंदुओं के प्रतिकूल मुस्लिम-अधिकार-वृद्धि के मामले में उसे आश्वासन के वचन मिले। १९६६-६७ में भारत-सचिव लॉर्ड मार्ली ने कुछ राजनीतिक उन्नति की, जिससे देश में कुछ सांत्वना हुई। १९६८ में सम्राट् की ताजपोशी का जलसा दिल्ली में हुआ, जिसमें वंग-भंग का प्रश्न ठीक-ठीक निर्णीत हो गया। बंगाल के दोनो भाग एक हो गए, किंतु बिहार बंगाल से अलग हो

गया। बंगालियों को बिहार से बहुत लाभ था, क्योंकि दोनो प्रांत एक में होने से विद्वत्ता आदि में अधिक उन्नत होने के कारण बंगाली लोग बिहार के भाग की नौकरियाँ तथा अन्य पद अधिकता से लिए हुए थे। बिहार के अलग होने से बिहारियों के साथ न्याय हुआ, जिससे वे प्रसन्न हो गए, तथा हानि सहते हुए भी अपने पक्ष की निर्बलता के कारण बंगाली कुछ कह न सके। १९७१ से १९७५ तक महायुद्ध हुआ, जिसमें भारतीयों ने सरकार के पक्ष में लड़कर अच्छी राजभक्ति तथा शौर्य दिखलाए। उस काल देश में इतनी अशांति न थी कि भारतीयों द्वारा सरकारी सहायता के प्रतिकूल कोई आवाज़ उठाता। सं० १९७४ में सरकार ने यह घोषणा की कि समय पर भारत को भी प्रतिनिधि-बल-पूर्ण राज्य मिलेगा। भारत-सचिव मांटेग्यू साहब यह जाँच करने को आए कि उपर्युक्त घोषणा के अनुसार भारत में प्राथमिक उन्नति कितनी हो? इस प्रकार उत्तर नूतन परिपाटी काल में राजनीतिक आंदोलन आशा के कारण कुछ सधा रहा, और देश में अशांति की कमी रही। अतएव जो हिंदी-कविता इस काल बनी, उसमें अँगरेज़ों के प्रतिकूल कोई उद्दंडता न थी, और पूर्व प्रारंभिक समय में जो भाव प्रबल पड़ रहे थे, वे कुछ दबे, तथा राजभक्ति के प्रतिकूल प्रजा में कटु विचार कम पड़े।

इस समय नूतन परिपाटी काल के बहुतेरे सुलेखक प्रस्तुत रहे, तथा अब भी हैं, एवं दो-चार सुलेखक भारतेंदु-काल के भी वर्तमान हैं। चाहे उनमें उतनी कवित्व-शक्ति न हो, तो भी प्राचीनता के कारण उनकी मर्यादा विशेष है, और स्वयं वे तथा अन्य साहित्यानुरागी उनकी महिमा कभी-कभी उचित से भी अधिक कहते हैं। एक यह भी बात है कि इन प्राचीन कालों के कवियों की पूर्ण महत्ता निखर चुकी है, किंतु नवीन समयवाले रचयिताओं की कुछ गुरुता अभी भविष्य की गोद में छिपी हुई है, क्योंकि उन्हें वृद्धमानी

होना तथा उनके सब ग्रंथ बनना शेष है। अतएव उत्तर नूतन काल-वाले कवियों के विषय में जो कुछ कहा जाय, उसमें कुछ अंश भविष्य की आशा का भी समझना चाहिए। कुल मिलाकर इस काल उपन्यास, नाटक पद्य-रचना आदि की वृद्धि दिखाई पड़ती है, तथा विविध विषयों का फैलाव अच्छा हुआ है। इस काल के मुख्य रचयिताओं में जयशंकरप्रसाद, मैथिलीशरण गुप्त, सुमित्रानंदन पंत, मन्नन द्विवेदी गजपुरी, स्वामी सत्यदेव, रामदेवजी, विश्वेश्वरनाथ रेउ, गोविंदवल्लभ पंत, जी० एस्० पथिक, गुलाबराय गुप्त, रामनारायण शर्मा (१९७९), लौटूसिंह, मोहनलाल महतो आदि गिनाए जा सकते हैं। छेदाशाह सैयद (१९६२) तथा मोहम्मद वज़ीरख़ाँ इस काल के श्रेष्ठ मुसलमान लेखक हैं। स्त्री-लेखिकाओं या कवियों में मुख्यतया रानी रामप्रियाजी (१९६२), यशोदादेवी (१९६९), सरस्वतीदेवी (१९६९), रमादेवी त्रिपाठी (१९६६), रामेश्वरीदेवी नेहरू (१९६७), हेमंतकुमारीदेवी (१९६८), चंदाबाई (१९७०), प्रेमकुँवरि (१९७०), सुभद्राकुमारी चौहान (१९७०) तथा रत्नावती शर्मा (१९७२) के नाम इस काल आते हैं। इनमें से सुभद्राकुमारी चौहान तथा हेमंतकुमारीदेवी की कविता एवं गल्पों की अच्छी प्रसिद्धि है, और रामेश्वरी नेहरू सुलेखिका अथच संपादिका हैं। उपर्युक्त इतर देवियों की भी रचनाएँ कभी-कभी उच्च कोटि की होती हैं। बड़े हर्ष की बात है कि हमारा स्त्री-समाज इस छोटे-से काल में इतनी देवियाँ साहित्य-क्षेत्र में उपस्थित कर सका। इन तथा ऐसी ही अन्य बातों से भारतोन्नति की आशा पाई जाती है। भक्तों में इस काल केवल रामजीशरणविंध्याचलप्रसाद (१९६४) का नाम आता है। यह समय देव-भक्ति का न होकर देश-भक्ति का है। देश-भक्तों तथा राजनीतिज्ञों में कालूराम द्विवेदी (१९६२), स्वामी सत्यदेव (१९६२), मन्नन द्विवेदी (१९६२),

पुरुषोत्तमदास टंडन (१९६९), रामचंद्र द्विवेदी (१९६८), हितैषीजी (१९७०) और देवीप्रसाद गुप्त (१९७९) के नाम इस काल में मुख्य हैं। यों तो देश-भक्ति की धारा ऐसे प्राबल्य से बह रही है कि हमारे बहुत अधिक लेखक इस संख्या में आ सकते हैं, फिर भी यहाँ हमने प्रति विषय के मुख्यातिमुख्य लोगों के नाम लिखे हैं। यह मुख्यता कवि विशेष द्वारा वर्णित विषयों के अनुसार मानी गई है, न कि इतरों से श्रेष्ठता के अनुसार। इनके वर्णन ग्रंथ में दिए ही गए हैं, सो यहाँ विस्तार नहीं किया जाता है। स्वामी सत्यदेव के लेख पाश्चात्य अनुभवों के कारण बहुत ही मनोरंजक एवं लाभकर हैं। मन्नन द्विवेदी एक अपूर्व रत्न था, जो हिंदी माता ने अकाल में खो दिया। इतर महाशय भी देश पर तन-मन-धन न्योछावर किए हुए हैं। इनकी कृतियों से आत्म-त्याग तथा देश-प्रेम के महामंत्र प्रत्येक स्थान पर प्रतिध्वनित होते हैं। इनके जीवन धन्य हैं। इन सबकी सम्मतियों तथा कार्यवाहियों से हम लोगों का मतैक्य न होने पर भी इनके स्वार्थ-त्याग पर अनुराग रखना ही पड़ेगा। जैन वैद्य (१९६२) भी कुछ ऐसे ही महाशय मुख्यतया समाज-सुधारक थे, जो हिंदी की उन्नति पर सदैव श्रमशील रहा करते थे। इनकी अकाल मृत्यु से राजपूताना-प्रांत में हिंदी-प्रचार को क्षति पहुँची है। जैन वैद्यजी तथा चंद्रधर शर्मा गुलेरी अपूर्व रत्न थे, जिनसे जयपुर की शोभा थी। व्याख्याताओं में यों तो उपर्युक्त तथा अन्य महाशयों में अनेकानेक सज्जन हैं, विशेषतया सत्यदेवजी, टंडनजी आदि, किंतु मुख्यतया नंदकिशोर शुक्ल (१९६२) और रामानंद (१९६९) के नाम इस विषय में कथन के योग्य हैं।

इस काल पत्रकारों की हिंदी में योग्यता और संख्या दोनो में अच्छी वृद्धि हुई। निम्न-लिखित महाशयों के नाम इस विषय

में विशेषतया गिनाए जा सकते हैं—हरीकृष्ण जौहर (१९६२), छोटेराम शुक्ल (१९६७), इंद्रजी (१९७०) (स्वामी श्रद्धानंद के सुपुत्र), मातादीन (१९७०), शिवदास पांडेय (१९७०), लक्ष्मणनारायण गर्दे (१९७१), नर्मदाप्रसाद मिश्र (१९७२), झावरमलजी (१९७३), बनारसीदास चतुर्वेदी (१९७४), शिवपूजनसहाय (१९७५)। इनमें हरीकृष्ण जौहर, इंद्रजी, मातादीन शुक्ल, गर्देजी, बनारसीदास चतुर्वेदी तथा शिवपूजन-सहाय आदि के नाम बहुत प्रसिद्ध हैं। उपर्युक्त सभी महाशय पत्र-संपादन-कार्य सुचारु रूप से करते हैं। पुराने समय में हमारे पत्रकार लोग बहुधा धार्मिक, सामाजिक आदि विषयों में प्राचीन विचार रखते थे, किंतु अब परिष्कृत भावों का साम्राज्य फैल रहा है। हमारी पत्र-संपादन-कला उन्नति करती जाती है, किंतु समाज में हिंदी-पत्रों का मान कई कारणों से वैसा नहीं है, जैसा अँगरेज़ी-पत्रों का। इससे हिंदी के मासिक, पाक्षिक आदि पत्र तो कुछ-कुछ उन्नति कर भी रहे हैं, किंतु दैनिक, साप्ताहिक आदि पत्रों की संतोष-प्रदायिनी उन्नति नहीं है। संसार में स्थायी, अर्द्धस्थायी तथा अस्थायी साहित्य का प्रचार होता है। उत्कृष्ट साधारण ग्रंथ प्रथम श्रेणी में हैं, मासिक तथा अर्द्धमासिक पत्र दूसरी में और दैनिक, साप्ताहिक आदि तीसरी में। तीनो प्रकार का साहित्य समाज पर प्रभाव डालता है। स्थायी साहित्य प्रचुर काल तक स्थिर शिक्षा देता है, किंतु आह्निक काम-काजों एवं जनता की प्रगति पर जैसा प्रभाव साधारणतया अस्थायी साहित्य का पड़ता है, वैसा स्थायी का नहीं। अर्द्धस्थायी की दशा दोनो के बीच में है। हमारा स्थायी तथा अर्द्धस्थायी साहित्य सामाजिक स्थिति के अनुसार बहुत करके योग्य सेवा कर रहा है, परंतु अस्थायी साहित्य ग्रामों में तो थोड़ा बहुत प्रभाव रखता है, किंतु नगरों की सुपठित जनता पर वह प्रभाव

शून्यप्राय हैं। कारण यही है कि अनिवार्य कारणों से हमारे दैनिक पत्र तथा उनके संपादक सज-धज एवं लोक-ज्ञान में अँगरेज़ी उत्कृष्ट पत्रों तथा संपादकों के अभी बहुत पीछे हैं। फिर भी इनका प्रभाव देश-प्रेम-वृद्धि में पड़ अच्छा रहा है। इनकी शोचनीय दशा अनिवार्य कारणों से होने के कारण समाज द्वारा हमारे पत्र प्रोत्साहन योग्य अवश्य हैं। ग्रंथ-संपादकों में इस काल माणिक्यचंद्र जैन (१९६४) तथा व्रजरत्नदास (१९७२) मुख्य हैं। कई अन्य महाशय भी इस महत्कार्य में योग देते हैं, किंतु इन दोनो सज्जनों ने अपने प्रयत्नों में इसी की मुख्यता रक्खी।

विविध विषय-वर्णन में गंगाप्रसाद उपाध्याय (१९६४), चंद्रमौलि शुक्ल (१९६४) और श्रीकृष्णगोपाल माथुर (१९७२) मुख्य समझ पड़ते हैं। रामचरित उपाध्याय (१९६५) तथा दयालचंद्र गोयलीय (१९७९) नीतिकार हैं। दोनो अच्छे लेखक हैं। उपयोगी ग्रंथकारों में इस काल कोई नवीन नाम नहीं आता। व्यापार-संबंधी ज्ञान-वर्द्धन में जी० एस्० पथिक (१९७०) ने बहुत ही श्लाघ्य कार्य किया है। इनके ग्रंथ बड़े लोकोपयोगी हैं। विशिष्ट विषयों पर हिंदी को ऐसे सुलेखकों की आज आवश्यकता है। विज्ञान में महेशचरणसिंह (१९६५), महावीरप्रसाद (१९६६) और जगद्बिहारी सेठ (१९७९) के श्रम श्लाघ्य हैं। महेशचरणसिंह ने अमेरिका और जापान में शिक्षा पाई है। आपने रसायन पर ग्रंथ-रचना की है। सेठजी ने बिजली पर ग्रंथ लिखकर समाज का ज्ञान बढ़ाया है, और महावीरप्रसाद ने ज्योतिष तथा विज्ञान पर अच्छे ग्रंथ रचे हैं। ये तीनो महाशय हमारे उपयोगी ग्रंथकारों में परम स्तुत्य हैं। यात्रा पर स्वामी सत्यदेव (१९६३) तथा गौरीशंकर-प्रसाद (१९६२) के श्लाघ्य ग्रंथ हैं। दोनो ने अमेरिका, फ़िजी आदि देखकर रोचक साहित्य रचा है। प्रवास पर भवानीदयाल

(१९७०) और बनारसीदास चौबे (१९७४) ने परिश्रम किया है। इनके ग्रंथ और प्रयत्न श्लाघ्य हैं। भवानीदयालजी ने अधिकतया आफ्रिका का वर्णन किया है और चौबेजी ने उपनिवेशों की राजनीतिक स्थिति का। हास्य-रस में इस काल लल्लीप्रसादजी पांडेय (१९६८) तथा जी० पी० श्रीवास्तव (१९७२) वर्ण्य हैं। इन दोनो की कोई विशेष मुख्यता नहीं है। हास्य-रस के सफल कथन में परमोच्च साहित्यिक शक्ति की आवश्यकता है। पात्रों की मूर्खता के बल पर इस रस का उचित समावेश नहीं होता। फिर भी हमारे हास्य-रस के लेखकों ने अब तक मूर्खता का सहारा छोड़कर इसके वर्णन में सफलता प्रायः नहीं पाई है। आगरा में इस विषय पर कुछ श्लाघ्य श्रम हुआ है।

प्रेमात्मक विषयों पर जानकीप्रसाद द्विवेदी (१९६१), किशोरीदास (१९७९) तथा मोहनलाल (१९७९) के नाम इस काल आते हैं। द्विवेदीजी ने नख-शिख तथा प्रेम पर काव्य रचा, किशोरीदास ने अलंकार पर तथा रीति-ग्रंथ बनाए, और मोहनलालजी व्यंग्य-चित्रकार हैं। किसी समय में भक्तों तथा शृंगारी कवियों का हमारे यहाँ बाहुल्य था, किंतु समय के उलट-फेर से अब ऐसे रचयिताओं की संख्या लुप्तप्राय है। शास्त्रकारों में इस काल केवल बाबू गुलाबराय गुप्त का नाम आता है। आपने तर्क-शास्त्र तथा दर्शन के इतिहास रचे हैं, जो उत्कृष्ट ग्रंथ हैं। इनमें इन शास्त्रों पर अँगरेज़ी तथा संस्कृत दोनो के विचारों के सार आ गए हैं। पौराणिक विषयों पर खंड काव्य की भाँति नाटक, काव्य-ग्रंथादि तो बने, किंतु किसी ने पुराणों पर कहने योग्य निबंध न लिखा। आर्यसमाजी लेखकों में इंद्रजी के अतिरिक्त कोई भारी लेखक नहीं दिखाई पड़ता।

नाटककारों में इस काल जयशंकर प्रसाद (१९६१), माधव शुक्ल (१९६४), गोविंदवल्लभ पंत (१९७०), प्रेमचंद

(१९६५) और अंबिकादत्त त्रिपाठी (१९७३) प्रमुख हैं। इनमें जयशंकर प्रसाद तथा पंतजी न केवल इस काल के, वरन् हमारे सभी समयों के नाट्यकारों में स्तुत्य माने जा सकते हैं। जयशंकर प्रसाद-सा नाट्यकार हिंदी ने भारतेंदु के अतिरिक्त शायद अब तक नहीं उत्पन्न किया है। ईश्वर इन महाशय को चिरायु करे। इनसे हमारे नाटक-विभाग को बड़ी आशा है। इन्होंने कई नाटक-ग्रंथ (विशाख, जनमेजय का नाग-यज्ञ, चंद्रगुप्त मौर्य, अजातशत्रु, कामना, स्कंद-गुप्त, करुणालय, राजश्री तथा एक घूँट) रचे हैं, जिनमें स्कंद-गुप्त बहुत ही स्तुत्य है। चंद्रगुप्त और अजातशत्रु भी उत्कृष्ट नाटक हैं। अजातशत्रु की भाषा कहीं-कहीं क्लिष्ट है। यह बात स्कंद गुप्त में नहीं है। अजातशत्रु में पात्रों की परिस्थिति बदलती है, किंतु स्कंदगुप्त में यह भी नहीं है, जिससे खेलने में अड़चन न पड़ेगी। इन बातों के अतिरिक्त ये दोनो ग्रंथ प्रायः एक-से हैं। इनके चरित्र-चित्रण अच्छे हैं, जिनसे मानसिक वृत्तियों की वृद्धि दिखाई पड़ती है। करुणा आपका प्रधान रस है, जिसका चित्रण अपूर्व छटा दिखलाता है। ये नाटक भावात्मक, आदर्शात्मक तथा इतिवृत्तात्मक हैं, और यही इनकी मुख्यता है। अत्यधिक आध्या-त्मिकता से कहीं-कहीं क्लिष्टता भी आ गई है। गाने नवीनता लिए हुए गांभीर्य-पूर्ण हैं, जो कंपनियों के छिछोरेपन को बचाते हुए आरोचन लाते हैं। इनके नाटकों को लोग छायावादात्मक भी कहते हैं, विशेषतया कामना और अजातशत्रु को। कामना छायावाद के कारण अरोचक हो गया है, किंतु अजातशत्रु ठीक है। विशाख में महत्ता नहीं है। नाग-यज्ञ साधारण है। शेष नाटक भी ऐसे ही हैं। चंद्रगुप्त अवश्य उत्कृष्ट है। अभी तक प्रसादजी का प्रसादत्व अजातशत्रु, चंद्रगुप्त और स्कंदगुप्त पर अवलंबित है। भाषा की क्लिष्टता से अभिनय में इनके नाटक लोक-प्रिय न होंगे, इतना दोष

है। कथोपकथन कहीं-कहीं रोचकता को छोड़कर काल्पनिकता से दूषित हो गए हैं। पंतजी की वरमाला अच्छे नाटकों में से है। भाषा तथा गीत काव्य दोनो इसमें श्रेष्ठ हैं। ग्रंथ उच्च कोटि का है, किंतु प्रसाद तथा भारतेंदु के उत्कृष्ट नाटकों के पीछे रह जाता है। पंतजी यदि इस विषय पर चित्त लगावें, तो उत्कृष्ट नाट्यकार हो सकते हैं। प्रेमचंद के संग्राम और कर्बला नाटक हैं। कर्बला उच्च कोटि का ग्रंथ है, जिसमें मुसलमानी मत से सहृदयता बहुत सराहनीय है। नाटक साद्यंत निर्दोष उतर गया है। चरित्र-चित्रण भी ठीक है। माधव शुक्ल का महाभारत-नाटक उत्कृष्ट है। उसकी भाषा प्रांजल तथा प्रसाद-पूर्ण है, और पद्य भी सुंदर हैं। उग्र का ईसा भी बहुत ही प्रांजल और सुपाठ्य है। उत्तर नूतन परिपाटी के कुछ नाटक प्रौढ़ हैं। इस विभाग की इस काल अच्छी अंग-पुष्टि हुई है।

उपन्यासकारों में इस काल निम्न-लिखित प्रधान हैं—हरीकृष्ण जौहर (१९६२), आत्माराम देवकर (१९६२), ओंकारनाथ बाजपेयी (१९६३), प्रेमचंदजी (१९६५), वृंदावनलाल वर्मा (१९७०), अनूपलाल (१९७५), धन्यकुमार जैन (१९७५), प्यारेलाल गुप्त (१९७५) तथा बेचन शर्मा 'उग्र' (१९७५)। धन्यकुमार जैन अनुवादकर्ता गल्पकार हैं। ओंकारनाथ बाजपेयी का श्रम स्तुत्य है। उग्रजी बड़े सबल तथा यथार्थ लेखक हैं। इनकी लेखन-शैली बहुत स्तुत्य है, किंतु अश्लील विषयों में ज्ञान-वर्द्धन करते-करते कभी आप इतना दूर निकल जाते हैं कि समझ पड़ने लगता है कि आपको उसी वर्णन में मज़ा आता है। यदि ऐसे विषयों को छोड़कर आप सद्विषयों पर श्रम करें, तो अच्छी ख्याति के योग्य हो जायँ। अब आप सिनेमा में चले गए हैं। प्रेमचंदजी हमारे उपन्यासकारों में सर्वोत्कृष्ट समझे जाते हैं। इन्होंने लौकिक

ज्ञान का प्रकृष्ट संग्रह दिखलाया है। यदि इतिवृत्तात्मकता को कुछ कम करके आप आदर्शात्मिकता एवं भावात्मिकता की ओर कुछ झुक सकते, और अपने चरित्रों को साद्यंत एक-सा निभा सकते, तो परमोत्कृष्ट औपन्यासिक होने की पात्रता आपमें प्रस्तुत थी। देश-प्रेम की ओर तो आप बढ़े हैं, किंतु जितना कुछ देशीय मान है, उसकी भी सम्यक् रक्षा आपसे नहीं हो सकी है। एक क्षत्रिय रईस तो योरेशियन बालिका के साथ रंगभूमि में अपना पुत्र विवाहने की स्वीकृति दे देता है, किंतु जातीय अभिमान-वश योरेशियन एक हिंदू से अपनी लड़की नहीं विवाहता। यह चित्रण असली चित्र का ठीक विपरीत दृश्य दिखलाता है। इतना सब होते हुए भी हम आपको एक भारी उपन्यासकार मानते हैं। आपके बड़े ग्रंथ उत्कृष्ट, किंतु सदोष हैं, तथा छोटी कथाएँ बढ़िया और निर्दोष हैं। इनमें वर्णन की शक्ति अच्छी है, किंतु कथाओं के देखते हुए प्रायः अनुचित विस्तार द्वारा ग्रंथ बढ़ गए हैं। जयशंकर प्रसाद ने भी कंकाल-नामक उपन्यास लिखा है। उसका कथा-भाग इतना घुमावदार और परिणाम ऐसा अरोचक है कि ग्रंथ उत्कृष्ट होकर भी पसंद नहीं आता। वृंदावनलाल के गढ़-कुंडार का प्रथमार्द्ध बढ़िया है, किंतु उत्तरार्द्ध शिथिल पड़ गया है। लेखक ने बुंदेलखंड का हाल ख़ूब जानकर ग्रंथ लिखा है।

हमारे गल्प तथा आख्यायिका-लेखकों में इस काल निम्न-लिखित महाशयों की गणना हो सकती है—जयशंकर प्रसाद (१९६७), प्रेमचंद (१९६९ , लक्ष्मीनारायण गुप्त (१९७०), विद्याभूषण (१९७९), कौशिकजी (१९७०), सुदर्शनजी (१९७०), चतुरसेन शास्त्री (१९६६) आदि। प्रसादजी की कहानियों में साहित्यिकता उत्कृष्ट है, तथा आध्यात्मिकता एवं ऐतिहासिक खोज को उसी में मिलाकर आपने अच्छी छटा दिखलाई है। जो

मुख्य गुण उनके नाटकों में हैं, वही यहाँ भी मिलते हैं। प्रेमचंद ने समाज तथा कौशिकजी ने कुटुंब पर अच्छा प्रकाश डाला है। प्रेमचंदजी घटनाओं के सहारे अधिक चले हैं, किंतु प्रसादजी भावों की प्रधानता रखते हैं। सुदर्शनजी ने भारतीयपने को पाश्चात्य ज्ञान से मिलाकर रोचक प्रबंध बाँधे हैं। हृदयेश (चंडीप्रसाद) अलंकृत भाषा तथा वास्तविकता से आगे बढ़कर कथाओं में भी भावुकता दिखलाते हैं। चतुरसेन की भाषा में अपूर्व बल है। हम इनको प्रायः अद्वितीय गल्पकार मानते हैं। राय कृष्णदास उच्च कोटि की कहानियाँ लिखते हैं, किंतु आध्यात्मिकता के आधिक्य से सब लोग उनमें तादृश आनंद नहीं पाते। फिर भी हमें इनके ग्रंथों में कुछ-कुछ जटिलता होते हुए भी अच्छा चमत्कार दिखाई पड़ता है। हमारा गल्प तथा आख्यायिका-विभाग उत्तर नूतन परिपाटी काल ही में उठकर अति शीघ्र प्रौढ़ता को प्राप्त हो गया। अज़ीम-बेग चग़ताई की भी छोटी कहानियाँ अच्छी हैं, किंतु उनकी उर्दू-कहानियों के हिंदी में अनुवाद-मात्र हुए हैं। इस विभाग की अंग-पुष्टि भविष्य में भी अच्छी होगी, ऐसी आशा है। कई मासिक पत्र इस पर विशेष ध्यान देते हैं।

सत्कवियों में इस काल निम्न-लिखित महाशयों के नाम सामने आते हैं—जानकीप्रसाद (१९६१), शिवरत्न शुक्ल (१९६१), देवीप्रसाद चतुर्वेदी (१९६२), जनार्दन मिश्र (१९६३), हरिदत्त दीन (१९६४), गदाधरसिंह (१९६५), नूतन (१९६५), चंद्रभानुसिंह (१९६७), सूर्यप्रसाद त्रिपाठी (१९६७), मातादीन शुक्ल (१९७०), चतुरसिंह (१९७०), मैथिलीशरण गुप्त (१९७०), लक्ष्मण शास्त्री (१९७०), मातादीन शास्त्री (१९७०), अवंतविहारीलाल माथुर (१९७२), रामनरेश त्रिपाठी (१९७२), जगदीश झा 'विमल' (१९७१), लोचनप्रसाद पांडेय (१९७२),

अंबिकादत्त त्रिपाठी (१९७३), केशवलाल झा (१९७४), रामकुमार वर्मा (१९७४), गुरुभक्तसिंह (१९७५), रामचरित उपाध्याय (१९७५), सुमित्रानंदन पंत (१९७५), उमरावसिंह (१९७५), नवीन (१९७५), रामनारायण शर्मा (१९७५), सियारामशरण गुप्त (१९७५) तथा वियोगी हरि (१९७५)। इन सब महाशयों ने उत्कृष्ट रचना की है। किसी-किसी ने व्रजभाषा में, किसी ने खड़ी बोली में और बहुतों ने दोनो में। इनमें से प्रायः सभी के उदाहरण ग्रंथ में मिलेंगे, सो प्रत्येक साहित्यिक के विषय में कुछ अधिक विवरण अनावश्यक है। ग्रंथ में वर्णन और उदाहरण दोनो सूक्ष्मता-पूर्वक मिलेंगे। फिर भी शिवरत्न शुक्ल, मैथिलीशरण गुप्त तथा गुरुभक्तसिंह विशेषतया वर्णनीय हैं। शुक्लजी ने कई उत्कृष्ट काव्य-ग्रंथ रचे हैं, तथा गुरुभक्तसिंहजी के छोटे-छोटे ग्रंथों में काव्यत्व की कमनीयता अच्छी मिलती है। गुप्तजी बहुत ही लोकमान्य सुकवि हैं, जिन्हें हम भी आदर की दृष्टि से देखते हैं। पं० सुमित्रानंदन पंत एक बहुत ही उच्च कक्षा के कवि-रत्न हैं। इनके तीन ग्रंथ देखने में आए हैं, जिनमें पल्लव मुख्य है। इस ग्रंथ का साहित्य परमालौकिक आनंद देता है। सच पूछा जाय, तो यह आजकल के ऐसे कवि हैं, जिनकी उपमा हम अपने प्राचीन कवियों से निःसंकोच भाव से दे सकते हैं। पंत, निरालाजी और अजमेरीजी वर्तमान काल के कवियों में बहुत ही स्तुत्य हैं। आशु-कविता अजमेरी जी में खूब है, भाव-गांभीर्य एवं आरोचन पंत में तथा नवीनता की कमनीयता निराला में। हमारा उत्तर परिपाटी काल यदि केवल जयशंकर प्रसाद और सुमित्रानंदन पंत को उत्पन्न किए होता, तो भी वह धन्य होता।

टीकाकारों में इस काल मक्खनलाल शास्त्री (१९७१) का प्राधान्य है तथा अनुवादकों में जनार्दन झा (१९६१),

शिवसहाय चतुर्वेदी (१९७२) और नरोत्तमदास (१९७९) का। निबंधकारों में चंद्रमौलि शुक्ल (१९६४), रामचंद्र शुक्ल (१९६९) तथा गुलाबराय (१९७१) इस काल में आते हैं। रामचंद्र शुक्ल का हिंदी-भाषा का इतिहास अच्छा है। आपसे हमारे आलोचना-विभाग को दीप्ति मिली है। गुलाबरायजी के दर्शनशास्त्र-संबंधी निबंध स्तुत्य हैं। समालोचनाकार इस में काल रामचंद्र शुक्ल (१९६९), रामनरेश त्रिपाठी (१९७१) और रामकुमार वर्मा (१९७४) हैं। शुक्लजी ने जायसी पर अच्छा श्रम किया है। इतिहासकारों में इस काल शिवनाथसिंह सेंगर (१९६१), चंद्र-मनोहर मिश्र (१९६३), प्रतिपालसिंह (१९६३), रामदेवजी प्रोफ़ेसर काँगड़ी (१९६४), लक्ष्मीनारायणसिंह (१९६७), जनार्दन भट्ट (१९७१) तथा लौट्टूसिंह (१९७३) मुख्य हैं। इनमें रामदेवजी सर्वश्रेष्ठ हैं। इनका भारतवर्षीय प्राचीन इतिहास सुपाठ्य तथा शिक्षाप्रद है। लौट्टूसिंहजी पुरातत्त्व पर श्रम करके भारत का अच्छा इतिहास लिख रहे हैं। जनार्दन भट्ट ने देश-भक्ति को लिए हुए इतिहास लिखा है। इतर महाशयों के भी परिश्रम स्तुत्य हैं। पुरातत्त्व में काशीप्रसाद जायसवाल (१९६३), विश्वेश्वरनाथ रेउ (१९६७), लोचनप्रसाद पांडेय (१९७२) तथा उपर्युक्त लौट्टूसिंह वर्णनीय हैं। इन सभी ने इस विषय पर मान्य श्रम किया है, विशेषतया जायसवाल तथा रेउ महाशयों ने। जीवन-चरित्रकार इंद्रजी (१९७०) तथा रामचंद्र टंटन (१९७०) हैं। ये दोनो सुलेखक हैं। बनारसीदासजी चौबे ने चरित्र-चित्रण अच्छे किए हैं।

खड़ी बोली में इस काल मैथिलीशरण गुप्त, सुमित्रानंदन पंत, रामनरेश त्रिपाठी, लोचनप्रसाद पांडेय, जयशंकर प्रसाद, गोविंद-वल्लभ पंत, चतुरसेन शास्त्री, वियोगी हरि आदि उत्कृष्ट लेखक हैं।

अंतिम दो महाशय गद्य-काव्य के भी भारी रचयिता माने जा सकते हैं। छायावाद का कथन पहले अलंकार द्वारा होता था। इसे अन्योक्ति कहते हैं। कई कवियों ने अन्योक्ति पर कविता की है। व्यंग्य का विषय भी इसी से मिलता है। प्रतापसाहि ने व्यंग्यार्थ-कौमुदी-नामक ग्रंथ ही बनाया था, और बाबा दीनदयाल गिरि ने अन्योक्ति-कल्पद्रुम रचा। कबीरदास ने उलटबाँसी आदि में बहुत कुछ अन्योक्ति-गर्भित रचना की। जायसी, क़ुतबन शेख़ आदि अनेकानेक सूफ़ी कवियों ने अपने कथा-प्रासंगिक ग्रंथों का कथा-विभाग छायावाद-गर्भित रक्खा। ब्लेक, उमर ख़ैयाम आदि भी ऐसे ही कवि। वर्ड्सवर्थ, शेली आदि ने भी कुछ इसी प्रकार के कथन किए। कीट्स ने प्रकृति और सौंदर्य का अच्छा अवलोकन किया। महाकवि रवींद्र महाशय भी कुछ ऐसी ही रचना करते हैं। उत्तर नूतन परिपाटी काल में ही वर्तमान छायावाद का प्रचार हिंदी में हुआ। जयशंकर प्रसाद, मोहनलाल महतो तथा सुमित्रानंदन पंत इस काल के मुख्य छायावादी कवि हैं। निरालाजी भी ऐसी ही रचना करते हैं, किंतु केवल एक साल के अंतर के कारण इनका विवरण आगे के अध्याय में आवेगा। रहस्यवादी कवियों में कुछ-कुछ आध्यात्मिकता, सांप्रदायिकता आदि प्रायः रहती हैं, यद्यपि अन्योक्ति के लिये किसी विशिष्ट विषय की आवश्यकता नहीं है। सबसे प्राचीन छायावादी साहित्य स्वयं वेद भगवान् में है।

बहुत-से वर्तमान समालोचक तथा प्राचीन लेखक हमारे छायावादी कवियों के निंदक हैं। हमने भी बहुतेरी छायावादी रचनाओं में असमर्थ तथा अप्रसाद दूषण पाए हैं। बहुत-से ऐसे कवि विचार-धारा इतनी दूर बाँध ले जाते हैं कि उनके शब्द उतने ऊँचे भाव-प्रदर्शन में अक्षम रहते हैं, जिससे रचना में असमर्थ दूषण आ जाता है। बहुतेरे कवि ऐसे शुष्क प्रकार से वर्णन करते हैं कि रचना में अलौकिक

आनंद की कमी से कमनीयता की तो कहना ही क्या है, साधारण आरोचन भी नहीं रहता। फिर प्रायः सभी छायावादी पद्यकार-गण कथा-प्रसंगादि छोड़कर केवल मुक्तकों पर अपनी रचनाओं को सीमित रखते हैं। ऐसे ग्रंथों में परमोत्कृष्ट रचना के अभाव में आरोचन की कमी स्वभावशः आ जाती है। कविताओं की जाँच में दो मुख्य प्रश्न यही रहते हैं कि कथा कथन योग्य है या नहीं, तथा वह सुचारुरूपेण कही कई है या नहीं? मुक्तकों में बहुत करके कथा होती ही नहीं, सो कथानक के सुगठन एव विविध परिस्थितियों के यथायोग्य वर्णन से जो आनंद आता है, वह मुक्तक-मूलक रचना में रहता ही नहीं। एक प्रकार से कोरा काव्य रह जाता है, जो परमोत्कृष्ट न होने से रोचक नहीं रहता। फिर ऐसे कविगण जहाँ कहीं छायावादात्मिका कथा भी कहते हैं, वहाँ प्रायः आध्यात्मिक अथवा प्राकृतिक विचारों को कथा के रूप में चलाते हैं, जिनमें कामना, संध्या, छाया आदि पात्र रहते हैं, जिनके कथनों, कर्मों आदि से आध्यात्मिक, प्राकृतिक आदि भाव तो दृढ़ होते हैं, किंतु कथा बिल्कुल डूबी हुई रहती है।

जयशंकर प्रसाद का छायावाद उपर्युक्त विचारों से उत्कृष्टता के सोपान तक नहीं पहुँच पाता। उनके जो मुख्य ग्रंथ हैं, उनमें ऐतिहासिकता की प्रधानता है, और छायावाद नहीं के बराबर है। यदि प्रसादजी केवल छायावादी होते, तो हम उन्हें बहुत ही साधारण कवि मानते। मोहनलाल महतो की कविता कुछ उत्कृष्ट है, किंतु बहुत ऊँची श्रेणी को नहीं पहुँचती। सुमित्रानंदन पंत ने केवल पल्लव में साहित्यिक गौरव का चमकता हुआ उदाहरण दिखलाया है। इसमें है तो मुक्तकों का ही रूप, किंतु एक-एक विषय पर वर्णन कुछ बड़े-बड़े भी हैं। इनमें केवल छायावाद नहीं है, वरन् इतर साहित्य के साथ कुछ-कुछ वह भी मिल गया है। यदि

पंतजी का साहित्य प्रस्तुत न होता, तो हम भी शायद हिंदी के छायावादी कवियों के निंदकों में होते। इनके तथा निरालाजी के होने से हम इस विभाग की मुक्त कंठ से स्तुति करेंगे। मुख्य बात कवि-सामर्थ्य है। सुकविगण प्रत्येक विषय का जाज्वल्यमान विवरण लिख सकते हैं। योग्यता काम आती है। यह कहना हमारी समझ में अनुचित है कि हमारे छायावादी कविजन शेली, कीट्स आदि के बहुत पीछे छूट जाते हैं। अभी हमारे यहाँ इसका आरंभ ही है। संभव है, प्रसाद, पंत और निराला ही मिलकर भविष्य में इस विभाग को परमोत्कृष्ट बना दें। हम तो आज भी इसे उन्नत समझते हैं।

उत्तर नूतन परिपाटी काल तक हमारी हिंदी इतनी सुखदा उन्नति कर आई थी कि इसके रूप के विषय में भी बड़ी तीव्रता से विवाद चलने लगा, जो अब तक चल रहा है। आदिम वैदिक समय में हमारी भाषा आसुरी कहलाती थी, जिसमें ऋग्वेद की ऋचाओं का गान हुआ। उस काल प्राकृत भाषा कैसी थी, इसका पूरा पता नहीं चलता। ऋग्वेद में अनार्यों के विषय में लिखा है कि इनकी कोई भाषा नहीं है, और ये चिल्लाना-मात्र जानते हैं। फिर भी पंडितों ने जाना है कि जन-समुदाय में उस काल भी या कम-से-कम ब्राह्मण-काल में एक भाषा थी, जिसे पहली या पुरानी प्राकृत कहते हैं। समय के साथ इन दोनो भाषाओं का प्रभाव एक दूसरी पर पड़ते हुए नवीन आवश्यकताओं अथच विचारों के अनुसार दोनो का विकास हुआ। आसुरी बढ़कर पुरानी संस्कृत हो गई, और प्राकृत साहित्यिक भाषा। इस विषय का कथन हम(शुकदेवविहारी मिश्र)ने इतिहास पर हिंदी के प्रभाववाले ग्रंथ में भी कुछ किया है। सारांश यह कि सूत्रकाल में इन दोनो भाषाओं में साहित्यिक रचनाएँ होती थीं। सूत्र-काल में व्याकरण ने ख़ासी उन्नति की, और प्रायः छठी शताब्दी संवत्-पूर्व तक यास्क, पाणिनि आदि व्याकरणकारों की सहायता से

पहली संस्कृत का अधिक संस्कार होकर वह दूसरी संस्कृत अथवा केवल संस्कृत कहलाने लगी। छठी शताब्दी सं० पू० में पाणिनि और बुद्ध के समय दूसरी प्राकृत (पाली) भी श्रेष्ठ साहित्यिक भाषा थी। इसके पीछे नंद-वंश के मंत्री महर्षि कात्यायन (तीसरी शताब्दी संवत् पूर्व) तथा पुष्यमित्र के पुरोहित महर्षि पतंजलि (दूसरी शताब्दी संवत् पूर्व) ने संस्कृत व्याकरण की और भी वृद्धि करके इसे बहुत कठिन कर डाला। यहाँ तक कहा गया कि असंख्य-प्राय पठन से भी व्याकरण का अंत नहीं मिल सकता।

ऐसी जटिल भाषा स्वभावशः देश की मातृ-भाषा या राष्ट्र-भाषा नहीं हो सकती थी, क्योंकि करोड़ों देशी लोग केवल भाषा-ज्ञान-प्राप्ति में इतना समय नहीं व्यर्थ कर सकते थे, जितना व्याकरण के प्रेमी लोग उनसे चाहते थे। फल यह हुआ कि देश में दिनोंदिन संस्कृत का ह्रास तथा प्राकृत का प्रकाश होने लगा। व्याकरणकार लेखकों पर भाँति-भाँति के कथनों, गालियों आदि द्वारा दबाव डालते रहे। यहाँ तक कि प्राकृत का व्याकरण भी दृढ़ हो गया, जिससे देश के लिये किसी और भाषा की आवश्यकता हुई। ऐसी भाषा अपभ्रंश कहलाई। भारत एक भारी देश है। विविध प्रांतों तथा एक ही प्रांत में भी शब्दों के एकाधिक रूप चलने लगे, अथच व्याकरण-संबंधी नियमों की स्वभावशः अवहेलना होने लगी। लोग मातृभाषा चाहते थे, जो आप-से-आप आ जाय, तथा वैयाकरण लोग पंडित-भाषा चलानी चाहते थे, जिसके पठन के लिये प्रचुर परिश्रम एवं समय की आवश्यकता थी। लोगों ने पंडितों के कथनों का तिरस्कार करके मातृभाषा का व्यवहार किया। केकई, कैकेई, केकयी आदि एक ही शब्द के अनेक रूप प्रचलित रहे। पतंजलि महाराज ऐसे रूपों की घोर निंदा करते रहे, और पंडित लोग इस मातृ-भाषा का अपभ्रंश कहकर अपमान करते रहे, किंतु संसार ने इसी का मान

किया। कालिदास और बाणभट्ट तक के समयों (पाँचवीं और सातवीं शताब्दी संवत्) में इसका प्रचार था। समय के साथ बढ़ती हुई यही भाषा हिंदी हो गई। प्रारंभिकसमय में हिंदी का अपभ्रंश से मिलता-जुलता रूप रहा, किंतु पीछे से इसने शीघ्रता-पूर्वक उन्नति की। प्रौढ़ माध्यमिक काल तक हिंदी पूर्णतया प्रौढ़ होकर परमोत्कृष्ट पद्य-ग्रंथ उत्पन्न कर सकी।

मुसलमानों के आगमन से हिंदू-मुसलमानों के भाषा-भेद मिटाने को किसी नवीन भाषा की आवश्यकता पड़ी। वे लोग दिल्ली, मेरठ-प्रांत में पहले बसे थे, सो वहीं की भाषा में अपने भी कुछ शब्द जोड़कर बातचीत का काम चलाने लगे। यह भाषा उर्दू कहलाई। जहाँ-जहाँ मुसलमानों का प्रभाव फैलता गया, वहाँ-वहाँ के नगरों में उर्दू का प्रचार होता गया, किंतु ग्रामों में प्रांतीय भाषाएँ चलती रहीं। यही दशा आज तक है। शाहजहाँ के समय तक उर्दू ने भी अच्छी उन्नति कर ली थी। हमारे यहाँ तब तक गद्य-काव्य नहीं के बराबर था, तथा पद्य में व्रजभाषा का प्राधान्य था, अथच अवधी भी कुछ-कुछ चलती थी। अँगरेज़ी राज्य के स्थापन से गद्य की उन्नति हुई, और लल्लूजीलाल, राजा शिवप्रसाद, स्वामी दयानंद, भारतेंदु आदि के साथ विविध रूप धारण करते हुए हिंदी-गद्य संस्कृत-गुंफित रूप की ओर अग्रसर हुआ। भारतेंदु के समय तक देश-भाषा से यह हिंदी बहुत पृथक् न थी; किंतु पीछे के कुछ कवियों आदि ने इसमें अधिकाधिक संस्कृत-शब्दों का प्रयोग बढ़ाया, सो हमारी उच्च श्रेणी की समझी जानेवाली हिंदी लोक-भाषा से दिनोंदिन अधिकाधिक दूर होती जाती है, जिससे इसकी प्रतियोगिनी उर्दू का प्रभाव नगर-निवासी हिंदुओं पर से शिथिल होने के स्थान पर दृढ़ हो रहा है। इसी संस्कृत-बाहुल्य के कारण हिंदी के नाटक हमारे रंगमंच पर मान नहीं पाते, और उस

पर उर्दू का सिक्का यथावत् जमा हुआ है। बहुत लोग समझते हैं कि वही हिंदी उच्च है, जिसमें संस्कृत-शब्दों का बाहुल्य हो। ऐसे लोगों को चाहिए कि क्रिया आदि की जो थोड़ी-सी 'नीचता' उनके हिंदी-लेखों में लगी रहती है, वह भी निकालकर करोति, वपति आदि लिखने लगें। वास्तव में उच्च हिंदी का उदाहरण यदि देखना हो, तो चतुरसेन शास्त्री तथा उग्र की भाषा पढ़ी जाय। यदि सांस्कृत शब्द-बाहुल्य से ही हिंदी उच्च हो सकती, तो उत्कृष्ट गद्य-लेखन बहुत सुगम हो जाता। वास्तव में संस्कृत द्वारा गूढ़ की हुई भाषा निंद्य है, ऊँची नहीं।

इतना सब देखकर भी न देखते हुए हमारे संस्कृत-प्रेमी महाशय केवल सांस्कृत शब्द-बाहुल्य से संतुष्ट न होकर संस्कृत-व्याकरण के नियमों का भी अधिकाधिक आरोप हिंदी पर करना चाहते हैं। पंडित महावीरप्रसाद द्विवेदी ने इस विषय पर बहुत ही श्लाघ्य अथवा निंद्य श्रम किया। यह श्रम अदूरदर्शी संस्कृत-प्रेमियों के लिये श्लाघ्य है और व्यापक साहित्य-प्रेमियों की दृष्टि में निंद्य। हमने संवत् १९६७ के निकट अपना हिंदी-नवरत्न ग्रंथ साधारण बोलचाल के निकटवाली भाषा में प्रकाशित कराया। इसमें शब्दों के रूप भी एकाधिक प्रकार से लिखे हुए थे। द्विवेदीजी ने सरस्वती पत्रिका के बयालीस कालमों में हमारी भाषा की निंदा की। हमने उस लेख का उत्तर दिया, किंतु कुछ लोगों ने यह भी समझा कि मिश्रबंधु भूल से, बिना सोचे-समझे, शब्दों के अशुद्ध रूप लिख गए, तथा अब धींगाधींगी करके उन्हें नवीन सिद्धांतों द्वारा ठीक प्रमाणित करते हैं। अतएव परसाल हम (श्यामविहारी मिश्र) ने हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के सभापतिवाले आसन से इसी सिद्धांत पर पुनः कथन किए। विभक्ति, प्रत्यय, लिंग-भेद आदि पर भी हम स्वच्छंदता के पक्षी हैं। इस विषय पर कई सज्जनों ने हमारा विरोध किया है,

जिनके उत्तर हमने माधुरी तथा सुधा पत्रिका में छपवाए हैं। इस वर्ष के (तेईसवें) सम्मेलन ने दिल्ली में हमारा यह विचार विना वाद किए ही मान लिया है। सभापति श्रीमान् गायकवाड़ नरेश, श्रीयुत बिड़लाजी, माखनलालजी चवेंदी आदि ने अपनी स्वतंत्र वक्तृताओं में भी यही मत देश के लिये अनिवार्य माना। प्रयोजन यह कि यह श्रम अथवा भूलों का विषय न होकर हिंदी के जीवन तथा राष्ट्रभाषापन का प्रश्न है। यदि हिंदी पर व्याकरण का बल पड़ा, तो यह मातृभाषा न रहकर मृत भाषाओं में चली जायगी। इसलिये हम लोग सिद्धांत के रूप में संस्कृत के नियमों को हिंदी में अमान्य समझकर शब्दों के वे रूप लिखते और इतरों से लिखवाना चाहते हैं, जो संस्कृत व्याकरण के नियमों से चाहे अशुद्ध हों, किंतु देश में उनका प्रचार हो। स्मरण रखना चाहिए कि हिंदी-भाषा ही उन नियमों की तिरस्कार-रूपा उत्पन्न हुई है।

इस काल व्याकरणकारों में रामलोचनशरण (१६७५) मुख्य लेखक हैं। बालोपयोगी ग्रंथों में रामजीलालशरण (१६६५) ने विशेष श्रम किया।

उत्तर नूतन परिपाटी कालवाले लेखकों तथा कवियों के पृथक् वर्णन पूर्व क्रमानुसार आगे आते हैं।

समय—संवत् १६६१

नाम—(३८८२) जयशंकरप्रसाद, बनारस।

जन्म-काल—सं० १६४६।

ग्रंथ—(१) कानन-कुसुम (१११ कविताओं का संग्रह), (२) प्रेम-पथिक (भाव-पूर्ण छंदोबद्ध काव्य), (३) महाराणा का महत्त्व, (४) सम्राट् चंद्रगुप्त मौर्य (ऐतिहासिक नाटक), (५) छाया (चित्ताकर्षक ११ गल्पों का गुच्छ), (६) उर्वशी चंपू (संस्कृत द्वि० संस्करण), (७) राज्यश्री (नाटिका), (८)

करुणालय (नाटक), (९) प्रायश्चित्त (नाटक), (१०) कल्याणी परिणाम (रूपक), (११) झरना (काव्यमाला), (१२) अजातशत्रु (बौद्धकालिक नाटक), (१३) स्कंदगुप्त विक्रमादित्य (नाटक), (१४) प्रतिध्वनि (गल्प, गद्य-काव्य), (१५) कंकाल (उपन्यास) । कई गल्प भी ।

विवरण—आप काशी के गण्य-मान्य रईस बाबू देवीप्रसादजी 'सुँघनी साहु' के सुपुत्र हैं । आप जाति के कनौजियां वैश्य हलवाई हैं । वर्तमान काल के आप एक सुकवि और उच्च कोटि के नाटक-रचयिता हैं । ऐतिहासिक विषय पर तथा गल्प-ग्रंथ भी आपने अच्छे लिखे हैं । इनके नाटकों का आजकल बहुत मान है । भारतेंदु से इतर ऐसा नाटककार हिंदी में शायद कोई नहीं हुआ है । आपके स्कंदगुप्त विक्रमादित्य, अजातशत्रु और चंद्रगुप्त बहुत ही उच्च कोटि के ग्रंथ हैं । लेखन-विधि ऊँची है । नाटकों में गाने तथा छंद बहुत ही मनोहर अन्योक्ति-मिश्रित भी लिखते हैं । भाषा-काठिन्य से इनके नाटक रंगभूमि में शायद खेले नहीं जावेंगे, क्योंकि सर्व-साधारण उन्हें समझ नहीं सकते । आपके नाटक परमोच्च पाठ्य ग्रंथ हैं । 'उर्वशी' तथा प्रेमराज्य आपकी प्रारंभिक रचनाएँ हैं । काशी की सुप्रसिद्ध मासिक पत्रिका इंदु में इनकी गद्य तथा पद्य-मय रचनाएँ प्रकाशित हुआ करती थीं ।

उदाहरण—

उदित कुमुदिनी-नाथ हुए प्राची में ऐसे—
रतनाकर से सुधा-कलश उठता हो जैसे ।
धीरे-धीरे उठे नई आशा से मन में ;
क्रीड़ा करने लगे स्वच्छ स्वच्छंद गगन में ।
चित्रकूट भी चित्र-लिखा-सा देख रहा था ;
मंदाकिनी-तरंग उसी से खेल रहा था ।

स्फटिक-शिला-आसीन राम-वैदेही ऐसे—
निर्मल सर में नील कमल नलिनी हो जैसे।
निज प्रियतम के संग सुखी थीं कानन में भी;
प्रेम-भरा था वैदेही के आनन में भी।
मृग-शावक के साथ मृगी भी देख रही थी;
सरल विलोकन जनक-सुता से सीख रही थी।

भूलि-भूलि जात पद-कमल तिहारो, कहो,
ऐसी नीच मूढ़ मति कीन्ही है हमारी क्यों?
धाम के धसत काम-क्रोध-सिंधु-संगम में
मन की हमारी ऐसी गति निरधारी क्यों?
झूठे जग लोगन में दौरि कै लगत नेह,
साँचे सच्चिदानँद में प्रेम ना सुधारी क्यों?
बिकल बिलोकत न हिय पीर मोचन हो,
एहो दीनबंधु! दीन-बंधुता बिसारी क्यों?

नाम—(२८८३) जानकीप्रसाद द्विवेदी।

इनके पिता पं० रामगुलाम कड़ाकोटा, ज़िला सागर, मध्यप्रदेश के रहनेवाले हैं। इनका जन्म सं० १९३६ में हुआ। कविता करना ही इनका व्यवसाय है। निम्न-लिखित ग्रंथ इनके बनाए हुए हैं। मुद्रित ग्रंथ—(१) जानकी-सतसई, (२) मित्र-लाभ, (३) शिव-परिणय, (४) राक्षस-काव्य का अनुवाद, (५) घटखर्पर काव्य, (६) नर्मदा-माहात्म्य, (७) शृंगार तिलक, (८) वेश्या षोड़श। अमुद्रित—(९) साहित्य-सरोवर, (१०) काव्य-दोष, (११) भँडौवा-भंडार, (१२) काव्य-कौमुदी, (१३) नारी-नख-शिख, (१४) प्रकृति-प्रमोद, (१५) व्यंग्योक्तिविलास, (१६) अन्योक्ति-पचासा, (१७) राधा-कृष्ण-संवाद, (१८) रंभा-शुक-संवाद, (१९) विनय-शतक, (२०) समस्या-पचीसी, (२१) सानसावन, (२२) महेंद्र-मंजरी।

विवरण—आपने विविध विषयों के चुनाव में अच्छी पटुता दिखलाई है। इस ओर आपके ग्रंथों का अभी बहुत चलन नहीं है।

नाम—(३८८४) शिवनाथसिंह सेंगर।

जन्म-काल—१९३६।

ग्रंथ—(१) सिंहल-द्वीप में सेंगरों का राज्य, (२) गुहिलोत और नागर ब्राह्मण, (३) क्षत्रिय-वंशावलि-वेत्ताओं की निरंकुशता, (४) हिंदू-देव-मंदिर और पुराने समय के अँगरेज़ कर्मचारी, (५) लोकेंद्राख्यान, (६) भरेह के सेंगर-वंश का संक्षिप्त इतिहास, (७) क्षात्र धर्म, (८) शिवनाथ-भास्कर।

विवरण—आप कुँवर आनंदीसिंह सेंगर के पुत्र तथा श्रीजगम्मन-पुर-नरेश के समीपी भ्रातृ-वर्गों में से हैं। आजकल आप बीकानेर-राज्य में खासगी-विभाग के ऑफ़िसर हैं। आपने क्षत्रिय-जाति का इतिहास बड़ी खोज तथा छान-बीन के साथ लिखा है। आपका ऐतिहासिक श्रम श्लाघ्य है।

नाम—(३८८५) शिवरत्न शुक्ल बछरावाँ, ज़िला रायबरेली।

जन्म-काल—सं० १९२६।

ग्रंथ—(१) प्रभु-चरित्र, (२) श्रीरामावतार, (३) आर्य-सनातनी संवाद, (४) भिक्षां देहि, (५) स्वामी विवेकानंद के अँगरेज़ी-लेखों तथा व्याख्यानों का अनुवाद, (६) स्वामी शंकराचार्य का जीवन-चरित्र, (७) उपदेश-पुष्पांजलि, (८) परदा, (९) रामावतार, (१०) ऋतु-कविता, (११) कान्यकुब्ज-रहस्य, (१२) परिहास-प्रमोद, (१३) भरत-भक्ति। यह अंतिम प्रायः पाँच-छ सौ पृष्ठों का उत्कृष्ट काव्य-ग्रंथ है। रेल के विषय पर भी आप ने कई ग्रंथ लिखे हैं। आपका साहित्य श्लाघ्य है। यदि भरत-भक्ति-सा चमत्कार-पूर्ण भारी ग्रंथ आपने किसी नूतन एवं अच्छे विषय पर लिखा होता, तो आपका परिश्रम वास्तव में श्लाघ्य होता।

विवरण—आप पं० वचनि आचारीजी के पुत्र हैं। ऊपर दिए हुए ग्रंथों के अतिरिक्त इन्होंने 'स्टेशन-मास्टर्स गाइड' 'शार्टेस्ट रूट' और 'ट्राफ़िक एकाउंट्स' आदि कई अँगरेज़ी की भी पुस्तकें लिखी हैं। इस समय यह श्रीतुलसीदासजीकृत रामायण का भाष्य कर रहे हैं। पहले आप खड़ी बोली में कविता करते थे, किंतु अब व्रजभाषा में करने लगे हैं। इधर कुछ समय से वैसवारी भाषा में भी कविता करना आरंभ कर दिया है। थोड़े दिन हुए, आप रेल की सेवा से रिटायर वृद्धावस्था मना रहे हैं।

उदाहरण—

लागि गे गुलाब लूक आब सब फीकी भई,
मेवन हू मौन कीन्ह कोकिला बनाय कै;
चौंकि-चौंकि चातक चितै कै चहुँ ओर हेरि,
शरद है काह कीन्ह खंजन बुलाय कै।
शिशिर, हेमंत हू तुपार बार कीन्ह बहु,
दलि डारयो कंज-दल भौंरन भजाय कै;
माव सुदि पंचमी शिविर शीत ढाह करि,
गाड़यो है वसंत ढाह ढोलहू बजाय कै।
भायो ना निदाव अरु पावस शरद सखि,
शिशिर हेमंत हू विघान घोर छायो है;
लायो ऋतुराज सब सुख के समाज आज,
मधुप-निकर पिक चातक सुहायो है।
मल्लिका गुलाब कंज मंजु वन फूलि रहे,
मलय महँक मनसिज हू जगायो है;
कबलौं वियोग पीर अबलौं सहन करे,
अबलौं न आयो कहाँ अब लौं लगायो है।

समय—संवत् १९६२

नाम—(३८८६) आत्माराम देवकर, हटा, ज़िला दमोह।

रचना-काल—सं० १९६२।

ग्रंथ—(१) त्रैलोक्य सुंदरी (उपन्यास), (२) आदर्श मित्र (उपन्यास), (३) मनमोहिनी (उपन्यास), (४) भयंकर दुर्दशा (उपन्यास), (५) माया-मरीचिका (उपन्यास), (६) पानी का बुलबुला (उपन्यास), (७) स्नेह-लता (गल्प), (८) कुसुम-कली (काव्य, अमुद्रित)।

विवरण—आप महाराष्ट्र क्षत्रिय श्रीयुत सदाशिवराव देवकर के पुत्र हैं। आपने अपनी प्रायः सभी पुस्तकें गंगा-पुस्तकमाला, लखनऊ को भेंट की हैं। उपन्यास-विभाग पर आपने श्लाघ्य श्रम किया है।

नाम—(३८८७) कालूराम द्विवेदी (विद्यारसिक), राजपूताना।

जन्म-काल—सं० १९४०।

रचना-काल—सं० १९६२।

ग्रंथ— मुद्रित { (१) बाल विवाह-खंडन, (२) बाल-विवाह-कुठार, (३) हिंदूपन की रक्षा, (४) भारत-दुःख-नाशक अपूर्व औषधि, (५) प्रार्थना-बत्तीसी, (६) सहसराम का इतिहास।

अमुद्रित { (७) घरू ब्राह्मण, (८) भविष्यवाणी, (९) धर्म-दिग्दर्शन, (१०) विवाह-विधान।

विवरण—आप पं० जयनारायणजी तेवारी के पुत्र हैं। गौड़ ब्राह्मणांतर्गत चूल्हीवाल आपका वंश है। [पं० झावरमल्ल त्रिवेदी, जसरापुर, द्वारा ज्ञात] आप देश-प्रेमी कवि हैं।

उदाहरण—

है उबारना तो वेग चलि आओ दीनानाथ,
कालू कहे ऐसा फिर औसर न पाओगे ;
मौका है इसी समय डूबता है हिंदी धर्म,
लेना अवतार वह लेकर दिखाओगे।
नमो, गुडमारनिंग, बंदगी करूँ जो नाथ,
पूर्व की-सो दया-दृष्टि ईश दरसाओगे ;
मरजाद मिटती है, देखत क्या कृपा-सिंधु,
देरी यदि करोगे, तो पीछे पछताओगे।

नाम—(३८८८) जैन वैद्य, जयपुर।

रचना-काल—१६६२।

विवरण—मिस्टर जैन वैद्य का नाम जवाहरलाल था। आप जाति के जैन वैद्य अग्र के थे। इनके पिता महाराजा जयपुर के यहाँ अच्छे पद पर थे। इनका जन्म सं० १६३७ में हुआ। इन्होंने एंट्रेंस ही तक अँगरेज़ी पढ़ी थी, परंतु विद्या-रसिक होने के कारण उसमें अच्छी उन्नति कर ली। आपने बँगला, उर्दू, मराठी, गुजराती और मागधी का भी अभ्यास किया। हिंदी के बड़े रसिक थे, और नागरी-प्रचार का सदैव यत्न करते रहते थे। इन्होंने जैन-मत-पोषक, उचित वक्ता और जैन-गज़ट-पत्र निकाले थे, परंतु वे चल न सके। समालोचक पत्र भी इन्होंने चार साल तक बड़े परिश्रम तथा व्यय से चलाया, जिसके कारण हिंदी-संसार में इनकी बड़ी ख्याति हुई। छात्रावस्था में इन्होंने हिंदी के 'कमल-मोहिनी भँवरसिंह-नाटक', 'व्याख्यान-प्रबोधक' और 'ज्ञान-वर्णमाला' नाम्नी तीन पुस्तकें लिखीं। नागरी-प्रचारिणी सभा के उत्साही सहायक थे। सभाओं एवं समाजों में सदैव योग देते रहते थे। हमारे मित्र थे। इन्होंने जयपुर में एक नागरी-भवन खोला था, जो अब तक अच्छी

दशा में है। आप बड़े ही उदार, विद्या प्रेमी तथा मित्र-वत्सल थे। थोड़ी अवस्था में मित्रों तथा कुटुंबियों को शोक-सागर में छोड़कर चैत्र संवत् १९६६ में चल बसे!

नाम—(२८८९) देवीप्रसाद चतुर्वेदी 'वचनेश'।

जन्म-काल—सं० १९३७।

रचना-काल—सं० १९६२।

विवरण—आप फ़ीरोज़ाबाद के निवासी हैं। स्फुट छंद बहुधा कहा करते हैं, और सुकवि हैं।

उदाहरण—

जोग जग जाने जग त्यागिओ वियोग जाने,
परम वियोगी योग साधन सुगम है;
जगत विचार जगदीश मन जोगै और,
चिंताचल करन की भाखत निगम है।
प्रेम पति पागो त्यों वियोग लवलीन मन,
सकल विकार-हीन मारग अगम है;
योगी सब त्याग तिन्हैं त्यागत वियोगी कहौ,
योगिन ते योग में वियोगी कौन कम है॥ १॥
घुमड़ घमंड घन मंडल अखंड कैधौं,
सबल सरोष बीर दलन उभायो है;
गरज अकाश के तड़ाक तोप तुंगन की,
झींगुर मँडूक बीर बाजन बजायो है।
दामिनी प्रकाश कैधों खुले खड्ग बीरन के,
धुरवा सुबाढ़ि धार धरन धसायो है;
ग्रीषम महीप जार मान छाड़िबे के हित
पावस में इंद्र बीर ढोगो बनि आयो है॥ २॥

नाम—(३८९०) नंदकिशोर शुक्ल, वाणीभूषण।

जन्म-काल—सं० १९३७।

रचना-काल—सं० १९६२।

ग्रंथ—(१) उपनिषदों का उपदेश, (२) सनातन धर्म और दयानंदी मर्म, (३) तुलसी-महिमा, (४) तुलसी-सूक्ति संग्रह, (५) भारत-भक्ति-पुरी प्रसाद-व्यवस्था, (६) खेल फ़िलासफ़ी राष्ट्रीय फाग, (७) मुष्टी संप्रदाय, (८) पंच गकार प्यारे दोहे, (९) अद्वैतवाद, (१०) गीता-रहस्य, (११) भगवान् कृष्ण।

विवरण—आप उन्नाव-ज़िलांतगत टेढ़ा-निवासी पं० शिवप्रसन्न के पुत्र हैं। भारी व्याख्याता एवं हिंदी के गद्य-पद्य-लेखक हैं।

नाम—(३८९१) मन्नन द्विवेदी गजपुरी बी० ए०, एम्० ए०, एल्० बी०।

गोरखपुर-ज़िलांतर्गत रापती-तटस्थ गजपुर गाँव में जीविका-वश कुछ कान्यकुब्ज घराने आ बसे हैं। इन्हीं में कश्यपगोत्रीय मंगलालय के दुबे लोगों का कुल भी है। इसी वंश में पं० मातादीन द्विवेदी एक प्रसिद्ध रईस ज़मींदार और व्रजभाषा के कवि थे। पं० मन्नन द्विवेदी आप ही के पुत्र हुए। स० १९४७ वि० की आषाढ़ी प्रतिपदा के दिन आपका जन्म हुआ। सब परीक्षाओं को अच्छी तरह पास करते हुए १९६९ में आपने गवर्नमेंट-कॉलेज, बनारस से बी०ए० पास किया। कविता करने और लेख लिखने का आपको लड़कपन से शौक़ था।

मुख्य काव्य-ग्रंथ—(१) मातृभूमि से विदाई, (२) मातृभूमि, (३) मृत्यु-शय्याशायी रावण, (४) विंध्याचल, (५) भारत माता गांधी के प्रति, (६) प्रेम-पंचक, (७) ग्रामीण दृश्य, (८) अर्धरात्रि, (९) जन्माष्टमी, (१०) दासत्व, (११) गृह-लक्ष्मी, (१२) सती सुलोचना, (१३) प्रार्थना, (१४) काशी, (१५) प्रयाग, (१६) हमारा ग्राम, (१७) विश्वामित्र

दशरथ के प्रति, (१८) उच्छ्वास, (१९) चकोर की वेदना और वर्षा । आप तहसीलदारी के काम से छुट्टी न रहने पर भी कुछ-न-कुछ लिखा ही करते थे । आपने निम्न-लिखित और पुस्तकें लिखीं—(१) बंधु-विनय (पद्य), (२) धनुष-भंग (पद्य), (३) रणजीत-सिंह, (४) आर्य-ललना, (५) गोरखपुर-विभाग के कवि, (६) भारतवर्ष के प्रसिद्ध पुरुष, (७) मुसलमानी काल का भारत । शोक का विषय है, आपका देहांत बहुत थोड़ी अवस्था में हो गया । आप उच्च श्रेणी के लेखक और सज्जन देश-प्रेमी थे । आपकी अमर रचनाओं में बहुत ही श्लाघ्य अनूठापन रहता था । यदि आप दीर्घ-जीवी होते, तो वर्तमान लेखकों में बहुत ऊँचे स्थान के अधिकारी बनते । अब भी आपकी रचनाएँ बहुत ही श्रेष्ठ हैं ।

उदाहरण—

जन्म दिया माता-सा जिसने किया सदा लालन-पालन ,
जिसके मिट्टी-जल से ही है रचा गया हम सबका तन ।
गिरिवरगण रक्षा करते हैं उच्च उठा के शृंग महान ,
जिसके लता द्रुमादिक करते हमको अपनी छाया दान ।
माता केवल बाल-काल में निज अंकम में धरती है ,
हम अशक्त जब तलक तभी तक पालन-पोषन करती है ।
मातृभूमि करती है मेरा लालन सदा मृत्यु पर्यंत ,
जिसके दया-प्रवाहों का नहिं होता सपने में भी अंत ।
मर जाने पर कण देहों के इसमें ही मिल जाते हैं ,
हिंदू जलते, यवन-इसाई दफ़न इसी में पाते हैं ।
ऐसी मातृभूमि मेरी है स्वर्ग-लोक से भी प्यारी ,
जिसके पद-कमलों पर मेरा तन-मन-धन सब बलिहारी ।

आप बड़े ही देश-भक्त तथा सज्जन थे । आपकी अकाल मृत्यु से हिंदी की भारी हानि हुई है ।

नाम—(३८९२) रामप्रियाजी।

श्रीमती रानी रघुराजकुँवरि उपनाम रामाप्रिया अवधप्रदेशांतर्गत ज़िला प्रतापगढ़ के आनरेबुल राजा प्रतापबहादुरसिंह के० सी० आई० ई० की रानी थीं। इन्होंने महाराज एडवर्ड सप्तम के तिलकोत्सव में इँगलैंड जाकर महारानी से मुलाक़ात की थी। यह बड़ी विदुषी थीं। इन्होंने भक्ति-पक्ष के अनेक रागों में रामप्रिया-विलास-नामक ग्रंथ रचा, जिससे इनकी विद्या का परिचय मिलता है। इसी ग्रंथ से एक छंद नीचे लिखते हैं—

कहि रामप्रिया गुन गावैं, जो राम के, छंद रचैं जो हुलासन सों;
सु अलंकृत छंद बिचारयो करैं नित बैठे रहैं दृढ़ आसन सों।
फल चारिहु पावैं बिना श्रम के भय ताहि कहाँ जम-पासन सों;
फिरि अंतहु स्वर्ग पयान करैं कबि बैठे बिमान हुलासन सों।

इन्होंने उपर्युक्त ग्रंथ के अतिरिक्त स्फुट रचना भी की है। इनकी भाषा प्रांजल और भाव सरल हैं।

इनका स्वर्गवास वैशाख सं० १९७१ में हो गया। इनकी कविता श्रेष्ठ थी।

नाम—(३८९३) सत्यदेव।

जन्म-काल—लगभग सं० १९३६।

यह महाशय अमेरिका से विद्या प्राप्त करके लौट आए हैं। आपका हिंदी-प्रेम बड़ा सराहनीय है। अमेरिका से भी अच्छे-अच्छे गद्य-लेख प्रसिद्ध-प्रसिद्ध पत्रों में सदा छपवाते रहे, और स्वदेशानुराग-पूर्ण लेखों में अनेकानेक बातों का वर्णन करते रहे। आपके यहाँ आ जाने से हिंदी-उन्नति की विशेष आशा है। जाति के खत्री हैं। आपने जातीयशिक्षा, मनुष्य के अधिकार आदि कई उत्कृष्ट गद्य-ग्रंथ रचे हैं। बहुतदिनों से आप देश-भक्त संन्यासी हैं, परंतु हिंदी का काम अब भी बड़े उत्साह से करते हैं। आपने अमेरिका, जर्मनी, कैलाश

आदि की यात्राएँ की थीं, जिनके वर्णन पुस्तक-रूप में प्रकाशित किए गए हैं। आपकी भाषा बड़ी ज़ोरदार होती है। कहीं-कहीं अत्युक्ति भी समझ पड़ती है। सामयिक पत्रों में आपके लेख निकला करते हैं। व्याख्यान भी अच्छे देते हैं। ऐसे ही नवीन भाव-पूर्ण लेखकों की देश को आवश्यकता है। २०००० से ऊपर प्रतियाँ आपके बिगुल की बिक चुकी हैं। आपके कई ग्रंथों के बँगला, गुजराती आदि में अनुवाद हुए हैं। गरम विचार अवश्य रखते हैं, किंतु इतने नहीं कि जेल जाना पड़ा हो।

नाम—(३८९४) हरीकृष्ण जौहर, कलकत्ता।

जन्म-काल—सं० १९३७।

ग्रंथ—(१) जापान-वृत्तांत, (२) अफ़ग़ानिस्तान का इतिहास, (३) भारत के देशी राज्य, (४) रूस-जापान-युद्ध, (५) पलासी की लड़ाई, (६) कुसुमलता आदि बहुत-से ग्रंथ।

विवरण—आप हिंदी बंगवासी के संपादक एवं लब्ध-प्रतिष्ठ उच्च श्रेणी के लेखक हैं।

समय—संवत् १९६३

नाम—(३८९५) काशीप्रसाद जायसवाल एम्० ए० बैरिस्टर मिर्ज़ापुर, हाल पटना।

जन्म-काल—सं० १९३८।

रचना-काल—सं० १९६३।

ग्रंथ—कलवार-गज़ट, कई स्फुट लेख।

विवरण—आप बड़े मिलनसार सज्जन पुरुष हैं। पुरातत्त्व में आपने अच्छा श्रम किया है, और कई लेख लिखे हैं। प्रसिद्ध हिंदी-प्रेमी और ज्ञाता हैं।

नाम—(३८९६) गिरिधर शर्मा नवरत्न।

जन्म-काल—सं० १९३८।

रचना-काल—सं० १६६३।

ग्रंथ—(१) सावित्री, (२) सुकन्या, (३) ऋतु-विनोद, (४) कठिनाई में विद्याभ्यास, (५) अर्थ-शास्त्र, (६) सुश्रूषा, (७) आरोग्य-दिग्दर्शन, (८) जयाजयंत, (६) भीष्म-प्रतिज्ञा, (१०) शुद्धाद्वैत-सिद्धांत, (११) गीतांजलि, (१२) चित्रांगदा, (१३) बागबान, (१४) राई का पर्वत, (१५) पद्य-रत्न-प्रभा, (१६) उषा, (१७) सच्चे सुख की कुंजियाँ, (१८) संसार में सुख कहाँ है, (१६) बारह भावना, (२०) रत्नकरंड श्रावकाचार, (२१) भक्तामर कल्याण मंदिर, (२२) पंचस्तोत्र।

विवरण—आप प्रश्नोरा नागर ब्राह्मण व्रजेश्वर भट्ट के पुत्र संस्कृत के विद्वान्, अच्छे कवि तथा हिंदी के सुयोग्य लेखक एवं कविता-प्रेमी हैं।

उदाहरण—

तिय-मुख रहे निहार करे विचार न काम का;
करनी के निरधार वह मनुष्य किस काम का।
गिरिधर तत्त्व विचार दोनो की इक जाति है;
पर जग के व्यवहार यह हीरा वह कोयला।
जड़ से उखाड़ डारो डारो है सुखाय मेरे
प्राण घोंटि डारे धर धुआँ के मकान में;
मोरी गाँठ काटें, मोहि चाकू से तरास डारें,
अंत चीर डारें धरें नाहिं व्यथा ध्यान में।
स्याही माँहि बोरि-बोरि करें मुख कारो मेरो,
करूँ मैं उजारो तोहू ज्ञान के जहान में;
परेहू पराए हाय! तजों न परोपकार,
चाहे घिस जाऊँ यों कलम कहे कान में।

नाम—(३८१७) चंद्रमनोहर मिश्र बी० ए०, एल्-एल्० बी०।

आप सरायमीरा ज़िला फ़र्रुख़ाबाद के रहनेवाले पंडित बतानूलाल मिश्र के पुत्र और हमारे जामाता हैं। आप फ़र्रुख़ाबाद में वकालत करते हैं। इन्होंने स्पेन का इतिहास गद्य में बनाया है। आपका जन्म-संवत् लगभग १९४५ है। रचना-काल १९६२ से प्रारंभ होता है।

नाम—(३८९८) जनार्दन मिश्र 'परमेश', ग्राम सनौर, ज़िला संथाल (विहार)।

जन्म-काल—सं० १९४८।

रचना-काल—सं० १९६२।

ग्रंथ—(१) जार्ज-किरणोदय (१९६८), (२) हमारा सर्वस्व, (३) रसबिंदु, (४) पद्य-पुष्प, (५) सती, (६) जीवन-प्रभा, (७) काला पहाड़ (अनुवाद), (८) वीर-वृत्तांत, (९) कृष्णा, (१०) घटकर्पर काव्य, (११) हेमा, (१२) राष्ट्रीय गान।

विवरण—आप पं० मुरारी मिश्र के पुत्र तथा पं० हर्षदत्त मिश्र के प्रपौत्र हैं। मैथिल ब्राह्मण हैं। आपने कुछ काल पर्यंत खड्गविलास-प्रेस में सहायक संचालक (मैनेजर) के रूप में काम किया। भागलपुर में कारोनेशन आर्ट्‌स प्रिंटिंग वर्क्स से आपने साहित्य-कल्पलता नाम की एक ग्रंथमाला निकाली, तथा वहीं से आपके संपादकत्व में 'सुप्रभात'-नामक मासिक पत्र का प्रादुर्भाव हुआ, किंतु यह पत्र धनाभाव के कारण शीघ्र ही बंद हो गया। अस्थायी साहित्य के अतिरिक्त आपकी लिखी हुई प्राइमरी तथा मिडिल पाठशालोपयोगी पुस्तकें बहुत-सी हैं। आप गद्य तथा पद्य दोनो के सुलेखक हैं। वीर-वृत्तांत तथा सती कृष्णा नाम्नी आपकी रचनाएँ प्रकाशित होनेवाली हैं। आपका साहित्य देश-प्रेम से पुलकित एवं प्रकृति-निरीक्षण तथा वर्णन-चातुर्य से सौरभित है।

उदाहरण—

सौंदर्यमय जीवन

रक्तिमा-रंजित गगनपट-युक्त ऊषा थी खड़ी,
कंज-कलियाँ भी इधर बस खिलखिलाकर हँस पड़ीं।
सर-सलिल-सुरभित समीरण भर उदर दिन-भर अली,
मुस्कराती शेष तक बस, मंजुता मुरझा चली।
अति दीर्घ जीवन का कभी क्या हो सका कुछ मूल्य है,
बढ़ जाय ऊँचे ताड़-से क्या कंज के वह तुल्य है।
देख लो सौंदर्य जीवन का यही जाता कहा,
आयु-भर अल्पायु हो संसार को भाता रहा।

स्फुट रचनाएँ

चलत समीर धीर सौरभ सनी रहै जु,
नीर मद दान च्वै मतंग मतवारो सो;
कोकिला कलापी पापी पपिहा पुकार करै,
बार-बार झिंगुर झिंगारै बजमारो सो।
पथिक न आज जात कोऊ कहीं बाट आली,
बालम बिदेस परमेस न पधारो सो;
चित घबरात रात-दिन ना सोहात, जब
आवत घुमड़ि घेरि घोर घन कारो सो।
बादर-समूह को तो चादर सों रोकि राखै,
दादुर अहीसर को सौंपि दै बधिक कीर;
कोकिला कसाइनी को काग करि डारै, और
सारिका सरापि सिर-हीन करि दै सरीर।
कवि परमेस अंब केवरा कदंबन को
खोजि-खोजि चंपक के तरु को करै करीर;
एतो उपचार कै जो हरै हिय पीर आज,
सोई है जगत बीच साँचो मत हितू बीर।

[महाराणा प्रताप—अप्रकाशित महाकाव्य से]

विद्यावल्ली सुभ दल गुणालंकृता श्रीविशिष्ठा,
आर्य क्षौणी अवनितल पै वाटिका थी गरिष्ठा।
केकी कोकी अलिकुल प्रजा कूजती गूँजती थी,
मानो स्नाता प्रकृति पति को प्रेम से पूजती थी॥ १॥
झंझा झोंका यवनदल का काल के कोप से ही
आया एवं विरहित किया कुंज को ओप से ही।
संध्या से हो निशि-निशि परे व्योम में सूर आता,
धीरे-धीरे पुनि दिन गए नित्य उत्सूर आता॥ २॥
स्वाधीना जो सब विधि सदा थी रही विश्व मध्य,
अन्य द्वारा विदलित हुई मेदिनी हाय अद्य!
जो लोकाधीश भुवनजयी आक्रमी शक्र-से थे,
दास्यालंबी परवश हुए भाग्य के चक्र से वे॥ ३॥
स्वेच्छाचारी यवन-महिपों के दुराचार-पूर्ण
कार्यों से हो जब हिय गया हिंदुओं का विचूर्ण,
कर्तव्यों का तब कुछ उन्होंने तज न रक्खा विवेक,
प्रत्यर्थी से कतिपय मिले धर्म की छोड़ टेक॥ ४॥
एकाएकी विचलित हुई राजपूती गलों से,
राज्य-श्री श्री भरत भुवि की जा मिली मोगलों से।
राजा थे जो बनकर प्रजा शाह का वे गुलाम
आगे आके अति विनय से नित्य देते सलाम॥ ५॥
दिल्ली का त्यों दिन फिर गया, हो गई ऋद्धिशाली,
प्रासादों पै विलसित हुई ज्यों ध्वजा चाँदवाली।
दिल्ली को यों विजय-गरिमा नित्य आती तृषा से,
आती है ज्यों सरि जलधि में आप सारी दिशा से॥ ६॥

नाम—(२८९९) प्रतिपालसिंह ठाकुर, पहरा, राज्य-छतरपुर।

ग्रंथ—(१) वीर बाला, (२) बुंदेलखंड का इतिहास (बड़ा ग्रंथ), (३) औद्योगिक शिक्षा (निबंध), (४) खेलपचीसी, (५) शिशु-संबोधिनी, (६) बालिकाविनोदिनी, (७) बाल-विहार, (८) बालवृंद, (९) विदुरप्रजागर (संपादन), (१०) होलीहजारा (संग्रह), (११) शृंगार-कुंडली, (१२) आर्य-देव-कुल का इतिहास, स्फुट लेख तथा कविताएँ।

विवरण—आपका जन्म पौष-कृष्ण ८ बुधवार सं० १९३८ को, आपके पैतृक जागीरी स्थान पहरा में, हुआ। आप बुंदेला-क्षत्रिय-कुलोत्पन्न दीवान भानुसिंह के सुपुत्र हैं। औद्योगिक शिक्षा पर आपको काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा से स्वर्ण-पदक भेंट में मिला।

उदाहरण—

वर वीर - देश बुंदेलखंड,
तप-याग-केंद्र हिय भरतखंड।
तुव विशद विंध्यगिरि गगन ताहिं,
नद, गर्त गूढ़ पाताल जाहिं।
रत्नादि सर्व सपन्न अंग,
कहुँ सुथल शुभ्र कहुँ कठिन शृंग।
कहुँ पुष्पित वन, सर, नगर, खेत,
कहुँ निजन, निजल, विकराल रेत।
कहुँ विकट शीत रद कटकटात,
कहुँ लूक कलेवर झुलस जात।
बहु गढ़ गुफादि मंदिर, कुटीर,
सत, रज, तम-गुणमय जीव भीर।
विख्यात चार सरितन मँझार,
तुव अति अनूप आनँद-अगार।

निश्चर अनार्य तिब्बति असुर,
वर्मीय कोल सुर नाग सूर।
दिति-दनुज, गरुड़ द्राविड़ सु गौंड,
सुत सरल आरजन दिय बगौंड।
कुल सूर - चंद्र - संता महान,
किय सभ्य प्रतिष्ठित संसथान।

नाम—(३६००) रामचंद्र द्विवेदी (श्रीपति), ग्राम अग्रौली, ज़िला बलिया।

जन्म-काल—सं० १९३८।

ग्रंथ (मुद्रित)—

(१) उपदेश-कुसुमाकर, (२) धर्म, (३) ईश्वरास्तित्व, (४) गांधी-गुण-दर्पण, (५) करुण-क्रंदन, (६) भारत-विलाप-बत्तीसी, (७) हिंदू-जाति का संगठन और सुधार, (८) हिंदुओ सावधान, (९) शिक्षा, (१०) प्राचीन और अर्वाचीन भारत।

(अमुद्रित)—

(१) भारत-सुधार, (२) कवि-सम्राट् तुलसीदास, (३) वैदिक सतसई, (४) लीलावती-लता (भास्कराचार्य-कृत लीलावती-नामक गणित ग्रंथ का पद्यानुवाद), (५) सुख-शांति-सरोवर, (६) तुलसी-सतसई की टीका, (७) हिंदू-आर्य-मीमांसा, (८) श्रीपति-शतक (१०० भिन्न विषयों पर कविताएँ)।

विवरण—द्विवेदीजी हिंदी-भाषा के अच्छे मर्मज्ञ हैं। आप हिंदी-साहित्य के लेखक तथा कवि होने के अतिरिक्त अच्छे व्याख्याता भी हैं। वैद्यनाथ धाम के गुरुकुल-स्थापना का मुख्य श्रेय आप ही को है। [पं० गंगाशरणसिंह शर्मा, खरगपुर द्वारा ज्ञात]

उदाहरण—

चितै चित चाहि प्रभु जितै जित हेरयौ तहाँ,
तेरो ही महान गुन गान गहने परे;
जल-थल एको कहूँ खाली न लखात प्रभू,
पूरन समान पीठ वाम दहने परे।
बागन में, बेलिन में श्रीपति चमेलिन में,
चंद्र-सूर लोक में प्रतच्छ कहने परे;
एहो जगदीश! तेरी महिमा अपार लखि,
पंडित सुकवि हूँ को मौन रहने परे।
(श्रीपति-शतक से)

अलंकार गुण हीन दीन दूषन की पीनी;
छंद छटा की छीन छाव छमता की छीनी।
भाव-भक्ति-रस अंग भंग नीरस सब भाँती;
नहिं कवि-कुल आदेय हेय दुर्गुण विख्याती।
कवि 'श्रीपति' जू गांधी-चरित ससि-समान सुषमा रमी;
होइहिं सज्जन सुखदा सदा कलुषा कुल कविता तमी।
(गांधी-गुण-दर्पण से)

समय—सं० १६६४

नाम—(३६०१) गंगाप्रसाद उपाध्याय, एम्० ए० दया-निवास जीरो रोड, प्रयाग।

जन्म-काल—सं० १६३८।

रचना-काल—सं० १६६४।

ग्रंथ—(१) शेक्सपियर (छ भागों में समालोचनात्मक भूमिकाओं-सहित ग्रंथ), (२) पशु-पक्षी-वृत्तांत (चौदह भागों में), (३) अँगरेज़-जाति का इतिहास, (४) विधवा-विवाह-मीमांसा, (५) आर्य-समाज, (६) आस्तिकवाद, (७) श्रीशंकराचार्य-

प्रणीत 'सर्व-सिद्धांत-संग्रह' का भाषानुवाद, (८) अद्वैतवाद (माधुरी-पत्रिका में प्रकाशित), (९) धर्मपद (समालोचनात्मक भाषानुवाद, अभी छपना है), (१०) आर्य-समाज के सिद्धांत-विषयक ७१ ट्रैक्ट (हिंदी में ६७ और अँगरेज़ी में ४)।

विवरण—आपका मुख्य निवास-स्थान मथरा, ज़िला एटा है। इस समय यह दयानंद-हाईस्कूल, प्रयाग के सुविख्यात प्रधानाध्यापक हैं। आपने प्रयाग-विश्वविद्यालय से अँगरेज़ी तथा दर्शनशास्त्र में एम्० ए० की उपाधि प्राप्त की। यह महाशय एक उच्च कोटि के विद्वान् हैं, और अपने विद्वत्ता-पूर्ण ग्रंथों द्वारा इन्होंने हिंदी-साहित्य की प्रशंसनीय पुष्टि की है। ऊपर लिखे हुए ग्रंथों के अतिरिक्त आपने पाठशालोपयोगी नए ढंग के व्याकरण-ग्रंथ तथा पाठ्य पुस्तकें रची हैं, और इस उपलक्ष में सरकार ने आपको पारितोषिक प्रदान करके सम्मानित किया है। आजकल आप 'समाज-सुधार' तथा 'महिला-व्यवहार-चंद्रिका'-नामक पुस्तकें लिख रहे हैं।

नाम—(३६०२) चंद्रमौलि सुकुल, हिंदू-विश्वविद्यालय, काशी।

जन्म-काल—सं० १९३९।

रचना-काल—सं० १९६४।

ग्रंथ—(१) मानस-दर्पण (अलंकार ग्रंथ), (२) अकबर (अकबर की जीवनी तथा तत्कालीन इतिहास), (३) शरीर और शरीर-रक्षा, (४) भाषा-व्याकरण, (५) अरिथमेटिक-शिक्षा-प्रणाली (अंकगणित पढ़ाने की विस्तृत रीति), (६) मनोविज्ञान (Psychology), (७) रचना-विचार (हिंदी में निबंध तथा पत्र-लेखन की रीति), (८) नाट्य कथामृत (अँगरेज़ी में 'लैम्स टेल्स' की रीति पर), (९) जानकी-गीत संस्कृत की टीका (अप्रकाशित), (१०) सादी-कृत 'करीमा' का हिंदी-पद्यात्मक अनुवाद, (११) गणित की प्रथम पुस्तक (हिंदी), (१२) लोअर प्राइमरी

अरिथम्यटिक, (१३) फ़ाइनल अरिथम्यटिक, (१४) हिंदी-पाठ-संग्रह भाग दो, (१५) हिंदी-संग्रहावली, (१६) मैक्मिलन हिंदी रीडर।

विवरण—आप श्रीयुत पंडित काशीदीनजी सुकुल के पुत्र हैं। आपके पूर्वज बैसवाड़े में गंगातट-वर्ती भागू खेड़ा ग्राम के निवासी थे, किंतु अब इनका मुख्य निवास-स्थान लखनऊ ज़िले के अंतर्गत अनरौली ग्राम है। आप काशी-हिंदू-विश्वविद्यालय में ट्रेनिंग-कॉलेज के प्रिंसिपल (अध्यक्ष) हैं। इन्होंने कुछ काल तक 'कान्यकुब्ज' तथा 'फ़ौजी अख़बार' का संपादन किया है। आप उच्च कोटि के गद्य-लेखक हैं।

नाम—(३१०३) माणिक्यचंद्र जैन बी० ए०, बी० एल्०।

यह खंडवा मध्यप्रदेश के वकील थे। आपकी अवस्था प्रायः ३० साल की थी कि आपका देहांत हो गया। हिंदी-ग्रंथ-प्रसारिणी मंडली, प्रयाग के मंत्री और बड़े ही उत्साही पुरुष थे। हिंदी के अनेकानेक ग्रंथ खोज-खोजकर प्रकाशित करते थे। हमारा हिंदी-नवरत्न और यह इतिहास आप ही ने बड़े उत्साह-पूर्वक हमसे सहठ लेकर प्रकाशित किया था। गद्य के एक उत्तम लेखक थे। बड़े ही होनहार पुरुष थे, तथा हिंदी की उन्नति की आपसे बड़ी आशा थी, परंतु शोक है, इनका देहांत युवावस्था में ही हो गया। हिंदी के बड़े प्रेमी तथा उत्साही थे। इनकी अकाल मृत्यु से हिंदी की बड़ी हानि हुई।

नाम—(३१०४) मुहम्मदवज़ीरख़ाँ, ग्राम हिंडोरिया, जिला दमोह।

जन्म-काल—सं० १९३२।

रचना-काल—सं० १९६४।

ग्रंथ—(१) वसंत-बहार (अप्रकाशित), (२) सती सुलोचना (नाटक, अप्रकाशित), (३) सदाचार-दर्पण (अप्रकाशित), (४) स्फुट कविताएँ।

विवरण—देवरी-निवासी सैयद अमीरअली 'मीर कवि' आपके काव्य-गुरु थे। इस समय आप अध्यापक हैं। आपकी रचनाएँ कानपुर से निकलनेवाले 'सुकवि' पत्र में प्रायः निकला करती हैं। [श्रीयुत लक्ष्मीप्रसादजी मिस्त्री द्वारा ज्ञात]

उदाहरण—

देश-सुधार करैं न कछू, पर भेष-सुधार अनेक करैंगे;
आपुस में करि बैर सदा, कबहूँ नहिं धर्म मैं ध्यान धरैंगे।
मानत सीख न वेदन की, कुल-लाज-जहाज डुबाय भरैंगे;
ज़े नर दूसरे द्वारनि तै खर कूरहि स्वान-समान फिरैंगे।
पालहु धर्म सबै अपनो, नहिं दूसरे के पथ पैर अड़ाओ;
आपुस बैर तजौ अबहू, निज देख दशा हिय में शरमाओ।
भ्रात-सनेह करो सबसे अरु फूट-प्रपंच को दूर भगाओ;
जान 'वज़ीर' सु औसर को अब देश के शीस कलंक न लाओ।

नाम—(२९०५) रामचंद्र शास्त्री, लाहौर।

जन्म-काल—सं० १९३९।

रचना-काल—सं० १९६४।

ग्रंथ—(१) शुद्धि, (२) भारतगौरवादर्श।

विवरण—उत्कृष्ट लेखक।

नाम—(२९०६) रामजीशरण विंध्याचलप्रसाद, ग्राम हरपुर नाग, चंपारन (बिहार-प्रांत)।

जन्म-काल—सं० १९३९।

ग्रंथ—(१) श्रीकृष्णायन, (२) विनय-रत्नाकर, (३) अष्टक-भंडार, (४) कामादिवशीकरण, (५) नाम-यश-दर्पण, (६) नाम-यश-कुटीर, (७) जानकी-यश-तरंगिणी, (८) सीता-सुयशावली, (९) गुरु-वंदना, (१०) विलोम-दोहावली, (११) सारदा-लंबोदर, (१२) प्रह्लाद-सौगंध, (१३) कलह-मोचनी, (१४)

विपत्ति-भंजन, (१५) कल्प-लतिका, (१६) हनुमद्यश-पताका, (१७) महासंकट-मोचन, (१८) तुलसी-चालीसा, (१९) सूर्य-चालीसा, (२०) भव-सागर-नौका, (२१) सद्गुरु-चालीसा, (२२) प्रेम-विवर्द्धिनी, (२३) आनंद-गुटिका, (२४) गीत-मुक्तावली, (२५) सज्जन-चरित्र-माला, (२६) विंध्याचल-संहिता, (२७) मंगल-मयूख, (२८) रामस्तव-तिलक, (२९) प्रेम-कुसुमांजलि, (३०) विनय-पुष्पांजलि, (३१) पत्र-विन्यास।

विवरण—आप श्रीवास्तव कायस्थ मुंशी शिवप्रसादलालजी के पुत्र तथा अपने प्रांत के एक ज़मींदार हैं। आपकी रचनाएँ विशेष-तया भक्ति-मार्ग से संबंध रखती हैं। आपके उक्त ग्रंथों में से केवल दो ही ग्रंथ—प्रेम-विवर्द्धिनी तथा नाम-यश-दर्पण—मुद्रित हुए हैं। प्रेम-विवर्द्धिनी इनकी सबसे पहली रचना है। आयुर्वेद, ज्योतिष, तंत्र-जाल इत्यादि विषयों के भी आप ज्ञाता हैं।

उदाहरण—

अब उर धरि पद राम सिया को, वृत बानी जन हृदय दिया को;
गावत विशद चरित तिन केरो, जिन करुणा करि मानस प्रेरो।
जो परिपूरण तम अविनाशी, अगुण ब्रह्म साकेत-निवासी;
मानस अवधि प्रकटि जलजाता, भयउ भक्त-अलिगण सुखदाता।
सोइ अमर गो-लोक सरोजा, प्रकट होइ छवि कोटि मनोजा;
द्वापर कीन चरित जग पावन, सोइ भनत कछु परम सुहावन।
कृतयुग नाना ध्यान समाधी, त्रेता विविध यज्ञ आराधी;
द्वापर करि परिचर्या पी की, जो नरवर पावहिं गति नीकी।
सो वर फल सज्जन कलि पावहिं, हरि-यश गहि सद्ग्रंथन गावहिं;
विनु हरि-यश विशेष कलि माहीं, तरन उपाय आन कछु नाहीं।
राम-कथा दुर्गा यथा, असुर महाकलिकाल;
पाठक जन वर विबुधगण टारहिं विपति विशाल। (कृष्णायन से)

नाम—(३९०७) रामदेवजी प्रोफ़ेसर।

इनका जन्म सं० १९३९ में हुआ। इस समय आप गुरुकुल काँगड़ी में अध्यापक हैं। इनका बनाया भारतवर्ष का इतिहास प्रशंसनीय है। यह बड़ा गवेषणा-पूर्ण ग्रंथ है। ऐसे ग्रंथों की इस समय आवश्यकता है। और भी कई ग्रंथ आपने बनाए हैं।

नाम—(३९०८) हरिदत्त 'दीन'।

जन्म-काल—सं० १९२९।

रचना-काल—सं० १९६४।

ग्रंथ—(१) प्रबंध-दीपक, (२) सामान्य नीति, (३) दीन-विनोद, (४) ध्रुव-चरित्र, (५) सदार्थ-धर्म-रहस्य, (६) सुवर्ण-माला, (७) माप-नियम-चंद्रिका, (८) संगीत-रामायण।

खेमीपुर ज़िला आज़मगढ़ के निवासी। सरयूपारीण ब्राह्मण पं० प्रयागदत्त त्रिपाठी के आप पुत्र हैं। आप एक सुकवि हैं।

उदाहरण—

कहे जात न्यारे हैं अभिन्न जल बीच चार
सत चित आनँद सरूप गुण-धाम हैं;
भक्तन के हेत बार-बार अवतार धरि
जग बीच चरित पसारत ललाम हैं।
भिन्न-भिन्न देश में अनेक भाँति पूजे जात,
भिन्न-भिन्न भाषा में अनेक जाके नाम हैं;
कहैं द्विज 'दीन' गौरी शंभु राधा-श्याम जग
जननी-जनक सो हमारे सियराम हैं।

समय—सं० १९६५

नाम—(३९०९) कृष्णकांत मालवीय, प्रयाग-निवासी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४०।

रचना-काल—सं० १९६५।

ग्रंथ—(१) सोहागरात अथवा बहूरानी को सीख, (२) मातृत्व, (३) मनोरमा के पत्र ।

विवरण—आपने मातृत्व के विषय पर इन ग्रंथों द्वारा अच्छा प्रकाश डाला है । देश-प्रेम के कारण कई बार जेल-यात्रा कर चुके हैं । अभ्युदय तथा मर्यादा का संपादन बहुत दिन तक किया था । सोहागरात बहुत ही विख्यात है ।

नाम—(३९१०) गदाधरसिंह (सजौलिया-निवासी), पो० सिधौली, जिला सीतापुर ।

जन्म-काल—सं० १९४० ।

जन्म-समय के उपलक्ष में आपकी लिखी सवैया नीचे दी जाती है—

मेखहि लग्न त्रिजै दशमी बुध संबत चालिस प्रात शुभौ थे ;
सप्तम राहु परातन केतु मयंक बृहस्पति कर्क में चौथे ।
षष्टम सूरज शुक्ल बुधौ ये गदाधर हैं परे पूछो न कौथे ;
दूसरे में शनि, तीसरे मंगल, यों प्रगटात समै ग्रह नौ थे ।

ग्रंथ—(१) साहित्य-दिवाकर (नायिका-भेद), (२) भामिनी-दुर्भाव (अप्रकाशित) ।

विवरण—आप श्रीशमशेरसिंहजी के पुत्र तथा श्रीमान् राजा सूर्यबख़्शसिंह सी० आई० ई० कसमंडाधिप के भतीजे हैं । यह महाशय नं० २९६७ तथा नं० २७४४ पर आए हुए इसी नाम के दो कवियों से भिन्न हैं । हमको यह कवि श्रीयुत महिपालसिंहजी, सिजौलिया (सीतापुर) द्वारा ज्ञात हुए हैं । इन्होंने षट् ऋतुओं का भी अच्छा वर्णन किया है ।

उदाहरण—

वा सुकुमार अती लगै सुंदर आभा है केशन में तम-तोम की ;
सादी पोशाक सों जो छबि जाहिर अंगहि अंग औ' रोमहि रोम की ।

कापै 'गदाधर' जात कही उपमान लहै भरी सुंदरी जोम की ;
घाँघरे में छवि जंघन की मनो बत्ती जलैं द्वै फनूस में मोम की।

मंद-मंद शीतल समीर कढ़ि बागन सों
छ्वै छ्वै कै परागन सो अंग परसै लगी ;
प्रीतम विदेश, काम प्रगटो शरासन लै,
बाढ़ी बिरहागि देह आपै झरसै लगी।
झरे-झरे द्रुम फेरि पल्लवित लागे होन,
फूले-फूले फूलन सुगंध सरसै लगी ;
कोयल कुहूकैं भौंर गुंजरैं 'गदाधर' जू,
ऐसे ऋतुराज की अवाई दरसै लगी।

नाम—(३९११) चंद्रशेखर शास्त्री, प्रयाग-निवासी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४०।

रचना-काल—सं० १९६५।

ग्रंथ—सामाजिक विषयों पर कई ग्रंथ।

विवरण—आप दर्शनशास्त्री हैं। वाल्मीकीय रामायण का अनुवाद भी कर रहे हैं।

नाम—(३९१२) पुरुषोत्तमदास खत्री टंडन एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, प्रयाग।

ग्रंथ—राजपूत-वीरता, स्फुट लेख इत्यादि।

विवरण—आप बड़े ही हिंदी-प्रेमी एवं हिंदी के लेखक तथा प्रचारक हैं। आप बहुत समय तक हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के मंत्री रहे, और उसकी सफलता का विशेष श्रेय आपको है। एक बार आप उसके सभापति हो चुके हैं। देश-प्रेम के कारण कई बार जेल गए हैं। राजनीति में प्रांतीय नेताओं में आपकी भी गणना है।

नाम—(३९१३) प्रेमचंद (लाला धनपतराय बी० ए०), बनारस।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४० ।

रचना-काल—सं० १९६९ ।

विवरण—आप पहले उर्दू में लिखा करते थे, और अब भी लिखते हैं, पर अब हिंदी की ओर इनका विशेष ध्यान है। आपने गल्प, आख्यायिका एवं उपन्यास-लेखन में विशेष महत्त्व प्राप्त किया है, और मुख्यतया आपकी गल्पों का बड़ा मान है। आपके ग्रंथों में 'सेवा-सदन', 'रंगभूमि', 'कर्बला', 'संग्राम', 'काया-कल्प' इत्यादि बड़े प्रसिद्ध हैं। इनके ग्रंथों की संख्या बहुत अधिक है, और उपन्यासों की बड़ी धूम है। सच पूछिए, तो आपने उपन्यास-विभाग में हिंदी की बड़ी श्लाघ्य अंग-पुष्टि की है, और हम गल्प एवं उपन्यासकारों में इनका स्थान बहुत ऊँचा समझते हैं। इनमें एक यह भारी त्रुटि ठीक ही कही जाती है कि इन्होंने अपने नायकों इत्यादि के चरित्र एकरस नहीं उतार पाया। इनमें अनेक गुण भी हैं। आपका स्थान हिंदी-साहित्य में बहुत काल तक स्थिर एवं अटल रहेगा। बड़ी कथाओं से आपकी छोटी कथाएँ श्रेष्ठतर बनी हैं। आपके बड़े उपन्यासों में पात्रों का रूप बिगड़ जाता है, तथा वर्णनों का आकार उचित से कुछ बड़ा हो जाता है।

नाम—(३९१४) महेशाचरणसिंह कायस्थ, लखनऊ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४०।

ग्रंथ—हिंदी केमिस्ट्री इत्यादि कई पुस्तकें लिखी हैं।

विवरण—बड़ी ही उपादेय पुस्तकें आपने बनाई हैं।

नाम—(३९१५) रामचंद्र शुक्ल, मिर्ज़ापुर, हाल बनारस।

ग्रंथ—(१) कल्पना का आनंद, (२) मेगास्थनीज़ का भारतवर्षीय विवरण, (३) राज्य-प्रबंध-शिक्षा, (४) राधाकृष्णदास का जीवन-चरित्र, (५) अमिताभ, (६) स्फुट गद्य और पद्य-लेख,

(७) आदर्श-जीवन, (८) विश्व-प्रपंच, (९) प्रवाहगामिनी माला, (१०) शशांक, (११) बुद्ध-चरित्र काव्य, (१२) तुलसीदासजी की जीवनी तथा उनके ग्रंथों की आलोचना, (१३) जायसी की समालोचना, (१४) हिंदी-साहित्य का इतिहास।

विवरण—कवि एवं लेखक हैं। मिश्रबंधु नाम सुनते ही जामे बाहर हो जाते हैं। और बातों में उच्च कोटि के लेखक और समालोचक हैं।

नाम—(३९१६) विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक', कानपुर।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४५।

रचना-काल—सं० १९६५।

ग्रंथ—(१) चित्रशाला (दो भाग), (२) मा (दो भाग)।

विवरण—आप 'हिंदी-मनोरंजन' के संपादक रह चुके हैं। कहानी के अच्छे लेखक हैं। आपकी कहानियों से गार्हस्थ्य जीवन पर अच्छा प्रकाश पड़ा है।

नाम—(३९१७) रामानंद पाठक उपदेशक, खानपुर, औरैया, ज़िला इटावा।

जन्म-काल—सं० १९३६।

कविता-काल—सं० १९६५।

ग्रंथ—(१) कुमार-कर्तव्य (दो संस्करण), (२) रामायण-शिक्षावली।

विवरण—आप कान्यकुब्ज कुलोत्पन्न पं० मातादीन पाठक के पुत्र हैं। इनको धार्मिक कामों से विशेष प्रेम रहता है, और इनका बहुत-सा समय वैदिक धर्म-प्रचार, अनेक गुरुकुल तथा अनाथालयों के कार्यों में व्यतीत हुआ है। इनके सदृश इनके तीन लघु भ्राता—पाठक ब्रह्मदत्त, डॉक्टर कृष्णदत्त तथा पं० दयानिधिजी वकील—भी हिंदी-लेखक और व्याख्याता हैं।

उदाहरण—

एकहि भानु प्रकाशित ह्वै जग दूरि करै तम-राशि सदा हीं;
जीव सबै भयभीत रहैं मृगराज बसै इक कानन माहीं।
त्यों हीं रामानँद एक हि सूर दलै अरि के गण शंकत नाहीं;
एकहि धर्म प्रचार करैं जग धार्मिक जो न बसै छल छाहीं॥ १॥
धार्मिक भूप जबै जग के निज ध्यान प्रजा-हित माहिं धरैंगे;
त्योंहिं रामानँद वीर कुमार सबै मिलके पुरुषार्थ करैंगे।
दीन दशा लखि कै तबहीं जगदीश कृपा करि दुःख हरैंगे;
रे मन साहसि! साहस छोड़ न, साहस से सब काज सरैंगे॥ २॥

नाम—(३६१८) संत निहालसिंह।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४०।

रचना-काल—१९६९।

ग्रंथ—कई ओजस्वी, गंभीर, गवेषणा-पूर्ण लेख।

विवरण—आप अमेरिका, योरप, जापान आदि हो आए हैं। ज्ञाता पुरुष हैं।

नाम—(३६१६) सरस्वतीदेवी।

यह नगवा गाँव ज़िला आज़मगढ़ के कवि त्रिपाठी रामचरित्रजी की पुत्री हैं। इनके छंद कानपुर के रसिक-मित्र में छपा करते थे। इनके पिता डुमराँव महाराज के यहाँ रहते थे। इनके बनाए (१) नीति-निचोड़, (२) सुंदरी-सुपंथ, (३) वनिता-बंधु और (४) शारदा-शतक ग्रंथ अच्छे हैं। इनमें से नीति-निचोड़ हमने देखा है।

उदाहरण—

ऊधव, जाय कहो उनसों पठई पतिया जिन जुक्ति भरी है;
ज्ञानी वही जग जाहिर हैं, जिनसों नहिं नायन हू उबरी है।
साधन योग स्वतंत्र समाधि विरक्त भरी जग सों कुबरी है;
ए व्रजबाल बिहाल महान वियोग की मारु प्रचंड परी है।

नैन कजरारे कोर वारे धनु भौंह तानि
मारत निसंक बान नेकु ना डरत हैं;
बेसर बिसेष बेष क़ीमति जड़ाऊ देखि,
तारन समेत तारापति हहरत हैं।
अधर कपोल दंत नासिका बखानौं कहा,
केस को सुबेस लखि सेस कहरत हैं;
श्रीफल कठोर चक्रवाक-से निहारे तेरे
उरज अमोल गोल घायल करत हैं।

यह साहित्य एक स्त्री-कवि के मुख से शोभा नहीं पाता। ऐसी रचना से प्राचीन प्रथा का अंध-प्रचार प्रकट है।

समय—संवत् १९९६

नाम—(२९२०) बुद्धिनाथ झा 'कैरव', संथाल परगनांतर्गत सनौर ग्राम, (बिहार-प्रांत)।

रचना-काल—सं० १९९६।

ग्रंथ—(१) आगे बढ़ो, (२) पश्चात्ताप। अप्रकाशित रचनाएँ—(१) खादी की उपयोगिता, (२) दिव्य दर्शन, (३) निहोरा, (४) ध्वनि, (५) खादी लहरी।

विवरण—आप बिहार के एक प्रतिभाशाली नवयुवक लेखक पं० भरोसी झा के पुत्र हैं। राजपुर मिडिल इँगलिश में प्रधानाध्यापक हैं। संवत् १९८३ के हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की मध्यमा परीक्षा में आप सर्व-प्रथम होकर उत्तीर्ण हुए। इस सफलता के उपलक्ष में स्वर्ण-पदक द्वारा आप भरतपुर-सम्मेलन में गौरवान्वित किए गए। आप गद्य तथा पद्य दोनो के सुलेखक हैं, और आपकी रचनाएँ 'माधुरी', 'चाँद' आदि हिंदी की पत्रिकाओं में प्रकाशित हुआ करती हैं।

उदाहरण—

कामना

विहँस उठें चुंबन से कलियाँ, ऐसा सुखद समीर बनूँ;
विश्व-वाटिका को नहलाऊँ, जीवनदायक नीर बनूँ।
सो न बनूँ, तो पृथिवी-रज वा विस्तृत नभ का तीर बनूँ;
कुछ न सही तो ज्वलित आग की प्रबल लपट बेपीर बनूँ।
किसी भाँति इस बंधन से हो करके पार वहाँ जाऊँ;
जीवन के संवरण-बहाने चिर जीवन को मैं पाऊँ।

अनुनय

मैं कबसे हूँ यहाँ बैठकर तेरा ही पथ हेर रही;
जरा ठहर जा प्रबल अनिल ! अब केवल थोड़ी देर रही।
क्यों ? यह भले समझ सकते हो, ज्वालाएँ घर घेर रहीं;
मैं न रहूँगी, जब देखोगे, शेष राख की ढेर रहीं।
तब तुम करना यही उड़ाकर उस विभूति को बतलाना;
पहुँचे जिससे उन चरणों तक, अपने सँग लेते जाना।

प्रतिसमवेदना

क्यों निकालती हो ये मोती ? यों घर को सूना न करो;
मत रोओ मेरी खातिर, यों रोकर दुख दूना न करो।
मुझे हुआ है क्या ? तुम नाहक अपना मन ऊना न करो;
भले ध्यान में बैठी हूँ मैं, उसको तुम छूना न करो।
बुरी चेतना जब तक थी सँग, वह भी मुझसे न्यारा था;
उधर भगाया मैंने उसको झट आया जो प्यारा था।

नाम—(३९२१) लक्ष्मीधर वाजपेयी, मैथा, ज़िला कानपुर।

जन्म-काल—सं० १९४४।

रचना-काल—सं० १९६९।

विवरण—आपने शालोपयोगी भारतवर्ष, दासबोध, रामदास-चरित, हिंदी मेघदूत आदि लगभग २० ग्रंथ लिखे हैं। आर्यमित्र तथा हिंदी-चित्रमय-जगत् का संपादन भी कर चुके हैं। आप हिंदी के लब्ध-प्रतिष्ठ लेखक और कवि तथा निरभिमानी एवं सहृदय साहित्य-सेवी हैं। आजकल दारागंज, प्रयाग में तरुण-भारत-ग्रंथावली का संचालन एवं प्रकाशन करते हैं।

समय—संवत् १९६७

नाम—(३९२२) चंद्रभानुसिंह दीवान बहादुर, गरौली, बुंदेलखंड।

जन्म-काल—लगभग सं० १९३९।

रचना-काल—सं० १९६७।

आपकी गणना स्वतंत्र रईसों में है। आप हिंदी के प्रेमी हैं तथा कविता भी उत्कृष्ट करते हैं। आपने एक दोहा-सतसई लिखी है। आध्यात्मिक विषय में आपके बहुत गहन एवं गंभीर विचार हैं। हमारे मित्र भी हैं। आपकी रचना प्रशंसनीय है।

उदाहरण—

उझकि झिझकि सकुचत हँसत लसत दृगन रतनाह ;
लचत मचत चलिबो चहत बनत न कछु मनमाह।
छिन बैठत छिन-छिन उठत, भुज उठाय जमुहात ;
अरी सखी, यह गात की बात कही नहिं जात।
श्वेत चंद सब ही कहत श्याम चंद नहिं जोत ;
सुने जे गोकुल में हते उदय सु पच्छिम होत।
मुरलीधर मुरली धरी मुरली धरत बनै न ;
मुरलीधर मुरली धरैं मुरली धरत न बैन।
बनसी बनसी बन बसी बावन बसी विशेष ;
बन बिनसी बन बन बसी बनसी बंनसी भेष।

श्यामरंग बदरा निरखि गरज मधुर सुन कान ;
छोड़ ध्यान मुनियान फिर मारत जटा पखान।
कंज नखत खँभ केहरी वापी सर्प कपाल ;
मृग कपोत विंब धनुप शुक श्याम सेत शशिबाल।

नाम—(३६२३) छोटेराम शुक्ल महोपदेशक, साहित्यरत्न।

जन्म-काल—सं० १६४२ (बुरहानपूर में)।

रचना-काल—सं० १६६७।

ग्रंथ—(१) हीरे की अँगूठी, (२) संसार-पाश, (३) सच्चे और भूठे मित्र, (४) विनोदी फक्कड़राम, (५) सच्चा आत्म-समर्पण, (६) भक्ति-प्रदीप-भजनमाला, (७) वदी का बदला नेकी, (८) बाबू खटमलचंद, (९) चतुर चंपा, (१०) वढ़ई लोगों की अवस्था, (११) घर का फ़िज़ूलख़र्च, (१२) मारवाड़ी-व्याकरण, (१३) प्रण-पालन, (१४) बालकों का सुधार, (१५) चरख़ा, (१६) ज्योतिप-प्रवेश।

विवरण—आप वाला के शुक्ल कान्यकुब्ज ब्राह्मण गुजराती, मराठी, हिंदी तथा अँगरेज़ी जानते हैं। आपने पंचराज मासिक पत्र का कई वर्षों तक संपादन किया। आजकल मारवाड़ी-हितकारक के संपादक हैं। आप हिंदी के सुकवि एवं अच्छे गद्य-लेखक हैं।

उदाहरण—

हे ईश, हे दयामय, इस जाति को सुधारो ;
कुत्सित कुरीतियों से अव शीघ्र ही उबारो।
हम भूलकर भले ही तुमको अचेत सोवें ;
पर तुम हमें कभी भी जगदीश, मत विसारो।
है प्रार्थना यही अव, सुख शांति से रहें सब ;
कट जायँ दुःख सारे, शरणागतों को तारो।

नाम—(३६२४) रामेश्वरी नेहरू, देहली।

जन्म-काल—सं १९४२।

ग्रंथ—संपादिका स्त्री-दर्पण।

विवरण—आप दीवान नरेंद्रनाथ डिप्टी-कमिश्नर मुलतान की पुत्री और ब्रजलाल नेहरू असिस्टेंट एकाउंटेंट जनरल, देहली की धर्मपत्नी हैं। आपकी विद्वत्ता एवं उत्साह सराहनीय है। आपने भाषा-व्याकरण-संबंधी कुछ काम किया है।

नाम—(३६२५) लक्ष्मीनारायणसिंहजी चौधरी 'ईश', काशी।

जन्म-काल—सं० १९४२।

रचना-काल—सं० १९६७।

ग्रंथ—(१) रस-रत्नाकर (नायिका-भेद), (२) अनरण्य-वध (ऐतिहासिक खंड काव्य), (३) श्यामा-श्याम-विहार (राधा-कृष्ण का भाग, चरित्र-वर्णन), (४) अन्योक्ति-प्रबंध, (५) पद्य-प्रबंध (स्फुट विषयों पर कविता), (६) वीरादर्श काव्य (ऐतिहासिक काव्य), (७) कानन-कुसुम (समस्या-पूर्तियाँ), (८) इंदुमती (उपन्यास)।

विवरण—आप भूमिहार ब्राह्मण चौधरी शिवमंगलसिंहजी के कनिष्ठ पुत्र हैं। ज़मींदार हैं, और महाजनी का भी व्यवसाय करते हैं।

उदाहरण—

अखिल, अखंड औ' अनादि निरुपाधि आधि-
व्याधि हू ते रहित अनादि आदि रस है;
अवनि अकास में अभायो अवकास भरि,
आस-पास छायो रहै देत ना दरस है।

सलिल समीर हू ते व्यापक विभूति जाकी,
होत अनुभूत पूत पावन सरस है;
मोदकर महत प्रमोदकर पारावार,
प्रेम-पय-पूरित पियूष ते सरस है।

नाम—(३६२६) लक्ष्मीप्रसाद मिस्त्री 'रमा'।

जन्म-काल—सं० १९४४।

रचना-काल—सं० १९६७।

ग्रंथ—(१) बंधु-वियोग (१९७५), (२) रेवा-माहात्म्य (१९६८), (३) फाग-संग्रह (१९६८), (४) स्तुति-प्रबंध (१९६८), (५) दृष्टांत-माला (१९६८), (६) चतुर-गवैया (१९६८), (७) क़व्वाली गुलबहार (१९६९), (८) श्रीगौपुकार (१९७०), (९) प्रभाती-संग्रह (१९७०), (१०) प्रेम-प्रबोध (१९७५), (११) लावनी चौदह रत्न कलगी (१९७५), (१२) काल का चक्र (१९७६), (१३) उर्वशी-चरित्र (१९७२), (१४) राजकुमारी उषा (१९७३), (१५) स्वर्गांगना (१९७४), (१६) सती मदालसा (१९७४), (१७) प्रेमशतक (१९७४), (१८) लावनी लक्ष्मी-विलास (१९७५), (१९) महाकवि केशवदास और उनके ग्रंथ (१९७८), (२०) राष्ट्रीय रत्न (१९८०)।

विवरण—आप ठाकुर अयोध्याप्रसादजी के पुत्र, हटा ज़िला दमोह में निवास करते हैं तथा विश्वकर्मा-वंशज शिल्पकार हैं। आपने विविध विषयों पर अच्छे ग्रंथ बनाए हैं।

उदाहरण—

आप भ्रमर ने कहा कंज से हे सुखदायी, आनँद-कंद;
संध्या-समय आप क्यों मुझको कर लेते हो उर में बंद।
उधर अकेली अलिनी मेरी कष्ट अनेकों सहती है;

मम वियोग के दुःसह दुख से निशि में व्याकुल रहती है।
कहा जलज ने—हे मलिंद, जिमि तुमको अलिनी प्यारी है;
इसी तरह से मेरी भी तो मित्र! आपसे यारी है।
अपने-अपने प्रेमी को पा सब ही हृदय लगाते हैं;
जीव-हीन, जड़ होकर भी हम 'लछमी' नेम निभाते हैं।
देखे मैंने विश्व-बीच में जितने सब सुंदर उपमान;
दीख पड़ा उन सबमें तेरा सौनदर्य मुझको छविमान।
राका-शशि में मिली देखने आनन की सुंदरताई;
ऊषा किरणों में भी लछमी, अधराओं की अरुणाई।
आई हूँ जब से अवास में, यही देखती प्रणाधार,
किया न होगा कभी आपने मेरे ऊपर निश्छल प्यार।
निर्ममता झुँझलाना देखा, सुने सदा ही वचन कठोर;
प्रेम-सिंधु में मुझे डुबाने कभी न आई प्रेम-हिलोर।
ज्ञात नहीं, इस निष्ठुरता में मजा कौन-सा पाते हो;
हमें देखना है निर्मोही, कब तक तुम ठुकराते हो।

नाम—(३९२७) विश्वेश्वरनाथ रेउ, साहित्याचार्य, शास्त्री, एम्० आर० ए० एस्०।

आपका जन्म सं० १९४७ में, जोधपुर में, हुआ। आप पं० मुकुंदमुरारिजी रेउ के सुपुत्र हैं। रेउजी जाति के कश्मीरी ब्राह्मण हैं। संस्कृत-साहित्य की आचार्य-परीक्षा में सर्व-प्रथम रहने के कारण जयपुर-राजकीय विद्या-विभाग से आप एक पदक द्वारा गौरवान्वित किए गए। जोधपुर-ऐतिहासिक विभाग में आपने प्रशंसनीय कार्य किया, और वहीं रहते हुए डिंगल-भाषा की कविता एकत्रित करने में बंगाल-एशियाटिक सोसायटी को सहायता दी। जोधपुर-राज्य में यह अजायबघर, पुस्तकालय, ज्योतिष-कार्यालय, पुरातत्त्वानुसंधान आदि कई संस्थाओं के सफलता-पूर्वक अध्यक्ष रह चुके हैं। इन्हें

पुरातत्त्व-कार्य से बड़ा प्रेम है, और बड़े परिश्रम से प्राचीन मुद्रा-लिपि, कारीगरी, मूर्तियाँ, चित्र आदि विषयों का इन्होंने अच्छा ज्ञान-संपादन किया है। इनकी अनेक लेख-मालाएँ तथा कविताएँ सामयिक पत्र-पत्रिकाओं में निकल चुकी हैं, और निकला करती हैं। आपने 'शैव सुधाकर'-नामक संस्कृत-ग्रंथ की भाषा-टीका लिखी, तथा जोधपुर-नरेश जसवंतसिंहजी-कृत वेदांत-पंचक और महाराजा मानसिंहजी-रचित कृष्ण-विलास-नामक ग्रंथों का योग्यता-पूर्वक संपादन किया है। आपकी महत्त्व-पूर्ण ऐतिहासिक रचना 'भारत के प्राचीन राजवंश'-नामक ग्रंथ है। आपका श्रम, पुरातत्त्व-विभाग पर, उपयोगी तथा श्लाघ्य है।

नाम—(३९२८) शिवप्रसाद गुप्त (बाबू) काशी-निवासी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४२।

रचना-काल—सं० १९६७।

ग्रंथ—पृथ्वी-प्रदक्षिणा, स्फुट।

विवरण—'आज' दैनिक पत्र के स्वामी। आप बनारस के बड़े रईसों में हैं। हिंदी तथा कांग्रेस के बड़े उत्साही कार्यकर्ता हैं। देश-हित के कारण कई बार जेल जा चुके हैं। हिंदी-विद्यापीठ कई लाख लगाकर स्थापित की। वह एक प्रकार से ऐसा विश्व-विद्यालय है, जिसमें निवास करते हुए छात्र विद्याध्ययन करते हैं।

नाम—(३९२९) सूर्यप्रसादजी त्रिपाठी कवि।

आपका जन्म संवत् १९४२ विक्रमी में बाराबंकी (यू० पी०) के समीप ठाकुरपुर-नामक ग्राम में हुआ। आप कान्यकुब्ज ब्राह्मण हैं। आपके पिता का शुभ नाम पं० भागवतप्रसादजी था। आपकी स्वतंत्रता आपके अनुज पं० श्यामसुंदरजी की कर्तव्यपरायणता तथा सहनशीलता पर बहुत कुछ निर्भर है। छंद अच्छे बनाते हैं। हम लोगों के मित्र हैं। साहित्यिक सभाओं में जनता आपका मान

करती है। आप भीम कवि कहलाते हैं। साहित्य मज़ेदार वर्तमान विषयों से पूर्ण बनाते हैं।

उदाहरण—

भर दे उसके प्रान में जीवन-शक्ति अतूल;
जिसके तप से विश्व में खिला शांति का फूल।
खिला शांति का फूल आज वह तेरा योगी;
पड़ा यहाँ बेचैन बना अनशन का रोगी।
अरे ईश, हो प्रकट भक्त के संकट हर दे;
देकर उसको आन सीप में सागर भर दे।

कायर-कलंकियों की आशा पै कठोर बन—
निपट निराशा का विषम बिष नाए देत;
छाए देत छेम छाँह कवि-कोविदों पै मान,
माला गुणियों के कल-कंठ में पिन्हाए देत।
लेखनी तुम्हारी मिश्रबंधु, हिंदियों के लिये—
हिंदी के बितान बर बिश्व में तनाए देत;
खोजि-खोजि कृतियाँ पुराने कबियों की उन्हें—
गौरव-सुधा से सींचि अमर बनाए देत।
कोई कहे हिंदी की महानता के सागर में—
ओज मुकुता की यह सीप शुभ्र साँची है;
कोई कहे कबियों की कल्पना में भारती के—
भावों की छिटक रही छटा जग जाँची है।
किंतु मिश्रबंधुजी, कहेंगे हम भारत में—
भ्रांति रजनी ने जहाँ श्याम रेख खाँची है;
प्रतिभा महान ये तुम्हारी लेखनी की वहाँ—
गौरव दिनेश की किरण बन नाची है।

समय—संवत् १९६८

नाम—(३९३०) गयाप्रसाद शास्त्री 'श्रीहरि', ख़ैराबाद।

जन्म-काल—सं० १९५१।

रचना-काल—सं० १९६८।

ग्रंथ—(१) 'बालबोधिनी' (गीता की संस्कृत-टीका), (२) 'गीतार्थ-चंद्रिका' (गीता की हिंदी-टीका), (३) 'गृह-चिकित्सा' (वैद्यक)।

विवरण—आप ख़ैराबाद के रहनेवाले हैं। आजकल लखनऊ में वैद्यक कर रहे हैं।

उदाहरण—

साथी सब स्वार्थ के सनेही जो कहाते नाथ !
मित्र, पुत्र, बांधव न कोई काम आते हैं;
प्रेम-रस-प्यासे प्रान प्यासे ही रहे हैं सदा,
प्यारे प्रेमघन की न छाया कहीं पाते हैं।
देखे विना जिनको न पाते कल एक पल,
वे ही छल-बल से हमें ही कलपाते हैं;
'श्रीहरि' सुना है, यश आपका विशद यह,
जिसका न कोई, उसे आप अपनाते हैं।

नाम—(३९३१) बदरीनाथ भट्ट बी० ए०, नरही, लखनऊ।

जन्म-काल—सं० १९४८।

रचना-काल—सं० १९६८।

ग्रंथ—(१) चंद्रगुप्त, (२) दुर्गावती, (३) विवाह-विज्ञापन, (४) लबड़धोंधों, (५) वेन-चरित आदि।

विवरण—आप पं० रामेश्वर भट्ट के पुत्र हैं। कुछ काल तक 'बाल-सखा' के संपादक रह चुके हैं। आजकल लखनऊ-युनिवर्सिटी के

हिंदी-लेक्चरर हैं। आप विनोद-प्रिय, सादे रहन-सहनवाले एक प्रतिभा-पूर्ण एवं प्रभावशाली नाटककार और प्रहसन-पूर्ण लेखक हैं।

नाम—(३९३२) लल्लीप्रसाद पांडेय।

जन्म-काल—सं० १९४२।

रचना-काल—सं० १९६८।

ग्रंथ—(१) ठोक-पीटकर वैद्यराज, (२) रायबहादुर, (३) नव कथा, (४) पत्र-पुष्प. (५) पंच पल्लव, (६) भक्त-चरित-माला, (७) अमियनिमाई-चरित्र, (८) जगद्गुरु का आविर्भाव, (९) जीवन का मूल्य।

विवरण—आप सागर-निवासी पं० रामलालके पुत्र तथा सुलेखक हैं। हास्य-रस पर आपने विशेष ध्यान दिया है।

नाम—(३९३३) हेमंतकुमारीदेवी (भट्टाचार्य)।

आपका जन्म सं० १९४३ में, लखनऊ में, हुआ, और विवाह सं० १९५६ में। आपको हिंदी से बड़ा प्रेम है, और उसकी उन्नति में आप सदैव श्रमशील रहती हैं। प्रयाग-प्रदर्शिनी से लाभ-नामक १५० पृष्ठों के निबंध पर आपको ५००) का तथा आदर्श पुरुष रामचंद्रवाले लेख पर ५०) का पुरस्कार मिला। आपने स्त्री-कर्तव्य, युक्त-प्रदेश का व्यापार, और वैज्ञानिक कृषि-नामक तीन ग्रंथ लिखे हैं।

समय—संवत् १९६९

नाम—(३९३४) चतुरसेन शास्त्री, दिल्ली-निवासी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४५।

रचना-काल—सं० १९६९।

विवरण—आपने कई औपन्यासिक तथा अन्य परमोच्च श्रेणी के ग्रंथ लिखे हैं। आप वैद्य हैं, और वैद्यक पर भी एक भारी ग्रंथ लिख चुके हैं। भाषा बढ़िया है और आख्यायिकाएँ अच्छी लिखते

हैं। आप वर्तमान काल के प्रायः सर्वोत्कृष्ट गद्य-लेखक हैं। आपकी भाषा संस्कृतपन का सहारा न लेते हुए भी ख़ूब ज़ोरदार है, तथा भाव सबल और मनोरंजक हैं।

नाम—(३९३५) मथुराप्रसाद बाजपेयी, सराय मालीख़ाँ, लखनऊ-निवासी।

जन्म-काल—सं० १९४४।

आपने स्वदेश-प्रेम-संबंधी विषयों पर बहुत-से अच्छे छंद लिखे हैं। आप हमारे भागनेय और सुकवि हैं।

उदाहरण—

भारत के नौनिहालो, आशा बड़ी जगी है;
कुछ काम कर दिखा दो, गांधी कि लौ लगी है।
खद्दर क वस्त्र तन में, सीना खुला हो रन में;
गोली चले सनासन, हिंसा न होय मन में।
आगे को डग बढ़ा दो, अंगद-समान पग हो;
मुस्क्यान मुख मनोहर, मोहन कि जीत तब हो।

नाम—(३९३६) महावीरप्रसाद श्रीवास्तव, बी० एस्-सी०, रायबरेली।

जन्म-काल—सं० १९४४।

जन्म-स्थान—ग्राम बिभौली, तहसील हंडिया, ज़िला इलाहाबाद।

ग्रंथ—(१) विज्ञान-प्रवेशिका (दो भाग), (२) गुरुदेव के साथ यात्रा (पूर्वार्द्ध), (३) समुद्र की सैर (बँगला के 'सागर-रहस्य'-नामक पुस्तक का अनुवाद), (४) सूर्य-सिद्धांत का विज्ञान भाष्य (मूल संस्कृत के ग्रंथ का अनुवाद), (५) स्फुट वैज्ञानिक लेख।

विवरण—आप श्रीवास्तव कायस्थ मुंशी शिवबदनलालजी के पुत्र हैं। आपने अपनी शिक्षा कायस्थ-पाठशाला तथा म्योर-सेंट्रल कॉलेज, इलाहाबाद में प्राप्त की। इन्होंने अपने ग्रंथों तथा लेखों द्वारा

हिंदी-साहित्य के वैज्ञानिक अंग की अच्छी श्री-वृद्धि की है। आपका सूर्य-सिद्धांत-विज्ञान भाष्य एक महत्त्व-पूर्ण ग्रंथ प्रतीत होता है। श्रीवास्तवजी का कथन है कि उनका यह ग्रंथ लगभग १००० पृष्ठों में पूरा होगा। समय-समय पर 'विज्ञान' मासिक पत्रिका में आपके ज्योतिष-संबंधी लेख निकला करते हैं। इस समय यह गवर्नमेंट हाईस्कूल, रायबरेली में अध्यापक हैं। यदि आजकल के सुलेखक लोग अपने अनुकूल दो-एक विषय चुनकर केवल उन्हीं पर अपनी-अपनी शक्ति लगावें, तथा परिश्रम एवं साधना से काम लेवें, तो समाज का ज्ञान-वर्द्धन अच्छा हो, हिंदी में स्थायी साहित्य बने, तथा उसकी श्रीवृद्धि भी अच्छी हो। श्रीवास्तव महाशय ऐसे ही अपने अनुकूल विषय पर ही विशेष ध्यान देनेवाले साहित्यिक महापुरुष समझ पड़ते हैं।

नाम—(३६३७) सोमेश्वरदत्त शुक्ल बी० ए०।

इनका जन्म सं० १९४४ में, सीतापूर में, हुआ। आपने अपने मातामह से उत्तराधिकार में अच्छी संपदा पाई। इतिहास एवं अन्य विषयों के कई अच्छे गद्य-ग्रंथ लिखे हैं। आप विद्या-व्यसनी हैं। छोटे-छोटे कई ग्रंथ बना चुके हैं। कुछ कविता भी की है। इँगलैंड, फ्रांस, जर्मनी के इतिहास तथा सावित्री-सत्यवान-नाटक अच्छे हैं। हमारे मित्र भी हैं।

समय—संवत् १९७०

नाम—(३६३८) इंद्रजी, दिल्ली।

जन्म-काल—सं० १९४६।

रचना-काल—लगभग सं० १९७०।

ग्रंथ—(१) नेपोलियन बोनापार्ट की जीवनी, (२) प्रिंस बिस्मार्क का जीवन-चरित्र, (३) गैरिबाल्डी, (४) उपनिषदों की भूमिका, (५) संस्कृत-साहित्य का ऐतिहासिक अनुशोधन, (६)

राष्ट्रीयता का मूल-मंत्र, (७) राष्ट्रों की उन्नति, (८) बालोपयोगी वैदिक धर्म, (९) स्वर्ण-देश का उद्धार।

विवरण—आपका जन्म जालंधर शहर में हुआ था। आप स्वर्ग-लोक-वासी महात्मा श्रद्धानंद के सुपुत्र हैं। इस समय दैनिक 'अर्जुन' पत्र के व्यवस्थापक तथा संपादक हैं। यह महाशय 'स्वधर्म-प्रचार', 'विजय', 'श्रद्धा' आदि पत्रों के संपादक रह चुके हैं।

नाम—(३९३९) (राय) कृष्णदास वैश्य, काशी-निवासी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४८।

रचना-काल—लगभग सं० १९७०।

आप काशी के रईस और चित्र-कला के प्रेमी तथा हिंदी के उत्साही लेखक हैं। आपने नागरी-प्रचारिणी सभा में एक कला-भवन स्थापित किया है, तथा उसमें अपने यहाँ के बहुत-से चित्र प्रदान किए हैं। आप इस समय नागरी-प्रचारिणी सभा के मंत्री और उत्साही कार्यकर्ता हैं। कई उपन्यास छायावादी ढंग पर लिखे हैं। हमको ये उपन्यास पसंद हैं, यद्यपि हमारे कई मित्र इस मत के विरोधी हैं।

नाम—(३९४०) कृष्णबिहारी मिश्र, गँधौली, सीतापुर।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४५।

रचना-काल—सं० १९७०।

ग्रंथ—(१) देव-बिहारी, (२) मतिराम-ग्रंथावली। संपादक माधुरी तथा साहित्य-समालोचक।

विवरण—प्रसिद्ध कवि व्रजराज के भतीजे तथा लेखराज के पौत्र हैं। आजकल सेनापति के ग्रंथ का संपादन किया है। हिंदी-साहित्य के अच्छे तथा अपने समय के परमोत्कृष्ट समालोचक हैं।

नाम—(३९४१) गोविंदवल्लभ पंत, रानीखेत, ज़िला अल्मोड़ा (हिमालय)।

जन्म-काल—सं० १९५६।

कविता-काल—सं० १९७०।

ग्रंथ—प्रकाशित—

(१) आरती-कविता - गुच्छ (सं० १९७०-७५ तक की रचनाएँ), (२) लिली (कहानी, १९७६), (३) कंजूस की खोपड़ी (प्रहसन, १९८०), (४) एक्का नंबर वन (प्रहसन, १९८०), (५) एकादशी (कहानियाँ), (६) वरमाला (पौराणिक नाटक, १९८०)।

अप्रकाशित—

(१) बंदी—(इतिहास-मूलक उपन्यास), (२) उदयोदय—(ऐतिहासक नाटक), (३) अर्द्धांगिनी—(सामाजिक उपन्यास), (४) रत्नहार (प्रहसन)।

विवरण—पंतजी ने अपनी उच्च शिक्षा हिंदू-विश्वविद्यालय, काशी में प्राप्त की। बचपन से ही ललित कलाओं की ओर आपकी रुचि थी। रंग-मंच तथा नाटक आपके प्रियतम विषय हैं। आपने साहित्य, संगीत तथा चित्रकारी में भी अच्छा ज्ञान प्राप्त किया है। नाटक तथा कहानियाँ लिखने के उपलक्ष में आपने स्वर्ण और रौप्य पदक भी प्राप्त किए हैं। आपके वरमाला नाटक की बड़ी धूम है। विषयों के चुनाव में आपने बहुत बड़े चातुर्य से काम किया है। नाटक तथा उपन्यासों के विषय आपके ख़ूब बढ़िया हैं। प्रहसन की भी अच्छी पुट रखते हैं। पद्य-रचना भी भाव-पूर्ण की है। वर्तमान समय के कवियों में आपका स्थान ऊँचा है। यदि राजनीति के कामों में बहुत व्यस्त न रहा करते, तो आप एक अमर कवि होते।

उदाहरण—

छाया

सावधान हो, पद रखता हूँ फिर भी तव कोमल काया ;
बार-बार है दलित हो रही क्यों ऐसे चलती छाया।
रवि की किरणें तुली हुई हैं करने को मेरा अवसान ;
तेरे चरणाश्रय में मुझको जीवन मिलता पथिक ! सुजान।

मैं

सुरसरि-हिय में छलक रही है मेरे ही आँसू की धार ;
नव वसंत की वर सुषमा में बिखरा है मेरा शृंगार।
बही जा रही मलयानिल में मेरी हा! चंचल निश्वास ;
इस प्रफुल्ल शतदल में विकसित है मेरा ही हास-विलास।
नील-गगन की सघन घटा में छिपा हुआ है मेरा चंद ;
बालक के पावन मुख में है प्रतिबिंबित मेरा आनंद।
कोयल के इस कलित कंठ में प्रतिध्वनित है मेरा गान ;
इस असीम की सीमा में परिमित है मेरा ही अवसान।

नाम—(३६४२) चतुरसिंह राष्ट्रवर बीका शृंगोत, पो० नेहर, सरदार शहर, रियासत बीकानेर।

जन्म-काल—सं० १९४०।

कविता-काल—लगभग सं० १९७०।

ग्रंथ—अर्वाचीन-प्राचीन-सोरठा-संग्रह (सरस्वती-प्रेस, भावनगर में मुद्रित, सं० १९७३)।

विवरण—आप ठाकुर बख़्तावरसिंहजी के पुत्र तथा ठाकुर मुकनसिंह खांप बीका शृंगोत के पौत्र हैं। आजकल यह महाशय क़स्बा सरदारशहर, रियासत बीकानेर में सब-इंस्पेक्टर-पुलिस हैं। हिंदी-भाषा के अच्छे ज्ञाता हैं। इनकी समस्या-पूर्तियाँ और स्फुट कविताएँ

'कवींद्र-वाटिका', 'काव्य-पताका' आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं।

उदाहरण—

मोतिन की मंग है सुगंग नाहिं नेत्र नाहिं—
तीसरो सुकुंकुम को टीको है मथान में;
चंद्र नाहीं भाल है, सुशेष नाहीं काली वेणी,
वीप नाहीं ओपै लरी लेवण गलान में।
मैं हूँ बाला पीवत औ खावत धतूरा नाहीं,
वाटिका की सैर करूँ पीवहू के ध्यान में;
मैन तू तो मारे मोहि हर जाने ढूँढ़त है,
बिहरत बीजुरी कनक-लतिकान में।

स्फुट सोरठा

कामिनि-नैन कटार, कोमल हिय नर कामि को;
पैठ जाति है पार, धारे बंक चितौन की।
विद्या बसी विदेश, धर्म-कर्म घर पै नहीं;
तीन विना चतुर्देश, दशा जु बिगरी देश की।

नाम—(२६४३) चंदाबाई जैन (पंडिता)।

जन्म-काल—सं० १९४९।

ग्रंथ—(१) उपदेश-रत्नमाला, (२) बालिका-विनय, (३) सौभाग्य-रत्नमाला, (४) निबंध-रत्नमाला, (५) कर्तव्य-रत्नमाला।

विवरण—आप माननीय नारायणदासजी, वृंदावन, की पुत्री हैं। आपने संस्कृत तथा जैन-साहित्य का अच्छा अभ्यास किया है। जैन-महिलादर्श की संपादिका हैं। आरा में आपने अपने ही व्यय से एक जैन-बालाश्रम खोल रक्खा है, जिसमें बहुत-सी बालिकाएँ शिक्षा ग्रहण करती हैं।

नाम—(३९४४) जो० एस्० पथिक।

आपका पूरा नाम गौरीशंकरजी शुक्ल है। उच्च शिक्षा प्राप्त कर लेने पर आपका प्रधान ध्येय अपनी मातृ-भाषा के साहित्य की पूर्ति करना रहा है। इनकी रचनाओं के प्रधान विषय व्यापारिक तथा सामाजिक हैं। व्यापार, उद्योग और अर्थशास्त्र-जैसे गहन विषयों पर इन्होंने लगभग चौदह ग्रंथ रचे हैं, जिनमें से मुख्य करेंसी, स्टाक एक्सचेंज, शिल्प-विज्ञान, व्यापार-संगठन-रीति, भारतीय कपड़े का व्यापार, भारतवर्ष के उद्योग-धंधे, भारतवर्ष के बैंक आदि हैं। सामयिक हिंदी, अँगरेज़ी तथा बँगला पत्रों में आपके व्यापारिक लेख समय-समय पर निकला करते हैं। हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की परीक्षाओं पर भी इन्होंने विशेष रूप से आंदोलन किया है, और इस उपलक्ष में ग्वालियर में सरस्वती-पुस्तकालय स्थापित हुआ है। हिंदी-साहित्य के व्यापारिक अंग की आप अच्छी श्री-वृद्धि कर रहे हैं। 'धर्माभ्युदय' तथा 'व्यापार' पत्रों का संपादन भी आपने सुचारु रूप से किया है। आप हमारे परमोपयोगी, श्रमशील तथा उच्च श्रेणी के लेखक हैं।

नाम—(३९४५) देवीदत्त शुक्ल, साँईखेड़ा, ज़ि० उन्नाव।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४२।

रचना-काल—सं० १९७०।

विवरण—यह हिंदी के अच्छे लेखक तथा 'सरस्वती' के संपादक हैं। 'किंकर' नाम से कविताएँ भी लिखा करते हैं।

नाम—(३९४६) प्रेमकुँवरि महारानी, दतिया।

जन्म-काल—सं० १९४९।

ग्रंथ—(१) चंद्रप्रकाश, (२) स्फुट पद।

विवरण—राधावल्लभीय शिष्या। रचना अच्छी है।

नाम—(३६४७) (राजा) भगवानबख़्शसिंह (श्रीकर) इटौंजा, लखनऊ।

जन्म-काल—सं० १९३१।

रचना-काल—सं० १९७०।

ग्रंथ—स्वरचित साहित्य-संग्रह।

विवरण—आप व्रजभाषा में अच्छे छंद लिखते थे। उनका संग्रह आपके भाई राजा रामपालसिंह ने छपवाया है। हमारे प्राचीन मित्र तथा सहपाठी थे।

नाम—(३६४८) भवानीदयाल।

जन्म-काल—सं० १९४९।

रचना-काल—लगभग सं० १९७०।

ग्रंथ—(१) दक्षिण आफ़्रिका के सत्याग्रह का इतिहास, (२) ट्रांसवाल में भारत-वासी, (३) कारावास-कहानी, (४) नेटाली हिंदू, (५) शिक्षित और किसान, (६) वैदिक धर्म और आर्य-सभ्यता, (७) महात्मा गांधी, (८) दक्षिण-आफ़्रिका में आर्य-संन्यासी (अप्रकाशित), (९) भारत की राज्य-क्रांति का इतिहास (अप्रकाशित), (१०) भजन-प्रकाश आदि।

विवरण—आपका जन्म ट्रांसवाल के प्रधान नगर जोहांसवर्ग में हुआ, और इसी कारण आप जन्म-प्रवासी (Colonial-Born) कहलाते हैं। आप ब्राह्मण हैं। इनके पिता ट्रांसवाल की इंडियन एसोसिएशन के सभापति थे, और इनका प्राथमिक शिक्षण सेंट सिप्रियन तथा वेल्सन मेथोडिस्ट स्कूलों में हुआ। सं० १९६१ में यह अपने पिता तथा भाई के साथ भारत आए, और प्रायः आठ वर्ष तक ससराम (बिहार) में रहकर इन्होंने अपनी ज़मींदारी का काम किया। सामाजिक तथा राजनीतिक आंदोलनों में भाग लेने की विशेष रुचि होने के कारण इन्होंने स्वदेशी पर ससराम इलाक़े-भर में व्याख्यान

दिए, तथा बहुआरा-ग्राम में राष्ट्रीय पाठशाला स्थापित की। साथ-ही-साथ आपने धर्मोपदेशक का कार्य भी किया। सं० १९६९ में यह अपनी धर्मपत्नी-सहित नेटाल गए। दक्षिण आफ्रिका के मुख्य-मुख्य स्थानों में आपने भ्रमण करके वहाँ के प्रवासी भारतवासियों की सामाजिक तथा राजनीतिक सेवा की है। इन कार्यों के अतिरिक्त आपने वहाँ हिंदी-प्रचार का देश-व्यापक आंदोलन किया, और कई स्थानों में हिंदी-प्रचारिणी सभाएँ भी स्थापित कीं। आप हिंदी-आर्य-आश्रम के प्रिंसिपल भी रह चुके हैं। जर्मिस्टन में आप कुछ काल तक इंडियन यंगमैन एसोसिएशन के सभापति रहे। वैदिक धर्म पर आपकी अटल भक्ति और श्रद्धा है। आपने नेटाल में वैदिक संस्कारों की उत्तमता तथा पवित्रता का ऐसा प्रतिपादन किया है कि वहाँ के विधर्मी भी आपके सिद्धांतों को देखकर चकित रह जाते हैं। आपको समाचार-पत्रों से बचपन से ही प्रेम रहा है। जब भारत में थे, उस समय कुछ काल तक आप पटना से निकलनेवाली 'आर्यावर्त' मासिक पत्रिका के सहकारी संपादक रहे। नेटाल पहुँचने पर वहाँ के प्रसिद्ध पत्र 'इंडियन ओपीनियन' के हिंदी-अंश के संपादक बनाए गए। इसके अतिरिक्त आपने वहाँ 'धर्मवीर' पत्र का भी योग्यता-पूर्वक संपादन किया, अथच 'हिंदी'-पत्र का संपादन कर रहे हैं। आप एक बड़े देशाभिमानी, स्वार्थ-त्यागी, तथा हिंदी-भाषानुरागी पुरुष हैं। दक्षिण आफ्रिका के प्रवासी भारतवासियों की सेवा आपने तन, मन, धन से की है। आपका यह परिचय 'हिंदी'-पत्र (दिसंबर, १९२२ की संख्या) में प्रकाशित श्रीसत्यदेवजी, प्रधान, आर्य-युवक-संस्था के लेख के आधार पर दिया गया है।

नाम—(३९४९) भालेराव (भास्कर रामचंद्र), ग्वालियर।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४०।

रचना-काल—सं० १९७० ।

विवरण—आप ग्वालियर में तहसीलदार तथा हिंदी के उत्साही कार्यकर्ता हैं। आपने हमारे पास डेढ़-दो सौ सज्जनों के विवरण भेजे हैं, जो विनोद में सम्मिलित हैं। आपके पास हिंदी की हस्त-लिखित पुस्तकों का अच्छा संग्रह है।

नाम—(३९५०) मातादीन तिवारी (मतोल), मैनपुरी ।

कविता-काल—सं० १९७० ।

मृत्यु-काल—लगभग सं० १९७५ ।

ग्रंथ—(१) नीति-शतक, (२) प्रभाती रामायण ।

विवरण—यह कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। प्रथम आप मैनपुरी-नरेश राजा रामप्रतापजी के दरबार में थे, और बाद को कुछ काल-पर्यंत ब्रह्म-प्रेस के अध्यक्ष के यहाँ इटावे में रहे। आपका पहला ग्रंथ ब्रह्म-प्रेस द्वारा प्रकाशित हो चुका है, किंतु दूसरा अनुपलब्ध है।

उदाहरण—

गनिका की गीध की गयंद-तिय गौतम की,
गोपिन की गाइन गुहार कौन करतो ;
नरसी की नृग की निषाद नल-नीलहू की,
भीलिनी की व्याध की विपत्ति कौन हरतो।
भनत 'मतौल' सैन सदन अजामिल को—
संकट सुकंठहि अकंटक को करतो ;
दुष्ट-दोष-गंजन भौ-भंजन न होते आप,
संत-मन-रंजन तुम्हारो नाम परतो।

नाम—(३९५१) मातादीन शुक्ल (नरेश) लखनऊ-निवासी ।

जन्म-काल—सं० १९५० (कृष्णपुर, ज़िला फ़तेहपुर में) ।

रचना-काल—सं० १९७० ।

ग्रंथ—(१) स्वराज्य का शंख (खंड काव्य), (२) क़ानून-भंग (गद्य)।

विवरण—आजकल आप माधुरी के संपादक हैं। समय-समय पर आप निम्न-लिखित पत्र-पत्रिकाओं के संपादक अथवा उप-संपादक रहे। आप एक लब्ध-प्रतिष्ठ संपादक तथा सुकवि हैं। छात्रसहोदर (मासिक), कान्यकुब्जनायक (मासिक), हितकारिणी (मासिक), तिलक (अर्द्ध-साप्ताहिक), कर्म-वीर (साप्ताहिक), सुधा (मासिक), गंगा-पुस्तकमाला की प्रायः २० पुस्तकें। आप ब्रज-भाषा तथा खड़ी बोली के कवि हैं, और विदग्ध नाम से भी रचना की है।

उदाहरण—

धन निधनी के निराधार के अधार होते,
आशा-नभ होते अभिलाष के सदन के;
बरसा बिभावरी में होते कहीं स्वाँति-बुंद,
होते सुधा-धार जो कहीं चकोर मन के।
किंशुक की गध होते मद होते मंजरी के,
शारदी प्रभात खंजरीटों के विजन के;
मचल-मचल रोते शिशु के सनेह होते,
सूखे अधरों के रस अंचल रुदन के।

छाँड़ि गए तौ कहा बिगरो झगरोई मिटो कलपावति नाहीं;
आँखि के फूटेई पीर गई जो भई सो भई तेहि गावति नाहीं।
ऊधो सँदेसन खेती न होति सुनी का कवौ कहनावति नाहीं;
औरन की कछू जानैं नहीं सुधि स्याम की तौ हमें आवति नाहीं।

नाम—(३९९२) मैथिलीशरण गुप्त, चिरगाँव, झाँसी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४२।

रचना-काल—सं० १९७० से।

ग्रंथ—(१) जयद्रथ-वध, (२) चित्रों एवं अन्य विषयों पर स्फुट रचनावली, (३) किसान, (४) पत्रावली, (५) भारत-भारती, (६) पलासी-युद्ध, (७) साकेत, (८) रंग में भंग, (९) विरहिनी व्रजांगना, (१०) पंचवटी, (११) वैतालिक, (१२) शकुंतला, (१३) वक-संहार, (१४) वन-वैभव, (१५) हिंदू आदि।

विवरण—उपर्युक्त ग्रंथों में साकेत बड़ा है, जो प्रायः ५०० पृष्ठों में रामायण की कथा का कुछ नए प्रकार से कथन करता है। 'हिंदू' में देश-प्रेम की बहार है। 'भारत-भारती' में भी यही बात है। आप देश-प्रेमी कवि हैं, और जातीय प्रथा के राजनीतिक विचार रखते हैं। इनकी रचना संस्कृतपन लिए हुए खड़ी बोली में है। पत्रिकाओं में भी इनके स्फुट पद्य-लेख निकला करते हैं। खड़ी बोली के आप परमोत्कृष्ट कवियों में माने जाते हैं, और हिंदी-संसार में आपने अच्छा यश प्राप्त किया है। वास्तव में आपमें अच्छी कवित्व-शक्ति है, और इनकी रचनाओं में चमत्कार पाया जाता है। इतना सब मुक्त कंठ से मानते हुए भी केवल साहित्य की दृष्टि से हमको इनकी बहुतेरी रचनाओं में वर्णन-पूर्णता की कमी समझ पड़ती है। एक भाव उठाकर उसे भली भाँति सुपुष्ट किए विना ही शाखा-चंक्रमण का-सा दोष दिखलाते हुए आप झट से दूसरे भाव पर कूद जाते हैं, और जब तक वह पुष्ट हो, तब तक अन्य पर जा पहुँचते हैं। मतिराम के वर्णन में भावपुष्टीकरण का जो भारी गुण हमने लिखा है, उसका चमत्कार गुप्तजी बिल्कुल नहीं दिखला पाए हैं। कथा का वर्णन आपने गोस्वामी तुलसीदास की प्रणाली पर न करके श्रीहर्ष की प्रथा पर किया है। फिर भी उनकी-सी भाव-सबलता के अभाव में आपके साकेत में न तो कथा की बहार है, न साहित्यिक छटा की। इन्हीं कारणों से आरोचन की मात्रा आपकी चमकती हुई

रचनाओं में कुछ कमी से आई है। देखने में तो पांडित्य अच्छा नज़र आता है, किंतु काव्य-कौशल की दृढ़ता का परिपाक उस ऊँचे दर्जे का नहीं है, जो साधारण पाठकों में फैले हुए आपके साहित्यिक यश की यथावत् पुष्टि करे। इतना समझे रहना चाहिए कि हम गुप्तजी की कवित्व-शक्ति की अवहेलना नहीं करते, वरन् उनकी प्रशंसा मुक्त कंठ से ऊपर हो चुकी है; फिर भी ध्यान-पूर्वक पढ़ने से हम इनके ग्रंथों में उस ऊँचे दर्जे का गौरव नहीं पाते, जो यथावत् आरोचन के लिये आवश्यक है। न तो किसी नवीन कथा का आपने अच्छा चमत्कार ही दिखलाया है, न कविता का परमोच्च आदर्श। साधारणतया हम भी आपको सत्कवि मानते हैं। आपकी भाषा उच्च कोटि की है, तथा भाव भी अनेक स्थानों पर उत्कृष्ट हैं। आपने हिंदी माता की प्रशंसनीय सेवा की है। कथानक की पुष्टता एवं रस-परिपाक ये दो गुण भी यदि आप ला सकते, तो वास्तव में स्तुत्य कवि होते। अभी तो आपमें हमें भाषा-मात्र का गौरव देख पड़ता है, सो भी कुछ रौक्षता के साथ। यदि कई ग्रंथों का लोभ छोड़कर आप प्रायः ७०० पृष्ठों का एक ग्रंथ निकालें, तो शायद अधिक स्थायी साहित्य रच सकें।

नाम—(३९५३) रमाकांत मालवीय, प्रयाग।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४५।

रचना-काल—सं० १९७०।

विवरण—आप हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के कई साल प्रधान मंत्री रहे, और उत्साही लेखक तथा कार्यकर्ता हैं।

नाम—(३९५४) रमाशंकर अवस्थी, कानपुर।

जन्म-काल—सं० १९४८।

रचना-काल—सं० १९७०।

आप दैनिक 'वर्तमान' के संस्थापक एवं संपादक तथा हिंदी-

गद्य के ज़ोरदार लेखक हैं । इनकी भाषा बोल-चाल की कुछ उर्दू-मिश्रित, परंतु परिमार्जित होती है ।

नाम—(३९५५) राधेश्याम कथावाचक, बरेली ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४५ ।

रचना-काल—सं० १९७० ।

ग्रंथ—राधेश्याम की रामायण और लगभग २५-३० नाटक ।

विवरण—आप फ़िल्म-कंपनियों के नाटककार हैं । एक प्रेस प्रायः इन्हीं की रचनाओं से चलता है । इन्हीं रचनाओं और प्रेस के सहारे इनकी प्रायः १०००) मासिक आय है । कविताएँ सादी तथा सरल हैं । इनके नाटक आजकल जनता बहुत पसंद करती है, परंतु साहित्यिक दृष्टि से वे महत्त्व-पूर्ण नहीं हैं । बरेली से निकलनेवाले 'भ्रमर'-पत्र के संपादक भी रहे हैं ।

नाम—(३९५६) रामचंद्र टंडन ।

ग्रंथ—(१) मुग़ल-सम्राट् बाबर, (२) अयोध्या, (३) सरोजिनी नायडू का जीवन-चरित्र, (४) कलिका इत्यादि कई ग्रंथ ।

विवरण—शाहज़ादपुर, ज़िला फ़ैज़ाबाद-निवासी भैया महादेव-प्रसाद के पुत्र । आप नागरी-प्रचारिणी सभा में अच्छा काम करते हैं । रचना में अन्योक्ति की कुछ छटा तथा देश-प्रेम की अच्छी पुट है ।

उदाहरण—

सुमन, आज तू पड़ा हुआ है धरती तल पर ;
सभी जा रहे हाय ! तुझी को कुचल-कुचल कर ।
पर आता है याद तुझे वह गया ज़माना ;
पाने को थे तुझे यत्न करते सब नाना ।
अकड़-अकड़कर डाल पर करता था तू नाज़ तब ;
वह तेरा औद्धत्य मद कहाँ गया है आज सब ।

नाम—(३९५७) लक्ष्मण शास्त्री, नागोर ।

कविता-काल—लगभग सं० १९७० ।

ग्रंथ—(१) श्रीविद्वद्भूषण महाकाव्य की टीका, (२) लघु स्तवराज की टीका आदि ।

विवरण—आपका जन्म बीकानेर में हुआ । आप श्रीयुत जयश्रीरामजी के पुत्र तथा महाराज श्रीमधुसूदनदासजी (मोतीराम) के शिष्य हैं । यह संन्यासी महंत हैं । हिंदी तथा अँगरेज़ी के अतिरिक्त आप संस्कृत के विशेष विद्वान् हैं । हिंदी में भी काव्य-रचना की है ।

नाम—(३९९८) लक्ष्मीनारायण गुप्त, ग्राम सिकंदरा राउ, ज़िला अलीगढ़ ।

जन्म-काल—सं १९४५ ।

रचना-काल—लगभग सं० १९७० ।

ग्रंथ—(१) रत्नोदय (नीति-संग्रह), (२) धूर्त ऐयार, (३) दर्शनी हुंडी, (४) डबल जेंटिलमैन, (५) हृदय-लहरी (गल्प), (६) उपेक्षिता (गल्प), (७) स्फुट लेखादि ।

विवरण—आप वैश्य-कुलोत्पन्न रायसाहब लाला ख़ूबलालजी रईस के पुत्र हैं । गल्प-लेखन के उपलक्ष में आपने पदक प्राप्त किए हैं । वेदांत-शास्त्र तथा योगाभ्यास से भी आपको रुचि रहा करती है ।

नाम—(३९९८ अ) वृंदावनलाल वर्मा, झाँसी ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४५ ।

रचना-काल—सं० १९७० । (अच्छे औपन्यासिक)

ग्रंथ—(१) गढ़-कुंडार (उपन्यास), (२) संगम, (३) प्रेम की भेंट, (४) कोतवाल की करामात, (५) कुंडली-चक्र, (६) विराटा की पद्मिनी आदि ।

नाम—(३९५८ आ) श्रवणप्रसाद मिश्र 'श्रवणेश', फुटेरा, (झाँसी)।

जन्म-काल—सं० १९५१ ।

कविता-काल—सं० १९७० ।

ग्रंथ—भक्त-मन-रंजन-चंद्रिका ।

विवरण—कवींद्र केशव के वंशज । संपादक प्रजामित्र झाँसी और सनाढ्य-हितकारी के भूतपूर्व संपादक ।

उदाहरण—

तम अज्ञान विनासकर देहु वुद्धि वरदान ;
जाहिर खगपति-पति सुमिरि पावत सब सन्मान ।
तारत भक्तन को सुने, गज नरसी ध्रुवराज ;
विनय सुनत ठहरे नहीं, आतुर राखी लाज ।
जाके पंकज-पदन को अधम करत ही ध्यान—
लहत उच्च पदवी तुरत, भाषत वेद - पुरान ।

नाम—(३९५९) सुभद्राकुमारी चौहान, संयुक्त-प्रांत ।

ग्रंथ—(१) स्फुट कविता, (२) बिखरे मोती ।

विवरण—यह मध्यप्रांतीय कांग्रेस के वर्तमान मंत्री ठाकुर लक्ष्मण-सिंहजी की धर्मपत्नी हैं । इन्होंने सम्मेलन से दो बार उत्कृष्ट कविता के लिये पुरस्कार पाए हैं ।

उदाहरण—

कड़ी आराधना करके बुलाया था उन्हें मैंने,
पदों को पूजने ही के लिये थी साधना मेरी ।
तपस्या, नेम, व्रत करके रिझाया था उन्हें मैंने,
पधारे देव, पूरी हो गई आराधना मेरी ।
तुम्हें सहसा बिलोका सामने, संकोच हो आया,
मुँदी आँखें सहज ही लाज से नीचे झुकी थी मैं ।

कहूँ क्या प्राणधन से, ये हृदय में सोच हो आया,
　　वही कुछ बोल दें पहले, प्रतीक्षा में रुकी थी मैं।
अचानक ध्यान पूजा का हुआ, झट आँख जो खोली,
　　नहीं देखा उन्हें, बस सामने सूनी कुटी देखी।
हृदय-धन चल दिए, मैं लाज से उनसे नहीं बोली,
　　गया सर्वस्व, अपने आपको दूनी लुटी देखी।

नाम—(३९६०) हनुमानप्रसाद पोद्दार मारवाड़ी, गोरखपुर।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४५।

रचना-काल—सं० १९७०।

ग्रंथ—संपादक कल्याण मासिक।

विवरण—आपके लेख विद्वत्ता-पूर्ण होते हैं। कल्याण धार्मिक पत्रिका है, जिसकी ग्राहक-संख्या लगभग २० हज़ार सुनी जाती है। सब हिंदी-पत्रिकाओं में इसकी महत्ता विशेष है, किंतु लेख साधारण हैं।

नाम—(३९६१) हीरालाल खन्ना, कानपुर।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४०।

रचना-काल—सं० १९७०।

ग्रंथ—स्फुट लेख।

विवरण—सनातन-धर्म-कॉलेज के प्रिंसिपल तथा अच्छे व्याख्याता एवं उत्साही हिंदी-सेवक।

समय—संवत् १९७१

नाम—(३९६१ अ) खलकसिंहदेव राजा खनियाधाना।

जन्म-काल—सं० १९४९।

कविता-काल—सं० १९७१।

ग्रंथ—सत्य-कथा-संग्रह।

(ख़ास बुंदेल खंडी शब्दों में)

बुंदेलखंड का श्रावण

(बरवै)

उदाहरण—

साउन समयो मोहन नभ घनश्याम ;
पच्छिम धरें सुरंगी रँग अभिराम।
बैहर चलत पुरविया धीमी चाल ;
हरियल भूमि लुभनिया हिलुरत ताल।
राखी भोर भुँजरिया दिन त्योहार ;
गाँव-गाँव सब झारत निज घर द्वार।
बिटियाँ रुचि-रुचि रचतीं माँदी आँग ;
धानी सुरँग चुनरिया सेंदुर माँग।
धानी केरई कोकई सुही सुरंग ;
गलियन साउन उमगो रंग-बिरंग।
माथे पीरि भुँजरिया, हिरदय माल ;
साउन गाउत चलतीं सिंधुर-चाल।
ढपला बंशी बज रए महलन चौक ;
सुन-सुन ज्वानन उमगत मन में सौक।
भर-भर तुपकें साँके फेंट सँभार ;
मूँछन ताव चढ़ावत कस हर वार।
साउन समय हमारो बहुतइ ठीक ;
खेलन बीर बनाउन सच्ची लीक।
बीर भूमि रस पूरित सुख की सूल ;
खंड बुंदेलकि रज-रज पावन फूल।

नाम—(३६६२) गुलाबराय एम्० ए०, एल्-एल्० बी० छतरपुर-राज्य, बुंदेलखंड।

जन्म-काल—सं० १९४४।

रचना-काल—सं० १९७१।

ग्रंथ—(१) शांति-धर्म, (२) फिर निराशा क्यों, (३) मैत्री-धर्म, (४) कर्तव्य-शास्त्र, (५) नवरस, (६) तर्कशास्त्र (तीन भाग), (७) पाश्चात्य दर्शन, (८) ठलुआ-क्लब, (९) स्फुट लेख तथा कविताएँ, (१०) दर्शन-शास्त्र का इतिहास।

विवरण—यह वैश्य-कुलोत्पन्न बाबू भवानीप्रसादजी के ज्येष्ठ पुत्र हैं। इनका जन्म इटावा नगर में हुआ, किंतु पैत्रिक गृह जलेसर, ज़िला एटा है। आगरे में इन्होंने एम्० ए० तथा एल्-एल्० बी० की उपाधियाँ प्राप्त कीं। इनकी स्वाभाविक रुचि तर्क तथा दर्शन-शास्त्र में विशेपतया रही है। यह छतरपुर-राज्य में सं० १९६९ में आए। सं० १९७२ में महाराजा साहब छतरपुर के प्राइवेट सेक्रेटरी नियुक्त हुए, और पीछे कुछ काल राजा अवागढ़ के यहाँ आप दानाध्यक्ष रहे। तर्क-शास्त्र पर आपको हिंदोस्तानी एकेडेमी से ५००) का पुरस्कार मिला। बड़ी शांत-प्रकृति के पुरुष हैं, परंतु दर्शन-शास्त्र के पूरे प्रेमी होने पर भी हास्य-रस पर भी ग्रंथ-रचना करने की योग्यता दिखला चुके हैं। हमारे प्राचीन मित्र हैं।

उदाहरण—

निकल दुखिया का जीवन-प्रान,
मृदुल आभा से सजा प्रभात।
आश के रथ पर चढ़ आया,
निमिष में हुआ जगत विख्यात।

नाम—(३९६३) जगदीश झा 'विमल', ग्राम कुमेढ़ा, ज़िला भागलपुर।

जन्म-काल—भाद्रपद कृष्ण-जन्माष्टमी, सं० १९४८।

रचना-काल—सं० १९७१।

ग्रंथ—(१) वीणा-झंकार, (२) पद्य-प्रसून, (३) पद्य-संग्रह, (४) खरा सोना, (५) जीवन-ज्योति, (६) लीला, (७) आशा पर पानी, (८) दुरंगी दुनिया, (९) रमणी, (१०) सावित्री, (११) महावीर, (१२) सती पंचरत्न, (१३) आदर्श सम्राट् आदि ८० पुस्तकें।

विवरण—यह मैथिल ब्राह्मण पं० कुलानंद झा के पुत्र हैं। १९६७ में पटना-नार्मलस्कूल की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए, और इनका स्थान संपूर्ण प्रांत के छात्रों में प्रथम रहा। आजकल जमालपुर-रेल्वे स्कूल में अध्यापक हैं। हिंदी के अतिरिक्त इन्होंने संस्कृत, अँगरेज़ी, बँगला, उर्दू तथा मराठी भाषाओं में भी ज्ञान प्राप्त किया है। साहित्य-रचना अच्छी करते हैं।

उदाहरण—(शुद्ध प्रेम से नीचे गिरा हुआ आश्रित प्रेम)

अर्चना

मुझे पाँव से ठुकराते क्यों प्रियतम प्राणाधार;
तुम्हें छोड़कर कौन करेगा अब मेरा उद्धार।
बाँह गह क्यों अपनाया था?
मुझे अनुचरी बनाया था।
मान लिया सेवा में मुझसे भूलें हुई अनेक;
पर मैं किसको देख बचूँगी करते नहीं विवेक।
तुम्हारा एक सहारा है;
जगत में कौन हमारा है।
तेरे पीछे पिता सहोदर माता पुत्र प्रधान;
पद-पद पर वे नाथ! करेंगे सब मेरा अपमान।
कहाँ कैसे रह पाऊँगी;
साथ ही तेरे जाऊँगी।

झटका देकर छुड़ा रहे हो मुझसे अपना हाथ ;
हृदय न मेरा त्याग सकोगे स्वामी ! सुखमय साथ ।
नीति सुंदर सुखकारी है ;
धर्म का बंधन भारी है ।
अंतिम भेंट चढ़ाकर तुझको निकल रहे हैं प्रान ;
साथ सदा ही रखना होगा हे मेरे भगवान !
चरण पर जीवन धरती हूँ ;
तुम्हारा पीछा करती हूँ ।

नाम—(३६६४) जनार्दन भट्ट एम० ए० ।

जन्म-काल—सं० १९४६ ।

ग्रंथ—(१) संस्कृत-कवियों की अनोखी सूझ, (२) अशोक के धर्मलेख, (३) बौद्धकालीन भारत, (४) आर्य-चरित्र, (५) आकृति-निदान, (६) टालस्टॉय के सिद्धांत, (७) गुलामी से छूटने का उपाय, (८) हंगेरी में असहयोग ।

विवरण—यह स्वर्गीय पं० बालकृष्ण भट्ट के कनिष्ठ पुत्र हैं । इन्होंने संस्कृत-विषय लेकर एम्० ए०-परीक्षा पास की । भारत के प्राचीन इतिहास से इनको विशेष प्रेम रहता है । जसवंत-कॉलेज, जोधपुर तथा क्राइस्ट चर्च कॉलेज, कानपुर में यह संस्कृत के प्रोफ़ेसर रह चुके हैं । कुछ काल तक इन्होंने सरकारी पुरातत्त्व-विभाग में भी काम किया और इस समय आप माहेश्वरी-विद्यालय, कलकत्ता के प्रधानाध्यापक हैं । यदा-कदा हिंदी के लेख भी लिखा करते हैं । बहुतेरे लेख 'माधुरी', 'सरस्वती', 'प्रभा' आदि पत्रिकाओं में निकल चुके हैं । ग्रंथों के विषय आपने देश-प्रेम लिए हुए चुने हैं । प्राचीन भारत का गौरव दिखलाने का भी सफल प्रयत्न किया है ।

नाम—(३६६४ अ) पंडित द्वारकाप्रसाद शुक्ल (उपनाम शंकर कवि), रायबरेली-निवासी ।

जन्म-काल—सं० १९४४।

रचना-काल—सं० १९७१।

ग्रंथ—(१) दुखहरन द्वादशी, (२) शक्ति-शतक, (३) शंकर-हृदय, (४) स्फुट छंद।

विवरण—पंडित वंशगोपाल शुक्ल के पुत्र। पं० गयाप्रसाद ऐडवोकेट, रायबरेली आपके ज्येष्ठ भ्राता हैं। स्वयं आप अवध में सब-जज और हमारे मित्र हैं। आपके उद्योग से सरस्वती-सदन-नामक पुस्तकालय, रायबरेली में स्थापित हुआ। वह शारदा-सदन नाम से अब भी चल रहा है। सुकवि हैं। इनकी स्त्री भी कवयित्री हैं।

उदाहरण—

भामिनि महेश की है दाहिनि सदाई मेरे,
जारै अरि पाप भाल-ज्वाल श्रीमहेश की;
गोद में महेश की मिलैहैं सब मोद मोको,
प्यावै है पियूष शशि-कला श्रीमहेश की।
करुना महेश की कृतार्थ करती है मोहिं,
भावत सतत कल कीर्ति श्रीमहेश की;
कविता महेश की करौं मैं नाम शंकर लै,
बसै मन माहिं मंजु मूर्ति श्रीमहेश की।

नाम—(३९६५) मक्खनलाल शास्त्री।

ग्रंथ—(१) पंचाध्यायी टीका, (२) तत्त्वार्थ राजवार्तिक।

विवरण—आपका जन्म-स्थान चखली-ज़िला आगरा है। आप जैन-धर्मावलंबी प्रसिद्ध हिंदी-लेखक हैं।

नाम—(३९६६) रामनरेश त्रिपाठी।

जन्म-काल—सं० १९४६, जौनपुर-ज़िले के कोइरीपुर ग्राम में।

विवरण—यह हिंदी, उर्दू, अँगरेज़ी तथा संस्कृत-भाषा के अच्छे ज्ञाता हैं। इनके अतिरिक्त गुजराती, बँगला, मराठी आदि प्रांतीय भाषाएँ भी जानते हैं। यह कुछ काल तक फ़तेहपुर में रहे, और वास्तव में यहीं से इनमें साहित्यिक अभिरुचि उत्पन्न हुई।

ग्रंथ—(१) कविता-कौमुदी (चार भाग), (२) पथिक (खंड काव्य), (३) मिलन हिंदी-पद्य-रचना, (४) हिंदी का संक्षिप्त इतिहास, (५) ग्राम-गीत, (६) राम-चरित-मानस (टीका), (७) हिंदी-शब्द-कल्पद्रुम (कोष), (८) नीति-रत्नमाला (तीन खंडों में), (९) लक्ष्मी (उपन्यास), (१०) पृथ्वीराज चौहान (जीवन-चरित्र), (११) हिंदी-महाभारत, (१२) उत्तर ध्रुव की भयानक यात्रा (अँगरेज़ी उपन्यास का अनुवाद), (१३) आनंद-वीणा आदि। इनका 'पथिक' खड़ी बोली का एक खंड काव्य है, और इसी काव्य से इन्होंने अपनी प्रतिभा का अच्छा परिचय दिया है। हिंदी के प्रचार-कार्य में भी इन्होंने अच्छा योग दिया है। पंडितजी हमारे मित्र और हिंदी के भारी विद्वान् तथा लेखक हैं। विविध विषयों पर आपने अच्छा प्रकाश डाला है। आपका हिंदी-संबंधी श्रम परम स्तुत्य है। राजनीतिक कार्य में आप जेल भी जा चुके हैं। हिंदी के आप परमोत्कृष्ट कवि तथा लेखक हैं।

नाम—(३९६७) ललितकुमारसिंह 'नटवर', महुआर ग्राम, शाहाबाद, (बिहार-प्रांत)।

जन्म-काल—सं० १९५५।

रचना-काल—लगभग सं० १९७१।

ग्रंथ—(१) ललितराग-संग्रह, (२) गुलाल (होली-सुधार की कविताएँ), (३) चतुर चर (स्काउटिंग), (४) आदर्श शासन, (५) बाँसुरी (कविता)।

विवरण—इनका पहला नाम मौ० लतीफ़हुसैन 'नटवर' था। गत १८ सितंबर, सन् १९२७ को शुद्ध होकर फिर से हिंदू-धर्म के अनुयायी हुए। इनके पिता ठाकुर महादेवसिंह, ज़िला शाहाबाद के राजपूत और माता सिसौल ग्राम, ज़िला मुज़फ़्फ़रपूर के शेख़ मदारू मियाँ की कन्या थीं। यह 'रमणी-रत्न-माला', 'किसान-समाचार' तथा 'आशा' पत्रिका के संपादक भी रहे हैं। कविता अच्छी करते हैं।

नाम—(३९६८) लक्ष्मणनारायण गर्दे।

जन्म-काल—सं० १९४६।

ग्रंथ—(१) महाराष्ट्र-रहस्य (१९७१), (२) सरल गीता (१९६९), (३) आरोग्य और उसके साधन (१९७१), (४) आत्मोद्धार (१९७२), (५) जापान की राजनीतिक प्रगति (१९७७), (६) कृष्ण-चरित्र (१९७९), (७) गांधी-सिद्धांत (१९७७), (८) एशिया का जागरण (१९८१), और भी कुछ पुस्तकें लिखी हैं।

विवरण—आप महाराष्ट्र ब्राह्मण और भारतमित्र के संपादक हैं। संपादन-कला का आपको अच्छा ज्ञान है, और साहित्य-संसार में आपने विशेष स्थान प्राप्त किया है।

समय—संवत् १९७२

नाम—(३९६९) अवंतबिहारीलाल माथुर एम्० आई० एस्० ए०, 'अवंत', गुना, ग्वालियर-रियासत।

जन्म-काल—सं० १९६२।

रचना-काल—सं० १९७२।

ग्रंथ (अप्रकाशित)—(१) हिंदी-पत्र-पत्रिकाओं का इतिहास, (२) ग़रीब पंडा (उपन्यास), (३) डाका न डालनेवाला डाकू, (४) सेठजी की चोरी (उपन्यास), (५) निर्दोष को फाँसी (उपन्यास), (६) प्राचीन भारत, (७) स्फुट कविताएँ

(रामायणाष्टक), (८) होली-बहार, (९) कृष्ण-लीला, (१०) कंस-वध, (११) कपोत-चरित्र, (१२) राजनीति, (१३) लक्षण-संग्रह, (१४) अवंत-भजनावली, (१५) कृष्ण-जन्माष्टक, (१६) रामायण-बहार।

प्रकाशित—(१) कविता-केलि, (२) कविता-कुसुम, (३) गोरक्षण।

विवरण—यह सहारिया गोत्रीय मुंशी जगतविहारीलाल के पुत्र हैं। आप प्रसिद्ध औपन्यासिक हैं, और व्रज-भाषा तथा खड़ी बोली दोनो में स्तुत्य कविताएँ करते हैं।

उदाहरण—

जहाँ बना आवास कभी था, रहते थे सुख अरु आनंद ;
जहाँ प्रेममय हास कभी था, होता था विलास स्वच्छंद।
जहाँ स्वर्ग की माया भी बस, करती थी नित नूतन नृत्य ;
पा करके संकेत तनिक-सा, जहाँ दौड़ पड़ते थे भृत्य।
जिसमें बड़े-बड़े नृप करते थे सदैव आहार-विहार ;
यश-वैभव दुनिया का सारा जहाँ देखता था संसार।
जहाँ कभी थी स्वर्ग-अप्सरा सजती नए-नए श्रृंगार ;
वही स्वर्ग-सा सदन पड़ा है सूना, करता हाहाकार !
चलती थी अति प्रीति-पगी-सी जहाँ प्रेम में मग्न पवन ;
वहीं आज भी खड़ा सुनाता अपनी गाथा भग्न भवन।

नाम—(३९७०) खंजनसिंह, करौंदी, ज़िला उन्नाव।

जन्म-काल—सं० १९४७।

नाम—(३९७१) गंगाप्रसाद श्रीवास्तव (जी० पी० श्रीवास्तव)।

जन्म-काल—सं० १९४७।

ग्रंथ—(१) लंबी दाढ़ी, (२) उलट-फेर, (३) मर्दानी औरत,

(४) नोक-झोंक, (५) महाशय भड़ामसिंह शर्मा, (६) दुमदार आदमी, (७) गड़बड़झाला, (८) मिस्टर लतखोरीलाल, (९) स्वामी चौखटानंद, (१०) मीठी हँसी, (११) गंगा-जमनी, (१२) कुर्सी मैन, (१३) मार-मारकर हकीम, (१४) आँखों में धूल, (१५) हवाई डाक्टर, (१६) नाक में दम, (१७) जवानी बनाम बुढ़ापा, (१८) रंग बेढब, (१९) धोखाधड़ी, (२०) घदौलत-सीट, (२१) चड्ढा गुलखैरू, (२२) काठ का उल्लू, (२३) प्राणनाथ ।

विवरण—यह गोंडे के प्रसिद्ध वकील हास्य-रस के अच्छे लेखक हैं । फिर भी इतना कहना पड़ता है कि इनका हास्य सब कहीं ऊँचे दर्जे का नहीं है ।

नाम—(३९७२) नर्मदाप्रसाद बी० ए०, जबलपुर ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४७ ।

विवरण—यह 'हितकारिणी' के उप-संपादक तथा 'श्रीशारदा' पत्रिका के संपादक रह चुके हैं । इन्होंने हिंदी-साहित्य-सम्मेलन से विशारद तथा कलकत्ते से साहित्य-शास्त्री की पदवियाँ पाई हैं ।

नाम—(३९७३) लोचनप्रसाद पांडेय ।

जन्म-काल—प्रायः सं० १९४८ ।

ग्रंथ—(१) दो मित्र, (२) प्रवासी, (३) नीति-कविता आदि छोटे-मोटे ११ ग्रंथ ।

विवरण—यह बालपुर, ज़ि० बिलासपुर-निवासी हैं । आपने कई गद्य एवं खड़ी बोली में अनेक पद्य-ग्रंथ रचे हैं । आप एक होनहार लेखक हैं । आपने कविता-कुसुममाला में कई वर्तमान कवियों की रचनाओं का संग्रह किया तथा देश-भक्ति पर भी अच्छी कविता रची है ।

नाम—(३९७४) व्रजरत्नदास, काशी ।

जन्म-काल—सं० १९४७।

ग्रंथ—(१) मआसिरुलउमरा (लगभग ३०० हिंदू-सरदारों की जीवनियों का फ़ारसी से हिंदी-अनुवाद), (२) बुंदेलखंड का इतिहास, (३) फ्रेंच-जाति का इतिहास।

संपादित ग्रंथ

(१) सुजान-चरित्र, (२) रहिमान-विलास, (३) भ्रमर-गीत (नंददास-कृत), (४) मुद्राराक्षस, (५) भाषा-भूषण (महाराजा यशवंतसिंह-कृत), (६) ख़ुसरो की हिंदी-कविता, (७) प्रेम-सागर, (८) राम-स्वयंवर इत्यादि।

विवरण—यह वैश्य-कुलोत्पन्न श्रीयुत बलदेवदासजी के सुपुत्र हैं। भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्रजी की एकमात्र पुत्री विद्यावती इनकी माता थीं। आपको इतिहास से प्रेम और संपादन-कला में अच्छी सफलता प्राप्त है। तुलसीदास-ग्रंथावली के तीन संपादकों में से यह भी एक रह चुके हैं। साहित्यिक गौरव पर आपका वंश-परंपरागत अधिकार है।

समय—संवत् १९७३

नाम—(३९७५) अंबिकादत्त त्रिपाठी, ग्राम खेसोपुरी, तहसील अहरौला, ज़िला आजमगढ़।

जन्म-काल—सं० १९५१।

कविता-काल—सं० १९७३।

ग्रंथ—(१) सीय-स्वयंवर (नाटक), (२) भंग में रंग, (३) आदर्श वीरांगना-नाटक, (४) चर्ख़ा, (५) चुगल-चालीसा, (६) अहिंसा-संग्राम, (७) एक-न-एक लगा रहता है, (८) भीष्म-प्रतिज्ञा।

विवरण—यह महाशय पं० गुरुदीनजी त्रिपाठी के सुपुत्र हैं। इन्होंने काव्य-कला की शिक्षा अपने भाई पं० जयगोविंदजी से प्राप्त

की। तहसील शाहगंज, ज़िला जौनपुर में इनका स्थापित किया हुआ साहित्य-सागर-नामक एक पुस्तकालय है। आप नाटककार तथा सुकवि हैं।

उदाहरण—

पाठक प्रथम अश्रु-वर्षा कर जर्जर हृद को शांत करो;
पुनः आधुनिक अन्यायों के अनुशीलन वृत्तांत करो।
केवल एक कहानी दुखदा मैंने वर्णन की उनकी;
लाखों होते दृश्य जगत् में, हो न सकी गणना जिनकी।
अनुचित अधिक कुरीति विश्व में विष-वल्ली-सी फैल रही;
अनुदिन अक्षुण होता जाता, घटता ही है मैल नहीं।
बड़ी अभागी कन्याएँ हैं, सुख मस्तक में लिखा नहीं,
शिक्षा, कौशल, कला सीख लें हो सकता है भला कहीं।

(कृष्णकुमारी से)

नाम—(३९७६) गणेशशंकर विद्यार्थी, कानपुर।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४८।

रचना-काल—सं० १९७२।

मृत्यु-काल—लगभग सं० १९८७।

विवरण—कानपुर के गत दंगे में अनाथों की रक्षा करते हुए दुष्टों द्वारा वीर-गति को प्राप्त हुए। 'प्रताप' साप्ताहिक तथा दैनिक पत्र के संपादक थे। बड़े उत्साही तथा उत्कृष्ट गद्य-लेखक एवं वक्ता थे। इनकी जिह्वा में बल था। अनाथों के लिये प्राण तक देकर आपने अनुपम शौर्य तथा जाति और देश-प्रेम के उदाहरण दिखलाए। जिस जाति में ऐसे नर-रत्न हों, वह शतमुख से सराहनीय है। उसका पतन नहीं हो सकता। हिंदी को ऐसे शूर को लेखक-रूप में पाकर गर्व है। हिंदी-लेखन में भी आपका पद बहुत ऊँचा है।

नाम—(३९७७) झावरमल्लजी, कलकत्ता।

विवरण—आप 'कलकत्ता-समाचार'-नामक पत्र के संपादक हैं। आपके द्वारा हमें कई लेखकों के विवरण प्राप्त हुए हैं। आप उत्कृष्ट लेखक तथा परोपकारी महात्मा हैं। आपका आदर्श जीवन है।

नाम—(३९७८) लौटूसिंह गौतम।

ग्रंथ—(१) सत्पथदर्शक, (२) प्राचीन भारत, (३) जीवन-मुक्ति, (४) शिक्षा-पद्धति।

जन्म-काल—सं० १९४८।

रचना-काल—सं० १९७३।

विवरण—हरीघाट-ज़िला ग़ाज़ीपुर-निवासी डॉक्टर शिवकर्णसिंह के पुत्र। इस काल क्षत्रिय-कॉलेज, बनारस में आप अध्यापक हैं। इतिहास पर श्रम कर रहे हैं, जो स्तुत्य और अनुकरणीय है।

समय—संवत् १९७४

नाम—(३९७९) केशवलाल झा 'अमल', सोन्हौली, तारापुर (मुंगेर)।

जन्म-काल—सं० १९४९।

रचना-काल—सं० १९७४।

ग्रंथ—(१) काव्य-प्रबोध, (२) प्रेम-पुष्प-मालिका, (३) ललित मालती, (४) प्रलाप (गद्य-काव्य)।

विवरण—आप पं० गोपाल झा के पुत्र और खड़ी बोली के सुकवि हैं।

उदाहरण—

रूप

मनोहारिणी नंदन-सुषमा,
राका-शशि की निर्मल कांति;
मादकता मदिरा का प्याला,
या स्वर्गिक शोभा की भ्रांति।

विश्व-माधुरी की शुचि आभा,
या यौवन का सुंदर फूल ;
है सोहाग की छटा मनोहर,
या विरही जीवन का शूल ।
प्रकृति-नटी का हास्य-ज्योति या
मधुर-मिलन का भाव अनूप ;
हीतल शीतल करनेवाला,
या तरुणी रमणी का रूप ।

नाम—(३९८०) बनारसीदास चतुर्वेदी ।

जन्म-काल—सं० १९४९ ।

ग्रंथ—(१) हृदय-तरंग, (२) राष्ट्र-भाषा, (३) रानडे, (४) केशव चंद्रसेन, (५) भारत-भक्त एंड्र्यूज़, (६) प्रवासी भारतवासी, (७) फ़िजी की समस्या, (८) फ़िजी-प्रवासी ।

विवरण—फ़ीरोज़ाबाद, ज़िला आगरा-निवासी पं० गनेशीलाल के पुत्र हैं। यह आजकल कलकत्ते में रहकर 'विशाल भारत' पत्र का संपादन करते हैं। उपनिवेशों पर आपने विशेष श्रम किया है। हिंदी-गद्य के सुलेखक हैं।

नाम—(३९८१) राजकुमार वर्मा 'कुमार', साहित्य-रत्नाकर, जबलपुर।

जन्म-काल—सं० १९६१ ।

कविता-काल—सं० १९७४ ।

ग्रंथ—(१) भीम-प्रतिज्ञा (नाटक), (२) वीर हम्मीर (पद्य-ग्रंथ), (३) सुखद सम्मिलन, (४) गांधी-गान, (५) प्रणय-परिचय, (६) साहित्य-समालोचना, (७) कबीर का रहस्यवाद ।

विवरण—आप कायस्थ-कुलोत्पन्न श्रीयुत लक्ष्मीप्रसाद श्रीवास्तव भूतपूर्व एक्स्ट्रा असिस्टेंट कमिश्नर, मंडला के पुत्र हैं। यह इस

समय प्रयाग-विश्वविद्यालय में हिंदी के आचार्य हैं। नव्य प्रथा की वढ़िया कविता रचते हैं।

उदाहरण—

देश-दशा का ध्यान हृदय में होवे प्रतिक्षण;
उसकी सेवा-हेतु वहें चाहे शोणित-कण।
तन-मन-धन सर्वस्व देश-हित होवे अर्पण;
सुख से संकट सहूँ यही मुख से निकले प्रण।
भारत के शुभ नाम की माला हाथों में लसे;
हृदय-कमल में देश की सेवा-भ्रमरी आ फँसे।
आह! हमारे हाथों से लुट जावे जीवन-धन कैसे?
प्रेम-सुधा से सिंचित उपवन वन जावे हा! वन कैसे?
दुख-दोषों के महातिमिर में छिप जावे विधु-मन कैसे?
अपनी आँखों ही के सम्मुख मा का घोर पतन कैसे?

समय—संवत् १९७५

नाम—(३९८२) गुरुभक्तसिंह (भक्त) ठाकुर।

जन्म-काल—सं० १९५०।

ग्रंथ—(१) भक्त-मंजरी, (२) प्रेम-पाश-नाटक, (३) सम्मिलन।

विवरण—यह जमानिया, ज़िला ग़ाज़ीपुर-निवासी डॉक्टर कालिकाप्रसादसिंह के पुत्र, वलिया के प्रसिद्ध रईस तथा हिंदी के कवि एवं प्रेमी हैं। आपकी खड़ी बोली की रचना काव्यत्व की कमनीयता से मंडित है।

उदाहरण—

इसे रुलाया, उसे हँसाया, कहीं वृक्ष को दिया ढकेल;
इसे हिलाया, उसे सुलाया, क्या अद्भुत है तेरा खेल।

नवल नायिका-सी रस-भीनी नौका जो मदमाती है;
छाती फूली हुई पालकी भड़क हर्ष से जाती है।
सलिल बीचि पर मौज उड़ाती इतराती लहरी ऊपर;
कर पतवारों से पानी में इधर-उधर से छप-छप कर।

नाम—(३९८३) गौरीशंकर द्विवेदी (शंकर), टीकमगढ़।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५०।

रचना-काल—सं० १९७५।

ग्रंथ—बुंदेलखंड के कवि और लेखक (अमुद्रित)।

विवरण—ग्रंथ बड़ा और उपयोगी है। टीकमगढ़ में आप पोस्ट-मास्टर हैं। खड़ी बोली में अच्छी कविता करते हैं। श्रमशील हिंदी-प्रेमी सज्जन हैं।

नाम—(३९८४) जगद्विहारी सेठ।

जन्म-काल—सं० १९५०।

ग्रंथ—(१) प्राचीन भारत के उपनिवेश, (२) वाटरलू का युद्ध, (३) प्राकृतिक दृश्य, (४) बंबई-प्रांत का पर्यटन, (५) बस विहीन लंदन, (६) पदार्थ किस प्रकार बना है, (७) बिजली के लैंप, (८) बिजली की चालक शक्ति।

विवरण—बाबू कुंजबिहारी सेठ रिटायर्ड जज के पुत्र तथा लाहौर-गवर्नमेंट-कॉलेज में भौतिक विज्ञान के अध्यापक हैं। आप विलायत से पास करके आए हैं, और आई० ई० एस्० श्रेणी में हैं। आपके ग्रंथों द्वारा उपयोगी विषयों पर समाज की ज्ञान-वृद्धि होती है। आपका परिश्रम श्लाघ्य है।

नाम—(३९८५) ठाकुरदास जैन बी० ए०, तालबेहट (झाँसी)।

जन्म-काल—सं० १९५४।

कविता-काल—सं० १९७५।

विवरण—अध्यापक सवाई महेंद्र-हाईस्कूल, टीकमगढ़।

उदाहरण—

अभिलाप।

प्रभो, आवेगा कब वह काल ?

जब कि राजनीतिक सामाजिक संस्थाओं के कार्य ;
सर्वहितंकर विश्वबंधुता से होंगे निर्धार्य।
मित्रता होगी एक विशाल ;
प्रभो, आवेगा कब वह काल ? ॥१॥

जब आभ्यंतर शत्रु विजय से द्योतित होगी शक्ति ;
सदाचारमय सत्प्रवृत्ति जब व्यक्त करेगी भक्ति।
निष्कपट होगी सबकी चाल ;
प्रभो, आवेगा कब वह काल ? ॥२॥

नाम—(३९८५ अ) तोरनदेवी शुक्ल (लली), लखनऊ।

जन्म-काल—सं० १९५२।

रचना-काल—सं० १९७५।

ग्रंथ—साहित्य-चंद्रिका।

विवरण—आप लगभग पंद्रह वर्ष से साहित्य-सेवा कर रही हैं। स्त्री-कवियों में आपका स्थान ऊँचा है।

नाम—(३९८६) दयाचंद्र गोयलीय।

ग्रंथ—(१) मितव्ययता, (२) युवाओं को उपदेश, (३) शांति-वैभव, (४) अच्छी आदत डालने की शिक्षा, (५) चरित्र-गठन और मनोबल, (६) पिता के उपदेश, (७) आब्राहाम-लिंकन।

विवरण—आप अग्रवाल जैन तथा लखनऊ-कालीचरण-हाईस्कूल के हेडमास्टर थे। जाति-प्रबोध-नामक मासिक पत्र भी आपने निकाला था। आपका देहांत हो गया है।

नाम—(३९८७) देवीप्रसाद गुप्त कुसुमाकर बी० ए०, एल्० एल्० बी० ।

जन्म-काल—सं० १९५० ।

रचना-काल—सं० १९७५ ।

ग्रंथ—(१) इतिहास-दर्पण, (२) अमेरिकन संयुक्त राज्य की शासन-प्रणाली, (३) स्वराज्य, कबीर और होली, (४) उपाधि की व्याधि, (५) कला में गुलज़ार, (६) दुर्गावती नाटक, (७) कुसुमाकर-विनोद, (८) बना हुआ गवाह, (९) भारत की स्वतंत्रता, (१०) हमें स्वराज्य क्यों चाहिए, (११) केसर-शतक, (१२) दो सती बालाएँ ।

विवरण—सोहागपुर-निवासी तथा जाति के वैश्य हैं । होशंगाबाद में आप वकालत करते हैं । देश-प्रेम-पूर्ण तथा उपयोगी ग्रंथ रचे हैं । फड़का देनेवाली रचना की है ।

उदाहरण—

किस दुखिया का हृदय फटा, यह कड़का बादल कैसा ?
बिजली बनकर तड़प रहा है, कोई घायल कैसा !
किसके आँसू बहे आज, ये पानी बरस रहा है ।
नभ में चारो ओर दुःख-ही-दुख अब दरस रहा है ?
इंद्र-धनुष को उठा लिया है किसने आज कुपित हो ?
तारों ने आँखें मीची हैं, जिससे हृदय व्यथित हो ।
घमासान घन उमड़ रहे हैं, सेना यह बढ़ती है ;
किस दुखिया घायल पर फिर-फिर धावा कर चढ़ती है ।
नभ में छाई है यह लाली किसका रुधिर बहा है ;
बीरबहूटी बन करके जो भू पर टपक रहा है ।

नाम—(३९८८) धन्यकुमार जैन, उपनाम 'सिंह' ।

ग्रंथ—वसंतकुमारी ।

विवरण—विश्व-कोष के सहायक संपादक।

नाम—(२९८९) प्यारेलाल गुप्त, बिलासपुर।

जन्म-काल—सं० १९५०।

ग्रंथ—(१) सरस्वती, (२) सुखी कुटुंब, (३) फ्रांस की राज्य-क्रांति, (४) ग्रीस का इतिहास, (५) लवंग-लता, (६) बुद्ध-चरित्र, (७) पुष्पहार, (८) बिलासपुर-वैभव।

विवरण—यह रतनपुर छत्तीसगढ़-निवासी बाबू कुशलप्रसाद के पुत्र हैं। आपके ग्रंथ अच्छे विषयों पर हैं, और वे ज्ञान-वर्द्धक भी हैं। आपका श्रम श्लाघ्य है।

नाम—(२९९०) बेचन शर्मा 'उग्र'।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५६।

रचना-काल—लगभग सं० १९७५।

ग्रंथ—(१) चिनगारियाँ, (२) दिल्ली का दलाल, (३) उसकी मा, (४) कई अन्य उपन्यास तथा कहानी-संग्रह, (५) महात्मा ईसा-नाटक।

विवरण—उग्रजी अपने नाम को रचनाओं द्वारा सार्थक करते हैं। आपकी भाषा बहुत सबल है। आप वास्तविकता पर विशेष ध्यान रखते हैं, सो इनकी रचना में अश्लीलता भी आ जाती है। महात्मा ईसा बहुत अच्छा नाटक है। आपकी भाषा परमोच्च है। यदि अश्लीलता को बचा पाते, तो आप हमारे परमोत्कृष्ट लेखकों में से होते। रास्ता भूले हुए समाज की आपके द्वारा अच्छी ज्ञान-वृद्धि होती है। हिंदूपन का आप बहुत ध्यान रखते हैं। स्त्रियों, बच्चों आदि को अपनी कहानियों द्वारा सचेत करते हैं। सच्चे लेखक हैं।

नाम—(२९९१) महावीरप्रसाद चौधरी 'विभूति', असरगंज (बिहार-प्रांत)।

जन्म-काल—सं० १९६० (विजयादशमी)।

मृत्यु-काल—सं० १९७७।

ग्रंथ—(१) प्रह्लाद (खंड काव्य), (२) गंधर्व, (३) बिहार का इतिहास (अपूर्ण), (४) प्रेमांजलि, (५) स्मृति, (६) ब्रह्मचर्य।

विवरण—यह बाबू ठाकुरप्रसादजी चौधरी के सुपुत्र थे। इन्होंने अल्प जीवन-काल में अपनी प्रखर बुद्धि एवं प्रतिभा द्वारा हिंदी-भाषा का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। मैट्रिक-परीक्षा में हिंदी-विषय में सर्व-श्रेष्ठ उत्तीर्ण होने के कारण इनको पटना-विश्वविद्यालय से स्वर्णपदक प्राप्त हुआ, किंतु इस फल के प्रकाशित होने के दो सप्ताह पूर्व ही इनकी अकस्मात् मृत्यु हो चुकी थी। बड़े देश-प्रेमी, उदार-हृदय पुरुष-रत्न थे।

उदाहरण—

जाता हूँ मैं स्वर्ग को देकर यह संदेश—
गाकर मेरे गीत को करना सुखी स्वदेश।

स्वदेश

हे हे प्रियतम स्वदेश!
लोक-विदित वंद्य देश!
वीर देश, आदि सभ्य, विश्व-ज्ञानदाता!
महिमा तव अति अपार;
पावें कविगण न पार।
सृष्टि द्वार सुखसा-घर आरत-जन त्राता!
स्वामि! पा 'विभूति'-दास
रहते तुम क्यों उदास?
व्यर्थ त्रास, निर्भय हो स्वर्ग-लोक आता!

जीवनोद्देश

यह दुर्लभ नर-देह व्यर्थ में हमैं न खोना;
मर्त्यलोक में बीज अमरता का है बोना।
सुख में हँसना नहीं, न है दुख में कुछ रोना;
रहै हमारे साथ सदा वह श्याम सलोना।
अपने हित करना नहीं हमको कुछ अब शेष है;
करना सुखी स्वदेश को जीवन का उद्देश है।
जैसे हो प्रण प्राण-संग निर्वाह करेंगे;
कभी विघ्न-भय की न तनिक परवाह करेंगे।
नर को पूछे कौन, काल से भी न डरेंगे;
जनमें जिसके लिये, उसी के लिये मरेंगे।
भूले-भटकों के लिये यह 'विभूति'-संदेश है;
करना सुखी स्वदेश को जीवन का उद्देश है।
जैसे हो भरना हमें निज भाषा-भंडार;
एकमात्र बस है यही देशोन्नति का द्वार।

नाम—(२९९२) मोहनलाल मेहतो गयावाल।

ग्रंथ—(१) निर्माल्य, (२) एकतारा, (३) रेखता।

विवरण—आप पंडित श्यामलाल मेहतो गयावाल के पुत्र हिंदी, उर्दू, बँगला, मराठी, अँगरेज़ी और संस्कृत से परिचित हैं। व्यंग्य-चित्रकार भी हैं। खड़ी बोली तथा व्रज-भाषा दोनो में कविता करते हैं। छायावाद पर कई पुस्तकें बना चुके हैं। अच्छे और उत्साही कवि हैं। छायावादी कवियों में आपका उच्च आसन है।

उदाहरण—

चंद तथा प्रतिमा हल चंद की दै अपनी खर ज्योति उज्यारी;
भावुक भाव के हाथन सों सब भाँति सँभारि-सँभारि सँवारी।

देख रहे अनिमेख अनेक सुमाखन के परसिद्ध पुजारी ;
भारत-भानु के भाल की भव्य है बिंदी प्रभामयी हिंदी हमारी ।
जो अव्यक्त सिंधु कल्लोलित है बसुधा में आठो याम ;
मैं हूँ वही भिन्न होने पर मेरा हुआ दूसरा नाम ।
है विभिन्नता नाम-मात्र की मुझमें उसमें भेद नहीं ;
जल-गत रवि की छाया का क्या और नाम है सुना कहीं ।

नाम—(३९९३) मंगलदेव शास्त्री एम्० ए०, डी० फ़िल ।

रचना-काल—सं० १९७५ ।

रचना—हिंदी-शब्द-शास्त्र पर ग्रंथ ।

विवरण—आप एक उच्च कोटि के लेखक हैं । विषय भी बहुत गंभीर चुना है ।

नाम—(३९९४) रामनारायण शर्मा, राज्य छतरपुर, बुंदेलखंड ।

जन्म-काल—सं० १९६३ ।

रचना-काल—सं० १९७५ ।

ग्रंथ—(१) व्यंग्य-बवंडर, (२) बुढ़िया-पुराण, (३) संगीत-सुधाकर, (४) गंगाधर-ग्रंथावली (अप्रकाशित), (५) स्फुट लेख तथा कविताएँ ।

विवरण—यह कान्यकुब्ज द्विवेदी-कुलोत्पन्न लेखक हैं । इनका निवास-स्थान कानपुर प्रांतांतर्गत हथेरुवा ग्राम है । कुछ दिन आप श्रीमान् महाराजा साहब छतरपुर के हिंदी-पुस्तकालय में काम कर चुके हैं । इनकी कविता नूतनता से मंडित परम ओजस्विनी है ।

उदाहरण—

प्रकृति

ब्रह्म माया से हूँ मैं परे, प्रकृति, परमेश्वरि जगज्जननि ;
नटी कहते हैं मुझको व्यर्थं, नचा सकती सुसृष्टि को स्वयं ॥ १ ॥

पाद-कंदुक मेरा मार्तंड, बनाकर कर-कंदुक मैं चंद ;
तारकावलि गोली इव मान, खेलती फिरती अंबर-मध्य ॥ २ ॥
धरास्थित थावर-जंगम सर्व, कभी करती हूँ उथल-पथल ;
डगमगा जगती को जब कभी, मुस्किरा करती उल्कापात ॥ ३ ॥
गर्भ से सरिताओं को ठेल, खलबला कर मैं सारा नीर ;
विशद वारिधि के अंतस्तल, विषम बड़वानल देती फूँक ॥ ४ ॥
धनंजय की धवलित धंधरि, धरा में धक, धक, धक धधका;
धूम्रमय धू धू धू प्रतिध्वनि, सुना करती हूँ अंधाधुंध ॥ ५ ॥
अवनि अंबुधि को करके नष्ट, शून्यमय दिग्दिगंत को कर ;
मौज आई, तो रचती हूँ, ओढ़ने को अंबर अंबर ॥ ६ ॥
प्रभंजन का मैं प्रबल प्रवाह, प्रथम कर देती हूँ प्रारंभ ;
सृष्टि ले अंतरिक्ष की गोद, अवनि अंबर कर देती एक ॥ ७ ॥
हृदय में गिरि राजों के सदा, जलाती हूँ भीषण ज्वाला ;
हिमालय को भी मैं नित घुला, बहाती अगनित सरिताएँ ॥ ८ ॥
सार-गर्भित बादल के दल, परस्पर टकरा देती जब ;
प्रतिध्वनित होता है अंबर, अंबुमय करती सारी औनि ॥ ९ ॥
विश्व-वीणा के टूटे तार, जोड़ गाती हूँ षट्-ऋतु राग ;
मौन नीरव प्रलयंकर गान, श्रवण कर थर्राता ब्रह्मांड ॥ १० ॥
विश्व के कोने-कोने में, जमा है मेरा ही आतंक ;
सृष्टि का उत्पादन-पालन, किया करती मैं ही संघार ॥ ११ ॥
निरंतर परिवर्तन में लीन, न लेती कहीं कभी विश्राम ;
घोर रुचिकर प्रियकर सर्वदा, किया करती उत्थान-पतन ॥ १२ ॥

नाम—(३९९९) रामरखसिंह सहगल, प्रयाग-निवासी ।
जन्म-काल—लगभग सं० १९५० ।
रचना-काल—सं० १९७९ ।
ग्रंथ—संपादक चाँद मासिक पत्रिका ।

विवरण—उत्साही, देश-प्रेमी तथा उद्योगी। देश-प्रेम के कारण जेल जा चुके हैं।

नाम—(२९९६) राहुल सांकृतायन।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५२।

रचना-काल सं० १९७५।

विवरण—आप संस्कृत तथा पाली भाषाओं के विद्वान् एक बौद्ध-भिक्षु हैं, जो प्राचीन लेखकों एवं विषयों पर उत्तम लेख लिखा करते हैं। आपका कोई ग्रंथ हमारे देखने में नहीं आया, पर लेखन-शैली गंभीर एवं गवेषणा-पूर्ण है। आपने तिब्बत, नेपाल, सीलोन इत्यादि देशों का भ्रमण करके बौद्ध-धर्म एवं प्राचीन विषयों की अच्छी जाँच की है। हिंदी के अत्यंत प्राचीन कवियों के विषय में जो उच्च कोटि का लेख आपने 'गंगा' मासिक पत्रिका के विशेषांक में, अभी थोड़े ही मास हुए, प्रकाशित कराया है, उसकी जितनी प्रशंसा की जाय, थोड़ी है। उसको पचास-साठ नैपाली, भूटानी तथा अन्य बौद्ध-ग्रंथों के आधार पर आपने लिखा है।

नाम—(२९९७) विष्णुदत्त शुक्ल।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५०।

रचना-काल—सं० १९७५।

ग्रंथ—पत्रकार-कला। प्रताप के सहायक संपादक।

विवरण—पत्रकार-कला एक उत्कृष्ट ग्रंथ है। हम इसे पुरस्कार के योग्य समझते हैं।

नाम—(२९९८) शिवपूजनसहाय, उनवास, इटाढ़ी, शाहाबाद (बिहार)।

जन्म-काल—सं० १९५०।

रचना-काल—अनुमानतः सं० १९७५।

ग्रंथ—(१) देहाती दुनिया, (२) महिला-महत्त्व, (३) बिहार का विहार आदि ।

विवरण—आप कायस्थ-कुलोत्पन्न बाबू वागेश्वरीदयाल के पुत्र हैं। 'जागरण', 'मतवाला' आदि के संपादक भी रह चुके हैं। आप अच्छे हास्य-पूर्ण लेख लिखते हैं। उच्च श्रेणी के गद्यकार तथा ज़िंदादिल भद्र पुरुष हैं।

नाम—(३९९९) श्रीनाथसिंह, प्रयाग।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५९ ।

रचना-काल—सं० १९७९ ।

विवरण—इनकी 'यौवन-सौंदर्य और प्रेम'-नामक पुस्तक हाल ही में प्रकाशित हुई है। हिंदी के अच्छे लेखक, कवि और 'बाल-सखा' के संपादक हैं। सरस्वती का संपादन भी करते हैं। 'बाल-साहित्य'-विषयक कई पुस्तकें लिख चुके हैं।

नाम—(४०००) श्रीप्रकाश बैरिस्टर, काशी-निवासी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५२ ।

रचना-काल— सं० १९७९ ।

रचना—स्फुट लेखक तथा पत्रकार हैं।

विवरण—संपादक दैनिक पत्र 'आज' । बाबू भगवानदास के पुत्र, प्रसिद्ध देश-भक्त और हिंदी-प्रेमी हैं। विचारों के कारण जेल जा चुके हैं। काशी के रईस हैं।

नाम—(४००० अ) सच्चिदानंद उपाध्याय (सनाढ्य) 'आशुतोष', टीकमगढ़ ।

जन्म-काल—सं० १९५४ ।

कविता-काल—सं० १९७९ ।

विवरण—डाक-विभाग में क्लार्क हैं।

उदाहरण—

को तनु-धारी मरत नहिं, जनमत या संसार ;
'आशुतोष' ते धन्य जो, करत जाति-उपकार ।

(अप्रकाशित मुद्रिका-रहस्य से)

थी चल रही शुचि वायु परिमल मंद-मंद सुचाल-सी ;
अरु चंद्रिका प्रसरित जटित थी श्वेत शुभ्र मराल-सी ।
थी गुंज धुनि अलि पुंज की जब कुंज-कुंज गुँजा रही ;
कुसुमित कदंबारूढ़ हो कादंबरी थी गा रही ।

नाम—(४००१) सियारामशरण गुप्त, चिरगाँव, झाँसी ।

जन्म-काल—सं० १९५२ ।

रचना-काल—सं० १९७५ ।

ग्रंथ—कुछ बनाए हैं । कुछ अनुवाद भी हैं । आर्द्रा-नामक ग्रंथ भी है ।

विवरण—प्रसिद्ध कवि मैथिलीशरण गुप्त के आप कनिष्ठ भ्राता हैं । कविता आप भी अच्छी करते हैं । सामाजिक विषयों पर सुरुचि-पूर्ण कविताएँ लिखते हैं ।

नाम—(४००२) सुमित्रानंदन पंत ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५९ ।

रचना-काल—सं० १९७५ ।

ग्रंथ—(१) वीणा, (२) पल्लव, (३) गुंजन-नामक एक नाटक-ग्रंथ भी लिख रहे हैं ।

विवरण—आप खड़ी बोली में बहुत चमत्कार-पूर्ण रचना करते हैं । छायावादी भी हैं । इनके उपर्युक्त तीनो ग्रंथ हमारे देखे हुए हैं । पल्लव बहुत पसंद है । इनकी रचना हिंदी के प्रसिद्ध प्राचीन कवियों के भी साहित्य का सामना कर सकती है । भावों का अनूठापन तथा उनकी सबलता इनके मुख्य गुण हैं । हम पंतजी को वर्तमान कवियों में बहुत ही आदरणीय दृष्टि से देखते हैं । प्रकृति का सौंदर्य आपने अच्छा देखा है । कोमलता इनका श्लाघ्य गुण है ।

उदाहरण—

डोलने लगी मधुर मधु वात, हिला तृण, व्रतति, कुंज, तरु, पात ;
डोलने लगी प्रिये, मृदु वात, गुंज मधु गंध धूलि हिम गात ।
खोलने लगीं शयित चिरकाल, नवल कलि अलस पलक दल जाल ;
घोलने लगीं डाल से डाल, प्रमुद पुलकाकुल कोकिल बाल ।

नाम—(४००३) हरप्रसाद (वियोगी हरि) ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५० ।

कविता-काल—सं० १९७५ ।

ग्रंथ—(१) वीर-सतसई, (२) अंतर्नाद आदि कई अन्य ग्रंथ ।

विवरण—आप रियासत छतरपुर के रहनेवाले हैं, किंतु बहुत दिनों से प्रयाग में रहते हैं । गद्य और पद्य दोनो में अच्छी रचना करते हैं, किंतु विचार कुछ-कुछ प्राचीन हैं । निर्धन होकर भी आप बहुत उदार पुरुष हैं । वीर-सतसई में नए भाव नहीं हैं, किंतु अंतर्नाद अच्छा ग्रंथ है ।

१९६१-७५ के शेष कविगण

समय—संवत् १९६१

नाम—(४००४) ऋषिलाल साहु कलवार, महोली, ज़िला सीतापुर ।

जन्म-काल—सं० १९२६ ।

ग्रंथ—(१) शृंगार-दर्पण, (२) पिंगलादर्श, (३) विज्ञान-प्रभाकर, (४) अलंकार-भूषण, (५) निदान-मंजरी ।

नाम—(४००५) कृष्णचंद्र ।

जन्म-काल—सं० १९२६ ।

मृत्यु-काल—सं० १९७६ ।

ग्रंथ—(१) पद्यानुवाद वाल्मीकीय रामायण (सुंदरकांड), (२) गद्य-पद्यमय अनुवाद—भवभूति-कृत उत्तर रामचरित, (३) मालती-माधव का अनुवाद (कुछ अंश), (४) महावीर-चरित का अनुवाद ।

विवरण—आप भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्रजी के कनिष्ठ भ्राता गोकुलचंदजी के ज्येष्ठ पुत्र थे। इन्होंने अपने व्यय से ही भारतेंदु, नाटक-मंडली स्थापित की, जो अपना कार्य अभी तक भली भाँति कर रही है। आपका वाल्मीकीय पद्यानुवाद विशेषतया रोला छंदों में है। इनका साहित्य व्रज-भाषा में है, किंतु उसमें संस्कृत-शब्दों का अत्यधिक प्रयोग है।

नाम—(४००६) गोवर्धनलाल (लाला) बसौदा, ग्वालियर।

जन्म-काल—सं० १९३६।

ग्रंथ—(१) पूर्ति-प्रमोद, (२) साहित्य-भास्कर, (३) नगदवन (नागदमन)।

नाम—(४००६ अ) गोविंददास व्यास (सनाढ्य ब्राह्मण) लाल बेहट (झाँसी)।

जन्म-काल—सं० १९९७।

कविता-काल—सं० १९७६।

ग्रंथ—(१) शिव-शिवा-स्तवन, (२) सीता-निर्वास, (३) कृष्ण-चरित्र, (४) जीवन के चार दिन, (५) पुत्र की गर्दन, (६) लोहू का घूँट, (७) परीक्षित-शाप, (८) श्रीकृष्ण-जन्म, (९) वृंदावन-वास, (१०) गोवर्धन-लीला, (११) रास-क्रीड़ा मथुरागमन, (१२) उग्रसेन का राजतिलक, (१३) द्वारिका-वास, (१४) मणि-चरित्र, (१५) ऊषा-अनिरुद्ध, (१६) योगिराज।

उदाहरण—

हिमागार शिखरस्थ बट शीत सायी,
परम रम्य जन-शून्य कैलास भायी;
सुखासीन बामांग शैलात्मजा हैं,
सुमाथे प्रवाहित सुदेवापगा हैं।

नमो भूतनाथं नमो रौद्ररूपं,
नमो सौख्य-सिंधु नमो देवभूपं,
नमो कर्कपालं नमो कामकालं,
नमो विश्वनाथं नमो शत्रुशालं।

नाम—(४००७) चंद्रशेखर मिश्र, चंपारन।

ग्रंथ—(१) संपादक विद्याधर्म-दीपिका, (२) रत्नमाला, चंपारन।

विवरण—सुलेखक हैं।

नाम—(४००८) चंपालाल जौहरी (सुधाकर), रामगंज, खंडवा।

रचना-काल—सं० १९६१।

ग्रंथ—(१) माधवी-कंकण, (२) वियोगिनी, (३) शिक्षकों का कर्तव्य आदि ८ पुस्तकें आपने बनाई हैं।

नाम—(४००९) जयपाल ब्रह्मभट्ट।

जन्म-काल—सं० १९२२।

रचना-काल—सं० १९६१।

ग्रंथ—रसिक-प्रमोद (१९६१)।

विवरण—आप सूजा-ग्राम, ज़िला मुंगेर-निवासी शंभु महाराज के पुत्र हैं। कवि-वंशी हैं तथा समय-समय पर स्फुट कविताएँ रचा करते हैं।

उदाहरण—

मति प्रीति के छंदन माहिं परो पग मारग दुःख बढ़ावनो है;
पथ माहिं बिछाय कै पावक को चढ़ि मोम-तुरंग पै धावनो है।
मनसूर के ऐसे जो सूलि चढ़े नहिं ताहु पै नेक डरावनो है;
जयपाल जु ताते बिचारि कहैं कछु नीको न नेह लगावनो है।

नाम—(४०१०) नारायणजी पुरुषोत्तम (क्रांत)।

जन्म-काल—सं० १९३१।

कविता-काल—लगभग सं० १९६१।

ग्रंथ—गुजराती भाषा-काव्य के नौ-दस ग्रंथ। हिंदी में (१) लखधीर यशोद्यान, (२) काव्य-कलाप (तीन खंड)।

विवरण—मोरवी-राज्य के राजपुरोहित तथा गुजराती एवं हिंदी के कवि। जवास-राज्य से सम्मान-सहित दो ग्राम पाए हैं। 'सुकवि' के नवंबर १९३१ के अंक में इनकी जीवनी छपी है।

नाम—(४०११) बजरंगसिंह, हथिया, सीतापुर।

जन्म-काल—सं० १९३५।

ग्रंथ—(१) रुद्र-पच्चीसी, (२) षट्ऋतु, (३) वैद्यनाथ-छत्तीसी, (४) स्फुट कविता, (५) काशी-कोतवाल-पचीसी।

विवरण—आपका देहांत हो गया है।

नाम—(४०१२) मधुसूदन गोस्वामी, वृंदावन।

ग्रंथ—अमियनिमाई-चरित्र। चैतन्य महाप्रभु का जीवन-चरित्र वार्तिक २७२ सफ़ा रॉयल १२ पेजी में लिखा गया है। एक ऐसा ही ग्रंथ पहले बाबू शिशिरकुमार घोष ने बँगला में बनाया था, जिसका यह अनुवाद है। कहीं-कहीं एक-आध छंद भी है। यह पुस्तक हमें दरबार छतरपुर में देखने को मिली। उपासना-तत्त्व, प्रतिमा-तत्त्व, गायत्री-परिणय, विक्टोरिया-चरित, आर्यसमाजीय रहस्य आदि भी इनके ग्रंथ हैं।

नाम—(४०१३) महादेवप्रसाद (मदनेश) पटना, मो० झाऊगंज।

ग्रंथ—(१) गंगा-लहरी, (२) नख-शिख रामचंद्रजी, (३) मदनेश-मौजलतिका, (४) मदनेश-कल्पद्रुम, (५) संकटमोचन आरसी, (६) मदनेश-कोष, (७) तन तीन्न ताला की तरहदार कुंजी, (८) भैरवाष्टक।

नाम—(४०१४) रामावतार द्विवेदी, फ़तेहपुर, ज़िला बाराबंकी।

जन्म-काल—सं० १९३६।

रचना-काल—सं० १९६१।

नाम—(४०१५) शुकदेवनारायण कायस्थ, रामधारीसहाय के पुत्र डीही, ज़िला सारन।

जन्म-काल—सं० १९३६।

ग्रंथ—नारद-मोह-वाटिका।

समय—संवत् १९६२

नाम—(४०१६) अमीरराय, भभुआ, साहाबाद।

जन्म-काल—सं० १९३७।

ग्रंथ—(१) रामायण बालकांड छप्पय में, (२) गुलिस्ताँ का आठवाँ बाब कवित्तों में।

नाम—(४०१७) अंबिकाप्रसाद वाजपेयी, कानपुर, संपादक भारतमित्र।

जन्म-काल—सं० १९३७।

ग्रंथ—शिक्षा-अनुवाद।

विवरण—नृसिंह, हिंदीवंगवासी एवं हितवार्ता का संपादन किया। आपके विचार प्राचीन प्रथा के हैं।

नाम—(४०१८) कीर्तिनारायणसिंह, ग्राम चंदनपट्टी, ज़िला मुज़फ़्फ़रपुर (बिहार-प्रांत)।

कविता-काल—सं० १९६२।

ग्रंथ—(१) कीर्ति-स्तोत्र-मंजरी, (२) कीर्ति-राग-मंजरी (दो भाग), (३) श्रीजार्ज-बत्तीसी, (४) सतनाम।

विवरण—आप श्रीवास्तव कायस्थ बाबू शुभकरणलालजी के पुत्र हैं। स्थानीय लोकल बोर्ड तथा एग्रीकल्चरल एसोसिएशन के यह

सभासद् रह चुके हैं। (बाबू गिरींद्रनारायणसिंह, चंदनपट्टी, मुज़फ़्फ़रपुर द्वारा ज्ञात)।

उदाहरण—

कान वही जो सुनै हरिगान, औ ज्ञानी वही जो भजै यदुराई;
प्रीति वही जो सदा निबहै, अरु संत वही जो तजै ममताई।
द्रव्य वही जो उठै परमारथ, नेत्र वही जो तकै न दुराई;
'कीर्तिनरायन' हाथ वही, जो करै सद ही अनदान उठाई।

नाम—(४०१९) गौरीशंकरप्रसाद बी० ए०, एल्-एल्० बी०, वैश्य, वकील, बुलानाला, बनारस।

जन्म-काल—अनुमान से सं० १९४०।

ग्रंथ—स्फुट लेख, योरप-यात्रा (तीन लेखक मिलकर)।

विवरण—आप कई वर्षों तक नागरी-प्रचारणी सभा के मंत्री रहे हैं। हिंदी के आप बड़े शुभचिंतक और उत्साही पुरुष हैं। बनारस में वकालत करते हैं। आप हमारे प्राचीन मित्र हैं।

नाम—(४०२०) चतुरसिंह रूपाहेली, मेवाड़, राजपूताना।

ग्रंथ—(१) चतुर-कुल-चरित्र, (२) खगोल-विज्ञान, (३) सोरठा-संग्रह।

विवरण—आप एक प्रतिष्ठित लेखक हैं।

नाम—(४०२१) छेदा साह, सैयद पौहार, ज़िला कानपुर।

जन्म-काल—सं० १९३७।

ग्रंथ—(१) काव्य-शिक्षा, (२) भगवद्गीता की टीका, (३) हरगंगा-रामायण, (४) ज्ञानोपदेश-शतक, (५) भक्ति-पंचाशिका, (६) करुणा-बत्तीसी, (७) नारी-गारी, (८) गंगा-पंचाशिका, (९) मार्कंडेय-वंशावली, (१०) कृष्ण-प्रेम-पचीसी, (११) कान्यकुब्ज-पुष्पांजलि, (१२) काव्य-संग्रह, (१३) सत्य-नारायण, (१४) जान पांडे उपन्यास, (१५) हितोपदेश।

विवरण—मुसलमान होकर आपने हिंदुओं के-से भी ग्रंथ रचे हैं।

नाम—(४०२२) द्विजेश पांडेय (दंडपाणि), पंडित पुरवा, लखनऊ।

जन्म-काल—सं० १९३७।

रचना-काल—सं० १९६२।

नाम—(४०२३) व्रजेश महापात्र, असनी, फ़तेहपुर।

विवरण—साधारण श्रेणी।

नाम—(४०२४) भगवानवरसंसिंह, राज्य कटारी, पोस्ट गौरा।

जन्म-काल—सं० १९३७।

ग्रंथ—(१) बुद्धि-प्रकाश, (२) शतरुद्री भाषा-टीका, (३) लिंगार्चनसार भाषा-टीका, (४) सीता-विजय, (५) भजनावली, (६) विनय-प्रकाश, (७) सीता-राम रहस्य आदि १४ ग्रंथ रचे हैं।

नाम—(४०२५) मन्नीलाल गोस्वामी, उपनाम प्रेमबंधु।

जन्म-काल—सं १९३७।

ग्रंथ—(१) श्री श्रीहिताष्टक (१९७०), (२) श्रीहित बारहखड़ी (१९७३), (३) सेवा-शतक (१९७३), (४) हित नवपदी, (५) गुरु-गीता, (६) स्फुट पद।

विवरण—आप राधावल्लभीय गौड़ ब्राह्मण श्रीनंदकुमारलाल गोस्वामी के पुत्र हैं। आप वृंदावन-वासी हैं और बँगलावाले महाराज के नाम से प्रसिद्ध हैं।

नाम—(४०२६) माधौसिंहजी कविराज, बूँदी।

विवरण—यह कविराव रामनाथ के पुत्र हैं। कविता अच्छी करते हैं।

नाम—(४०२७) रामचरण भट्ट ब्राह्मण, पिहानी, जिला हरदोई।

जन्म-काल—सं० १९३७।

ग्रंथ—(१) सुरभी-शतक, (२) गो-विलाप, (३) अर्थ-मिलाप, (४) प्रेमामृत-तरंगिणी, (५) प्रेमामृतवर्षिणी, (६) मतामत-विचार ।

नाम—(४०२८) रामजीदास वैश्य, ग्वालियर ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९३७ ।

रचना-काल—सं० १९६२ ।

ग्रंथ—सुघर चमेली ।

विवरण—पाठ्य पुस्तकों का संकलन किया है ।

नाम—(४०२९) शिवदयाल (केवल) कायस्थ, मंगलपुर, ज़िला कानपुर ।

जन्म-काल—सं० १९३७ ।

ग्रंथ—(१) काव्य-संग्रह, (२) राग-विनोद, (३) नीति-शतक, (४) चौसासा-चतुरंग ।

नाम—(४०३०) शिवमंगलसिंहजी, राजाबहादुर, मैनपुरी ।

जन्म-काल—सं० १९३० ।

कविता-काल—सं० १९६२ ।

ग्रंथ—बिहारी-सतसई की छंदोबद्ध टीका ।

विवरण—आप चौहानवंशीय क्षत्रिय राजा रामप्रतापसिंहजी मैनपुरी-नरेश के पुत्र हैं । आपका उक्त ग्रंथ स्थानीय नारायण-प्रेस से प्रकाशित हो चुका है ।

नाम—(४०३१) श्यामसुंदरलाल कायस्थ, एम्० ए०, एल्० एल्० बी०, मैनपुरी ।

ग्रंथ—(१) स्थावर-जीव-मीमांसा, (२) मानव-वर्ण-व्यवस्था ।

नाम—(४०३२) हरिदास जैन ।

रचना-काल—सं० १९६२ ।

विवरण—वृंदावन जैन कवि के पौत्र ।

समय—संवत् १९६३

नाम—(४०३३) ओंकारनाथ वाजपेयी, प्रयाग।

जन्म-काल—सं० १९३८।

रचना-काल—सं० १९६३।

ग्रंथ—(१) लक्ष्मी-उपन्यास, (२) दो कन्याओं की बात-चीत, (३) शांता। और भी कई जीवन-चरित्र तथा उपन्यास आपने लिखे थे।

विवरण—अच्छे गद्य-लेखक थे। आपने ओंकार-प्रेस खोलकर अच्छी-अच्छी पुस्तकें प्रकाशित की थीं। शोक है, आपका देहांत हो गया है। प्रेस का काम आपके लड़के चला रहे हैं।

नाम—(४०३४) गणेशप्रसाद कायस्थ, टीकमगढ़।

रचना-काल—सं० १९६३।

ग्रंथ—मणि-द्वीप-मंजरी।

नाम—(४०३५) गयाप्रसाद (माणिक), गया।

जन्म-काल—सं० १९३८। वर्तमान हैं।

नाम—(४०३६) गोवर्धननाथ (लल्लूजी), वल्द पं० गोपीनाथ।

जन्म-काल—सं० १९३८।

नाम—(४०३७) दयाशंकर, मथुरा।

ग्रंथ—शिशु-बोध।

नाम—(४०३८) देवनारायण उपाध्याय, गहमर, ग़ाज़ीपुर।

कविता-काल—सं० १९६३।

ग्रंथ—(१) पद्य-पद्धति (पिंगल), (२) लोकोक्ति-शिक्षक, (३) भारत की प्रतिष्ठा आदि।

विवरण—आप पं० रामपतनजी उपाध्याय के पुत्र तथा स्कूल के अध्यापक हैं। इनकी स्फुट कविताएँ 'आर्य-महिला', 'धर्म-प्रकाश'

आदि पत्र-पत्रिकाओं में निकल चुकी हैं। [श्रीयुत प्रसिद्धनारायण वर्मा गहमरीजी से ज्ञात]।

उदाहरण—

उडुगन हो तुम चमक रहे इतरा-इतराकर;
श्वेत अंग निज देख गर्व करते इठलाकर।
गगन-श्यामता पेखि सदा हँसते रहते हो;
बसे उसी के मध्य कृतघ्नी क्यों बनते हो।
रखना इसका ध्यान तुरत फल मिल जावेगा;
हो जाओगे म्लान कलेजा हिल जावेगा।
इसी कालिमा गगन-मध्य तें रवि प्रगटेगा;
होगे ओझल शीघ्र, तुम्हारा दर्प मिटेगा।

नाम—(४०३९) बदलूप्रसाद त्रिपाठी, करविगवाँ, कानपुर।

ग्रंथ—(१) गूढ़ार्थ-संग्रह, (२) मायांकुर-संग्रहावली, (३) बारहमासा (सागर), (४) बारहमासी विरह-मंजरी, (५) बारहमासा विरहभार।

नाम—(४०४०) बाँकेलाल चौबे, मंगलपुर, ज़िला कानपुर।

जन्म-काल—सं० १९३८।

ग्रंथ—(१) स्फुट छंद, (२) सतसई (अपूर्ण), (३) वाणी-विनोद, (४) स्वप्न-सुंदरी, (५) बारहमासा, (६) माखन-लीला, (७) द्रौपदी-नाटक, (८) चौबे-चौमासा, (९) राम-शतक, (१०) तिलकोत्सव, (११) विद्यावाला, (१२) वैद्य बाँके।

नाम—(४०४१) बुद्धिसागर मिश्र।

जन्म-काल—सं० १९४३।

रचना-काल—सं० १९६२।

ग्रंथ—(१) विनयबावनी, (२) चारुचंद्रिका, (३) ईश-विनय, (४) अरुणदुर्ग, (५) इज़्ज़त बेग।

विवरण—आप अढ़नी, ज़िला बस्ती-निवासी सरवरिया ब्राह्मण पं० रामग़रीब मिश्र के पुत्र हैं। व्रजभाषा में साधारणतया अच्छी रचना करते हैं।

नाम—(४०४२) भागीरथ स्वामी वैद्य, फ़रुख़ाबाद।

जन्म-काल—सं० १९३८।

ग्रंथ—(१) दुखभंजन-स्तोत्र, (२) गंगा-स्तोत्र, (३) नंदिनी-नंदन नाटक आदि सात-आठ पुस्तकें तथा सामयिक पत्रों में लेख।

नाम—(४०४३) मन्नीलालजी मिश्र।

जन्म-काल—सं० १९३८।

ग्रंथ—(१) आनंद-सुधांबुधि, (२) प्रमोद-सुधा-तरंगिणी, (३) भगवद्भक्ति-भूषण, (४) कान्यकुब्ज-भूषण, (५) कात्यायनी-स्तवन, (६) कान्यकुब्ज-हितोपदेश, (७) अपूर्व रामायण, (८) जैसलमीर-चरित्र, (९) गाने की कई पुस्तकें।

विवरण—आप बैजेगाँव-निवासी पं० बालमुकुंद मिश्र के पुत्र हैं। आपको नाद-विद्या से भी प्रेम है।

उदाहरण—

सखिन समेत प्यारी यमुना नहान चली,
धारे नील सारी अंग सुखमा अमंद है;
मारग में मोहन अचानक ही आयो जान,
लाजवश घूँघट से कीन्हों मुख बंद है।
मिश्र मणिलाल प्रभा पीतम विलोकी ऐसी,
कीन्हीं अनुमान मान उपमा स्वछंद है;
राहु को महान भय मानि कै अयान मानो,
सागर पिता की अंक आय छिपो चंद है।

नाम—(४०४४) मयूर मदारीसिंह बाछिल, महसुई, ज़िला सीतापुर।

जन्म-काल—सं० १९३८ ।

विवरण—यह महाशय अधिक कविता नहीं करते थे। इन्होंने कभी-कभी समस्या-पूर्ति की है।

नाम—(४०४५) महादेवशरण पाँड़े, सारन ।

नाम—(४०४६) महेशबख़्शसिंह, पन्हौना, उन्नाव ।

ग्रंथ—महेशमन-रंजन ।

नाम—(४०४७) मुकुंदलाल, टीकमगढ़-वासी ।

ग्रंथ—शिव-माहात्म्यसागर (१९६३), कुंडेश्वर-पचीसी (१९६४) (प्र० त्रै० रि) ।

नाम—(४०४८) मुनिजिन विजयजी ।

ग्रंथ—स्फुट लेख ।

विवरण—श्वेतांबर जैन साधु तथा हिंदी के प्रेमी ।

नाम (४०४९) रतनेश मिश्र ।

ग्रंथ—रसकलस ।

विवरण—कुछ छंद इनके हमने देखे हैं ।

नाम—(४०५०) राजदेवी कुँवरि ठकुरानी, गया ।

ग्रंथ (१) समस्या-पूर्ति, (२) रसिक-मित्र, (३) रसिक-रहस्य ।

नाम—(४०५१) राधाकृष्ण वाजपेयी चौपटियाँ, लखनऊ ।

जन्म-काल—सं० १९३८ ।

विवरण—यह द्विजराज कवि के जामातृ हैं, और आजकल वैद्यक करते हैं। हिंदी-कविता तथा लेख पत्रों में देते रहते हैं। आपको काव्य का अच्छा ज्ञान है।

नाम—(४०५२) रामचरणलाल ब्राह्मण, कौंच, जिला उरई ।

ग्रंथ—(१) सनातन-धर्म-दर्पण, (२) रामायण-पचासा ।

नाम—(४०५३) रामनारायणलाल (बीरन) कायस्थ, छतरपुर।

जन्म-काल—सं० १९३८।

नाम—(४०५४) लालसिंह क्षत्रिय।

जन्म-काल—सं० १९३८।

ग्रंथ—(१) चंद्रावली, (२) कृपि-सिद्धांत, (३) वीरबाला, (४) आश्रम-व्यवस्था, (५) श्रवण-पुराण, (६) सहकारिता।

विवरण—आप हिंगूसरगढ़-ग्राम, ज़िला गाज़ीपुर-वासी लक्ष्मण-सिंह के पुत्र हैं। आपने राजपूत आगरा का एक वर्ष संपादन किया, और अब क्षत्रिय-मित्र काशी का संपादन करते हैं।

नाम—(४०५५) विश्वेश्वरप्रसाद ब्राह्मण, घुँघुचिहाई, राज्य रीवाँ।

जन्म-काल—सं० १९३८।

नाम—(४०५६) वीरेश्वर उपाध्याय, कान्यकुब्ज ब्राह्मण, जारी, इलाक़ा छोटा नागपुर।

जन्म-काल—सं० १९३८।

ग्रंथ—(१) आल्हा-रामायण, (२) अद्भुतावतार-कांड, (३) आनंद-संजीवनी, (४) फाग-चित्तचोर-चालीसा, (५) भक्ति-संजीवनी, (६) भजन-प्रात-चालीसी, (७) मदन-मोहिनी (उपन्यास गद्य)।

नाम—(४०५७) शिवकुमारसिंह ठाकुर, काशी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९३५।

रचना-काल—सं० १९६३।

विवरण—आप बड़े उत्साही लेखक, काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा के जन्म-दाताओं में से हैं। डेपुटी-इंस्पेक्टर-स्कूल्स थे। हिंदी में कई ग्रंथ लिखे हैं।

नाम—(४०५८) शिवबालकराम पांडे (बालक), दिलवल-खानपुर, ज़िला कानपुर ।

जन्म-काल—सं० १९३८ ।

ग्रंथ—(१) धनुपयज्ञ-नाटक, (२) स्वदेशी काव्य-कल्पद्रुम, (३) स्फुट काव्य गद्य तथा पद्य ।

नाम—(४०५९) शुकदेवप्रसाद तिवारी (निर्बल), सोहागपुर, ज़िला हुशंगाबाद ।

जन्म-काल—सं० १९४९ ।

रचना-काल—सं० १९६३ ।

ग्रंथ—(१) सावित्री-चरित्र (नाटक), (२) हिंदी-दशा (नाटक), (३) कमला-प्रताप (उपन्यास), (४) हिंदी-विषयक कविताएँ, (५) होली की राख (कविता), (६) ग्रामीण जीवन (गद्य), (७) निर्बल-क्रंदन (कविता), (८) हिंसा का बीभत्स दृश्य (गद्य), (९) भारतीय स्वास्थ्य पर अँगरेज़ी राज्य का प्रभाव, (१०) महिला-सप्त-सरोज इत्यादि ।

विवरण—आप कड़ा मानिकपुर-निवासी जुझौतिया ब्राह्मण पं० धन्नालालजी तिवारी के पुत्र हैं । आप कुछ काल तक 'पंचराज'-नामक माहेश्वरी-समाजवाले मासिक पत्र के संपादक रहे । बंबई से 'नव-शक्ति'-नामक पत्र निकालने का भी इन्होंने आयोजन किया । आपकी रचनाएँ सामाजिक, धार्मिक अथवा राजनीतिक विषयों पर हुआ करती हैं । आपकी पत्नी श्रीमती गायत्रीदेवीजी भी एक अच्छी स्त्री-कवि तथा लेखिका हैं, और इन्होंने 'महिला-दर्पण' तथा 'महिला-गान'-नामक पुस्तकें लिखी हैं । [पं० श्रोत्रिय जागेश्वर-प्रसादजी शर्मा द्वारा ज्ञात]

नाम—(४०६०) श्यामविहारी शर्मा ।

रचना-काल—सं० १९६३ ।

ग्रंथ—प्रेम-प्रकाश।

विवरण—हमारे पंडितजी, कानपुर-निवासी अकबरपुर उन्नावबाले, पं० माधवप्रसाद के पुत्र हैं। आपको चित्र-काव्य से विशेष प्रेम है।

उदाहरण—

छाए देत राम-यश पावन दिगंतन में,
भक्त-उर भक्ति नव अंकुर उगाए देत;
गाए देत चारो फल विमल विकाश वारि,
कल्पवृक्ष आपने प्रभाव तें लजाए देत।
नाए देत भुक्ति-मुक्ति जग में विहारीराम,
गंग-सी पवित्र पाप-पुंज को बहाए देत;
देसन-विदेसन में आठो याम सर्व ठाम,
कविता-गुसाइँ को पियूष बरसाए देत।

नाम—(४०६१) संतराम, लाहौर।

विवरण—आप 'आर्य-प्रभा' पत्र का संपादन करते थे।

नाम—(४०६२) हनुमानप्रसाद वैश्य, अहरौरा बाज़ार, ज़िला मिर्ज़ापुर।

जन्म-काल—सं० १९३८।

ग्रंथ—(१) जानकी-स्वयंवर, (२) दुर्गा-प्रभाकर, (३) चंद्रलता, (४) हनुमान-हाँक, (५) चंद्रकला-चंद्रिका, (६) कविता-सुधार, (७) स्फुट काव्य।

समय—संवत् १९६४

नाम—(४०६३) अखिलानंद शर्मा, बदाऊँ।

जन्म-काल—सं० १९३९।

ग्रंथ—(१) दयानंद-लहरी, (२) दयानंद-दिग्विजयार्क, (३) आर्य-शिक्षा, (४) आर्य-विद्योदय, (५) दयानंद-दिग्विजय।

नाम—(४०६४) कृष्णानंद पाठक, माधवरामपुर, डा० गोपीगंज, ज़िला मिर्ज़ापुर।

जन्म-काल—सं० १९३९।

विवरण—आप संस्कृत के अच्छे विद्वान् हैं। भाषा-कविता की समस्या-पूर्ति इत्यादि करते हैं। आपके लगभग ७०० स्फुट छंद हैं।

नाम—(४०६५) चंद्रशेखर (द्विजचंद्र) ब्राह्मण, रानीपुर, ज़िला आज़मगढ़।

जन्म—काल—सं० १९३९।

नाम—(४०६६) नाथूराम प्रेमी, देवरी, सागर।

जन्म-काल—सं० १९३९।

विवरण—संपादक जैन-हितैषी। आपने हिंदी-ग्रंथ-रत्नाकर निकाला है, जिसमें हिंदी के पचास-साठ अच्छे ग्रंथ छप चुके हैं। आपने जैन-ग्रंथों का अच्छा अध्ययन किया तथा जैन-ग्रंथ-माला में बहुत-से ग्रंथ प्रकाशित किए हैं। आप बड़े उत्साही पुरुष हैं।

नाम—(४०६७) पन्नालाल, घाटमपुर, ज़िला कानपुर।

नाम—(४०६८) पुरुषोत्तमप्रसाद पांडेय, बालपुर-चंद्रपुर, बिलासपुर।

ग्रंथ—(१) लालगुलाल, (२) अनंत लेखावलि, (३) लेख-माला।

नाम—(४०६९) ब्रजनाथ बी० ए०, एल्-एल्० बी०, मुरादाबाद।

जन्म-काल—सं० १९३९।

नाम—(४०७०) ब्रह्मदेवनारायण, मु० बेलवाँ, पो० देव, ज़िला गया।

जन्म-काल —सं० १९३६ ।

ग्रंथ—(१) कलि-चरित्र, (२) कृपण-चरित्र, (३) कलियुग-चरित्र ।

नाम—(४०७१) माधवप्रसाद शुक्ल ।

विवरण—आप कलकत्ते में रहते हैं। कवि, अभिनेता, गायक, नाटककार, देश-प्रेमी और सज्जन हैं।

ग्रंथ—महाभारत नाटक ।

नाम—(४०७२) राधाकृष्ण अवस्थी ।

ग्रंथ—देवीप्रसाद भूषण ।

नाम—(४०७३) राधाकृष्ण (घनस्याम), जयेंद्रगंज, ग्वालियर ।

जन्म-काल—सं० १९३९ ।

ग्रंथ—(१) भजनसार, (२) उपकार-बत्तीसी आदि ।

नाम—(४०७४) राधाकृष्ण मेहता, लाहौर ।

ग्रंथ—स्वामीजी के जीवन-चरित्र का अनुवाद ।

नाम—(४०७५) ललितकिशोरी गोस्वामिनी ।

जन्म-काल—सं० १९२९ ।

ग्रंथ—ललित-तरंगिणी ।

विवरण—राधावल्लभीय ।

नाम—(४०७६) श्रीलक्ष्मणसिंह क्षत्रिय, लोमामऊ ।

जन्म-काल—सं० १९३९ ।

विवरण—आपने कई ग्रंथ रचे हैं ।

नाम—(४०७७) लक्ष्मीनारायण, बरेली-निवासी ।

ग्रंथ—स्त्री-पुरुष-धर्म ।

नाम—(४०७८) वामनाचार्य 'वामन' गोस्वामी, मिर्ज़ापुर ।

ग्रंथ—पंचानन-पचीसी ।

नाम—(४०७९) शीतलप्रसाद ब्राह्मण, भरसरा, जिला गोरखपुर।

ग्रंथ—(१) रामचरितावली नाटक गद्य-पद्य, (२) विनय-पुष्पावली, (३) भारतोन्नति-सोपान (१९६४, पृ० १०२), द्वि० त्रै० रि०

विवरण—आपमें साहित्य-सेवा जैसी है, वह काव्य से प्रकट होती है। राम-भक्ति के सिवा आपमें देश-भक्ति भी है। यह अनुपम गुण है।

नाम—(४०८०) सत्यानंद जोशी M. B. E.

ग्रंथ—संपादक अभ्युदय।

विवरण—अच्छे लेखक हैं। आप आजकल प्रांतीय लाट साहब के दफ़्तर में सुपरिंटेंडेंट हैं।

नाम—(४०८१) सरयूप्रसाद आचारी, रईस जगदीशपुर, ज़िला बस्ती।

ग्रंथ—प्रेम-मालिका।

विवरण—वर्तमान हैं। प्रति एक है, कर्ता दो हैं। शंभुराम मझारी भी कर्ता हैं।

नाम—(४०८२) सावित्रीदेवी ब्राह्मणी।

विवरण—पं० बालकृष्णजी भट्ट की पुत्री थीं।

नाम—(४०८३) हरसहायलाल बी० ए०, डिप्टी मजिस्ट्रेट, बाँकीपुर।

ग्रंथ—(१) अवतार-पराभव, (२) कांतावियोग, (३) शकुंतला-अनुवाद।

विवरण—आप अच्छे कवि थे।

समय—संवत् १९६५

नाम—(४०८४) अशर्फीलाल कायस्थ, बलरामपुर।

ग्रंथ—बाल-विहार (कृष्ण-चरित्र, पृष्ठ ६४६)।

नाम—(४०८५) इंद्रदेवलाल कायस्थ, मनियार, बलिया।

जन्म-काल—सं० १९४० ।

ग्रंथ—स्फुट पद ।

नाम—(४०८६) गणेशरामचंद्र शर्मा, अजमेर ।

ग्रंथ—स्वामीजी के मराठी तथा गुजराती व्याख्यानों का अनुवाद ।

नाम—(४०८७) गदाधरप्रसाद पाठक, दारानगर, इलाहाबाद।

ग्रंथ—(१) लेक्चर्स टीचर, (२) ब्रह्मकुल-परिवर्तन, (३) शिक्षा-कल्पद्रुम, (४) कर्तव्य-दर्पण ।

नाम—(४०८८) गनपाल (वर्तमान) ।

ग्रंथ—प्रिया-प्रीतम-विलास ।

नाम—(४०८९) गिरिजाशरण, वृंदावन ।

जन्म-काल—सं० १९४० ।

नाम—(४०९०) गौरचरण गोस्वामी ।

जन्म-काल—सं० १९५३ ।

रचना-काल—सं० १९६५ ।

ग्रंथ—(१) जाली कुंजलाल, (२) भूषण-दूषण, (३) विचित्र जाल, (४) श्रीगौरांग-चरित्र, (५) चोरी है कि दग़ा-बाज़ी, (६) अभिमन्यु-वध, (७) भवानी, (८) चैतन्य-विजय की समालोचना पर समालोचना, (९) श्रीविष्णु-प्रिया-चरित्र ।

विवरण—आप गोस्वामी राधाचरण के ज्येष्ठ पुत्र संस्कृत, बँगला, हिंदी, अँगरेज़ी आदि के अच्छे लेखक थे। बाल्यावस्था में भारी मानसिक परिश्रम करने से आपका स्वर्गवास हो गया ।

नाम—(४०९१) चंद्रधर शर्मा गुलेरी, जयपुर ।

जन्म-काल—सं० १९४० ।

विवरण—आप अच्छे पंडित एवं बड़े ही नम्र और निष्कपट पुरुष

थे। आपसे हिंदी-सहायता की बड़ी आशा थी। शोक है, आपका असमय देहांत हो गया।

नाम—(४०९२) चंद्रलाल गोस्वामी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४०।

ग्रंथ—स्फुट पद।

विवरण—राधावल्लभीयाचार्य।

नाम—(४०९३) चंद्रिकाप्रसाद मिश्र 'चंद्र' मुरार, ग्वालियर-निवासी।

जन्म-काल—सं० १९४०।

रचना-काल—सं० १९६९।

ग्रंथ—स्फुट रचना।

उदाहरण—

कृष्णा कालिंदी का कल-कल विहग वृंद कलरव स्वरधार;
ललित-लताओं का वह झुरमुट त्रिविधि समीरण का संचार।
वृक्ष-वल्लियों का सम्मेलन कोकिल कूजित कलित निकुंज;
सरस सुगंध-सनी सुमनावलि गूँज रहे जिस पर अलि-पुंज।
सभी मनोरम, सभी मधुर हैं, सब जगती से न्यारा है;
नर क्या, देवों को भी प्यारा भारतवर्ष हमारा है।

नाम—(४०९४) जयलाल, किशनगढ़-राज्य।

ग्रंथ—(१) प्रतिष्ठा-प्रकाश (किशनगढ़ाधीश महाराजा मोहकमसिंहजी की रानी के बनवाए हुए गोवर्द्धन-मंदिर का वर्णन), (२) छप्पन भोग, (३) कवि-सार-समुच्चय, (४) तवारीख़ राज्य किशनगढ़।

विवरण—आप शाकद्वीपी भोजक ब्राह्मण हैं, और अभी विद्यमान हैं। कविताओं में यह अपना नाम 'जय' रखते हैं।

नाम—(४०९५) धनुर्धर शर्मा।

जन्म-काल—सं० १९४० ।

ग्रंथ—(१) राम-कैकयी-संवाद, (२) जनक-मरणोत्ताप, (३) भीष्म-भीष्मागमन, (४) भट्टिकाव्य का पद्यानुवाद, (५) अन्योक्ति पुष्पावलि, (६) समस्या-पूर्ति ।

नाम—(४०९६) निकुंज अलि राधावल्लभीया।

जन्म-काल—सं० १९४०, वर्तमान।

ग्रंथ—स्फुट पद ।

विवरण—टोडी फ़तेहपुर की रानी ।

नाम—(४०९७) नूतन (कवि), उन्नाव-निवासी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४० ।

कविता-काल—सं० १९६५ ।

ग्रंथ—स्फुट काव्य ।

विवरण—व्रजभाषा तथा खड़ी बोली में अच्छी कविता करते हैं। आप परिश्रमी और साधु-प्रकृति के सज्जन हैं।

नाम—(४०९८) पूरनमल झाँसो।

नाम—(४०९९) प्यारेलाल कायस्थ, गौरहर।

नाम—(४१००) ब्रह्मदत्तजी, देववंद, ज़िला सहारनपुर।

जन्म-काल—सं० १९५५ ।

रचना-काल—सं० १९६५ ।

ग्रंथ—(१) प्रेम-वर्षा (पद्य), (२) प्रेमनिधि का आदेश (आध्यात्मिक गद्य-ग्रंथ), (३) स्वराज्य-पथ, (४) अध्यात्म-वीणा, (५) प्रेम-निकुंज, (६) आत्मोद्धार (अपूर्ण)।

विवरण—आप पं० भागीरथलालजी के पुत्र तथा स्थानीय स्कूल में संस्कृत-अध्यापक हैं। [श्रीयुत कन्हैयालाल शास्त्री, देववंद द्वारा ज्ञात]

उदाहरण—

मोरे दृग बस रहो आली श्याम।
सजल-जलद दुति वदन मनोहर सब गुण उपमा-धाम;
अमित दिवाकर स-कर विविध प्रभु कीन मुकुट-विश्राम।
पाप-क्रीट द्युति अलक-पलक भ्रू बसत दामिनी दाम;
श्रुति-कुंडल नाना मनि शोभा राजत तिलक ललाम।
श्वेत बिंदु-कण तारा गुन गण लसत अमित गुण याम;
मुक्ता-दशन अधर-विद्रुम-प्रभु निरख चकित सुर-वाम।
कवि, विधु रविज भानु मणिमाला गल-राजत जप नाम;
भुज केयूर बलय कर पहुँची कटि कांची अभिराम।
अमित कोटि ब्रह्मांड कि शोभा संकोचित लख काम;
नूपुर चरन-कमल-ध्वनि में 'शिशु' कियो चेतन विश्राम।

नाम—(४१०१) भगवानदास केला, वृंदावन-निवासी वैश्य।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४६।

रचना-काल—लगभग सं० १९६५।

ग्रंथ—विश्व-वेदना और इतिहास तथा अर्थ-शास्त्र पर कई अच्छे ग्रंथ लिखे हैं। प्रेम-महाविद्यालय में कई साल अध्यापक तथा प्रेम-पत्र के संपादक रहे हैं। हिंदी के उत्साही लेखक तथा कवि हैं।

नाम—(४१०२) भगवानदास हालना।

विवरण—आप हिंदी के प्रसिद्ध लेखक हैं।

नाम—(४१०३) भगवानदीन मिश्र, शाहपुरा, जिला मंडला।

जन्म-काल—सं० १९४०।

ग्रंथ—(१) राजेंद्र-विलास, (२) श्रीरामरघुवंश-विनय, (३) श्रीराम-धनुष-यज्ञ, (४) शंभु विवाह, (५) रास-रंजनी, (६) फूल-वाटिका।

नाम—(४१०४) भवानीचरण (लालन), फ़तेहपुर।

जन्म-काल—सं० १९४० ।

ग्रंथ—(१) कालिका-स्तुति, (२) विनय-रसिक-लहरी, (३) छवि-प्रिया, (४) अयोध्या-माहात्म्य आदि ।

नाम—(४१०५) भोलानाथ राधावल्लभी ।

जन्म-काल—सं० १९४० ।

ग्रंथ—स्फुट पद ।

विवरण—हिंदी-साहित्य को ऐसी-ऐसी पुस्तकों की बड़ी ही आवश्यकता है । बाबू साहब ने एक बड़े अभाव की पूर्ति की । आपने अमेरिका तथा जापान जाकर विद्या पढ़ी थी ।

नाम—(४१०६) यशोदादेवी संपादिका, स्त्री-धर्म-शिक्षक ।

ग्रंथ—सच्ची माता ।

नाम—(४१०७) रघुनंदनसिंह, ग्राम मंझी, ज़िला लखनऊ ।

जन्म काल—सं० १९४० ।

ग्रंथ—(१) स्फुट कविताएँ, (२) भूगोल, ज़िला लखनऊ तथा संयुक्त-प्रांत, (३) नूतन संगीत-दर्पण, (४) स्वदेशोद्धार-शतक ।

विवरण—आप इस समय अमेठी में, मिडिल-स्कूल के, हेडमास्टर हैं । कविता अच्छी करते हैं ।

उदाहरण—

पंच यज्ञ बेद बिन द्विजहू पतित सब,
अक्षर-विहीन पीन दंभ-द्वेष-घाती में ;
ऊँच-नीच छुआछूत ही को सब ठौर राज,
एक जाति बैठि ना सकत एक पाँती में ।
'रघुनंद' केतिक अधेड़ क्वारी वित्त-बिन,
बहु बारी बिधवा बिलाप करैं जाती में ;

स्वारथ के वस बिन एकता बिहाल खेद,
हिंदुन की हीन दसा छेद करै छाती में।
तान तुक तिल औ' तमोल को न लीजे नाम,
असन-बसन बिन केते बिललात हैं;
तापि-तापि सिगरी बितावति हैं राति, भोर,
होत ही तरनि-तेज ताकत वमात हैं।
अस्थि-चर्म ही है अवशिष्ट देह-पंजर में,
सभ्यताभिमानी देख दूर ते घिनात हैं।
कीजै 'रघुनंदन' सहाय ऐसे दीनन की,
शिशिर सताए अकुलाए मरे जात हैं।

नाम—(४१०८) राघवप्रसादसिंह 'महंत', (राघव) बैनी ग्राम, ज़िला दरभंगा।

जन्म-काल—सं० १९४५।

कविता-काल—सं० १९६५ (सन् १९०८)।

ग्रंथ—(१) राष्ट्रीय संगीत, (२) कथा-मंजरी (शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाली है), (३) बालक-रामायण।

विवरण—आप द्रोणावार मूल के भूमिहार ब्राह्मण, बाबू जगदेव-नारायणसिंह के पुत्र तथा अपने प्रांत के एक प्रतिष्ठित ज़मींदार हैं। आप बिहार-प्रादेशिक साहित्य-सम्मेलन के जन्म-दाताओं में से हैं। बाल-साहित्य के पुष्टि-वर्धन में आप विशेषकर योग दे रहे हैं। कविता अच्छी करते हैं।

उदाहरण—

जननी तुअ पद कोटि प्रणाम।
चमकत सुभग मुकुट तव सिर पै शैलराज हिम-धाम;
सुर-नर-मुनि सबके मन-मोहत सुखकर दृश्य ललाम।

विष्णुपदी रविजा युग सरिता मणि-माला सित श्याम ;
विलसति कलुप-राशि-विनशावनि तव उर शोभा-धाम ।
बसन-धर्म शुभ गात अनूपम पूरत सब मन काम ;
अंग-अंग वहुमूल्य अभूपण सुर-मंदिर अभिराम ।
सजग भृत्य तव घहरत निसि दिन हिंद्-महोदधि नाम ;
चरण धोइ मृदु चरण-जलज-रज धरत शीश वसु-याम ।

नाम—(४१०९) राजेंद्रसिंह (कुँवर), सीतापुर ।

विवरण—आप राजा श्रीपालसिंह ताल्लुक़दार के सुयोग्य पुत्र हैं। आपको हिंदी से विशेप प्रेम है। आप ३ साल तक यू० पी० में मिनिस्टर रहे। हाल में गवर्नमेंट से राय न मिलने पर आपने इस्तीफ़ा दे दिया।

नाम—(४११०) राधारमणप्रसादसिंह रईस ।

ग्रंथ—(१) महिम्न-स्तोत्र भाषा (१९६५), (२) स्तोत्र-रत्नावली (१९६६)। [द्वि० त्रै० रि०]

नाम—(४१११) रामचरण नागार्च ।

कविता-काल—सं० १९६५ ।

ग्रंथ—(१) प्रेम-स्तुति, (२) हित-ध्यान-प्रेमाष्टक, (३) गुरु-प्रेमाष्टक, (४) ध्यान-स्तुति ।

विवरण—राधावल्लभी ।

नाम—(४११२) रामचरित उपाध्याय, नरसिंहगढ़ (मालवा)।

ग्रंथ—प्रकाशित—

(१) सूक्ति-मुक्तावली, (२) रामचरित-चंद्रिका, (३) रामचरित-चिंतामणि, (४) राष्ट्रभारती, } सत्साहित्य-ग्रंथमाला, कानपुर।

(५) देव-दूत, (६) देव-सभा, } हिंदी-ग्रंथ रत्नाकर, कार्यालय, बंबई।

(७) भारत-भक्ति, (८) उपदेश-रत्नमाला, } एम्० एंड कंपनी, गहमर, ग़ाज़ीपुर।

(९) सत्य हरिश्चंद्र, (१०) अंजना सुंदरी, (११) देवी द्रौपदी, } गंगा पुस्तकमाला, लखनऊ।

(१२) सुधा-शतक, (१३) बरवा चौसई, (१४) मेघदूत का पद्यानुवाद। } इंडियन-प्रेस, प्रयाग।

अप्रकाशित—(१) सतसई, (२) उपदेश-शतक, (३) सूक्ति-रत्नावली, (४) सिंदूर-प्रकरण।

नाम—(४११३) रामजीलाल शर्मा।

जन्म-काल—लगभग सं० १९२२।

मृत्यु-काल—लगभग सं० १९८३।

विवरण—यह प्रयाग में रहते थे। आपने गद्य में कई उत्तम पुस्तकें लिखीं, जिनमें २३५ पृष्ठों का एक ग्रंथ सीता-चरित्र है। आपके १९ ग्रंथों में से ९ बालकों के लिये लिखे गए। आपने कुछ काल विद्यार्थी-नामक मासिक पत्र निकाला, तथा एक हिंदी-प्रेस जारी किया। आप कुछ काल हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के मंत्री थे और हिंदी के लिये श्रमशील रहा करते थे। प्रतिभा-पूर्ण लेखक थे।

नाम—(४११४) रामनारायण (रमेश कवि), फ़र्रुख़ाबाद।

ग्रंथ—(१) सीता-स्वयंवर, (२) गंगा-लहरी।

उदाहरण—

सिल्प-ज्ञान, विज्ञान, गान अरु बल, विद्या-संग्राम;
सकल कला तेरो जग छायो देश-देश सब ठाम।
विश्व-भरणि! त्रिभुवन-पति-प्यारी! धन भारत-गुण-धाम;
तव महिमा राघव किमि बरणै निज मुख बरन्यो राम।

नाम—(४११५) रामरत्नजी परमहंस।

ग्रंथ—(१) शब्द, (२) कुंडलियाँ।

नाम—(४११६) वासुदेव उपनाम पठानअली, कौलारस।

जन्म-काल—सं० १९४०।

ग्रंथ—हित महाप्रभु की विनय।

विवरण—राधावल्लभी।

नाम—(४११७) विंध्याचलप्रसाद कायस्थ, हरपुरनाग, चंपारन।

ग्रंथ—१८ पूर्ण और ८ अपूर्ण छोटे-छोटे ग्रंथ।

नाम—(४११८) वेणीमाधव, झिन्ना, राज्य रीवाँ।

जन्म-काल—सं० १९४०।

ग्रंथ—आनंदरामायण का छंदोबद्ध अनुवाद।

नाम—(४११९) शालग्राम शास्त्री।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४५।

रचना-काल—सं० १९६९।

ग्रंथ—(१) साहित्य-दर्पण की विमला टीका, (२) आयुर्वेद-महत्त्व, (३) रामायण में राजनीति आदि।

विवरण—आप हिंदी के उद्भट समालोचक एवं उच्च कोटि के लेखक हैं। संस्कृत एवं भाषा-शास्त्र के अच्छे ज्ञाता हैं। काशी में होनेवाले अ० भा० संस्कृत-सम्मेलन में आप सभापति हुए थे। आजकल आप लखनऊ में प्रमुख वैद्य माने जाते हैं। हिंदी-मासिक पत्रों में आपके लेख निकला करते हैं।

नाम—(४१२०) शिवप्रसाद हेड पं० दरभंगा।

नाम—(४१२१) शिवलालराय।

जन्म-काल—सं० १९४०।

ग्रंथ—स्फुट छंद।

नाम—(४१२२) शिवाधार पांडे, प्रयाग।

जन्म-काल—सं० १९४० ।

रचना-काल—सं० १९६५ ।

विवरण—इंगलिश-रीडर इलाहाबाद-विश्व विद्यालय। हिंदी के अच्छे लेखक तथा श्रेष्ठ कुल के सुशिक्षित सदाचारी महाशय।

नाम—(४१२३) सुंदरीशरण, जयपुर।

जन्म-काल—सं० १९४० ।

ग्रंथ—नाटक एवं स्फुट पद ।

विवरण—राधावल्लभी ।

नाम—(४१२४) सूर्यनारायण दीक्षित वकील, खीरी।

जन्म-काल— लगभग सं० १९४० ।

रचना-काल—सं० १९६५ ।

ग्रंथ—कुछ ग्रंथ लिखे हैं ।

विवरण—खीरी के अच्छे वकील हैं। इनकी कन्या एम्० ए० पास है।

नाम—(४१२५) हरीहरलाल गोस्वामी, मुक़ाम बारी, राज्य रीवाँ।

विवरण—आप हिंदी के बड़े भारी शुभचिंतक थे। हम लोगों को इस ग्रंथ के प्रथम संस्करण के बनाने में आपसे सहायता मिली थी।

समय—संवत् १९६६

नाम—(४१२६) उदयनारायण वाजपेयी।

जन्म-काल—सं० १९४२ ।

ग्रंथ—(१) प्राचीन भारतवासियों की विदेश-यात्रा व वैदेशिक व्यापार, (२) महाराज पंचम जार्ज, (३) विकाश-सिद्धांत, (४) कर्म-क्षेत्र ।

नाम—(४१२७) नंदकिशोर ब्राह्मण, मुरारिमऊ।

जन्म-काल—सं० १९४१ ।

ग्रंथ—संगीत-विद्यारत्नाकर । [द्वि० त्रै० रि०]

नाम—(४१२८) बैजनाथ शुक्ल, पैंतेपुर, ज़िला बाराबंकी ।

नाम—(४१२९) महादेवप्रसाद मिश्र ।

जन्म-काल—सं० १९४१ ।

ग्रंथ—(१) आसावर देवी-माहात्म्य, (२) बजरंग-पचासा, (३) रसिक-पचीसी ।

नाम—(४१३०) (लाल) रघुबरप्रसाद, ग्राम हिंडोरिया, दमोह ।

जन्म-काल—सं० १९३८ ।

कविता-काल—सं० १९६६ ।

ग्रंथ—स्फुट कविताएँ ।

विवरण—आप दीवान गिरिधारीलाल के पुत्र हैं । श्रीयुत लक्ष्मी-प्रसादजी मिश्री का कथन है कि दीवानगिरी का पद आपके पूर्वजों को महाराज छत्रसाल के अनंतर जो राजा हुए, उनसे प्राप्त हुआ था, और वही पद आज तक आपके वंश में चला आता है । इनकी कविताएँ 'रसिक-मित्र', 'काव्य-पताका', 'सुकवि' आदि पत्रों में प्रकाशित हुआ करती हैं ।

उदाहरण—

पूरब पुन्य पुराकृत से मन मूरख ! मानुष को तन पायो ;
नाहक को जग-जालन में फँसि के तिहि को शठ ! वादि गमायो ।
आयु तमाम खयाम भई, कबहूँ मुख से नहिं राम रमायो ;
भाषत हैं 'रघुबीर' वृथा सुर-दुर्लभ देह को दाग लगायो ।

नाम—(४१३१) रमादेवी त्रिपाठी, प्रयाग ।

ग्रंथ—(१) रमा-विनोद (१९६६), (२) अबला-पुकार, (३) स्फुट लेख तथा काव्य-पत्रों में ।

विवरण—इसमें नीति और चेतावनी के १११ दोहे कहे गए हैं। आप पं० चंद्रिकाप्रसाद त्रिपाठी, प्रयाग की सहधर्मिणी हैं।

नाम—(४१३२) राघवेंद्र त्रिपाठी, गोनी, ज़िला हरदोई।

जन्म-काल—सं० १९४१।

ग्रंथ—व्रजेंद्र-विनोद।

नाम—(४१३३) रामअधीन कायस्थ, मैहर।

जन्म-काल—सं० १९४१।

ग्रंथ—(१) सुंदरकांड, (२) रामाष्टक, (३) मुख़्तसर रामायण।

नाम—(४१३४) शिवसागरराम शर्मा रेना, फ़तेहपुर।

ग्रंथ—सत्यनारायण भाषा।

नाम—(४१३५) सत्यनारायण त्रिपाठी, मंधना, कानपुर।

जन्म-काल—सं० १९४१।

ग्रंथ—गो-विलाप।

नाम—(४१३६) सत्यानंद संन्यासी।

ग्रंथ—(१) पाखंड-मत-कुठार, (२) कबीर-पंथ की समीक्षा।

नाम—(४१३७) सालिग्राम शर्मा, अजमेर।

ग्रंथ—न्याय-दर्शन भाषा-टीका।

समय—संवत् १९६७

नाम—(४१३८) जगन्नाथसिंह बरखेरवा, ज़िला हरदोई।

जन्म-काल—सं० १९४२।

ग्रंथ—पत्नी-वियोग।

विवरण—हमारे जाननेवालों में हैं। रचना उत्कृष्ट है।

नाम—(४१३९) जुगलप्रसाद ज़मींदार।

ग्रंथ—स्फुट कविता।

विवरण—आप मिलाई बी० एन्० आर० में रहते हैं।

नाम—(४१४०) दद्दूलाल जैन।

ग्रंथ—भजन-मंजरी।

विवरण—आप सरूपचंद के पुत्र हैं।

नाम—(४१४१) भगत कवि।

ग्रंथ—भगत-चालीसा।

नाम—(४१४२) मनोहरकृष्ण गोलवलकर, बी० ए०, एल्-एल्० बी०, जबलपुर।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४२।

विवरण—आप जबलपुर के प्रसिद्ध वकीलों में से हैं। यह महाराष्ट्र ब्राह्मण होते हुए भी हिंदी-भाषा से विशेष प्रेम रखते हैं। कुछ काल तक 'श्रीशारदा' पत्रिका के संपादक रहे, और आजकल स्थानीय राष्ट्रीय हिंदी-मंदिर के सभापति हैं।

नाम—(४१४३) यज्ञेश्वरसिंह जारंग, मुज़फ़्फ़रपुर।

ग्रंथ—(१) यज्ञेश्वर-विनोद, (२) राम-रहस्य-नाटक, (३) सीताराम-नाटक।

नाम—(४१४४) रामप्रतापसिंह राजा, माड़ा-नरेश।

नाम—(४१४५) व्रजनाथ मिश्र बी० ए०, एल्-एल्० बी०, मैनपुरी।

जन्म-काल—सं० १९४८।

कविता-काल—सं० १९६७।

ग्रंथ—स्फुट कविता।

विवरण—आप स्वर्गीय वकील पंडित दम्मीलालजी मिश्र के पुत्र हैं। इनकी कविता 'चतुर्वेदी' पत्रिका में प्रकाशित होती रहती है।

नाम—(४१४६) शिवकरणप्रसाद (सत्यदेव), ग्राम महाराजगंज, ज़िला आज़मगढ़।

जन्म-काल—सं० १९४२।

ग्रंथ—(१) सत्यदेव-विनोद, (२) पूर्ति-प्रमोद, (३) भक्ति-शिरोमणि।

नाम—(४१४७) शिवनारायण कायस्थ (मित्र), सनिगवाँ, ज़िला कानपुर।

जन्म-काल—सं० १९४२।

ग्रंथ—(१) सुखद संगीत, (२) स्फुट काव्य।

नाम—(४१४८) शंभुराम।

ग्रंथ—प्रेम-मालिका।

विवरण—शंभुप्रसाद आचारी ने भी शंभुराम के साथ यह ग्रंथ रचा।

नाम—(४१४९) सगुनचंद्र कायस्थ।

ग्रंथ—साधारण धर्म।

नाम—(४१५०) सत्यनारायण पांडे (सत्यदेव), सरवरिया, विष्णपुर, ज़ि० आज़मगढ़।

जन्म-काल—सं० १९४२।

ग्रंथ—(१) सत्यदेव-विनोद, (२) चौताल-दिवाकर (८ भाग), (३) साहित्य-शिरोमणि-संग्रह।

समय—संवत् १९६८

नाम—(४१५१) कदंबलाल गोस्वामी, बूँदी।

विवरण—इनकी अवस्था इस समय लगभग ४० वर्ष की होगी। कविता भी कुछ-कुछ करते हैं।

नाम—(४१५२) कर्णसिंह चँहडौली, अलीगढ़।

जन्म-काल—सं० १९३८।

ग्रंथ—(१) शुद्धि-पथ, (२) यवन-मतादर्श, (३) मेरा मत,

(४) कर्णामृत, (५) अमृतोदधि, (६) काव्य-कुसुमोद्यान, (७) संगीत-रत्न-प्रकाश ।

विवरण—गद्य-पद्य-लेखक ।

नाम—(४१५३) गोपालशरणसिंह, इलाक़ा नई गढ़ी, राज्य रीवाँ ।

जन्म-काल—सं० १९४८ ।

ग्रंथ—स्फुट रचनाएँ ।

विवरण—आप सेंगर-वंशोत्पन्न लाल जगतबहादुर के पुत्र हैं। रीवाँ-राज्य के सुप्रतिष्ठित एवं राज्य-चिह्नों से सुशोभित इलाक़ेदारों में से हैं। १९६२ से सरस्वती, माधुरी आदि पत्रिकाओं में आपकी कविताएँ प्रकाशित होती हैं। वे सरस और सरल हैं। सं० १९८२ में आप अखिल भारतवर्षीय कवि-सम्मेलन, वृंदावन के निर्वाचित सभापति हुए।

नाम—(४१५४) चंद्रराज भंडारी ।

ग्रंथ—(१) भक्ति-योग, (२) आदर्श देश-काल, (३) गांधी-दर्शन, (४) सिद्धार्थ कुमार, (५) सम्राट् अशोक, (६) भारत के हिंदू सम्राट्, (७) नैतिक जीवन, (८) नाट्य-कला-दर्शन ।

विवरण—आप भानपुरा, इंदौर के रहनेवाले तथा सुखसंपत्तिराय के कनिष्ठ भ्राता हैं।

नाम—(४१५५) जयकृष्ण मिश्र बी० ए०, मैनपुरी ।

कविता-काल—सं० १९६८ ।

ग्रंथ—अँगरेज़ी की प्रसिद्ध गीतिका (Gray's Glegy) का पद्यानुवाद ।

विवरण—यह पं० ख़्यालीराम मिश्र के पुत्र हैं। इनका जन्म-स्थान पिनाहट, ज़िला आगरा है, किंतु अब यह मैनपुरी में रहते हैं। आप

खड़ी बोली और ब्रजभाषा दोनो में कविता करते तथा स्थानीय चतुर्वेदी-पुस्तकालय के जन्मदाताओं में से हैं।

उदाहरण—

चित चालक ये चख चारु चलैं जय की जनु काम धुजा फहरैं ;
अधरान पै सोहै बुलाख मनौ बुँद-बुंद अमी बिधु बाल भरैं।
बतरानि में चौपें लसैं जनु स्याम सितंबुद में चपला छहरैं ;
अस बाल नबेलि बिलोकि उठैं मन माहिं मनोभव की लहरैं।

नाम—(४१९६) देवनारायणसिंह (लाल), सटा, डाकखाना शाहपुर।

ग्रंथ—रमेश-मनोरंजनी।

नाम—(४१९७) मुख्तारसिंह जाट, गिरिधरपुर, मेरठ।

ग्रंथ—हिंदी-वैज्ञानिक कल्पतरु बनाते हैं।

नाम—(४१९८) रमेश पाँड़े (रामेश्वर), पंडित पुरवा, ज़िला लखनऊ।

जन्म-काल—सं० १९४३।

नाम—(४१९९) सत्यव्रत शर्मा, मुरादाबाद।

समय—संवत् १९६९

नाम—(४१६०) गोविंदप्रसादजू देव चौबे।

जन्म-काल—सं० १९४४।

ग्रंथ—विनय-शतक।

विवरण—आप नया गाँव पालदेव जागीर के युवराज हैं।

नाम—(४१६१) चंद्रभानुराय।

ग्रंथ—नरसिंहपुर-नयन।

विवरण—आप बाबू गोकुलप्रसाद के ज्येष्ठ पुत्र हैं, तथा दुर्ग, ज़िला रायपुर, मध्यप्रदेश में निवास करते हैं।

नाम—(४१६२) बद्रीसिंह वर्मा, अटिया, उन्नाव ।

ग्रंथ—वीरांगना-चरित्र ।

जन्म-काल—सं० १९४४ ।

नाम—(४१६३) मदनमोहनलाल दीक्षित, घिवरामऊ, ज़िला फ़रुख़ाबाद ।

जन्म-काल—सं० १९४४ ।

ग्रंथ—(१) अनुचरी या सहचरी (उपन्यास), (२) बात की चोट (उपन्यास), (३) संसार-सेवा (उपन्यास), (४) प्रबंध-दर्पण दो भाग (प्रबंध लिखने की विधि), (५) मोहन-मंजरी (उपन्यास) ।

विवरण—आप भारद्वाज गोत्रीय कान्यकुब्ज ब्राह्मण पं० शंकरलाल दीक्षित के पुत्र हैं। गद्य तथा पद्य दोनो लिखते हैं। इनके ग्रंथों में से मोहन-मंजरी को छोड़कर शेष सब मुद्रित हो चुके हैं। समस्या-पूर्ति से भी आपको रुचि रहती है। इस समय यह महाशय टाउन स्कूल, घिवरामऊ के प्रधान अध्यापक हैं।

नाम—(४१६४) रामचीज़ पाँड़े, अरवल, गया ।

जन्म-काल—सं० १९४४ ।

ग्रंथ—(१) बिहारी वीर (गद्य), (२) मित्र-वेष में शत्रु (पद्य) ।

नाम—(४१६५) वचनेश, फ़तेहगढ़ ।

जन्म-काल—सं० १९४४ ।

ग्रंथ—वीरांगना-चरित्र ।

नाम—(४१६६) वीरसिंह उपदेशक आर्य-समाज, फुलपुरा, हिसार ।

जन्म-काल—सं० १९४४ ।

विवरण—आजकल राजपूत-सभा की ओर से उपदेशक हैं।

नाम—(४१६७) शिवदास गुप्त 'कुसुम', ज़िला गोरखपुर।

जन्म-काल—सं० १९५३।

जन्म-स्थान—बरहज़-बाज़ार, ज़िला गोरखपुर।

कविता-काल—सं० १९६९।

मृत्यु-काल—श्रावण-शुक्ला २ बुधवार, सं० १९८२।

ग्रंथ—(१) भारत की शासन-प्रणाली, (२) श्यामा (उपन्यास), (३) आरती (काव्य), (४) कीचक-वध (काव्य), (५) सप्तर्षि (जीवनी), (६) कुसुम-कली (स्फुट कविताएँ), (७) कर्मवीर बेंजिमिन फ्रैंकलिन (जीवनी)।

विवरण—आप अपने पिता श्रीयुत रामगुलामजी के सबसे छोटे पुत्र थे।

नाम—(४१६८) शंकरलाल व्यास (महेश)।

जन्म-काल—सं० १९४७।

रचना-काल—सं० १९६९।

ग्रंथ—(१) ऋण-दर्पण, (२) बाल-विवाह-नाटक (मुद्रित), (३) निमाड़-दिग्दर्श (अमुद्रित)।

विवरण—होलकर-राज्य के कसरावह-निवासी गौड़ ब्राह्मण तथा खड़ी बोली के कवि हैं।

समय—संवत् १९७०

नाम—(४१६९) उमाशंकर, वृंदावन।

जन्म-काल—सं० १९४५।

रचना-काल—सं० १९७०।

विवरण—गद्य-पद्य-लेखक एवं सुयोग्य वैद्य।

नाम—(४१७०) (बारहट) कृष्णसिंह (जी)।

रचना-काल—सं० १९७०।

विवरण—यह चारण कवि शार्दूलसिंहजी के समकालीन थे। इनके स्फुट छंद जो पत्रों में छपे हैं, उनमें से एक यहाँ देते हैं।

उदाहरण—

अध्वर के अध्व को प्रचार कर अधुता ते,
वेदमत गामिन को सुखदा सुजान भो;
धर्म को सुधारो धर्म मर्म को विचारयो यातें,
कष्ट कलिकाल बीच कृतयुग मान भो।
शिक्षा रूप भयो भूरि इतरि बराटन कों,
पाटन को छोनी तल सुयश बितान भो;
कृष्णगढ़ धरा धन्य धरापति अति धन्य,
जामे हू अनन्य धन्य जाहिर जहान भो।

नाम—(४१७१) खगेश कवि (श्यामलाल)।

जन्म-काल—सं० १९४५।

नाम—(४१७२) गंगानारायण द्विवेदी, लखनऊ-निवासी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४६।

रचना-काल—सं० १९७०।

विवरण—कन्यकुब्ज-कॉलेज, लखनऊ में अध्यापक। स्फुट पद्यकार।

नाम—(४१७३) गोविंद शुक्ल।

आप दामोदरपुर, ज़िला भागलपुर-निवासी सरयूपारीण ब्राह्मण हैं। हिंदी से विशेष प्रेम रखते हैं।

नाम—(४१७४) चुन्नीलाल पांडेय।

जन्म-काल—सं० १९४५।

ग्रंथ—(१) पद्यपुष्प-माला, (२) स्फुट कविता।

विवरण—आप कृष्णानंद पांडेय के पुत्र तथा गर्ल्स-स्कूल मुज़फ़्फ़रनगर में संस्कृताध्यापक हैं।

उदाहरण—

कोकिल की कल कूक कलेजा हूक उठावत एक निराली;
आग लगी-सी लगे बन में मोहि टेसुन की लखि के नवलाली।

देखत राह थकीं अँखियाँ नहिं आए सखी अजहूँ बनमाली;
मो-सी अभागिन को यह आज बसंत नहीं बस अंत है आली।

नाम—(४१७५) छेदालाल कायस्थ।

ग्रंथ—अबला-मनरंजन।

नाम—(४१७६) जगतनारायणलाल एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, एम्० डी०, पटना।

जन्म-काल—सं० १९४७।

रचना-काल—सं १९७० के लगभग।

ग्रंथ—(१) एक ही आवश्यक बात, (२) अर्थशास्त्र, (३) हिंदू-धर्म।

विवरण—आपने अर्थशास्त्र तथा हिंदू-धर्म पर कई पुस्तकें लिखी हैं। पटने से निकलनेवाले 'महावीर' पत्र के संपादक हैं। इस समय बिहार-आईन-सभा के सदस्य हैं।

नाम—(४१७७) जगदंबाप्रसाद (हितैषी), कानपुर-निवासी ब्राह्मण।

जन्म-काल—सं० १९४५ के लगभग।

रचना-काल—सं० १९७०।

रचना—स्फुट छंद।

विवरण—राजनीतिक कार्यकर्ता, जेल-भुक्त, देश-प्रेमी महाशय हैं। रचना भी अच्छी करते हैं।

नाम—(४१७८) दशरथ बलवंत यादव, देवरी, सागर (मध्यप्रदेश)।

जन्म-काल—सं० १९४६।

रचना-काल—सं० १९७० के लगभग।

ग्रंथ—(१) सदाचार-सोपान (अनुवाद), (२) त्रिदेव-निरूपण (अनुवाद), (३) स्त्री-शिक्षा, (४) माता का कर्तव्य

(गुजराती पुस्तक का अनुवाद), (५) प्रेम-मंदिर (मराठी पुस्तक का अनुवाद), (६) मार्टिन लूथर इत्यादि ।

विवरण—आप श्रीयुत बलवंत राव यादव के पुत्र हैं । आपके पूर्वज वाघोली (महाराष्ट्र-प्रांत) के निवासी थे । आप महाराष्ट्र-क्षत्रिय तथा बँगला, मराठी, गुजराती आदि भाषाओं के जानने-वाले हैं ।

नाम—(४१७९) नारायणप्रसाद बेताब, दिल्ली-निवासी ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४८ ।

कविता-काल—सं० १९७० ।

ग्रंथ—दस-पंद्रह नाटक तथा अन्य कई ग्रंथ बनाए हैं ।

विवरण—इनके नाटकों में बेपढ़ी जनता को प्रसन्न करनेवाली बातें अधिक रहती हैं, तथा पांडित्य-पूर्ण प्रयत्न कम । समालोचना असंयत भाषा में भी कर बैठते हैं । यथानाम तथा गुण की कहावत चरितार्थ कर देते हैं । नाटकों में चरित्र-चित्रण बिगड़ जाता है ।

नाम—(४१८०) पन्नालाल भैया गयावाल, 'छैल' ।

ग्रंथ—(१) कजली-विनोद, (२) वसंत-बहार, (३) काली घटा, (४) कुंडलिया-कुंडल, (५) जमाल-माला, (६) उर्वशी, (७) मोहनकुमारी, (८) भर्तृहरि-भूषण, (९) मेघ-मंजरी ।

विवरण—आप बाबू श्यामजी भैया गयावाल के पुत्र हैं ।

उदाहरण—

घोर घटा घहरैं चहुँ ओर मचावत मोर हैं सोर बहार सों ;
झूलत काहुकि बाम के संग लखी पिय को धर लाइ बिगार सों ।
रोस कितेक करे कबि 'छैल' परोसि जऊ समझाय बिचार सों ;
सावन में तऊ स्याम के गात पै मारत हाथ चमेली कि हार सों ।

नाम—(४१८१) प्यारेलाल मिश्र भंडारी, वृंदावन।

नाम—(४१८२) बचईलाल, माऊनपुर, इलाहाबाद।

जन्म-काल—सं० १९४५।

ग्रंथ—बजरंग-विनय आदि।

नाम—(४१८३) (बारहट) मुरारदानजी।

विवरण—यह किशनगढ़-राज्य में रहते हैं। डिंगल-पिंगल की कविता करना पुश्तैनी पेशा है।

नाम—(४१८४) रघुनंदनसिंह वर्मा 'लाल', ग्राम सबहद, बिधूना, इटावा।

जन्म-काल—सं० १९५२।

रचना-काल—सं० १९७०।

ग्रंथ—(१) लाल तरंग (३५० छंद, अप्रकाशित), (२) स्फुट लेख।

विवरण—आप सेंगर क्षत्रिय श्रीयुत लाल नरपतिसिंहजी (लाल नाहरसिंहजी) के पुत्र हैं। आप एक ज़मींदार और साहित्य.नुरागी पुरुष हैं।

नाम—(४१८५) (महाराज) रघुराजसिंह (सी० आई० ई०)।

रचना-काल—सं० १९७०।

परिचय—महाराज पृथ्वीसिंह के छोटे पुत्र थे। गत महायुद्ध में सरकार की बहुत सहायता की। गुणी जनों का बड़ा आदर करते थे। गंगादीनजी की मृत्यु पर 'गंगा-वाक्य-विनोद' को छपवाया, तथा निम्न-लिखित सोरठा वियोग में कहा—

आवै निशि-दिन याद, गंग बिना नहिं आवड़ै,
कविता रो वह स्वाद, कबै न सुणस्याँ कान में।

नाम—(४१८६) राजेंद्रप्रसाद एम्० ए०, एम्० एल्० ।

जन्म-काल—सं० १९४१ ।

रचना-काल—लगभग सं० १९७० ।

ग्रंथ—(१) चंपारन में महात्मा गांधी, (२) अर्थशास्त्र।

विवरण—आपका जन्म सारन-ज़िलांतर्गत जिरादेई-ग्राम में हुआ। विश्वविद्यालयों की उच्च परीक्षाओं में आप प्रायः प्रथम रहे हैं। 'देश'-नामक विहार का साप्ताहिक पत्र आप ही का निकाला हुआ है। हिंदी-साहित्य से आपको विशेष रुचि रहा करती है।

नाम—(४१८७) राधाकृष्ण झा एम्० ए०, कहलगाँव, भागलपुर।

जन्म-काल—सं० १९४५ ।

रचना-काल—लगभग सं० १९७० ।

मृत्यु-काल—सं० १९८२ ।

ग्रंथ—(१) भारत की सांपत्तिक अवस्था, (२) भारतीय शासन-पद्धति ।

विवरण—आप पटना-कॉलेज में कुछ समय तक प्रधान अध्यापक तथा विहार-प्रांत में शिल्प-कला-विभाग के भूतपूर्व प्रधान थे। सामयिक मासिक पत्र-पत्रिकाओं में आपके लेख प्रायः निकला करते थे। यों तो आपने बहुतेरे ग्रंथ रचे हैं, किंतु उनमें से मुख्य दो ऊपर दे दिए गए हैं। [श्रीयुत मंगलाप्रसादसिंहजी द्वारा ज्ञात]

नाम—(४१८८) रामकुमार गोयनका ।

ग्रंथ—ऐतिहासिक लेख ।

विवरण—आप कलकत्ता-कार्पोरेशन के सदस्य तथा विद्या-व्यसनी महाशय हैं।

नाम—(४१८९) लक्ष्मीदत्त त्रिपाठी, कुंदौली, नरवल, कानपुर ।

जन्म-काल—सं० १९४० ।

रचना-काल—लगभग सं० १९७० ।

ग्रंथ—(१) ब्लैकी के 'सेल्फ़ कल्चर' का अनुवाद (प्रकाशित), (२) गीतांजलि (टैगोर-कृत) का अनुवाद ।

विवरण—आप पं० अंबिकाप्रसाद त्रिपाठीजी के कनिष्ठ भ्राता हैं ।

नाम—(४१९०) वैद्यनाथ मिश्र 'विह्वल', लखनऊ ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५२ ।

रचना-काल—सं० १९७० ।

विवरण—स्फुट कविता (व्रजभाषा एवं खड़ी बोली) ।

नाम—(४१९१) शालग्राम भार्गव, प्रयाग ।

जन्म-काल—सं० १९४४ ।

रचना-काल—सं० १९७० ।

ग्रंथ—विज्ञान पत्र के संपादक १० साल तक रहे ।

विवरण—रीडर फ़िज़िक्स इलाहाबाद-विश्वविद्यालय में हैं ।

नाम—(४१९२) शिवदास पांडे, मौज़ा आँव, ज़िला उन्नाव ।

ग्रंथ—

प्रकाशित { (१) विश्राम-सागर, (२) चाणक्य-नीति-दर्पण पर छंदोबद्ध टीका, (३) रघुवंश की भाषा-टीका, (४) हिंदी की चौथी तथा पाँचवीं पुस्तकें, (५) महाभारत की भाषा-टीका ।

अप्रकाशित { (१) पांडव-वन-गमन-लीला, (२) काली-गर्व-दमन, (३) प्रिया-मिलन (काव्य) ।

विवरण—आप रघुवरदयालजी के पुत्र हैं । इस समय 'विकास' पत्र के संपादक हैं । कई वर्षों तक आपने श्रीवेंकटेश्वर तथा ज्ञान-सागर-प्रेसों में काम किया । आशुकवि हैं, और आपकी

रचनाएँ अनुप्रास-युक्त, सरस तथा प्रभावशालिनी हुआ करती हैं। कहा जाता है, आजकल आप 'ज्योतिष-सोपान'-नामक पुस्तक लिख रहे हैं। [श्रीयुत लक्ष्मणप्रसादजी (विशारद), बिलासपुर द्वारा ज्ञात]

नाम—(४१९३) श्यामलाल।

जन्म-काल—सं० १९४९ (वर्तमान)।

ग्रंथ—स्फुट पद।

विवरण—राधावल्लभी।

नाम—(४१९४) श्यामसुंदरलाल बी० ए० (सी०, आई० ई०)।

रचना-काल—लगभग सं० १९७०। (मृत)

विवरण—आप इटावा-निवासी महेश्वरी वैश्य थे। वर्नमेंट-कॉलेज, अजमेर में गणित के प्रोफ़ेसर हुए। वहाँ से किशनगढ़ आए। आपने राज्योन्नति के बहुत-से कार्य किए, तथा थियासो-फ़िकल सोसाइटी की कई पुस्तकों की रचना भी की।

नाम—(४१९५) सुखसंपत्तिराय भंडारी।

ग्रंथ—(१) बुद्धदेव, (२) स्वर्गीय जीवन, (३) उन्नति।

विवरण—आपने ओसवाल जैन और मल्हारी मार्तंड आदि कई पत्रों का संपादन किया है।

नाम—(४१९६) सुपार्श्वदास गुप्त।

ग्रंथ—पार्लियामेंट।

विवरण—हिंदी के उत्साही लेखक आरा-निवासी अग्रवाल जैन हैं।

समय—संवत् १९७१

नाम—(४१९७) गोपाल दामोदर तामस्कर।

जन्म-काल—सं० १९४६।

ग्रंथ—(१) शिवाजी की योग्यता, (२) शिक्षा-मीमांसा, (३) राज्य-विज्ञान, (४) योरपीय राजकीय आदर्शों का विकास।

विवरण—आप नवागढ़, ज़िला दुर्ग-निवासी महाराष्ट्र ब्राह्मण आप हैं। हिंदी के प्रेमी और लब्ध-प्रतिष्ठ लेखक हैं।

नाम—(४१९८) दुर्गाशंकर पांडेय, उन्नाव।

जन्म-काल—सं० १९४६।

ग्रंथ—(१) नटवर-पचीसी, (२) लेख और लेखक, (३) पुस्तकावलोकन, (४) अभिषेक, (५) धर्म-नीति-शिक्षा, (६) व्रजनाथ-शतक।

नाम—(४१९९) बिहारीलाल ब्रह्मभट्ट।

जन्म-काल—सं० १९४६।

ग्रंथ—(१) वैराग्य-बावनी, (२) पंचानन-चरित्र, (३) मेघ-दूत का अनुवाद, (४) शृंगार-चूड़ामणि, (५) विरह-विलाप, (६) उत्कंठ अपील, (७) साहित्य-सागर।

विवरण—यह बिजावर के राजकवि हैं।

उदाहरण—

कारण हँसी के हो न सीखे हो स्वभाव शुद्ध,
वंशज शशी के हो वशी के हू किसी के हो;
कहत बिहारी जागे दिवस रती के हो जू,
ग्राहक रती के हो रती के और ती के हो।
आपनी कही के रँगे राग में वही के जानो,
भाव सबही के अपहितू सबही के हो;
पढ़े मोहिनी के मंत्र मोहे मोहि नीके रात,
रहे मोहिनी के प्रात मिले मोहि नीके हो।

सरल अर्थ गंभीर सरस रसना रस व्यापिनि,
विविध भाँति बुध गुण गुणीन ग्रंथन मत भापिनि।
धन वे पुरुप अखेद भेद जिन तुव पहिचानो;
शुचि संतति संपत्ति सत्य अरु सुख अनुमानो।
जिहि रीति व्याप्त तुव जगत महँ तसन अन्य भापा गती;
जय हिंद-निवासिनि सुखप्रदा जय श्रीभापा भगवती।

नाम—(४२००) महावीरसिंह वर्मा।

विवरण—अटिया, ज़िला उन्नाव-निवासी चंदेल क्षत्रिय।

नाम—(४२०१) राजहंसप्रसाद, उपनाम हंस।

जन्म-काल—सं० १९४६।

ग्रंथ—स्फुट कविता।

विवरण—यह धौलपुर-निवासी आजकल झालावाड़ में रहते हैं।

उदाहरण—

बोलैंगे न झूठ हम सत्य को तजेंगे नाहिं,
चित्त दृढ़ राखि हम मन ना डिगावैंगे;
रण को निमंत्रण लै बैठि रैहैं गेह नाहिं,
आगे ही धरैंगे पाय पीठ ना दिखावैंगे।
भीर परे स्वामी हित देंगे हम प्राण वारि,
जननी को दूध कभी भूलि ना लजावैंगे;
भूलैंगे न भूलि केहू बात बाप-दादन की,
छत्रिन के छौना हम आन को निभावैंगे।

नाम—(४२०२) शिवकुमार ब्राह्मण, ग्राम मच्छागर, पो० मंसूरगंज।

जन्म-काल—सं० १९४६।

नाम—(४२०३) सूर्यनारायण पांडेय (रविदेव), पैंतेपुर, ज़िला बाराबंकी।

जन्म-काल—सं० १९४९।

समय—संवत् १९७२

नाम—(४२०४) दरियावसिंह सोधिया।

ग्रंथ—(१) कृषि-विद्या, (२) हिंदी-व्याकरण, (३) कहावत-कल्पद्रुम, (४) श्रावक-धर्म।

विवरण—गढ़ा कोटा, ज़िला सागर निवासी।

नाम—(४२०५) दंपतिकिशोर गोस्वामी।

ग्रंथ—अग्रवाल-चरित्र।

विवरण—गोस्वामी व्रजभरण के पुत्र तथा भँडौवाकार।

नाम—(४२०६) प्रेमदास।

जन्म-काल—सं० १९४८।

ग्रंथ—मथुरा-विजय (१९७२)।

विवरण—यह माचाभाट, ज़िला रायपुर-निवासी श्रीमान् हरिदास के पुत्र और निंबार्क-संप्रदाय के वैष्णव हैं।

उदाहरण—

चकवी चक सोच सकोच लहे अरु चारु चकोर विनोद भरे;
विकसी कुमुदावलि मंजु नई, सकुची कमलावलि भृंग डरे।
कल कौमुदी लै निशिनाथ उगे, रवि लोहित पश्चिम पाँय धरे;
पिय संग सँयोगिनि पायो सुखै, मुरझाई वियोगिनि हाय हरे।

नाम—(४२०७) बालचंद्राचार्य।

ग्रंथ—(१) जग-कर्तृत्व-मीमांसा, (२) मानव-कर्तव्य।

विवरण—आप खाम गाँव-निवासी श्वेतांबर यति हैं। आपको खंडन-मंडन से बड़ा प्रेम है।

नाम—(४२०८) महिपालबहादुरसिंह।

ग्रंथ—पद्य-पुस्तिका।

विवरण—आप बलिया-निवासी हैं।

नाम—(४२०९) माणिकजी मुनि ।

ग्रंथ—(१) समाधि-तंत्र, (२) कल्पसूत्र ।

विवरण—श्वेतांबर जैन साधु ।

नाम—(४२१०) यज्ञदत्त शर्मा, विष्णुपुर, पोस्ट बेगूसराय, जिला मुँगेर (विहार-प्रांत) ।

कविता-काल—लगभग सं० १९७२ ।

ग्रंथ—श्रीगौरांग-चरित्र-मानस (चैतन्य-चरित्र) ।

विवरण—आप मैथिल ब्राह्मण हैं ।

नाम—(४२११) रणवीरसिंहजी (राजकुमार) ।

जन्म-काल—आषाढ़-शुक्ल १४, सं० १९५६ ।

कविता-काल—सं० १९७२ ।

मृत्यु-काल—सं० १९७७ ।

ग्रंथ—(१) संस्कृत-सुधार नाटक, (२) सुभट तरुण, (३) सुधार-संगर, (४) सत्यमेव जयते नानृतम्, (५) विजयोल्लास, (६) महायुद्ध आदि ।

विवरण—आप अमेठी-नरेश राजा भगवानबख़्श के द्वितीय पुत्र थे । व्यायाम, चित्र-कला आदि में आपको रुचि थी । आपने अमेठी में आनंद-पाठशाला स्थापित कराई थी, जिसमें संस्कृत, हिंदी तथा अँगरेज़ी की निश्शुल्क शिक्षा दी जाती थी । आपकी अकाल-मृत्यु से हिंदी की हानि हुई है ।

उदाहरण—

जै जै विजै वासर विमल राष्ट्रीय पावन पर्व जै ;
भारत मुखोज्ज्वलकर निखिल त्योहार तिलक सगर्व जै ।
शुभ विजय केतु समीरणालोड़ित सुगगनालंभ जै ;
संक्लेश लेश अशेषकर अवधेश-कीर्ति-स्तंभ जै ।

नाम—(४२१२) रत्नावली शर्मा, छपरा, सारन ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४७ ।

ग्रंथ—स्फुट लेख ।

विवरण—यह महावीरप्रसादजी उपाध्याय की पुत्री तथा साहित्याचार्य स्वर्गीय पं० रामावतार शर्मा एम्० ए० की पत्नी हैं । समाज-सुधार तथा स्त्री-शिक्षा-संबंधी इनके लेख मासिक पत्र-पत्रिकाओं में प्रायः निकला करते हैं ।

नाम—(४२१३) राधाकृष्ण मिश्र ।

जन्म-काल—प्रायः सं० १९४९ ।

विवरण—यह प्रसिद्ध लेखक माधवप्रसाद के कनिष्ठ भ्राता झज्झर ज़िला रोहतक के रहनेवाले हैं । आप संस्कृत के अच्छे विद्वान् और हिंदी के सुलेखक हैं ।

नाम—(४२१४) वनमाली शुक्ल ।

ग्रंथ—(१) श्रीकृष्ण-नाटक, (२) कपास, (३) रेखागणित ।

विवरण—आप रायपुर मध्य-प्रांत-निवासी सरयूपारीण ब्राह्मण हैं ।

नाम—(४२१५) शिवसहाय चतुर्वेदी, देवरी, (सागर-मध्यप्रदेश) ।

जन्म-काल—सं० १९४५ ।

रचना-काल—सं० १९७२ ।

ग्रंथ—(१) भारतीय नीति-कथा, (२) आदर्श चरितावली, (३) छाया-दर्शन (बँगला-ग्रंथ का अनुवाद), (४) योरप में बुद्धि-स्वातंत्र्य (अनुवाद), (५) बेलून-विहार (अनुवाद), (६) आर्य-जाति (बँगला-पुस्तक का अनुवाद), (७) रामकृष्ण के सदुपदेश, (८) कर्मक्षेत्र (बँगला से अनुवाद), (९) गृहिणी-भूषण, (१०) आर्थिक सफलता, (११) गुरु-शिष्य-संवाद, (१२) जननी-जीवन, (१३) शारदा (अनुवाद), (१४) मनोरंजक कहानियाँ, (१५) फूलों की डाली, (१६) सोने का चाँद, (१७) बच्चों के

सुधारने के उपाय (गुजराती से अनुवाद), (१८) मेरे गुरुदेव (अँगरेज़ी-पुस्तक का अनुवाद), (१९) स्त्रियों का कार्य-क्षेत्र (अनुवाद), (२०) राजा और रानी।

विवरण—यह वशिष्ठ गोत्रीय सनाढ्य ब्राह्मण पं० भायजी शर्मा के पुत्र हैं। [श्रीयुत दशरथ बलवंत यादव, सागर द्वारा ज्ञात]

नाम—(४२१६) श्यामचरणजी।

जन्म-काल—सं० १९४७।

ग्रंथ—(१) लालबुझक्कड़ कीर्ति-कलाप (२) भोला-विरद-प्रवाह, (३) गाय-गुहार, (४) प्रेमामृत-प्रवाह, (५) धर्म-निरूपण, (६) पद्य-पुष्पांजलि, (७) भजनामृत, (८) हैहय-वंश-बखान, (९) कुमुद-सुंदरी-नाटक।

विवरण—अवधी राज्य-निवासी हिंदी के उत्साही लेखक।

उदाहरण—

लखि लीजिए श्याम रसालन में अब वे मधुपूरित बौर नहीं;
तिनके प्रिय चाहक ग्राहक हू ढिग हाय लखावते भौर नहीं।
मनभायक गायक कोकिल की अब तो मुददायक शोर नहीं;
तुम भूले कहाँ यह ग्रीषम है ऋतुबाहक की यह दौर नहीं।

नाम—(४२१७) श्रीकृष्णगोपाल माथुर, विद्याभूषण, विशारद, झालरापाटन।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४७।

ग्रंथ—(प्रकाशित)—(१) वक्तृत्व-कला, (२) दो साहित्य-सेवी, (३) व्यावहारिक विज्ञान, (४) भिन्न-भिन्न देशों के अनोखे रीति-रिवाज़, (५) अर्जुन, (६) लव-कुश।

(अप्रकाशित)—(१) युधिष्ठिर, (२) अरब के नौ रत्न, (३) वचनामृत-सागर, (४) वक्तृत्व-कला (दूसरा भाग), (५) ध्रुव, (६) वैज्ञानिक लेखों का संग्रह, (७) कहानी-संग्रह, (८) सती सावित्री।

विवरण—यह कायस्थ-कुलोत्पन्न श्रीजगन्नाथजी के पुत्र हैं। हिंदी के अतिरिक्त इन्होंने गुजराती तथा बँगला-भाषाओं का भी ज्ञान प्राप्त किया है। इन्होंने कलकत्ता के विद्वानों द्वारा स्थापित निखिल भारत-साहित्य-संघ की परीक्षा के उपलक्ष में २०० पृष्ठ का एक गवेषणा-पूर्ण लेख लिखा था, जिस पर उक्त संघ से इन्हें साहित्यरत्न की उपाधि मिली। लव-कुश ग्रंथ इन्होंने छत्रपुराधीश एच्० एच्० श्री महाराजा सर विश्वनाथसिंहजू के परामर्श से लिखा। यह हिंदी-हितैषी लालचंदजी सेठी के आश्रित हैं।

नाम—(४२१८) सदाशिव दीक्षित साहित्याचार्य, भगवंत-नगर (हरदोई)।

जन्म-काल—सं० १९५६।

कविता-काल—सं० १९७२।

ग्रंथ—(१) माधव-काव्य (खंड काव्य, ५ सर्ग) अप्रकाशित, (२) राष्ट्र-भाषा का चुनाव, (काव्य, ४० षट्पदी हैं), (३) मोहन (उपन्यास) अप्रकाशित, (४) पांचाली-परिणय (खंड काव्य, ७ सर्ग), (५) वृंद-सतसई की टीका, (६) दोष-दिग्दर्शन (अप्रकाशित)।

विवरण—आप साहित्योपाध्याय पं० मथुराप्रसादजी के सुपुत्र हैं। आपके शिक्षा तथा कविता-गुरु काशीस्थ राजकीय संस्कृत-पाठशाला के प्रधानाध्यापक महामहोपाध्याय पं० भवानीदत्त दीक्षित थे।

उदाहरण—

दानव दुर्जन दंडित होकर जो अति ही बिलखाय रही है;
होकर शत्रु अधीन अधीर भई अरु जो दुख पाय रही है।
'जागहु-जागहु' यों कहिके अरु जो दुखड़ा निज गाय रही है;
लाज लगे कहते हमको यह दुःखित भारत-भूमि वही है।

नाम—(४२१९) सरजूप्रसाद अवस्थी एम्० ए०, एल्० टी०, जबलपुर।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४७।

विवरण—आप कान्यकुब्ज ब्राह्मण हैं। हिंदी-साहित्य से आप प्रेम रखते हैं। यह स्थानीय कवि-समाज के मंत्री हैं।

नाम—(४२२०) सुंदरलाल त्रिवेदी राजिय, रायपुर।

ग्रंथ—(१) विक्टोरिया-वियोग, (२) रघुराज-गुण-कीर्तन, (३) ध्रुव-चरित्र, (४) करुणा-पचीसी, (५) प्रह्लाद-नाटक।

नाम—(४२२१) सूरजभानजी।

ग्रंथ—(१) द्रव्य-संग्रह, (२) पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय, (३) परमात्म-प्रकाश, (४) ब्याही बहू, (५) मनमोहिनी, (६) ज्ञान-सूर्योदय।

विवरण—देवबंद, ज़िला सहारनपुर-निवासी अग्रवाल जैन हैं। हिंदी की अच्छी सेवा कर रहे हैं।

समय—संवत् १९७३

नाम—(४२२२) गोवर्द्धनलाल एम्० ए०, बी० एल्०।

जन्म-काल—सं० १९४८।

ग्रंथ—(१) नीति-विज्ञान, (२) स्फुट निबंध।

विवरण—आप 'रौणियार'-जाति के एक प्रतिष्ठित कुलोत्पन्न वैश्य हैं। इस समय पटना-हाईकोर्ट में वकालत कर रहे हैं। इन्होंने फ़ारसी में भी अच्छा ज्ञान प्राप्त किया है।

नाम—(४२२३) जगन्नाथ द्विवेदी (जगदीश), पैंतेपुर, ज़िला बाराबंकी।

जन्म-काल—सं० १९४८।

नाम—(४२२४) जीवनराम पांडेय, बिधूना, इटावा।

जन्म-काल—सं० १९४८।

रचना-काल—लगभग सं० १९७२।

ग्रंथ—(१) क्षेमकरी देवी का माहात्म्य, (२) सनातन-धर्म-प्रकाश, (३) कुंडलियानामा, (४) अवतार-चरित्र, (५) काली-नाग-नाथन-लीला, (६) गोवर्धन-धारण-लीला, (७) गुरु-शिष्य-संवाद, (८) ज्ञानावली इत्यादि।

विवरण—आप भारद्वाज गोत्रीय पं० शिवचरणलालजी के पुत्र हैं। [श्रीयुत लाल रघुनंदनसिंह वर्मा, इटावा द्वारा ज्ञात]

उदाहरण—

भाल में त्रिपुंड, मुंडमाल है विशाल गले,
भूत - प्रेत - झुंड साथ खंड करे पाप के;
शीश में सुरंग रंग, भंग पिए मस्त आप,
लिपटे भुजंग अंग दुःख हरैं ताप के।
हाथ में त्रिशूल, मूल सकल सँसार के हैं,
पावत न वेद पार हारे नाप-नाप के;
बिपति हमारी त्रिपुरारीजी हरत नाहिं,
जीवनजू गावत गुणानुवाद आप के।

नाम—(४२२५) तारिणीप्रसाद मिश्र।

जन्म-काल—सं० १९४८।

ग्रंथ—(१) अनुभव-प्रकाश, (२) देव-सभा, (३) सती सुलक्षणा, (४) निर्मला, (५) भामिनी, (६) सती सुलोचना, (७) महावीर-चरित्र, (८) महाराज पृथु, (९) पशु-चिकित्सा, (१०) सती सुफला तथा शालोपयोगी पुस्तकें।

विवरण—यह सरयूपारीण ब्राह्मण पं० दुर्गाप्रसाद के पुत्र सिहुडी, ज़िला भागलपुर में रहते हैं।

नाम—(४२२६) दुर्गाशंकरप्रसादसिंह, दलीपपुर, शाहाबाद।

ग्रंथ—स्फुट कविताएँ।

विवरण—आप श्रीमहाराजकुमार नर्मदेश्वरप्रसादसिंहजी 'ईश' के पौत्र हैं।

नाम—(४२२७) नभु।

ग्रंथ—(१) शंकर-लहरी, (२) प्रेम-प्रवाह।

विवरण—आप साठोदरानागर नड़ियाड़-ग्राम (गुजरात) के निवासी हैं।

नाम—(४२२८) नर्मदेश्वरप्रसादसिंह, उपनाम 'ईश'।

ग्रंथ—(१) शिवाशिव-शतक, (२) शृंगार-दर्पण, (३) पंचरत्न, (४) धर्म-प्रदर्शिनी।

नाम—(४२२६) प्यारेलाल चिनोरिया, 'शरज्य'।

ग्रंथ—(१) दुर्गाष्टक, (२) शंकराष्टक, (३) श्रीयुगलकिशोर की बारामासी, (४) अबोधामृत, (५) कमलेश-विलास।

नाम—(४२३०) मोतीलाल जैन।

ग्रंथ—स्वावलंबन।

नाम—(४२३१) राजेश्वरप्रसाद (अवनींद्र), ग्राम सेगरौली।

जन्म-काल—सं० १६४८।

ग्रंथ—सासन (श्रावण), सुहाग आदि।

नाम—(४२३२) रामचंद्रजी पुजारी।

विवरण—आप व्रजभाषा के अच्छे कवि हैं, ऐसा कहा जाता है। [महाशय पं० झाबरमल्लजी त्रिवेदी, जसरापुर, द्वारा ज्ञात]

नाम—(४२३३) रामसहाय मिश्रो, हटा, दमोह (सी०पी०)।

जन्म-काल—सं० १६४७।

कविता-काल—सं० १६७२।

ग्रंथ—(१) मित्र-मिलाप, (२) मोहना रानी, (३) स्फुट कविताएँ तथा लेख।

विवरण—यह श्रीयुत अयोध्या मिश्री के पुत्र तथा बाबू लक्ष्मी-प्रसाद मिश्री के मँझले भाई हैं।

नाम—(४२३४) शिवराम महादेव पटवर्धन।

जन्म-काल—सं० १९४८।

ग्रंथ—हिंदू-धर्म-मीमांसा।

विवरण—यह होमियोपैथिक डॉक्टर हैं।

समय—संवत् १९७४

नाम—(४२३५) कन्हैयालाल जैन, कस्तला-ग्राम, हापड़ (मेरठ)।

जन्म-काल—सं० १९५७।

रचना-काल—सं० १९७४।

ग्रंथ—(१) प्रेमोपहार, (२) कुसुमित कुसुम, (३) एक आदर्श जीवन, (४) भारत-जागृति, (५) श्रीगोपाल (जैन-इतिहास, अपूर्ण)।

विवरण—यह जैन-धर्मानुयायी (श्वेतांबर संप्रदायी) लूणावत गोत्रीय सेठ ऋषभदासजी के पुत्र हैं। इनके पूर्वजों का प्राथमिक निवास-स्थान रूपसियाँ, जैसलमेर था, किंतु तीन-चार पीढ़ियों से यह ज़िला मेरठ में आकर बस गए थे। यह एक ज़मींदार हैं।

उदाहरण—

थे काटे लाखों शीश, नहीं पर होली,
मच गई विश्व में महा भयंकर होली।
चिनगारी जल योरप से सबमें डोली,
जो मची विश्व में भीतर-बाहर होली॥ १॥
सारी पृथ्वी पर तूने रंग बखेरा,
घर-घर में हृदय-हृदय में था रँग तेरा।

आ तूने रस में कुटिल विषमता घोली,
जो मची विश्व में भीतर-बाहर होली ॥ २ ॥
सुख-शांति स्नेह का तूने नाम मिटाया,
नय, न्याय, नीति का तुझमें पता न पाया।
था धुँआधार मच रहा विश्व झकझोली,
जो मची विश्व में भीतर-बाहर होली ॥ ३ ॥

नाम—(४२३६) दामोदर शुक्ल, दतिया।

जन्म-काल—सं० १९४९।

ग्रंथ—(१) गुरु-अष्टपदी, (२) गुरु-अष्टक, (३) स्फुट छंद।

विवरण—राधावल्लभी।

नाम—(४२३७) बालकृष्ण शर्मा (नवीन), कानपुर-निवासी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५४।

रचना-काल—सं १९७४।

विवरण—आप सुकवि तथा प्रताप-संपादक हैं। प्रभा का भी संपादन आपने किया था।

नाम—(४२३८) बेनीप्रसाद डॉक्टर (वैश्यजैन), प्रयाग।

जन्म-काल—सं० १९५० ।

रचना-काल—सं० १९७४।

ग्रंथ—(१) सूरदास, (२) जहाँगीरशाह (अँगरेज़ी में), (३) हिंदोस्तान की पुरानी सभ्यता।

विवरण—प्रोफ़ेसर पॉलिटिक्स इलाहाबाद-विश्वविद्यालय। आप उच्च श्रेणी के विद्वान् हैं, तथा बहुत छान-बीन के पीछे उत्कृष्ट श्रेणी के प्रशंसनीय ग्रंथ लिखते हैं। स्वभाव के भी बड़े ही सज्जन पुरुष हैं।

नाम—(४२३९) वंशीधर मिश्र एम्० ए० ।

जन्म-काल—सं० १९४८ ।

रचना-काल—सं० १९७४ ।

ग्रंथ—(प्रकाशित)—(१) तुलसीदास का संक्षिप्त जीवन-चरित्र, (२) हुक्का हुआ, (३) अजब देश, (४) सुगृहिणी (अनुवादित) ।

(अप्रकाशित)—(१) फिरंगी, (२) वणिक, (३) भारत की जेल, (४) गणित-चमत्कार ।

विवरण—खीरी के मुख्य कांग्रेस-कार्यकर्ता प्रांतीय तथा भारतीय कांग्रेस के सदस्य एवं तीन बार जेल-यात्रा किए हुए हैं ।

नाम—(४२४०) रामजीवन शर्मा 'जीवन', ग्राम मरवन, ज़िला मुज़फ़्फ़रपुर ।

जन्म-काल—सं० १९६१ ।

ग्रंथ—स्फुट रचनाएँ ।

विवरण—यह बाबू अलखनारायणसिंह के पुत्र भूमिहार ब्राह्मण हैं ।

उदाहरण—

तृष्णा-तृण से है नहीं, हृदय-क्षेत्र जब हीन ;
किस प्रकार सुख-शस्य फिर, फैले हो स्वाधीन ।
धर्म-धान कैसे जिए, रह सदैव अधपेट ;
सत्य-सलिल से है न जब होती उसकी भेंट ।
किसके संग मचायगा लिपट-लिपट रस-केलि ;
'जीवन'-पादप से अलग है जब शांति सुबेलि ?
'जीवन' सहकर दुख कभी करना चित्त न ग्लान ;
दुख सहकर हैं चमकते सज्जन, कंचन, पान ।

नृप भय तजकर धर्म-हित हो अशंक मुख खोल ;
जीवन काया के निकट छाया का क्या मोल ?
करना सबको चाहिए उसका ही गुण-गान ;
जिसका 'जीवन' ध्येय हो दुनिया का कल्यान ।

समय—संवत् १९७९

नाम—(४२४१) अनूपलाल मंडल 'साहित्यरत्न', समौली, पुरनियाँ, बिहार ।

जन्म-काल—सं० १९५७ ।

रचना-काल—लगभग सं० १९७९ ।

ग्रंथ—(१) रहिमन-सुधा, (२) निर्वासिता (उपन्यास) ।

विवरण—यह बाबू नव्वूमंडल के पुत्र और 'कैवर्त-कौमुदी' (मासिक पत्रिका) के संपादक हैं ।

नाम—(४२४२) अवध उपाध्याय ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५० ।

रचना-काल—सं० १९७९ ।

विवरण—आप हिंदी के लब्ध-प्रतिष्ठ समालोचक, लेखक एवं कवि हैं । कहानियाँ भी लिखते हैं । गणित-शास्त्र के अच्छे ज्ञाता हैं, एवं कुछ पुस्तकें भी लिखी हैं । आजकल पन्ना-स्टेट हाईस्कूल में अध्यापक हैं ।

नाम—(४२४३) उड़िया बाबा ।

रचना-काल—सं० १९७९ ।

विवरण—धार्मिक तथा दार्शनिक लेखक ।

नाम—(४२४४) उदित मिश्र, ग्राम कूँड़ो, जिला काशी ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५० ।

ग्रंथ—स्फुट कविता तथा लेख ।

विवरण—यह पंडित देवकीनंदन मिश्र के पुत्र हैं। कई भाषाओं के ज्ञाता और हिंदी-गद्य तथा पद्य दोनो लिखा करते हैं। इस समय दिल्ली-माडर्न स्कूल में हिंदी के अध्यापक हैं।

उदाहरण—

धन्य-धन्य हे किसान, कीरति तव नीकी।
माघ-पूस को तुषार, ग्रीषम आतप अपार,
सहन करत बार-बार जाने को जी की ॥ १ ॥
गीताकर उच्च भाव, सारे जग को सिखाव,
फल की नहिं राख चाव, आश है हरी की ॥ २ ॥
तन, मन, धन, सभी खेत, बसुधा को अन्न देत,
श्रम तें नित रखत हेतु, और बात फीकी ॥ ३ ॥
दया-दृष्टि करो नाथ, विनय करों नाय माथ,
'उदित' सुनो करुण-गाथ, ऐसे दरदी की ॥ ४ ॥
मन मरु विमल विचार तें मरहु न मन भरमाय ;
मन मारे जनि बैठहू, मन मारहु सुख पाय।

नाम—(४२४९) उमरावसिंह पांडे, मैनपुरी।
जन्म-काल—सं० १९५९।
कविता-काल—सं० १९७९।
ग्रंथ—स्फुट लेख तथा कविता।
विवरण—यह स्थानीय प्रतिष्ठित ज़मींदार पं० चिंतामणिजी के पुत्र व्रजभाषा तथा खड़ी बोली दोनो में कविता करते हैं।

उदाहरण—

मोर-पखा राजत, बिराजै उत चंद्र-कला ,
बेसरि सुहाई उत बाँसुरी बनाई है ;
बानिक बनायो इतै कृष्ण जदुचंद आज ,
उतै चंद्र चंद्रिका सुवेनी चारु चाई है।

पीत पट अंग फहरात फहरात उत,
चुनरी सुचारु चारु चित्रित जुन्हाई है।
गात की गुराई 'उमराव' कवि गाई उतै,
मुख मधुराई इत ललित लुनाई है।

नाम—(४२४६) कमलाबाई किबे।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५०।

रचना-काल—सं० १९७९।

विवरण—आप किबे साहब, इंदौर की धर्मपत्नी हैं। हिंदी-पत्र-पत्रिकाओं में आपके उच्च कोटि के लेख प्रकाशित हुआ करते हैं।

नाम—(४२४७) कल्ला ब्रजवल्लभजी।

विवरण—यह पुष्करणा ब्राह्मण दरबार हाईस्कूल में हिंदी-अध्यापक हैं।

रचना-काल—लगभग सं० १९७९।

नाम—(४२४८) कालिदास कपूर।

विवरण—आप विश्वंभरनाथ कपूर के पुत्र तथा कालीचरन-हाई-स्कूल, लखनऊ में हेडमास्टर हैं। आपको हिंदी से विशेष प्रेम है। आपके लेख सरस्वती तथा माधुरी आदि मासिक पत्रिकाओं में बहुधा प्रकाशित होते हैं।

नाम—(४२४९) किसोरीदास (वाजपेयी) विशारद, शास्त्री।

रचना-काल—लगभग सं० १९७९।

ग्रंथ—(१) साहित्य-मीमांसा, (२) काव्य-प्रवेशिन, (३) रस और अलंकार, (४) साहित्य-उपक्रमणिका।

विवरण—पंडित तो आप प्राचीन शैली के हैं, पर नवीन समालोचक, संस्कृत के विद्वान्, ब्रजभाषा के परम प्रेमी, पर खड़ी बोली के अविरोधी, उपयोगितावादी, सांख्य, वेदांत के सुखभोगी, काव्य में वीर-रस के 'रसराज' होने के प्रतिपादक हैं। इनके विचार-पूर्ण लेख

पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते हैं। जन्म रामनगर, कानपुर है, पर संप्रति हरिद्वार में अध्यापक हैं। सन् १९८९ के ग्वालियर-सम्मेलन में साक्षात्कार हुआ था। वस्तुतः स्वतंत्र प्रकृति के सुयोग्य सज्जन, सच्चे साहित्य-सेवी सखा हैं।

उदाहरण--

सुन रे कपूर ! मदचूर ! इक सीख मेरी,
एतो अभिमान करि नीच नसि जाइगो ;
रूप में, न रंग में, बिलोकि बिन होय मन,
कोढ़िया सपेद तू अछूत बनि जाइगो।
क्षुद्र कीट मारिबे में शक्ति है प्रसिद्ध तेरी,
नेकु तौ पसीज, सींक लाए जरि जाइगो ;
और की चलावै कौन मैं ही जो न संग होऊँ,
पल मैं न जानौ कौन देश उड़ि जाइगो।
जहाँ न हित उपदेस शुचि, सो कैसा साहित्य,
हो प्रकाश से रहित तो कौन कहै आदित्य।

नाम—(४२५०) केदारनाथ त्रिवेदी 'नवीन', ग्राम कौरैया सरावाँ, सीतापुर।

जन्म-काल—स० १९५२।

कविता-काल—अनुमानतः सं १९७९।

ग्रंथ—(१) कुलीन (पद्य), (२) स्फुट कविताएँ।

विवरण—यह उपमन्यु-गोत्रीय कान्यकुब्ज ब्राह्मण हैं। इनके पुत्र 'प्रवीन' भी कविता करते हैं। यह आजकल बिसवाँ, सीतापुर में अध्यापक हैं।

उदाहरण—

ऐन अँधियारी रैन कहत बनै न बैन,
शिशिर-समीर-शीत बावरै करति हैं ;

प्यारी परयंक पै परी री पछितात प्रात,
आयो प्राणप्यारो पग जाँवरै धरति है।
मान करि आली मुख फेरति जितै को उतै,
विनती अनेक भाँति साँवरो करति है;
राधिकै मनावै घूमि-घूमि कै 'नवीन' श्याम,
मानो भौंर पंकज की भाँवरै भरति है।

नाम—(४२५१) केशव, रीवाँ-निवासी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५०।

कविता-काल—सं० १९७९।

ग्रंथ—स्फुट काव्य।

विवरण—हमने इनकी कविता सुनी है, अच्छी होती है।

नाम—(४२५२) गौरीशंकर पथिक।

जन्म-काल—सं० १९५३।

ग्रंथ—(१) करैंसी, (२) समाज-सुधार के तत्त्व।

विवरण—उज्जैन-निवासी कान्यकुब्ज ब्राह्मण पं० शिवशंकरलाल के पुत्र। आप सरस्वती-पुस्तकालय के अध्यक्ष हैं, तथा पंचराज, वैष्णव-धर्म-पताका, वसुंधरा, प्रकाशादि पत्रों के संपादक भी रह चुके हैं।

नाम—(४२५३) चंद्रमतीदेवी (इंदुमती), बनकटा, आज़मगढ़।

जन्म-काल—सं० १९५०।

नाम—(४२५४) जगदीशदत्तजी शास्त्री, जैनाबाद।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५०।

ग्रंथ—(१) विज्ञान-शिक्षा, (२) सुर-भारती-संदेश, (३) हिंदी-साहित्य-सार।

विवरण—आप पंजाब-विश्वविद्यालय के शास्त्री एवं उत्साही लेखक तथा कवि हैं।

नाम—(४२५५) जगन्नारायणदेव मिश्र (पुष्कर कवि) शास्त्री।

जन्म-काल—आषाढ़-शुक्ल १२, सं० १९५५।

रचना-काल—सं० १९७५।

ग्रंथ—(१) ब्रह्मचर्य-विज्ञान, (२) मधुप, (३) स्वदेशी तान, (४) पद्य-पयोधि आदि।

विवरण—आप अवतार, वसुंधरा, मालवमयूर, त्याग-भूमि आदि के संपादन-विभाग में काम कर चुके हैं, तथा कुछ दिन रास का संपादन भी आपने किया है। आजकल काशी में रहते हैं।

नाम—(४२५६) दयाशंकर दुबे एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, प्रयाग।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५०।

रचना-काल—लगभग सं० १९७५।

ग्रंथ—विदेशी विनिमय।

विवरण—नागरिक शास्त्र पर आपने भागवानदास केला के साथ एक अच्छा ग्रंथ लिखा है। इस समय आप धर्म-ग्रंथावली निकाल रहे हैं।

नाम—(४२५७) नरोत्तमदास स्वामी विशारद, बीकानेर।

जन्म-काल—सं० १९६१।

कविता-काल—सं० १९७५।

ग्रंथ—(१) पालरिचार्ड के Scourge of chatsl (क्राइस्ट का चाबुक अप्रकाशित) का अनुवाद, (२) राधाकुमुद मुकर्जी-कृत Eunda- mental uint of India (भारत की मूल-एकता, अप्रकाशित) का अनुवाद।

विवरण—आप राजस्थानी भाषा के लेखक तथा कवि हैं, और इस समय हिंदू-विश्वविद्यालय, बनारस में विद्याध्ययन कर रहे हैं।

नाम—(४२५८) न्यामतसिंहजी लाला।

विवरण—जैन-समाज में आपके थियाट्रिकल पदों की प्रशंसा है। आपके कतिपय पद अच्छे भी हैं।

नाम—(४२५९) पन्नालाल सिंघी।

ग्रंथ—परिवार-डिरेक्ट्री।

नाम—(४२६०) प्रवासीलाल वर्मा मालवीय, आगर मालवा-निवासी।

जन्म-काल—सं० १९५४।

रचना-काल—सं० १९७९।

ग्रंथ—(१) वृक्ष-विज्ञान, (२) आरोग्य-मंदिर इत्यादि।

विवरण—आपने मुनि, धर्माभ्युदय आदि कई पत्रों का संपादन किया है। कविता उत्साह-युक्त भावों की करते हैं।

उदाहरण—

पुनः हो धन्वा की टंकार।

वही भुजा हैं, वही धनुष है और वही हैं बाण,
फिर क्यों द्रोही दल बढ़ता है, कर इसका संहार।
क्या कहता है ? भाई, बेटे गुरुजन प्रिय परिवार,
खड़े सामने स्नेही मेरे कैसे करूँ प्रहार।
छिः-छिः ! यह कैसा विचार है, इसे इसी क्षण भूल,
केवल कर्म सत्य है जग में, शेष सभी निस्सार।
जीव देह ज्यों देह वस्त्र है सहज बदलता नित्य,
मृत्यु एक परिवर्तन है, यह है शास्त्रों का सार।
तेरा भाई, तेरा बेटा यदि करता हो पाप,
और खड़ा तू देख रहा हो उनके अत्याचार।
तब तो धर्म धँसे धरणी में हो विनष्ट कर्तव्य,
हुई मोह की जय कह तुझको धिक्कारे संसार।

अतः सोच मत बन मतवाला मचा रंग-रण खूब ,
उसी शक्ति से, उसी तेज से कर अरियों पर वार ।
पुनः हो धन्वा की टंकार ।

नाम—(४२६१) प्रसादीलाल (शर्मा) ।

जन्म-काल—सं० १९५५ ।

रचना-काल—सं० १९७९ ।

ग्रंथ—स्फुट छंद तथा लेख ।

विवरण—पं० कँदनीराम सारस्वत के पुत्र मनीगढ़, पोस्ट वेवी, ज़िला अलीगढ़-निवासी अध्यापक हैं ।

उदाहरण—

रे मन, प्रीतम तैं बिसरायो ।
पिय की सेवा करी न नेकहु, सिगरो जनम गँवायो ,
कबहूँ टुक इक ठाँव न बैठ्यो, इत-उत रह्यो भ्रमायो ।
लिपट्यो रह्यो मोह-माया में, प्रीतम ढिग नहिं आयो ,
विषयासक्त कुचाल न कबहूँ विषयन ते थिनि आयो ।
ज्यों मल कीट सदैव प्रेम सों, मल ही माँहि समायो ,
उलटो चल्यो छाँड़ि मग सूधो, बहुतक मैं समुझायो ।
प्रिय प्रीतम की प्रेम-पुरी ते छिन-छिन दूर दुरायो ,
जिन सँग प्रेम कियो मन मूरख, तिन हुन संग दुरायो ।
पाप-पुंज दुख रूप जलधि मैं उलटो ठेलि गिरायो ।

नाम—(४२६२) बालमुकुंद वाजपेयी, रानीकटरा, लखनऊ ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४० ।

रचना-काल—सं० १९७९ ।

ग्रंथ—लक्ष्मण साप्ताहिक के संपादक थे ।

विवरण—आजकल जीवन-बीमा का काम करते हैं ।

नाम—(४२६३) विपिनविहारीलाल (वैद्य-विपिन)

जन्म-काल—सं० १९५८ ।

रचना-काल—सं० १९७५ ।

ग्रंथ—(१) विपिन-लता, (२) विपिन-विहार, (३) देश-दर्पण, (४) आयुर्वेद-गौरव तथा स्फुट छंद एवं लेख ।

विवरण—बाँसडीह, बलिया-निवासी मु० कृष्णकुमारलाल के ज्येष्ठ पुत्र, वैद्यक-परीक्षा पास, पुरातत्त्व के प्रेमी तथा उस पर महाकाव्य लिखनेवाले हैं। विपिन-औषधालय में वैद्यक करते हैं ।

नाम—(४२६४) बुधचंद्र पुरी संन्यासी, स्वामी, ग्राम ढबावडा, शुजाबाद (मुल्तान) ।

जन्म-काल—सं० १९५१ ।

रचना-काल—लगभग सं० १९७५ ।

ग्रंथ—(१) श्रीकर्म-सुधार, (२) स्त्री-शिक्षा-भजनावली, (३) स्त्री-धर्म-चेतावनी, (४) स्त्री-धर्म-पुष्पमाला ।

विवरण—इनके पूर्वजों का निवास-स्थान बनारस था ।

उदाहरण—

सोती रहोगी कब तक भारत के नामवाली ।
आँखें उठाके देखो मिटते निशानवाली ॥ १ ॥
ग़फ़लत ने तुमको घेरा किस शान में पड़ी हो ।
तन की ख़बर नहीं है भारी गुमानवाली ॥ २ ॥
थीं तुम कभी कहातीं भारत कि वीर माता ।
भूली हो तेज अपना देवी के नामवाली ॥ ३ ॥
झुकते थे देव-दानव करते थे दर्श मुनि जन ।
पतिव्रत्य धर्म पर ऐ तनको जलानेवाली ॥ ४ ॥
अर्जुन-से वीर योद्धा, सरधाल बलि से दाता ।
'बुधचंद्र' पूज्य माता, उनकी कहानेवाली ॥ ५ ॥

नाम—(४२६५) व्रजमोहनशरण (अष्ठाना)

रचना-काल—लगभग सं० १९७९ ।

ग्रंथ—(१) भिखारी और भगवान्, (२) द्रौपदी-दिग्दर्शन, (३) भोज-परिचय । सब अप्रकाशित हैं । ईश्वर-प्रार्थना के स्फुट बहुसंख्यक पद्य ।

विवरण—औरास ज़िला उन्नाव के नवीन कवि हैं ।

नाम—(४२६६) भगवतीप्रसाद, कलकत्ता ।

विवरण—आप गद्य-ग्रंथकार तथा कवि हैं । [यह महाशय हमें पं० झावरमल्लजी त्रिवेदी द्वारा ज्ञात हुए हैं]

नाम—(४२६७) भगवानबख़्श (श्रीकर) राजा ।

विवरण—इटौंजा, लखनऊ । पाँच साल तक राज्य किया । सं० १९८८ में देहांत हुआ । आप कविता तथा गान-विद्या के विशेष प्रेमी थे ।

नाम—(४२६८) महेशनाथ शर्मा, लखनऊ ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४८ ।

रचना-काल—सं० १९७९ ।

विवरण—आप लखनऊ से प्रकाशित होनेवाले दैनिक 'आनंद' के संपादक एवं विनोद-प्रिय, उत्साही सज्जन हैं । राजनीतिक आंदोलन में कई बार जेल-यात्रा भी कर चुके हैं ।

नाम—(४२६९) मातादीनसिंह गौतम विशारद, दुगरेई, फ़तेहपुर ।

जन्म-काल—सं० १९४९ ।

रचना-काल—लगभग सं० १९७९ ।

ग्रंथ—(१) ओसवाल सुधार, (२) बाइबिल की पोल, (३) गौतम-विचार-तरंग ।

विवरण—यह राजपूत-कुलोत्पन्न कुँवर कोदीसिंह के पुत्र तथा

हिंदी, उर्दू, संस्कृत, फ़ारसी और मारवाड़ी आदि भाषाओं के अच्छे ज्ञाता हैं। कुछ समय तक आप बीकानेर-राज्य में अध्यापक थे। [बाबू गोवर्धनदास, अध्यापक स्टेट-स्कूल, बीकानेर द्वारा ज्ञात]

उदाहरण—

नहीं ग़ज़नवी का यहाँ अब सितम है;
न ग़ोरी के हम्लों क ख़ौफ़ोखतर है।
नहीं क्रूर तुग़लक क दौरा ज़मीं पर;
न तुर्कों क ज़ोरोजफा कुछ यहाँ पर।
नहीं दौर दौराऽब औरंगशाही;
न अकबर कि तेग़ोतबर की तबाही।
सदीयों से बिछुड़े हुए हैं जो भाई;
उन्हें अब गले हम लगावेंगे आई।
उठो हिंदुओ! काम करके दिखाओ;
शुधी में रुपैयों के तोड़े लुटाओ।
'मतादीन' की तुम सुनो अर्ज़ भाई;
धरम काम है देखो थोड़ी कमाई।

नाम—(४२७०) मुकुंदवल्लभ।

जन्म-काल—सं० १९५०।

ग्रंथ—स्फुट पद।

विवरण—राधावल्लभी।

नाम—(४२७१) मुरलीधर पांडेय।

जन्म-काल—सं० १९५०।

ग्रंथ—(१) पूजा-फल, (२) हृदय-दान, (३) शैलबाला, (४) लच्छमा, (५) परिश्रम।

विवरण—बालपुर, ज़िला बिलासपुर-निवासी चिंतामणि पांडेय के पुत्र।

नाम—(४२७२) यज्ञनारायणसिंह (जी) ।

जन्म-काल—माघ-शुक्ल १२, सं० १९५२ ।

रचना-काल—सं० १९७९ ।

विवरण—आप जवानसिंहजी के पुत्र तथा किशनगढ़ के वर्तमान महाराजा हैं। आप प्रजा-वत्सल तो हैं ही, साथ ही कवि भी हैं।

उदाहरण—

झूमि आयो घनश्याम स्माम धरा-भेष धारि,
गरजि-गरजि निज आगम सुनायो है;
बगलनि पाँति मानो मोतिन की माला गरै,
दामिनि-चमक सो चिबुक चमकायो है।
फूली साँझ प्यारी रही ज्योति पिय की निहारि,
रँगे बदरन को लहरिया सुहायो है;
हरी-हरी भूमि तापै डोलैं गर-बाँह डारि,
गौरि श्याम-केलि लखि यज्ञ हरखायो है।

नाम—(४२७३) रमेशप्रसाद बी० एस्-सी०, पटना ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५० ।

ग्रंथ—विज्ञान-संबंधी स्फुट लेख ।

विवरण—यह कायस्थ हैं । विज्ञान-संबंधी साहित्य से इनको विशेष रुचि रहती है ।

नाम—(४२७४) रामचरनलाल (मस्त) ।

जन्म-काल—सं० १९५१ ।

रचना-काल—सं० १९७९ ।

विवरण—महाराजा-स्कूल किशनगढ़ में हेड पंडित हैं । इन्होंने कुछ स्कूली पुस्तकें लिखी हैं । हिंदी में कविता भी करते हैं ।

उदाहरण—

आओ प्रिय रितुराज कोकिला स्वागत करतीं;
डार रसालन बैठि कुहुकि सबका मन हरतीं।
चहुँ दिशि मंद-सुगंध पौन शीतल बहती है;
वन-उपवन पिक-चहकि-चहकि आगम कहती है।

नाम—(४२७५) रामधारीप्रसाद विशारद, भगवानपुर (मुज़फ़्फ़रपुर)।

जन्म-काल—सं० १९५२।

रचना-काल—सं० १९७९।

ग्रंथ—(१) ध्रुवतारा, (२) जयमाल।

विवरण—यह श्रीवास्तव कायस्थ बाबू वासुदेवनारायण के पुत्र हैं।

नाम—(४२७६) रामप्रसाद त्रिपाठी (डॉक्टर) लूकरगंज, प्रयाग।

जन्म-काल—सं० १९५०।

रचना-काल—सं० १९७९।

विवरण—आप इलाहाबाद-विश्वविद्यालय में इतिहास के रीडर (उच्च अध्यापक) हैं। उच्च विद्या-प्राप्त श्रमशील सज्जन हैं। ऐसे महानुभावों के पदार्पण से हिंदी को बहुत कुछ आशा है।

नाम—(४२७७) रामलोचनशरण 'बिहारी', राधाऊर, मुज़फ़्फ़रपुर।

जन्म-काल—सं० १९४९।

रचना-काल—लगभग सं० १९७९।

ग्रंथ—(१) व्याकरण-चंद्रोदय, (२) रचना-चंद्रोदय, (३) शालोपयोगी पुस्तकें।

विवरण—यह रौनियार-वैश्य श्रीयुत मँहगू साहू के पुत्र हैं।

'बालक' पत्र तथा हिंदी-पुस्तक-भांडार, लहरियासराय के आप अध्यक्ष हैं।

नाम—(४२७८) मुंशी लक्ष्मीनारायणजी।

जन्म-काल—सं० १९५०।

रचना-काल—सं० १९७५।

विवरण—यह जाति के माथुर कायस्थ हैं, तथा अपील-कोर्ट के जज थे। हिंदी-कविता के विशेष प्रेमी हैं।

उदाहरण—

धन्य घटी सु घटी ही रहौ औ' भरी ही रहौ भरपूर बधाई;
जारी रहौ झकझोरन सौं मुद-मंगल की सरसा बरसाई।
ध्यान रहौ जन दीनन पै यह नीतिक रीति सदा चलि आई;
पूर प्रभात समान से भार बिकासहु तै यह लेहु बधाई।

नाम—(४२७९) लक्ष्मीनिधि मिश्र 'विशारद', 'हिंदी-प्रभाकर' मैनपुरी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९६१।

कविता-काल—सं० १९७५।

ग्रंथ—स्फुट कविता।

विवरण—यह पं० कालिकाप्रसाद के पुत्र हैं। इनकी कविता प्रायः व्रजभाषा में हुआ करती है।

उदाहरण—

छाई रहै चहुँ ओर पीत-पीत पुष्प-वृंद,
सोई मनु पीत, वस्त्र गात पै सुहायो री;
कोकिला कलापैं सो उचारैं मनु वेद-धुनि,
कर में कमंडल कदंबन को भायो री।
बौर-बौर सुंदर रसाल चहुँ ओर सोई,
पहिरे गरे मैं माल मोद उर छायो री;

आनन अनंद भरयो सुख सरसंत आली,
देखु री महंत या बसंत बनि आयो री।

नाम—(४२८०) लीलावती भँवर एम्० ए०, देहरादून।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५२।

रचना-काल—सं० १९७९।

विवरण—आप महादेवी-कन्या-पाठशाला, देहरादून में अध्यापिका हैं। हिंदी की अच्छी लेखिका हैं।

नाम—(४२८१) विद्याभूषण 'विभु', नाहरपुर, जलेसर, ज़िला एटा।

जन्म-काल—सं० १९४६।

रचना-काल—लगभग सं० १९७९।

ग्रंथ—(१) पद्य-पयोनिधि, (२) सोहराब और रुस्तम, (३) ढपोलशंख तथा अन्य कहानियाँ, (४) चित्रकूट-चित्रण (अप्रकाशित), (५) गोबरगणेश (अप्रकाशित), (६) लाल खिलौना (अप्रकाशित), (७) महर्षि दयानंद (महाकाव्य, अपूर्ण)।

विवरण—यह श्रीयुत जमुनाप्रसादजी के पुत्र हैं। इस समय दयानंद-एंग्लो-हाईस्कूल, प्रयाग में अध्यापक हैं। [श्रीयुत सत्यप्रकाश-जी विशारद, प्रयाग द्वारा ज्ञात]

नाम—(४२८२) विपिनविहारीसिंह उपनाम 'विपिन'।

ग्रंथ—स्फुट काव्य।

विवरण—बलिया-निवासी।

नाम—(४२८३) विधेश्वरसिंह।

ग्रंथ—अनुराग-रस।

विवरण—यह सिहरौली के निवासी कहे जाते हैं।

नाम—(४२८४) शांतिविजयजी मुनि।

ग्रंथ—(१) मानव-धर्म-संहिता, (२) जैन-तीर्थ-गाइड, (३) उपदेश-दर्पण।

विवरण—श्वेतांबर-संप्रदाय के साधु।

बयालीसवाँ अध्याय

१६७६—१६६०

आजकल

आजकलवाले लेखकों के साथ पूरा न्याय असंभवप्राय है, क्योंकि अभी तक उनकी पूरी प्रतिभा प्रकट नहीं हुई है, अथवा बहुत कम लेखकों में उसका पूरा विकास कहा जा सकता है। इन कवियों में से बहुतेरे ऐसे हो सकते हैं, जिन्हें हम आज साधारण समझते हैं, किंतु जिनकी प्रतिभा भविष्य में पूरे तेज के साथ देदीप्यमान हो जाय। इतनी भूमिका अथच क्षमा-प्रार्थना के साथ हम अब इनका वर्णन करते हैं। हम मानते हैं कि बहुतों में बीज रूप से उन्नति के लक्षण प्रकट हैं, किंतु कथन मुख्यतया उन्हीं के होंगे, जिनके बीज कुछ पल्लवित हो चुके हैं। आजकल के लेखकों में पहला नाम महात्मा गांधी का आता है। यद्यपि आप लेखक न होकर ऋषि तथा लोक-नेता हैं, तथापि हैं हिंदी-लेखक भी, सो यहाँ भी वर्णन को पवित्र करने के विचार से उनका नाम लिखा जाता है। आप नवजीवन पत्र हिंदी के संपादक थे तथा हिंदी में व्याख्यान भी देते आए हैं। हिंदी-प्रचार आपके द्वारा बहुत अधिक हुआ है। उसके राष्ट्रभाषा माने जाने का मुख्य श्रेय आप ही को है। यद्यपि आपका जन्म-काल सं० १६२६ है, तथापि हिंदी-क्षेत्र में आप १६७६ से अवतीर्ण माने जा सकते हैं, जब आपने हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के सभापतित्व को पुनीत किया। आपके

अँगरेज़ीवाले अनेकानेक व्याख्यान उस भाषा की सर्वोत्कृष्ट रचनाओं में हैं, जो वहाँ के स्थायी साहित्य में उच्चातिउच्च आसन पाने योग्य हैं। गांधीजी का आत्मचरित्र भी बहुत ही उच्च साहित्य का उदाहरण है। यह ग्रंथ भी अँगरेज़ी में है, किंतु हिंदी में अनुवादित हो चुका है। इनके राजनीतिक विचारों या कार्यों से कोई सहमत हो या न हो, किंतु चरित्र-बल की महत्ता में इनका सामना करनेवाला मिलना बड़ा कठिन है। औरों की कौन कहे, हमारे भारत में रामचंद्र, श्रीकृष्ण, गौतमबुद्ध और गांधी-नामक जो चार महापुरुष हुए हैं, उनमें बड़ा-छोटा कौन है, ऐसा तक निर्णय करना कठिन है। यह मत हमारा ही नहीं है, वरन् केवल संस्कृत, हिंदी और मराठी जाननेवाले एक परम विद्वान् शास्त्रीजी ने स्वयं हमसे यही मत प्रकट किया था। वर्तमान भारतीयों के आचार शुद्धीकरण में ही इन महात्माजी का मुख्य माहात्म्य है।

सं० १९७८ में मांटेग्यू महाशय द्वारा दृढ़ किए नवीन राजनीतिक संशोधन कार्य-रूप में स्थापित हुए। उनके विषय में देश को आशा बहुत थी। फिर भी नवीन संशोधन बहुतों को निराशा-जनक हुए। देश में प्रचंड आंदोलन फैला। सरकार ने उसे दबाने में जलियानवाला बाग़ (अमृतसर) में गोली चला दी, जिससे बहुतेरे आंदोलनकर्ता हताहत हुए। अशांति फैली। महात्मा गांधी का प्रभाव बढ़ा। लार्ड रेडिंग महाशय ने महात्माजी से १९२२-२३ में मालवीयजी द्वारा मेल करना चाहा, किंतु महात्माजी ने उसे मंज़ूर न किया। कुछ इतरों का विचार इसके प्रतिकूल था। थोड़े ही दिनों के पीछे महात्माजी कारागार में बंद हुए, तथा कांग्रेस का बल क्षीण होता हुआ देख पड़ा, कुछ लोगों को समझ पड़ा कि महात्माजी ने बेजा तनने में भूल की। आईन-सभा चलने लगी। देशबंधुदास तथा मोतीलाल नेहरू ने असहयोग से प्रतिकूलता करके महात्मा की सम्मति के विरुद्ध कांग्रेस

द्वारा आईन-सभा से सहयोग की नीति चलाई। सभा से गोलमेज़ का प्रस्ताव पास हुआ। एक जाँच की समिति ने सुधार-संबंधी विचार पेश किए, किंतु फल कुछ न निकला। देशबंधु का देहांत हो गया, और नेहरू महाशय को कुछ दिनों में समझ पड़ा कि सहयोग से कोई लाभ नहीं। कांग्रेस ने आईन-सभा की मेंबरी छोड़कर देश में असहयोग चलाया। हज़ारों लोग ख़ुशी से जेल गए। मांटेग्यू-संशोधन में प्रति दसवें वर्ष उन्नति-संबंधी जाँच का नियम था। जाँच के लिये १९८४ में ही साइमन कमिटी बनाई गई, जिसमें केवल अँगरेज़ सदस्य हुए। कहा गया कि ऐसी जाँचों में कोई भारतीय निष्पक्ष रूप से काम नहीं कर सकता, सो उनमें से कोई सदस्य होने के योग्य नहीं है। राजनीतिक आंदोलनकारियों का पारा ऊँचा उठा। नरम दलवाले भी असंतुष्ट होकर कमिटी से असहयोग में सम्मिलित हुए। दोनो ओर से गर्मागर्मी हुई। असहयोग ने घोर रूप धारण किया। पुलिस की लाठियाँ चलीं। जेल भर गए, किंतु फल विशेष न हुआ। बड़े लाट साहब लॉर्ड इर्विन ने यह दशा अनुचित समझी। सरकार की ओर से एक बार यह भी कहा गया था कि १९७४वाली घोषणा में प्रतिनिधि-बल के जो शब्द थे, उनसे डोमीनियन-राज्य का प्रयोजन न था। लॉर्ड इर्विन महाशय ने विलायत जाकर घोषणा की कि १९७४वाले प्रतिनिधि-बल से डोमीनियन-राज्य का ही प्रयोजन था। विलायत में गोलमेज़ सभा का प्रबंध हुआ। पहली सभा में अच्छा काम हुआ, जिससे आशाएँ जागृत हुईं। महात्माजी तथा अन्य कांग्रेसवाले जेल से मुक्त हुए तथा बड़े लाट से महात्मा का समझौता हुआ। दूसरी गोलमेज़ सभा में महात्मा भी विलायत पधारे, किंतु इतने ही बीच वहाँ मज़दूर-दल पद-च्युत हो गया, और प्रायः टोरियों में राजशक्ति आ गई। दूसरी गोलमेज़ सभा से कोई मनोनीत फल न निकला, यद्यपि

कहने को उसकी सफलता का वर्णन होता रहा। वहाँ से पलटने पर महात्माजी फिर जेल भेजे गए।

हिंदू-मुसलमानों का समझौता जब निजू प्रकार से न हो सका, तब सरकार ने आज्ञा द्वारा उसे निबटाया। लोगों का विचार है कि यह आज्ञा मुसलमानों की ओर बहुत झुकी हुई है। तीसरी गोल-मेज़ सभा में केवल नरम दलवाले भेजे गए। ह्वाइट पेपर निकला, जिससे अधिकतर भारतीयों को बड़ा असंतोष हुआ। आजकल विलायत में युक्त कमिटी फिर से जाँच कर रही है। महात्माजी ने हरिजनों का प्रश्न पहले अनशन-व्रत द्वारा हल करा लिया, तथा दूसरा अनशन-व्रत उनकी सामाजिक दशा-सुधार के लिये किया। विलायत में बहुतेरे भारतीय गए। टोरियों का एक दल ह्वाइट पेपर के विरोध में खड़ा हुआ है, जो कुछ मिल रहा है, वह भी अदेय है। अधिकांश शिक्षित भारतीय लोग, जो कुछ मिलता है, उसे अग्राह्य मानते हैं। कुल बातों को देखकर राजनीतिक समझौता होता हुआ नहीं देख पड़ता है। देश में समाजवाद भी कुछ-कुछ चलने लगा है। रियाया लगान तथा ऋणिया ऋण नहीं अदा करना चाहते। सरकार इन मामलों में नए नियम बना रही है, जो धनिकों के प्रतिकूल हैं। कांग्रेस भी उनके प्रतिकूल है। इसलिये धनिकों से कांग्रेस का कुछ बिगाड़ भी है। अधिकार-ध्वंसन-प्रथा ज़ोरों से चल रही है। सस्ताई के कारण ज़मींदारी, महाजनी, वकालत, दूकानदारी आदि सब मिट्टी में मिल रही हैं। देश-दशा बहुत ही अभूतपूर्व है। जैसा अनुभव समाज को शताब्दियों में नहीं होता था, वैसा अब दशाब्दियों में हो रहा है। राजसत्ता तथा पूँजीपति दोनो के प्रति बहुत कुछ अशांति है। साहित्य भी इन्हीं विचारों से भरा हुआ लिखा जा रहा है। रोज़गार के गिरने से लोगों को काम नहीं मिल रहा है। पढ़े-लिखों की संख्या बहुत बढ़ी है, किंतु

बेकारी तथा क्षुधा के कारण देश-दशा बहुत गड़बड़ है। सारे संसार में सस्ताई तथा व्यापारिक क्षति से कुछ-कुछ यही दशा है। भूमंडल की महाशक्तियाँ अनेकानेक सभाएँ कर-करके युक्तियाँ विचार रही हैं, किंतु कोई फल नहीं निकलता। रेल, डाक आदि की आय गिरी हुई है। कोई काम भली भाँति नहीं चल रहा है। देखना चाहिए कि भविष्य क्या सामने लाता है। समझ लेना चाहिए कि हमारे साहित्य में उपर्युक्त दशाओं का प्रतिबिंब प्रायः झलकता है। उसके नेता एक ओर महात्माजी हैं और दूसरी ओर सरकार। अब साहित्य की प्रधान डोर उठाई जाती है।

आजकल के उत्कृष्ट लेखकों अथवा कवियों में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (१६७६), रामशंकर शुक्ल 'रसाल' (१६८०), कृष्ण-कांत मालवीय (१६७६), गंगाप्रसाद मेहता (१६८५), हृदयेश (१६८५), अनूप (१६८७), कृष्णविहारी मिश्र (१६७६), रमा-शंकर मिश्र आदि के नाम आते हैं। आजकल के महापुरुषों में केवल महात्माजी का नाम आता है। मुसलमान लेखकों में पीरमुहम्मद (१६८०) तथा कमरुद्दीन (१६८५) मुख्य हैं, और स्त्री-लेखिकाओं में पार्वतीदेवी (१६७७), सुशीलादेवी (१६८०), केसर-कुमारीदेवी (१६८२), शिवकुमारीदेवी (१६८२), चंद्रावतीदेवी लखनपाल, इंदुमती शर्मा (१६८६) तथा विद्यावतीदेवी (१६८६) के नाम आए हैं। देश-भक्तों में महात्माजी के पीछे गणेशदत्त शर्मा (१६७६), वशिष्ठनारायण (१६८१), मनोरंजनप्रसाद (१६८२) तथा श्रीरत्न शुक्ल (१६८५) के नाम हैं। इन लोगों ने इस विषय पर ही मुख्यतया रचनाएँ की हैं। व्याख्याताओं में महात्माजी से इतर कोई मुख्य नाम नहीं है। और भी विषयों में महात्माजी का नाम आ सकता है, किंतु उनका न कहकर हम आगे से इतरों-मात्र का कहेंगे। समाज-सुधार में अवधविहारी

अवस्थी (१९८४) तथा देवव्रत शास्त्री (१९८४) हैं। इतरों ने भी इस विषय पर लिखा है, किंतु इन महाशयों ने इसी की मुख्यता रक्खी है। पत्र-संपादकों में ईश्वरीप्रसाद शर्मा (१९७६), माखनलाल चतुर्वेदी (१९८०), रमाशंकर मिश्र (१९८७), दुलारेलाल भार्गव (१९८०), हेमचंद्र जोशी (१९८०), आनंदीप्रसाद मिश्र (१९८३), जगन्नाथप्रसाद मिश्र (१९८३), कृष्णविहारी मिश्र (१९७६), रामशंकर तेवारी, श्यामसुंदर चतुर्वेदी (१९८६), रामसेवक त्रिपाठी आदि अनेक महाशय हैं। इस विषय की दिनोंदिन उन्नति हो रही है, किंतु अस्थायी विभाग की दशा अभी संतोषदायिनी नहीं है, जैसा ऊपर कहा जा चुका है। वेंकटेशनारायण तेवारी, ज्योतिप्रसाद निर्मल आदि भी अच्छे पत्र-संपादक हैं। पुस्तक-संपादकों में सूर्यकरण पारीक (१९८७) तथा दुलारेलाल भार्गव मुख्य हैं, विशेषतया द्वितीय महाशय। उपयोगी विषयों में शंकरराव जोशी (१९७६) का विवरण देखना चाहिए। हास्य-रस में बदरीनाथजी भट्ट (१९८०) प्रधान हैं। प्रेमात्मक, आलंकारिक व्यंग्य-चित्र आदि में अभी तक कोई नहीं है।

महाराजाओं में इस काल श्रीमान् ओरछा-नरेश महेंद्र महराजा वीरसिंहजू देव कथनीय हैं। आपने हॉकी खेल पर एक अच्छी पुस्तक स्वयं लिखी है तथा आपके दरबार में कवियों का अच्छा मान है। शास्त्रकारों में धर्मेंद्रनाथ शास्त्री (१९७९), प्रसिद्धनारायणसिंह (१९८०), अवधकिशोर वर्मा (१९८२), तथा चंद्रशेखर शास्त्री (१९८२) के नाम हैं। पौराणिक विषयों पर कोई नहीं है। नाटककारों में मधुवनी (१९७७), हरद्वारप्रसाद (१९७७) तथा बलदेवप्रसाद मिश्र (१९८०) हैं। इनमें अभी तक किसी की मुख्यता नहीं है। समय पर ये भी महत्त्व-पूर्ण हो सकते हैं। औपन्यासिकों

में ईश्वरीप्रसाद शर्मा (१९७६), निरालाजी (१९७६), मधुवनी (१९७७), सूर्यानंद वर्मा (१९८१), लक्ष्मीनारायणसिंह सुधांशु (१९८९) के नाम हैं, तथा आख्यायिका में जनार्दन झा (१९८६) एवं धन्यकुमार (१९८८) के। सत्कवियों में निरालाजी, रामलोचन शर्मा (१९७६), गयाप्रसाद श्रीहरि (१९७६), रामाज्ञा द्विवेदी (१९७६), पिंगलसिंह (१९७७) काशीनाथ द्विवेदी (१९७९), रामसहाय पांडेय (१९७९), रामशंकर रसाल (१९८०), उदयशंकर (१९८०), प्रफुल्लचंद्र ओझा (१९८०), उमाशंकर उमेश (१९८२), वैद्यनाथ मिश्र (१९८२), जगन्नाथ मिश्र गौड़ (१९८८), भुवनेश्वरसिंह (१९८२), रामचंद्र शर्मा (१९८३), रामचंद्र शुक्ल सरस (१९८४), अनूप (१९८२), रमाशंकर मिश्र (१९८२), हृदयेश (१९८४), अवधविहारी श्रीवास्तव (१९८७), नंदकिशोर झा (१९८८), भगवतीचरण वर्मा (१९८९) तथा बालकृष्ण राव (१९८९) के नाम हैं। इनमें निरालाजी और हृदयेश विशेषतया श्लाघ्य हैं। इनकी रचनाएँ उच्च कोटि की होती हैं। अनूप अच्छी वीर-काव्य बनाते हैं तथा रमाशंकर अच्छे पत्र-संपादक एवं सुकवि हैं। अनुवादकर्ताओं में एक़बालबहादुर वर्मा (१९७६) तथा धन्यकुमार जैन (१९८८) कथनीय हैं। सूर्य वर्मा (१९८०) निबंधकार हैं। समालोचकों में कृष्णबिहारी मिश्र तथा सरस कथनीय हैं। इतिहासकारों में ईश्वरीप्रसाद (१९७६), सत्यकेतु विद्यालंकार (१९८०) जयचंद विद्यालंकार तथा गंगाप्रसाद मेहता (१९८४) वर्ण्य हैं। मेहताजी ने चंद्रगुप्त विक्रमादित्य-नामक ग्रंथ में गुप्त-साम्राज्य का बहुत ही सुपाठ्य वर्णन अच्छी छान-बीन के साथ किया है तथा प्रमार विक्रमादित्य को भी दृढ़ करनेवाले पुरातत्त्व लेखकों के प्रबल प्रमाण दिए हैं। जयचंद बहुत ही श्लाघ्य ऐतिहासिक लेखक हैं।

सूर्यकरण पारीक (१६८७) श्रेष्ठ गद्यकार हैं, तथा निरालाजी (१६७६) और जनार्दन झा द्विज (१६८७) छायावादी हैं। इनमें निरालाजी का अच्छा नाम है। इनके कुछ वर्णन बहुत उत्कृष्ट हैं, किंतु अपने पद्यों का कोई अच्छा संग्रह आपने नहीं छपाया है। परिमल छपा है, किंतु उसमें संग्रह से उत्कृष्ट छंद छूट रहे हैं। वह साधारण पद्य चमत्कार-मात्र दिखलाता है। इनके अच्छे पद्य भी हैं, जो हमने सुने हैं, किंतु अभी वे ग्रंथ-रूप में प्रकाशित नहीं हैं, कोई प्रसिद्ध व्याकरणकार नहीं हैं। बालोपयोगी ग्रंथकार शालग्राम द्विवेदी (१६७७) हैं। सं० १६८५ के लगभग युक्त-प्रांतीय सरकार ने भारी उदारता दिखलाते हुए ५०,०००) वार्षिक सहायता देकर हिंदोस्तानी एकेडेमी-नाम्नी एक संस्था प्रयाग में स्थापित की, जिसमें हिंदी तथा उर्दू की उन्नति के काम होते हैं। इसके बहुतेरे विद्वान् सभ्य हैं तथा राइट ऑनरेबुल डॉक्टर सर सप्रू सभापति हैं। इसकी हिंदी और उर्दू की दो तिमाही पत्रिकाएँ निकलती हैं। उर्दू के विषय में यहाँ कुछ कहना अनावश्यक है। हिंदी की तिमाही पत्रिका में बड़े ही गंभीर, खोज-पूर्ण तथा शिक्षाप्रद लेख अगाढ़ पंडितों के लिखे हुए निकलते हैं। इस पत्रिका से हिंदी की पत्रिकाओं का गौरव है। एकेडेमी द्वारा प्रकाशित कई पुस्तकें बहुत पांडित्य-पूर्ण, उपयोगी तथा आवश्यक विषयों पर बहुत ही महत्त्व-पूर्ण हैं। युक्त-प्रांतीय विश्वविद्यालयों के कई शिक्षक भी हिंदी की अच्छी सेवा करते हैं, तथा कई अन्य भारी-भारी डिगरी-प्राप्त महाशय एवं नवयुवक लोग भी हिंदी की ओर उचित ध्यान देते अथवा इसकी सेवा में तत्पर रहते हैं। उर्दू में हैदराबाद दक्खिन की उस्मानिया-युनिवर्सिटी ने अनेकानेक विषयों के वैज्ञानिक, दार्शनिक आदि ग्रंथ बनवाकर इसे शिक्षा का माध्यम बना रक्खा है। हिंदी में भी इसी प्रकार के ग्रंथ बन रहे हैं, और प्रायः २५ वर्षों

में हमारा यह विभाग संपन्न हो जायगा, ऐसी आशा है। हिंदी का भविष्य बहुत समुज्वल देख पड़ रहा है।

तृतीय भाग विनोद के ३९वें अध्याय में हमने पत्र-पत्रिकाओं का कुछ वर्णन किया था। अब आगे मुख्य-मुख्य वर्तमान पत्र-पत्रिकाओं की एक सूची दी जा रही है। इनमें माधुरी, कल्याण, सुधा, सरस्वती, हिंदोस्तानी एकेडेमी की तिमाही पत्रिका, प्रताप आदि की महत्ता है। इस सूची के पीछे लेखकों तथा कवियों के पृथक् विवरण दिए जाते हैं।

सामयिक पत्र-पत्रिकाएँ

(मासिक)

माधुरी—संपादक, मातादीन शुक्ल; नवलकिशोर-प्रेस, लखनऊ।

सुधा (पाक्षिक)—संपादक तथा प्रकाशक, दुलारेलाल भार्गव; गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस, लखनऊ।

हंस—संपादक, प्रेमचंद (सरस्वती-प्रेस, काशी से मुद्रित)।

सरस्वती—संपादक, देवीप्रसाद शुक्ल तथा सिंह महाशय, प्रयाग।

आरोग्य-विज्ञान—संपादक, ख्यालीराम द्विवेदी, राजवैद्य, इंदौर।

बाल-सखा—संपादक, श्रीनाथसिंह; इंडियन-प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

भक्ति—संपादक, कृष्णानंद-भूमानंद रेवाड़ी, पंजाब।

उद्योग-धंधा—कलकत्ते से शिल्प, व्यापार-संबंधी।

वीणा—संपादक, कालिकाप्रसाद दीक्षित 'कुसुमाकर', इंदौर, (म० भ० हिं० सा० स०)।

कल्याण—संपादक, हनुमानप्रसाद पोद्दार; गीता-प्रेस, गोरखपुर।

सुकवि—संपादक, गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही'; सुकवि-प्रेस, कानपुर।

ग्राम-सुधारक—संपादक, शारदाचरण बी० ए०, एल्-एल्० बी०, झाँसी।

विद्यार्थी—संपादक, रघुनंदन शर्मा; हिंदी-प्रेस, प्रयाग।

कुमार—संपादक, कुँवर सुरेशसिंह, कालाकाँकर।

हिंदी-प्रचारक—संपादक, हरिहर शर्मा; हिंदी-प्रचार-प्रेस, मद्रास (ट्रिप्लीकेन)।

कान्यकुब्ज—संपादक, रामशंकर शुक्ल 'रसाल' एम्० ए०, प्रयाग।

प्रेमा—संपादक, रामानुजलाल श्रीवास्तव, जबलपुर।

विशाल भारत—संपादक, बनारसीदास चतुर्वेदी, कलकत्ता।

विश्वमित्र—संपादक, हेमचंद-छलाचंद जोशी, कलकत्ता।

गंगा—संपादक, रामगोविंद त्रिवेदी, भागलपुर।

सहेली—संपादक, विजय वर्मा, प्रयाग।

आर्य-महिला—संपादक, रमेशदत्त पांडेय बी० ए०, काशी।

चाँद—संपादक, नवजादिकलाल श्रीवास्तव; प्रयाग।

वाणी—संपादक, विश्वनाथ खोड़े सखाराम, खरगोन।

वैशाली—संपादक, भुवनेश्वरसिंह 'भुवन' मुज़फ़्फ़रनगर, विहार।

बालक—संपादक, रामलोचनशरण शर्मा, लहरियासराय, दरभंगा।

विज्ञान—संपादक, गोपालस्वरूप भार्गव, प्रयाग।

माया—क्षितींद्रमोहन मुस्तफ़ी, बालकृष्ण वलदुआ, प्रयाग।

हिंदोस्तानी एकेडेमी तिमाही पत्रिका

(साप्ताहिक)

स्वराज्य—संपादक, सिद्धिनाथ-माधव आगरकर; खँडवा।

कर्मवीर—संपादक, माखनलाल चतुर्वेदी, खँडवा।

विजय—संपादक, रामाशीशसिंह (?), कलकत्ता।

बंगवासी—संपादक, रासविहारी राय शर्मा, कलकत्ता विश्वमित्र—संपादक, मातासेवक पाठक, कलकत्ता लोकमान्य—संपादक, एम्० एल्० चौधरी, कलकत्ता	} साप्ताहिक एवं दैनिक

वेंकटेश्वर—संपादक, निरंजन शर्मा, बंबई।

जागरण—संपादक, प्रेमचंद, काशी।

प्रताप—संपादक, बालकृष्ण शर्मा, कानपुर।

आर्यमित्र—संपादक, हरिशंकर शर्मा, आगरा।

हलधर—संपादक, गौरीनाथ झा, भागलपुर।

फ़ीज़ी-समाचार—फ़ीज़ी।

(अर्द्ध-साप्ताहिक)

भारत—संपादक, केशवदेव शर्मा, प्रयाग।

(दैनिक)

स्वाधीन भारत—संपादक, महादेवसिंह शर्मा, बंबई।

प्रताप—संपादक, हरिशंकर शर्मा, कानपुर।

वर्तमान—संपादक, रमाशंकर अवस्थी, कानपुर।

हिंदी-मिलाप—संपादक, ख़ुशहालचंद, लाहौर।

आज—संपादक, बाबूराव विष्णु पराड़कर, काशी।

अर्जुन—संपादक, सत्यकाम विद्यालंकार, देहली।

अवध-समाचार—गोपीलाल माथुर, लखनऊ।

आनंद—संपादक, महेशनाथ शर्मा, लखनऊ।

सं० १९७६ से ९० तक के कवि व लेखक

समय—संवत् १९७६

नाम—(४२८५) इक़बालबहादुर वर्मा (सेहर) हथग्राम, ज़िला फ़तेहपुर।

जन्म-काल—सं० १९४२।

रचना-काल—लगभग सं० १९७६।

ग्रंथ—(१) सत्याग्रह का महत्त्व (लेख), (२) 'शेख़ सादी-कृत, फ़ारसी करीमा' का हिंदी-पद्यानुवाद, (३) शकुंतला का उर्दू-पद्यानुवाद, (४) स्फुट उर्दू तथा हिंदी-कविताएँ।

विवरण—आप श्रीवास्तव कायस्थ मुंशी शिवनारायणलालजी के पुत्र हैं। आरंभ में आपकी कृतियाँ उर्दू-भाषा में ही हुआ करती थीं। पश्चात् हिंदी-भाषा से इन्हें प्रेम हुआ, और अब इसी भाषा में आप रचनाएँ किया करते हैं। इनकी हिंदी तथा उर्दू की कविताएँ, 'ज़माना', 'अदीब', 'प्रभा', 'मर्यादा' आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। आप सुकवि हैं।

उदाहरण—

न तुझ बिन हो सकता उत्थान,
अमित तेरी महिमा, बलिदान!
निपट यह मन जब हुआ निराश, नई उत्पन्न हुई फिर आश;
परिस्थिति का करके हुतनाश, प्रकृति में होता सदा विकाश।
इसी को तू कर रहा बखान,
अमित तेरी महिमा, बलिदान!
जलाता तू उर में वह आग कि तपकर मन बनता बे-लाग;
उपजता क्रमशः ऐसा त्याग, अधिक बढ़ता तुझसे अनुराग।
सुगम होता आदर्श-विधान,
अमित तेरी महिमा, बलिदान!
प्रथम थे जो मनुष्य अति दीन, बँधे बंधन में स्वत्व-विहीन;
उन्हें दे-देकर स्फूर्ति नवीन, किया तूने सब विधि स्वाधीन।
प्रकट की अपनी शक्ति महान्,
अमित तेरी महिमा, बलिदान!
जहाँ तूने पाया विस्तार, हुआ बस जानो राष्ट्रोद्धार;
गई मिट ज़ुल्मों की भरमार, बने फिर शुद्ध समस्त विचार।
किया यों नव युग का आह्वान,
अमित तेरी महिमा, बलिदान!

तुझे सत्पुरुषों ने कर प्यार, दिया निज श्रद्धा का उपहार;
'तिलक', 'गांधी' से नर-अवतार, तुझी पर तन-मन-धन सब वार।
हुए जीते ही जी क़ुर्बान,
अमित तेरी महिमा, बलिदान!

नाम—(४२८६) ईश्वरीप्रसाद शर्मा, आरा।

जन्म-काल—सं० १९५१।

रचना-काल—सं० १९७६।

मृत्यु-काल—सं० १९८४।

ग्रंथ—(१) चंद्रकुमार, (२) हिरण्मयी, (३) श्रीरामचरित्र, (४) सीता, (५) सूर्योदय (नाटक), (६) रँगीली दुनिया (नाटक), (७) सिपाही-विद्रोह, (८) पंचशर (गद्य-काव्य), (९) उद्भ्रांत प्रेम, (१०) अन्नपूर्णा का मंदिर, (११) इंदुमती, (१२) प्रेम-गंगा, (१३) प्रेमिका, (१४) जल-चिकित्सा, (१५) चना-चबेना (कविता), (१६) सौरभ (कविता), (१७) सुशीला-शिक्षा, (१८) सच्ची मैत्री, (१९) बाल-गल्पमाला इत्यादि।

विवरण—यह पं० सदल मिश्र के वंशज शाकद्वीपी ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम पं० शार्ङ्गधर मिश्र था। कुमार देवेंद्रप्रसाद जैन तथा 'सरस्वती' के भूतपूर्व संपादक पं० देवदत्तजी शुक्ल इनके सहपाठियों में से हैं। यह 'मनोरंजन,' 'पाटलि-पुत्र', 'लक्ष्मी', 'श्रीविद्या', 'शिक्षा' और 'धर्माभ्युदय' आदि मासिक पत्र-पत्रिकाओं के समय-समय पर संपादक थे। इनके मौलिक तथा अनुवादित ग्रंथों से पता चलता है कि यह एक सिद्धहस्त लेखक थे। अपने जीवन-काल में इन्होंने लगभग ८०-९० पुस्तकें लिखीं। इनकी गद्य-पद्य-मिश्रित 'कचालू'-नामक पुस्तक आकस्मिक मृत्यु के कारण प्रकाशित होने से रह गई।

उदाहरण—

देश-सुधार, समाज-सुधार की बातैं करैं चटकी-मटकी ;
रंग नवीन सदा बदलैं, दिखलावैं कला वे महा नट की ।
खद्दर-चद्दर भेष दरिद्दर, देश की भक्ति भरैं टटकी ;
जाय जहन्नुम देश भले, रहैं चंदहि पै अँखियाँ अटकी ॥ १ ॥
रूप जनाने बनाय करैं, मरदाने-सी बात सदा टटकी ;
मेल-मिलाप की बातैं करैं पर घातैं करैं वे खटापट की ।
देखि निराले नए रँग-ढंग रहैं सबकी मतियाँ भटकी ;
रंग दुरंगे तजैंगे कबै, यह देखन को अँखियाँ अटकी ॥ २ ॥

नाम—(४२८७) गणेशदत्त शर्मा गौड़, उपनाम 'इंद्र' ।

जन्म-काल—सं० १९५१ ।

ग्रंथ—(१) वैदिक पताका, (२) स्वास्थ्योपदेश, (३) उपदेश-कुसुमांजलि, (४) गड़ा धन, (५) भीम-चरित्र, (६) रूप-सुंदरी, (७) हिंदी-गुजराती-कोष, (८) लवकुश-चरित्र, (९) कृष्णापमान, (१०) वीर कर्ण, (११) पुजारीजी नरक में क्यों ?, (१२) महाराणा संग्रामसिंह, (१३) स्वप्न-दोष, (१४) खादी का इतिहास, (१५) नागरी-पूजा, (१६) शुद्ध नामावली, (१७) अर्जुन, (१८) अभिमन्यु, (१९) दीर्घायु, (२०) वर्ण-वध, (२१) भीमसेन, (२२) भीष्म, (२३) द्रोणाचार्य, (२४) मदन-तनु-दहन, (२५) बाल-विवाह, (२६) इच्छित संतान ।

विवरण—आप आगर मालवा-निवासी, लब्ध-प्रतिष्ठ लेखक और सफल संपादक हैं ।

नाम—(४२८८) गयाप्रसाद (श्रीहरि) खैराबाद, ज़िला सीतापुर ।

जन्म-काल—सं० १९५१ ।

रचना-काल—सं० १९७६ ।

ग्रंथ—(१) प्रेम-मंजरी (संस्कृत-ग्रंथ, अप्रकाशित), (२) उद्धव-दूत (अप्रकाशित), (३) गीतार्थ-चंद्रिका ।

विवरण—यह स्वर्गीय पं० केदारनाथजी के पुत्र हैं । खड़ी बोली तथा व्रजभाषा दोनो में समान रूप से रचना करते हैं । इस समय यह लखनऊ में वैद्यक कर रहे हैं । आप सुकवि हैं ।

उदाहरण—

नयनांजल में अश्रु-बिंदु जब छलक-छलक भर जाते हों ;
शुद्ध सीप के मुक्ता-फल-सम झलक-झलक झर जाते हों ।
हे हृदयेश ! हृदय जब मेरा तेरे बिन हो अकुलाया ;
पा जाऊँ मैं पुण्य रूप तव प्रेममयी शीतल छाया ।
स्वामिन् ! मन-मंदिर जब मेरा नयन-सलिल से धुल जावे ;
बहुत दिनों से लगा कपट का यह कपाट जब खुल जावे ।
व्याकुल प्रान निकलना चाहे तव दर्शन-हित ललचाया ;
पा जाऊँ तव पुण्य-रूप की प्रेममयी शीतल छाया ।

मंजुल मृणाल सो मृदुल भुजमाल त्यागि,
कौन भाँति सेली अलबेली गले धारिए ;
गोकुल-गलीन में गोविंद प्रेम-गीत गाय,
नीरस विराग राग कैसे धौं उचारिए ।
'श्रीहरि' सनेही को सँयोग सुख भूलि कैसे,
योगिनी बनैंगी निज चित्त तो बिचारि ;
कोटि काम सुंदर अनूप श्याम-रूप पेखि,
काहि अब ऊधो इन नैनन निहारिए ।

नाम—(४२८९) महात्मा गांधी (मोहनदास—कर्मचंद) ।

जन्म-काल—सं० १९२६ ।

रचना-काल—सं० १९७६ ।
ग्रंथ—संपादक हिंदी-नवजीवन, साप्ताहिक ।

विवरण—आप भारत के वास्तविक महात्मा हैं । राम, कृष्ण, गौतम बुद्ध, और गांधी ये चार भारत के महापुरुष हुए हैं । इनमें कौन बड़ा और कौन छोटा है, यह कहना दुस्साहस होगा । आपने सं० १९७६ के सम्मेलन को गौरवान्वित किया । हिंदी को राष्ट्र-भाषा बनाने में आपका बड़ा हाथ है । भारत में इस समय आप देवता के समान पूजनीय माने जाते हैं । आपके विचारों तथा राजनीतिक कार्यों से कुछ लोगों का मतभेद भी है, किंतु आपका वास्तविक माहात्म्य हमारे नवयुवकों के आचार-शुद्धीकरण में है । आत्मबलि, देश-हित, पर-हित आदि की चाल आपके प्रयत्नों से बहुत बढ़ी है । हरिजनों की उन्नति पर भी आप भगीरथ-प्रयत्न करते हैं । हिंदू-संगठन की वृद्धि आपके द्वारा अच्छी है ।

नाम—(४२९०) धनराजपुरी, महंत, जिला चंपारन ।
जन्म-काल—सं० १९६० ।
रचना-काल—सं० १९७६ ।
ग्रंथ—स्फुट कविताएँ ।

विवरण—यह महंतजी श्रीजंगबहादुर गिरि के पुत्र हैं । १९७८ में आप 'व्याकरण-वाचस्पति' की परीक्षा में सम्मान-सहित उत्तीर्ण हुए तथा 'साहित्य-सरोज' की भी उपाधि पाई । इनकी रचनाएँ सं० १९७६ से सामयिक समाचार-पत्रों में 'किंजल्क' और 'अलि' उप-नाम से प्रकाशित होती रहती हैं । कहा जाता है, आजकल यह 'विधवा'-नामक काव्य-ग्रंथ और 'हितोपदेश' का अनुवाद करने में लगे हैं । संन्यास-धर्म लेकर आजकल यह सिकटामठ के महंत हैं । कविता भाव-पूर्ण एवं नवीनत्व से अलंकृत है ।

उदाहरण—

वज्राघात

मुकुलित कली हवा में थी काँपती अपित-सी,
भौंरा वहीं खड़ा था।
एक दिन कली खिलेगी, रस से भरी अनूठी,
यह सोचकर अड़ा था।
ऊषा-गमन निकट था, नभ का रँगीन पट-सा,
मृदु वायु बह रही थी।
व्याकुल हुआ भ्रमर था, इच्छा दबी छिपी-सी—
जी में तरस रही थी।
सौरभमयी पवन थी, वासित दिशा बनाती,
पर बेख़बर भ्रमर था,
"निश्चय यही हमारी एक दिन कली खिलेगी।"
यह सोच वह निडर था!
रो-रो कटेंगे निशि दिन, उत्ताप कम न होगा—
यह प्रेम आग होकर!
हा हंत! स्वप्न में भी भौंरा न सोचता था—
हम मर मिटेंगे रोकर!!
देखा हृदय कड़ा कर जिस दृश्य को मधुप ने,
वह रह गया तड़पकर!
बादल बिना कहाँ से उस पर अरे! बिजलियाँ
आकर गिरीं कड़ककर!!
माला बना कली को, हा! अन्य के गले में,
माली पिन्हा रहा है!
रे दुष्ट दैव! लखकर यह दृश्य तू न रोता,
क्यों जी जला रहा है!

माली अरे कुचाली ! तूने न प्रेम देखा,
क्या अन्य की कली थी ?
थी जान वह मधुप की, उसका मधुप हृदय था,
अलि - प्रेम में पली थी !!
जो खो गया मधुप का, वह क्या उसे मिलेगा ?
माली अरे ! बता तू ?
जो है दशा भ्रमर की, वह किस तरह मिटेगी,
यह तो हमें जता तू !

नाम—(४२९१) रामलोचन शर्मा 'कंटक', ग्राम रामपुर, ज़िला दरभंगा।

जन्म-काल—सं० १९६२।

रचना-काल—सं० १९७६।

ग्रंथ—(१) कसौटी (अनुवाद), (२) कर्म-शिक्षा (सं० १९८१), (३) मोदक, (४) मोहनभोग, (५) चमचम, (६) ब्रह्मचर्य-शिक्षा, (७) प्रेम-पत्रावली, (८) सदाचार-शिक्षा, (९) नवीन पत्र-चंद्रिका, (१०) नवीन इतिहास-परिचय, (११) नवीन भूगोल-परिचय।

विवरण—यह पं० जयदेव शर्मा के सुपुत्र हैं। इनकी हिंदी-शिक्षा पं० रामचरित्र झा के अध्यापकत्व में हुई और तभी से इनकी प्रवृत्ति साहित्य-सेवा की ओर हुई। यह सं० १९८१ में 'हिंदी-भूषण' की परीक्षा में सर्वप्रथम उत्तीर्ण हुए। आप सरल एवं मिलनसार स्वभाव के कारण अपने को 'अजातशत्रु' कहा करते हैं। इस समय यह काशी-हिंदू-विश्वविद्यालय में हिंदी तथा संस्कृत की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। आप खड़ी बोली के सत्कवि हैं। देश-प्रेम के कारण आप जेल में हैं।

अभिलाष

उदाहरण—

विरह-व्यथा से क्षत-विक्षत यदि हृदय तुम्हारा होऊँ !
प्रेम-अश्रु-कण-प्लावित नयनों का यदि तारा होऊँ !
जीवन के आशा-तरु का यदि कुसुम नियारा होऊँ !
अगर तुम्हारे शांत शयन का स्वप्न पियारा होऊँ !
अगर तुम्हारी कलित कल्पना का उद्घाटन होऊँ !
अगर तुम्हारा तन छूने को मलय-पवन घन होऊँ !
अगर तुम्हारे अन्वेषण का चारु चयन कन होऊँ !
चिर कृतज्ञ तो होऊँ विधि का यदि तव मृदु मन होऊँ !

नाम—(४२९२) शंकरराव जोशी।

ग्रंथ—(१) संसार-व्यापी असहयोग, (२) पंजाब का हत्याकांड, (३) रोम-साम्राज्य, (४) फ़सल के शत्रु, (५) उद्यान, (६) वर्षा और वनस्पति, (७) ग्राम-संस्था, (८) तरकारी की खेती, (९) कीट-संसार, (१०) कीट-विज्ञान, (११) भूकंप।

जन्म-काल—सं० १९५१।

रचना-काल—सं० १९७६।

विवरण—यह पालीवाल ब्राह्मण पं० गोपालराव के पुत्र हैं। कृषि-शास्त्र का अध्ययन कर इन्होंने इस विषय पर उत्तमोत्तम पुस्तकें लिखी हैं।

नाम—(४२९३) सुभद्राकुमारी चौहान, जबलपुर।

जन्म-काल—सं० १९६१।

रचना-काल—लगभग सं० १९७६।

विवरण—आपने 'मुकुल' और 'बिखरे हुए मोती' पर दो बार हिंदी-साहित्य-सम्मेलन से पारितोषिक प्राप्त किया है।

नाम—(४२९४) सूर्यकांत त्रिपाठी, 'निराला', ग्राम गढ़ाकोला, ज़िला उन्नाव (संयुक्त प्रांत)।

जन्म-काल—सं० १९५५।

कविता-काल—सं० १९७६।

ग्रंथ—(१) रवींद्र-कविता-कानन, (२) शकुंतला का कथानक, (३) महाराणा प्रताप, (४) भीष्मपितामह, (५) प्रह्लाद, (६) हिंदी-बँगला-शिक्षा, (७) परिव्राजक स्वामी विवेकानंद (अनुवाद), (८) रामकृष्ण-वचनामृत, (अनुवाद, चार भाग); (९) वात्स्यायन, काम-सूत्र (अनुवाद), (१०) अनामिका (पद्य), (११) लिली (८ कहानियों का संग्रह), (१२) रेखा (खंड काव्य), (१३) अप्सरा (उपन्यास), (१४) परिमल (काव्य-ग्रंथ), (१५) अलका (उपन्यास), (१६) निरुपमा (उपन्यास), (१७) प्रबंध-पद्म (निबंध-संग्रह)।

विवरण—आप पं० रामसहायजी त्रिपाठी के पुत्र हैं और जन्म-स्थान महिषादल-राज्य (मेदिनीपुर, बंगाल) है। आपकी शिक्षा राजा सतीप्रसाद गर्ग बहादुर द्वारा बंगाल ही में हुई। कुछ समय तक श्रीरामकृष्ण-मिशन-अद्वैत आश्रम के हिंदी मुख-पत्र 'समन्वय' के आप संपादक भी रहे हैं। अब तक आपने लग-भग २०० कविताएँ रची हैं। ऊपर दिए हुए आपके ग्रंथों में से नं० २, ६ और १२ अभी अमुद्रित हैं। यह महाशय एक उच्च कोटि के छायावादी कवि हैं। गद्य-लेखक भी बहुत ही अच्छे हैं। आपकी रचनाओं में दार्शनिकता एवं आध्यात्मिकता का प्राचुर्य है। कुछ सूफ़ी सिद्धांतों का भी समावेश आपने किया है। मात्रा और वर्णवाले छंदों में इन्होंने स्वतंत्रता उत्पन्न की है। वर्ण-छंदों का माध्यम-सा निकालकर निम्नांकित जुही की कली के समान कविताएँ आपने प्राचुर्य से लिखी हैं। इनसे रंगमंच की भाषण-कला को नवीन ज्योति प्राप्त

हुई है। वैसे ही मात्रिक स्वच्छंद छंद की आपने उपर्युक्त वर्ण छंद के समान सृष्टि की है। इसमें बँधे हुए प्राचीन प्रथानुयायी संगीत की भी मुक्ति है। अर्थात् वह बद्ध तालों को छोड़कर इनके छंद के समान नवीन गति पर भी चलता है।

उदाहरण—

"जूही की कली"

विजन - वन - वल्लरी पर
सोती थी सुहाग-भरी—स्नेह-स्वप्न-मग्न—
अमल-कोमल-तनु तरुणी, जूही की कली,
दृग बंद किए—शिथिल—पत्रांक में।
वासंती निशा थी,
विरह-विधुर प्रिया-संग छोड़
किसी दूर देश में था पवन
जिसे कहते हैं मलयानिल।
आई याद बिछुड़न से मिलन की वह मधुर बात,
आई याद कांता की कंपित कमनीय गात,
आई याद चाँदनी की धुली हुई आधी रात,
फिर क्या ?—पवन
उपवन-सर-सरित-गहन-गिरि-कानन
कुंज-लता-पुंजों को पार कर
पहुँचा जहाँ उसने की केलि खिली-कली-साथ।
सोती थी, जाने कहो, कैसे प्रिय-आगमन वह ?
नायक ने चूमे कपोल,
डोल उठी वल्लरी की लड़ी जैसे हिंडोल।
इस पर भी जागी नहीं, चूक क्षमा-भागी नहीं,

निद्रालस बंकिम विशाल नेत्र मूँदे रही,
किंवा मतवाली थी यौवन की मदिरा पिए, कौन कहे ?
निर्दय उस नायक ने निपट निठुराई की
कि झोंकों की झड़ियों से सुंदर सुकुमार
देह सारी झकझोर डाली,
मसल दिए गोरे कपोल गोल।
चौंक पड़ी युवती,
चकित चितवन निज चारो ओर फेर,
हेर प्यारे को सेज-पास,
नम्र-मुखी हँसी, खिली,
खेल रंग, प्यारे-संग।

संसार के भावों में साम्य स्थापन करने के लिये इन्होंने गद्य में अनेक प्रकार के अपने ही विश्वजनीन भाव साहित्य को प्राचुर्य से दिए हैं। ऐसे ही पद्य में भी प्राचीन अनेकानेक रूढ़ियों को तोड़कर छंदों की नवीन भूमि पर साहित्य के देदीप्यमान मंच को स्थापित किया है। साहित्य में आप जिस अद्वैत दर्शन को अपनी भाषा अथवा उत्कृष्ट भावों से रंजित करके जनता को प्रदान करते हैं, उसका विस्तार हो समाज को लक्ष्य-प्राप्ति में सहायक होगा। आप-जैसे नवयुवकों से हमारे वर्तमान साहित्य की शोभा है।

समय—सं० १९७७

नाम—(४२९५) दीनानाथ 'अशंक', पहाड़गाँव, जालौन।

जन्म-काल—सं० १९५८।

कविता-काल—सं० १९७७।

ग्रंथ—(१) दिव्य विचार, (२) देवल देवी, (३) चारु-

चिंतन, (४) संसार-दर्शन, (५) शिक्षा-सप्तसती, (६) आरोग्य-शतक।

उदाहरण—

अपनी अपक्क मति के समान,
करता हूँ तेरा यशोगान;
है सत्य भले हों अंड - बंड,
जय बंदनीय बुंदेलखंड।
गिरि चित्रकूट तेरा प्रधान—
जब किया राम ने शोभमान;
कह उठा धन्य था अखिल अंड,
जय बंदनीय बुंदेलखंड।
श्रीवीरसिंह - से दानवीर,
हरदौल - तुल्य बलि - वीर - धीर;
है बढ़ा चुके तेरा घमंड,
जय बंदनीय बुंदेलखंड।

नाम—(४२९६) पार्वतीदेवी।

रचना-काल—सं० १९७७।

ग्रंथ—स्फुट कविता।

विवरण—आप हिंदी-संसार के प्रसिद्ध लेखक भाई परमानंद की बहिन हैं। इनका विवाह पंजाब के डॉक्टर मिलखीरामजी से हुआ था, किंतु उक्त डॉक्टर महाशयजी की अकाल मृत्यु हो गई। कांग्रेस-कार्य के हेतु स्त्रियों के संगठन के अभियोग में इन्हें कारावास भी सहना पड़ा। अब इनके जीवन का केवल उद्देश देश तथा साहित्य-सेवा है। महाशय गदाधरप्रसादजी अंबष्ट का कथन है कि उन्होंने कर्ण कवि-कृत 'काव्यकुसुमोद्यान' में इन विदुषी की कविता देखी है। वही कविता हम यहाँ उद्धृत करते हैं।

उदाहरण—

करो जगत में नित शुभ काम; जिससे मिले तुम्हें धन-धाम।
दुष्कर्मों को दीजे त्याग; मन की पकड़ लीजिए बाग।
करै तपस्या या जो योग; ऐसे जग में दुर्लभ लोग।
जिनके मन में नहीं विवेक; ऐसे जग में पुरुष अनेक।

नाम—(४२९७) माताप्रसाद शर्मा 'दत्त कवि' बाराबंकी (अवध)।

जन्म-काल—सं० १९५२।

कविता-काल—लगभग सं० १९७७।

ग्रंथ—(१) नारद-मोह (नाटक, बालार्क-प्रेस, बहराइच), (२) लक्ष्मण-विजय (नाटक, स० १९७९, भारत-भूषण-प्रेस, लखनऊ), (३) भारत-सत्कार (पद्य, सं० १९८०, अमुद्रित), (४) स्फुट कविता।

विवरण—आप कौंडिन्यगोत्रीय शाकद्वीपीय ब्राह्मण पं० राजाराम शर्मा (पाठक) के पुत्र हैं।

उदाहरण—

वर्षा की ब्रजराज-वाटिका

औरै रंग केतकी, गुलाब गुंफ औरै-औरै,
गुलाचीन औरै चारु प्रावृट बहारैं री;
औरै औध, औरै सौध, औरै ब्रज-बाग-पौध,
औरै रंग कोकिला कलाप कुंज भारैं री।
औरै री हिंडोरन में औरै राधा कृष्ण, औरै
तरल तरंगन में औरै ढाँक ढारैं री!
औरै 'दत्त' औरै बुद्धि, और ही के तोरे मन,
औरै किए डारैं ये कदंबन की डारैं री।

नाम—(४२९८) रामगोविंद त्रिवेदी।

जन्म-काल—सं० १९५२ ।

रचना-काल—सं० १९७७ ।

ग्रंथ—(१) दर्शन-परिचय, (२) हिंदी-पुस्तक-कोष, (३) हिंदी-विष्णुपुराण, (४) राजर्षि प्रह्लाद, (५) महासती मदालसा ।

विवरण—आप सरयूपारीण ब्राह्मण अर्जुनप्रसाद त्रिवेदी के पुत्र हैं। संस्कृत के विद्वान् तथा दर्शन-शास्त्र के ज्ञाता हैं। संस्कृत में व्याख्यान देने का आपको अच्छा अभ्यास है। बर्मा में आप ही ने सर्व-प्रथम राष्ट्र-भाषा हिंदी का प्रचार किया, और रंगून में विश्व-दूत पत्र तथा प्रेस की स्थापना की । हिंदी के आप अच्छे लेखक हैं ।

नाम—(४२६९) रामजी शर्मा 'मधुबनी', ज़िला आज़मगढ़ ।

जन्म-काल—सं० १९५६ ।

कविता-काल—सं० १९७७ ।

ग्रंथ—प्रकाशित (१) वैद्य-भूषण (वैद्यक का काव्य-ग्रंथ), (२) महात्मा गांधी (पद्य-बद्ध जीवनी), (३) गोरी बीवी (उपन्यास), (४) मेरी रामकहानी (उपन्यास), (५) महात्मा ध्रुव (खंड काव्य), (६) द्रौपदी-स्वयंवर (खंड काव्य), (७) आज़मगढ़-दर्पण (प्रांतीय इतिहास), (८) महारथी अर्जुन, (९) पतिप्राणा राधा, (१०) हिंदी महाभारत, (११) श्रीकृष्ण-चरित्र, (१२) भीष्म पितामह, (१३) महर्षि दयानंद, (१४) भर्तृहरि-शतक, (१५) नल-दमयंती (नाटक), (१६) द्रौपदी-चीर-हरण (नाटक), (१७) चंद्रिका (उपन्यास), (१८) दृष्टांत-सागर ।

अप्रकाशित—(१) सीता (नाटक), (२) हरिश्चंद्र (नाटक), (३) परम भक्त प्रह्लाद (खंड काव्य), (४) राठौरी तलवार,

(५) इंद्र-पराजय (खंड काव्य), (६) घाघ की कविता (आलोचनात्मक ग्रंथ), (७) उद्गार (स्फुट कविताओं का संग्रह) ।

विवरण—यह सरयूपारीण ब्राह्मण पं० रघुनंदन पांडेयजी के पुत्र हैं। यह महाशय लेखक एवं कवि होते हुए एक अच्छे व्याख्यानदाता भी हैं। इनकी रचनाएँ माधुरी, मनोरमा, कान्यकुब्ज आदि पत्रिकाओं में समय-समय पर निकला करती हैं । [पं० उमाशंकरजी पांडेय, हिराजपट्टी (आज़मगढ़) द्वारा ज्ञात]

उदाहरण—

आशा

खिले रहो बन स्नेह-सुमन इस हृदय-विपिन के ;
मिले रहो बन धीर सदा इस नीर नयन के ।
श्याम सघन घन बने मंजु मन-मोर जिलाना ;
प्यासे हिय को कभी प्रेम-पीयूष पिलाना ।
अब मंजुल मानस में हरे ! राजहंस बन के रहो ;
मम आशा-सरिता में सदा सुधा-धार बनकर बहो ।

नाम—(४३००) हरद्वारप्रसाद जालान, आरा (बिहार) ।

जन्म-काल—सं० १९६१ ।

रचना-काल—सं० १९७७ ।

ग्रंथ—(१) घरकट सूम (प्रहसन, पृ० सं० ६४), (२) क्रूर वेण (पौराणिक नाटक-रूपक, पृ० सं० ११३), (३) पृथ्वी पर स्वर्ग (सामाजिक नाटक), (४) राज्य-चक्र (ऐतिहासिक नाटक), (५) भगवान् कृष्णचंद्र (पौराणिक नाटक) ।

विवरण—यह मारवाड़ी अग्रवाल (जालान) कुलोत्पन्न सेठ सागरमलजी के पुत्र हैं। इनका आदि निवास-स्थान बीकानेर-राज्यांतर्गत चुरू ग्राम है। इनको हिंदी-साहित्य से अत्यंत प्रेम है। आरे से

'मारवाड़ी-सुधार'-नामक पत्र आपने ही निकाला है। आजकल यह 'नवीन भारत' तथा 'विचित्र मंडल' ये दो पुस्तकें लिख रहे हैं। [श्रीयुत सुखदेवसिंहजी, आरा-नागरी-प्रचारिणी सभा, द्वारा ज्ञात]

समय—संवत् १९७८

नाम—(४३०१) फूलदेवसहाय वर्मा एम्० एस्-सी०, काशी।

जन्म-काल—सं० १९४८।

रचना-काल—लगभग सं० १९७८।

ग्रंथ—प्रारंभिक रसायन।

विवरण—आपका जन्म-स्थान सारन-ज़िलांतर्गत कौसड़-ग्राम है। इस समय आप हिंदू-विश्वविद्यालय, काशी के रसायन-विभाग के अध्यापक हैं। आजकल हिंदी में रसायन-विषय की पुस्तकें लिख रहे हैं। आपके रसायन-संबंधी महत्त्व-पूर्ण लेख पत्र-पत्रिकाओं में यथा-समय निकला करते हैं।

नाम—(४३०२) रामनारायण मिश्र।

जन्म-काल—सं० १९५२।

रचना-काल—सं० १९७८।

ग्रंथ—पश्चिमी रसायन का संक्षिप्त इतिहास।

विवरण—रायबरेली-प्रांत-निवासी।

नाम—(४३०३) साँवलिया बिहारीलाल वर्मा एम्० ए०, बी० एल्० छपरा, सारन।

जन्म-काल—सं० १९५३।

रचना-काल—लगभग सं० १९७८।

ग्रंथ—(१) योरपीय महाभारत (पाँच भाग), (२) गद्य-चंद्रोदय, (३) गद्य-चंद्रिका।

समय—संवत् १९७९

नाम—(४३०४) कार्त्तिकेयचरण मुखोपाध्याय (कालीघाड़ी) छपरा, प्रांत विहार।

जन्म-काल—सं० १९५४।

रचना-काल—सं० १९७९।

ग्रंथ—(१) मुस्तफ़ा कमाल पाशा, (२) सती सुभद्रा, (३) मनीपुर का इतिहास।

विवरण—यह पं० कालीकिंकर मुखोपाध्याय के पुत्र हैं। बंगाली सज्जन होते हुए भी इनको हिंदी की निंदा एवं अप्रतिष्ठा तनिक भी सहन नहीं होती है। अपनी धर्मपत्नी श्रीमती नलिनीबालादेवी को भी हिंदी की अच्छी शिक्षा दी है, और उन्होंने योग्यता-पूर्वक 'शकुंतला'-जैसी सुंदर पुस्तक की रचना की है। मौलिक ग्रंथों के अतिरिक्त, जो ऊपर लिखे जा चुके हैं, इनके अनुवादित ग्रंथों की संख्या लगभग ४०-४५ के है। किसी समय इन्होंने 'भारतमित्र' के सहकारी संपादक का भी काम किया है। इस समय यह 'हिंदी-दारोग़ा-दफ़्तर' के संपादक और 'हिंदूपंच' के निरीक्षक के रूप में कार्य कर रहे हैं।

उदाहरण—

बिजली

निराधार इस नील गगन में
क्यों बिजली! तू बिहँस रही है?
अँधियारी इस अमा-निशा में
इतराती क्यों थिरक रही है?
मृगतृष्णा - सी मरीचिका - सी
प्रवंचना क्या सिखा रही है?

श्रांत पथिक की नयन-भ्रांति को
पथ दिखला क्या भगा रही है?
या जलधर के वज्र हृदय का
परिचय जग को जना रही है?
गर्वोन्मत्तुन्मत्त जनों के
क्या हृत्तल को डरा रही है?
श्रीमानों की श्री की क्या तू
चंचलता को बता रही है?
या विरहिन की सुप्त व्यथा को
रह-रह करके जगा रही है?

संध्या

हँसाने आती तू कुसुमित कली को कुमुद की?
रुलाने या आती कमल-कलिका के हृदय को?
चकी को प्रेमी से बिलग कर देने विरह या—
नवेली आली को पति-भय दिलाने सु-उर में?
डुबोने आती तू दिवस-मणि को क्या उदधि में?
बनाने बाँकी या पति-मन-रिझानी युवति को?
जगाने है आती मदन-मद पूर्णा तरुणि में?
बहाने या आँसू विरह-विधुरा के नयन से?

नाम—(४३०९) काशीनाथ द्विवेदी।

जन्म-काल—सं० १९५४।

रचना-काल—सं० १९७९।

ग्रंथ—सतसई।

विवरण—पं० रुद्रदत्त शर्मा के पुत्र।

उदाहरण—

चढ़ि चितवन-नैया भई लाज-पयोनिधि पार ;
एकै व्है विलोकिए नाविक नंदकुमार।
अचल चपल चल अचल किय, बाल लाल कुच नैन ;
हेरा फेरी दुहुन मन लई दलाली मैन।
अचल भए चख चित पथिक अँटके दुहुन अबूझ ;
खर चितौनि काँटनि विधे, मारग परै न सूझ।
मदन-ग्राह गहरे गह्यो, हेरत हरि तन भास ;
मानसगामी गति गही, वारन-तारन-त्रास।
औचक प्यौ चूम्यौ वदन रह्यो मान मन माँहि ;
ढुरि उछंग कँपि-कँपि कहै नींद नवेली नाँहि।
भजै न राका ससि वहै, जाकर परस सुभाय ;
पग-सरोज सचुके, तऊ मुख-सरोज मुसकाय।

नाम—(४२०६) घासीराम व्यास (सनाढ्य) मऊ (झाँसी)।

जन्म-काल—सं० १६६०।

कविता-काल—सं० १६७८।

उदाहरण—

अक्षत विचार चारु चंदन चढ़ाय शुभ,
सुमन सुहाती माल सुमन सुहाती की ;
'व्यास' तर अतर सुगंधन लगाय धूप
आरती उतारैं करपूर पूर वाती की।
सुजन सँघाती श्याम सुचि रुचि राती पूज,
सुख सरसाती विधि सुख शरसाती की ;
मंजु मुद माती पाती त्रिपुरनिपाती महा-
देव पै चढ़ावैं बेल पाती पंचपाती की।

नाम—(४३०७) ज्योतिषचंद्र घोष बी० ए०, ग्राम रूपसा, ज़िला भागलपुर (बिहार-प्रांत)।

जन्म-काल—सं० १९५४ ।

रचना-काल—सं० १९७९ ।

मृत्यु-काल—सं० १९८४ ।

ग्रंथ—सिकंदर और पुरु (अपूर्ण खंड काव्य) ।

विवरण—यह बाबू फेकूलाल घोष के पुत्र थे। सदा परीक्षाओं में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए । सन् १९७७ में बी० ए० हुए। कुछ काल तक यह मारवाड़ी-पाठशाला (हाईस्कूल), भागलपुर के प्रधानाध्यापक रहे। इनकी कविताएँ 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित हुआ करती थीं । आपने चंपानगर (भागलपुर) से 'सुरभि'-नामक साहित्यिक मासिक पत्रिका निकाली थी।

उदाहरण—

आकांक्षा

मोहन ! पुनः आनंदमय श्रुति-मधुर मुरली-तान हो,
जीवन-समर में शांतिमय फिर पुण्य-गीता-गान हो।
म्रियमाण भारत को नवल स्वर्गीय जीवन दान हो
करुणा-सुधा के पान से जन का परम कल्याण हो।
दारिद्र्य-दानव मनुज-शोणित से यहाँ है पल रहा,
सबको कुचलता चक्र दुख-दुर्भाग्य का है चल रहा।
घर-घर कलह के रूप में फल फूट का है फल रहा,
औ' द्वेष-दावानल मनोवन में भयंकर जल रहा।
ये दूर हों, इनका प्रभो ! अब शीघ्र ही संहार हो,
सद्भाव से सुरभित सुखद यह स्वर्ण का संसार हो।
मानव-हृदय औदार्य औ' उत्साह का आगार हो,
निःस्वार्थ पावन प्रेम का सर्वत्र ही संचार हो।

गोपाल! अपनी प्रिय धरा पर सदय शीघ्र पसीजिए,
केशव! करुण क्रंदन श्रवण कर कुछ कृपा अब कीजिए।
माधव! मलय-मारुत समुन्नति का बहा फिर दीजिए,
हे राधिकारंजन! स्वजन को शरण में रख लीजिए।

नाम—(४३०८) धर्मेंद्रनाथ शास्त्री।

जन्म-काल—सं० १९५४।

रचना-काल—सं० १९७९।

ग्रंथ—(१) भारतीय तथा पाश्चात्य दर्शन, (२) उपनिषदों का सिद्धांत, (३) मुक्त धारा।

विवरण—आप डॉक्टर केदारनाथ के पुत्र तथा मेरठ-कॉलेज में संस्कृत के प्रोफ़ेसर हैं। आप योग्य वक्ता एवं लेखक भी हैं। दर्शन-शास्त्र पर आपने श्रम किया है।

नाम—(४३०९) रामसहाय पांडेय उपनाम 'चंद्र'।

जन्म-काल—सं० १९६४।

कविता-काल—सं० १९७९।

जन्म-स्थान—चिनहट, ज़िला लखनऊ।

पिता का नाम—पं० गौरीशंकरजी पांडेय।

शिक्षा—साधारण हिंदी-उर्दू-अँगरेज़ी।

विवरण—खड़ी बोली और व्रज-भाषा दोनो ही में अच्छी रचना करते हैं।

उदाहरण— व्रज-भाषा

(कवित्त)

आन अमंद की दुचंद दुति होन लागी,
उरज उतंगन पै कंचुकी सजै लगी;
गुरुता नितंबन मैं नित्य सरसान लागी,
सरकति नीवी कटि-तट को तजै लगी।

अंजन अँजीली अरसीली अँखियान पेखि
खंजन की, कंजन की अवली लजै लगी ;
मंद मुसकान सों सनेह-सुधा घोरै 'चंद्र',
बोलति नवीना मंजु बीना-सी बजै लगी ।

खड़ी बोली

(सवैया-छंद)

स्वरों की सुधा-सिंचित माधुरी से
रस प्राण में कौन-सा घोलती है ;
छिपी अंतर में किस वेदना की
उलझी हुई ग्रंथियाँ खोलती है ।
अथवा हुई प्रेम में बावली तू,
प्रति डाल में साँवली डोलती है ;
अयि प्रेयसि श्यामा, विभावरी में
कह क्यों तू कुहू-कुहू बोलती है ॥ १ ॥

मधुकांते, मनोहर तू कितनी,
ये मनोहरता बता पाई कहाँ ;
यह मादकतामयी रागिनी है,
किसने तुझको सिखलाई कहाँ ।
सु सुयोगिनी है या वियोगिनी तू,
कहाँ थी, किस देश से आई कहाँ ;
भरी कंठ में तेरे गई इतनी
मधु-सी मिसिरी-सी मिठाई कहाँ ॥ २ ॥

किस कानन में उपजी कब तू,
कहाँ खेली, कहाँ है सयानी हुई ;
नवयौवन की अगवानी कहाँ
तुझको महामोद प्रदानी हुई ।

किसके छवि-जाल में लोचनों को
उलझाकर प्रेम-दिवानी हुई ;
किस कुंज में तेरा विवाह हुआ,
कब तू ऋतुराज की रानी हुई ॥ ३ ॥
जब व्योम से वारि की मुक्तावली
अहा ! फुलझड़ी बन छूटती थी ;
जब अंक में बैठी हुई घन के
चपला प्रणयासव घूटती थी ।
जब लंक लचाती लवंग-लता,
कली मल्लिका की जब फूटती थी ;
तब बैठ कदंब के कुंज में तू,
सजनी, सुख कौन-सा लूटती थी ॥ ४ ॥
उस मीठे अतीत की विस्मृति है—
तुझसे क्या कभी इठलाती नहीं ;
विचरी जिस क्रीड़ास्थली में कभी,
उसी ओर क्यों दृष्टि घुमाती नहीं ।
वचनामृत से कर सिंचित क्यों
लतिकाओं के प्राण बचाती नहीं ;
उजड़ी हुई 'चंद्र' की वाटिका में
हे कुहूकिनी, क्यों अब आती नहीं ॥ ५ ॥

नाम—(४३१०) श्यामारुण वंशी, मुँगेर ।

जन्म-काल—सं० १९५४ ।

रचना-काल—सं० १९७१ ।

ग्रंथ—(१) हिंदी-व्याकरण-तत्त्व, (२) मनस्वी ध्रुव, (३) तिलक-प्रथा, (४) बिहार की सम्मिलित परिवार-प्रणाली ।

उदाहरण—

स्वप्न-विषाद

निविड़ कालिमा से आच्छादित हँसता था आकाश;
और पयोधर सिंहनाद से कहता था "शाबाश"।
पवन तुरंगम उस सेनप को दिखा रहा संग्राम;
प्रकृति-जगत् के बीच मचा था ऐसा ही कुहराम।
मेघ-बिंदु के विशिख-समक्ष
बना हुआ था मैं ही लक्ष।
मिला भयंकर घोर महावन कंटक से आकीर्ण;
पथ-विहीन शत योजन तक था मानो वह विस्तीर्ण।
सिंहादिक व्यालादिक हिंसक घूम रहे थे जंतु;
देख-देखकर टूट रहा था मेरा साहस-तंतु।
कैसे निकलूँ इससे हाय!
कौन बतावे यहाँ उपाय।
सब छूटी आशा जीवन की चेष्टित थे सब अंग;
कर पद ने आधार-खोज में कर दी निद्रा भंग।
देखा वहाँ न भय था, थी बस केवल कुछ-कुछ रात;
पड़ा हुआ था मैं शय्या पर, होने को था प्रात।
परिवर्तित होकर आह्लाद
कहाँ गए वे स्वप्न-विषाद?
इसी तरह जग में जीवन है करता मिथ्याशोक;
जब तक उसमें दीख न पड़ता सच्चा ज्ञानालोक।
सहते हुए ताप इस तन में जब करता है यत्न;
तभी जीव यह पा सकता है 'ईश्वर'-ऐसा रत्न।
स्वप्न-कथा का यह उपदेश
ग्रहण करोगे क्या कुछ देश?

समय—संवत् १९८०

नाम—(४२११) उदयशंकर भट्ट।

जन्म-काल—सं० १९५४।

रचना-काल स० १९८०।

ग्रंथ—(१) तक्ष-शिला-काव्य, (२) विक्रमादित्य नाटक, (३) उपमा का इतिहास आदि कई पुस्तकों के लेखक तथा गुमानी मिश्र-कृत कृष्णचंद्रिका के संपादक।

विवरण—युक्तप्रांत के निवासी, आजकल लाहौर में रहते तथा पंजाब-विश्वविद्यालय के परीक्षकों में हैं। गद्य-पद्य के होनहार लेखक हैं। तक्षशिला-काव्य पर आपको पंजाब-टेक्स्ट-बुक-कमिटी से ४५०) इनाम मिला है।

उदाहरण—

सूर को अँधरो कौन कहै।

पढ़तहि पद मन मत ह्वै नाचत आनँद-स्रोत बहै;
तरल तरंग हृदय-सरिता में कल-कल करि उमहै।
जग जंजाल झटकि झटपट जन तटिनी तट विहरै;
भगति-भाव-भरि झुकि-झुकि झूमै नैनन नीर बहै।
छिन वियोग, छिन योग, भोग छिन आवत सब समुहै;
भेटत ललकि कहूँ मुरलीधर राधा उद्धव चहैं।
जड़ चेतन, चेतन जड़ होवै भावुकता उलहै;
सुकवि सूर की सुनत पदावलि को है मौन गहै।

भिक्षा

फैला झोली निठुर हृदय की देख कौन देने आया;
मत्त न होना रूप-सुधा पी, यह ऊपर तक भर आया।
आँखों द्वारा पीकर मचले अपने मन में रख लेना;
जीवन है, मधु मद है, सुख है, चुसकी जब तब भर लेना।

हृदय-कुंज में मादकता जब नाच रही हो छुन-छुनकर ;
सौंदर्य झकझोर रहा हो इठलाता अपनापन कर ।
आशा शुभ संवाद सुनाती जब आवे नभ से भू पर ;
तब उँडेलना रसिक रसीली आँखों में आँखें भर-भर ।

नाम—(४३१२) गदाधरप्रसाद अंबष्ट विद्यालंकार, विशारद, बन्नो, गोगरी, मुँगेर ।

जन्म-काल—सं० १९५४ ।

रचना-काल—सं० १९८० ।

ग्रंथ—अर्थशास्त्र, राजनीति का पारिभाषिक कोष (अपूर्ण)

विवरण—यह कायस्थ-कुलोत्पन्न बाबू एतबारीलाल के पुत्र हैं। 'चाँद', 'देश' तथा 'महावीर' पत्रों के सहकारी संपादक रह चुके हैं ।

नाम—(४३१३) गंगानंदसिंह (कुमार) एम्० ए०, एम्० एल्० ए०, एम्० आर० ए० एस्०, श्रीनगर, ज़िला पूर्णियाँ (बिहार-प्रांत) ।

जन्म-काल—सं० १९५५ ।

रचना-काल—सं० १९८० ।

ग्रंथ—इनकी लिखी हिंदी तथा अँगरेज़ी की कई पुस्तकें कलकत्ता-विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित हुई हैं ।

विवरण—यह साहित्य-सरोज कविकुलचंद्र राजा कमलानंद के सुपुत्र हैं । यह देश तथा विदेश की कई साहित्यिक, सामाजिक तथा राजनीतिक संस्थाओं के सदस्य हैं । आप एक सुकवि हैं ।

उदाहरण—

सागर ! तेरे निकट बैठकर मन चिंता से ग्रस्त हुआ ;
ज्ञान-ध्यान या जो था जी में, सब चकराकर पस्त हुआ ।
गुण विरोध को तेरे तन में देखा ज्यों ही जुड़ा हुआ ;
पाया तब फिर मैंने उनको नीर-क्षीर-सा मिला हुआ ।

तेरे अति गंभीर नाद के भीतर हास्य छिपा रहता;
जब तू मानव-जीवन को है अति क्षण-भंगुर दिखलाता।
फिर जब कर आकृति तू भीषण अपना गौरव दिखलाता;
होगा फिर विनयी-सा नीचा सपने में भी क्या आता।
तेरे वक्षःस्थल पर नदियाँ जब आ करके गिरती हैं;
कृष्ण-प्रेम में पगी गोपियों की-सी तो वे लगती हैं।
उन्हें मिलाकर निज शरीर में जग को तू है सिखलाता;
अंत काल यह जगत् समूचा ब्रह्म-देह में मिल जाता।

नाम—(४२१४) गंगाप्रसाद मेहता एम्० ए०।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५५।

रचना-काल—सं० १९८०।

ग्रंथ—चंद्रगुप्त विक्रमादित्य।

विवरण—उपर्युक्त ग्रंथ बहुत ही गवेषणा-पूर्ण उच्च कोटि का है। ऐसे ग्रंथ-रत्नों की हिंदी को आवश्यकता है।

नाम—(४२१५) दीवारीलाल साहित्यरत्न, न्यायतीर्थ, जव्हेरीबाग़, इंदौर।

जन्म-काल—सं० १९५६।

कविता-काल—लगभग सं० १९८०।

ग्रंथ—(१) भारतोद्धार (नाटक), (२) क्षत्रिय-रत्न (महाकाव्य), (३) जैन-दर्शन, (४) सम्यक्त्व-शतक, (५) स्फुट कहानियाँ।

विवरण—यह श्रीयुत नन्हूलालजी के पुत्र हैं।

उदाहरण—

जब से संध्या हुई, तभी से होने लगा अंग-श्रृंगार;
छाया मतवालापन मुझमें भूल गई सारा संसार।

लगी रही टकटकी द्वार पर आँखों को न मिला अवकाश;
फिर भी आए नहीं प्राणधन, नष्ट हो गई सारी आश।

नाम—(४३१६) दुलारेलाल भार्गव, लखनऊ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५८।

रचना-काल—लगभग सं० १९७६।

विवरण—संपादक माधुरी तथा सुधा। संस्थापक गंगा-पुस्तक-माला-कार्यालय, जहाँ से अब तक २५० पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, और अन्य प्रकाशित होती जाती हैं। आप बिहारी के ढंग पर अब तक लगभग ५०० दोहे लिख चुके हैं। हिंदी में अच्छी-अच्छी पुस्तकें गंगा-पुस्तकमाला में निकालकर आपने हिंदी की विशेष सेवा की है। साहित्य-रचना भी परम श्रेष्ठ करते हैं, जैसा दुलारे-दोहावली से प्रकट है। भारतेंदु के पीछे इनके बराबर हिंदी-सेवा बहुत कम लोगों से बन पड़ी है।

नाम—(४३१७) द्वारकाप्रसाद मिश्र, जबलपुर।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५८।

रचना-काल—सं० १९८०।

आप एक बड़े ही होनहार और उत्साही लेखक तथा देश-हितैषी हैं। बी० ए० और एल्-एल्० बी० पास करके आप देश-हितैषिता एवं राजनीतिक कामों में ऐसे संलग्न हो गए कि वकालत करने का अवसर ही न पाया। देश-हित के कारण जेल भी जा चुके हैं। 'लोकमत' के जन्मदाता एवं संपादक रहे हैं। पहले वह साप्ताहिक रूप में निकला, और फिर दैनिक हो गया, पर आजकल बंद है। मिश्रजी जबलपुर के प्रसिद्ध रईस और देश-प्रेमी सेठ गोविंददासजी के परम मित्र हैं। भारतीय व्यवस्थापक सभा (Legislative Assembly) के सदस्य रहे हैं।

नाम—(४२१८) नंदकिशोर तिवारी 'निर्वासित', तिवारी-पुर (बिहार)।

जन्म-काल—सं० १९५७ ।

रचना-काल—लगभग सं० १९८० ।

ग्रंथ— (१) स्मृति-कुंज, (२) अभिनव ।

विवरण—यह 'चाँद', 'महारथी' तथा 'सुधा' के संपादक रह चुके हैं।

नाम—(४२१९) पूर्णसिंह (सरदार) ।

रचना-काल—सं० १९८० ।

विवरण—आपने कई उत्कृष्ट निबंधात्मक लेख लिखे थे। जापान आदि हो आए थे। सुनते हैं, १९८६ के लगभग आपका शरीरांत हो गया ।

नाम—(४२२०) प्रफुल्लचंद्र ओझा 'मुक्त', ग्राम निमेज, ज़िला शाहाबाद ।

जन्म-काल—सं० १९६६ ।

रचना-काल—सं० १९८० ।

ग्रंथ—स्फुट रचनाएँ ।

विवरण—यह साहित्याचार्य पं० चंद्रशेखर शास्त्री के पुत्र हैं। आप हिंदी के अतिरिक्त संस्कृत, अँगरेज़ी तथा बँगला भी जानते हैं। इनकी रचनाएँ 'आज', 'सैनिक', 'मतवाला' 'चाँद' आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। आजकल आप 'विद्यार्थी' का संपादन कर रहे हैं। आप सुकवि हैं।

उदाहरण—

मुक्त

त्याग जिसने सारा ऐश्वर्य
दुःख को ही है अपना लिया ;

हटाकर पात्र सुधा से भरा
गरल का जिसने प्याला पिया।
हृदय में जिसके भरी अपार
वेदना दलितों के प्रति, आह!
बिताना जीवन समझा श्रेय
साथ लेकर जिसने गुमराह।

देख दुखियों का दुःख-समुद्र
तैरने को जो हुआ तयार;
छलकता रहा आयु में सदा
पीड़ितों के प्रति जिसका प्यार।
छोड़कर मोह प्राण को स्वयं
निछावर किया विश्व के लिये;
झुका जो कभी किसी से नहीं
स्वत्व पर मरे, स्वत्व पर जिए।

गुफा में, वन में फिरता रहे
सदा भय-हीन और स्वच्छंद;
प्रकृति का सारा सुखमय साज
भोग निर्लेप करे सानंद।
कभी मन में मत आवे क्रोध,
द्वेष से हो न कभी संयुक्त;
विश्व-उन्नायक, जग-सिरमौर
वही है रत्न, जगत् का 'मुक्त'।

नाम—(४३२१) प्रसिद्धनारायणसिंह बी० ए०।

ग्रंथ—(१) सुनीति-गीतावली, (२) सावित्री-उपाख्यान, (३) श्वास-विज्ञान, (४) हठयोग, (५) योगशास्त्रांतर्गत धर्म, (६) योगत्रयी, (७) राजयोग, (८) योग की कुछ विभू-

तियाँ, (९) संसार-रहस्य, (१०) सीधे पंडित, (११) जीवन-मरण-रहस्य।

विवरण—आप गहरवार क्षत्रिय ठाकुर रघुरायसिंह के ज्येष्ठ पुत्र हैं, तथा युक्तप्रांतीय आईन-सभा के सदस्य रह चुके हैं।

नाम—(४३२२) बलदेवप्रसाद मिश्र, रायगढ़ राज्य (मध्यप्रदेश)।

जन्म-काल—सं० १९५५।

ग्रंथ—(१) मन्मथ-मंथन (खंड काव्य), (२) गंगा-लहरी, (३) गल्पांजलि, (४) शंकरदिग्विजय (नाटक), (५) असत्य संकल्प, (६) वासना-वैभव, (७) जीव-विज्ञान, (८) कवि और काव्य (गद्य), (९) गीतार्थ-भूमिका (गद्य), (१०) स्वयं सेवा (गद्य), (११) सुकवि-सूक्ति-संग्रह, (१२) ग्राम-गौरव (ब्रजभाषा, पद्य), (१३) विमलादेवी (उपन्यास), (१४) मोहन-माफ़ी (काव्य खड़ी बोली), (१५) सती सुकन्या (नाटक), (१६) दुर्बला नारी (नाटक), (१७) श्रीकृष्ण (नाटक), (१८) स्वामीराम (नाटक), (१९) वीरवर कर्ण (नाटक), (२०) सिक्ख-संध्या (नाटक), (२१) पद्यावली, (२२) शृंगार-शतक (ब्रजभाषा), (२३) वैराग्य-शतक (ब्रजभाषा), (२४) नीतिशतक (नाटक), (२५) श्याम-शतक (नाटक), (२६) भक्ति-शतक (नाटक), (२७) वीर-शतक, (२८) अन्योक्ति-शतक, (२९) सामान्य शतक (खड़ी बोली), (३०) बाल-चरित (खड़ी बोली महाकाव्य), (३१) संसार-सागर (गद्य), (३२) साहित्य-लहरी (इतिहास), (३३) दांपत्य (गद्य), (३४) लेखमाला (संग्रह), (३५) भागवत-सागर।

विवरण—आपके पूर्वज प्रथम उन्नाव-ज़िले के बहुराजमऊ-ग्राम

के निवासी थे, और वहीं से आपके पिता पं० नारायणप्रसाद मिश्र राजनादगाँव (सी० पी०) में आकर बस गए। आपका जन्म इसी स्थान में हुआ। इन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त करके सं० १९७७ में एम्० ए० तथा सं० १९७८ में एल्-एल्० बी० की परीक्षाएँ पास कीं। लेखन-शक्ति के अतिरिक्त आपमें वक्तृत्व-शक्ति भी है। इस समय यह रायगढ़-राज्य के असिस्टेंट ऐडमिनिस्ट्रेटर हैं।

उदाहरण—

छूटि गयो आभरन असन बसन सब,
पीरे रँग केरो परिधान पहिरायगो;
नेह दीन रूखे केस करिगो जटान सम,
अरुनारी आँखिन नसा नयो सो चोड़ायगो।
धरनि की धूर कै गयो भभूति ताके हित,
एक निज नाम ही की रटनि रटायगो;
सरस बसंत माहि जाय परदेस पिय,
बनिता बियोगिनी हूँ जोगिनी बनायगो।

(शृंगार-शतक से)

नाम—(४३२३) बालकृष्णदेव 'प्रेम'।

जन्म-काल—सं० १९५५।

रचना-काल—सं० १९८०।

ग्रंथ—(१) ज्योतिष-जाह्नवी, (२) विजय-पताका, (३) गोविंदाष्टक, (४) सचित्र ऋतु-रहस्य, (५) साहित्य-सौंदर्य, (६) दैवज्ञ दिनेश, (७) राजनीति-दर्पण, (८) सारिणी-सुबोध।

विवरण—यह तैलंग ब्राह्मण एक सुकवि हैं। इनके पिता का नाम भट्ट गोविंददेव भट्टाचार्य है। यह टीकमगढ़ के राजगुरु हैं।

उदाहरण—

एहो अलि, आयो अब औसर अनूप ऐसो,
आनँद अपार अँग अंगन अमावैगो ;
जाके हेतु जाके बाग ताके तूल तान माँह,
ताके अब पाके दिन पाके हरखावैगो ।
प्रेम सज साज आम-मौर-मौर शीश धार,
सहित समाज सों बसंतराज आवैगो ;
एही बन एही बाग सह अनुराग भाग
कुंज-कुंज पुंज-पुंज गुंज रस पावैगो ।
औसर अनूप अखती को यह आयो आली,
छायो आज राज ब्रजराज गरबीले को ;
खेलन सखी री कहो कौन विधि जाऊँ अब,
गैल-गैल गोल छैल छलिया छबीले को ।
ऐसी परी बान मान कान की न कान देत,
कान देत नाहीं, कहो करौं का हठीले को ;
लटका करूँगी, पनघट का न जैहों बीर,
खटका बड़ो है मोहि सटका लचीले को ।

नाम—(४३२४) बिसमिलजी ।

जन्म-काल—सं० १६५५ ।

विवरण— इनका पूरा नाम सुखदेवप्रसादसिंह है, किंतु यह अपने उपनाम 'बिसमिल' से ही हिंदी-संसार में प्रख्यात हैं । यह मुंशी विश्वेश्वरदयाल के पुत्र हैं । आप उर्दू और हिंदी दोनो के कवि हैं ।

उदाहरण—

कोई समझे या न समझे, मैं तो समझा लफ़्ज़-लफ़्ज़ ;
चुपके-चुपके कह दिया सब कुछ तेरी तसवीर ने ।

मर रहे हैं पतिंगे जल जलकर ;
इसी ग़म में चिराग़ जलता है ।
यों तो पहलू में तुम्हारा तीर मेरा दिल भी है ;
दोनो का मिल-जुल के रहना सहल भी मुश्किल भी है ।
कूच करने को अभी गो है ज़माना बाक़ी,
बँध रहा है मगर असबाब सफ़र के पहले ।

नाम—(४२२५) व्रजभूषण गोस्वामी (सनाढ्य), दतिया ।

जन्म-काल—सं० १९५४ ।

कविता-काल—सं० १९८० ।

उदाहरण—

दामिनी की द्युति है नहीं ये दिव्य दीप्तिमान,
देती है दिखाई छबि राधिका ललाम की ;
काकली नहीं है कमनीय यह कोकिला की,
बजती है बंशी ये ब्रजेश अभिराम की ।
वर्षा की बनाई नहीं बन में लुनाई है ये,
शोभा है अनूप यह वृंदावन-धाम की ;
घिरि-घिरि घूमैं नहीं, नभ में ये श्याम घन,
फिरि है अवाई ब्रज माँहि घनश्याम की ।

नाम—(४२२६) भगवतप्रसाद शुक्ल ।

जन्म-काल—सं० १९५५ ।

ग्रंथ—(१) भारत-प्रेमी, (२) स्वराज्य-सोपान, (३) अर्थ-शास्त्र, (४) प्राकृतिक भूगोल, (५) भारतोद्यान, (६) चरित्र-चित्रण, (७) कृष्णाकुमारी, (८) श्रीपाटलेश्वर-वर्णन, (९) भारतीय अर्थ-शास्त्र ।

विवरण—यह छिंदवाड़ा मध्यप्रांत-निवासी कान्यकुब्ज ब्राह्मण पंडित गयाप्रसाद शुक्ल के पुत्र हैं ।

उदाहरण—

दयानिधि कर भारत-कल्याण।

काम क्रोध मद मान हटाकर, लोभ मोह छल द्वेष भगाकर,
मोह-निशातम घोर मिटाकर चमका दो रबि-ज्ञान ॥ दया० ॥
धर्म-कर्म-मर्मज्ञ बनैं हम, देश-क्लेश सर्वत्र हरैं हम,
दुख-दारिद सब दूर करैं हम, होवे पुनरुत्थान ॥ दया० ॥
स्वतंत्रदेवि का राज यहाँ हो, इंद्रभुवन-सुख-साज यहाँ हो,
विश्व गुरू सरताज यहाँ हो, बढ़ै देश का मान ॥ दया० ॥
वीणा की झंकार मधुर वह, कृष्णचंद्र का प्रेमराग वह,
फैल जाय भगवत, घर-घर वह सरस एकता तान ॥ दया० ॥

नाम—(४३२७) भगीरथप्रसाद दीक्षित (साहित्यरत्न), लखनऊ।

जन्म-काल—सं० १९४१ (बटेश्वर के निकट पई, ज़िला आगरा)।

रचना-काल—सं० १९८०।

रचना—स्फुट गद्य-लेख तथा पत्र-संपादन। एक कोष भी बनाया है।

विवरण—आप बहुत ढूँढ़-खोज करके लेख लिखते हैं। काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा की ओर से हिंदी-लिखित पुस्तकों की खोज में काम करते रहे। आजकल अध्यापक तथा पत्रकार हैं। सम्मेलन-पत्रिका तथा अवध-समाचार के संपादक रह चुके हैं।

नाम—(४३२८) माखनलाल चतुर्वेदी (मध्यप्रांत-निवासी)।

कविता-काल—सं० १९८०।

ग्रंथ—स्फुट छंद तथा पत्र-संपादन।

विवरण—आप कर्मवीर के संपादक हैं। आपके साहित्यिक महत्त्व के विषय में कतिपय महाशयों की सम्मति ऊँची है। आप एक सुकवि और सुलेखक हैं।

नाम—(४३२९) मोहनसिंह (कविराज)।

जन्म-काल—सं० १९५६।

रचना-काल—सं० १९८०।

ग्रंथ—(१) बणिक-बहत्तरी, (२) प्रपंच-पचीसी, (३) जैसल-पचीसी, (४) रामदास-पचीसी, (५) प्रताप-रस-चंद्रोदय, (६) कुंभेणकीर्त्ति-प्रकाश, (७) मोहन-सतसई, (८) महाराणा-चरितामृत, (९) मान-पचीसी, (१०) कूर्म-यश-कलानिधि, (११) व्यंग्यार्थ-प्रकाश।

विवरण—कविराव बख़्तावरसिंह के प्रपौत्र हैं। अपने ननिहाल सीतमऊ (मालवा) में कविवर उज्ज्वल फ़तहकर्ण चारण से काव्य पढ़ा। आप सुकवि हैं।

उदाहरण—

कैधौं केतु तारो है कराल कौल युत्थन को,
किरन समूह कैधौं दमकत भाना को;
कैधौं जह्नु जा के जल-वीचि की चमक चारु,
कैधौं तेज-बिंब है प्रताप मरदाना को।
कैधौं है अनंतजू को ऊजरो अनोखो फन,
कैधौं यह चोखो पत्र केतकी प्रमाना को;
कैधौं शूल-पाणि के त्रिशूल को दुधारा यह,
कैधौं अनियारो शेल छत्रधर राना को।

वैसि ही भाँति चकोरन की गति चाहमई दरशै सुखदाई;
वैसि ही भाँति पियूष की धार धरा पै दशौं दिशि दीसत धाई।
वैसि ही भाँति तरंगित सागर, नागरता इतनी न लखाई;
आजु क्यों आँगन चूइ परै, यह चंद की मो घर मंद जुन्हाई।

नाम—(४३३०) रामचंद्र शर्मा 'प्रफुल्ल' हिंदी-भूषण, साहित्योपाध्याय।

जन्म-काल—सं० १६६० ।

रचना-काल—सं० १६८० ।

ग्रंथ—स्फुट लेख तथा छंद ।

विवरण—आप चिड़ावा जयपुर-निवासी गौड़ ब्राह्मण हैं। दो पत्र निकाले तथा सभा-समितियों के पदाधिकारी रहे। आजकल अध्यापक हैं ।

नाम—(४३३१) रामशंकर तेवारी सुमेरपुर, जिला उन्नाव-निवासी ।

जन्म-काल—लगभग सं० १६५८ ।

रचना-काल—सं० १६८० ।

विवरण—लोकमत पत्र के सहकारी संपादक तथा हिंदी के उत्साही लेखक हैं ।

नाम—(४३३२) रामशंकर शुक्ल 'रसाल' एम्० ए०, प्रयाग-निवासी ।

जन्म-काल—सं० १६५५ ।

कविता-काल—सं० १६८० ।

ग्रंथ—(१) हिंदी-साहित्य का इतिहास, (२) अलंकार-पीयूष, (३) अलंकार-कौमुदी, (४) रचना-विकास, (५) नाट्य-निर्णय ।

नाम—(४३३३) लक्ष्मीनारायण-दीनदयाल (अवस्थी) ।

जन्म-काल—सं० १६५७ ।

रचना-काल—सं० १६८० ।

ग्रंथ—(१) महात्मा गौतम बुद्ध, (२) कर्म एडीशन और उनके आविष्कार, (३) चींटी और दीमक, (४) आरंभिक

भूशास्त्र, (५) प्राण-घातक कीटाणु, (६) मधु-मक्खी और उनसे व्यवसाय, (७) लोम-संबंधी रोग, (८) काला पहाड़ (उपन्यास), (९) बाल-गल्पावली, (१०) बाल-वीर-गाथा, (११) मेढ़क आदि।

विवरण—देवास (मालवा), इंदौर में जन्म, निवास-स्थान मुरां तहसील छिबड़ामऊ, ज़िला फ़र्रुख़ाबाद है। आप विविध विषयों में वर्तमान प्रणाली के सुलेखक हैं।

उदाहरण—

छूट गई तू माला मेरी,
छूट गए दाने भी सारे ;
यत्र - तत्र यों टेढ़े-उलटे
पड़े हुए हैं न्यारे-न्यारे।
कैसे माला तुझको हा ! मैं
बना सकूँगा फिर वैसी ;
भव्य भावमय हृदय-पटल पर
पड़ी हुई तू है जैसी।
था विश्वास अटल यह मेरा
उससे मुझे मिला देगी ;
नाथ - भेट की पुष्पांजलि तू
लाकर मुझे दिला देगी।
फेर - फेरकर, तुझे घुमाकर
उसको निश्चय पाऊँगा ;
उसको पाकर, उसका होकर
उसमें घुल-मिल जाऊँगा।
किंतु खेद है मुझे, हाय ! अब
मिटा साथ मेरा - तेरा ;

डूब गया मैं, छूट गया सब,
　　टूट गया यह मन मेरा ।

×　　×　　×

उसे अब कैसे पाऊँगा ; ध्यान उर कैसे लाऊँगा ?

×　　×　　×

इसी से अर्पित है यह नाथ,
　　तुम्हें "टूटी माला उपहार",
उसी में तो मैंने प्राणेश,
　　एकत्रित कर डाला सब प्यार ।

नाम—(४२२४) विपिनविहारी मिश्र गँधौली, सीतापुर ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५५ ।

रचना-काल—सं० १९८० ।

ग्रंथ—स्फुट कविता तथा लेख एवं समालोचक पत्र का दो भ्राताओं से सम्मिलित संपादन ।

विवरण—आप कृष्णविहारी के अनुज तथा प्रसिद्ध कवि लेखराज के पौत्र हैं ।

नाम—(४२२५) (एच्० एच्० सवाई महेंद्र महाराजा) वीरसिंह देव बहादुर ओड़छा (टीकमगढ़)-नरेश सरामद राजगान बुंदेलखंड ।

जन्म-काल—सं० १९५६ ।

रचना-काल—सं० १९८० ।

ग्रंथ—हाकी (खेल का विवरण) ।

विवरण—आप हिंदी के परम प्रेमी तथा कवियों के कल्पवृक्ष हैं । सुकवि अजमेरी आपके राजकवि हैं । श्रीमान् के दरबार में बहुतेरे प्रसिद्ध कवि समय-समय पर बुलाए जाकर सम्मानित होते हैं, विशेषतया वीर-वसंतोत्सव के अवसर पर, जब कि टीकम-

गढ़ में भारी मेला और कवि-सम्मेलन होता है। इस अवसर पर स्वयं श्रीमान् सभापति का आसन ग्रहण करते हैं, तथा श्रीमती महेंद्र महारानीजू देवी भी परदे की आड़ से उपस्थित रहती हैं। सं० १६६० में काशी में पधारकर श्रीमान् ने २०००) वार्षिक का एक पारितोषिक व्रज-भाषा की सर्वोत्तम कविता के लिये स्थापित किया है। हिंदी-कविता तथा भाषा पर श्रीमान् का अगाध प्रेम है। स्वयं भी अच्छा काव्य लिखते हैं, तथा कविता में विशेष बोध रखते हैं। श्रीमान् के एक सुपुत्र तथा तीन भाई हैं। हम (श्यामविहारी मिश्र) सं० १६८७ तथा १६८८ में श्रीमान् के दीवान-रियासत रहे, और संवत् १६८६ से प्रधान मंत्री (chief adviser) हैं।

नाम—(४३३६) सुशीलादेवी, मुंगेर।

ग्रंथ—स्फुट कविता।

विवरण—यह श्रीयुत काशीप्रसाद जायसवाल बैरिस्टर, पटना की ज्येष्ठा पुत्री हैं। इनका श्वशुरालय मुंगेर में है। इनकी कविता प्रायः भक्ति-भाव की हुआ करती है। नीचे उद्धृत इनकी कविता देहरादून-साहित्य-सम्मेलन के अवसर पर पढ़ी गई थी, और इस उपलक्ष में इन्हें एक स्वर्ण-पदक प्रदान किया गया था।

उदाहरण—

विश्व-प्रगति के गायक बंधो, नित्य नया है तेरा गान,
तरल तरंगों की तानों पर थिरक रही है जिसकी तान।
मेघ-मृदंग, नदी-नद-नूपुर, वात नाद वीणा कर धार,
सुंदर साज सजाकर नटवर, बंद किया चेतन का द्वार।
सात सरों के सुख-सागर पर तैर रहा सारा संसार,
शांत मुग्ध उस नील लता में उठता है मानस-उद्गार।
आदि काल से तू गाता है, मुझको भी अब गाने दे,
ऐ रागी! ऐ चतुर गवैए! लय में लय मिल जाने दे।

नाम—(४२३७) शिवदुलारे त्रिपाठी (उपनाम नूतन) मौरावाँ, ज़िला उन्नाव।

जन्म-काल—सं० १६४६।

रचना-काल—सं० १६८०।

ग्रंथ—(१) नूतन-विलास, (२) छात्र-शिक्षा, (३) दंगाष्टक, (४) रईस-रहस्य (बन रहा है), (५) रुक्मिणी-हरण (बन रहा है)।

विवरण—परमोत्कृष्ट वीर काव्य लिखते हैं। हमारे मिलनेवालों में हैं।

उदाहरण—

वारी प्यारी लेखनी, दुलारी कविराजन की
तो मैं जोर जौहर जमाल है, महत्ता है;
छूरी औ' कटारी कारी मंद हैं विचारी सारी
तेरे आगे कुंठित कृपान, कुंद कत्ता है।
नूतन जू संतत समस्त महि-मंडल में
व्यापि रही अगम अपार तेरी सत्ता है;
राजा-महाराजा उमरावन की चालै कौन,
ताकत तिहारी देखि चकित चकत्ता है।

नाम—(४२३८) सूर्य वर्मा (बी० ए०)।

जन्म-काल—सं० १६६१।

रचना-काल—सं० १६८०।

ग्रंथ—सुबोध रामायण, बहुसंख्यक निबंध तथा समालोचनाएँ।

विवरण—सरस्वती के पुराने लेखक हैं। इनके पिता बा० रुद्रनारायण सलटौआ, ज़िला बस्ती-निवासी, सरकारी स्कूलों के अध्यापक तथा हिंदी-लेखक एवं बँगला के अनुवादक हैं। इनकी कई पुस्तकें स्कूलों में पढ़ाई जाती हैं।

नाम—(४३३९) हरिभाऊ उपाध्याय। उज्जैन-ज़िले के भौंरासा-नामक ग्राम में उत्पन्न हुए। पिता का नाम पं० सिद्धनाथजी है।

जन्म-काल—सं० १९५५।

रचना-काल—सं० १९८०।

ग्रंथ—कई पत्रों के संपादक रहे हैं।

विवरण—आप बहुत दिन तक 'सरस्वती' में काम करते रहे। पीछे 'प्रभा', 'हिंदी-नवजीवन', 'मालवमयूर', सस्ता साहित्य-मंडल में काम किया, तथा त्यागभूमि का संपादन करते रहे। उद्धत देश-प्रेम-वश कई बार जेल-यात्रा भी कर चुके हैं। कविता भी नवीन भाव-पूर्ण अच्छी करते हैं, तथा बड़े उत्साही सज्जन हैं।

उदाहरण—

कहाँ से लाऊँ चोखे फूल ?
भौंरों ने जूठे कर डाले रहे न तव अनुकूल;
तेरे भक्त फूल चुन लाते पाते मंगल-मूल।
पर मैं जब-जब जाता हूँ, काँटे ले आता भूल;
काँटों का यह बाग लगाया, काँटों के ये फूल।
अर्पण हैं तेरे चरणों में तीखे-तीखे फूल;
कहाँ से लाऊँ चोखे फूल ?

ज्ञान-खानि का रत्न नहीं हूँ, और न काव्य-कला-गुंबद;
मैं तो कोरा क्षार-सिंधु के जल का हलका-सा बुद्बुद।
अश्रु नहीं, जो व्यथा-कथा को जग के उर में लिख पाऊँ;
मुक्ताफल हूँ नहीं, स्वर्ग-सुंदरियों में आदर पाऊँ।
मैं तो खारे जल का बुद्बुद रीता आता-जाता हूँ;
खाली जग में आकर क्षण-भर सूने में लय पाता हूँ।

नाम—(४३४०) हेमचंद्र जोशी (बी० ए०)।

विवरण—आप अलमोड़ा ज़िला-निवासी प्रतिभाशाली नवयुवक लेखक हैं। अपनी देश-भाषा से आपको बाल्यावस्था से ही प्रेम रहा है। स्फुट लेखों के रूप में इनकी हिंदी-साहित्य-सेवा, मुख्यतः सं० १६८० में प्रारंभ होकर, आज तक अविरत होती चली आ रही है। अपनी उच्च शिक्षा समाप्त करने पर बहुत दिनों तक आपने 'सत्ययुग', 'दैनिक भारतमित्र', 'कलकत्ता-समाचार' आदि पत्रों के संपादकीय विभाग में काम किया। 'कूर्मांचल-केसरी' के आप जन्मदाता हैं। कुछ काल तक यह महाराजा वस्तर के निजू अमात्य रहे थे, किंतु कट्टर देश-भक्त होने के कारण इन्होंने नौकरी छोड़ दी, और यह देश-सेवा में संलग्न हो गए। औद्योगिक शिक्षा प्राप्त करने के हेतु इस समय आप योरप में हैं, और वहाँ से लेख आदि लिखकर बराबर हिंदी-साहित्य की सेवा कर रहे हैं।

समय—संवत् १६८१

नाम—(४२४१) कालीप्रसाद त्रिपाठी (श्रीकर) चिलौली, ज़िला उन्नाव।

जन्म-काल—सं० १६५६।

रचना-काल—सं० १६८१।

ग्रंथ—(१) सुबांधव (नाटक), (२) अन्योक्ति शतक, (३) दिल्ली-पतन, (४) जौहर, (५) कौमुदी-भाष्य, (६) सुधन्वा-वध, (७) दोहावली भाष्य, (८) गंगा-लहरी पद्यानुवाद।

विवरण—आप पं० कालीकुमार के पुत्र तथा पं० रामकिंकरजी के पौत्र हैं। आपका घराना सदा से संस्कृत के उच्च विद्वानों से अलंकृत रहा है, और इन्होंने स्वयं संस्कृत की उच्च परीक्षाएँ उत्तीर्ण की हैं। ऊपर लिखे हुए ग्रंथों के अतिरिक्त इन्होंने संस्कृत में लगभग ५०० श्लोकों का 'वैद्य-भूषणम्'-नामक ग्रंथ बनाया है। इस समय यह 'अर्जुन-वध'-नामक एक काव्य-ग्रंथ लिख रहे हैं।

उदाहरण—

बिछाया कैसा माया-जाल ।
फँसकर जिसमें छुट्टी पाना अतिशय कठिन त्रिकाल।
सूत्रपात से ही इसके कुछ शंकित था मैं बाल ;
किंतु देखकर विश्व-व्यापिनी विभुता हूँ बेहाल।
छोटे - बड़े, पढ़े - अनपढ़, सत - असत, रंक - भूपाल ;
एक तंतु भी तोड़ न पाए, श्रमित गए सब हाल।
करते घृणा जाननेवाले इसकी कुटिला चाल ;
पर अज्ञानी उनसे रखते द्वेष महा विकराल।
रज्जु विशाल व्याल-सा इसका हृदय रहा है साल ;
'श्रीकर' वही मुक्त हो सकता, जिस पर ईश दयाल।

नाम—(४३४२) नंदकिशोरलाल 'किशोर' ग्राम छतनेश्वर, जिला दरभंगा।

जन्म-काल—सं० १९५८।

रचना-काल—सं० १९८१

ग्रंथ—(१) कुसुम-कलिका, (२) महात्मा विदुर (नाटक), (३) बाल-बोध रामायण, (४) आरोग्य और उसके साधन, (५) मुक्ति-धारा।

विवरण—आप कर्ण कायस्थ हैं। आपके पिता का नाम मुंशी मनमोहनलाल है। हिंदी, उर्दू, फ़ारसी, संस्कृत के अतिरिक्त आपने बँगला-भाषा का भी अच्छा अध्ययन किया है। सं० १९८१ में आपने 'मैथिली'-नामक अपनी स्वतंत्र पत्रिका निकाली। अब आप समस्तीपुर में मुख़्तारगिरी करते हैं। आपकी रचनाएँ चक्रवर्ती, विश्वमोहन, डोम पुष्प, तरुण भारत, मिथिला-मिहिर आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। आप सुकवि हैं।

उदाहरण—

अली कली में फँसा प्रेम से मत्त बना है;
रस के वश में आज पड़ा सुधि भूल रहा है।
रवि अस्ताचल चला भला अब भी तो चेतो;
अरे प्रिया को चूम-चूस अपना पथ ले तो।
पीछे अपने हाथ को, मल करके रह जायगा;
कमल-कली मुँद जायगी, निशि-भर नीर बहायगा।

नाम—(४३४२) मधुसूदन ओझा 'स्वतंत्र', महिला, इटाढ़ी (आरा)।

जन्म-काल—सं० १९५९।

रचना-काल—सं० १९८१।

ग्रंथ—(१) कंस-वध, (२) धर्मवीर, (३) मोरध्वज, (४) समाज-दर्पण (अप्रकाशित)।

विवरण—आप पं० जगन्नाथ ओझा के पुत्र हैं। आपकी कविताएँ (राष्ट्रीय) प्रायः पत्र-पत्रिकाओं में निकला करती हैं।

उदाहरण—

आगे कैसे बढ़ूँ, सूझता नहीं भयानक पथ है आज;
पीछे हटना नहीं जानता, रख लो भगवन् मेरी ! लाज।
आशा तप विश्वास धैर्य हैं भक्ति-पंथ के प्रमुखाधार;
बढ़ता हूँ नहिं किंचित् डर है तुम पर मेरा रक्षा-भार।
मन, बच, कर्म-भाव से सब दिन रहूँ धर्म-पालन में लीन;
तप से कभी न विचलित होऊँ, कभी न हो मम साहस हीन।
मर जाऊँ यदि सत्य धर्म-हित, यही रहे दिल में अरमान;
अखिल विश्व-हित जन्म अनेकों धारण हों मेरे भगवान।
हृदय भक्ति नहिं, भाव शुद्ध हैं, सब प्रकार से हूँ अति दीन;
इतना बल दे नाथ, हृदय में यही कामना लगी नवीन।

नाम—(४३४४) सूर्यानंद वर्मा, मेघवन, दरभंगा।

जन्म-काल—सं० १९६१।

रचना-काल—लगभग सं० १९८१।

ग्रंथ—(१) सेवाश्रम (उपन्यास), (२) आत्मसुधार, (३) आदर्श विद्यार्थी, (४) कृतघ्न-बंधु, (५) हिंदू-धर्म का स्वरूप, (६) नरेंद्र-मठ, (७) नर-पिशाच-माधव, (८) सफलता का साधन, (९) संसार-प्रवेश तथा व्यावहारिक ज्ञान, (१०) स्वप्न-साम्राज्य आदि।

विवरण—आप कायस्थ हैं। ग्रंथ आपने अच्छे विषयों पर लिखे हैं।

समय—संवत् १९८२

नाम—(४३४५) अनूप शर्मा एम्० ए०, एल्-टी०।

जन्म-काल—सं० १९५७ वि०। पिता का नाम पं० बदरीप्रसाद त्रिपाठी।

स्थान—नबीनगर (सीतापुर)।

वर्तमान पता—हेडमास्टर, खैराबाद।

कविता-काल—सं० १९८२ से।

विवरण—कविता वीर-रस-प्रधान। काव्य-गुरु पं० गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही'। सरस्वती, माधुरी आदि पत्रिकाओं में कविताएँ प्रकाशित होती रहती हैं। पुस्तकें (१) प्रकाशित—सुनाल काव्य और अप्रकाशित—सिद्धार्थ-चरित्र। वीर-काव्य अच्छा रचा है।

उदाहरण—

नाम रतनाकर यथारथ परयो है यातैं
चौदहौ रतन धारे सोहतै रहत है;
तरल तरंगनि उमंगनि के संगनि सों
विश्वमोहिनी को मन मोहतै रहत है।

निखिल नदी-नद को निपुन निधान एकै
बोहित के बृंदनि बिपोहतै रहत है ;
ऐहो कुंभजात ! एतो वारिधि वढ़यो तौ कहा
रावरी कृपा की कोर जोहतै रहत है।
मगन गगन है तुम्हारी भजनावली में
कोकिल कपोत कीर के समान कूजा को ;
बिसद वजे हैं घने घंट घनराज के ये
सुनियत सानी न तिलोक में कहूँ जाको।
ठाड़ी निशि-वासर से आज दीप-धूप लैके
चाँदनी की आरती लै भोग कंद कूजा को ;
स्याइए न नेकौ वार खोलिए दया के द्वार,
प्रकृति पुजारिनी खड़ी है नाथ पूजा को।

धावनैं क्यों न पठावतीं द्वार थकी मग जोय घड़ी-घड़ी आँखैं ;
क्यों न पियैं अभिनंदन काज पिरोवतीं मोतिन की लड़ी आँखैं।
क्यों न सँवारतीं री मकरंद, अरी अरबिंद की पंखड़ी आँखैं ;
ढारतीं क्यों न कपोलन पै वै बड़े-बड़े बूँद बड़ी-बड़ी आँखैं।

नाम—(४३४६) अवधकिशोरसहाय वर्मा 'बाण', ग्राम कंचनपुर, ज़िला गया।

जन्म-काल—सं० १९५७।

ग्रंथ—दर्शन और शिक्षा-विषयक स्फुट लेख।

विवरण—आपने अपनी उच्च शिक्षा काशी-विश्वविद्यालय में प्राप्त की, और वहीं से इन्होंने बी० ए० तथा एम० ए० की उपाधियाँ लीं। तर्क-शास्त्र पर भी आपने परिश्रम किया है। इस समय आप राँची-ट्रेनिंग-कॉलेज में हिंदी-साहित्य के अध्यापक हैं, और 'चित्तौरोद्धार'-नामक छंदोबद्ध काव्य लिखने में व्यस्त हैं। सामयिक मासिक पत्रिकाओं में समय-समय पर आपके लेख निकला करते हैं।

नाम—(४२४७) उमाशंकर वाजपेयी (एम्० ए०, उमेश)।

जन्म-काल—माघ-कृष्ण २, संवत् १९६४ । लखनऊ में ।

पिता का नाम पं० अंबाराम वाजपेयी ।

विवरण—एक बार हिंदोस्तानी एकेडेमी से आपको १००) का पुरस्कार अच्छी रचना पर मिला । हम लोगों को आप अपनी रचना सुनाया करते हैं। आप एक सुकवि और होनहार लेखक हैं। सुचकुंद-चरित्र खंड काव्य प्रायः १०० पृष्ठों का रचा जो अप्रकाशित है।

उदाहरण—

चाहत न रिद्धि-सिद्धि संपत्ति दुनी की नाथ,
चाहत न रूप वपु कीरति सुहावनी।
चाहत न राज के समाज सुख-साज बहु,
चाहत न दिव्य वस्त्र-भूपन-प्रभा घनी।
चाहत न चिंतामनि-मंडित सुकुतधाम,
चाहत न नाग वाजि बाहन महा बनी;
चाहत 'उमेश' एक लाड़िली के पाँयन की
वृंदावन कुंज की पुनीत रज की कनी।

हिमालय के प्रति

उठु-उठु त्यागु आजु थिरता हिमंचल तू,
मेरी हाँक सुनि क्यों न ऊपर उछरतो;
मौन बनि बैठ्यो, तोहिं लाज हू न आवै मूढ़,
कैसे निज गौरव को हाय! तू बिसरतो।
सुकवि 'उमेश' बोलि लेतो क्यों न बंधुन को,
क्यों न बढ़ि बैरिन पैं बज्रपात करतो;
देखि-देखि दीनन की दारुन दसा को आजु
कुटिल कुचालिन पैं टूटि क्यों न परतो।

कौन निज नाम रूप गुण से अजान तुम,
इस अवनी के अनमोल आभरण से ;
देवदूत से हो कहो कौन द्युतिमान तुम,
मोती-से सरस शुचि मेघ वारि-कण-से ।
वारिधि में बीचि के प्रथम लास से हो तुम,
कौन लघु जीवन के एक स्वर्ण क्षण से ;
उतरे न जाने ऊ न जाने किस लोक से हो,
शिशु तुम कौन नवशशि की किरण-से ।
प्रेम-मसि अंकित तुम्हारी मंजु मूर्ति वह
मिटती कभी न मृदु मानस-दुकूल से ;
जन मन भाई शुभ सहज लुनाई लख,
अति भयदाई दुख जाते सब भूल-से ।
चंद्रकांतमणि-से भी शीतल स्वभाव के हो,
कांति में मदन से कि शांति सुख मूल से ;
मधु-ऋतुवाली हरियाली में सुहृद तुम
कौन निज डाली में रहे हो फूलि फूल से ।

नाम—(४२४८) कौशलेंद्र राठौर, डालूपुर, फ़रु खाबाद ।

जन्म-काल—सं० १९५७ ।

मृत्यु-काल—सं० १९८७ में अग्नि-प्रकोप से मृत्यु ।

विवरण—आप ख़ूबसिंहजी राठौर के पुत्र थे । आपने काव्य-शास्त्र का अध्ययन किया । हिंदी, उर्दू, फ़ारसी, संस्कृत, अँगरेज़ी आदि भाषाओं का आपको अभ्यास था । कविता अच्छी रचते थे ।

उदाहरण—

सदय बड़े हो है सदयता तुम्हारी गेय,
छोड़ते न आन अपनी हो किसी हाल में ;

रखते अटल अनुराग हो सभी के प्रति
बाँध रक्खा बैरियों को भी है प्रेम-जाल में।
कौशलेंद्र कृशता तुम्हारी ही शरण लेती,
खोजती तुम्हीं को है दरिद्रता दुकाल में;
शांति पाती है तुम्हारी छाया में निदाघ धूप,
शीत छुपता है मुट्ठियों में शीत-काल में।

उनपै अपनो मन वारिए ना, जो सनेह की जानत रीति नहीं,
जहँ नेह नए नित लागे नएन सो है तहँ की कछु प्रीति नहीं;
छल स्वारथ को है लगाव बुरो, यह प्रेम औ नेम की नीति नहीं,
उनसों हित कीन्हें कहा फल है, जिनके हित की परतीति नहीं।

नाम—(४३४९) चंद्रमाराय शर्मा विशारद।

जन्म-काल—सं० १९५७।

रचना-काल—सं० १९८२।

ग्रंथ—(१) धारा-प्रकाशिका, (२) नलोदय, (३) आरत-भारत, (४) त्रिपथगा, (५) गद्य - गमक, (६) पंचगव्य, (७) पिंगल - प्रबोध, (८) सतसई - टीका, (९) रामचंद्रिका-टीका, (१०) विचार - मीमांसा, (११) हिंदी - निरुक्त व्याकरण, (१२) विवेक-बोध, (१३) व्याकरण-बोध।

विवरण—आप दामोदरपुर, ज़िला बलिया-निवासी पंडित रामप्रतापराय के पुत्र तथा हिंदी के उत्साही लेखक हैं।

नाम—(४३५०) जगन्नाथ मिश्र गौड़ 'कमल' वाकरगंज (पटना)।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५७।

कविता-काल—लगभग सं० १९८२।

विवरण—आप खड़ी बोली के सुकवि हैं।

उदाहरण—

जगत में सबका नियमित नाश।
उषा का बंकिम भृकुटि-विलास,
निशा का किंचित् मंजुल हास,
छटा का यह सुंदर शृंगार,
प्रकृति का है स्वच्छंद विहार।
अरुण-मंडल का रजत प्रकाश,
गगन-मंडल का पुष्पित वास।
छटाओं का यह अद्भुत मेल,
प्रकृति का है क्षण-भंगुर खेल।
कुसुम-कलियों की मृदु मुसकान,
हरित विटपों की छवि अम्लान,
'ललित-लतिका कुसुमित द्रुम-वृंद,
चटकना कलिका का स्वच्छंद।
सभी में है सौंदर्य - विकास,
सभी का होता तौ भी हास।
क्षणिक है जीवन स्वप्न-विकाश,
जगत में सबका नियमित नाश।

नाम—(४३५१) भुवनेश्वरसिंह 'भुवन', ग्राम आनंदपुर, जिला दरभंगा।

जन्म-काल—लगभग सं० १९६३ ।

रचना-काल—सं० १९८२।

ग्रंथ—स्फुट रचनाएँ।

विवरण—आप महाराजा दरभंगा के वंशज हैं। इनके प्रपितामह और वर्तमान महाराजा साहब दरभंगा के पिता सहोदर भ्राता थे। आप मैथिल ब्राह्मण पं० मदनेश्वरसिंह के पुत्र हैं। इन्होंने सं०

१६८२ से पत्र-पत्रिकाओं में लेख लिखना प्रारंभ किया। इनके लेख सरल गद्य अथवा पद्य के अतिरिक्त समालोचनात्मक भी हुआ करते हैं। आपके और दो भाई हैं, और ये तीनो मिलकर 'सिंह-बंधु' के नाम से लेखन-कार्य किया करते हैं। अपने पूज्य पिता की स्मृति में आपने मुज़फ़्फ़रपुर से 'लेखमाला'-नामक त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका अपने ही संपादकत्व में निकाली है। आप खड़ी बोली में अच्छी रचना करते हैं।

उदाहरण—

छलछल छलक रहा है तेरे यौवन-मदिरा का प्याला,
किस विषाद में किंतु कमल-मुख बना हुआ है यों काला।
सरल हृदय में दुख देने को आह! गरल ने किया निवास,
मंजु भाषिणी! मृदुल हँसी के बदले यह कैसा निश्वास।
विरह-विधुर यह अधर दुःख की झलक दिखाई देते हैं,
नयन-कोण में छिपे अश्रु-कण हृदय चुरा ही लेते हैं।

नाम—(४३५२) भैरवगिरि गोस्वामी, ग्राम कुमना, ज़िला सारन (बिहार-प्रांत)।

जन्म-काल—सं० १६५७ (७ मार्च, सन् १६००)।

रचना-काल—सं० १६८२।

ग्रंथ—मारुति-विजय (खंड काव्य)।

विवरण—आप संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान् पं० दुर्वासा ऋषि विद्यावाचस्पति के पुत्र हैं। आपने १६७३ में 'काव्यतीर्थ' और १६७५ में 'सांख्यतीर्थ'-परीक्षाएँ पास कीं। तथा कुछ काल-पर्यंत 'मित्रम्'-नामक संस्कृत-पाक्षिक पत्र के संपादकीय विभाग में काम किया। आपकी कुछ रचनाएँ 'माधुरी' और 'आयुर्वेद-प्रदीप' में प्रकट हुई हैं। इस समय आप मुज़फ़्फ़रपुर में एक स्कूल के संस्कृत-अध्यापक हैं।

उदाहरण—

तम व्योम व्यापी तब तक निशा का ठहरता,
दिशाएँ दीप्तात्मा जब तक न तिग्मांशु करता।
प्रयत्नोत्साहों की पवन यदि होवे भटकती,
घटा चिंताओं की हृदय-नभ में तो न टिकती।
लखी थी वैदेही कुशल कपि ने यद्यपि नहीं,
उन्हें भासा तो भी दृग निकट हों ज्यों यह कहीं।
छिपी भावी बातें हृदय दिखलाता विशद है,
क्रिया में उत्साही निपुण जब होता निरत है।
प्रणाम्यों का यों हो प्लवगवर ने ध्यान धरके,
तजा प्राचीरों को उछल तनु संकोच करके।
बनी की दीवालों पै वह महावीर ठहरे,
जहाँ शोभा देते बहुविधि लगे पादप हरे।

नाम—(४२५३) मनोरंजनप्रसाद एम्० ए०, ग्राम सूर्यपुरा, जिला शाहाबाद।

जन्म-काल—सं० १९५७।

रचना-काल—सं० १९८२।

ग्रंथ—'राष्ट्रीय मुरली' (राष्ट्रीय कविताओं का एक संग्रह)।

विवरण—आप बाबू राजेश्वरप्रसाद सबजज के सुपुत्र हैं। अब आपने डुमराँव को ही अपना निवास-स्थान बना लिया है। आपने अपनी प्रखर प्रतिभा से अपने छात्र-जीवन ही में विशेष कीर्ति प्राप्त कर ली थी। बी० ए० की परीक्षा में हिंदी और अँगरेज़ी-साहित्य लेकर आप सर्व-प्रथम होकर उत्तीर्ण हुए। आपकी हिंदी-परीक्षा लेने में हम (रायबहादुर श्यामबिहारी मिश्र) ने आपके उत्तर-पत्र से विशेष संतुष्ट एवं प्रसन्न होकर आपको एक प्रशंसा-पत्र दिया। 'फिरंगिया'-नामक प्रसिद्ध गीत के आप ही रचयिता हैं।

आपकी कविताएँ 'शिक्षा', 'साहित्य-पत्रिका' (आरा), 'पाटलिपुत्र'-'प्रताप', 'मर्यादा' आदि पत्र-पत्रिकाओं में निकल चुकी हैं ।

उदाहरण—

इस सुभग उद्यान में किस शान से
आज तू फूली हुई है मालती ;
चंचरीकों पर तथा नरवृंद पर,
माधुरी अपनी सभी पर डालती ।
मुग्ध भौंरा है तुझे अवलोक कर,
पास तेरे भनभनाता बार - बार ;
तेरे ही गहने पहनकर षोडशी
कर रही हैं सोलहो अपना शृंगार ।
मालती यह मोहनी तव गंध है,
रंग भी तेरा है चटकीला बड़ा ;
ज्ञात होता है मनो इस बाग में
हो पड़ा यक शुभ्र मोती का घड़ा ।
याद रख पर मालती यह दिन सदा
एक-सा रहता नहीं संसार में ;
आज सुख का जिस जगह डेरा पड़ा,
दुःख होगा कल उसी आगार में ।
आज तू फूली हुई है शान से,
है सुरभि चारो तरफ़ फैला रही ।
कल वही मैं देख लूँगा बाग में
चूमती है तू पड़ी रहकर मही ।
जो भ्रमर था देख तुझको गूँजता,
भूल भी तुझको न पूछेगा वही ;

जो पवन पंखा तुझे है झल रहा,
देखना कल धूल झोंकेगा वही।
रंग चटकीला तेरा मिट जायगा,
और माली भी न पूछेंगे तुझे;
लात मारेंगे तुझे तब हाय सब,
यह धरा ही बस शरण देगी तुझे।
मा धरा की गोद में रहकर पड़ी,
मालती हरदम कहेगी तू यही—
देख लो लोगो! ज़रा फैला नज़र,
एक-सा दिन है सदा रहता नहीं।

नाम—(४३५४) रामकुमार वर्मा (कायस्थ), प्रयाग।

जन्म-काल—सं० १९६२।

रचना-काल—सं० १९८२।

ग्रंथ—साहित्य-समालोचना तथा कबीर का रहस्यवाद।

विवरण—जूनियर लेक्चरार-हिंदी, इलाहाबाद-विश्वविद्यालय।

नाम—(४३५५) रामवचन द्विवेदी 'अरविंद', ग्राम दुबौली, ज़िला शाहाबाद।

जन्म-काल—सं० १९६२।

मृत्यु-काल—सं० १९८६।

ग्रंथ—(१) वर्ण-दशा, (२) हिंदी-संदेश, (३) विनय, (४) वीरों की वाणी, (५) श्रीकृष्ण-संदेश आदि।

विवरण—आप पं० रामअनंत द्विवेदी के पुत्र तथा सरयूपारीण ब्राह्मण थे। इनकी रचनाएँ मुख्यतः वीर-रस पर हैं। आप एक सुकवि थे।

उदाहरण—

वीरों का कड़खा

होते हैं विकराल आज हम थे जो योगी;
भूमि विपक्षी बिशिख वृंद से मंडित होगी।
उल्लू श्वान श्रृगाल लास पर खूब लड़ेंगे;
काक चील औ गीध खाल को खींच धरेंगे।
जाते हैं रणभूमि में, शत्रु-सैन्य थहरायँगे;
'एक लिंग जय' बोलकर, शोणित नदी बहायँगे।
विपुल वीरता शौर्य धीरता मन धर लेंगे;
त्याग निठुरता शौर्य ओजमय उर कर लेंगे।
देंगे बाण कराल धनुष-टंकार करेंगे;
लखकर रुधिर-प्रवाह न पीछे पैर धरेंगे।
जाकर हम रणक्षेत्र में, चंडी नृत्य कराएँगे;
'एक लिंग जय' बोलकर शोणित नदी बहाएँगे।

नाम—(४२९६) वैद्यनाथ मिश्र 'विह्वल', हुसेनगंज, लखनऊ।

जन्म-काल—सं० १९५२।

रचना-काल—लगभग सं० १९८२।

ग्रंथ—स्फुट कविताएँ।

विवरण—आप कान्यकुब्ज ब्राह्मण पं० गंगाप्रसादजी मिश्र के पुत्र तथा बख़्तावरखेरा (ज़िला रायबरेली) के निवासी हैं। अब आपका स्थायी रूप से रहना लखनऊ में होता है। आप हिंदी तथा उर्दू दोनो में अच्छी कविता करते हैं।

उदाहरण—

छैलवा छबीले की छटान छवि छीनी छाप
छहरि रही है छतियन में छबीली के;

चंद्र-चाँदनी में चारु चमकि रहे हैं चख
चतुर चितेरे चित चाहक छुटीली के।
रास हू रचाई रंग भूमि में रसिकराज,
रंग रूप रँगि रहे 'विट्ठल' रँगीली के;
काजल की कोठरी में केसहु कहूँ ते जाय,
आउब कठिन बिनु कालिख कटीली के। (माधुरी)

नाम—(४२५७) त्रिभुवननाथसिंह, 'सरोज' बिसवाँ, जिला सीतापुर।

जन्म-काल—सं० १९५७।

रचना-काल—सं० १९८२।

ग्रंथ—राधा-विनय-पचीसी (अप्रकाशित)।

विवरण—आप ठाकुर गंगाबक्ससिंह, ताल्लुक़दार रामपुर क़लाँ बिसवाँ के तृतीय पुत्र श्रीवास्तव कायस्थ हैं। इन्होंने ताल्लुक़दार-स्कूल, लखनऊ तथा ला-मार्टीनियर-कॉलेज में शिक्षा पाई है। व्रजभाषा के यह केवल अनन्य भक्त ही नहीं, वरन् खड़ी बोली में काव्य-रचना के प्रकट रूप से विरोधी हैं। रचना ऊँची श्रेणी की करते हैं।

उदाहरण—

अमल अकास भयो खंजन लखान लागे,
फूले इंदीवर भीर भौंर गुंजरन की;
धारि सिर छत्र चंद विहँसत मंद-मंद,
आभा त्यों अमंद छवि बाढ़ी उडुगन की।
बहत 'सरोज' सोंधी परिमल सनी पौन,
स्वच्छ सरितान सों है जोड़ी सारसन की;
प्रकृति बधाई मानो जगत को देन आई,
सुखद सोहाई ऋतु शरद है मन की।

कच श्याम बलाहक से दरसैं चपला दुति दंतन की सुघराई ;
भ्रु व बंक तनी सुर चाप मनो मुकुतावलि त्यों बग पाँति लखाई ।
धुनि किंकिणि झिल्लिन की झनकार 'सरोज' सुदादुर बोल सुहाई ;
दुख द्व द नसाय सुखै बरसावत, राधिका पावस-सी बनि आई ।

समय—संवत् १९८३

नाम—(४३५८) गोविंदलाल झंगर 'आर्य,' कृष्णद्वारका मुहल्ला, गया ।

जन्म-काल—सं० १९५८ ।

रचना-काल—सं० १९८३ ।

ग्रंथ—स्फुट कविताएँ ।

विवरण—आप गयावाल ब्राह्मण हैं । दक्खिन हैदराबाद के कई राजा-रईस आपके यजमान हैं । घर ही में आपने अपने परिश्रम द्वारा बँगला, अँगरेज़ी, उर्दू तथा संस्कृत में ज्ञान प्राप्त किया है । खड़ी बोली में अच्छी कविता करते हैं ।

उदाहरण—

कवि

गूँथ रहे हो भावों की लड़ियाँ यह कब से हँस-हँसकर ?
निर्निमेष नयनों से किसको निरख रहे हो तुम जी भर ?
किसके गुण पर मुग्ध हुए हो, किसका गाते हो तुम गान ?
किस अव्यक्त अजान देश में गुँजा रहे हो अपनी तान ?
अवगुंठन को खोल-खोलकर झाँक रहे हो किसका रूप ?
अलसानी आँखों की मदिरा किसकी पीकर आज अनूप ?
थिरक रहे हो बार-बार तुम रखकर सबसे यह अज्ञात ।
किस वियोगिनी की आँखों में बसकर करते अश्रु-प्रपात ?
किसके सुमधुर अधर लाल का करते हो सुंदर रस-पान ?
कौन षोड़शी मानवती का तोड़ रहे हो रुचिकर मान ?

किसकी कृश कटि को लखकर तुम भगा रहे हो यह मृगराज ?
वार रहे हो इस कुंजर को किसकी मंथर गति पर आज ?
किसके कानों से सट सटकर प्रेम-मंत्र सिखलाते हो ?
किसके कंबु-कंठ से लगकर जी की जलन मिटाते हो ?

नाम—(४२५९) भोलालालदास बी० ए०, एल्-एल्० बी०, लहरिया सराय, दरभंगा।

जन्म-काल—सं १९५२ ।

रचना-काल—लगभग सं० १९८३।

ग्रंथ—हिंदू-लॉ में स्त्रियों का अधिकार।

विवरण—आप जाति के कायस्थ तथा 'मैथिली'-नामक पत्र के संपादक हैं। 'चाँद' पत्र के भी आप सहायक संपादक रह चुके हैं। कविता भी अच्छी करते हैं।

विश्व यह अद्‌भुत नाट्यागार।
पटीयसी वह प्रकृति-नटी है सूत्रधार करतार,
गिरि कानन भू उदधि आदि ये सुंदर दृश्य अपार।
जीव-मात्र सब पात्र यहाँ हैं ज्ञानी देखनहार,
देखो तनिक ध्यान से इसको यह कैसा उद्गार।
हुआ युगांतर दृश्य उपस्थित मानो अब की बार,
यह जो प्रबल लोकमत की है उमड़ी भीषण धार।
कैसी चली मिटाती नृप की सत्ता अत्याचार,
देश-देश में हुआ प्रतिष्ठित शुभ स्वराज-सरकार।
जलियाँवाला बाग़ यहाँ भी खोल दिया वह द्वार,
भारत माता जगा रही है तुम्हें पुकार-पुकार,
बड़ा विशाल क्षेत्र है आगे कूद पड़ो इक बार।

नाम—(४२६०) रमाशंकर मिश्र 'श्रीपति'।

जन्म-स्थान—इटौंजा, ज़िला लखनऊ।

जन्म-काल—सं० १९५४ ।

कविता-काल—सं० १९८२ ।

विवरण—आपके पिता का नाम पंडित शिवराम मिश्र है। आप रेल के मोहकमा हिसाब में ७ साल से काम करते हैं। आपने प्रायः छ मास त्रिवेणी पत्रिका का संपादन किया था। स्फुट गद्य-पद्यमय लेख बहुतेरे लिखते आए हैं । स्फुट छंद तथा छायावाद की रचना भी कर चुके हैं। अधिकतर अन्योक्ति लिखा करते हैं। रचना उत्कृष्ट बनती है।

उदाहरण—

छिन्न हुई धारा भिन्न स्वार्थ से भरे वे मित्र,
खिन्न हुए खेचर मलीन तेरे परिधान ;
अंग वे न शोभा से अलंकृत ललाम धाम,
शीतल सलिल और कूल हैं न भासमान ।
तरल तरंगें चारुहासिनी विलास-पूर्ण,
झंझानिल झाग तेरा बैभव भरा गुमान ;
नष्ट हुआ बालुका की राशि में सभी तो आज,
सरिते समीप है उदधि तेरा अवसान ।
रूप-राशि इंदिरा समर्पित की श्रीपति को,
वारुणी पिलाई असुरों को सिंधु मतिमान ;
गरल फणीश को गिरीश को दिया सुधांशु,
ऐरावत से सुरेंद्र का भी किया सनमान ।
तृप्त किए देववृंद अमृत से हो प्रसन्न,
कल्पवृक्ष पाकर कुबेर बना धनवान ;
देकर अगस्त्य को शरीर-दान रत्ननिधि,
तुमने उदारता की खूब ही निबाही शान ।

नाम—(४३६१) रामचंद्र शर्मा 'काव्यकंठ', तरी (आरा)।

जन्म-काल—सं० १९५८।

विवरण—आप सुकवि हैं।

उदाहरण—

विध्वंस वाटिका हाय ! हुई—
कोमल कलिकाएँ धूल गिरीं;
सुंदर सुमनों में गंध नहीं,
लोनी लतिकाएँ हाय ! मरीं।
मालिन ! क्यों तेरे केश खुले ?
मुख की प्रतिभा क्यों क्षीण हुई ?
क्यों शोक-तप्त आँसू बहते ?
ऐं सिसिक रही, क्यों दीन हुई ?
तेरा उपवन है उजड़ गया,
यह व्यथा, विकल तुझको करती !
था सींचा जिसको प्रणय-सुधा से—
वहीं अनल-ज्वाला जलती !
यह दृश्य देखती आँखों से—
पर हृदय विदीर्ण हुआ जाता !
मंजुल मधु-स्निग्ध पराग पुष्प का—
मधुप चूसता मदमाता !
तेरे माली का पता नहीं—
क्या घोर नींद उसको आई ?
क्रंदन-ध्वनि से उस निद्रित को—
तू सखि न जगा अब तक पाई।

नाम—(४३६२) रामवृक्ष शर्मा, बेनीपुर ग्राम (डाकख़ाना रुन्नी सैदपुर), ज़िला मुज़फ़्फ़रपुर।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५८ ।

रचना-काल—सं० १९८३ ।

ग्रंथ—(१) विद्यापति की पदावली, (२) बिहारी-सतसई की टीका, (३) बगुला भगत, (४) सियार पाँड़े, (५) बिलाई मौसी, (६) तोता-मैना, (७) शिवाजी, (८) गुरु गोविंदसिंह, (९) विद्यापति, (१०) बाबू लंगटसिंह आदि ।

विवरण—आप बाबू कुलवंतसिंह के पुत्र भूमिहार ब्राह्मण हैं । आप एक बड़े विनोदी नवयुवक, लेखक एवं कवि हैं । 'बीसवीं सदी के श्रीकृष्ण' नाम की आपकी पहली कविता, जो आगे उद्धृत की गई है, सामयिक पत्रों में प्रशंसा के साथ प्रकाशित हुई । हिंदी, उर्दू के अतिरिक्त आप बँगला तथा गुजराती भाषाएँ भी जानते हैं । 'तरुण भारत', 'किसान-मित्र' तथा 'गोलमाल' पत्रों के संपादन का कार्य आपने कुछ काल तक किया । बालकोपयोगी पत्र 'बालक' के आप जन्मदाता हैं । इस समय आप 'युवक'-नामक मासिक पत्र को पटने से निकाल रहे हैं ।

उदाहरण—

वसंत-संध्या

सांध्य पवन सननन्-सननन् कर सुखद बह रही ;
चिड़िया चहक-चहककर चित का चैन कह रही ।
चटक-चटककर कली हृदय को चटकाती है ;
भ्रमरावलि भन-भनकर मन को भटकाती है ।
ऋतु वसंत संध्या समय, सुंदर उपवन कुंज है ;
अपना प्यारा पास में यहीं स्वर्ग-सुख-पुंज है ।

बीसवीं सदी के श्रीकृष्ण

साँवरे पुनः तुम्हें यदि पाऊँ ,
पूरा जंटिलमैन बनाकर सारी कसक मिटाऊँ । १ ।

कटि काछनी केसरिया जामा हीरा हार हटाऊँ,
बूट सूट नेकटाई ऊपर चश्मा चेन चढ़ाऊँ। २।
प्यारी वंशी छीन अधर पर चुरुट सिगार जलाऊँ,
कलगी मुकुट गोपिका सोहन फेंक हेट पहनाऊँ। ३।
लकुट तोड़ दे केन लचीला ठुमुक चाल चलवाऊँ,
गीता के वर बैन भुलाकर गिटपिट बोल बुलाऊँ। ४।
दधि माखन मिश्री का भाजन यमुना में भसिआऊँ,
लेमनेड सोडा ह्विस्की प्याऊँ बिसकुट केक खिलाऊँ। ५।
अबला गोपी जानि सताया पर अब कहत डराऊँ,
सबला लेडी साथ करूँ मैं सारे ऊका छुड़ाऊँ। ६।
रंज न हो जैसा दे रक्खा वैसा साज सजाऊँ,
टाँग पसार स्वर्ग में सोते उसका मजा चखाऊँ। ७।

नाम—(४३६२) रुद्रदत्त मिश्र, खैराबाद, कोटा-राज्य।

जन्म-काल—सं० १९६३।

ग्रंथ—(१) हरिश्चंद्र (पद्य-पुस्तक, अप्रकाशित), (२) कमला-चरित्र (नाटक, अप्रकाशित), (३) वीर रमणी (पद्य-पुस्तक), (४) उपदेश-सप्तशती (अपूर्ण, कुछ अंश प्रकाशित), (५) स्फुट कविताएँ।

विवरण—आप शांडिल्य गोत्रीय कान्यकुब्ज ब्राह्मण पंडित गोकुल-प्रसादजी मिश्र के पुत्र हैं। आपके पिताजी कोटा-राज्यांतर्गत खैरा-बाद में पेंशनर क़ानूनगो हैं। इनकी प्रारंभिक शिक्षा देहाती पाठ-शालाओं में हुई। हिंदी-भाषा तथा साहित्य से आपको पहले ही से रुचि थी, अतएव आपने इसका अध्ययन जारी रखकर साहित्य-सम्मेलन की परीक्षाएँ सफलता-पूर्वक पास कीं। आगरे से नार्मल-परीक्षा भी आप पास कर चुके हैं। इस समय ये मॉडल स्कूल, कोटा

में सहायक अध्यापक हैं। आप व्रजभाषा तथा खड़ी बोली दोनो ही में कविता करते हैं। डमरूबद्ध, कृपाणबद्ध, कपाटबद्ध आदि चित्र काव्य करने में भी यह महाशय अभ्यस्त हैं। इनकी कविताएँ यदा-कदा, तरुणराजस्थान, कर्तव्य, कान्यकुब्ज हितकारी, विश्वमित्र, कवि-कौमुदी आदि पत्र-पत्रिकाओं में निकलती रहती हैं। इस समय यह खड़ी बोली में एक सप्तशती तैयार कर रहे हैं। आपकी रचनाएँ 'सुरेश' नाम से अंकित रहा करती हैं। रचना उच्च कोटि की है।

उदाहरण—

किधौं अंधकार पै प्रचंड मारतंड कोप्यौ,
किधौं घोर कानन में अग्नि-ज्वाल धाई है;
किधौं मूल पादप समूह के उखारिबे को
झंझानिल प्रबल झकोर झूमि आई है।
कैधौं घन माहिं सृष्टि छारिबे को 'सुरईश',
लोचन त्रिलोचन की चंड ज्योति छाई है;
कैधौं करिबे को ध्वंस म्लेच्छन के बंस आज,
वीर सिरताज श्रीप्रताप की चढ़ाई है।

नाम—(४३६४) श्यामधारीप्रसाद 'श्याम', ग्राम भगवानपुर, ज़िला मुज़फ़्फ़रपुर।

जन्म-काल—सं १९५८।

रचना-काल—सं० १९८३।

ग्रंथ—स्फुट कविताएँ।

विवरण—आप श्रीवास्तव कायस्थ बाबू वासुदेवनारायण के पुत्र हैं। आप सामयिक पत्र-पत्रिकाओं में 'विक्षिप्त', 'श्यामघन', 'श्याम' तथा 'श्रीश्याम' नाम से पद्य और 'मंद मलयानिल' नाम से गद्य लिखा करते हैं। सुकवि तथा अच्छे गद्य-लेखक हैं।

उदाहरण—

पूर्वस्मृति

पूर्व स्मृति ! क्यों कोमल हृद पर भीषण घातें करती हो ;
मधुर विगत बातों को रह-रह कानों में क्यों भरती हो।
मंगलमयी प्रेम-प्रतिमा के संग विहरने की बातें ;
बार-बार मत याद करा तू प्राण हमारे अकुलाते।
जगदीश्वर जब किसी जीव की है प्रिय वस्तु हड़प लेता ;
अच्छा होता आजीवन-हित, तुम्हें विदा भी कर देता।

विपंची से

विपंची ! रस में विष मत घोल ;
हृदय-हीन जग-सम्मुख अपने मन की बात न खोल।
सुनकर तेरी व्यथा मूढ़ नर करते हैं परिहास ;
कौन सांत्वना देगा तुमको है झूठी यह आस।
छोड़ सभी ममता सुरलय की छिन्न - भिन्न कर तार ;
व्यथित हृदय का मूक भाव से करो व्यक्त उद्गार।

समय—संवत् १९८४

नाम—(४२५५) जयनारायण झा 'विनीत', विद्यालंकार, विशारद, ग्राम बैनगी-नवादा, जिला दरभंगा।

जन्म-काल—सं० १९५९।

रचना-काल—सं० १९८४।

ग्रंथ—(१) घननाद-वध, (२) दूत श्रीकृष्ण, (३) वीर-विभूति, (४) महिला-दर्पण, (५) कुंज और (६) माला (पद्य-संग्रह)।

विवरण—आप मैथिल ब्राह्मण पं० रघुनंदन झा के पुत्र हैं। कविता अच्छी करते हैं।

उदाहरण—

बहता बेड़ा

लगा था करने मैं शृंगार।
छबि की मादकता में विस्मृत हुए अन्य व्यापार,
न करने पाया तनिक विचार।
सका कर स्वागत का न विधान,
जुटाया नहीं जरा सामान।
व्यस्त रहा सजने की धुन में भूल गया संसार,
सका न हो समुचित आचार।
लगा था करने मैं शृंगार,
स्वयं राजन्! कितने ही बार,
पधारे तब तक मेरे द्वार,
शून्य भवन में मुझे व्यस्त लख चले गए हर बार,
नहीं हो सका जरा सत्कार।
मगर मेरे सारे अरमान,
हुए अबलों नभ सुमन समान,
अलंकार ये साज न बेड़ी कड़ियों के हैं तार,
मोह खल का अमोघ हथियार।
यह शृंगार न स्वर्ण सदन है भीषण कारागार,
महामाया का रौरव द्वार।
समझकर हूँ बेसमझ अजान,
अभी भी है प्रिय मम अरमान।
जो है अंतर डाले बाधक मिलने में सुख सार,
उन्हें ही करता अब भी प्यार।
करो अब आ खुद ही उद्धार,
पूर्ण कर अभिलाषा सुकुमार।

नाथ ! पहन लो बरबस मेरा आत्म समर्पण हार ,
लगा दो बहता बेड़ा पार।

नाम—(४३६६) जैनेंद्रकुमार जैन, दिल्ली-निवासी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९६० ।

रचना-काल—सं० १९८४ ।

ग्रंथ—परख-वातायन (कहानियों का संग्रह) ।

विवरण—इन्हें १९८९ में हिंदोस्तानी एकेडेमी से परख पर ५००) का पुरस्कार मिला था। हम (शुकदेवविहारी मिश्र) भी उसके परीक्षकों में थे।

नाम—(४३६७) देवव्रत शास्त्री, गौरे, दामोदरपुर (चंपारन) ।

जन्म-काल—सं० १९५९ ।

विवरण—आप जाति के क्षत्रिय, अपने पिता श्रीयुत महावीरसिंह के द्वितीय पुत्र हैं। आपने सं० १९७९ में विहार-विद्यापीठ से एंट्रेंस-परीक्षा में उत्तीर्ण होकर काशी-विद्यापीठ में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के हेतु प्रवेश किया। इस विद्यापीठ से आप 'शास्त्री'-परीक्षा में यशस्वी हुए। यह अपने अध्ययन-काल से ही विविध विषयों में लेख लिखते रहे हैं। आप समालोचक भी हैं। अपने ग्राम के किसानों तथा मज़दूरों को शिक्षित बनाने में आप बड़े प्रयत्न-शील रहे हैं, और इसी के हेतु आपने अपने ग्राम में 'नवजीवन' नाम का पुस्तकालय स्थापित किया है। इस समय यह महाशय 'प्रताप' के सहकारी संपादक के रूप में सफलता-पूर्वक कार्य कर रहे हैं। आप समाज तथा देश-सुधार के प्रवर्तक और सुकवि हैं।

उदाहरण—

विश्व-विपंची के वादक हे विश्व-विमोहन, विभव-निधान;
हे सर्वेश्वर-जगन्नियंता, भाग्य-विधायक सब गुण खान!
परमपिता परमेश्वर स्वामी, हे जग के प्रतिपालक ईश;
हे स्वतंत्रता के दाता, भव-बंधन के नाशक जगदीश!
ज्वलित हृदय की विपुल वेदना हरनेवाले हे भगवंत;
जीवन-ज्योति जगानेवाले, अजर, अमर, अखिलेश, अनंत!
बृहद्विश्व के चतुर प्रबंधक, नायक जग के प्रेमागार;
हे गुरु ज्ञानी मोक्षप्रदायक, सब सुख - दायक जगदाधार!
अमरपुरी, जगतीतल - नंदन - कानन के हे दिव्य प्रकाश!
संत-हृदय के श्रेष्ठ प्रेम हे शिशुओं के स्वर्गीय सुहास!
हे भटकों के मार्ग प्रदर्शक, विरही के आश्रय आधार!
हे अनाथ के रक्षक - पालक, दुखियों के हित सदा उदार!
हे सरिता के सर-सर झर-झर झरनों के कमनीय स्वरूप;
विहँग-वृंद के कलरव सुंदर सुमनों के सद्गंध अनूप।
गिरि-गह्वर नीरव निशीथ हे निर्जन वन की अनुपम शांति;
शीतल मंद सुगंध पवन के दाता चंद्र सूर्य की कांति!
हे न्यायी सर्वोच्च निरीक्षक, निपुण नियामक विमल विधान!
कामधेनु धर्मिष्ठ व्यक्ति के पापी के संहारक प्राण।
निराकार आकार - सहित हे समदर्शी सर्वज्ञ सुजान!
प्रकृति-मंच के सुघड़ खिलाड़ी, अंतर्यामी 'देव' जहान।

नाम—(४२६८) महादेवी वर्मा एम्० ए०, प्रयाग-निवासिनी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९६८।

रचना-काल—सं० १९८४।

ग्रंथ—(१) नीहार, (२) रश्मि, (दोनो प्रकाशित स्वरचित छंदों के संग्रह)।

विवरण—स्त्री-कवियों में आजकल इनका स्थान अच्छा है।

प्रायः छायावादी कविता करती हैं। होनहार लेखिका हैं।

समय—संवत् १९८५

नाम—(४२६९) अनिरुद्धलाल 'कर्मशील', ग्राम ताजपुर, ज़िला दरभंगा।

जन्म-काल—लगभग सं० १९६०।

रचना-काल—सं० १९८५।

ग्रंथ—स्फुट रचनाएँ।

विवरण—आप बाबू मुकुंदसाहु के पुत्र और सुकवि हैं।

उदाहरण—

पथिक तुम फिर जाओ निज ग्राम,
यहाँ न ठहरो इस उपवन में नहीं सुखद विश्राम।
नहीं रहा अब वह उपवन का प्यारा सुखद बसंत;
कर छोड़ा दुर्दांत काल ने इसकी श्री का अंत।
तोड़े हुए कहीं है पल्लव मसले अनुपम फूल;
टूटी हुई कहीं पर कलियाँ फाँक रही हैं धूल।
हरे फलों का हाय हुआ है कैसा करुण विनास!
उजड़े ही हैं कहीं अभागी चिड़ियों के आवास।
उजड़ा-पुजड़ा दीख रहा है हाय मालती-कुंज!
जिसे प्यार करता था अतिशय शोकित प्रणयी-पुंज।
बहता है सब ओर भयानक अत्याचार समीर;
बंद हुए वे मधुर चहकनेवाले सुंदर कीर।
कौन करेगा स्वागत तेरा अहो पथिक अनजान!
लौटो, दुखित हृदय से होगा क्या आतिथ्य प्रदान!

नाम—(४२७०) उच्चेश्वरप्रसादसिंह 'ईश्वर', ठाकुर नौगाईं, संग्रामपुर (मुंगेर)।

जन्म-काल—सं० १९६० ।

विवरण—नवीन विचार-युक्त अच्छी रचना करते हैं ।

उदाहरण—

है संसार, वही भारत है, मेरा प्यारा भवन वही ;
इधर-उधर हैं वही दिशाएँ, ऊपर नीला गगन वही।
वही सूर्य प्रतिदिन आता है लेकर सोने की थाली ;
वही चंद्र अमृत बरसाता, भरता अन्नों की थाली।
वही खेत शस्य भरे लखाते, वही वनों की हरियाली ;
भूधर सभी खड़े वे ही हैं, करते जग की रखवाली।
रत्नाकर गंभीर भाव से वही दृश्य दिखलाते हैं ;
सरिताओं को बड़े प्रेम से हृदय-मध्य बिठलाते हैं।
वही वसंत, वही वर्षा है, वही शरद-साम्राज्य यहाँ ;
वही कोकिला, वही पपीहा की मद-भरी पुकार यहाँ।
वही फुदकना वन-पक्षी का, और मयूरी नृत्य वही ;
वही चहकना है बुलबुल का, सुभग सारिका कृत्य वही।
वही फूलना है कलियों का, वही सुगंधी अलबेली ;
अब तक वही मोहिनी मूरति धारे नूतन बनबेली।
पर फिर भी क्या सदा उदासी रहती है मेरे मन में ;
है 'अभाव' स्वातंत्र्य विना सब बिन सुख हो इस जीवन में।

नाम—(४२७१) गयाप्रसाद शर्मा द्विवेदी गंगावली अमेठी-राज्य, सुलतानपुर (अवध)।

जन्म-काल—सं० १९५६ ।

रचना-काल—लगभग सं० १९८५ ।

ग्रंथ—(१) संतोष, (२) सुस्वप्न (गद्य - पद्य मय

कल्पित स्वप्न का वर्णन), (३) भरत-मिलाप, (४) कृष्णा-कर्षण, (५) नव-कुसुम, (६) प्रपंच-पुराण (व्यंग्यात्मक ग्रंथ, अपूर्ण), (७) सौमित्र-सौर्य-सुधा, (८) हृदय-निकुंज ।

विवरण—ऊपर दिए हुए आपके ग्रंथ अभी अप्रकाशित रूप में हैं । कविता अच्छी है ।

उदाहरण—

जिसकी कृपा से देश की लाखों-करोड़ों नारियाँ ;
हैं भोगती वैधव्य दुख इस हिंद की सुकुमारियाँ ।
स्वर्गीय सुख का लोप जिसके पुण्य का परिणाम है ;
उस देव बाल-विवाह को युगहस्त जोड़ प्रणाम है । १ ।
जिसकी कृपा से इस समय यह देश शक्ति-विहीन है ;
जिसकी कृपा से सभ्य 'भारत' दीन हीन मलीन है ।
जिसका 'सनातन धर्म' सुख सौभाग्यदायक नाम है ;
उस देव बाल-विवाह को युगहस्त जोड़ प्रणाम है । २ ।

नाम—(४३७२) जयचंद्र विद्यालंकार, प्रयाग ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९६० ।

रचना-काल—सं० १९८९ ।

विवरण—आप बड़े ही उत्साही कार्यकर्ता, कांगड़ी के स्नातक, गहन विद्वान् हैं । भारतीय इतिहास की रूप-रेखा नाम्नी अच्छी पुस्तक आपने लिखी है, जो हिंदोस्तानी एकेडेमी से छपी है । इसमें बड़े खोज और योग्यता से काम हुआ है । प्रायः १००० पृष्ठों से ज़्यादा का ग्रंथ है । पुरातत्त्व पर भी आप श्रम करते हैं । सम्मेलन के कार्यकर्त्ता हैं ।

नाम—(४३७३) (राजकुमार) रघुवीरसिंह बी० ए०, सीतामऊ ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९६४ ।

रचना-काल—सं० १९८९ ।

रचना—ऐतिहासिक विषयों पर लेख, मुसलमानकालीन इतिहास ।

विवरण—आप एच्-एच्० महाराजा सीतामऊ के राजकुमार तथा बड़े उत्साही हिंदी-प्रेमी एवं लेखक हैं। इनका मुसलमान-काल का इतिहास अनूठे प्रकार से लिखा हुआ प्रायः ४०० पृष्ठों का रोचक ग्रंथ है।

नाम—(४२७४) रणंजयसिंह ।

जन्म-काल—सं० १९५८ ।

रचना-काल—सं० १९८९ ।

ग्रंथ—(१) सत्य-संरक्षण, (२) व्यायाम, (३) म्लेच्छ-महामंडल आदि ।

विवरण—अमेठी के राजकुमार तथा आर्यसमाजी हैं। सं० १९८२ में भारतीय आईनसभा के सदस्य चुने गए तथा १९८७ में महामना मालवीयजी के साथ आपने भी उससे त्यागपत्र दे दिया।

नाम—(४२७५) रामचंद्र शुक्ल (सरस) एम्० ए०, प्रयाग-निवासी।

जन्मकाल—लगभग सं० १९६० ।

कविता-काल—सं० १९८९ ।

रचना—अभिमन्यु-वध ।

विवरण—इनके भाई पं० रामशंकर शुक्ल ने हिंदी-साहित्य का इतिहास-ग्रंथ लिखा है, जिसका आपने संपादन किया है। ब्रजभाषा और खड़ी बोली में अच्छे छंद लिखते हैं।

नाम—(४२७६) रामेश्वर झा 'द्विजेंद्र' बी० ए०, भागलपुर।

जन्म-काल—सं० १९६० ।

ग्रंथ—स्फुट रचनाएँ ।

विवरण—आप मैथिल ब्राह्मण हैं। इन्होंने कतिपय पुस्तकें बनाई हैं, किंतु वे अभी अप्रकाशित हैं। 'चाँद' पत्रिका में आपकी रचनाएँ मुख्यतः प्रकट हुआ करती हैं। खड़ी बोली में उत्कृष्ट रचना करते हैं।

उदाहरण—

मुरलिके ! सरस सुधा - अभिषिक्त,
सुना जा फिर अपनी मृदु तान;
निहित है—अंतर्हित है जहाँ,
विकल प्रणयी का अंतर्गान !
मदीय - स्मृति - पट पर अविलंब,
भव्य - भावुकतामय अभिराम;
अंकित करती सजनि ! चित्र जो—
दिखला देती दृश्य ललाम।
भनक पा जिसकी मधुमय अहो !
राधिका भी तज देती मान;
थिरकने लगती मुख पर तथा
प्रणय-धन-मिलन मधुर मुसकान।
तरणिजा की लहरी - ध्वनि - संग,
मचलती चलती थी जो तान;
मरी-सी मूक प्रकृति में शीघ्र
डाल देती थी जो नवप्रान।
(यहाँ भव-भीति-व्यथा से व्यथित,
पड़ा हूँ मुरलि ! बना म्रियमान;)
सुना जा एक बार फिर वही,
मुरलिके ! सुधा-सनी सुठि तान !

नाम—(४२७७) व्रजनाथ-रमानाथ भट्ट शास्त्री, बंबई।

जन्म-काल—सं० १९६० ।

ग्रंथ—(१) श्रीवल्लभ-विजय (धार्मिक नाटक), (२) जय-श्री (धार्मिक नाटक), (३) कल्याण (सामाजिक नाटक), (४) राजसिंह (गुजराती में ऐतिहासिक नाटक) ।

विवरण—आप तैलंग देवर्षि भट्ट पं० रमानाथ शास्त्री के पुत्र हैं । हिंदी, संस्कृत, गुजराती, मराठी, अँगरेज़ी आदि भाषाओं में श्रम किए हुए हैं । गद्य लिखने में अभ्यस्त हैं । ऊपर दिए हुए चारो नाटक अभी अमुद्रित रूप में हैं । वैष्णव-धर्म, माधुरी, गल्प-माला, सरस्वती, पताका आदि पत्र-पत्रिकाओं में इनके लेख यदा-कदा निकला करते हैं । [पं० रमाकांत त्रिपाठी, प्रकाशक, लाहौर मैंशन, बंबई द्वारा ज्ञात] ।

नाम—(४३७८) श्यामापति पांडेय (श्याम) एम्० ए०, खीरीकोठा, ज़िला आज़मगढ़ ।

जन्म-काल—सं० १९६३ ।

रचना-काल—सं० १९८९ ।

ग्रंथ—वेदना की समाधि (कहानियों का संग्रह) ।

विवरण—आपने हिंदी में एम्० ए० पास किया है । सुधा के संपादकीय विभाग में काम करते थे । आपके कथन साधारण रूप में भी गंभीर और दार्शनिक होते हैं ।

उदाहरण—

स्मृति-विस्मृति !

तुम्हें भूलकर पा न सका था कहीं शांति की छाया ;
इसीलिये कर कठिन साधना तुमको यहाँ बुलाया ।
तुम आ गए, किंतु मैंने तुमको न तनक पहचाना ;
द्वार बंद कर दिए और दे सका न तुम्हें ठिकाना ।

मुसकाए, फिर गए लौट, मैंने तुमको न बुलाया;
पा करके खो दिया किंतु, खोकर फिर तुम्हें न पाया।
मुझे सालता नहीं आज तेरा आकर फिर जाना;
किंतु भूल मैं कभी नहीं सकता तेरा 'मुसकाना'।

नाम—(४३७९) हृदयनारायण त्रिपाठी (हृदयेश), कानपुर-निवासी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९६०।

कविता-काल—सं० १९८५।

ग्रंथ—स्फुट रचना।

विवरण—आप ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली दोनो में उत्कृष्ट कविता रचते हैं। अध्यापक हैं। हम आपको आजकल के परमोत्कृष्ट कवियों में समझते हैं।

समय—संवत् १९८६

नाम—(४३८०) गंगाशरणसिंह (साहित्यरत्न), खरगपुर, बिहटा (पटना)।

जन्म-काल—सं० १९६१।

रचना-काल—सं० १९८६।

ग्रंथ—(१) विचार-प्रवाह, (२) पद्य-प्रवाह, (३) साहित्य-परिचय।

विवरण—आप चुटकीदार कविता करते हैं। इनका सव्यंग्य साहित्य उत्कृष्ट भी है।

उदाहरण—

समालोचक

समालोचकों में मेरा बस नाम प्रथम है;
मुझे नहीं भजता, वह लेखक महा अधम है।

लेखक औ' कवियों का हूँ मैं भाग्य-विधाता ;
मुझे प्रशंसा निंदा अनुचित करना आता।
खा चोट करारे कलम के कविवर पड़े कराहिए ;
भर नजर तड़पता देख लूँ, और मुझे क्या चाहिए।

लेखक

हूँ अरसिक-मूर्द्धन्य कला से, पर हूँ लेखक ;
हिंदी-पत्रों को सुंदर लेखों का प्रेषक।
हिंदी-हत्याकारी हूँ, व्याकर्ण-व्याध हूँ ;
रस-वस कुछ न जानता हूँ, मैं तो अगाध हूँ।
श्रीसंपादकजी खोलकर मुझको खूब सराहिए ;
लेखों को मेरे छाप दें, और मुझे क्या चाहिए।

प्रकाशक

अरे लेखको ! हमीं प्रकाशक कहलाते हैं ;
जो तुमको तम से प्रकाश में ले आते हैं।
इतना ही उपकार हमारा है क्या कुछ कम ?
पुरस्कार फिर कहो माँगते हो क्यों हरदम।
जरा तुम्हीं सोचो तुम्हें करना ऐसा चाहिए ;
हैं हम पूँजीपति, हमैं तो हाँ पैसा चाहिए।

नाम—(४३८१) जनार्दन झा 'द्विज', ग्राम रामपुरडीह, जिला भागलपुर।

जन्म-काल—सं० १६६१।

रचना-काल—सं० १६८६।

ग्रंथ—(१) स्फुट रचनाएँ, (२) किसलय (गल्प), (३) मालिका (कहानी-संग्रह), (४) अनुभूति।

विवरण—आप पं० उचितलाल झा के सुपुत्र हैं। इन्होंने लेखन-कला के अतिरिक्त वक्तृत्व तथा नाट्य-कला में भी जी लगाया है।

आधुनिक छायावादी साहित्य तथा कहानियाँ भी आपने लिखी हैं। सं० १९८२ के विहारी छात्र-सम्मेलन में हिंदी तथा अँगरेज़ी में स्वर्ण-पदक प्राप्त किया। इस समय यह महाशय हिंदू-विश्वविद्यालय में अध्ययन कर रहे हैं। छंद सूक्ष्मदर्शिता-युक्त, भाव-पूर्ण लिखते हैं।

उदाहरण—

अश्रु-कण

कलित किसलय-से अति सुकुमार
विधुर मानस के मृदु उच्छ्वास;
नयन-जल में परिणत कर आज
लिए आया हूँ तेरे पास।
भरे इसके कण-कण में तीव्र
जलन के हैं आकुल संदेश;
बतावेंगे जो तुझको देव!
कठिन हैं कितने मेरे क्लेश।
रही मुझमें अवशेष न आज
तड़प सकने तक की भी शक्ति;
किए रहता निशि-दिन बेचैन
प्रलय, प्रकटा अपनी अनुरक्ति!
करूँ क्या? रुक न सकेगा और
अधिक अब उमड़े उर का ज्वार;
रोक मत, रोने दे प्राणेश!
रुदन ही है मेरा आधार।

नाम—(४३८२) बनारसी ठेंक 'मधुर', रतेठा (मुंगेर)।
जन्म-काल—सं० १९६१।
विवरण—खड़ी बोली के सुकवि।

उदाहरण—

मैं हूँ तेरा अनुचर प्रभो, मोह-अज्ञान-ग्रस्त,
संसारों की प्रगति लख हूँ नित्य उद्गाढ़ त्रस्त ;
उद्योगी हूँ, तदपि रहता सर्वदा रिक्त हस्त,
मुद्रा-मुद्रा जपन करता त्याग स्वामी प्रशस्त ।
नाना रोग-ग्रसित रहता, लालसा वृद्धि पाती,
चिंता में है निशि-दिन प्रभो, विश्व-माया डुबाती ;
आशा से है यदपि मन को धैर्य होता सदा ही,
पर होती है विफल जब, तो दुःख होता बड़ा ही ।
यों ही मेरा प्रतिदिवस है व्यर्थ ही बीत जाता,
है कोई भी कलित मुझसे कार्य होने न पाता ;
अज्ञानी हूँ, दस दिसि प्रभो, दीखता है अँधेरा,
अंतर्यामी, बस अधिक क्या, ज्ञात ही हाल मेरा ।
आके नौका भव-जलधि के मध्य में डूबती है,
कैसे जाऊँ सुतट पर कैवर्त तो ला पता है ;
रक्खो जीता अतल जल में, या मुझे दो डुबा ही,
मैं तो तेरी शरण अब हूँ हो कृपा या कृपाही ।

नाम—(४२८१) लक्ष्मीनारायण गुप्त 'अमौलिक' जालौनवाले ।

जन्म-काल—सं० १९६९ ।

रचना-काल—सं० १९८६ ।

विवरण—पिता रामचंद्र अग्रवाल । संपन्न घर के पुरुष । आप बड़े ही उत्साही तथा होनहार लेखक हैं । अमौलिकजी खड़ी बोली के सुकवि तथा श्रेष्ठ समालोचक हैं । आपने कई ग्रंथ आधे-आधे लिखे हैं, जो शीघ्र ही पूरे होंगे, ऐसी आशा है ।

उदाहरण—

विश्वोच्छ्‌वास बढ़े आँधी से
टकराते हैं कहीं समीप ;
ओहो ! बुझने ही वाले हैं
ये झिलमिल तारों के दीप ।

नाम—(४२८४) शारदाप्रसाद 'भंडारी' हरकुलियन-प्रेस, मुज़फ़्फ़रपुर ।

जन्म-काल—सं० १९६१ ।

विवरण—सुकवि ।

उदाहरण—

जिज्ञासा

यमुना-तट पर खड़ा शांत हो
निरख रहा था ब्रज-वनिता ;
फूलों की मंजुल कलियों को
देख विहँसती थी सरिता ।
नील गगन से झाँक-झाँककर
तारेगण मुसकाते थे ;
थिरक-थिरककर चंद्रदेव
आकर आनंद बढ़ाते थे ।
पुष्पों की माला लेकर
मंथर गति से वह आती थी ;
उस छवि की मंजुल चितवन
रसिकों का चित्त चुराती थी ।
आकर रुकी, हँसी, फिर बोली
"तुम क्यों यहाँ खड़े हो ?

नंदन वन-सी छटा देख
क्या तुम पथ भूल पड़े हो ?
अथवा उस घनश्याम मूर्ति से
तुम भी गए ठगे हो ?
या मुझ-सा निज को विनष्ट
करने पर स्वयं लगे हो ?"

समय—संवत् १९८७

नाम—(४३८९) अवधविहारी श्रीवास्तव 'बिहारी', बिहार, पकड़ी नरोत्तम, सतजोड़ा बाज़ार, सारन ।

जन्म-काल—सं० १९६२ ।

रचना-काल—सं० १९८७ ।

विवरण—आप सुकवि हैं ।

उदाहरण—

चिता

अरी चिते ! चित-बीच सर्प-सा
यह तेरा डँसना कैसा ?
काली की कल किलकारी-सा
भयकारी हँसना कैसा ?
धधक - धधककर जल उठती है,
कभी मंद पड़ जाती है;
जग की आश निराशा काया
दृश्य प्रकट दिखलाती है ।
वन-देवी-सी सरित-कूल पर
अनुपम तेज-राशि लसती;
किसी साधिका-सी निर्जन में
विश्व रुदन पर जो हँसती ।

सुमन में नवरस

पवन के पावनतम 'शृंगार',
उषा के मंजु मनोहर 'हास',
सुमन से सीखे सब संसार
'शांत' चित करना मधुर विकास।

सुमन, मन मेरा तेरी ओर
'भयानक' आतुरता - आवेश
खींचता 'अद्भुत' गति चितचोर
'वीर' ता के सुंदर संदेश।

'रौद्र' बन 'विकृत' करेगा भानु
युवक-सा अ'करुण' विभव-विभोर ;
फूल ! पर मत निज गौरव भूल,
धूल मिल फिर फूलोगे फूल।

नाम—(४२८६) नवलकिशोर झा 'नवल', सोन्हौली, तारापुर (मुंगेर)।

जन्म-काल—सं० १९६२।

विवरण—सुकवि।

उदाहरण—

कविते !

वाणी-वीणा-झनकार कहें, कविवर-हिय का उद्गार कहें ;
मंगलमय मंजु मलार कहें, या सुख-सरिता की धार कहें !
बर बिमल बसंत-बहार कहें, या संसृति-शोभा-सार कहें ;
क्या सु-रति-हृदय का मार कहें, या कामिनि-कांत-दुलार कहें !
जीवन-नौका - पतवार कहें, झंकरित सुप्रेम-सितार कहें ;
क्या नव-सुंदरि-शृंगार कहें, या भ्रमर-भ्रमरि-गुंजार कहें !

कविते ! मन-मोहक धार कहें, या नवजीवन-संचार कहें ;
क्या प्रेमी का आधार कहें, या नवल सुमन का हार कहें !

नाम—(४३८७) विमलादेवी सोमानी, हैदराबाद ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९६४ ।

रचना-काल—सं० १९८७ ।

विवरण—आपके लेख सामाजिक क्रांति उत्पन्न करनेवाले हुआ करते हैं । आप (Circle Insp) बा० कन्हैयालाल की धर्म-पत्नी हैं ।

नाम—(४३८८) सूर्यकरण 'पारीक' पुरोहित एम्० ए० ।

जन्म-काल—सं० १९६९ ।

रचना-काल—सं० १९८७ ।

ग्रंथ—(१) कानन-कुसुमांजलि (गद्य-काव्य), (२) रति-रानी काव्य (प्रकाशित), (३) बेलि क्रिसन रुकमणीरी (राठौर महाराज पृथ्वीराज-कृत, संपादित राजस्थानी काव्य, प्रकाशित हिंदुस्थानी एकेडेमी द्वारा), (४) ढोला मारू राइहा (संपादित) प्रकाशित नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी सन् १९३३, (५) हिंद-गद्य-सुमन-माला-संग्रह, (६) राजविलास कवि मान-कृत (संपादित), (७) राउ जैतसी रउ छंद डिंगल भाषा, (८) राजस्थानी वारों की कहानियाँ, (९) गोरा बादल की बात, (१०) मौलिक पद्यों का संग्रह, (११) ज्योत्स्ना गद्य काव्य ।

विवरण—विड़ला कॉलेज पिलानी, जयपुर के वाइस-प्रिंसिपल हैं । जन्म-स्थान बीकानेर राजपूताना है । संपादक तथा गद्य-काव्य-प्रणेता हैं । अच्छे विषयों पर श्लाघ्य श्रम किया है । आपकी पुस्तकें उपादेय हैं । संख्या ५, ६, ८ के अतिरिक्त अन्य समग्र पुस्तकों की रचना तथा संपादन पुरोहितजी ने अपने मित्रों के सहयोग से किया है । १ श्रीठा० रामसिंह एम्० ए०, २ श्रीपं० नरोत्तमदास

स्वामी एम्० ए०, २ श्रीठा० चाँदसिंह तथा इन्होंने प्रेमाश्रम नाम से सं० १९८० में सा० संस्था स्थापित कर ये सब पुस्तकें तैयार कीं, जिनकी प्रशंसा पं० गौरीशंकर-हीराचंद ओझा तथा बाबू श्याम-सुंदर दास आदि सज्जनों ने की है।

समय—संवत् १९८८

नाम—(४२८९) जगदीशप्रसाद 'गिरीश'।

जन्म-काल—सं० १९६९।

रचना-काल—सं० १९८८।

ग्रंथ—(१) मुक्ति का द्वार, (२) स्फुट छंद।

विवरण—मैनपुरी-निवासी पं० सत्यनारायण अग्निहोत्री थानेदार के पुत्र। आजकल मल्लावाँ में रहते हैं। उद्धत देश-प्रेम के कारण दो बार कारागार हो आए हैं।

उदाहरण—

हृदय, तू चल अनंत की ओर,
इस विस्तृत तम-पूर्ण विश्व में ले स्मृति का दीप।
सखे, खोजता तुम्हें पुकारूँ, आते नहीं समीप।
छिपे किस निर्जन में चितचोर?
क्या होगा जल-हीन मीन का, स्वाति बिना चातक का हाल?
सरसिज की रवि-रहित दशा पर दृष्टि दया कर देते डाल।
कहीं है इस आशा का छोर?
हृदय, तू चल अनंत की ओर।

(एक मित्र की मृत्यु पर लिखित)

नाम—(४२९०) जगदंबाप्रसाद शर्मा 'कलाधर'।

जन्म-काल—सं० १९६९ (पेसारा, ज़िला जौनपूर)।

रचना-काल—सं० १९८८।

ग्रंथ—(१) स्वदेश-गीत, (२) कलाधर-काव्य-संग्रह, (३) बाल-विवाह-नाटक, (४) शिवरत्न-शतक, (५) करुणा-शतक।

उदाहरण—

मानी गई सर्वश्रेष्ठ जाति जगती में जौन,
जाके तप-बलते त्रसित चराचर है;
सोई विप्र-वंश माहिं जायो श्रीकुमार, जाको
सुवन अकेलो, किंतु काहू सों न डर है।
जौनपूर-प्रांत माहिं ग्राम है पेसारा बसो,
जहाँ जन्मभूमि और छोटो एक घर है।
काशी जाय भयों शिष्य शुक्ल शिवरत्नजी को,
नाम जगदंबा, उपनाम 'कलाधर' है।

नाम—(४३९१) नृसिंह पाठक 'असर', रतैठा, हवेली (मुंगेर)।

जन्म-काल—सं० १९६३।

रचना-काल—सं० १९८८।

विवरण—आप सुकवि हैं।

उदाहरण—

मुरलिके!

मेरे सुख में कंटक बनकर अरी मुरलिके! तू आई;
मेरे मंजु विलास हास में तूने बाधा पहुँचाई।
तेरे साथ नाथजू मेरे मत्त बने रहते सब काल;
कभी न सुधि लेते हैं मेरी, यद्यपि रहती परम बिहाल।
पा बसंत अनुकूल समय लगने को थे जब सुंदर फूल;
उसी समय तूने आ सौतिन, उत्पाटा सहसा सुख-मूल।
शरत् चंद्र की स्निग्ध चंद्रिका में जब थी कर रही बिहार;
बादल बनकर उसे छिपाया, अंधकार का किया प्रसार।

जीवन-तरणी भव-सागर में खेव रही थी जब सुख मान ;
लिया छीन पतवार प्रेम का हाय ! किया जीवन बलिदान ।

× × ×

आज तुझे पा अपने कर में मन की साध मिटाऊँगी ;
श्याम - सहचरी सौतिन मेरी यम-पुर तुझे पठाऊँगी ।
फिर भी श्याम-संग विहरूँगी प्रेम-राज्य में बनी स्वतंत्र ;-
प्रेम हमारा सर्वस होगा, प्रेम बनेगा जीवन-मंत्र ।

नाम—(४३९२) बालकृष्ण राव ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९६७ ।

रचना-काल—सं० १९८८ ।

ग्रंथ—कौमुदी (१९८८) ।

विवरण—आप युक्तप्रांत के प्रसिद्ध राजनीतिक नेता श्रीमान् चिंतामणिजी के सुपुत्र हैं । मदरासी होकर भी हिंदी की अच्छी कविता करते हैं । बहुत विशद होनहार कवि तथा लेखक हैं ।

उदाहरण—

तुम्हारी वह मधुमय मुसकान,
बनाया जिसने मुझको भ्रांत ;
वही फिर कर सकती है आज
कष्टदायी विरहानल शांत ।
हमारी आशा के अनुरूप
प्राणधन, होवे शुभ संयोग ;
उसी स्वर्गिक सुख-प्राप्ति निमित्त
किया करते वियोग का योग ।

समय—संवत् १९८६

नाम—(४३९३) रमेशचंद्र मिश्र 'श्याम' ।

जन्म-काल—सं० १९६९ ।

रचना-काल—सं० १९८९ ।

ग्रंथ—(१) अभिमन्यु-वध, (२) श्यामनीति, (३) ध्रुव-चरित्र, (४) सीय-स्वयंवर, (५) स्फुट छंद ।

विवरण—साँड़ी, ज़िला हरदोई के पं० राधाकृष्ण मिश्र के पुत्र । इंट्रेंस पास । कुछ संस्कृत, उर्दू भी जानते हैं । आजकल भगवंत-नगर-हाईस्कूल के अवैतनिक हिंदी-अध्यापक हैं । होनहार कवि हैं ।

उदाहरण—

कमल-सोम-सुहीरक-हार-सी, छबि-मई रवि-कांति लजावनी ;
सकल कल्मष-हारिणि पावनी, सतत विष्णुपदी उर वासिनी ।
सुभग बीन धरे कर मंजु में, बसन शोभित पीत प्रभामयी ;
भुजुक कंकण किंकिन की करें, सदय हो करुणामयि भारती ।

(सीय-स्वयंवर से)

चौपाई

कबहुँ न नर की करिय हँसाई ; श्याम भाग्य जानी नहिं जाई ।
गुण सिखिबो बहुधा सुखदाई ; श्याम गुणहि की होति बड़ाई ।
ज्ञानी रंक मिलत बहुतेरे ; श्याम रमा भारती न नेरे ।

(श्यामनीति से)

बस यही हमारी चिंता है, जो चिता-तुल्य जल उठती है ;
जिसकी भारी ज्वाला के आगे बुद्धि नहीं कुछ करती है ।
फिर चक्रव्यूह का भेद हमें कैसे तोड़ें, कुछ ज्ञान नहीं ;
अब ऐसे समै करें क्या हम ? झट कह देना आसान नहीं ।
बस यही माजरा है सारा, जो पुत्र तुम्हें बतलाया है ;
यह ही था शोक-भेद सब कुछ, जो हमने तुम्हें जताया है ।

(अभिमन्यु-वध से)

नाम—(४३९४) रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' ।

जन्म-काल—सं० १९७१ ।

रचना-काल—सं० १९८९ ।

विवरण—यह महाशय मातादीनजी शुक्ल के सुपुत्र हैं। इनकी कहानियों में रूसी लेखकों का-सा मनोवैज्ञानिक विश्लेषण पाया जाता है। कविताओं में भी उतनी ही परिपक्वता और आकर्षण है, जितना कहानियों में। समालोचना करने का ढंग भी इनका नया है। कई उपन्यास लिख चुके हैं, जो अप्रकाशित हैं। पत्र-पत्रिकाओं में इनकी रचनाएँ आदर का स्थान पाती हैं। इस समय लखनऊ-विश्वविद्यालय में, बी० ए० फ़ाइनल में, पढ़ रहे हैं।

१९७९—९० के अन्य कवि गण

समय—संवत् १९७९

नाम—(४३९५) परशुराम चतुर्वेदी ।

जन्म-काल—सं० १९५१ ।

ग्रंथ—बलिया ज़िले का इतिहास तथा साहित्य समालोचना आदि ।

विवरण—जौरी, ज़िला बलिया-निवासी पं० रामछबीले के पुत्र हैं। पाश्चात्य दर्शन से आप एम्० ए० हैं।

नाम—(४३९६) पूर्णानंद शास्त्री ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५४ ।

ग्रंथ—उत्सव-तत्त्व, शिक्षा-विधि और हिंदी-कविता-नामक आपके छोटे ग्रंथ हैं।

विवरण—यह जैनाबाद, ज़िला गुड़गाँव के रहनेवाले ब्राह्मण हैं। आपने हिंदी और संस्कृत की कविता की है।

नाम—(४३९७) महेशप्रसाद (महादेवप्रसाद) मिश्र 'रसिकेश', गोरखपुर ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५६ ।

कविता-काल—लगभग सं० १९७६ ।

ग्रंथ—(१) वसंतोद्दीपन (प्रकाशित), (२) गांधी-बत्तीसी (प्रकाशित), (३) रत्नावली (अप्रकाशित), (४) कविता-कलिकावली (अप्रकाशित)।

विवरण—यह नवयुवक लेखक हैं। पत्र-पत्रिकाओं में समय-समय पर इनके लेख निकला करते हैं।

उदाहरण—

घन बरसत, सरसत पवन, मन तरसत पिय-हेतु ;
पद परसत करसत न कछु सर झरसत झखकेतु।

नाम—(४३९८) रामाज्ञा द्विवेदी 'समीर' एम्० ए०।

जन्म-काल—सं० १९५९।

रचना-काल—सं० १९७६।

ग्रंथ—(१) त्रिकलिका, (२) सतसई, (३) सतसई बर्वै-छंद, (४) मृच्छकटिक, (५) स्फुट छंद।

विवरण—सोसों, ज़िला बस्ती-निवासी सरयूपारीण ब्राह्मण तथा पं० रामचंद्र द्विवेदी के पुत्र। आप कवि तथा गल्प-लेखक हैं।

उदाहरण—

स्मर सों समर कर हार महादेव मानो,
कामिनी की काया माहिं भाग के लुकायो है ;
पकरि न पावें या तें कुचन ह्वै रूप ह्वै कै
चंदन के भेष भूरी भसम लगायो है।
चंद नख-छत भयो, त्रिवली त्रिशूल कीन्हों,
नागन की माल काल अलक बनायो है ;
गंगा को बटोरि के त्रिवेणी कीन्हि नैनन मो,
सरन अनंग की ही साँचो शिव आयो है।
मुख सुखमा-सागर अगम नाविक नयन नवीन ;
बूड़त बार बचाव विधि तिल सुदीप रच दीन

तन ग्रीषम वर्षा नयन वारिज वदन हिमंत;
शरद गंड भूपण शिसिर पग - पग बसत वसंत।
परी मशहरी दुतिहरी ती मुख ताहि लखाय;
चुयो चंद छवि मार लै सरद गगन गरुआय।

नाम—(४३९९) शिवदुलारे मिश्र बी० ए०, बी० एल्०, 'मधुकर', भागलपुर।

जन्म-काल—सं० १९५४।

कविता-काल—सं० १९७६।

ग्रंथ—(१) तिलक-तरंग (पद्य-ग्रंथ, अप्रकाशित), (२) स्फुट लेख तथा छंद।

विवरण—आप पं० बनवारीलालजी मिश्र के तृतीय पुत्र हैं, और इस समय भागलपुर में वकालत करते हैं। स्थानीय हिंदी-सभा के मंत्री भी हैं। इनकी रचनाएँ खड़ी बोली तथा व्रजभाषा, दोनो में हुआ करती हैं। [पं० शिवरत्न मिश्र, भागलपुर द्वारा ज्ञात]

उदाहरण—

अब भयो जान हेमंत अंत, सजि साज चल्यो ऋतुपति वसंत;
लखि भूप अनूपम तेजवंत जग फैलि रही सुपमा अनंत।
दिसि देस दीप दीपति दिगंत, दुर्व्याधि, दोप, दुख दल दुरंत;
सब किलकि कहत 'स्वागत वसंत', पै रोवत भारत हाय! हंत!

समय—संवत् १९७७ के अन्य कवि गण

नाम—(४४००) अमरनाथ झा, प्रयाग।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५४।

रचना-काल—सं० १९७७।

ग्रंथ—पाठशालाओं की कुछ पुस्तकें।

विवरण—इलाहाबाद-विश्वविद्यालय में प्रोफ़ेसर।

नाम—(४४०१) गौरीशंकर द्विवेदी ।

जन्म-काल—सं० १९५७ ।

रचना-काल—सं० १९७७ ।

ग्रंथ—बँगला-दिनचर्या का अनुवाद ।

विवरण—गोरखपुर-ज़िले में जन्म । सं० १९८४ में हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की उत्तमा-परीक्षा में उत्तीर्ण । तृतीय खंड शास्त्री-परीक्षा पास हैं । इतिहास और दर्शन के अध्यापक थे । सं० १९८७ से 'कल्याण' के सहकारी संपादक हैं ।

उदाहरण—

अनंत गीत

कल-कल कल-कल बहती जाती संसृत सरिता अविरल ।
विश्व विहीन सुनील शून्य थल;
पथ अनंत छाया है अविचल ।
निरालंब अगणित सिकता तल;
होता झिलमिल झिलमिल झिलमिल ।

नाम—(४४०२) पिंगलसिंह ।

ग्रंथ—भाव-भूषण ।

विवरण—आप प्रथम सिहोर में रहते थे, किंतु अब भावनगर में रहते हैं । उक्त ग्रंथ आपने भावनगराधीश महाराजा भावसिंहजी के नाम से बनाया है ।

उदाहरण—

यौवन उमंगवारी, वारिज-से नैनवारी,
अमृत-से बैनवारी, हाव-भाव भारी है;
मदन हुलासवारी मंद-मंद हासवारी,
बदन प्रकासवारी चंद उजियारी है ।

मोतिन की मालवारी, अधर प्रवालवारी,
हंसन की चालवारी, नेक छवि न्यारी है ;
'पिंगल' कहत ऐसी गुनवारी नारी संग
नेह ना कियो, तो एहि वृथा देह धारी है।

नाम—(४४०३) बख्तोराम।

ग्रंथ—बख्शी-विलास (नायिका-भेद)।

विवरण—यह ऋषिगढ़-तावा के जोध्यारण-ग्राम के निवासी तथा राधावल्लभ चारण के पुत्र हैं।

नाम—(४४०४) वाड़ीलाल-मोतीलाल शाह।

विवरण—अहमदाबाद-निवासी श्रीमाल जैन। आप गुजराती जैन-हितेच्छु के संपादक हैं। हिंदी मातृभाषा न होने पर भी हिंदी के अच्छे लेखक हैं।

नाम—(४४०५) मुकुटधर पांडेय।

जन्म-काल—सं० १६५२।

रचना-काल—सं० १६७७।

ग्रंथ—(१) समाज-कंटक, (२) कार्त्तिक-माहात्म्य, (३) इटालीय युवक।

विवरण—यह बालपुर ज़िला बिलासपुर-निवासी चिंतामणि पांडेय के पुत्र हैं। आप प्रकृति-पूजक हैं। करुणा तथा सहृदयता का आपकी रचना में अच्छा मिश्रण है। आजकल इनका मस्तिष्क कुछ बिगड़ गया है।

उदाहरण—

खींच रहा था हल आतप में बूढ़ा बैल एक सत्रास ;
उसे देखकर बिकल बहुत हो पूछा मैंने जाकर पास—
"बूढ़े बैल, खेत में नाहक क्यों दिन-भर तुम मरते हो ;
क्यों नहिं चरागाह में चलकर मौज मजे से करते हो ?"

सुनकर मेरी बात बैल ने कहा दुख से भरकर आह—
"इस अनाथ, असहाय कृषक का होगा फिर कैसे निर्वाह ?"

नाम—(४४०६) युगलसिंह एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, बीकानेर।

विवरण—आप राजपूत ठाकुर और हिंदी, संस्कृत तथा अँगरेज़ी के विद्वान् हैं। आप इस समय नोबल-हाईस्कूल के हेडमास्टर हैं। प्रायः गद्य लिखा करते हैं।

नाम—(४४०७) रामकुमारजी मिश्र, अलवर।

विवरण—आप अलवर-इतिहास-कार्यालय के प्रधान पंडित हैं। आप संस्कृत तथा हिंदी के प्रौढ़ लेखक होने के अतिरिक्त आशुकवि भी हैं। [यह कवि महाशय हमें पं० झावरमल्लजी त्रिवेदी, जसरापुर द्वारा ज्ञात हुए हैं]

नाम—(४४०८) विश्वेश्वरदयाल मिश्र विशारद, आगरा।

विवरण—आप पं० लल्लूमलजी मिश्र के पुत्र हैं। आगरे की नागरी-प्रचारिणी समिति के आप प्रमुख सदस्य हैं। 'चतुर्वेदी'-पत्रिका का आपने कई वर्षों तक संपादन किया।

नाम—(४४०९) शालग्राम द्विवेदी विशारद, जबलपुर।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५२।

ग्रंथ—(१) समर-सखा (अँगरेज़ी-पुस्तक से अनुवादित), (२) कौटिल्य का अर्थशास्त्र।

पाठशालोपयोगी पुस्तकें—

(१) नवीन पत्र-प्रकाश, (२) मिडिल - स्कूल - पत्र - लेखन, (३) विराम-चिह्न, (४) व्याख्या-विधान, (५) प्राथमिक रचना-शिक्षक, (६) मिडिल-स्कूल-रचना-शिक्षक इत्यादि।

विवरण—यह कान्यकुब्ज-वंशोत्पन्न हैं। कुछ काल तक 'श्रीशारदा' के उप-संपादक तथा शारदा-पुस्तकमाला के संपादक रह चुके हैं।

इस समय यह स्थानीय मॉडल हाईस्कूल में हिंदी के अध्यापक हैं।

नाम—(४४१०) शालग्राम शर्मा 'कंज', ग्राम महालतपुर, तहसील साहाबाद, ज़िला मथुरा।

जन्म-काल—सं० १६५३।

रचना-काल—सं० १६७७।

ग्रंथ—(१) वियोग-व्यथा (अप्रकाशित), (२) स्फुट कविता।

विवरण—यह पं० भूपरामसिंहजी के पुत्र हैं। अलीगढ़ से एस्० एल्० सी० परीक्षा पास करके आप 'फूलचंद बागला'-हाईस्कूल, हाथरस में हिंदी अध्यापक का काम करते हैं।

उदाहरण—

क्वार कलेश दियो पुनि कातिक, मारग सीस को चंद तपावै;
पूस पसेवत, माह जरावत, फागु गुरै मधुआ पथरावै।
माधव जेठ असाढ़ फिरावत, सावन पी ध्वनि ही विथुरावै;
पी विनु कैसे जिऊँ सजनी, फिरि भादौं कि रैनि अँधेरी डरावै।

समय—संवत् १६७८ के अन्य कविगण

नाम—(४४११) ईश्वरीप्रसाद डॉक्टर (सनाढ्य ब्राह्मण), प्रयाग।

जन्म-काल—सं० १६४४।

रचना-काल—सं० १६७८।

विवरण—रीडर इतिहास इलाहाबाद-विश्वविद्यालय। आपकी विद्वत्ता बहुत प्रशंसनीय है।

नाम—(४४१२) ओंकारनाथ पांडेय विशारद, मैनपुरी।

जन्म-काल—सं० १६५६।

कविता-काल—सं० १६७८।

ग्रंथ—स्फुट कविता।

विवरण—आप स्थानीय प्रतिष्ठित ज़मींदार पं० प्रेमराजजी के पुत्र हैं।

उदाहरण—

कबहुँ निरखि भरि नैन चाल लचकति सरिता की;
लखति बजावति वेनु झुकी मनमोहन झाँकी।
बारिद देखौं श्याम, श्याम हरि-मूरति देखौं;
चमकति चपला चपल चोर चित राधा लेखौं।
जहाँ जाउँ उनको लखौं कोऊ ठावँ न शेष है;
कुंज करील कदंब हरि रोमन रोम प्रवेश है।

नाम—(४४१३) कृष्णदत्त शास्त्री, काव्यतीर्थ।

जन्म-काल—सं० १९५७ (श्रावण-कृष्ण १२)।

कविता-काल—सं० १९७८।

ग्रंथ—(१) कीचक-वध, (२) पद्य-पंचाशिका, (३) दोहावली। कुछ संस्कृत के भी ग्रंथ रचे हैं।

विवरण—आप तिजारा-निवासी जयरामदत्तजी के पुत्र हैं। आपके स्फुट लेख पत्र-पत्रिकाओं में भी प्रकाशित हुआ करते हैं।

नाम—(४४१४) ख़ूबचंद सोधिया।

ग्रंथ—सफल गृहस्थ।

विवरण—पं० दरयावसिंह सोधिया के पुत्र तथा हिंदी के होनहार लेखक।

नाम—(४४१५) गिरिजादयाल 'गिरीश' वैद्यशास्त्री।

जन्म-काल—सं० १९५२।

ग्रंथ—(१) विधवा-विलाप, (२) स्फुट छंद।

विवरण—आप श्रीवास्तव कायस्थ अवध चीफ़-कोर्ट में नौकर हैं। आपका जन्म बिसवाँ के निकट सरैयाँ में हुआ।

उदाहरण—

अंबुधि में रूप के विराजे द्वै वहित्र हैं कि
विद्रुम के पुंज पै सुनील मणि प्यारे हैं;

गंग की तरंग में 'गिरीश' मंजु मीन हैं कि
वाहिनी - अनंग के तुरंग रंग कारे हैं।
मंजुल मयंक के ललाट पै दिठौना है कि,
खंजरीट - छौना हेम-पींजरे में डारे हैं;
छाजे छवि नैन कामिनी के मृगनैनी के कि,
भ्राजे अरविंद पै मलिंद मतवारे हैं।
कंचन के कूट पै धरे हैं कालकूट घट,
शीश पै मयंक के कि राहु-केतु तारे हैं;
सुकवि 'गिरीश' ये पियूष के पियाले हैं कि
गगनापगा में भानुजा के भौंर न्यारे हैं।
ललित ललाम छवि धाम के सुद्वारे या कि,
दामिनी के अंक में विराजे घन कारे हैं;
चंपक-लता-सी तरुनी के नैन नीके हैं कि
वउरे रसाल-द्रुम कोकिल विहारे हैं।
केसरि के सत्य अंक वैठे ह्वै निशंक मृग,
पैठे विधु-मंडल कि मुदित चकोर ये;
खेलत शिकार ह्वै शिकारी केतकी के कुंज,
तपसी 'गिरीश' जू कि सुरगिरि छोर ये।
पुंज पै कुसुम के विराजैं ह्वै शशक-शिशु,
या कि छवि-गृह में घुसे हैं युग चोर ये;
वाम लोचना के ललना के नैन बाँके हैं,
कि मदन महीप के शिलीमुख कठोर ये।

नाम—(४४१६) गिरीशचंद्र चतुर्वेदी, मैनपुरी।

जन्म-काल—सं० १९५९।

कविता-काल—सं० १९७८।

विवरण—यह पंडित वनवारीलालजी के पुत्र हैं।

उदाहरण—

शीश-फूल पीछे गज-मोतिन की माल है कि,
भूमिका भुजंगन पै सेसनाग भासी है;
कुंभ है सुधा को किधौं टपकि अमिय रस,
बुंद-बुंद साँपन पै आवै कद्रुमा-सी है।
कज्जल के कूट पै गिरी है लीक बाँधि बिज्जु,
कैधौं कारे व्योम मध्य गंग या अकासी है;
खासी मैन-मूर्ति सुखमा की प्रतिमा-सी उर,
उचकि उसासी मद मदन प्रकासी है।

नाम—(४४१७) गुलाबचंद्र वैद्य।

जन्म-काल—सं० १९५२।

ग्रंथ—(१) आरोग्य-प्रदीप, (२) स्वरोदय, (३) विज्ञान, (४) अनेकांतमय तत्त्व-विज्ञान, (५) सभा-सरोज।

विवरण—अमरावती-निवासी मूलचंद जैन के पुत्र।

नाम—(४४१८) ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल', प्रयाग।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५२।

रचना-काल—सं० १९७८।

ग्रंथ—स्त्री-कवि-कौमुदी।

विवरण—मनोरमा और भारतेंदु पत्रों के संपादक रहे हैं। इस समय भारत के संपादक हैं।

नाम—(४४१९) नवनीत चौबे, मथुरा।

ग्रंथ—(१) स्यामांगा-पय-भूषण (नख-शिख), (२) स्नेह-शतक, (३) कुब्ज्या-पचीसी, (४) मनोरथ-मुक्तावली, (५) नवीनोत्सव-संग्रह (प्रकाशित), (६) मूर्ख-शतक, (७) कृष्णाष्टक (समस्या-पूर्ति), (८) पिंगल-प्रकरण (अपूर्ण), (९) गद्यावली (अपूर्ण)।

विवरण—संस्कृत के अच्छे विद्वान् हैं। काव्य-रचना व्रजभाषा में है। कहा जाता है, इनके पास प्राचीन कवियों की अपूर्ण कविताओं का बहुत बड़ा संग्रह है।

नाम—(४४२०) पार्वती बाई।

ग्रंथ—ईश्वरदास।

विवरण—आप बाबू गोकुलदास की पुत्री हैं।

नाम—(४४२१) पृथ्वीनाथ तथा महेंद्रनाथ चतुर्वेदी, सिकंदरपुर, ज़िला फ़र्रुखाबाद।

विवरण—ये दोनो महाशय पं० केशवदेवजी के पुत्र हैं। दोनो भाइयों की अवस्था लगभग ४० और ३६ वर्ष की है। ये लोग कविता, लेख आदि भी लिखा करते हैं। नीचे उदाहरण दिए गए हैं।

उदाहरण—

जिन केशव के रहि शासन में अनुशासन ओर न दृष्टि गई ;
अरु भापत झूठ रहे जग में नित झेलत हाय विपत्ति नई।
परतीति नहीं जिनको प्रभु की, नहिं देश-विपत्ति बटाइ लई ;
नहिं जाति सनेह भरौ जिनके तिन लोगन जाति बिगारि दई।

हे पतित-पावन दीनबंधो, विनय मम सुन लीजिए ;
करके कृपा प्रभु हम सबों को बुद्धि प्रभुवर, दीजिए।
दुख-सिंधु में पड़कर प्रभो, असहाय गोते खा रहे ;
बैठे अविद्या-नाव पर उलटे बहे अब जा रहे।

नाम—(४४२२) वेणीप्रसाद।

विवरण—आप मोतीलाल पल्लीवाल जैन के भ्राता तथा हिंदी के होनहार लेखक हैं।

नाम—(४४२३) भोलानाथ मिश्र विशारद, मैनपुरी।

जन्म-काल—सं० १९६१ ।

कविता-काल—सं० १९७८ ।

ग्रंथ—स्फुट कविता ।

विवरण—यह पं० दम्मीलाल के पुत्र हैं ।

उदाहरण—

जब लै कर पुष्प-कमान गयो शिव जीतन कोटि करयो छल है;
तब पौरुष-पुंज गमायो कहाँ जरि छार परयो भुवि बेकल है ।
अब सायक तेज गहै अबलागन मार त मार न सो बल है;
धिक विक्रम नीच मनोज तेरो, धिक तोहि, महा धिक तो बल है ।

नाम—(४४२४) मोहनलाल बड़जात्या ।

जन्म-काल—सं० १९५२ ।

ग्रंथ—सुखी गृहस्थ ।

विवरण—यह कुचामण मारवाड़-प्रांत के निवासी हैं । मुंशी गोविंदराम खंडेलवाल जैन के पुत्र हैं ।

नाम—(४४२५) मौजी ।

कविता-काल—सं० १९७८ के पूर्व ।

ग्रंथ—पोस्त-पच्चीसी ।

विवरण—मालिया काठियावाड़-निवासी जाडेजा ठाकुर थे ।

नाम—(४४२६) रामप्रकाश शर्मा डॉक्टर, ग्राम बथुआ, ज़िला दरभंगा ।

जन्म-काल—सं० १९५३ ।

ग्रंथ—स्फुट कविताएँ ।

विवरण—यह भारद्वाजगोत्रीय भूमिहार ब्राह्मण दरभंगा-डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड के निर्वाचित सदस्य हैं । इनकी रचनाएँ देश, महावीर आदि पत्रों में प्रकट होती हैं । आप खड़ी बोली के सुकवि हैं ।

उदाहरण—

कृष्णाचेतावनी

अरे नराधम, स्वार्थ-भृत्य, क्या गर्व भरा है ;
लाज नहीं, ले राजदंड तू अकड़ खड़ा है।
अमल क्षात्र-कुल-विधु-कलंक तूने प्रकटाया ;
पूज्य पिता का स्वत्व छीनकर मार भगाया।
गुरु-शिशु-बध सब ही किया स्वार्थ साधने के लिये ;
अबला को बंदी किया, नीति-न्याय सब खो दिए।
कूटनीति से दुष्ट प्रजा को फाँस लिया है ;
उसके बल फिर राजमुकुट ले नाश किया है।
शिष्ट प्रजा ने न्यायनिष्ठ तुझको था जाना ;
इसी हेतु निर्भीक चित्त निज प्रभु था माना।
पटाक्षेप पर हट गया, रक्षक अब तक था बना ;
भक्षक निकला अंत में, कैसी दैव-विडंबना।

नाम—(४४२७) लाल हरदेवसिंह 'प्यारेलाल', ग्राम सबहद विधूना, इटावा।

जन्म-काल—लगभग सं० १९२२।

कविता-काल—सं० १९७८।

ग्रंथ—स्फुट छंद (लगभग २००)।

विवरण—इनके पद्यों की एक प्रति लाल रघुनंदनसिंह वर्मा, सबहद (इटावा) को प्राप्त हुई है, उसी में से निम्न-लिखित उदाहरण दिया गया है।

उदाहरण—

प्रभु को भजन करो दिन-रात।
श्रीस्वामी सचराचर-व्यापक श्याम-गौर दोउ भ्रात ;
ताके वश तिहुँलोक सदा हैं, तेहि सुमिरो हे तात !

छिन में रचै छिनहिं में मेटैं, माया अलख लखात ;
ताको शेष, महेश रटत नित, सुर सब सदा डरात ।
तन, मन से नित धरौ चित्त में धर्म करौ बहु भाँत ;
जड़-चेतन में, सब वस्तुन में, राम-हि-राम दिखात ।
मोहि गुरु केशवदास कृपा करि ज्ञान दियो हरषात ;
कहत 'लाल हरदेवसिंह' जग अजबै चरित रहात ।

नाम—(४४२८) विद्याधरजी मिश्र, मैनपुरी ।

जन्म-काल—सं० १९५३ ।

विवरण—यह पं० सीतारामजी के पुत्र माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मण हैं । इस समय यह श्यामसुंदर-हाईस्कूल, चंदौसी में अध्यापक हैं ।

उदाहरण—

प्राचीन भारत भं०र था भू को दिखाने के लिये ;
अब आ रही सुख-शांतिदा होली प्रफुल्लित निज हिये ।
है कर रही आदेश उत्तम चाव से प्रिय देश को ;
भाषा पढ़ो कोई कहीं, त्यागो न तुम निज भेष को ।

नाम—(४४२९) सुखदेवप्रसाद तेवारी (उपनाम विनय-मोहन) नरसिंहपुर-निवासी ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५६ ।

रचना-काल—सं० १९७८ ।

विवरण—स्फुट लेखक तथा समालोचक हैं । वीरात्मा के नाम से कविता भी करते हैं ।

समय—संवत् १९७९ के अन्य कविगण

नाम—(४४३०) अमरनाथ झा एम्० ए० ।

जन्म-काल—सं० १९५४ ।

रचना-काल—सं० १९७९ ।

ग्रंथ—(१) हिंदी-साहित्य-संग्रह, (२) हिंदी-साहित्य-रत्न ।

विवरण—आप महामहोपाध्याय डॉक्टर गंगानाथ झा के पुत्र तथा प्रयाग-विश्वविद्यालय के रीडर हैं।

नाम—(४४३१) जटाधरप्रसाद शर्मा 'विकल', ग्राम बाजितपुर, ज़िला मुज़फ़्फ़रपुर।

जन्म-काल—सं० १९६२।

ग्रंथ—(१) योगमाया, (२) धर्मवती, (३) अहल्या, (४) दमयंती और सीता, (५) प्रेम-प्रमोद, (६) कृषक-क्रंदन, (७) पावस-बहार, (८) शिक्षक-क्रंदन, (९) शिव-शिवा।

विवरण—यह पं० योगेश्वर मिश्र के पुत्र हैं। सं० १९७९ से इनकी रचनाएँ सामयिक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकट होती रही हैं।

उदाहरण—

प्रथम मिलन चुंबन की सुस्मृति हृत्पट से हट जाने दे;
प्रथम प्यार का स्रोत उमड़कर मिट्टी में मिल जाने दे।
प्रथम रश्मि की प्रखर प्रभा पत्तों पर आज बिखरने दे;
मुक्तामय शृंगार साजकर उनको आज विचरने दे।
पट-परिवर्तन का सुखमय यह सुंदर साज सजाने दे;
प्रियतम के सौंदर्य-स्रोत में अरे मुझे बह जाने दे।
भूलो उसका गान पवन छोड़ो यह वीन बजाना;
भूलो उसका प्रेम-भवन, छोड़ो यों जाना-आना।
छोड़ो री कलियो तुम भी यों बार-बार मुसकाना;
भूलो री अलियो तुम भी वरु प्रेम-पराग-खजाना।
भूल रहा हूँ, छेड़ो मत, सोने दो, नहीं जगाना;
चाह रहा हूँ यों ही उनके चरणों पर बलि जाना।

नाम—(४४३२) दूधनाथ उपाध्याय।

ग्रंथ—गोरक्षा पर आपकी पुस्तकें हैं।

नाम—(४४३३) धीरेंद्र वर्मा (कायस्थ), प्रयाग।

जन्म-काल—सं० १९५५ ।

कविता-काल—सं० १९७९ ।

विवरण—इलाहाबाद-विश्वविद्यालय में हिंदी के प्रधानाध्यापक हैं। हिंदी का अच्छा ज्ञान रखते हैं।

नाम—(४४२४) रामचंद्र संघी एम्० ए०, जबलपूर ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५४ ।

ग्रंथ—अंतःकरण का सुधार ।

विवरण—यह अग्रवाल वैश्य हैं, और स्थायी रूप से नारनौल (पंजाब) के रहनेवाले हैं। इस समय यह स्थानीय हितकारिणी हाईस्कूल में अध्यापक हैं।

नाम—(४४२५) रामविलाससिंह 'भूषण' ।

जन्म-काल—सं० १९५४ ।

ग्रंथ—(१) कमला, (२) उषा, (३) भगवद्गीता-पद्यानुवाद, (४) सेनापति कर्ण, (५) दमयंती-नाटक, (६) अनाथ महिलाओं की पुकार, (७) प्रणयिनी-विछोह ।

विवरण—ज़िला शाहाबाद-निवासी सूरबार क्षत्रिय ।

नाम—(४४२६) शिवप्रसादसिंह

जन्म-काल—सं० १९५४ ।

रचना-काल—सं० १९७९ ।

ग्रंथ—भारत में अर्थ-शास्त्र ।

विवरण—यह अंबिकासिंह के पुत्र हैं, और बलिया के कवि एवं लेखक हैं।

नाम—(४४२७) सरदार शर्मा 'सोम कवि' ।

जन्ज-काल—सं० १९५४ ।

ग्रंथ—(१) दयानंदाष्टक, (२) निराकार-उपासना, (३) समस्या-पूर्ति-पुंज, (४) सोम-संपदा, (५) प्रेम-पराग,

(६) कवि-कुल-कला, (७) मातु-पितु-आदर्श भक्त श्रवणकुमार, (८) अछूतों का आर्तनाद ।

विवरण—यह पिलुवा ज़िला एटा-निवासी ब्रह्मभट्ट डूँगरदत्त के पुत्र ।

उदाहरण—

भए चंद-सम चंद आदि हिंदी के कविजी ;
भक्त-शिरोमणि सूर मनो भू ऊपर रवि जी ।
शक्ति-छटा-युत काव्य दिव्य हो जिनकी दमकी ;
कल कीरति अति अमल रूप हो-होकर चमकी ।

नाम—(४४३८) सुंदरसिंह चौहान, पिपरसंड, ज़िला लखनऊ ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९४९ ।

रचना-काल—लगभग सं० १९७९ ।

ग्रंथ—स्फुट छंद ।

नाम—(४४३९) संतदास कवीश्वर ।

जन्म-काल—सं० १९५४ ।

ग्रंथ—स्फुट छंद ।

विवरण—माध्व संप्रदाय ।

समय—संवत् १९८० के अन्य कविगण

नाम—(४४४०) अयोध्यानाथ शर्मा एम्० ए० ।

जन्म-काल—सं० १९५५ ।

रचना-काल—सं १९८० ।

ग्रंथ—(१) उज्ज्वल तीर, (२) गद्यमुक्तावली, (३) गद्यमुक्ताहार, (४) अयोध्याकांड, (५) जानकी मंगल, (६) पार्वतीमंगल ।

पाठ्य पुस्तकें—रचना-विधि, बाल-व्याकरण, कबीर-ग्रंथावली ।

विवरण—हिंदी-शब्द-सागर के उप-संपादक। इस समय आप सनातनधर्म-कॉलेज, कानपुर में कार्य कर रहे हैं।

नाम—(४४४१) कमलदेवनारायण बी० ए०, एल्-एल्० बी० बखरा, मुज़फ़्फ़रपुर।

जन्म-काल—सं० १९५७।

रचना-काल—लगभग सं० १९८०।

ग्रंथ—(१) ईश्वरचंद्र-विद्यासागर, (२) युगल कुसुम, (३) अर्धांगिनी, (४) झरना।

विवरण—यह कायस्थ-कुलोत्पन्न बाबू कृष्णदेवनारायण के पुत्र हैं। इस समय यह वकालत करते हैं।

नाम—(४४४२) गोपीकृष्ण विजयवर्गीय।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५५।

रचना-काल—लगभग सं० १९८०।

ग्रंथ—रोटी का सवाल (अनुवाद)।

विवरण—प्रिंस क्रोपाटकिन के प्रसिद्ध ग्रंथ का अनुवाद है।

नाम—(४४४३) गोपीनाथ वर्मा 'नाद', शाहाबाद (बिहार)।

जन्म-काल—सं० १९५६।

रचना-काल—लगभग सं० १९८०।

ग्रंथ—(१) संयोगिता, (२) स्फुट लेख।

विवरण—यह कायस्थ-कुलोत्पन्न बाबू जगदंबासहाय के पुत्र हैं।

नाम—(४४४४) घनश्यामजी कवीश्वर।

रचना-काल—सं० १९८०।

विवरण—आप वृंद कवि के वशंज तथा कृष्णगढ़ के दरबारी कवि हैं। राज्य के इतिहास का भी अच्छा ज्ञान होने से वहाँ इतिहास-विभाग के अध्यक्ष हैं।

नाम—(४४४५) चंडीप्रसाद 'हृदयेश'।

जन्म-काल—सं० १९५५ ।

ग्रंथ—(१) नंदन-निकुंज, (२) गल्प-संग्रह, (३) भाषा कवित्वमयी, (४) महाकवि बाण का अनुकरण ।

विवरण—शंभुनाथ क्षत्रिय के पुत्र ।

उदाहरण—

कारी अमावस की निशि में बदरा चहुँ ओर घने घिरि आए ;
सीर समीर लगै सरसै सर-से बर-से जल के बुँदरा ये ।
आपुन अंग छिपाय चली सखि कारी सु काँमरि सैं लपटाए ;
पै मुखचंद की चारु छटा थिर दामिनि की-सी छिपै न छिपाए ।

नाम—(४४४६) जनार्दन मिश्र एम्० ए०, साहित्याचार्य, मिश्रपुर, सुलतानगंज (भागलपुर) ।

जन्म-काल—सं० १९५५ ।

रचना-काल—लगभग सं० १९८० ।

ग्रंथ—स्फुट लेख ।

विवरण—यह मैथिल ब्राह्मण पं० कौशिकीदत्त मिश्र के पुत्र हैं ।

नाम—(४४४७) ज्वालाप्रसाद गुप्त ।

जन्म-काल—सं० १९६२ ।

रचना-काल—सं० १९८० ।

ग्रंथ—अंतर्ध्वनि प्रकाशित है । पत्र-पत्रिकाओं में स्फुट कविताएँ निकलती हैं ।

विवरण—चिड़ावा जयपुर-निवासी लाला भगवानदास अग्रवाल के पुत्र । संस्कृत, अँगरेज़ी, गुजराती तथा बंग-भाषा भी जानते हैं । आध्यात्मिक विषय के व्यसनी एवं सात्त्विक जीवन व्यतीत करते हैं ।

उदाहरण—

करुण राग रंजित जब तेरा
होता प्रिय मुझ पर अनुराग ;

मधुर मोद मकरंद सु प्यारा
अहो छलक उठती रस धारा,
भर जाता अंतस्थल सारा,
जीवन-सुमन विकल यह सहसा
खिल उठता है सस्मित राग
करुण राग रंजित जब तेरा
होता प्रिय मुझ पर अनुराग।

नाम—(४४४८) दामोदरसहाय, बाँकीपुर।

विवरण—आपकी मृत्यु सं० १९८८ के निकट हो गई।

नाम—(४४४९) निहालकरण सेठी।

विवरण—आप खंडेलवाल जैन तथा काशी-विश्वविद्यालय में प्रोफ़ेसर हैं।

नाम—(४४५०) पद्मकांत मालवीय, प्रयाग।

जन्म-काल—लगभग सं० १९६२।

रचना-काल—सं० १९८०।

ग्रंथ—(१) त्रिवेणी, (२) प्याला आदि।

विवरण—आप कृष्णकांत मालवीय के पुत्र एवं हिंदी के एक होनहार कवि और लेखक हैं।

नाम—(४४५१) पीर मुहम्मद 'मूनिस' बेतिया, चंपारन।

जन्म-काल—सं० १९५१।

रचना-काल—लगभग सं० १९८०।

ग्रंथ—मूनिस-ग्रंथावली।

विवरण—यह जाति के मुसलमान हैं, किंतु हिंदी से विशेष प्रेम रखते हैं। इनके लेख प्रायः 'प्रताप', 'आर्यमित्र', 'बालक' आदि पत्रों में निकला करते हैं।

नाम—(४४५२) बाबूसिंह क्षत्रिय पिपरसंड, हरौनी, ज़िला लखनऊ।

जन्म-काल—सं० १९५४।

रचना-काल—लगभग सं० १९८०।

ग्रंथ—(१) विनोद-बावनी, (२) ब्रज-विहार-विनोद (अपूर्ण), (३) स्फुट छंद।

नाम—(४४५३) बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', ग्वालियर-राज्य में शाजापुर के निवासी हैं।

जन्म-काल—सं० १९६०।

रचना-काल—सं० १९८०।

ग्रंथ—कुछ काल तक 'प्रताप' पत्र के संपादक रहे, तथा बहुत-सी स्फुट रचनाएँ की हैं।

विवरण—आप स्वच्छंद प्रकृति के उत्साही कार्यकर्ता हैं। उद्धत देश-भक्ति के कारण कई बार जेल भी हो आए हैं।

नाम—(४४५४) भुवनेश्वरनाथ मिश्र 'माधव' बी० ए० मिश्रौली, बिलौटी (शाहाबाद)।

जन्म-काल—सं० १९६२।

रचना-काल—लगभग सं० १९८०।

उदाहरण—

बनी रहे हिय मधुर वेदना, बहते रहें अश्रु-निर्झर;
व्याकुल प्राण सदा तेरे दर्शन-हित बने रहें नटवर।
सदा खोजता जाऊँ मैं, पर तू अनंत में मिलता जा;
आतुर आँखों की ओझल हो झिलमिल-सा तू मिलता जा।
यों छककर इस खोज-ढूँढ़ से करने लगें कूच जब प्राण;
बिना प्रयास भाव-वैभव से गूँज उठे हत्तंत्री-तान।

रिमझिम बजती पायँ पैंजनी, मुरली मधुर बजाते नाथ ;
आ हिय-आँगन लगो नाचने, हम भी नचैं तुम्हारे साथ !

नाम—(४४९५) भूधरनाथ शर्मा 'भूधर' दुगावाँ, लखनऊ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५५।

रचना-काल—सं० १९८०।

विवरण—स्फुट कविता।

नाम—(४४९६) महाराज दीनसिंह उमरा, ज़िला उन्नाव।

जन्म-काल—सं० १९५६।

रचना-काल—लगभग सं० १९८०।

ग्रंथ—(१) काम-शास्त्र (छंदोबद्ध, अपूर्ण), (२) स्फुट कविताएँ।

विवरण—आप चंदेल क्षत्रिय हैं।

नाम—(४४९७) मेड़ईसिंह चौहान 'जगदीश' पिपरसंड, ज़िला लखनऊ।

जन्म-काल—सं० १९५७।

रचना-काल—लगभग सं० १९८०।

ग्रंथ—महात्मा तुलसीदासजी का जीवन-चरित्र (छंदोबद्ध)।

नाम—(४४९८) रामप्रीति शर्मा 'शिव' विशारद केमठ-ग्राम, ज़िला आरा।

जन्म-काल—सं० १९५५।

रचना-काल—लगभग सं० १९८०।

ग्रंथ—(१) नल-दमयंती, (२) पिंगल-मंजूषा, (३) त्यागी तुलसी (अप्रकाशित), (४) बालचर-विमर्श (अप्रकाशित), (५) व्याकरण-विनोद (अप्रकाशित) आदि।

विवरण—यह पं० बुद्धि त्रिपाठीजी के ज्येष्ठ पुत्र एवं हिंदी-

साहित्यानुरागी पुरुष हैं। हिंदी के अतिरिक्त इन्होंने संस्कृत तथा अँगरेज़ी में भी ज्ञान प्राप्त किया है। कुछ समय से 'राम'-नामक पाक्षिक पत्र का संपादन करते हैं।

नाम—(४४५९) रामभरोसेसिंह, फ़ुफवार, कानपुर।

जन्म-काल—सं० १९३७।

रचना-काल—सं० १९८०।

विवरण—आप स्थानीय आनरेरी मैजिस्ट्रेट और एक प्रतिष्ठित ज़मींदार हैं। स्फुट काव्य करते हैं।

नाम—(४४६०) रामलाल।

जन्म-काल—सं० १९४७।

रचना-काल—सं० १९८०।

ग्रंथ—स्फुट समस्या-पूर्ति के छंद।

विवरण—गोसाईंगंज, ज़िला फ़ैज़ाबाद के अँगियार वैश्य बिंदादीन के पुत्र हैं। कविता अच्छी है।

उदाहरण—

संकुल लतान लहरान लागे औरै भाँति,
औरै रग-ढंगन उमंगन बहार है;
बनन में, बागन में, गाछ परिधानन में,
बरन-बरन साज साजत सिंगार है।
पातन प्रसूनन के भारन ते झुकि-झूमि,
स्वागत करत जाँहि पावत अगार है;
'रामलाल' चकित चकोर पेखै बार-बार,
फूल ये पलास से कि झरत अँगार है।

नाम—(४४६१) रामानंद शर्मा, पूनास, पूसा दरभंगा।

जन्म-काल—सं० १९५४।

रचना-काल—लगभग सं० १९८०।

ग्रंथ—(१) पंचाग्नि (कहानियाँ), (२) मंगल-मुहूर्त, (३) वाल्मीकीय रामायण, (४) अस्पृश्याश्रम (आंध्र भाषा से अनुवादित) आदि ।

विवरण—यह भूमिहार ब्राह्मण पं० बंसरोपनसिंह के पुत्र हैं ।

नाम—(४४६२) विश्वमोहनकुमारसिंह एम्० ए०, बी० एल्०, सज्जनपुर, दिघवारा (सारन) ।

जन्म-काल—सं० १९५७ ।

रचना-काल—लगभग सं० १९८० ।

ग्रंथ—स्फुट लेख ।

नाम—(४४६३) वंशीधर शास्त्री ।

ग्रंथ—आत्मानुशासन का हिंदी-अनुवाद ।

विवरण—आप सोलापुर की जैन-पाठशाला में संस्कृत के अध्यापक तथा जैन-गज़ट के सहकारी संपादक रह चुके हैं ।

नाम—(४४६४) शीतलाप्रसाद तिवारी ।

जन्म-काल—सं० १९५६ ।

लेखन-काल—सं १९८० ।

ग्रंथ—(१) तुलसीदास-कृत दोहावली की टीका । (२) सुंदरकांड की टीका, (३) कृषि-संबंधीय एक पुस्तक का अनुवाद ।

विवरण—रामगढ़, पोस्ट रानीगंज, ज़ि० प्रतापगढ़-निवासी सर्यूपारीण ब्राह्मण, कृषि-विद्या के विद्वान् तथा अध्यापक हैं ।

नाम—(४४६५) श्रीरत्न शुक्ल एम्० ए०, एल्-एल् बी०, कानपुर ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५४ ।

रचना-काल—सं० १९८० ।

विवरण—स्फुट पद्यकार । म्युनिसिपल-बोर्ड, कानपुर की शिक्षा-समिति के सभापति ।

समय—संवत् १९८१ के अन्य कविगण

नाम—(४४६६) सूर्यनारायण व्यास (सूर्य), उज्जैन-निवासी।

जन्म-काल—सं० १९६०।

रचना-काल—सं० १९८१।

ग्रंथ—स्फुट रचना।

विवरण—आप अच्छी ज्योतिष जानते हैं तथा बड़े मिलनसार हैं। कविता सरस करते हैं। उज्जैन में एक कवि-मंडल आपके कारण क़ायम है।

उदाहरण—

ऐ वीरवर्य भारत, तेरी सदा विजय हो,
तेरे खुले गगन में, सुख-सूर्य का उदय हो।
निज प्रेम-रश्मियों से, मन की लहर जगा दे,
भारी विपत्ति में भी, मेरा हृदय अभय हो।
आशीष पूर्ण दीजै, हो आत्मबल सदा ही,
पीछे नहीं हटूँ मैं, चाहै महाप्रलय हो।
देखूँ तुझे सुखी मैं, बस है यही मनीषा,
ऐ प्राण-धन तुझी पर, मेरा शरीर लय हो।

नाम—(४४६७) केदारनाथ मिश्र गौड़ 'प्रभात', बाकरगंज (पटना)।

जन्म-काल—सं० १९६१।

रचना-काल—लगभग सं० १९८१।

उदाहरण—

मा! यद्यपि हम बालक ही हैं, कुसुम-सुकोमल और अबोध!
फिर भी तेरे चरणों में बस, यहीं हमारा है अनुरोध!
निःसंकोच हमें दे दे, अपने हाथों की तीक्ष्ण कुठार!
होने दे यदि दृश्य देख यह, जग में होगा हाहाकार!!

चरणों की ही धूल मिले, है चाह नहीं पहनें हम ताज !
कर विश्वास, न किसी तरह, पद-मर्दित होने देंगे लाज !!
हमें न विचलित कर सकते हैं, विघ्नों के विक्षिप्त प्रहार !
बड़वानल के दाह, उदधि-गर्जन, तूफान प्रलय हुंकार !!
कह दे—"जा, हो सफल ध्येय में, ले, देती हूँ स्वीय कुठार !
आज हमारे बच्चों की भी, साहस-शक्ति लखे संसार !!"

नाम—(४४६८) गोपीनाथ वर्मा, ग्राम ससराम, ज़िला शाहाबाद (आरा), प्रांत विहार।

जन्म-काल—सं० १९५६।

रचना-काल—सं० १९८१।

ग्रंथ—साहित्यिक तथा वैज्ञानिक स्फुट लेख।

विवरण—ससराम से छ मील के अंतर पर 'नाद' नाम की बस्ती है। यही वर्माजी का जन्म-स्थान है। आप मुंशी कुलदीप-सहायजी के पुत्र हैं। हिंदी में लेख आदि लिखने की रुचि आपको विद्यार्थी-दशा से ही है, और उस अवस्था में ही आप 'पाटलीपुत्र', 'बंगवासी' आदि साप्ताहिक पत्रों में संवाद आदि भेजा करते थे, किंतु सं० १९७६ में मैट्रिक्युलेशन-परीक्षा में उत्तीर्ण होकर जब जमशेदपुर-ताता-कंपनी के जेनरल ऑफ़िस में काम करने लगे, उस समय से यह साहित्यिक सेवा विशेष रूप से करते आए हैं। जमशेदपुर में श्रीतिलक-पुस्तकालय की स्थापना का श्रेय बहुत अंशो में आप ही को है। इस समय वर्माजी ताता-कंपनी के स्कूल में अध्यापक हैं। आप 'भारतमित्र', 'हिंदू-संसार', 'स्वतंत्र', 'श्रीकृष्ण-संदेस' आदि दैनिक तथा साप्ताहिक पत्रों के संवाददाता तथा लेखक भी हैं।

नाम—(४४६९) गंगाप्रसादसिंह, काशी।

जन्म-काल—सं० १९५६।

ग्रंथ—(१) हिंदी के मुसलमान कवि, (२) बड़ी जीजी, (३) पागल, (४) देवदास, (५) मित्र, (६) सीमंतिनी सैनिक।

नाम—(४४७०) मथुराप्रसाद दीक्षित बी० ए०, सारन।

जन्म-काल—सं० १९५१।

रचना-काल—लगभग सं० १९८१।

ग्रंथ—बाबू कुँवरसिंह की जीवनी।

विवरण—आप भूमिहार ब्राह्मण हैं।

नाम—(४४७१) बसिष्ठनारायण, उपनाम 'निर्बल'।

ग्रंथ—(१) राष्ट्रीय कवितावली, (२) राष्ट्रीय रंग।

विवरण—आप बलिया-ज़िलांतर्गत सवन-ग्राम-निवासी श्रीवास्तव कायस्थ हैं।

समय—संवत् १९८२ के अन्य कविगण

नाम—(४४७२) केसरकुमारीदेवी।

जन्म-काल—सं० १९५७।

ग्रंथ—(१) अबला-विलाप, (२) सावित्री-सत्यवान।

विवरण—आप झालावाड़-निवासी ठाकुर धवलसिंहजी की पुत्री तथा झालावाड़-गर्ल्स-स्कूल में अध्यापिका हैं।

उदाहरण—

अन्न बिन पेट ज्वाल जीवहिं जलाय देत,
वस्त्र-हीन दीन सहैं पीर शीत पारे की ;
कालरा कराल इन्फ़्ल्युएंज़ा सतावे आय,
प्लेग हू न राखै लाज युवा वृद्ध बारे की।

नाम—(४४७३) खूबचंद शास्त्री जैन।

ग्रंथ—(१) गोम्मटसार जीवकांड, (२) न्यायदीपिका, (३) महावीर-चरित का अनुवाद।

विवरण—सत्यवादी, संपादक तथा हिंदी के अच्छे लेखक।

नाम—(४४७४) चक्रधरसिंह (राजा), रायगढ़-नरेश।

जन्म-काल—लगभग सं० १९६०।

रचना-काल—सं० १९८२।

ग्रंथ—बैरागढ़िया राजकुमार आदि कई उपन्यास।

नाम—(४४७५) चंद्रशेखर शास्त्री।

जन्म-काल—सं० १९५७।

ग्रंथ—(१) सुबोध जैन-दर्शन, (२) राष्ट्रनेत्री, (३) षड्दर्शन-समुच्चय, (४) न्याय-बिंदु, (५) रति-रहस्य, (६) वाग्भटालंकार।

विवरण—आप लालढांग, ज़िला बिजनौर-निवासी भगवतदास के पुत्र तथा काशी-विश्वविद्यालय में दर्शन-शास्त्र के प्रोफ़ेसर हैं।

नाम—(४४७६) जगदीशचंद्र शास्त्री, मखन, मुज़फ़्फ़रपुर।

जन्म-काल—सं० १९६२।

रचना-काल—लगभग सं० १९८२।

ग्रंथ—(१) अनाथ (उपन्यास), (२) गौ-रक्षा।

नाम—(४४७७) जनार्दन पाठक, भेलदी, सारन।

जन्म-काल—सं० १९५२।

रचना-काल—लगभग सं० १९८२।

ग्रंथ—(१) देशोद्धार, (२) स्वराज्य।

विवरण—आजकल आप युधिष्ठिर का जीवन-चरित्र लिख रहे हैं।

नाम—(४४७८) दयालगिरि गोस्वामी विशारद।

जन्म-काल—सं० १९६२।

रचना-काल—सं० १९८२।

ग्रंथ—(१) राष्ट्रीय काव्य, (२) महिला-संगीत, (३) नागरिक शिक्षा, (४) बाल-वंदना (स्वरचित)। (१) भारत-सुधा-संगीत, (२) अपठित हिंदी-गद्य-साहित्य (संगृहीत)।

विवरण—नागपुर कल्याण कुटी बालाघाट सी० पी० बुधगिरि

गोस्वामी के पुत्र सं० १९८० में टी० टी० सी० सं० १९८७ में हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की विशारद-परीक्षा पास की। विशेषतः राष्ट्रीय काव्य करते हैं।

उदाहरण—

जगती तल का स्वर्गागार,
मनुष्यता का वर भंडार।
जहाँ सुलभ जीवन - संचार,
वहाँ आज क्यों पापाचार ?
दिग्विजई विद्वान नरेश,
वैभवशाली मुनिवर वेष।
जहाँ निरंतर हुए विशेष,
वहाँ आज क्यों रौरव क्लेश।

नाम—(४४७९) दीनानाथ व्यास (विशारद)।

जन्म-काल—सं० १९६६।

रचना-काल—सं० १९८२।

ग्रंथ—(१) गांधी-दर्शन, (२) खंड काव्य का समर्पण, स्फुट कविताएँ तथा गद्य-लेख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं।

विवरण—उज्जैन-निवासी भार्गव-वंश में जन्म, साहित्य-रत्न तथा हिंदी के निस्स्वार्थी सेवक हैं।

नाम—(४४८०) महेशचंद्रप्रसाद एम्० ए०, कायस्थ, पटना।

जन्म-काल—सं० १९५७।

रचना-काल—लगभग सं० १९८२।

ग्रंथ—(१) संस्कृत-साहित्य का इतिहास, (२) ज्ञान-गंगा, (३) भारतेश्वर का संदेश आदि।

विवरण—आप पटने से निकलनेवाले 'शिक्षा-सेवक' पत्र के संपादक हैं।

नाम—(४४८१) मृत्यंजयप्रसाद विद्यालंकार 'विशारद', जिनादेई, सारन।

जन्म-काल—सं० १९६२।

रचना-काल—लगभग सं० १९८२।

ग्रंथ—(१) अनीति की ओर और (२) भारतवर्ष की प्रधान एकता (अनुवाद)।

विवरण—आप कायस्थ-कुलोत्पन्न बाबू राजेंद्रप्रसादजी एम्० ए०, एम्० डी० के पुत्र और 'हिंदी-नवजीवन' के सहकारी संपादक हैं।

नाम—(४४८२) रघुनंदन शर्मा, प्रयाग-निवासी।

जन्म-काल—सं० १९५५।

रचना-काल—सं० १९८२।

विवरण—खेलौना पत्र के संपादक।

नाम—(४४८३) रूपलाल, वृंदावन।

ग्रंथ—स्फुट पद।

जन्म-काल—सं० १९५७।

विवरण—राधावल्लभीय संप्रदाय के अनुयायी।

नाम—(४४८४) लक्ष्मीनारायण शर्मा 'कृपाण' कवि।

जन्म-काल—सं० १९५७।

ग्रंथ—(१) स्वार्थ-रक्षा-भजनावली (१९७२), (२) श्रीभारत-रत्नमाला (१९७७), (३) रामायण-कल्पलता-नाटक (१९७७), (४) कृपाण-गीतांजलि (१९७९), (५) विधवा की प्रार्थना, (६) शहीदों की अपील, (७) वसंत का अंत।

विवरण—आप भिवानी, ज़िला हिसार में रहते हैं। आपके पिता का नाम मोहनलाल है। जाति के गौड़ ब्राह्मण हैं।

नाम—(४४८५) विमलादेवी 'रमा', डुमराँव, शाहाबाद।

जन्म-काल—लगभग सं० १९६२।

ग्रंथ—(१) स्फुट लेख तथा कविताएँ, (२) शिक्षा-सौरभ।

विवरण—आप कायस्थ-कुलोत्पन्ना हैं। आपके लेख तथा कविताएँ 'चाँद', 'मनोरमा', 'देश-सेवक' आदि पत्र-पत्रिकाओं में निकला करती हैं।

नाम—(४४८६) विश्वनाथप्रसाद एम्० ए०, विशारद, मुरार, शाहाबाद (विहार)।

जन्म-काल—सं० १९६२।

रचना-काल—लगभग सं० १९८२।

ग्रंथ—(१) आँसू, (२) विहार के प्राचीन स्थान, (३) देवयानी (नाटक)।

विवरण—आप कायस्थ महाशय हैं।

नाम—(४४८७) विष्णुकुमारी मंजु, कानपुर।

जन्म-काल—लगभग सं० १९६५।

रचना-काल—सं० १९८२।

विवरण—आप डिपुटी श्यामलालजी की सुपुत्री एवं प्राचीन लेखिका हैं।

नाम—(४४८८) व्रजभूषणलाल।

जन्म-काल—सं० १९५७।

ग्रंथ—(१) मानसिक ध्यान, (२) स्फुट पद।

विवरण—राधावल्लभीय।

नाम—(४४८९) शिवकुमारीदेवी, डाल्टेनगंज (पलामू) विहार-प्रांत।

जन्म-काल— सं० १९६२।

रचना-काल—लगभग सं० १९८२।

ग्रंथ—सावित्री औ दमयंती।

विवरण—आप कायस्थ-कुलोत्पन्ना बाबू युगलकिशोरजी अखौरी की पुत्री हैं।

नाम—(४४९०) सोमदेव (शर्मा) सोमकवि।

जन्म-काल—सं० १९६४।

रचना-काल—सं० १९८२।

रचना—स्फुट कविताएँ और साहित्य तथा आयुर्वेद पर लेख।

विवरण—नवीगढ़, पो० वर्लो, ज़िला अलीगढ़ के आर्य-भजनोपदेशक पं० रघुनंदन शर्मा (सारस्वत) के पुत्र हैं। बनारस की साहित्य-शास्त्री-परीक्षा पास, पंजाब की शास्त्री-परीक्षोत्तीर्ण, संस्कृत और हिंदी ब्रज-भाषा तथा खड़ी बोली के कवि, राष्ट्रीय विचार के उदीयमान युवक, गद्य-पद्य-लेखक, बनारस-हिंदू-विश्वविद्यालय में आयुर्वेद-मेडिकल-कॉलेज में ६ वर्ष अभ्यास किया।

उदाहरण—

हा मोती !

भारत जननि देवि ! अब तेरा खोया वही दुलारा ;
उज्ज्वल मुख था तेरा जिससे, जो प्राणों का प्यारा।
तू अभिमान किया करती थी, जिसका आश्रय लेके ;
तेरा वह सरवस्व आज ही चला गया है तज के।
छाती शीतल करनेवाला आँखों की नवज्योती ;
निर्धन तुझ दुखिया का वह धन आज खो गया मोती।

नाम—(४४९१) हरस्वरूप चतुर्वेदी, मैनपुरी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५७।

विवरण—यह पंडित मुन्नालालजी मिश्र के पुत्र हैं। अभी आप विद्यार्थी-दशा में हैं।

समय—संवत् १९८३ के अन्य कविगण

नाम—(४४९२) आनंदीप्रसाद मिश्र 'निर्द्वंद'।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५८।

जन्म-स्थान—झलरापाटन-रियासत।

निवास-स्थान—ग्राम भगवानपुर, ज़िला मुरादाबाद।

ग्रंथ—समाचार-पत्रों तथा पत्रिकाओं में स्फुट लेख।

विवरण—आप पं० मुकुंदरामजी के पुत्र हैं। सार्वजनिक संस्थाओं में अपनी युवावस्था से ही आप काम करने लगे हैं। समय-समय पर यह नागरी-प्रचारिणी सभा के उपमंत्री तथा हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की परीक्षाओं के व्यवस्थापक रहे हैं। 'अध्यापक' और 'शंकर' पत्रों के ये भूतपूर्व संपादक हैं। इस समय 'खिलौना' पत्र से इनका विशेष संबंध है।

नाम—(४४६३) कामेश्वरीप्रसाद, साहबगंज (छपरा)।

जन्म-काल—लगभग सं० १९५८।

रचना-काल—सं० १९८२।

उदाहरण—

अब स्वार्थतम का परदा, सत्वर हटा दे मोहन !
अब आत्म-त्याग-रवि की, आभा दिखा दे मोहन।
पूरब में फैल जावे, शुभ देश-भक्ति लाली;
मन-पल्लवों पै आशा, बूँदें बिछा दे मोहन।
महिला कमल-कली क्यों, अब लों न खिल रही है ?
विद्या-मलय बहाकर, इनको खिला दे मोहन !
अज्ञान के निशाचर, हमको सता रहे हैं।
चैतन्य शर से इनकी, गर्दन उड़ा दे मोहन !
चेतें, मिलें, खड़ी हों, स्वत्वों को आज ले लें;
बिगड़ी मेरी बना दे, शुभ दिन फिरा दे मोहन !

नाम—(४४६४) गुलाबरत्न वाजपेयी 'गुलाब'।

जन्म-काल—सं० १९५८ ।

ग्रंथ—(१) चित्र-काव्य, (२) कर्म-रेखा, (३) मल्लिका, (४) स्फुट काव्य का विराट् संग्रह ।

विवरण—आप सुमेरपुर, ज़िला उन्नाव-निवासी कान्यकुब्ज ब्राह्मण पं० कामेश्वर वाजपेयी के पुत्र हैं ।

उदाहरण—

घूँघट को मूँदो मत मानसी मयंक मुख ;
चंद्रिका निशा को अधिकारिणी बनाओ ना ;
नोच - नोच फेंको नहिं सुंदर सुमन-माल ,
नीचे कर नैन-मीन सिकुड़ी लजाओ ना ।
कौन-सी पड़ी है चूक बनी जो अजान ऐसी ,
रोष भरी मन ही में मंद मुसकाओ ना ;
व्याकुल हैं, विकल हैं नैन से उठाय देखो ,
बाल कही मानो अब अंतर जलाओ ना ।

नाम—(४४६५) जगन्नाथप्रसाद मिश्र बी० एल्०, पतौरे, दरभंगा ।

जन्म-काल—सं० १९५३ ।

रचना-काल—लगभग सं० १९८३ ।

ग्रंथ—स्फुट लेख ।

विवरण—आप भूमिहार ब्राह्मण पं० रामउदार मिश्र के पुत्र हैं । 'कलकत्ता-समाचार' तथा 'भारत-मित्र' पत्रों के संपादक रह चुके हैं ।

नाम—(४४६६) जगन्नाथप्रसादसिंह, शीतलापुर ।

जन्म-काल—सं० १९६३ ।

रचना-काल—लगभग सं० १९८३ ।

ग्रंथ—(१) घरौंदा, (२) बाल-विनय, (३) भारत-गीत ।

विवरण—आप जाति के कायस्थ बाबू दामोदरसहायसिंह 'कवि-किंकर' के पुत्र हैं।

नाम—(४४९७) द्विज श्याम द्विवेदी, ज़िला बाँदा।

जन्म-काल—सं० १९६३।

नाम—(४४९८) मार्कंडेय पांडेय 'मधु', खगैंदा, भगवान-पुर (शाहाबाद)।

जन्म-काल—सं० १९६३।

रचना-काल—लगभग सं० १९८३।

विवरण—आप एक नवयुवक, उत्साही लेखक और 'देश-सेवक' पत्र के संपादक हैं।

उदाहरण—

बल खाती मनहर पनिहारिन जल भरने नहिं आई ;
झीनी अँगिया के तारों से है हृदय झाँकने आई।
प्रेम-नगर की साँकर गलि से नेह निवारत आई ;
छवि-मयंक के कितने चातक बाँध लजीली लाई।
निर्मल शीतल सरवर जल में प्रेम - मीन को पाई ;
उझक-झिझक कर जानि अकेली छवि-बंशीहि बझाई।
सुरभित भाव-कुसुम की माला जीवन धन पहनाई ;
लोचन-लाज लगाम लगाकर समय सकोच बुझाई।

नाम—(४४९९) रघुवरदासजी महंत, ग्राम हारट, तहसील हटा (मध्यप्रांत)।

जन्म-काल—सं० १९४८।

रचना-काल—सं० १९८२।

ग्रंथ—स्फुट कविताएँ।

विवरण—आप जुझौतिया ब्राह्मण पं० किशोरप्रसाद के पुत्र हैं। 'धर्म-भूषण' पत्र में आपकी कविताएँ प्रायः निकला करती हैं।

उदाहरण—

कोटिन अनंग छबि देख के निसार होय,
कोटिन तरनि दुति मुकुट पै छाई है ;
नीलोत्पल सम लोचननि की विशाल शुचि,
पाँति पै रदों की प्रभा हीरों की लजाई है ।
विहँसि विचित्र जिमि ऊषा की किरन होय,
तिरछी चितौनि चित माँझ में समाई है ;
अनुपम आभा रघुराज साज आनन की,
शांति-प्रदायिनी औ' संत सुखदाई है ।

नाम—(४२००) रामेश्वरप्रसाद 'राम', बाढ़ (पटना) ।
जन्म-काल—सं० १९५८ ।

उदाहरण—

चाह नहीं है, रायबहादुर बनकर मैं इतराऊँ ;
चाह नहीं है, बड़ों-बड़ों से सजकर हाथ मिलाऊँ ।
चाह नहीं है, लंदन जाकर मैं मिस्टर बन आऊँ ;
चाह नहीं है, बड़े लाट का मैं मेंबर बन जाऊँ ।
चाह यही है, जीवन-पथ में राग-द्वेष से दूर रहूँ ;
चाह यही है, हिंद-देश की सेवा में भरपूर रहूँ ।
चाह नहीं है, नेता बनकर सभा-भवन में जाऊँ ;
चाह नहीं है, जनता की मैं पूजा शीश चढ़ाऊँ ।
चाह नहीं है, कपट हृदय से त्यागवीर कहलाऊँ ;
चाह नहीं है, योगी बनकर तन में भस्म रमाऊँ ।
चाह यही जीवन की मेरे, दीनों का उद्धार करूँ ;
चाह यही है, भारत मा का हिल-मिल बेड़ा पार करूँ ।

नाम—(४२०१) सत्यनारायणसिंह, खुटाही पारू, मुज़फ़्फ़रपुर ।

जन्म-काल—सं० १९५८।

ग्रंथ—(१) पद्य-शब्द-कोष, (२) हिंदी-गीता आदि।

विवरण—आप राजपूत-कुलोत्पन्न श्रीयुत महाराजसिंह के पुत्र हैं।

नाम—(४५०२) सुरेश्वर पाठक, विद्यालंकार, विशारद, रतैठा, खड्गपुर, मुँगेर।

जन्म-काल—सं० १९६३।

रचना-काल—लगभग सं० १९८२।

ग्रंथ—(१) रचना-मयंक, (२) वंग-विजय, (३) सबरी (उपन्यास)।

विवरण—आप पं० अजबलाल पाठक के पुत्र और 'देश' पत्र के सहकारी संपादक हैं।

समय—संवत् १९८४ के अन्य कविगण

नाम—(४५०३) अवधविहारी अवस्थी, 'विमल' (कवि), कान्यकुब्ज ब्राह्मण।

जन्म-काल—सं० १९५९।

कविता-काल—सं० १९८४।

ग्रंथ—(१) नारी-संगीत-रत्न, (२) वेश्या-दोष-दर्शन, (३) जुआ-दोष-दर्शन, (४) विधवा-विलाप आदि।

विवरण—सआदतगंज लखनऊ में हिंदू-समाज-सुधार कार्यालय खुला हुआ है। उसमें आपने कई वर्ष परिश्रम करके लोक-हित के कार्य किए। बहुत-से भजन भी आपने बनाए हैं।

नाम—(४५०४) ईश्वरीप्रसाद वर्मा 'शब्द' शोभासदन, कमंगरगली, (पटना सिटी)।

जन्म-काल—सं० १९५९।

उदाहरण—

कब तक देखूँ राह प्राणप्रिय! इन मिलनोत्सुक नयनों से;
कब तक पी की लगन लगाऊँ इन बिरहाकुल बयनों से।
कब तक हाय! न दर्शन देकर मुझको कहो सताओगे;
कब तक दारुण विरह-व्यथा में और अधिक तड़पाओगे।
कब तक निष्ठुर बन जीवनधन! मुझको नाथ रुलाओगे;
कब तक मेरे शुष्क हृदय में प्रेम - सुधा बरसाओगे।
कब तक हे मेरे अराध्य! मम दुःखित हृदय जुड़ाओगे;
कब तक निज चितवन दिखलाकर हिय की कली खिलाओगे।
कब तक अपने कर - कमलों से सुंदर साज सजाओगे;
कब तक मिलन बारि बरसाकर सुख - तरुवर सरसाओगे।
कब तक प्रियतम बतलाओ तो, मीठी हँसी हँसाओगे;

नाम—(४९०५) जगन्नाथप्रसाद मिश्र 'उपासक' जौरा अलापुर ग्राम ग्वालियर-राज्य-निवासी रंगलाल शास्त्री के पुत्र।

जन्म-काल—सं० १९६९।

रचना-काल—सं० १९८४।

ग्रंथ—स्फुट रचना।

उदाहरण—

अंबर पथ में बिखरी हों जब निखरी तारक-मालाएँ;
स्वागत करती हों निशेश का गा-गाकर पिक बालाएँ।
मलयजमारुत में उठती हो किसी व्यथित की अंतिम धूल;
हँस-हँसकर नभ वातायन से बरसाता हो शशधर फूल।
इस दुखिया की सुख-समाधि पर खड़े-खड़े होते जाना;
अरे पथिक संसृति की स्मृति में पल-भर तो रोते जाना!

नाम—(४९०६) जैनेंद्रकुमार, दिल्ली।

जन्म-काल—सं० १९६१ (अलीगढ़)।

ग्रंथ—(१) फाँसी, (२) परख, (३) वातायन, (४) स्पर्द्धा।

विवरण—गुरुकुल में आरंभिक शिक्षा पाई। असहयोग आदि में कुछ कार्य किया। परख पर हिंदोस्तानी एकेडेमी से पुरस्कार पाया। इस नाम के भ्रम से एक प्राचीन कवि जैनेंद्रकिशोर परख के लेखक तथा उपहार-भोक्ता इस ग्रंथ में अन्यत्र लिखे जा चुके हैं, और वह भाग छप चुका है, किंतु परख के वास्तविक लेखक आप ही हैं।

नाम—(४२०७) उपेंद्रनाथ मिश्र शीतलपुर एकमा, (सारन)।

जन्म-काल—सं० १९५९।

उदाहरण—

शरद्-वर्णन

यहाँ आज क्या हा! शरत् पूर्णिमा है;
उसी की मनोमोहिनी सत् समा है।
शरत् शर्वरी सुंदरी-सी बनी है;
सुधा-धाम को पा सुधा में सनी है।
चकोरी लखो चंचु है चटपटाती;
कली कैरवी नाज से मुस्किराती।
महामोद का राज्य मानो सु छाया;
तमस्तोम का सत्त्व संहार पाया।
मधून्मत्त गाते अली भूमते हैं;
खिले पुष्प वालास्य को चूमते हैं।
कहीं झुंड-के-झुंड आनंद छाके;
बने कैरवी कामिनी केश बाँके।
अभै है कहीं गंध की लूट ठाने;
उचक्के नहीं चाँदनी रैन माने।

न पै पद्मिनी कौमुदी-मोद-माती ;
सती को नहीं लंपटी ऋद्धि भाती।
कहीं चाँदनी-चक्र में चक्र-माला ;
हुई चक्रिता पा रही है कसाला।

नाम—(४५०८) गंगासिंह एच्० एच्० महाराजा चरखारी।

ग्रंथ—तरंग-मंगल (१६६४), (प्र० त्रै० रि०)।

विवरण—और भी कई ग्रंथ बनाए हैं। आपको हिंदी-कविता से विशेष प्रेम था।

नाम—(४५०६) मदनमोहन मिहिर।

जन्म-काल—सं० १६५६।

ग्रंथ—(१) निसर्ग-गीत, (२) जीवन-गीत, (३) प्रेम-गीत, (४) प्रकृति-कौतुक-वंदना, (५) खोज।

विवरण—आप नंदूलाल मिहिर के पुत्र हैं।

उदाहरण—

हे मेरे आराध्य देव, कैसी है तेरी माया।
जब-जब तुमसे मिलने आई, कभी न तुमको पाया ;
नेत्र थके प्रभु-बाट जोहते, अब तो अश्रु निकलता।
दयासिंधु हो, दया न आती सुनकर मेरी दीन पुकार ;
अच्छा प्रियतम, तुम्हीं बता दो, कैसे करूँ तुम्हें मैं प्यार ?

नाम—(४५१०) मंगलप्रसाद विश्वकर्मा।

जन्म-काल—सं० १६५६।

ग्रंथ—(१) शेरसिंह, (२) उत्सर्ग, (३) रोशनआरा, (४) स्फुट कविता। (खड़ी बोली की रचना करते हैं)।

नाम—(४५११) मंगलाप्रसादसिंह, पोखरपुर परसा (सारन), बिहार-प्रांत।

जन्म-काल—सं० १६६४।

रचना-काल—सं० १९८४।

ग्रंथ—(१) विहार के नवयुवक-हृदय (दो भाग), (२) विहार के प्राचीन हिंदी-लेखक और कवि।

विवरण—आप विहार-प्रांत के एक काव्यानुरागी एवं साहित्योत्साही नवयुवक लेखक हैं। आप ठाकुर रामबहादुरसिंहजी के पुत्र हैं। हम लोगों को इस भाग की रचना में आपसे विशेष सहायता मिली है। एतदर्थ आपको धन्यवाद है।

नाम—(४५१२) रामअवतार शर्मा खरोधी, भवानपुर (पलामू)।

जन्म-काल—सं० १९५९।

ग्रंथ—(१) भारतवर्ष का इतिहास, (२) अनुवाद-प्रभाकर, (३) शौंडिक-जाति का इतिहास।

उदाहरण—

विद्या का वर्णन

है अहर्निश इस जगत में ज्योति जिसकी जागती;
देखते जिसकी प्रभा हिय की तमी है भागती।
बात जिसकी मूक हो लाचार पशुता मानती;
देख जिसको साधुता शठता न हठता ठानती।
तेज जिसका है निराला देखकर जिसकी लपट;
है झुलसती मूर्खता मिटते मनुज के छल-कपट।
जो अलौकिक वस्तु है, पै आ धरा पै शोभती;
देव-किन्नर - नाग - नर - जड़ - प्राज्ञ - मन को मोहती।
व्योम - भू - पाताल में जिसकी छटाएँ सोहतीं;
विश्व की सारी कलाएँ बाट जिसकी जोहतीं।

नाम—(४५१३) रामप्रताप शुक्ल विशारद।

जन्म-काल—सं० १९६४।

रचना-काल—सं० १९८४ ।

ग्रंथ—स्फुट समस्या-पूर्ति आदि ।

विवरण—बनारस-राज्य के बरकोट में जन्म, आजकल बंबई में स्थित, सार्वजनिक कार्यकर्ता, देश तथा समाज-सुधारक सज्जन पुरुष, विविध कला-कुशल, एक चर्खा ऐसा बनाया है, जो प्रवास में साथ रह सकता है। सरयूपारीण ब्राह्मण हैं।

नाम—(४५१४) व्रजजीवनलाल ।

जन्म-काल—सं० १९५९ ।

ग्रंथ—स्फुट पद ।

विवरण—राधावल्लभीय ।

नाम—(४५१५) शंकरप्रसाद दीक्षित, बिछलखा (बाराबंकी)।

जन्म-काल—सं० १९६० ।

रचना-काल—सं० १९८४ ।

विवरण—आपके लिखे हुए अनेक ग्रंथ हैं। उनमें से 'सत्यमूर्ति हरिश्चंद्र-तारा'-नामक एक है। आप लेखक के साथ-ही-साथ कवि तथा वक्ता भी हैं, और आजकल जैन-हितेच्छु श्रावक-मंडल, रतलाम की ओर से 'व्याख्यान-सार-संग्रह'-नामक पुस्तकमाला के संपादक हैं।

नाम—(४५१६) सुखलाल शास्त्री ।

जन्म-काल—सं० १९५९ ।

रचना-काल—सं० १९८४ ।

ग्रंथ—स्फुट छंद ।

विवरण—राधावल्लभीय ।

नाम—(४५१७) हरिकृष्ण 'प्रेमी' विजयवर्गीय ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९६२ ।

रचना-काल—सं० १९८४ ।

ग्रंथ—आँखों से (कविता) ।

विवरण—त्यागभूमि पत्र के सहायक संपादक रहे हैं।

समय—संवत् १९८५ के अन्य कविगण

नाम—(४५१८) अभिराम शर्मा कानपुर-निवासी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९६० ।

रचना-काल—सं० १९८५ ।

विवरण—'अचल' और 'मुक्त-संगीत' आपकी सामयिक कृतियाँ हैं। अंतिम पुस्तक में प्रणयेश के भी छंद हैं।

नाम—(४५१९) प्रो० आदित्य शर्मा एम्० ए०, अनूप के भाई, नवीनगर, सीतापुर-निवासी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९६० ।

रचना-काल—सं० १९८५ ।

विवरण—स्फुट काव्य खड़ी बोली में।

नाम—(४५२०) कमरुद्दीन ग्राम रीडमलपुर, रियासत बीकानेर।

जन्म-काल—लगभग सं० १९६० ।

ग्रंथ—फुटकर कविता।

विवरण—यह जाति के मुसलमान रियासत बीकानेर के चुंगी-विभाग में नायब गिरदावर हैं। ठाकुर चतुरसिंह, राठ्रवर, बीकानेर को संबोधित करके इन्होंने कुछ सोरठे लिखे हैं। [उक्त ठाकुर साहब द्वारा यह कवि ज्ञात हुए हैं]

उदाहरण—

चोर नहीं लै जाय, पावक में भी ना जलै ;
जो विद्या पढ़ जाय, चित पर रह नित 'चतरजी'।
काल महा बलवंत, वड़ा-बड़ा इन खाइया ;
हम तुम कौन गिनंत, चुग-चुग लीना चतरजी।

मात, पिता, सुत, नार, कोइ नहीं संगी हुवै ;
मतलब से संसार, चोडे दीसे चतरजी।

नाम—(४९२१) करुणाशंकर शुक्ल 'करुणेश' कानपुर-निवासी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९६०।

रचना-काल—सं० १९८९।

विवरण—स्फुट पद्यकार।

नाम—(४९२२) कालीप्रसाद भटनागर 'विरही'।

जन्म-काल—सं० १९६२। ग्वालियर-राज्यांतर्गत कुंभराज-ग्राम, पिता का नाम झम्मनलाल।

रचना-काल—सं० १९८९।

ग्रंथ—स्फुट रचना।

विवरण—आपको कुछ कविताओं पर पदक भी प्राप्त हुए हैं। कविता में चित्त लुभानेवाली नवीनता एवं रहस्यात्मिका सद्वृत्ति है।

उदाहरण—

तुम प्रकाश हो, अंधकार मैं, कैसे तुमको पाऊँ ?
इस असीम अंतर को हा ! मैं कैसे आज मिटाऊँ?
तुम आते हो, मैं सकुचाकर अपना रूप छिपाता ;
तुम जाते हो रूठ, तभी मैं सिर धुनकर पछताता।
करता हूँ प्रस्ताव उषा के द्वारा हे प्राणेश,
क्या मिलना स्वीकार करोगे धर संध्या का वेश ?

नाम—(४९२३) गदाधरप्रसाद वैद्य, लखनऊ।

रचना-काल—सं० १९८९।

ग्रंथ—(१) व्रज-आनंद-विनोद, (२) बारहमासा, (३) सत्यसागर, (४) सत्यार्थप्रकाश का पद्यमय अनुवाद। गो० तुलसी दास की शैली पर बहुत सरल तथा रोचक भाषा में किया है, जिसमें १०० सफ़े हैं।

नाम—(४५२४) गंधर्वसिंह वर्मा 'सलिल' लश्कर, ग्वालियर-निवासी ।

जन्म-काल—सं० १९६९ ।

रचना-काल—सं० १९८९ ।

ग्रंथ—स्फुट रचना ।

उदाहरण—

ऊषा, बिछा सुनहला अंचल नित्य माँगती हो क्यों भीख ?
निंदनीय यह कार्य तुम्हें करने की किसने दी है सीख ?
कहा उषा ने भारत मा हित मैंने लिया भिक्षुणी-वेष ;
क्योंकि फटे अंचल में उसके भिक्षावृत्ति न रहती शेष ।
इसीलिये निज स्वर्णांचल मैं फैला सकल विश्व-भर में ;
माँगा करती हूँ स्वराज्य-कण गा-गाकर मीठे स्वर में ।

नाम—(४५२५) जगन्नाथप्रसाद 'मिलिंद' खत्री मुरार-छावनी, ग्वालियर-निवासी ।

जन्म-काल—सं० १९६० ।

रचना-काल—सं० १९८९ ।

ग्रंथ—प्रताप-प्रतिज्ञा नाटक इत्यादि ।

विवरण—नव भाव-युक्त अच्छी रचना है ।

उदाहरण—

कालकूट विष कुटिल एक में, सरल एक में संजीवन ;
एक नयन में मरण तुम्हारे, एक नयन में है जीवन ।
सृजन निखिल छंदों का करते, खेल-खेल में युगलोचन ;
एक पलक में मुँदती रजनी, एक पलक में खुलता दिन ।
क्रीड़ा का क्रय सृजन विसर्जन, प्रचलित है प्रतिदिन प्रतिक्षण ;
कितना अस्थिर है लीलामय पलकों का उत्थान-पतन ।

नाम—(४९२६) दीनानाथ व्यास उज्जैन-निवासी, पिता का नाम पं० बालमुकुंद व्यास।

जन्म-काल—सं० १९६६।

रचना-काल—सं० १९८९।

ग्रंथ—'समर्पण' नाटिका पद्य-बंध तथा स्फुट लेख।

विवरण—उज्जैन-राजकीय पाठशाला में हिंदी-अध्यापक हैं।

उदाहरण—

चाहिए न कोमल चपल बालरूप तेरा,
वृंदावन रास के अनेक रासधारी हैं;
चाहिए न योगिन तुम्हारा सुविशाल रूप,
मोहन तुम्हारी धर्मशीलता न प्यारी है।
योग-याग फेरे में पड़े हैं उन्हें सिद्धि द्वारा
लोभ में लुभाते यही आदत तुम्हारी है;
मेरे हृदयेश तुम मुझसे करो न छल,
मंद मुसका दो यही याचना हमारी है।

नाम—(४९२७) देवीप्रसाद श्रीवास्तव।

जन्म-काल—सं० १९६०।

विवरण—आप गद्य एवं पद्य के लेखक हैं।

नाम—(४९२८) पृथ्वीपालसिंह बी० ए०, एल्-एल्० बी०, लखनऊ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९६०।

रचना-काल—सं० १९८९।

विवरण—स्फुट लेखकार।

नाम—(४९२९) प्रभाकर श्रीखंडे 'प्रेम'।

जन्म-काल—सं० १९६३।

रचना-काल—सं० १९८९।

ग्रंथ—स्फुट छंद पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित।

विवरण—महाराष्ट्र ब्राह्मण पं० बालकृष्ण राव के पुत्र, उरई ज़िला जालौन-निवासी, खड़ी बोली के युवक कवि तथा सुयोग्य चित्रकार। आजकल सतना में ड्राइंग-मास्टर और घर के रईस ज़मींदार हैं।

उदाहरण—

बंदे मातृभूमि मनभावन।
मुकुट हिमालय खचित अनूपम पन्ना-रत्न सुहावन;
विविध औषधों से आरोपित कुंतल कांति बढ़ावन।
हरिद्वार, काशी, अवंतिका, माँग मोद उपजावन;
लटकैं लटैं जाह्नवी, यमुना पावन हू की पावन।
बेंदी प्राग, गया ग्रीवा, स्तन बंग विहार दिखावन;
मैथिल, गौड़, उभय बाहू उर, द्रविड़ देश दरसावन।
कटि बुंदेल, जानु मालव, पंजाब सुधा-रस-स्रावन;
चरण दिव्य मदरास-बंबई कीर्ति कलित सरसावन।

नाम—(४९३०) प्रेम भटनागर, बुलंदशहर।

जन्म-काल—लगभग सं० १९७२।

रचना-काल—सं० १९८९।

विवरण—आप कहानियाँ अच्छी लिखते हैं। ऊषा के कहानी-अंक का संपादन भी किया है।

नाम—(४९३१) बदरीनाथ शर्मा 'मधुकर'।

जन्म-काल—सं० १९६५।

रचना-काल—सं० १९८९।

ग्रंथ—स्फुट छंद तथा समस्या-पूर्तियाँ।

विवरण—केतकी० पो० देव० ज़िला गया के निवासी हैं। समस्या-पूर्ति पर पदक तथा उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। इधर 'आज' में इनके हरिजन-संबंधी लेख निकले हैं। जेल-यात्रा कर चुके हैं।

नाम—(४५३२) बलदेवप्रसाद।

जन्म-काल—सं० १९६९।

रचना-काल—सं० १९८९।

ग्रंथ—स्फुट लेख और छंद।

विवरण—सकरकंद गली, काशी निवासी। इनके पिता-पितामह संस्कृत के प्रसिद्ध पंडित तथा वैद्य थे।

उदाहरण—

री चल उस जगती के अंचल, जहाँ सत्य संसार न हो;
जहाँ हृदय के रंग-मंच पर, चिंता नृत्य अपार न हो।
चल-चल उस जगती के अंचल, जहाँ प्रेम-व्यापार न हो;
जहाँ बनावट भीगी चितवन का, दिल पर आभार न हो।
दिन-मणि-स्यंदन के पहियों से, पीसे जाते तारे रोज;
किरण चूर्ण क्या तुम उनकी हो, पिसते जो कि विचारे रोज।
धूलि-कणों को साथ लिए हो, देती हो इस भाँति प्रबोध;
पद-दलितों से प्रेम हृदय-भर, मिलता झट संसार अबोध।

नाम—(४५३३) महादेवी वर्मा, प्रयाग-निवासिनी।

जन्म-काल—सं० १९६४।

रचना-काल—सं० १९८९।

ग्रंथ—(१) नीहार, (२) रश्मि। (दोनो इनके पद्यों के संग्रह हैं)।

विवरण—यह रहस्यवादात्मिका रचना करती हैं। अच्छी कवयित्री हैं।

नाम—(४५३४) माताप्रसाद त्रिपाठी 'महेश' लश्कर, ग्वालियर-निवासी।

जन्म-काल—सं० १९६९।

रचना-काल—सं० १९८९।

ग्रंथ—स्फुट रचना।

विवरण—आप लश्कर में अध्यापक थे। अब तबदीली हो गई है।

उदाहरण—

जल-थल अनल-अनिल कण-कण में नवजीवन सत्वर भर दे;
हृत्तंत्री की स्वर-लहरी से विश्व-मंच झंकृत कर दे।
तेरी मधुमय मादक तान सुनकर जागे हिंदुस्तान।
मधुर रागिनी गा वीणा पर कर दे पुनः प्रेम-संचार;
तान-तान पर मोहित होकर बलि-बलि जावे सब संसार।
तेरे मंजुल मंगल गान सुनकर जागे हिंदुस्तान।

नाम—(४९२५) लक्ष्मीशंकर मिश्र 'अरुण' बी० ए०, लखनऊ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९६६।

रचना-काल—सं० १९८९।

विवरण—गल्प-लेखक। इनकी स्त्री श्रीमती 'चकोरीजी' अच्छी कविता करती हैं।

नाम—(४९२६) रामेश्वरीदेवी मिश्र 'चकोरी', लखनऊ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९७०।

रचना-काल—लगभग सं० १९८९।

विवरण—आप लक्ष्मीशंकर मिश्र 'अरुण' की धर्मपत्नी हैं। उच्च कोटि की पत्र-पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ कई वर्षों से निकल रही हैं। अच्छी कविता करती हैं।

नाम—(४९२७) ललितादेवी पाठक बी० ए०, प्रयाग।

जन्म-काल—लगभग सं० १९६८।

रचना-काल—सं० १९८९।

विवरण—आप स्वर्गीय श्रीधर पाठक की सुपुत्री हैं। हिंदी की अच्छी लेखिका हैं।

नाम—(४९२८) लक्ष्मीनारायणसिंहजी 'सुधांशु'।

जन्म-काल—सं० १९६५ ।

ग्रंथ—(१) कुमार (संपादक कुमार-समिति, भागलपुर), (२) भ्रातृ-प्रेम (प्रकाशक, वासुदेव-मंडल, पूर्णिया), (३) गुलाब की कलियाँ (प्रकाशक, आनंद-पुस्तकमाला, पूर्णिया), (४) रस-रंग (प्रकाशक, सरस्वती-प्रेस, काशी) ।

विवरण—आपका जन्म रूपसपुर (पो० घमदाहा, ज़िला पूर्णिया, बिहार) ग्राम में हुआ था । आप बुंदेले क्षत्रिय हैं । आरंभ से ही आपको हिंदी से अनन्य प्रेम है । स्कूल-जीवन में ही कुछ विद्यार्थियों ने 'कुमार'-नामक मासिक पत्र छपाकर प्रकाशित किया, और आप उसके संपादक बने । उसके बाद 'भ्रातृ-प्रेम'-नामक एक उपन्यास लिखा गया, और छपा । नव रसों पर एक-एक गल्प लिखकर आपने 'रस-रंग' प्रकाशित कराया, अनंतर आल्हखंड का आंदोलन उठाया गया । आप सम्प्रति उसी की गवेषणा कर रहे हैं ।

नाम—(४५३९) श्यामापति पांडेय एम्० ए०, बिहार-प्रांत-निवासी ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९६४ ।

रचना-काल—सं० १९८९ ।

विवरण—गद्य-पद्यकार ।

नाम—(४५४०) श्रीरत्न शुक्ल ।

जन्म-काल—सं० १९६० ।

विवरण—ज़िला उन्नाव-निवासी हिंदी के उत्साही लेखक ।

नाम—(४५४१) सत्यव्रत शर्मा 'सुजन' मुस्तफ़ापुर, पटना ।

जन्म-काल—सं० १९६८ ।

ग्रंथ—लतिका (कविता-संग्रह) ।

विवरण—आप पं० रामावतार मिश्र के पुत्र और एक उत्साही नवयुवक कवि हैं।

नाम—(४५४२) सुधारानी विशारद, ग्वालियर।

जन्म-काल—लगभग सं० १९६७।

रचना-काल—सं० १९८९।

विवरण—आप हिंदी की अच्छी लेखिका हैं।

नाम—(४५४३) हनुमदयाल अवस्थी 'हनुमंत कवि'।

जन्म-काल—सं० १९६०।

ग्रंथ—बजरंग-बावनी।

विवरण—पिता का नाम श्यामलाल अवस्थी। पितृ-वियोग से इन कवि का पालन इनके मामा ने किया।

उदाहरण—

भालु - कपि - कटक बटोरिबे के हेतु धाय
चारिहु दिसान के गिरिन पर जातो कौन;
बृहद बतीस बालि कीस को कराके बध
सो कित सुकंठ को सुराज पै बिठातो कौन।
कूदि जातो उदधि अगाध कौन सिंह सम,
ललकि लँगूर ही तें लंक को जरातो कौन;
होतो हनुमंत बली बीर जो न पच्छ मैं, तौ
साँची सुधि रामजी को सीय की सुनातो कौन॥ १॥
बाल-रवि के-सो बर बदन कपीस को है,
स्वर्न - से सरीर पै लँगूर लमकत है;
पीत कंज से हैं मंजु नैन पीत रंग वारे,
भ्रू बिलोकि काल को करेजो धमकत है।
लोम-लता राजत कपीस कमनीय, जाकी
दुति दमकत जैसे बिज्जु चमकत है;

बज्र नखवारे की सु हाँक हुमकत, मानौ
सीस पै गनीमन के गाज गमकत है ॥ २ ॥

नाम—(४५४४) हरस्वरूपजी मिश्र 'हरेश', लश्कर ग्वालियर-निवासी। पिता का नाम मुन्नालालजी मिश्र एम्० ए०।

जन्म-काल—सं० १९६४।

रचना-काल—सं० १९८९।

ग्रंथ—स्फुट रचना।

विवरण—आप आगरा-कॉलेज से इस साल एम्० ए० तथा ला का इम्तिहान देंगे। कविता की ओर विशेष रुचि रखते हैं।

उदाहरण—

भावना की भूख में उड़ाता गुंग का-सा गुड़,
तैरूँ बना हंस कल्पना के मानसर में;
तरल तरंगों में बनाके नाव कागज की
तिनके की तरह चलाऊँ दिन-भर में।
खाता रहता हूँ मनमाने मनमोदक मैं,
हँसता हूँ देख-देख मंजुल मुकर में;
जानता नहीं हूँ कौन-सा है घर मेरा, किंतु
घूमता हूँ अपना समझ घर-घर में।

नाम—(४५४५) हरिकृष्ण 'प्रेमी', गुना ग्वालियर-राज्य-निवासी।

जन्म-काल—सं० १९६८।

रचना-काल—सं० १९८९।

ग्रंथ—स्फुट कविता।

विवरण—कविता अच्छी करते हैं। उद्धत भाव-युक्त देश-प्रेमी होने के कारण आप इस समय जेल में हैं।

उदाहरण—

आँखों में क्या-क्या है देखें आँखों से आँखोंवाले;
इन आँखों ने बना दिए हैं लाखों अंधे मतवाले।
इन पापिन आँखों ने तुमको यदि न कभी देखा होता;
तो मेरी फूटी क़िस्मत में कुछ सुख का लेखा होता।
विष भी है, पीयूष वही है, प्रेम अरे यह क्या माया?
अखिल विश्व की व्यथा तुझे क्या केवल यह प्रेमी भाया।

नाम—(४५४६) हरिमोहन झा बी० ए० (ऑनर्स), बाजीतपुर, मुज़फ्फ़रपुर।

जन्म-काल—सं० १६६५।

रचना-काल—लगभग सं० १६८५।

ग्रंथ—स्फुट लेख तथा कविताएँ।

विवरण—आप 'बालक' पत्र के सहकारी संपादक पं० जनार्दन झा 'जनसीदन' कवि के पुत्र हैं।

समय—संवत् १६८६ के अन्य कविगण

नाम—(४५४७) इंदुमती शर्मा, पटना।

जन्म-काल—सं० १६६६।

ग्रंथ—स्फुट लेख।

विवरण—यह स्वर्गीय श्रीयुत पं० रामावतारजी एम्० ए०, पटना की सुपुत्री हैं।

नाम—(४५४८) कालीचरण विशारद।

जन्म-काल—सं० १६६५।

ग्रंथ—स्फुट छंद।

विवरण—डालटनगंज-निवासी वैश्य, सज्जन युवक, लेखक और कवि हैं।

नाम—(४५४९) जगदीशनारायण तिवारी।

जन्म-काल—सं० १९६५।

ग्रंथ—(१) गो-विलाप, (२) पाश्चात्य सभ्यता का दिवाला, (३) भक्ति-रहस्य, (४) कृष्ण-उपदेश।

विवरण—आप हिम्मतपुर, ज़िला बलिया-निवासी पंडित अंबिकाप्रसाद सरयूपारीण ब्राह्मण के पुत्र और साप्ताहिक युगांतर के संपादक हैं।

नाम—(४५५०) ब्रह्मोदेवी, बुलंदशहर।

जन्म-काल—लगभग सं० १९७०।

रचना-काल—सं० १९८६।

विवरण—आप नित्यानंद शर्मा एम्० ए० की धर्मपत्नी हैं। एफ़्० ए० तक अँगरेज़ी-शिक्षा प्राप्त की है। आपके हिंदी के लेख पत्रिकाओं में निकलते रहते हैं।

नाम—(४५५१) भगवतीप्रसाद त्रिवेदी 'करुणेश'।

जन्म-काल—सं० १९६६।

रचना-काल—सं० १९८६।

ग्रंथ—स्फुट छंद।

विवरण—गढ़ी डाकख़ाना मोहनलालगंज, ज़िला लखनऊ में जन्म। आजकल दुगावाँ में रहते हैं। इनके पूर्वजों ने ज़िला बाराबंकी का त्रिवेदीगंज बसाया तथा वहीं वास ग्रहण किया।

उदाहरण—

पुनीत परिचय

दीन का दुकूल हूँ, कलिंदजा का कूल हूँ मैं,
　　रूप में मनुष्य, यही विधना की भूल हूँ;

देश-प्रेमियों के मनोध्यान का रसाल हूँ मैं,
उन्हीं के मनोरथ-गयंद की मैं झूल हूँ।
सुकवि जनों के कंठ-हार का तो फूल हूँ मैं,
कृष्ण-राधिका के पग-तल की मैं धूल हूँ।
हिंदी, हिंद-देश की समुन्नति का मूल हूँ मैं,
शारदा भवानी का मैं भक्त अनुकूल हूँ।

नाम—(४९९२) भूधरनाथ मिश्र।

जन्म-काल—सं० १९६४।

रचना-काल—सं० १९८६।

ग्रंथ—स्फुट छंद।

विवरण—रामपुर कलाँ, ज़िला सीतापुर के पं० प्रभुदयाल मिश्र के पुत्र तथा पं० अनूप शर्मा के शिष्य हैं। आप प्रायः वीर-रस की रचना करते हैं।

नाम—(४९९३) रामलखन पांडेय।

जन्म-काल—सं० १९६१।

ग्रंथ—(१) वसंत-सुधा, (२) विजय-वाटिका, (३) लखन-विनोद।

विवरण—मुहम्मदपुर, ज़िला गोंडा-निवासी।

नाम—(४९९४) रामेश्वरलाल राँटिया सरदारशहर, रियासत बीकानेर।

जन्म-काल—सं० १९६६।

ग्रंथ—स्फुट कविताएँ।

नाम—(४९९५) विद्यावतीदेवी हरपुर जान, राजेपट्टी (सारन)।

जन्म-काल—सं० १९६६।

विवरण—आप क्षत्रिय-कुलोत्पन्ना श्रीयुत कृष्णबहादुरसिंह की

पुत्री तथा गुरुकुल की स्नातिका हैं। स्त्री-शिक्षा और समाज-सुधार-संबंधी आपके हिंदी लेख पत्र-पत्रिकाओं में प्रायः निकला करते हैं।

नाम—(४५५६) शंभुदयाल दीक्षित 'द्विज शंभु' लखनऊ-निवासी।

रचना-काल—सं० १९८६।

ग्रंथ—अछूत-पचीसी।

नाम—(४५५७) श्यामसुंदर चतुर्वेदी, मैनपुरी।

जन्म-काल—सं० १९६१।

विवरण—यह पं० गेंदालालजी मिश्र के पुत्र हैं। कलकत्ते में आप 'उद्योग' पत्र का संपादन करते हैं। आपकी कविता ब्रजभाषा और खड़ी बोली दोनो में होती है।

समय—संवत् १९८७

नाम—(४५५८) अवधविहारीलाल शर्मा 'विमल' लखनऊ।

रचना-काल—सं० १९८७।

ग्रंथ—(१) नारी-संगीत-रत्न (४ भाग), (२) जुआ-दोष-दर्शन, (३) वेश्या-दोष-दर्शन आदि कई ग्रंथ।

विवरण—खड़ी बोली के लेखक।

नाम—(४५५९) कल्याणकुमार (जैन)।

जन्म-काल—सं० १९६७।

रचना-काल—सं० १९८७।

ग्रंथ—(१) कविता-कुंज, (२) शारदा-स्तवन, (३) हृदय की आव (जल), (४) शृंगार तथा वीर-रस की कविताएँ 'वीर वाणी' और 'आदर्श जैन' पत्रों में छपी हैं।

विवरण—रामपुर-राज्य-निवासी खंडेलवाल जैन हैं।

नाम—(४५६०) चंद्रकला।

जन्म-काल—सं० १९६१।

रचना-काल—सं० १९८७।

ग्रंथ—स्फुट छंद।

विवरण—खैरा, ज़िला सीतापुर के पं० अयोध्याप्रसाद त्रिपाठी की पुत्री तथा पं० भूधर मिश्र की स्त्री हैं। इनकी रचनाएँ 'वर्तमान' प्रभृति पत्रों में कभी-कभी प्रकाशित होती हैं।

नाम—(४५६१) धन्यकुमार (जैन)।

जन्म-काल—सं० १९६७।

रचना-काल—सं० १९८७।

ग्रंथ—(१) भेड़िया-धसान (परशुराम), (२) गल्प-गुच्छ (रवींद्रनाथ), (३) कुमुदिनी (रवींद्र), (४) रूस की चिट्ठी (रवींद्र), (५) लंब कर्ण (रवींद्र), (६) षोडशी (रवींद्र), (७) वसंतकुमारी-नाटिका, (८) श्रावक-धर्म-शिक्षा।

विवरण—'पद्मावती पुरवलि', जैन-गज़ट और विशाल भारत के संपादकीय विभाग में कार्य करनेवाले तथा बँगला से हिंदी-अनुवादक एवं मौलिक कहानी-लेखक हैं।

नाम—(४५६२) नंदकिशोर झा स्थान श्रीनगर, डाकख़ाना बेतिया, चंपारन।

रचना-काल—सं० १९८७।

ग्रंथ—पिय-मिलन।

विवरण—खड़ी बोली का पद्य-ग्रंथ।

नाम—(४५६३) विंध्येश्वरीप्रसादसिंह।

जन्म-काल—सं० १९६२।

ग्रंथ—राम के न्याय।

विवरण—काशी-निवासी। आप अभी विद्यार्थी-दशा में हैं

समय—संवत् १९८८

नाम—(४५६४) इंदिरादेवी, इंदौर।

जन्म-काल—लगभग सं० १९७२।

रचना-काल—सं० १९८८।

विवरण—आपने साहित्य-सम्मेलन से 'साहित्यरत्न' की परीक्षा पास की है। कविता अच्छी करती हैं। इंदौर-राज्य के होम मेंबर की पुत्री हैं।

नाम—(४९६५) ओमप्रकाश भार्गव 'उमेश' लश्कर, ग्वालियर-निवासी।

जन्म-काल—सं० १९७१।

रचना-काल—सं० १९८८।

ग्रंथ—स्फुट रचना।

विवरण—आप इस समय विक्टोरिया-कॉलेज, लश्कर में बी० एस्-सी० के विद्यार्थी हैं। कविता-प्रेमी हैं।

उदाहरण—

अलसाई मादक आँखों से देखा प्रियतम का मुसकाना;
नहीं भूल सकता जीवन में वह तेरा आना-जाना।
कितनी बार विश्व-प्रांगण में देखा तेरा इठलाना;
मुझे याद है उस अतीत का सरिता-तट आकुल गाना।
लुप्त हुई जीवन की सारी प्यारी वे मादक घड़ियाँ;
केवल रहीं खटकती उर में प्रिय अतीत की फुलझड़ियाँ।

नाम—(४९६६) प्यारेलाल श्रीवास्तव (डॉक्टर), प्रयाग।

जन्म-काल—सं० १९५२।

रचना-काल—सं० १९८८।

ग्रंथ—अंकगणित दो भाग।

विवरण—रीडर गणित इलाहाबाद-विश्वविद्यालय में हैं।

नाम—(४९६७) व्रजकिशोर शर्मा 'व्रजश' ग्वालियर-राज्यांतर्गत भिंड-निवासी।

जन्म-काल—सं० १९६७।

रचना-काल—सं० १९८८।

ग्रंथ—स्फुट रचना।

विवरण—इस समय आप विक्टोरिया-कॉलेज से बी० ए० की परीक्षा देंगे। कविता करने की भी रुचि है।

उदाहरण—

पानी पत से

निराला है तेरा अंचल, अरे भारत के रंगस्थल!
तुम्हारे अंतर में सुंदर देश के कितने वीर अमर!
गुँजाते हैं निज शंख-स्वर।
रुधिर-पूरित है अंतस्तल, अरे भारत के रंगस्थल!
आर्य-जग का उत्थान-पतन, प्रकृति-पट पर का परिवर्तन,
गा रहा है तेरा कण-कण।
छा रहा है प्रताप उज्ज्वल, अरे भारत के रंगस्थल!
बनाकर कैसा अंततम दीन भारत को ऐ निर्मम!
पराभव देते रहे विषम।
सबल को कर नितांत निर्बल, अरे भारत के रंगस्थल!

नाम—(४९६८) गिरीशचंद्र पंत 'अनंग', लखनऊ-निवासी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९७०।

रचना काल—सं० १९८८।

विवरण—प्रसिद्ध कवि सुमित्रानंदन पंत के भतीजे। खड़ी बोली के होनहार कवि।

नाम—(४९६९) गौरीशंकर ओझा 'मित्र', छावनी मुरार-ग्वालियर।

जन्म-काल—सं० १९७० ।

रचना-काल—सं० १९८८ ।

ग्रंथ—स्फुट रचना ।

उदाहरण—

किसके हृदय-रक्त से रंजित संध्या की किरणें छबिमान ;
चमक-चमककर चमकाती हैं जीवन के वे सकरुण गान ।
जिनमें हैं उदास जगती के छिपे हुए फीके शृंगार ;
जिनके एक-एक स्वर से सिसका करतीं आहें सुकुमार ।

नाम—(४५७०) दिनेशनंदिनी चोरड्या, नागपुर ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९७३ ।

रचना-काल—सं० १९८८ ।

विवरण—आपको हिंदी गद्य-काव्य लिखने का अच्छा अभ्यास है । सामयिक पत्र-पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ प्रकाशित होती रहती हैं । आप प्रोफ़ेसर श्यामसुंदरलाल चोरड्या की पुत्री हैं ।

नाम—(४५७१) नाथूलाल त्रिवेदी ।

जन्म-काल—सं० १९६५ ।

रचना-काल—सं० १९८८ ।

ग्रंथ—प्रेम-पचीसी (अमुद्रित) ।

विवरण—जीरापुर, इंदौर-निवासी ।

नाम—(४५७२) पुरुषोत्तमलाल भार्गव एम्० ए०, शास्त्री, लखनऊ-निवासी ।

जन्म-काल—लगभग सं० १९६५ ।

रचना-काल—सं० १९८८ ।

विवरण—बाबू मुकुटबिहारी भार्गव के पुत्र । गद्य-पद्यकार ।

नाम—(४५७३) प्राणेश शर्मा, कानपुर-निवासी।

जन्म-काल—लगभग सं० १९६३।

रचना-काल—सं० १९८८।

विवरण—आपने 'झंवर'-नामक पुस्तक लिखी। 'मुक्त-संगीत' में भी अभिराम शर्मा की रचनाओं के साथ आपकी कविताएँ संकलित हैं।

नाम—(४५७४) भगवान मिश्र 'निर्वाण', चंपानगर, भागलपुर।

जन्म-काल—सं० १९६३।

विवरण—कविता अच्छी लिखी है।

उदाहरण—

सुठि सितार के तारों पर उँगली की जब पड़ती है मार;
श्रुति-गोचर होती है तो भी सुधा-सनी सुंदर झंकार।
वह सुनकर उर बीच प्रवाहित हो उठती है नवरस-धार;
हो जाता है ज्ञात कि यह है शांति-पूर्ण सारा संसार।
सरस भाव-संयुक्त मनुज की यही दशा है नित हे यार;
कनिक न विचलित होते पाकर दुःखों के आघात अपार।
प्रत्युत बज उठते हैं झटपट हृदय-यंत्र के सारे तार;
साध शब्द से हो जाता है आप्यायित सारा संसार।

नाम—(४५७५) राजेश्वरीदेवी मिश्र 'नलिनी', उन्नाव।

जन्म-काल—लगभग सं० १९७५।

रचना-काल—सं० १९८८।

विवरण—आप छायावाद के ढंग की अच्छी कविता करती हैं।

नाम—(४५७६) रामसिंह विशारद बी० ए०, बीकानेर।

विवरण—आप तोमर राजपूत गद्य-पद्य-लेखक हैं। इस समय

आप हिंदू-विश्वविद्यालय, बनारस में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

नाम—(४९७७) वागीश्वरीसिंह घंगरहटा, शुभाड़्योड़ी (दरभंगा)।

जन्म-काल—सं० १९६३।

उदाहरण—

सरस सूचना

अरुणोदय के प्रथम अरुणिमा की नभ में सुंदर मुसकान;
दिवस-आगमन के पहले ही वन विहंग की कोमल तान।
विटप फलित होने के पहले नव किसलय-छबि की छटकान;
कर देता मन मुग्ध काव्य के प्रथम कल्पना आकर ध्यान।
होता प्रेम-क्रिया के पहले नव-यौवन मद का संचार;
और मिलन के प्रथम गूँजते हृत्तंत्री के कोमल तार।

नाम—(४९७८) विद्याधर शास्त्री, बीकानेर।

ग्रंथ—यथार्थ दर्शन।

विवरण—आप चूरू-निवासी गौड़ ब्राह्मण हैं। हिंदी-गद्य के आप अच्छे लेखक हैं। आप इस समय नोबल हाईस्कूल, बीकानेर में संस्कृत के अध्यापक हैं।

नाम—(४९७९) सीताराम वर्मा 'साधक', गुना, ग्वालियर-निवासी।

जन्म-काल—सं० १९७१।

रचना-काल—सं० १९८८।

ग्रंथ—स्फुट रचना।

उदाहरण—

जो तारे झिलमिल-झिलमिल कर देखा करते थे सपने;
जिन्हें देखकर मेरी भी सखि, पलकें लगती थीं कँपने।
वह भी कहाँ रहे अपने!

वह मधु-ऋतु की मादक संध्या, वह चाँदी-सी उजली रात ;
वह किरणों का जाल मनोहर, वह सोने का मधुर प्रभात ।
जानें कहाँ गए अज्ञात ।

नाम—(४९८०) हरिकृष्ण प्रेमी, अजमेर ।

रचना-काल—सं० १९८८ ।

ग्रंथ—जादूगरनी ।

विवरण—खड़ी बोली के कवि ।

समय—संवत् १९८९

नाम—(४९८१) गिरीश ओझा 'सुंदर' ।

जन्म-काल—सं० १९६९ ।

रचना-काल—सं० १९८९ ।

ग्रंथ—स्फुट छंद तथा लेख ।

विवरण—मिश्रौलिया बाँसडीह के निकट ज़िला बलिया के देवीशरण ओझा के पुत्र । गद्य-पद्य-लेखक हैं ।

नाम—(४९८२) भगवतीचरण वर्मा, प्रयाग ।

रचना-काल—सं० १९८९ ।

ग्रंथ—मधुकण (पद्य) ।

विवरण—खड़ी बोली में रचना है ।

नाम—(४९८३) श्यामबिहारीलाल 'विरागी' ।

जन्म-काल—सं० १९७१ ।

रचना-काल—सं० १९८९ ।

ग्रंथ—अभी अपूर्ण हैं ।

विवरण—बाँसडीह, बलिया के मु० कृष्णकुमारलाल के कनिष्ठ पुत्र । प्रयाग के किसी कॉलेज में अध्ययन कर रहे हैं । हिंदी के होन-हार गद्य-पद्य-लेखक हैं ।

समय—संवत् १९९०।

नाम—(४९८४) किशोरीरमण 'मतवाला'।

जन्म-काल—सं० १९७२।

रचना-काल—सं० १९९०।

ग्रंथ—स्फुट छंद तथा गद्य-लेख।

विवरण—राधारमण टंडन बिसवाँ, ज़िला सीतापुर के पुत्र हैं। 'भारत', 'सुकवि' आदि में रचना छपा करती है।

नाम—(४९८५) जगमोहननाथ अवस्थी 'मोहन'।

जन्म-काल—सं० १९६२।

रचना-काल—सं० १९९०।

विवरण—आप असनी के निकट लालीपुर में उत्पन्न हुए। आपके पिता का नाम पं० शिवगोपाल है। हिंदी-उर्दू-मिडिल पास करके अँगरेज़ी में इंट्रेंस-परीक्षा पास की। इस समय डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड, बरेली में काम करते हैं। इनके लेख पत्र-पत्रिकाओं में निकलते रहते हैं। हिंदी के अच्छे लेखक तथा कवि हैं।

उदाहरण—

वीणा म्लान, उँगलियाँ कंपित,
कैसे भला बजाऊँ ?
गहन गर्त में गिरा हुआ हूँ,
तुम तक कैसे आऊँ ?
पथ तमलीन मलीन ज्योति तव
जलकर आगे आऊँ ;
भेंट कुसुम निर्गंध न क्योंकर
पावन पगन चढ़ाऊँ।
अमित उदार न लौटा देना
'मोहन' का यह लघु उपहार ;

'मिश्रबंधु' हो मिश्रित कर लो,
कान्यकुब्ज नवयुवकागार ।

सुमन-आकांक्षा

(१)

नहीं चाहता मैं वन को
अपनी सुवास से भर दूँ;
किंतु मिटाकर अपने को,
शृंगार किसी का कर दूँ।

(२)

नहीं चाहता कामिनियों के
कंबु - कंठ पर झूलूँ;
नहीं चाहता मैं डाली पर
फूल - फूलकर फूलूँ ।

(३)

नहीं चाहता प्रभु - पूजा में
लोग मुझे अपनावें;
प्रणय-प्रणयिनी भाव - भरा
मुझको उपहार बनावें ।

(४)

मैं 'सुहाग की रात' साल में
नहीं चाहता जाऊँ;
अब वैरी या काम-बाण की
नोक न मैं बन जाऊँ ।

(५)

निभृत-कुंज में खिलने दो,
बस हिला करें पंखुड़ियाँ;

आडंबर बिन मिट्टी में
मिल जाऊँ आवें घड़ियाँ।

(६)

मुरझाकर भी देश-धूलि में
पँखुड़ी-पँखुड़ी सनी रहे;
बलि-वेदी पर चढ़ूँ, और
मेरी बलि-वेदी बनी रहे।
रसिक-शिरोमणि मिश्रबंधु
दो भाव-कंज को सौरभ-दान;
भेंट तुच्छ ही सही, किंतु—
अब कर लें यह स्वीकृत श्रीमान्।

नाम—(४५८६) वीरेंद्रबहादुरसिंह 'लाल' संस्कृत-हिंदी-कवि, सेमरी, जिला रायबरेली।

जन्म-काल—सं० १९६१।

रचना-काल—सं० १९९०।

ग्रंथ—संस्कृत में (१) वीरेंद्र-वचनावली (प्रकाशित), (२) ब्रह्मर्षि-विलास, (३) स्तुति-मालिका।

विवरण—आप श्रीमान् रघुराजसिंह तअल्लुक़दार सेमरी, ज़िला रायबरेली के द्वितीय पुत्र हैं। आपने संस्कृत, अँगरेज़ी तथा हिंदी पढ़ी है। अँगरेज़ी में एफ़्० ए० की परीक्षा देकर पढ़ना बंद कर दिया। कविता से विशेष प्रेम है, संस्कृत और हिंदी की कविता अच्छी करते हैं। बड़े ही होनहार युवक हैं।

उदाहरण—

देवि त्वदीयपदपङ्कजकान्तिपुञ्ज-
सन्दीप्तिमानयमुदेति सहस्ररश्मिः।

विश्वाश्रये विविधवैभवरूपिणित्व-
मम्ब प्रसीद परमेश्वरि पाहि लोकान् ॥ १ ॥
जगदंब तव पद-पद्म का ही कांति-पुंज दिनेश है;
उस कांति का सुप्रकाश भानोदय प्रकाश विशेष है।
हे विश्वके! हे आश्रये! ऐश्वर्य का तुम रूप हो;
मा! लोक की रक्षा करो, तुमहीं प्रसन्न स्वरूप हो।

नैषोस्ति सूर्यो द्युमणिश्च नैव
नैवाग्निराशिर्न च कान्तिपुञ्जः।
उदेति संसारशिवाय नित्यं
त्वदीय पादाम्बुजरेणुपिण्डः ॥ २ ॥
कर दे प्रवृत जो कर्म में, यह भानु तो वह है नहीं;
यह द्युमणि अथवा अग्नि की भी राशि दिखलाता नहीं।
यह कांति-पुंज नहीं, वरन् संसार-तारण जानते;
तव कंज-पग-युग-रेणु का बस पिंड इसको मानते।

ब्रह्माण्डजन्मस्थितिनाशहेतुं
शक्तिं सदा यां श्रयते महेशः।
सा त्वं विशुद्धा प्रणतप्रसन्ना
सर्वेश्वरी पातु सुखप्रदा नः ॥ ३ ॥
ब्रह्मांड के उत्पत्ति, पालन और नित संहार में—
ईश्वर चलाता कार्य नित जिस शक्ति के आधार में।
तुम हो वही निज भक्त की मानस-विहारिणि अंबिके!
हे! शक्ति हो सुखदायिनी रक्षा करो जगदंबिके!

नाम—(४९८७) एन्० एल्० दे 'अनिल'।
जन्म-काल—सं० १९९२।
रचना-काल—सं० १९६०।
विवरण—आप प्रयाग-निवासी स्व० व्रजेंद्रलाल के द्वितीय पुत्र

हैं। सन् १९२० ई० में लखनऊ से डॉक्टरी पास की। आजकल रायबरेली में प्राइवेट प्रेक्टिस करते हैं। बँगला, हिंदी तथा संगीत के विशेष प्रेमी हैं। चित्रांकन से भी प्रेम है। बड़े ही उत्साही तथा कवितानुरागी युवक हैं।

उदाहरण—

भारतवर्ष

(१)

नील जलधि से उठकर आई
जिस दिन जननी भारतवर्ष,
जगा विश्व में सुख का कलरव
भक्ति, प्रीति औ' महान हर्ष !
प्रभा तुम्हारी प्रभात लाई,
शेष हुई दुख की रजनी;
हुई बंदना—"जय जग-धात्री !
जगत्तारिणी ! जय जननी !"
धन्य हुई है धरणी तेरे
चरण-कमल का पा स्पर्श !
गाई—"जय-जय जगन्मोहिनी !
जग की जननी भारतवर्ष !"

(२)

सद्यस्नान से वसन सिक्त है,
चिकुर सिंधु के शीकर-लिप्त;
शीर्ष गरिमा विमल हास्य से
अमल कमल आनन है दीप्त !
गगन घेरकर करते नर्तन
तारावली तपन औ' चंद्र;

मंत्र - मुग्ध चरणों पर फेनिल
जलधि गरजता जलप्रद मंद्र !
धन्य हुई है धरणी तेरे
चरण-कमल का पा स्पर्श !
गाई—"जय-जय जगन्मोहिनी !
जग की जननी भारतवर्ष !"

(३)

शुभ्र तुषार - किरीट शीष पर,
जलधि - ऊर्मि घेरे जंघा ;
वक्ष - विलंबित मुक्तामाला
पंच सिंधु, जमुना, गंगा !
तप्त दीप्त भीषण मरु - भू में
कभी प्रकट होती, जननी !
श्याम सस्य के मधुर हास्य में
विहसित कभी निखिल अवनी !
धन्य हुई है धरणी तेरे
चरण-कमल का पा स्पर्श !
गाई—"जय-जय जगन्मोहिनी !
जग की जननी भारतवर्ष !"

(४)

पवन गगन में प्रबल स्वनन में
गरज - गरजकर अपरिश्रांत ,
अवनत होकर पिक कलरव से
चूमें तेरा चरण - प्रांत !
नभ पर वारिद कुलिश - पात से
करके प्रलय - सलिल की वृष्टि,

पद में तेरे कुंज - कुंज में
　　करता कुसुम गंध की सृष्टि !
धन्य हुई है धरणी तेरे
　　चरण - कमल का पा स्पर्श !
गाई—"जय जय जगन्मोहिनी !
　　जग की जननी भारतवर्ष !"

(५)

शांति वक्ष में जननी तेरे,
　　मधुर कंठ में है अभयोक्ति !
करती वितरण अन्न करों से,
　　चरणों से देती है मुक्ति !
जननी, तुझको संतति पर है
　　कितना वेदन, कितना हर्ष !
जगत - पालिनी ! जगत्तारिणी !
　　जग की जननी भारतवर्ष !
धन्य हुई है धरणी तेरे
　　चरण-कमल का पा स्पर्श !
गाई—"जय जय जगन्मोहिनी !
　　जग की जननी भारतवर्ष !"

नाम—(४५८८) दयाशंकर वाजपेयी 'गिरीश'।

जन्म-काल—सं० १९४६ ।

रचना-काल—सं० १९९० ।

ग्रंथ—स्फुट छंद ।

विवरण—आप पं० केदारनाथ के पुत्र, जन्म-स्थान केलोली, ज़िला रायबरेली । आप हिंदी, बँगला जानते हैं, अँगरेज़ी की शिक्षा

इंट्रेंस तक पाई है। बहुत दिन तक राना साहब खजूरगाँव के यहाँ सरबराहकार रहे, अब घर पर ज़मींदारी का प्रबंध करते हैं।

उदाहरण—

ऊषा मातु गोद के निंदौरे परभात वाल,
उठिए 'गिरीश' मन मोद उपजाइए;
पक्षी-गण गाय औ' बजाय वेनु पौन तुम्हें
ताल दै जगावत हे लाल, जग जाइए।
कमल-खिलौना औ' दिठौना चंचरीक चारु,
झाँगुली नवल टोप रश्मियाँ सजाइए;
प्रकृति सुरम्यता मुकुर-प्रतिबिंब पेखि
किलकि-किलकिकर तालियाँ बजाइए।

नाम—(४५८९) पं० चंद्रशेखर मिश्र 'अशेष'।

विवरण—आपका जन्म कार्त्तिक कृष्ण १४, संवत् १९५५ में, ग्राम रायपुर, तहसील पुरवा, ज़िला उन्नाव में हुआ। आपके पिता का नाम पं० गदाधरप्रसादजी मिश्र है। आप कान्यकुब्ज ब्राह्मण हैं। प्रथम आपको उर्दू-भाषा की शिक्षा दी गई; और भगवंत-नगर-स्कूल, ज़िला उन्नाव से उर्दू-मिडिल की परीक्षा सन् १९१२ ई० में पास की, परंतु अँगरेज़ी-शिक्षा हिंदी और संस्कृत लेकर स्पेशल क्लास से प्रारंभ की, और सन् १९१८ ई० में स्कूल-लीविंग-परीक्षा गवर्नमेंट-हाईस्कूल, रायबरेली से पास की, और सेकिंड इयर एफ़्० ए० की परीक्षा सन् १९२० ई० में कैनिंग-कॉलेज, लखनऊ से दी। संवत् १९७३ में हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की प्रथमा परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होकर पुरस्कार प्राप्त किया। सन् १९२२ से डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड-ऑफ़िस, रायबरेली में नौकर हैं, और इस समय एकाउंटेंट के पद पर नियुक्त हैं।

कविता द्वारा परमात्मा का भजन करना ही आपका लक्ष्य है।

आज तक छोटे-बड़े सभी सम्मेलनों से प्राप्त हुई समस्याओं की पूर्ति अपने ही विषय में की है। कविता का प्रारंभ सन् १९१८ ई० से है।

उदाहरण—

करते वह कामना हैं हिय में, जिसमें विष-बीज फरा करते;
धरते पग हा उस मारग में, जिसमें नए काँटे चुभा करते।
जिस ग्रंथि को खोलना ध्येय रहा, उसे वारि भिगोय कसा करते;
करतूति 'अशेष' की न्यारी प्रभो, नित धोखे तुम्हें भी दिया करते।
भव-सिंधु-तरंग बहाती मुझे, निराधार अधार सुना करते;
बिन तेरी कृपा नहिं पार मिलै, बहु यत्न 'अशेष' किया करते।
अघी एक हूँ कोटिन में ये सही, कलि में इससे भी गिरा करते;
मरज़ी में तुम्हारे जो आए प्रभो, इस दीन को पार लगा करते।

नाम—(४५६०) पं० रामावतारजी शुक्ल 'चातुर'।

विवरण—इनका जन्म विक्रमीय संवत् १९५० में, ज़िला रायबरेली के अंतर्गत मुहल्ला सरयूपूर में हुआ। इनके पिता पं० वंशगोपालजी शुक्ल एक प्रसिद्ध वकील तथा बड़े ज़मींदार थे। यह अपने तीन भ्राताओं में सबसे कनिष्ठ हैं। ज्येष्ठतम भ्राता पं० गयाप्रसादजी शुक्ल ज़िला रायबरेली में प्रसिद्ध 'ऐडवोकेट' हैं। तथा दूसरे भ्राता पं० द्वारिकाप्रसादजी शुक्ल 'शंकर' गोंडा में सबजज हैं; और प्रसिद्ध कवि हैं। बाल्यकाल ही से 'चातुर'जी को हिंदी से विशेष अनुराग था। इन्होंने पद्य-रचना बीस साल की ही आयु से आरंभ की थी। साहित्य-सेवा के भाव से प्रेरित होकर आपने एक साहित्यिक मंडल की स्थापना रायबरेली में की है, जो 'चातुर-मंडल' के नाम से प्रसिद्ध है। आपकी कवित्व-शक्ति के परिचयार्थ कुछ छंद नीचे दिए गए हैं।

उदाहरण—

जाहि सुमिरत सिद्धि सकल सुकाज होत,
पाप हू परात देखि एकई रदन को;

विघन विनाशन में 'चातुर' चतुर जोई,
बीर विकराल काल-जाल मरदन को।
देश औ' विदेश हू में लेश न कलेश जन
खोवत जो तिहुँ ताप औगुन-सदन को;
बार-बार चरन-कमल ध्याय बंदत हौं,
वारन-बदन सुत मदन-कदन को।
कंज लागे खिलन मलिंद मँडरान लागे,
विहँगावली हू इत उत बगरै लगी;
भरि मकरंद सुधा सौरभ बिखारि रह्यो,
पुहुप लतान टोली झूमि झहरै लगी।
कालिसा दुराय स्वर्ण अंबर गगन धारि,
'चातुर' समीर सीरी-सीरी सहरै लगी;
प्रकृति-नटी मनो उतारि वस्त्र श्याम धारे,
वसन सुरंग अंग छबि छहरै लगी।

नाम—(४५९१) भगवानबक्स ठाकुर 'भगवान' चिलौली, रायबरेली।

जन्म-काल—सं० १९२१।

विवरण—स्फुट कविता।

उदाहरण—

मेरो धाम ग्राम लघु नाम है चिलौली, ताहि
शाख जो तिलोई की है प्रांत है बरेली राय;
तामें अति लघु ज़मींदार भगवान हू है,
पितु बागेश्वर शील-सिंधु सहजै स्वभाय।
माधौसिंह नाम ख्याति जानिए पितामह का,
जाति कान्ह वंश, गोत्र भरद्वाज मुनिराय;

जन्म-समै संवत उनीस सै यकीस, मम
धृष्टता बिलोकि चमा कीजै लीजै अपनाय।
मुख सुखकंद सोहै मंद मुसकान-युत
नील नीरजात गात सुषमा सनी रहै;
वारिज-विलोचन विशाल त्यों तिलक भाल
भूषनि शोभा तैसी अंगन घनी रहै।
पीतपट-युत उभै सैन्य मध्य स्यंदनस्थ
वेत-पाणि एक ज्ञान मुद्रा त्यौं ठनी रहै,
देत ज्ञान पारथै यथारथै जो भगवान,
सोई श्याम मूरति सुध्यान में बनी रहै।

कवि-नामावली

श्रेष्ठ साहित्य

दुलारे-दोहावली

(द्वितीयावृत्ति)

(लेखक—सुधा-संपादक श्रीदुलारेलाल भार्गव)

हिंदी-संसार में महाकवि बिहारीलाल की कितनी ख्याति है, यह किसी हिंदी-भाषा के जानकार से छिपा नहीं। कितने ही विद्वान् समालोचकों का मत है कि वह हिंदी के सर्वश्रेष्ठ कलाकार हैं। उनके बाद आज तक किसी ने भी वैसा चमत्कार नहीं पैदा किया था, परंतु यह कलंक अब दूर होने को है। अभी कुछ ही विद्वान् ऐसी सम्मति रखते हैं कि सुधा-संपादक कविवर श्रीदुलारे-लालजी भार्गव के दोहे महाकवि बिहारीलाल के दोहों की टक्कर के होते हैं, और बाज़-बाज़ ख़ूबसूरती में बढ़ भी गए हैं; परंतु यह निस्संदेह कहा जा सकता है कि अचिर भविष्य में, जब कविवर श्रीदुलारेलालजी भार्गव के भी कई सौ ऐसे ही दोहे प्रकाशित हो जाएँगे, लोगों को उनकी श्रेष्ठता का लोहा मानना होगा। कहा जाता है, व्रजभाषा में अब पहले की-सी कविता नहीं लिखी जाती, परंतु 'दुलारे-दोहावली' ने इस कथन को बिलकुल भ्रम साबित कर दिया है। हिंदी के वर्तमान कवियों और समालोचकों में जो अग्रगण्य माने जाते हैं, उन्होंने मुक्त कंठ से स्वीकार किया है कि कविवर श्रीदुलारेलाल वर्तमान समय में व्रजभाषा के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं, और उनकी दोहावली व्रजभाषा-साहित्य की वर्तमान सर्वो-त्तम कृति। यदि आपको व्रजभाषा की कोमलकांत पदावली, शृंगार

और करुणा-रस के कोमलतम मनोभावों की मंजुल, सजीव कल्पना-मूर्तियाँ, वीर-रस की ओजस्विनी सूक्तियाँ, देश-प्रेम का छलकता हुआ प्याला, शांत-रस की सुधा-धारा, रसानुकूल अलंकृत भाषा का मुहावरेदार प्रयोग और संक्षेप में कहने का अद्भुत कौशल आदि एक ही जगह देखना हो, तो इस दुलारे-दोहावली को अभी मँगा लीजिए। सादी प्रति ≈), स्टिफ़ प्रति ।), जिल्ददार प्रति ॥)

बिहारी-रत्नाकर

महाकवि बिहारी की जगत्प्रसिद्ध सतसई पर अद्वितीय हिंदी-भाष्य। भाष्यकार, व्रजभाषा-साहित्य के पारदर्शी मर्मज्ञ विद्वान् स्वर्गीय बाबू जगन्नाथदास 'रत्नाकर' बी० ए०। संपादक, श्रीदुलारेलाल भार्गव। सुधा-आकार। छपाई-सफ़ाई आदर्श। जिल्द और सजावट भी अपूर्व। हिंदी में इसके जोड़ का कोई सटीक महाकाव्य नहीं। इस बृहद् ग्रंथ ने हिंदी-संसार के व्रजभाषा-साहित्य में युगांतर उपस्थित कर दिया। यू० पी० की विशेष योग्यता और आगरे, बनारस आदि विश्वविद्यालय में कोर्स है। बिहारी, जयशाह आदि के असली चित्र। मूल्य ४)

मतिराम-ग्रंथावली

(द्वितीयावृत्ति)

महाकवि मतिराम हिंदी के नवरत्नों में से हैं। उनके ग्रंथों का अच्छा संस्करण कहीं नहीं मिलता। हमने पं० कृष्णविहारीजी मिश्र से संपादन कराकर यह ग्रंथावली निकाली है। हिंदी-संसार में यह अद्वितीय चीज़ है। मतिराम-सतसई भी, जो बहुत धन व्यय करने पर हमें मिली है, इसमें सम्मिलित कर दी गई है। टिप्पणियाँ, शब्दार्थ, नोट, आलोचनात्मक विस्तृत भूमिका भी है, और बी० ए०, एम्० ए० और साहित्य-सम्मेलन की परीक्षा में पाठ्य पुस्तक। मूल्य २॥), सजिल्द ३)

विश्व-साहित्य

लेखक, सरस्वती-संपादक श्रीयुत पदुमलाल-पुन्नालाल बख़्शी बी० ए०। यदि आप एक ही पुस्तक पढ़कर संसार की सभी उन्नत भाषाओं के साहित्य का रसास्वादन करना चाहते हैं, तो इस पुस्तक का पाठ अवश्य कीजिए। इसमें साहित्य का प्रकृत रूप, उसका वास्तविक तत्त्व, उसका मूल-सिद्धांत, उसकी सच्ची परिभाषा और उसके प्रत्येक अंग की सुबोध व्याख्या बड़े विस्तार के साथ की गई है। मूल्य १॥), सजिल्द २)

हिंदी-नवरत्न

(परिवर्द्धित, संशोधित तथा सुसज्जित चतुर्थ संस्करण)

लेखक, हिंदी-संसार के प्रख्यातनामा समालोचक 'मिश्रबंधु'। इस पुस्तक की प्रशंसा बड़े-बड़े विद्वानों ने की है। हिंदी-भाषा के सर्वोत्तम कविरत्नों के आलोचना-पूर्ण जीवन-चरित्र इसमें हैं। साहित्य-प्रेमी और साधारण जन सबको समान भाव से यह पुस्तक आनंद देती है। इस बार यह पुस्तक पहले से लगभग दुगुनी बड़ी और दसगुनी उपयोगी हो गई है। इसे सामयिक और सर्वांग-पूर्ण बनाने में कोई भी चेष्टा बाक़ी नहीं रक्खी गई। अब तक की साहित्यिक खोजों के अनुसार संशोधन और संवर्द्धन होने से पुस्तक अप-टु-डेट हो गई है। ११ रंगीन और सादे चित्रों से समलंकृत, सुंदर सुनहरी रेशमी जिल्द से इस पुस्तक की शोभा ही निराली हो गई है। यह संस्करण सब तरह आदर्श, अद्वितीय और सर्वांग-सुंदर है। मूल्य ४॥), सजिल्द ५)

साहित्य-संदर्भ

लेखक, साहित्य-महारथी पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी। द्विवेदीजी का परिचय देना सूर्य को दीपक दिखाना है। इस पुस्तक में उन्हीं

के समय-समय पर लिखे गए समालोचनात्मक तथा महत्व-पूर्ण ले
का संग्रह है। मनोरंजन की सामग्री भी काफ़ी है। पुस्तक
कक्षाओं में पाठ्य पुस्तक होने योग्य है। मूल्य १॥), सजिल्द २

साहित्य-सुमन

(चतुर्थावृत्ति)

लेखक, स्व० पं० बालकृष्ण भट्ट। भट्टजी की भाषा हिंदी-साहि
में अपना विशेष स्थान रखती है। यही कारण है कि यह यू० पी०
की विशेष योग्यता और अन्य प्रांतों में भिन्न-भिन्न परीक्षाओं में
पाठ्य पुस्तक बना ली गई है। इनके लेखों में उपन्यास और कहा-
नियों का पूरा मज़ा आता है। जी भी नहीं ऊबता। निरंतर नई-नई
ज्ञातव्य बातों का पता लगता जाता है। मूल्य ॥=), सजिल्द १=)

काव्य-कल्पद्रुम

(तृतीय परिवर्द्धित संस्करण)

लेखक, कविवर श्रीकन्हैयालालजी पोद्दार। यह संस्करण सर्व
नवीन रूप में है। सर्वप्रथम नौ रस का विवेचन है। हिंदी में
रस पर ऐसा ग्रंथ आज तक प्रकाशित नहीं हुआ। नौ रस पर
गवेषणा-पूर्ण विवेचन है, वह हिंदी के लिये अभूतपूर्व है। संस्कृत में
जो विषय भिन्न-भिन्न पुस्तकों में हैं, उन सबका एक ही स्थान प
समावेश कर दिया गया है। विषय को बड़ी सरलता से समझाया है
उदाहरणों में नवीन रचना के अतिरिक्त सुप्रसिद्ध प्राचीन औ
अलभ्य ग्रंथों के बड़े ही हृदयग्राही पद्य चुनकर दिए हैं।

ग्रंथ हिंदी-साहित्य के विद्यार्थियों के लिये ही उपयोगी नहीं
वरन् संस्कृत-साहित्य के विद्वानों के लिये भी अवश्य द्रष्टव्य है

ख़क के साहित्यिक आलोचनात्मक लेख जिन्होंने पढ़े हैं, वे ही त का अंदाज़ा लगा सकते हैं कि लेखक का इस विषय पर गहरा ज्ञान है। विश्वविद्यालय की सर्वोच्च परीक्षाओं में ग्रंथ है। मूल्य सादी २॥), सजिल्द ३)

बी०
भाषा

तुलसी-कृत रामायण

का ायण हिंदुओं का कितना पवित्र ग्रंथ है! इसका आदर वार वर्ष के कोने-कोने में, महलों से झोपड़ियों-पर्यंत, है। इसके ड़ों संस्करण निकल चुके हैं। पर वास्तव में अब तक विरले संस्करण बिलकुल शुद्ध और क्षेपक-रहित प्रकाशित हुए हैं। मायण-ऐसे पवित्र, अनमोल ग्रंथ की इस महान् कमी को खकर दुःख होता था, और इसी को पूरा करने के विचार हमने इसे खंडों में छापना शुरू किया है। भरसक बहिरंग और तरंग, दोनो को सुंदर बनाने की कोशिश की है। चित्रों की दरता और भावों पर पाठकों का प्रेम उमड़ता है, इसी कारण ने इसमें अनेक रंगीन और सादे चित्र भी दिए हैं, साथ-साथ कथाओं का भी समावेश कर दिया गया है। संक्षेप में इतना ही ना पर्याप्त होगा कि रामायण को सर्वप्रकार से सुंदर एवं सर्व- भ बनाने का प्रयत्न किया गया है।

ह रामायण २० खंडों में प्रकाशित हो रही है। प्रत्येक खंड में ० पृष्ठ, बीसों सादे और ५-७ रंगीन चित्र रहेंगे। साइज़ सुधा -सा भव्य होगा। मूल्य प्रत्येक खंड का १।) होगा, अर्थात् कुल ायण २५) की होगी। कारण, इसमें १६०० से ऊपर पृष्ठ और ड़ों रंगीन तथा सादे चित्र रहेंगे।

हिंदी-प्रेमी-मात्र से अनुरोध है कि कृपा कर वे स्वयं ग्राहक बनें, र अपने इष्ट-मित्रों को भी बनाएँ। इस सहायता से हमारे

जीवन की एक योजना पूर्ण हो जायगी, और आपके हाथों में अनुपम ग्रंथ-रत्न आ जायगा। मूल्य इस प्रकार रक्खा गया है—

१. प्रत्येक खंड का मूल्य १।) है। डाक-व्यय अलग।

२. प्रथम चार खंडों का मूल्य ४) ही लिया जायगा। किंतु ये ४) एक साथ, प्रारंभ में ही, भेजने होंगे। डाक-व्यय माफ़ रहेगा।

३. पूरे २० खंडों का रियायती मूल्य २०) होगा। डाक-व्यय कुछ भी न लिया जायगा। २०) पेशगी भेज देने होंगे।

आप भी ग्राहकों में नाम लिखाएँ, और साथ ही अपने मित्रों से अनुरोध करें। एक प्रति मँगाकर देखें। छपते ही ८०० प्रतियाँ बिक गईं!

सर्व-

व्यवस्थापक गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ